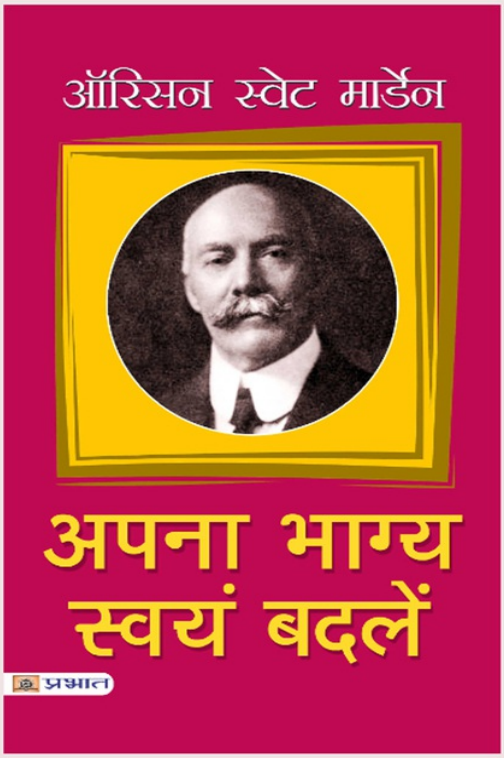

[SET OF 5 BOOKS]

SWETT MARDEN

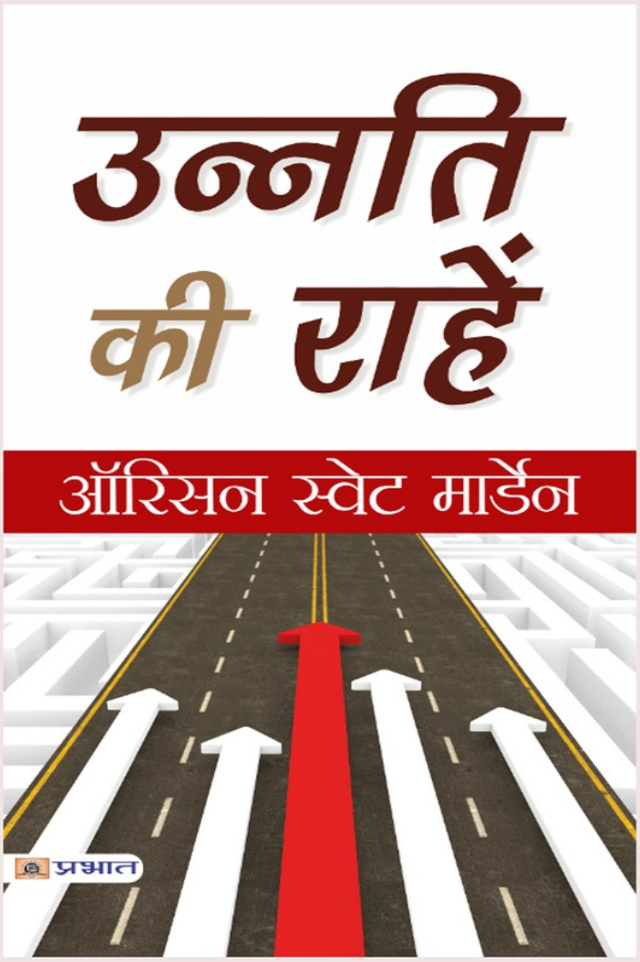

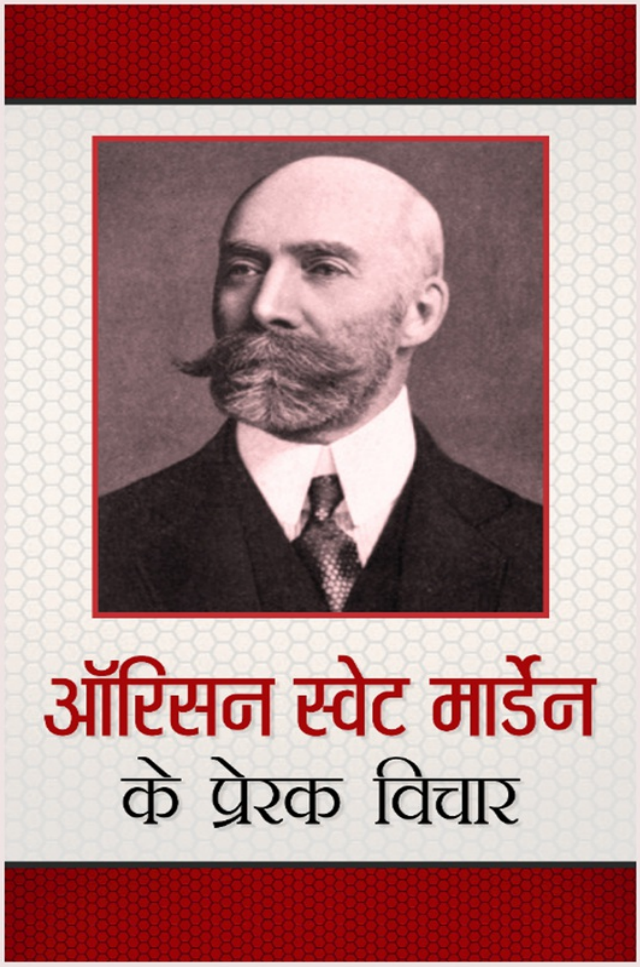

SWETT MARDEN

Set of 5 Books

उन्नति की राहें

आगे बढ़ने की कला

अपना भाग्य स्वयं बदलें

सफलता की सीढ़ियाँ

स्वेट मार्डेन के प्रेरक विचार

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रकाशक

उन्नति की राहें

उन्नति की राहें

ऑरिसन स्वेट मार्डेन

प्रभात

स्वेट मार्डेन

- उन्नति की राहें
  - अपनी बात
  - परिवर्तन अनिवार्य है
  - महान् परिणाम तत्काल प्राप्त नहीं होते
  - बुद्धि का सही उपयोग
  - उन्नति का रहस्य
  - कठिनाइयों पर विजय
  - सुगम नहीं होता उन्नति का मार्ग
  - उन्नति के पथ पर बढ़ते ही जाइए
  - ठोकरें खाकर अनुभव एकत्रण
  - स्वेट मार्डेन की कुछ प्रमुख सदाबहार प्रेरक पुस्तकें
  - स्वेट मार्डेन के कुछ प्रेरक कथन
  - उन्नति की राहें
- आगे बढ़ने की कला
  - अपनी बात
  - आगे बढ़ने की कला
- अपना भाग्य स्वयं बदलें
  - अपनी बात
  - अपना भाग्य स्वयं बदलें
  - अंतरशक्ति
- सफलता की सीढ़ियाँ
  - अपनी बात
  - सफलता की सीढ़ियाँ
- स्वेट मार्डेन के प्रेरक विचार
  - अपनी बात
  - स्वेट मार्डेन के प्रेरक विचार

अपनी बात

दुनिया में कोई भी आविष्कार या खोज इनसान के तब काम आती है, जब और लोग उस पर अध्ययन करते हैं। उससे सब मिलकर प्रगति या उन्नति लाते हैं।

बात बहुत पुरानी है। एक राजा ने मुख्य मार्ग पर बीचोबीच एक बड़ा पत्थर रखवा दिया। वह एक पेड़ के पीछे छिपकर यह देखने लगा कि कोई उस पत्थर को हटाता है या नहीं। कई राजदरबारी और व्यापारी वहाँ से गुजरे और उनमें से कई ने ऊँचे स्वर में राजा की इस बात के लिए निंदा की कि राज्य की सड़क व्यवस्था ठीक नहीं है, लेकिन किसी ने भी उस पत्थर को हटाने का कोई प्रयास नहीं किया।

फिर वहाँ से एक किसान गुजरा, जिसकी पीठ पर अनाज का बोरा लदा हुआ था। पत्थर के पास पहुँचने पर उसने अपना बोझा एक ओर रखा और पत्थर हटाने का प्रयास करने लगा। बहुत परिश्रम करने के बाद वह सफल हो गया। किसान यह देखकर हैरान रह गया कि जिस जगह से पत्थर हटा, वहाँ एक पोटली में सोने के ढेर सारे सिक्के थे और राजा का लिखा हुआ एक पत्र था। पत्र में लिखा था कि सोने के सिक्के पत्थर हटानेवाले के लिए उपहारस्वरूप हैं। उस किसान ने इससे वह सबक सीखा, जो हममें से बहुत कम ही समझ पाते हैं। दरअसल, यह कहानी हमें सीख देती है कि 'हमारे मार्ग में आनेवाली हर बाधा हमें उन्नति करने का अवसर प्रदान करती है।'

जब भी आप कोई चीज ऐसी देखें, जो आपकी थोड़ी सी पहल से ठीक हो सकती है, तो वह काम जरूर करें। आपकी यह मेहनत आपको फल जरूर देगी। जब आप किसी के लिए नि:स्वार्थ भाव से कुछ अच्छा करते हैं, तो वह सत्कर्म घूम-फिरकर आपको और आपके परिवार को लाभ पहुँचाता है।

असंतोष उन्नति के लिए पहली आवश्यकता है, लेकिन आधुनिक उन्नति से जो संपत्ति बढ़ रही है, जब तक वह पूँजी का निर्माण और विलासिता की उत्पत्ति में लगी रहेगी, तब तक उन्नति सच्ची और स्थायी नहीं बन सकती। आप अलग खड़े रहकर, रिरियाकर और अपना ही दुखड़ा रोकर उन्नति नहीं कर सकते। आप सिर्फ अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करके ही उन्नति कर सकते हैं। आपके कल की योजना ही आपकी आज की उन्नति है।

हम इतने ऊँचे हों कि सूरज को छू लें। कुछ भी प्राप्त करने के लिए सकारात्मकता आवश्यक है और साथ ही यह साहस और सच्ची उन्नति की नींव भी है। जीवन की थोड़ी सी उन्नति के लिए विचार की उन्नति बहुत अधिक मात्रा में करनी होती है।

धीरे चलने से मत डरिए, डरिए सिर्फ नि:शब्द खड़े रहने से। नई घटनाएँ नई जिम्मेदारियों का सृजन करती हैं और पुरानी भली बातें भी बुरी प्रतीत होने लगती हैं, किंतु जो सत्य को हृदय में धारण करके चलते हैं, वे निरंतर ही उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं।

❑

परिवर्तन अनिवार्य है

प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती। परिवर्तन अनिवार्य है, उन्नति चुनाव है। प्रकृति अपनी उन्नति और विकास में रुकना नहीं जानती और अपना अभिशाप प्रत्येक अकर्मण्यता पर लगाती है।

उन्नति आज की गतिविधि है और आनेवाले कल का आश्वासन। उन्नति जीवन का चिह्न है। जिसमें उन्नति नहीं, वह शव के समान है। उन्नति भविष्य के लिए सिर्फ नयी संभावनाएँ ही नहीं लेकर आती, बल्कि नए प्रतिबंध भी लगाती है। उन्नति मिथ्या नहीं है, बल्कि यह हमेशा और धीमी गति से चलती रहती है।

उन्नति वह आकर्षण है, जो मानवता को संचालित करता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किंतु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। बिना परिवर्तन के उन्नति संभव नहीं है और जो लोग अपना मस्तिष्क परिवर्तन नहीं कर सकते, वास्तव में वे कुछ नहीं कर सकते।

बिना संघर्ष के उन्नति नहीं हो सकती है। भूलों का सुधार ही उन्नति है। मनुष्य का उन्नति का विरोध करने का कारण यह नहीं है कि वह उन्नति से घृणा करता है, बल्कि यह है कि वह जड़ता से प्यार करता है।

❑

महान् परिणाम तत्काल प्राप्त नहीं होते

मनुष्य की सरलता को जटिल बनाने की काबिलीयत ही उन्नति है। महान् परिणाम तत्काल नहीं प्राप्त हो जाते, इसलिए हमें जीवन में कदम-कदम बढ़ते जाने में संतोष मानना चाहिए। मानव जाति की उन्नति में सबसे बड़ी बाधक मानव जाति ही है।

मैं संस्कारों में विश्वास नहीं करता, स्वाभाविक उन्नति का विश्वासी हूँ। लोग कुछ अलग करने की हिम्मत रखते हैं, इसीलिए उन्नति होती है। वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं अपने को उपदेश देता है। सच्ची उन्नति शांति से और दुराग्रहपूर्वक बिना किसी सूचना के आगे बढ़ती है।

सफलता किसी व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत लक्ष्य की तरफ अनवरत उन्नति है। सभी वस्तुएँ, जो मानव से संबंधित हैं, यदि उन्नति नहीं करतीं, तो उनका पतन होने लगता है। स्वतंत्रता का मार्ग ही उन्नति का मार्ग है। हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि जब-जब हम गिरें, हर बार उठकर उन्नति करने में है।

जीवन में मनुष्य की अनेक लालसाएँ होती हैं, जो मनुष्य को भटका भी सकती हैं और सफलता भी दिला सकती हैं। इस जीवन में अनेक पड़ाव आते हैं, जिन्हें धीरता से पार करना चाहिए, न कि अधीरता, चंचलता से अपने कार्य करने चाहिए।

जिस प्रकार बोझ को यदि बोझ समझकर उठाया जाए, तो वह बोझ ही लगता है, लेकिन बोझ समझकर न उठाया जाए, तो वह आसानी से उठाया जा सकता है। ठीक उसी प्रकार इस जीवन को सफल बनाना है, यह समझकर जिया जाए, तो मनुष्य अवश्य सफल होता है।

जीवन में बाधाएँ तो आती ही रहती हैं, परंतु उनसे डरने, घबराने से पार नहीं पाया जा सकता। उनसे पार पाया जा सकता है, तो केवल उनका सामना करके। बाधाएँ तभी डराती हैं, जब मनुष्य अपने कर्तव्य पथ से डिगता है। इसलिए बाधाओं का डटकर मुकाबला करना ही सफलता का द्योतक है। बाधाओं को बाधा समझने पर उनसे पार नहीं पाया जा सकता। बाधा को कठिन, किंतु असंभव नहीं समझकर पार करना चाहिए। इससे सरलतापूर्वक उससे पार पाया जा सकता है।

मन में सद्भावना रखकर मनुष्य को अपना कर्म करना चाहिए। सद्भावना से किया गया कर्म उचित फलदायक होता है। बुरी भावना मनुष्य के मन में अवगुणों का संचार करती है। भावना अच्छी-बुरी होती है। जहाँ अच्छी भावना मनुष्य की मित्र है, वहीं बुरी भावना शत्रु, क्योंकि अच्छी भावनाएँ मनुष्य को सफल बनाती हैं और बुरी भावनाएँ असफल। अच्छी-बुरी भावनाएँ मनुष्य की बुद्धि की उपज होती हैं। जैसी बुद्धि होगी, वैसी ही भावना होगी।

❑

बुद्धि का सही उपयोग

बुद्धि का महत्त्व तब अधिक है, जब उसका सही उपयोग हो अर्थात् जब मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग करके सही कार्य करे, स्वयं भी सफल हो और दूसरों को भी उसका लाभ दे। बुद्धिमान मनुष्य ही कहीं टिक पाता है, बुद्धिहीन मनुष्य प्राय: दूसरों पर ही निर्भर रहता है।

मनुष्य को व्यर्थ के छल, कपट, भ्रम में नहीं फँसना चाहिए और एकाग्रचित्त होकर अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य का हृदय, मन बहुत चंचल होता है और क्षणमात्र में ही मनुष्य को पथभ्रष्ट कर सकता है। वह उसके चित्त को भंग कर सकता है। मन को अपने वश में रखना चाहिए, जिससे वह इधर न भटके, न ही मनुष्य उसके अनुसार इधर-उधर भटके। मनुष्य का मन वाहन के गतियंत्र की भाँति कार्य करता है। उसे जितनी गति मिली, वह उतनी ही गति से उसी ओर खिंच जाता है, बढ़ जाता है, जिस ओर वह जाना चाहता है। अब यह मनुष्य की चित्त-बुद्धि का कार्य है कि वह कितनी गति देना चाहती है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि मनुष्य उन्नति प्राप्त करने के लिए अपने उद्देश्य तक पहुँचते-पहुँचते बहुत समय व्यतीत कर देता है, अर्थात् जीवन की बाधाओं से लड़ते-लड़ते वह उस समय को खो देता है, जो उसका सुनहरा समय होता है, लेकिन फिर भी उस मनुष्य को इस बात का दु:ख नहीं होता है कि उसने जो चाहा, वह नहीं मिला, परंतु उसे इस बात की प्रसन्नता होती है कि उसने अपना जीवन अपने आदर्शों के अनुसार जिया और उसके जीवन से दूसरों को, समाज को या अन्य किसी को प्रेरणा मिली, तो यह भी उसके लिए सफलता ही है, क्योंकि उसका जीवन निष्कंलक तो होता है साथ ही परोपकार से भी पूर्ण होता है।

मनुष्य में ऐसी-ऐसी शक्तियाँ छिपी होती हैं कि जिनके बारे में वह स्वयं भी नहीं जानता। दुनिया के असाधारण अजूबे कार्यों, अजूबे आविष्कारों को मनुष्य ने ही किया है, कैसे? अपनी स्वयं की शक्ति से। हिमालय की माउंट एवरेस्ट चोटी बहुत ऊँची एवं खतरों से भरी है, लेकिन फिर भी मनुष्य उस पर चढ़ जाता है और बाद में सोचता है कि उसने यह कैसे कर दिखाया! मनुष्य अपने शरीर में एक छोटी सी सुई चुभाने से डरता है, लेकिन जब कभी उसे चाकू अथवा बंदूक की गोली लग जाए, तो वही उसके दर्द को झेल जाता है। हजारों फीट की ऊँचाइयों से पैराशूट की सहायता से कूद पड़ता है और वैसे थोड़ी सी ऊँचाई से डर जाता है। यह सब कैसे होता है? आंतरिक शक्ति से, आत्मविश्वास से, दृढ़ निश्चय से।

मनुष्य द्वारा स्वयं को पहचानना स्वयं को उन्नत बनाना है। यदि वह स्वयं को नहीं पहचानता, तो अवनत है। अत: अवनत क्यों? स्वयं को पहचानें और उन्नत हों। इस प्रकार मनुष्य अपने अंदर गुणों का विकास कर अवगुणों को त्यागकर उन्नति प्राप्त कर सकता है और मनुष्य को उन्नति ही प्राप्त करनी चाहिए, तभी यह जीवन सार्थक है अन्यथा पृथ्वी पर अनेक लोग जन्म लेते हैं और व्यर्थ जीवन जीकर मर जाते हैं। उनके पश्चात् उनकी अगली पीढ़ी तक उनका नाम लेना भूल जाती है।

❑

उन्नति का रहस्य

यह सही है कि असफलता में ही उन्नति का रहस्य छिपा हुआ है? हम पूर्ण लगन, ईमानदारी से अपने कार्यों को करते हैं और अपने कार्य व मेहनत के प्रति पूर्णत: आश्वस्त होते हैं कि हम अवश्य उन्नति करेंगे, किंतु फिर भी कई बार असफलता हाथ लगती है! क्या आपने अपने कार्यों को संपन्न करने के लिए कोई योजना बनाई, क्या आप स्वयं के प्रति एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण ईमानदार रहे, क्या आपमें आत्मविश्वास की कमी थी, क्या आप उस कार्य के प्रति दृढ निश्चयी थे, क्या आप समाज से कटे हुए थे, क्या आपमें साहस की कमी थी, क्या आपको अपने कार्य आदि का अनुभव था? आदि ऐसे कई कारक हैं, जो हमें असफलता की ओर ढकेलते हैं।

जब हम अपने स्वयं के, किसी अन्य के नहीं, जीवन में झाँकेंगे, तब हमें अपनी असफलता का ज्ञान होगा, न कि केवल हम यही देखते रहें कि उस मनुष्य में अमुक कमी है, अर्थात् हम केवल दूसरों के दोष ही निकालते रहते हैं, स्वयं के नहीं। यही असफल होने का सबसे बड़ा कारण है। यह सब त्यागकर देखें, फिर आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपने अपनी असफलताओं के कारणों पर विजय पा ली है।

असफलता के कारण, क्या हैं असफलता के कारण, इस बात पर आपने कभी विचार किया, कभी इस ओर ध्यान दिया? अधिकतर लोगों का उत्तर होगा, ''नहीं, मैंने अपनी असफलताओं पर कभी ध्यान नहीं दिया।'' अब वे लोग स्वयं ही विचार करें कि उन्होंने अपनी असफलताओं के कारणों पर कभी ध्यान नहीं दिया, तो वे सफल कैसे होंगे? असफलता किसी दूसरे के कारण से नहीं, अपितु स्वयं की कमजोरियों के कारण मिलती है। लोग इन्हीं उलझनों में व्यस्त रहते हैं कि कब करें, कैसे करें, शायद हो सकता था या हो सके, कल कर लेंगे या मेरी जगह तुम चले जाना आदि-आदि। यह क्या बात हुई! स्वयं के कार्यों के लिए इतनी उलझनें, इतने बहाने! अब व्यक्ति सफल कैसे हों, जब वे स्वयं ही, स्वयं की सफलता में अनेक परेशानियों को जन्म देने लगें?

कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत से लोग अजीबोगरीब या अनैतिक हथकंडे अपनाकर उन्नति को पा तो लेते हैं, लेकिन उसका लाभ नहीं उठा पाते अर्थात् वे यह नहीं जानते कि उन्नति क्या होती है। बस उन्हें यह मालूम होता है, 'मैं सफल हूँ', लेकिन कैसे, इसका जवाब उनके पास नहीं होता, लेकिन अपने कर्तव्य पथ पर आग में तपकर, जो अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, वही वास्तविक सफल व्यक्ति होता है।

उन्नति प्राप्त करने के लिए न तो पहाड़ तोड़ना पड़ता है और न ही पहाड़ पर चढ़ना पड़ता है। बस अपने कार्यों को सही ढंग से करते हुए बाधाओं को पार करना सफल होने की निशानी है। बाधाओं से तात्पर्य उन समस्याओं से है, जो उन्नति के लिए किए जानेवाले कार्यों के बीच में आती हैं, जो लक्ष्य-प्राप्ति में रुकावटें पैदा करती हैं। वे समस्याएँ आत्मविश्वास की कमी और कार्यों की उचित रूपरेखा न बनाने आदि के कारण हो सकती हैं।

❑

कठिनाइयों पर विजय

मनुष्य को उन्नति प्राप्त करने के लिए अनेक गुणों को अपने में समाहित करना पड़ता है, जिससे आनेवाली कठिनाइयों पर विजय पाई जा सके और कार्य का सही प्रारंभ आपको उन्नति की सीढ़ियों तक ले जाता है। बहुमूल्य लक्ष्य की प्रगतिशील साधना, सफलता कहलाती है। बहुमूल्य लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य, जो व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए निर्धारित करता है, लेकिन मात्र लक्ष्य निर्धारित करने से उन्नति नहीं मिलती, बल्कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रगतिशील साधना करनी पड़ती है। तभी लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात् उन्नति मिलना निश्चित होता है। लक्ष्य निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि इससे हमें पता रहता है कि अभी हम उस स्थान पर नहीं पहुँचे हैं, जहाँ के लिए हमने लक्ष्य निर्धारित किया था।

दूरस्थ तथा संदिग्ध कार्यों को छोड़कर सन्निकट एवं निश्चित कार्यों को हाथ में लेना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए अर्थात् लक्ष्य भी निश्चित, सुदृढ़ और ऐसा होना चाहिए, जिसे साधा जा सके। लक्ष्य ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसका न सिर हो, न पैर। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई लक्ष्य निर्धारित कर ले कि मैं अपने शरीर पर पंख लगाकर उड़ूँगा तो यह तो संदिग्ध व बेसिर-पैर का लक्ष्य हुआ। इसमें कैसे सफलता मिलेगी? इसके विपरीत यदि कोई अपना लक्ष्य बनाता है कि 'मैं ऐसा आविष्कार करूँगा, जिससे मनुष्य उड़ सके,' तब हाँ, यदि उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए पूर्ण आत्मविश्वास, लगन और दृढ निश्चय से मेहनत की जाए, तो अवश्य सफलता प्राप्त की जा सकती है।

नकारात्मक सोच भी उन्नति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा होती है, तभी तो कहा गया है, ''रोते हुए जाओगे तो मरे की खबर लाओगे।'' अर्थात् कोई भी कार्य उत्साह से और सकारात्मक सोच के साथ प्रारंभ करना चाहिए, क्योंकि कहा गया है, प्रारंभ अच्छा तो अंत भी अच्छा। कोई भी कार्य किया जाए, उसके प्रति उत्साह होना चाहिए। निरुत्साह से प्रारंभ किए जानेवाले कार्य का परिणाम क्या होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

उन्नति सभी पाना चाहते हैं, पर कई बार चूक जाते हैं।

नेपोलियन अनेक वर्षों तक युद्धों में कैसे विजयी होता चला गया? इतिहास ऐसे हजारों उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिनसे यह सिद्ध होता है कि आत्मा की आवाज सुनकर दृढ़ निश्चयपूर्वक, जो भी कार्य किया जाता है, संसार की कोई भी शक्ति उसकी सफलता में आड़े नहीं आ सकती। कोई भी बाधा उसमें रुकावट नहीं डाल सकती।

❑

सुगम नहीं होता उन्नति का मार्ग

हालाँकि उन्नति का, सफलता का मार्ग सुगम नहीं होता। उसमें पग-पग पर विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसा कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं, जिसमें कष्ट और कठिनाइयाँ न उठानी पड़ें। ऐसी एक भी सफलता नहीं है, जो कठिनाइयों से संघर्ष किए बिना ही प्राप्त हो जाती हो। जीवन के महत्त्वपूर्ण मार्ग विघ्न-बाधाओं से भरे ही रहते हैं।

यदि परमात्मा ने सफलता का कठिनाई के साथ गठबंधन न किया होता, उसे सर्वसुलभ बना दिया होता, तो मनुष्य जाति का वह सबसे बड़ा दुर्भाग्य होता। तब सरलता से मिली हुई सफलता बिल्कुल नीरस एवं उपेक्षणीय हो जाती। जो वस्तु, जितनी कठिनाई से, जितना खर्च करके मिलती है, वह उतनी ही आनंददायक होती है।

सोने की महत्ता इसलिए है कि यह कम मिलता है, पर यदि कोयले की तरह सोने की खानें निकल पड़ें, तो इसे भी लोग वैसी ही लापरवाही से देखेंगे, जैसे आज लोहे आदि सस्ती वस्तुओं को देखा जाता है। दुर्लभता और दुष्प्राप्यता से आनंद का घनिष्ठ संबंध है। जो वस्तुएं दुर्लभ हैं, सर्वसाधारण को आसानी से नहीं मिलतीं, उन्हें पा लेना ही सफलता कहा जाता है। जिन कार्यों की सफलता सर्वसुलभ है, वैसे कार्य, तो सब लोग सदा करते ही रहते हैं। उनके लिए न कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता पड़ती है और न लेखक को लिखने की।

❑

उन्नति के पथ पर बढ़ते ही जाइए

विश्व में जो भी विकास हुआ है, वह आत्मविश्वास की ही देन है। संसार के आविष्कारकों, वैज्ञानिकों, महापुरुषों, राजनीतिज्ञों एवं धनपतियों के जीवन का अध्ययन किया जाए, तो मालूम होगा कि उनका कितना विरोध हुआ, साधनों का अभाव, सहयोग की कमी, फिर भी उन्होंने अपने आत्मविश्वास के बल पर महान् कार्यों का संपादन किया। महात्मा ईसा के आत्मविश्वास का ही फल है कि आधी से अधिक दुनिया में ईसाई धर्म फैला हुआ है। तात्पर्य यह है कि आत्मविश्वास की जीवन-ज्योति के अभाव में मनुष्य का एक कदम आगे बढ़ना भी असंभव है।

प्रात: होती है, सूर्य अपनी स्वर्णिम किरणों से जगत् पर चमक उठता है। वह बढ़ता जाता है और आकाश के मध्य अपने प्रचंड प्रकाश से विश्व को आलोकित कर नवजीवन देता है, किंतु उसकी मूक प्रेरणा को कभी आपने सुना है? वह प्रात: आकर दरवाजा खटखटाता है और कहता है, ''उठो, जागो, आगे बढ़ो, मेरी तरह तुम भी अपने प्रकाश से प्रकाशित होओ।''

नदी कहती है, ''आगे बढ़ो, अपने क्षुद्र एवं सीमित स्वरूप का त्याग करके विराट का वरण करो।''

पुष्प कह रहे हैं, ''अपने जीवन की सुरभित कलियों को विकसित करो और मधुर मुसकान लिये हुए खिल उठो।''

इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्य का विकास, उत्थान, उन्नति और सफलता ठीक उसी प्रकार सत्य और स्वाभाविक है, जैसे सूर्य का प्रचंड प्रकाश, नदी को विराट की प्राप्ति, पुष्प का सौंदर्य, किंतु आत्मविश्वास के अभाव में मनुष्य इन्हें दुर्लभ समझकर अपनी गति कुंठित कर लेता है। अपने आपको हीन समझकर अपने सत्य स्वरूप को भुला देता है। आत्मविश्वासहीनता की भावना उसे निष्क्रिय और जड़ बना देती है, जो जीवन के मौलिक स्वरूप के विपरीत है, मृत है, नश्वर है।

जीवन देश-काल-परिस्थिति की सीमा से रहित है। हमारे पूर्वजों ने भूत में जो प्राप्त किया, उससे अधिक हम प्राप्त कर सकते हैं और हमारी आनेवाली पीढ़ियाँ उससे भी अधिक। उदाहरणार्थ—कुछ समय पहले आज के युग की कल्पना एक स्वप्न मात्र थी। 16वीं शताब्दी का मनुष्य रेलों, विमानों, बड़े-बड़े यंत्रों, वैज्ञानिक अनुसंधान, विश्व के राष्ट्रों की मैत्री और पड़ोसी का सा संबंध आदि को एक स्वप्न और कल्पना मानता था, पर उन्नति के पथ पर चलते हुए आज के मनुष्य ने उन सब बातों को संभव कर लिया। यह क्रम आगे भी जारी रह सकता है और हम निरंतर अधिकाधिक उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते हैं। आशान्वित व्यक्ति ही जीवन की यथार्थता से लाभ उठा सकता है। अनंत आशावानों के बल पर ही संसार का भव्य भवन खड़ा है। मनुष्य की भविष्य में सफलता, विकास निश्चित है, निर्भ्रांत है। मनुष्य की शक्ति और सत्ता अपरिमित है।

भविष्य के प्रति स्वर्णिम स्वप्न ही मनुष्य जीवन की उन्नति के प्रमुख आधार है। इन स्वप्नों में अनंत अमृत भरा रहता है, जिससे मनुष्य को उत्साह, महत्त्वाकांक्षा, रुचि, प्राण-रस एवं नवजीवन प्राप्त होता है। आकांक्षाओं, अभिलाषाओं के भाव-चित्र ही जीवन तथा सृष्टि की कुरूपता का परिमार्जन कर उसे स्वस्थ, निखरा एवं विकसित रूप देते हैं। छोटे-छोटे भाव-स्वप्नों से ही इतिहासों में नए मोड़ पैदा होते हैं, संस्कृतियाँ बदलती हैं, समाज के ढाँचे बदलते हैं, दुनिया का असौंदर्य दूर किया जाता है, किंतु इनके साथ-साथ कर्म का संयोग होना आवश्यक है। जब कर्म और अपनी आकांक्षाओं का स्वर्णिम स्वप्नों से समन्वय नहीं होता, तो ये केवल मानसिक विकार ही रह जाते

हैं। जिन्होंने अपने रंगीन विचारों में कर्म का पुट दिया है, उन्होंने नवनिर्माण किया है। कर्म में जुटे रहना आवश्यक है। उठकर चले बिना मंजिल का पाना असंभव है। भले ही मंजिल पास हो या दूर; भव्य हो या सुंदर।

महान् आत्मविश्वास, भविष्य के प्रति सुंदर आकांक्षाएँ लेकर जीवन-पथ पर अग्रसर होने मात्र से ही काम न चलेगा। जीवन कोई रेल का इंजन नहीं है, जो लोहे की समतल पटरियों पर बिना किसी रुकावट के अगले स्टेशन पर पहुँच जाएगा। नदी को अपने लक्ष्य समुद्र की ओर बढ़ने में कितने पहाड़ों, वन-उपवनों, मैदान, धरती को पार करना पड़ता है। कहीं रुकावट पड़ती है, तो अपना मार्ग स्वयं बनाती है, कहीं मुड़ती है, पता नहीं कितने विघ्नों, अवरोधों, रुकावटों को सहन कर वह अपने लक्ष्य तक पहुँचती है। ठीक इसी प्रकार जीवन का मार्ग आदि से अंत तक कठिनाइयों का मार्ग है। उसमें पद-पद पर विघ्नों का सामना करना पड़ता है। उसमें प्रतिक्षण विरोधी शक्तियों से प्रतियोगिता होती रहती है, यही जीवन-संघर्ष है। संसार में ऐसा कोई मार्ग नहीं है, जो पूर्णरूपेण आपदाशून्य हो। हर यात्री को जीवन-पथ में विघ्न, बाधाओं, विरोधों का सामना करना ही पड़ेगा।

मनुष्य की आकृति से पता चलता है कि उसे रुकने के लिए नहीं, आगे बढ़ने के लिए ही बनाया गया है। एक महापुरुष ने कहा है, ''यदि मनुष्य को ईश्वर ने पीछे हटने के लिए बनाया होता, तो उसकी आँखें सिर के आगे न बनाकर पीछे की तरफ बनाता।''

जब विघ्न-बाधाएँ आती हैं, तो आपको झटका मारती हैं, आप गिर जाते हैं हिम्मत हार जाते हैं, किंतु इससे काम नहीं चलेगा। गिरकर भी उठिए, फिर चलने का प्रयास कीजिए। एक बार नहीं, अनेक बार आपको गिरना पड़े, किंतु गिरकर भी उठिए और आगे बढ़िए। उस छोटे बालक को देखिए, जो बार-बार गिरता है, किंतु फिर उठने का प्रयत्न करता है और एक दिन चलना सीख जाता है। आपकी सफलता, विकास, उत्थान भी उतना ही सुनिश्चित है। अत: रुकिए नहीं, उठिए। ठोकरें खाकर भी आगे बढ़िए, उन्नति-सफलता एक दिन आपका स्वागत करने को तैयार मिलेगी।

स्मरण रखिए, प्रत्येक विघ्न-बाधा का सर्वप्रथम आघात आपके उत्साह, आशा और भविष्य के प्रति आकर्षण पर होता है। इनका सीधा वार आपके हृदय पर होता है, किंतु कहीं आपका मनोबल टूट न जाए, इसके लिए यह सोच लीजिए कि जिस प्रकार घोर अंधकार के बाद सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है, उसी प्रकार आपका उज्ज्वल भविष्य प्रकाशित होनेवाला है। अमावस की काली रात के पश्चात् चंद्रमा की चाँदनी सहज ही फूट पड़ती है। आज का कठिन समय भी गुजर जाएगा, इसे हृदयंगम कर लीजिए। अपने आशावादी दृष्टिकोण, आकांक्षाओं, उत्साह की संपत्ति को यूँ ही न खोइए। उनका बचाव कीजिए और उन्नति के पथ पर आशा और उत्साह के साथ आगे बढ़ते ही जाइए।

❑

ठोकरें खाकर अनुभव एकत्रण

कोई रस और कोई विशेषता न रहने पर यह संसार बड़ा नीरस एवं कुरूप हो जाता, लोगों को जीवन काटना एक भार की भाँति अप्रिय कार्य प्रतीत होने लगता। कठिनाइयों के न रहने पर एक और हानि होती है कि मनुष्य की क्रियाशीलता, कुशलता एवं चैतन्यता नष्ट हो जाती है। ठोकरें खा-खाकर अनुभव एकत्र किया जाता है। घिसने और पिसने से योग्यता बढ़ती है। कष्ट की चोट सहकर मनुष्य दृढ़, बलवान और साहसी बनता है। मुसीबत की अग्नि में तपाए जाने पर बहुत सी कमजोरियाँ जल जाती हैं और मनुष्य खरे सोने की तरह चमकने लगता है।

सफलता में आनंद कायम रखने और शक्तियों के चैतन्य होकर उन्नति के मार्ग पर प्रवृत्त होने के लिए जीवन में कष्ट और कठिनाइयों का रहना बड़ा ही आवश्यक है। इतिहास में जिन महापुरुषों का वर्णन है, उनमें से हर एक के पीछे कष्टों, दुर्दम कठिनाइयों में पड़ने का विस्तृत वृत्तांत है। उसी के कारण वे महापुरुष बने हैं। यदि उन्होंने पग-पग पर कष्ट सहन करना स्वीकार न किया होता, यदि उन्होंने दु:खों और कठिनाइयों को न अपनाया होता, तो वे साधारण श्रेणी के भले मनुष्य मात्र रह जाते, महापुरुष का पद उन्हें प्राप्त न हुआ होता।

आकांक्षा, जागरूकता और श्रमशीलता से बड़े-बड़े कष्टसाध्य कार्य पूरे हो जाते हैं, तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि वे शीघ्र ही स्वल्पकाल में और बिना कोई खतरा उठाए सफल हो जाते हैं। परमेश्वर बार-बार परीक्षा लेकर मनुष्य के अधिकारी होने या न होने की जाँच किया करता है।

ऐसी ही अनेक अनुभूत कथाओं का निचोड़ है—'उन्नति की राहें' नाम की यह पुस्तक। उबाऊ विवरणात्मकता से बचने के लिए हमने इसे प्रेरक टिप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि आप सीधे तथ्यों को ग्रहण कर सकें।

—संपादक

स्वेट मार्डेन के कुछ प्रेरक कथन

• अंगारा बनकर जो अपने मन की चिंताओं, भय और दु:ख को जला डालते हैं, उनको जीवन में सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

• अकसर इनसान वैसा ही बनता है, जैसा वह अपने बारे में सोचता है।

• अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों, बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

• अच्छी सभ्यता में उदासी, खिन्नता और निराशा के लिए कोई जगह नहीं है।

• अधिकांश बीमारियाँ चिकित्सकों द्वारा दिखाए गए भय से होती हैं या फिर आपकी अपनी कल्पनाओं या आशंकाओं से।

• अनादर, अभाव और असफलता का सर्वसम्मिलित त्रास, बहुत प्रबल इच्छा शक्तिवाले व्यक्ति की बुद्धि को भी कुंठित कर देता है।

• अपनी शक्ति को छोटा न समझें, एक छोटी सी चिनगारी भी विशाल वन को जलाकर राख कर देती है।

• अपने अंदर सिंहत्व की शक्ति को जगाइए। इस शक्ति के जागने के बाद कोई ऐसा कार्य नहीं रह जाता, जो आपकी शक्ति के बाहर हो।

• अपने आत्मबोध द्वारा अपने कार्य का स्तर अधिक-से-अधिक ऊँचा करें, आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

• अपने आत्मविश्वास और चरित्र के बल पर एक साधनरहित व्यक्ति भी महान् सफलता प्राप्त कर सकता है।

• अपने इरादे मजबूत रखें, आपके मार्ग की सभी कठिनाइयाँ दूर होती चली जाएँगी।

• अपने को जानना और अंतर में बसे ईश्वर के रूप को पहचानना, यही सफल जीवन का मूलमंत्र है।

• अपने बारे में हीन भावनाओं को त्यागकर ऊँचे विचारों को अपने मन में स्थान दें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपमें शक्ति आ रही है। आप सामर्थ्यवान हो रहे हैं।

• अपने मन-मंदिर में समृद्धि का दीपक जलाएँ, आपका जीवन उसके आलोक से जगमगा उठेगा। तब आप देखेंगे कि सफलता और समृद्धि आपकी ओर बढ़ी आ रही हैं।

• अपने मन की तुच्छ इच्छाओं को त्यागकर अपने संपूर्ण विचारों को अपने लक्ष्य पर केंद्रित करें, आपकी मनोकामनाएँ निश्चित ही पूरी होंगी।

• अपने मन से निर्धनता की भावना को त्यागें। यह एक ऐसा भयंकर महारोग है जो तन-मन को भस्म कर देता है।

• अपने विषाक्त विचारों को त्यागें, ताकि उनसे दूसरों को घुटन अनुभव न हो।

• अभिलाषा तभी फलदायक होती है, जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है।

• अल्प बचत को बेकार की चीज न समझें। जो लोग थोड़ा-थोड़ा करके भी धन बचाते हैं, वे विशाल अथवा मध्यम धन-संपत्ति के स्वामी होते हैं।

• अवसर उसी को प्राप्त होता है जो योग्यतापूर्वक कार्य करते हुए मौका देखता रहता है।

• अवसर से लाभ उठाने में असाधारण रूप से वही लोग सफल हुए हैं, जिन्होंने प्राप्त अवसरों में सुधार लाकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया।

• अशुभ विचारवाले मनुष्य रोगी एवं दुष्कर्म करनेवाले भोगी बनते हैं, जबकि शुभ विचार वाले स्वस्थ, सत्कर्म करनेवाले योगी बनते हैं।

• असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही संभव है जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।

• आत्मविश्वास के साथ हजारों विपत्तियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

• आत्मविश्वास में वह शक्ति होती है,जिसके सहारे हम सहस्र विपत्तियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

• आत्मा की आवाज सुनकर यदि आप अपनी स्वार्थसिद्धि का विचार त्याग देंगे तो निश्चित ही दुष्कर्मों से अपने आपको बचा सकेंगे।

• आप अपने विचार इस तरह बनाएँ कि आप हर कठिनाई पर विजय प्राप्त कर लेंगे, उसके सामने हथियार नहीं डालेंगे। तब आप निश्चय ही विजयी होंगे।

• आप अपने सच्चे मन से, अंत:करण से जिस वस्तु को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, वह आपको अवश्य प्राप्त होती है।

• आप अपने सबसे बड़े गुरु व निर्देशक हैं। पहले आप अंदर मजबूती लाइए। अपने विचारों को दृढ़ कीजिए।

• आप अपने स्वामी स्वयं बनें; अर्थात् आप अपने आपको वश में रखें, तभी आप कोई महान् कार्य कर पाएँगे।

• आप ईर्ष्यारूपी चुड़ैल का शिकार होकर न्याय, तर्क, बुद्धि सबसे हाथ धो बैठते हैं।

• आप जो करना चाहते हैं, उस बात की दृढ़ आशा अपने मन में रखें, क्योंकि आशा इच्छा से ज्यादा बलवान है। आप जैसी आशा करेंगे, वैसे ही बनेंगे। यह बात अधिक सच है कि जैसा सोचोगे, वैसा बनोगे।

• आप मानसिक तौर पर कितने भी सशक्त, संतुलित एवं विचारवान क्यों न हों, यदि आपमें तुरंत निर्णय लेने की क्षमता नहीं है तो आप कभी सफल नहीं हो सकते।

• अपनी अकर्मण्यता व दीन-हीन परिस्थितियों से समझौता कर लेने के कारण ही मनुष्य बेघर-बार बनता है।

• आपकी आत्मा में वह शक्ति है, जो शरीर को भयंकर दु:खों से बचा सकती है। आत्मा की इस शक्ति का उपयोग करें, अन्यथा आप किसी भी तीव्र विचार से रोगी हो सकते हैं या मर भी सकते हैं।

• आपकी इच्छाशक्ति कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह आपकी आशाओं की दासी है। अत: आप जैसी आशा करेंगे, वैसे ही बनेंगे।

• आपकी कल्पना ही आपके जीवनरूपी भव्य भवन का नक्शा है। अत: अपनी कल्पना को कल्पना ही न रहने दें, उसे कार्यरूप में परिणत करें।

• आपके बाहर कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो आपकी कामनाओं की पूर्ति कर सके। यह शक्ति केवल आपकी आत्मा में ही है, कहीं बाहर नहीं।

• आशा और आत्मविश्वास से ही हमारी शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं, इनसे हमारी उत्पादन शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

• आशा मनुष्य के लिए अमृत के समान है, जिस प्रकार पेड़-पौधों को सूरज से जीवन मिलता है, उसी प्रकार आशा से मनुष्य में नए उत्साह का संचार होता है।

• आशावादी विचारों को अपनाने से ही धन, संपन्नता और सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

• इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है, जिसे कंप्लीट कहा जा सके। उसे

आवश्यकता होती है देखभाल की, आत्मसंयम की।

• ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में ऐसा एक सुअवसर जरूर देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

• उग्र विचारों का जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

• उठो, अपने जीवन की योजना बनाओ ताकि तुम्हारी सोई हुई महान् प्रतिभा और शक्ति, जो अब तक व्यर्थ पड़ी हुई है, जाग उठे।

• उन्नति के लिए आत्म-संयम की आवश्यकता है। बिना आत्म-संयम के कोई भी मनुष्य न तो सफल हो सकता है, न उन्नति कर सकता है।

• ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना मकसद हो तो अपना काम निचली सतह से शुरू करना चाहिए।

• एक लक्ष्य, दूरदृष्टि और दृढ़ निश्चयवाले व्यक्ति जीवन-संग्राम में निरंतर आगे बढ़ते हैं और अवश्य ही जीत हासिल करते हैं।

• कमजोर व्यक्ति सुअवसरों का इंतजार करते रहते हैं, निर्भीक व्यक्ति इन्हें बनाते हैं।

• कष्ट इतना कष्टकर नहीं होता, जितनी कि उसकी चिंता कष्टकर होती है।

• काम तो सभी पूरे हो जाते हैं, लेकिन कुछ लोग रो-धोकर करते हैं और कुछ लोग शांत, एकाग्रचित्त होकर।

• अव्यवस्था आपकी बिगड़ी मानसिकता की परिचायक है।

• कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, बल्कि चिंता मारती है।

• किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए बलवती आशा रखने के साथ-साथ मानसिक व बौद्धिक शक्तियों का प्रयोग आवश्यक है।

• कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता, छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है।

• कोई भी रचना परिश्रम और धैर्य माँगती है, जबकि विनाश के लिए न श्रम की आवश्यकता है, न धैर्य की।

• क्रोध, घृणा, अहं, मोह, आसक्ति ऐसे भाव हैं, जो मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आत्ममंथन करना चाहिए।

• क्रोधित होना कोई बुरी बात नहीं। क्रोध में बुराई तब पैदा होती है, जब आदमी विवेक खो देता है।

• क्षमा, सहायता व सहयोग करने की आदत बना लें, ये गुण कभी व्यर्थ नहीं जाते और आड़े वक्त पर काम आते हैं।

• खुली आँखें हर जगह सुयोग ढूँढ़ लेंगी और खुले हाथों को कभी सत्कर्म की कमी नहीं रहेगी।

• घर की खुशहाली में स्वभाव का बड़ा महत्त्व होता है।

• चिंतन और चिंता में वही अंतर होता है, जो एक स्वस्थ व्यक्ति और रोगी में होता है।

• चिंता एक ऐसी हथौड़ी है, जो मस्तिष्क के सूक्ष्म व सुकोमल सूत्रों को विघटित कर उसकी कार्य करने की शक्ति को नष्ट कर देती है।

• चिंता ने आज तक कभी किसी काम को पूरा नहीं किया।

• चिंतारूपी सर्पिणी ने जन्म लेनेवाले प्रत्येक मनुष्य को डसा है।

• जब भी आप बुरा काम करते हैं, आपकी आत्मा उसके प्रति आपको सचेत अवश्य करती है। अत: दुष्कर्मों से बचने के लिए अपनी आत्मा की आवाज को नकारें नहीं।

• जब भी कोई काम न बने, मन टूट जाए, असफलता सामने आ जाए, तो उस समय अपने मन और मस्तिष्क को एकदम स्थिर रखें। स्वयं को शांत रखें। उस समय बौखला जाने या उदासीन होकर अथवा निराश बैठ जाने से काम तो नहीं बनेगा। संयम से काम लें। इस बात को तय कर लें कि जो हो गया है, अब उसको बदला नहीं जा सकता।

• जलन, डाह और बदले की भावना मनुष्य को दीन-हीन अवस्था में ला देती है।

• जिंदगी के पन्नों पर कुछ ऐसा लिखा जाए, जो पवित्र पुस्तक की तरह सुबह-शाम पढ़ा जाए।

• जिनका मन उत्साहपूर्ण, स्फूर्तिदायक, आध्यात्मिक विचारों से परिपूर्ण रहता है, वे सदा युवा रहकर दीर्घायु को प्राप्त होते हैं। व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वैसे ही रूप में वह भगवान् के अस्तित्व को देखेगा।

• जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है, उसी प्रकार हमें अपनी दूषित भावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्मसंयमरूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए।

• जिस भी कार्य को करने का लक्ष्य निर्धारित करें, उसे इस रूप में करें कि इससे पहले उस कार्य को कोई भी उस रूप में न कर पाया हो।

• जिस व्यक्ति को गरीबी का ही दु:स्वप्न सदा भयभीत करता है, वह कभी भी विपुल धन-संपत्ति का स्वामी नहीं बन सकता।

• जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो, उसे सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

• जिसके मन में खोट न हो, वही सुंदरता को परख सकता है।

• जिसमें आत्मविश्वास हो, वह उन चिंताओं और आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनसे दूसरे मनुष्य दबे रहते हैं।

• जीवन में कितने भी अंधकारमय क्षण क्यों न आएँ, सब थोड़ी देर ठहरकर चले जाते हैं और फिर नई आशा की किरणें चमकने लगती हैं।

• जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसे ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है, अगर हम चाहें कि विचार के विपरीत हमारी शारीरिक स्थिति हो तो ऐसा होना बिल्कुल असंभव है।

• जो दूसरों के जीवन के अंधकार में सुख का प्रकाश पहुँचाते हैं, उनका इस संसार से कभी नाश न होगा, वे अमर हैं।

• जो दूसरों के जीवन में सहायक होता है, वह जीवन में सर्वोत्तम परिणाम बटोर लेता है।

• जो भाग्य के सहारे बैठ जाते हैं, उनका भाग्य भी उन्हीं के पास बैठ जाता है।

• जो व्यक्ति अपनी योग्यता पर संदेह करता है, वह न किसी अन्य का भला कर सकता है और न ही स्वयं को लाभ पहुँचा सकता है।

• तुरंत निर्णय लेने के साथ यह भी जरुरी है कि आप सही निर्णय लें। निर्णय तो मूर्ख व्यक्ति भी ले सकता है, लेकिन उसका परिणाम आप स्वयं समझ सकते हैं।

• त्रुटियाँ या भूल चाहे काम को टालने की हों, समय का पालन न करने की या फौरन ही क्रोधित होने की अथवा तर्कहीन व्यवहार की, आपकी प्रगति में भयंकर रूप से बाधक हैं।

• निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है—अंत:करण में आशा की चेतना को जागना।

• निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है, जो हमने कुछ सत्कर्मों को करने के लिए किए थे।

• परमात्मा से संबंध जुड़ जाने पर भय, शंका, संदेह या संकीर्णता दूर होकर दिव्यता का प्रकाश होने लगता है।

• पुरुषार्थ, साहस व निडरता से किए गए सभी कार्यों से निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है।

• पूर्वजों से मिली संपत्ति और आरामतलबी सफलता के मार्ग में भारी रुकावटें हैं।

• प्रकृति ने हमारे भीतरी अंगों के व्यायाम के लिए और हमें आनंद प्रदान करने के लिए ही हँसी बनाई है।

• प्रतिभावान व्यक्ति की राह को बाधाएँ कुछ देर रोक तो सकती हैं, लेकिन सदैव के लिए उसे हतोत्साहित नहीं कर सकतीं।

• प्रत्येक बुरा कार्य आँखों पर परदा डाल देता है। आत्मा को दबा देता है।

• प्रत्येक विचार, प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है। अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। यही प्रकृति का नियम है। इसमें देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं। इसलिए अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो अच्छे विचार रखिए।

• प्रबल मनवाले तथा कार्य को किसी भी कीमत पर पूरा करनेवाले व्यक्ति न तो दु:खों की चिंता करते हैं और न ही सुखों की अपेक्षा।

• प्रसन्नता अचूक औषधि है। इसमें स्नान करने से व्यक्ति निरोग और पवित्र हो जाता है।

• फिजूलखर्ची बहुत ही बुरी आदत है, पर शरीर को भयंकर कष्ट देकर की गई बचत उससे भी बुरी है।

• बच्चों को सिखाएँ कि वे प्रत्येक स्थान पर सौंदर्य को खोजें।

• बड़े-बड़े कार्य तभी पूरे होते हैं, जब आप जान की बाजी लगाकर उस कार्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प कर लेते हैं।

• बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

• बिना विश्वास और आश्वासन के साहस नहीं हो सकता और आधी लड़ाई तो इसी धारणा में है कि हमने जो ठाना है, उसे कर सकते हैं।

• भोग-लालसाओं में पैसा बरबाद न करके जो व्यक्ति मितव्ययी और बचत करनेवाला है, उसकी उन्नति निश्चित है।

• मजबूत विचारों से आत्मा की शुद्धि होती है, मन को एक नया उत्साह मिलता है।

• मन से दरिद्रता के विचार त्यागकर परमात्मा से संबंध स्थापित करें, संपन्नता स्वयं आपके पास दौड़ी चली आएगी।

• मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है, जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है।

• मनुष्य का कोई गुण ऐसा नहीं है, जिसे हर मनुष्य अपने में पैदा न कर सके या विकसित न कर सके।

• मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है, जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाए तो जल्दी बिगड़ जाती है।

• मनुष्य का विचार उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। जैसा विचार वह मन में रखेगा, वैसा ही भाव उसके चेहरे पर उभर आता है। अशुभ विचारवाला मनुष्य रोगी बनता है, जबकि शुभ विचारवाला स्वस्थ।

• मनुष्य तब तक नहीं थकता, जब तक उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है और मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

• महान् और उदात्त चरित्र बनाने का एक ही उपाय है कि आप एक महान् और उदात्त आदर्श के अनुरूप जीवन बिताएँ।

• महानता की आकांक्षा करने से आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है। वे जाग्रत् होती हैं।

• मानव जीवन की दिशा बदलने में कभी एक छोटी सी बात भी अद्भुत प्रभाव दे जाती है।

• मैं आत्मा हूँ, मैं सबकुछ कर सकता हूँ। मेरे लिए प्रत्येक कार्य संभव है। असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में मिलता है।

• मौलिकता मनुष्य के अंदर होती है, यह हर व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत रचना होती है, इसलिए यदि आप अपने जीवन को सफलताओं से समृद्ध बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको मौलिक बनना पड़ेगा।

• यदि आप अपने जीवन में हर बाजी जीतना चाहते हैं तो आपको एक विजेता जैसा मन बनाना होगा, विजेता जैसे आचार-विचार रखने होंगे।

• यदि कष्ट को हँसते-हँसते सहन किया जाए तो वह भी सुखद हो जाता है, पर यह तभी हो सकता है जब काम को महान् बना दिया जाए।

• यदि बुद्धि अनुचित पथ पर न चले तो विपत्ति कहाँ से उत्पन्न हो सकती है!

• यदि हम स्थायी आनंद चाहते हैं तो हमें ऐसी वस्तुओं का मोह त्यागना होगा जो किसी भी समय हमसे अलग हो सकती हैं।

• यदि हृदय निर्मल न हो तो आप यह निश्चित मानिए कि न तो विचार-विमर्श निर्मल होंगे, न वार्त्तालाप और न जीवन।

• लक्ष्यहीन व्यक्ति जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

• विशाल धन-संपत्ति प्राप्त करने के लिए पहले मन में वैसे विचार लाएँ, फिर मनमें उसके प्रति दृढ़ निश्चयी होकर कर्म करें। उसके बाद ही आप जीवन में धन प्राप्त कर सकते हैं।

• वे जीत गए, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वे जीतेंगे।

• वे सभी लोग, जिन्होंने बड़ी-बड़ी चीजें हासिल कीं, बहुत बड़े स्वप्नद्रष्टा रहे होंगे।

• व्यक्ति के स्वभाव पर उसका भविष्य निर्भर करता है।

• शहरी सभ्यता में रात को दिन में बदल देने की तमन्ना, स्वयं में ही स्वास्थ्य को खोखला करने, ताकत को छितराने और चरित्र को कमजोर करने का कृत्य है।

• सच्चा पुरुषार्थी वही है, जो बार-बार असफल होने पर भी अपने प्रयत्न में शिथिलता नहीं आने देता और नए उत्साह से उद्यम करने लगता है।

• सद्कर्म करिए और जरूरतमंदों की नि:स्वार्थ भाव से सहायता तथा सेवा करिए।

• सफलता प्राप्त करने के लिए उदार होकर अपना कर्तव्य पालन करते हुए उसमें दु:ख नहीं, आनंद की अनुभूति करें।

• सफलता सबसे पहले आपके मन में घटित होती है। उसके बाद ही वह जीवन में उतरती है।

• सबसे बड़ा धन प्रसन्नता है।

• सभ्यता में उस मनुष्य के लिए स्थान नहीं है, जो उदास, खिन्न और निराश हो।

• समय की गति तेज है, यदि आप चूक गए और वह आगे निकल गया तो आपके हाथ कुछ नहीं आएगा।

• समस्त दिशाओं में विजयी होने के लिए हमें अपने मन से सभी विरोधात्मक विचारों—ईर्ष्या, द्वेष, जलन व प्रतिकार की भावनाओं को एकदम दूर रखना होगा।

• संपूर्ण योग्यता न होने पर भी आशा से भरे हुए व्यक्ति का काम सर्वांगपूर्ण, उपयोगी और सुंदर होगा, जबकि

निराशावादी व्यक्ति का कार्य असुंदर, असंगत, अनुपयुक्त एवं असंबद्ध होगा।

• सर्वोत्तम व्यक्ति वे नहीं हैं, जिन्होंने अवसरों का इंतजार किया, बल्कि वे हैं जिन्होंने अवसरों को अपनाया, कैद किया, जीता और गुलाम बनाया।

• स्वभाव कच्ची मिट्टी की भाँति होता है, जिसकी कोई शक्ल नहीं होती। इसे आकृति देने की आवश्यकता होती है।

• स्वस्थ चिंतन मनुष्य में आत्मविश्वास की शक्ति भर देता है और वह सफलता की ओर निरंतर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत चिंताग्रस्त व्यक्ति रोगों से ग्रस्त, निराश और हताश होता है। उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण होकर नष्ट हो जाता है।

• हम दबाव से अनुशासन नहीं सीख सकते।

• हमारी अधिकतर बाधाएँ पिघल जाएँगी अगर उनके सामने दुबकने के बजाय हम उनसे निडरतापूर्वक निपटने का मानस बनाएँ।

• हमें किसी सफल व्यक्ति से प्रेरणा लेकर कुछ सीखना चाहिए, न कि उससे ईर्ष्या करके।

• हर महान् व्यक्ति उसी अनुपात में महान् बना है और हर सफल व्यक्ति उसी अनुपात में सफल हुआ है, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

❑

उन्नति की राहें

अंतरचेतना

अंतरचेतना से मिलनेवाले दिशा-निर्देशों को ग्रहण करने के लिए अपना दिमाग हमेशा खुला रखें। जब भी आपको अपनी योजना में सुधार लाने या किसी नई योजना की ओर बढ़ने की प्रेरणा का झटका महसूस हो, बिना किसी संदेह या हिचकिचाहट के उस पर अमल करें। जिस पल आपका दिमाग हकीकत को समझता है और यह सोचने लगता है कि किसी भी विषय का कोई अंतिम सत्य नहीं है और उस विषय से जुड़ी कई सच्चाइयाँ सामने आ सकती हैं, उसी पल आप सहिष्णुता के नियम से सीखने लग जाते हैं।

* * *

अच्छे कपड़े पहनें

अच्छे ढंग के कपड़े पहने व्यक्ति की हर जगह सराहना होती है। अच्छे कपड़े पहनने से व्यक्ति में चुस्ती-फुरती का एहसास होता है। वह अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और तनावमुक्त महसूस करता है। उसके चेहरे पर खुशी की चमक रहती है। उसके हाथ मिलाने में अधिक विश्वास झलकता है। घटिया कपड़े पहनने से हमेशा हीन भावना पनपती है।

* * *

अध्ययन

जीवन का पूरा आनंद उठाते हुए जीनेवाले लोग जीवन भर सीखते रहते हैं। वे नई-नई बातों को सीखने से कभी रुकते नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावकारी एवं कुशल ढंग से अध्ययन करना चाहिए तथा नई जानकारी हासिल करनी चाहिए।

* * *

अनियंत्रित व्यवहार

बार-बार अधीरता, घबराहट दिखाना बेवकूफी है और इससे नियंत्रण, समझदारी एवं संवेदनशीलता की कमी जाहिर होती है। आपके अनियंत्रित व्यवहार से उत्पन्न घटना को लोग बहुधा भूल जाएँगे, लेकिन यह जानना उचित है कि भावनाओं और चिढ़न को किस तरह नियंत्रण में रखा जा सकता है और अगर यह बार-बार उठनेवाली समस्या बन चुकी है, तो बेहतर होगा कि अपने क्रोध के बारे में किसी से बातचीत या सलाह-मशविरा करें।

* * *

अनुभव

अनुभव का कोई विकल्प नहीं है। आप जितना अधिक और जितनी जल्दी अनुभव प्राप्त कर सकें, उतना ही अधिक आपके लिए अच्छा होगा। अनुभव प्राप्त करके आप अपने हितों एवं लक्ष्यों का समर्थन कर सकेंगे या उनका दिशांतरण कर सकेंगे।

* * *

अभिलाषा

अभिलाषा तभी फलदायक होती है, जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है।

* * *

अभीष्ट

आपको जो चाहिए, सदा उसी के बारे में सोचें। सफल व्यक्ति और साधारण व्यक्ति के बीच मुख्य अंतर यह है कि सफल व्यक्ति हर समय उसी के बारे में सोचता है, जो उसे चाहिए। जब आप अपने अभीष्ट के बारे में सोचते रहते हैं, आपके मस्तिष्क की पेशियाँ सुदृढ़ होती हैं और आप अपनी दिशा पर ध्यान लगाए रहते हैं।

* * *

अवसर

अवसर से लाभ उठाने में असाधारण रूप से वही लोग सफल हुए हैं, जिन्होंने प्राप्त अवसरों में सुधार लाकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया।

* * *

सर्वत्र ही सदा ही मौके मिलते रहते हैं। मौकों की कमी नहीं है। कमी है उन्हें ढूँढ़ने की, उनके लिए तैयार रहने की और उनसे उचित लाभ उठाने की। हम भ्रम में रहते हैं और प्राय: जो वस्तु हमारे पास आती है, वह हमें दिखाई नहीं देती। अवसर के मिलते ही उसे पकड़ लें। उसे हाथ से न जाने दें। उसे अधिकाधिक अपने मुताबिक बनाएँ।

* * *

अवसाद

उदासी, विषाद अथवा ग्लानि की मानसिकता व्यक्तित्व विकास में सबसे बड़ी बाधा और प्रगति के भी प्रतिकूल है। मानसिक अवसाद से घिरे व्यक्ति का मन किसी भी काम में नहीं लगता। वह किसी भी विषय पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। जीवन में दिलचस्पी नहीं लेता। उदास, निराश व विषादग्रस्त लोगों के नजरिए में बदलाव आ जाता है। उन्हें लगता है कि वे जीवन में कुछ कर नहीं सकते। वे अपनी छोटी-छोटी गलतियों के लिए परेशान रहते हैं तथा हरदम उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं। मानसिक अवसाद को दूर करने का बेहतरीन उपाय यह है कि आप अपने काम में व्यस्त रहें। अकेले रहने की आदत को छोड़ें। दोस्तों के साथ बाहर जाएँ। लोगों से मिलें-जुलें।

* * *

मानसिक अवसाद के गहरे चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए आपको जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। कभी-कभार सहकर्मी के साथ ठहाके लगाने में भी कोई बुराई नहीं है। याद रखिए, यदि आप रोते हैं, तो आपके साथ कोई नहीं रोएगा। हाँ, यदि आप हँसते हैं, तो हो सकता है कि कुछ लोग आपकी हँसी में शामिल होने के लिए साथ आ जाएँ।

* * *

असफलता

गलतियों से सीखें। नाकामयाबी सिर्फ एक घटना तथा सीखने योग्य अनुभव है यह एक बढ़ता हुआ कदम है, जो सफलता की ओर ले जाता है। सफल व्यक्तियों ने न जाने कितने बार असफलता का मुँह देखा है, उनके लिए असफलता सिर्फ एक गुजरी हुई घटना है, जैसे पुल के नीचे बहता पानी।

* * *

असली शिक्षा

आदमी की असली शिक्षा कष्टों और अभावों के बीच होती है। कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जो

प्रयत्न और दौड़-धूप करता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है। यदि कठिनाइयाँ न होतीं, तो सफलता भी न होती। संग्राम ही न हो, तो जय या विजय कहाँ से प्राप्त हो!

* * *

अहंकार

अहंकार क्षण भर में मनुष्य को अपनी गिरफ्त में लेकर उसे असफलता की ओर धकेल देता है। अहंकारी मनुष्य का सिर हमेशा झुकता है। इसलिए अहंकार-रूपी अवगुण से मनुष्य को सतत बचना चाहिए, क्योंकि सफलता चाहनेवालों के लिए यह बहुत घातक होता है।

* * *

अहंकारी व्यक्ति सफलता की सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर खड़ा रहकर ही स्वयं को सर्वोपरि समझता है। इसी भावावेश में वह सफलता से दूर रह जाता है। उसका स्वाद तक नहीं चख पाता। सर्वगुण-संपन्न व्यक्ति भी जब इस अहंकार का शिकार होता है, तो यदि वह सफलता के उच्च शिखर पर बैठा हो, तो भी धम्म से नीचे आ गिरता है।

* * *

स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर आप सफलता व लोकप्रियता दोनों को अर्जित कर सकते हैं। अहंकारी अथवा घमंडी व्यक्ति को न केवल समाज वरन् उसका अपना परिवार तथा मित्रगण तक पसंद नहीं करते। आप कितने ही प्रतिभाशाली और योग्य क्यों न हों, यदि आप घमंडी हैं, तो लोग आपको पसंद नहीं करेंगे। घमंडी व्यक्ति से व्यवहारकुशलता की उम्मीद करना बेमानी है।

* * *

आंतरिक भाव

सफलता वह नहीं है, जिसको संसार सफलता बताता है। अपनी सफलता का परिणाम, अपना हृदय ही बताएगा। एक विशाल मकान की ऊँचाई संसार की दृष्टि में वही है, जो उस मकान के शिखर से पृथ्वी तक दिखाई देती है। इसी प्रकार लोग आपके बाहरी गुण देख सकते हैं। आपके श्रम, आपके धन, आपके व्यवसाय, आपके मकान की सजावट को देखकर लोग आपके जीवन की सफलता का माप बता सकते हैं, परंतु आपके आंतरिक भाव आपको ही स्पष्ट दिखाई दे सकते हैं।

* * *

आकर्षण-शक्ति

वैयक्तिक आकर्षण-शक्ति पूर्णतया एक तरह का मानसिक वैशिष्ट्य है और भौतिक देह का उससे कोई संबंध नहीं है। सच में वैयक्तिक चुंबकत्व के दो ध्रुव होते हैं—शारीरिक और मानसिक। वास्तव में एक चुंबकीय प्रभावशाली व्यक्ति को दोनों ध्रुवों का विकास साथ-साथ करना चाहिए। जब दोनों समकालिक और सुविकसित हों, तब आप वास्तव में एक चामत्कारिक व्यक्ति को उभरते देख सकते हैं, एक ऐसा व्यक्ति, जिसके भाग्य में सफलता निश्चित होती है। मानसिक चुंबकत्व उन विचार तरंगों को उत्पन्न कर सकता है, जो दूसरों को प्रभावित करती हैं। शारीरिक चुंबकत्व वह शक्ति है, जो दूसरों को उसी शक्ति को बाहर लाने के लिए प्रेरित करती है।

* * *

आत्म-प्रेरणा

हमारी जितनी भी कोशिशें हैं, उन सबके मूल में आत्म-प्रेरणा विद्यमान है, वहाँ अवसर या मौके जैसी बातें गौण हैं। चमत्कार अथवा मौकों की तलाश में रहनेवाला व्यक्ति सफलता को अर्जित नहीं कर पाता। संकल्पबद्ध रूप से ईमानदारी व सूझ-बूझ के साथ किया गया परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। हमारे कार्यक्षेत्र से अधिक हमारा संकल्प मूल्यवान होता है। सही सोच व उत्कृष्ट संकल्प ही हमें कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर होने में मदद करते हैं।

* * *

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास एक अनुभूति, एक मनोभाव है, जो समय के साथ विकसित होता है। आपको या दूसरों को कठिन लगनेवाली किसी स्थिति के बारे में काररवाई करने की योग्यता आत्मविश्वास कहलाती है। जो स्थितियाँ हमें असुविधाजनक प्रतीत होती हैं, उनको सँभालने के लिए हमें आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। हालाँकि उस समय स्थिति से निपटना एक कठिन कार्य हो सकता है, लेकिन उसके परिणामस्वरूप मिलनेवाले लाभ बहुत अधिक हैं। चूँकि आपने सफलतापूर्वक कोई कठिन कार्य को पूरा कर दिखाया, इसलिए अब आपको यह भरोसा हो गया है कि आप वे कार्यभार सँभाल सकते हैं, जो दूसरों को मुश्किल लगते हैं। लोग मुड़कर आपकी तरफ देखेंगे और आपसे प्रेरित होंगे। आपके उदाहरण से उन्हें यह समझने का सुखद एहसास होगा कि अगर कोई अन्य व्यक्ति ऐसा कर सकता है, तो वे भी कर सकते हैं। आत्मविश्वास एक भावना है कि कोई कार्य कितना भी कठिन क्यों न हो, आप उसे पूरा करके रहेंगे और अंत में सबकुछ ठीक हो जाएगा।

* * *

आत्मविश्वास के साथ हजारों विपत्तियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

* * *

आत्मविश्वास में वह शक्ति होती है, जिसके सहारे हम सहस्र विपत्तियों का सामना कर उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

आत्मविश्वास

चेहरे पर आत्मविश्वास का भाव हरेक को प्रभावित करता है। अगर आप अपने चेहरे पर विफलता और निराशा का भाव लिये फिरेंगे, तो लोग आपसे दूर रहेंगे। अगर आपको जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और आप चिंताग्रस्त हैं, तब भी आपके सोच और आपके चेहरे का भाव सकारात्मक होना चाहिए। दूसरों के साथ मजबूती से हाथ मिलाएँ। हाथ मिलाते हुए या बात करते समय दृष्टि संपर्क बनाए रखें। कम बोलें और निश्चय के साथ बोलें।

* * *

जिन लोगों में आत्मविश्वास है, उन्होंने यहाँ तक पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत की है और इस यात्रा में उन्होंने कई ठोकरें भी खाई हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उन हालात में उन्हें क्या करना चाहिए, जहाँ उन्हें दबाव में काम करना पड़ रहा है और असफलता भी हाथ लग सकती है। इस मन:स्थिति के साथ वे कठिन-से-कठिन कार्य की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते हैं, भले ही कार्य में कितना भी खतरा या जोखिम क्यों न हो! अगर दूसरों को ऐसा लगता भी है कि वे निर्भीक हैं, तब भी सच यही है कि उन्होंने उस भय के साथ रहना सीख लिया है।

* * *

आत्मशक्ति

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में कुछ भी संभव बनाने की पर्याप्त आत्मशक्ति रखता है, लेकिन फिर ऐसा क्यों है कि हमें अपने लक्ष्यों को पूरा करना और अपने सपनों को साकार करना कठिन लगता है। सच कहा जाए, तो व्यक्ति खुद ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है। यह सब इस पर निर्भर करता है कि अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए आप कितने आत्म-प्रेरित हैं। अगर आप अपनी आंतरिक शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास नहीं करेंगे, तब आपके लिए यह समझना कठिन होगा कि आपको किस दिशा में जाना चाहिए। खुद से बात करें और खुद को बताएँ कि आप मजबूत हैं तथा इसके सहारे आप अवश्य ही उस आत्मविश्वास का निर्माण कर सकेंगे। आपको स्वयं पर विश्वास करना होगा और यह समझना होगा कि आपके अंदर वह शक्ति और साहस है, जो आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता दिखाएगा। अपने में विश्वास करें और अपने लक्ष्य का एक काल्पनिक चित्र बनाएँ। हर दिन की शुरुआत सकारात्मक कथनों से करें और अगर कुछ गलत हो जाए, तब भी उसे सही अर्थ में लें। विफलताओं से मिली सीख प्राय: सफलता की कुंजी होती है।

* * *

आत्मसंयम

नकारात्मक विचारों को बहिष्कृत करने का मतलब न केवल ऐसे लक्ष्य निर्धारित करना है, जिन्हें प्राप्त किया जा सके, बल्कि एक आत्म-नियंत्रित ढंग से उनको पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाना भी है। ऐसा करने से आपका ध्यान उस कार्य पर लगा रहेगा, जो आपको पूरा करना है। आपको पता होना चाहिए कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। सही तरीके से सही काम करें।

* * *

आदतें

आमतौर पर हर आदमी की अपनी कुछ ठेठ आदतें होती हैं। आपकी भद्दी आदतें दूसरों के लिए परेशानी का कारण बन जाती हैं। फिर किस तरह आप उन्हें प्रभावित करेंगे? स्वच्छता, समय की पाबंदी, अपना काम समय पर समाप्त करना, काम के प्रति ईमानदारी और निष्ठा, दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनना, धूम्रपान और शराबखोरी से दूर रहना—ये कुछ ऐसी अच्छी आदतें हैं, जो आपके व्यक्तित्व को निखार देती हैं और उसे अधिक ओजस्वी बनाती हैं। आप लोगों के चहेते बन जाते हैं।

* * *

आदर्श

अपने आदर्श तक पहुँचने के लिए आपकी आस्था व श्रद्धा आपकी बड़ी सहायता करती हैं।

* * *

अपने व्यक्तित्व को ऐसा बनाएँ कि दूसरे आपको अपना आदर्श मानें। जब आप कठिन परिस्थितियों में भी अपना दिमागी संतुलन बनाए रखेंगे, हर हाल में खुश रहेंगे, दूसरों के सुख-दु:ख में उनकी मदद करने को हमेशा तत्पर रहेंगे, तो आप किसी आदर्श व्यक्ति से कम नहीं होंगे। सोचिए, आखिर आप अपने पिता, माता या गुरु को अपना आदर्श क्यों मानते हैं। उनमें जरूर ऐसे गुण होंगे, जो हर किसी को प्रभावित करते होंगे, तो क्यों न आप भी दूसरों के आदर्श बनें।

* * *

आभार ज्ञापन

दूसरों के पास जो कुछ है, उसे देखकर ईर्ष्या करना बहुत आसान है। दूसरे के पाले की घास वैसे भी अधिक हरी दिखाई देती है। कृतज्ञता सीखना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन चीजों के बारे में सोच-विचार करना सीखें, जिनके लिए आपको आभार मानना चाहिए।

* * *

आशावाद

कभी निराश न हों, हार न मानें। आप चाहे कुछ भी करें, आपको कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अगर आप प्रत्येक सफल व्यक्ति की जीवनी पढ़ें, तो आपको पता लग जाएगा कि कभी आशा न छोड़ना उनकी सफलता का एक मंत्र रहा। अगर आप हार मान लेंगे, तो सफल होने के उद्देश्य से आपके द्वारा खर्च की गई सारी शक्ति और पहले किया गया सारा प्रयास विफल हो जाएगा। अत: अपने निश्चय पर अटल रहें और कभी आशा न छोड़ें, भले ही स्थिति कितनी भी कठिन हो जाए।

* * *

प्रसन्न रहनेवालों के मुकाबले निराशावादी लोग शीघ्र रोगग्रस्त होते हैं। ऐसे लोग अपने मानसिक तनाव के कारण स्वयं तो दु:खी होते ही हैं, अपने परिवार के सदस्यों तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी अपने व्यवहार से दु:खी कर देते हैं, जबकि आशावादी लोग अपने दृढ़ संकल्प, कठोर श्रम एवं आत्मविश्वास से जीवन में जिस वस्तु को पाना चाहते हैं, पा ही लेते हैं। ऐसे लोगों के निर्णय अपने स्वविवेक पर आधारित होते हैं। वे सुनते तो सभी की हैं, किंतु करते अपने मन की हैं।

* * *

इच्छाशक्ति और सफलता

इच्छाशक्ति का सफलता पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे सफलता प्राप्त होती है, इच्छाशक्ति भी उतनी ही बढ़ती जाती है और जैसे-जैसे इच्छाशक्ति दृढ़ से दृढ़तर होती जाती है, वैसे-वैसे सफलता सुगम होती जाती है। ऐसा कहना अनुचित न होगा कि सफलता और इच्छाशक्ति आपस में एक-दूसरे की पूरक हैं। यदि कोई मनुष्य किसी कार्य-प्रणाली के अनुसार कार्य करने के लिए पक्का विचार कर ले, तो वह दाईं या बाईं तरफ मार्ग में नहीं घूमेगा, चाहे उस राह में कितने ही प्रलोभन क्यों न ललचाएँ! वह व्यक्ति अपने लक्ष्य पर सदैव नजर रखेगा।

* * *

उत्तरदायित्व

जिस व्यक्ति को दुनिया में कुछ करना है, उसे उत्तरदायित्व से नहीं घबराना चाहिए। उत्तरदायित्व वही व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, जो असफलता झेलने और लोकमत के नियमों का खंडन करने का साहस रखता है।

* * *

उदारता

हँसमुख व जिंदादिल लोग सभी के बीच लोकप्रिय होते हैं। अपने परिचितों, रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों आदि के वस्त्र, सामान, उपहार व समृद्धि देखकर उनसे ईर्ष्या करने के बजाय अपने साधनों में संतोष करके आप एक ओर जहाँ अपार संतुष्टि का अनुभव करेंगे, वहीं दूसरी ओर अनावश्यक मानसिक तनाव से भी बचे रहेंगे। स्वयं को संकीर्णता के दायरे में रखना आपकी सोच को कुंठित कर देगा।

* * *

उपलब्धियाँ

प्राय: देखा गया है कि जो लोग निरुत्साहित या उदास अनुभव करते हैं, वे अपने काम में रुचि नहीं लेते हैं अथवा अपनी प्रतिभा का उपयोग नहीं करते हैं। जिन कार्यों में आपकी रुचि है या जिन्हें करने से आपको खुशी मिलती है, उन्हें करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। खुश होने और गर्व अनुभव करने का यह सबसे आसान तरीका है। हर व्यक्ति ने जीवन में कोई एक काम ऐसा अवश्य किया होता है, जिस पर वह गर्व कर सके। हमें बस इतना करना चाहिए कि उस गर्वीले अनुभव को याद करें और अपनी उपलब्धियों के बखान में अपने घनिष्ठ मित्रों या करीबी रिश्तेदारों को हिस्सेदार बनाएँ। इससे आपकी उदासी दूर होगी और मन खुश हो जाएगा।

* * *

एकाग्रता

सब तरफ से ध्यान हटाकर एक ही विचार या विषय पर ध्यान लगाने से हमारा ध्यान केंद्रीभूत होता है, हमारी ऊर्जाएँ अप्रासंगिक गतिविधियों या विचारों पर नष्ट नहीं होती हैं, इसीलिए ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का विकास करना हर उस व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, जो अपने जीवन पर पूरा नियंत्रण रखना चाहता है। प्रत्येक प्रकार की सफलता के लिए यह क्षमता अत्यावश्यक है। इसके बिना हमारे प्रयास बिखर जाते हैं, लेकिन इस योग्यता के साथ हम बड़े-बड़े कार्य पूरे कर सकते हैं। सकारात्मक ढंग से इसकी ओर बढ़ें और फिर देखें, सफलता कैसे आपके करीब आती है।

* * *

कमजोरियाँ

अपनी क्षमताओं को जानने से पहले अपनी दुर्बलताओं को पहचानना अधिक महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि उसमें अपनी कमजोरियों को पहचानने की क्षमता का अभाव होता है। अपनी क्षमताओं को ठीक से जान लेना महत्त्वपूर्ण है और तब हम आगे बढ़ने तथा अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उन क्षमताओं का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन अगर हमें अपनी दुर्बलताओं का पता नहीं होगा या हम उन्हें पहचानते तो हैं, लेकिन उनकी अनदेखी कर देते हैं, तो वे हमारे पतन का कारण बन सकती हैं और हमारी कमजोरियाँ हमारी क्षमताओं को कमजोर कर देंगी तथा उन्हें नकारात्मकता में बदल देंगी, जिनसे हम बचना चाहते हैं!

* * *

कर्मयोगी

जिस जिंदगी के पन्ने उद्यम, साहस और धैर्य की रोशनी से नहीं लिखे गए, वह अधूरी है। जहाँ विवेक का मंत्र नहीं, वह जीव सुखी नहीं। कर्मयोगी मनुष्य ही जीवन के आदर्श होते हैं। कर्मठता ही हमारे जीवन का पर्याय है। कर्मयोगी मनुष्य के हृदय में आशा, उत्साह तथा परिश्रम की ऐसी मनोमुग्धकारी त्रिवेणी की जल-रश्मियाँ बहती हैं, जिनमें अवगाहन करके मनुष्य का रोम-रोम पुलकित हो झूम उठता है।

* * *

कार्य-क्षमता

स्वयं से रोज यह सवाल करें कि कैसे आप बेहतर और अधिक कार्य कर सकते हैं। कार्य-क्षमता आपके

मस्तिष्क पर निर्भर करती है। जब आप अपने मस्तिष्क पर जोर डालेंगे और उससे यह सवाल करेंगे कि कैसे आप और अधिक कार्य कर सकेंगे, तब आपका मस्तिष्क आपको कार्य करने के विभिन्न तरीके बताएगा, जिसके द्वारा आप काफी समय व ऊर्जा बचा सकेंगे।

* * *

कॅरियर

अपनी महत्त्वाकांक्षा के स्तर और अपनी नैसर्गिक क्षमता के आधार पर आप उन जीविकाओं की पहचान कर सकते हैं, जो आपको मनचाही जीवन-शैली का इच्छित लाभ दिलाने में सहायक हो सकती हैं। अगर आप जल्दी-जल्दी यात्रा करने की इच्छा रखते हैं और एक गतिशील व्यवस्था के स्वामी बनना चाहते हैं, तो आप मार्केटिंग का कॅरियर चुन सकते हैं, इस लक्ष्य के साथ कि आप अपनी कंपनी स्थापित करेंगे या किसी बड़ी कंपनी के प्रमुख बनेंगे।

* * *

क्रोध

क्रोध मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वाधिक दुर्बल पक्ष है। क्रोधी व्यक्ति को घर-परिवार, कार्यस्थल अथवा समाज कोई भी कहीं भी पसंद नहीं करता। अपने तमाम गुणों के बावजूद बात-बात पर क्रोध से फुफकार उठनेवाले व्यक्ति लोगों की नापसंदगी का कारण बनते हैं। देखने में यह आता है कि जब हम झुकने को तैयार नहीं होते, तो क्रोधित हो जाते हैं। हम अन्य लोगों पर क्रोध इसलिए करते हैं, क्योंकि हमें उनसे डर लगता है अथवा हम सोचते हैं कि हमारा उन्होंने तिरस्कार किया है। हमारे क्रोधित होने की वजहें असंगत बातें, गलत व्यक्ति या गलत कारण हैं।

* * *

हर मनुष्य में क्रोध का थोड़ा अथवा ज्यादा पुट होता है। किसी मनुष्य में क्रोध पत्थर पर खिंची लकीर सरीखा होता है, तो कुछ में जल पर अंकित रेखा के समान। क्रोध में सदैव गड़बड़ी होती है। क्रोधी स्वभाव किसी कार्य में विघ्न का कारण बनता है। यह हमें कार्यकुशलता से दूर ले जाता है तथा जो चीजें हमारी सहायक हो सकती थीं, वही हमारी विरोधी बन जाती हैं। आचरण और विवेक के अभाव में व्यक्ति के सद्गुण विसर्जित हो जाते हैं। भटकाव की यही मन:स्थिति क्रोध को आमंत्रित करती है। इससे बचना ही समझदारी है।

* * *

क्षमता

अपना ध्यान अपनी कमजोरियों के बजाय अपनी क्षमताओं पर लगाएँ। उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करें, जहाँ आपने अपनी क्षमता का सबूत दिया है, साथ ही अपनी कमियों, कमजोरियों पर भी अंकुश लगाना चाहिए और उन्हें दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए, किंतु इस प्रक्रिया में भी आपका ध्यान आपकी क्षमताओं पर रहना चाहिए।

* * *

खुला दिमाग

खुला दिमाग रखनेवाला व्यक्ति ही वास्तव में शिक्षित है और जीवन के सुख हासिल करने में सक्षम है। खुले दिमाग के कारण कुछ भी असह्य नहीं लगता। आपका शरीर और दिमाग चाहे वह जीवित हो या मृत, लाखों ऐसी लघु ऊर्जाओं का संग्रह है, जो कभी मर ही नहीं सकतीं। ये ऊर्जाएँ अलग अस्तित्व रखती हैं, लेकिन समय पड़ने पर ये सब मिलकर सद्भावपूर्ण तरीके से काम करती हैं।

* * *

खुशी की शक्ति

जो व्यक्ति ईर्ष्या, क्रोध व प्रतिशोध की भावना के कारण गलत मार्ग की ओर उन्मुख हो जाते हैं, उनका जीवन कष्टप्रद हो जाता है, जबकि मन की शुचिता व्यक्ति को सदाचरण पर चलने की प्रेरणा देती है। खुशी का जज्बा व्यक्ति को शालीन, विनम्र और व्यवहारकुशल बनाता है। जिस व्यक्ति के अंदर दिल से निकली सच्ची खुशी विराजमान रहती है, उसका लोक-व्यवहार उत्कृष्ट होता है। जो खुशी की शक्ति को पहचान जाते हैं, वे छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ तलाशकर अपने जीवन को खुशहाल बना लेते हैं।

* * *

गलती

गलतियों को अनावश्यक तूल न दें और न ही उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर देखें। कोशिश होनी चाहिए कि गलती को किस तरह से सुधारा जा सकता है। गलती किसी से भी हो सकती है। सकारात्मक रवैया अपनाने पर व्यक्ति अपनी गलती से सबक लेता है। हमें अपने साथी, सहयोगी, मित्र अथवा कर्मचारी की इसी क्षमता को उभारना चाहिए।

* * *

चरित्र और व्यवहार

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण करने में चरित्र को मूल तत्त्व माना जा सकता है। केवल चरित्र और व्यवहार में सुधार करने से ही व्यक्तित्व में काफी प्रभाव आ जाएगा। यह सच है कि अगर किसी व्यक्ति का चरित्र एवं व्यवहार अच्छा नहीं है, तो प्रभावशाली व्यक्तित्व के पीछे अन्य सभी तत्त्व व्यर्थ हो जाएँगे। अगर व्यक्तित्व का विकास मूल्यों एवं सद्गुणों की ठोस बुनियाद पर किया जाए, तो वह सदैव कायम रहेगा। झूठी मुसकराहट और बनावटी व्यवहार दूसरों को अपेक्षाकृत थोड़े समय के लिए आकृष्ट कर सकता है, किंतु उनकी उम्र छोटी होती है और किसी के व्यक्तित्व को सुधारने में वे सहायक नहीं होते।

* * *

चिंतन

अक्लमंद इनसान चिंता नहीं, चिंतन करता है।

* * *

चिंता

चिंता को चिता की संज्ञा दी गई है। चिंता जब आती है, तो अपने साथ अनेक हानियाँ भी लेकर आती है, जिसका कुप्रभाव हृदय, गं□थियों, संपूर्ण नाड़ी तंत्र तथा संपूर्ण स्वास्थ्य पर पड़ता है। चिंता के कारण कायिक बीमारियों का विकास होता है। व्यक्ति की शक्ति व सामर्थ्य में कमी आती है और उसका जीवन दु:खी तथा कष्टप्रद बन जाता है। चिंता व्यक्ति की उम्र को खा जाती है। चिंता मानसिक संवेगों की प्रक्रिया है। हम अपने वैचारिक पक्ष को सुधारकर चिंता पर काबू पा सकते हैं।

* * *

चुंबकीय आकर्षण

वैयक्तिक चुंबकीय आकर्षण प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद रहता है। वास्तविकता तो यह है कि यह गुण उन लोगों में भी होता है, जिन्हें घोर नापसंद किया जाता है और भरोसा करने योग्य नहीं समझा जाता है। उनमें व्यक्तिगत

चुंबकीय प्रभाव वास्तव में प्रबल होता है, अंतर सिर्फ इतना है कि वहाँ ऋणात्मक धुरव (नकारात्मक धुरव) काम कर रहा होता है। जिस प्रकार वैयक्तिक चुंबकत्व का धनात्मक धुरव वास्तव में प्रभावशाली और चामत्कारिक लोगों के लिए काम करता है, ठीक उसी तरह प्रबल ऋणात्मक धुरव इन लोगों के लिए सक्रिय रहता है और उन लोगों का क्या, जो दोनों के बीच में हैं! वैयक्तिक आकर्षण उनमें फिर भी रहता है, बस इतना प्रबल नहीं होता, जितना कि औरों में होता है। इसके प्रभाव का दायरा अपेक्षाकृत अधिक छोटा होता है। आप निश्चय ही इसे विकसित कर सकते हैं। आपको इस पर सिर्फ काम करने की आवश्यकता है—धैर्य और दृढ़ता से अगर आप इस दिशा में अपेक्षित प्रयास कर सकते हैं, तो उसके लाभ अनंत हैं।

* * *

जन-संपर्क

अपने मस्तिष्क को संकुचित न बनाएँ। सदैव ऐसे लोगों के साथ संबंध रखें, जिनके नए-नए विचारों व कार्य करने के नए तरीकों से आप लाभान्वित हों। अपने आपको सदैव विभिन्न व्यवसायों एवं सामाजिक हितोंवाले व्यक्तियों से जोड़े रखें।

* * *

जन्मजात प्रतिभा

अपनी जन्मजात प्रतिभा का समुचित उपयोग करें। यदि आपके पास उस प्रतिभा को विकसित करने की मजबूत इच्छा है, तो आप उस प्रतिभा को विकसित कर पाने में निश्चित रूप से कामयाब होंगे।

* * *

जागरूकता

जीवन में मनचाहे उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के लिए नूतन जानकारियों के प्रति जागरूकता का विकास करें। विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति हेतु हमें अनेक प्रकार की सूचनाओं तथा जानकारियों की आवश्यकता होती है, जिन्हें विभिन्न माध्यमों से एकत्रित किया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण अथवा अपनी रुचि और क्षेत्र से संबंधित जानकारियों से वंचित व्यक्ति अनेक बार उपलब्ध अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते और फिर जिंदगी भर इस चूक के लिए पछताते रहते हैं। ऐसी संभावित घटनाओं, अवसरों, आयोजनों व फैसलों के प्रति सजग रहें, जो आपके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

* * *

जो व्यक्ति जागरूक है, उसका समय निश्चित ही प्रबंधित होगा। जागरूक व्यक्ति द्वारा त्रुटियों की संभावनाएँ भी कम रहती हैं। जागरूकता हमें हमारे लक्ष्य और संकल्पों को पूरा करने में मददगार सिद्ध होती है। जब व्यक्ति के जीवन में निश्चित समय के प्रति जागरूकता नहीं है और उसके समुचित संचालन हेतु कोई योजना नहीं है, उसके मार्गदर्शन के लिए कोई सिद्धांत नहीं है, तब व्यक्ति इधर-उधर भटककर समाप्त हो जाएगा। शानदार रास्ते, तो उन्हीं कदमों तले खुलते हैं, जिन्होंने कोई नक्शा तैयार किया हुआ हो, जिनका कोई मिशन हो और जिनकी रहबर हो जागरूकता।

* * *

जिज्ञासा

कोई वार्त्तालाप आरंभ करने का सबसे अच्छा तरीका है, अच्छी तरह अभ्यास करना। शीशे के सामने अभ्यास

करना अच्छा है। स्वभाव से जिज्ञासु बनें। देखा गया है कि लोग अपने बारे में बात करना पसंद करते हैं, अपनी सफलता, अपनी अभिलाषाओं, अपनी जिंदगी इत्यादि के बारे में। उनसे सवाल करें, लेकिन उन्हें ऐसा न लगने दें कि आप उनके व्यक्तिगत जीवन या उससे संबंधित बातों में अनुचित हस्तक्षेप कर रहे हैं।

* * *

जिम्मेदारी

अपने जीवन के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं। कोई दूसरा बाहरी कारण, जिसे आप बदलना चाहते हों, वह आपकी अपनी जिम्मेदारी है। जो लोग आपके विकास में मददगार होंगे, उनसे मेल-जोल रखना, संपर्क बनाना आपकी जिम्मेदारी है। समय को बाँधकर रखने की कला सीखना आपका उत्तरदायित्व है, ताकि आप कारगर ढंग से काम का बँटवारा कर सकें और अपनी रुचियों के लिए समय निकाल सकें। अपनी निपुणताओं का प्रभावी रूप से उपयोग करना आपकी जिम्मेदारी है। अपनी उमंग, अपनी चाहत के क्षेत्रों की खोज करना और उसमें छलाँग लगाने से पहले उसके बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करना आपकी जिम्मेदारी है। हर किसी को अपने जैसा बनाना आपकी जिम्मेदारी नहीं है। जो कोई आपके लिए अच्छा नहीं है, उससे संबंध जोड़ने हेतु आपकी यह जिम्मेदारी नहीं है कि आप खुद को बिगाड़ें। लोग आपके बारे में जो कुछ भी पूछें, उसके लिए आपको हर बार 'हाँ' कहने की जरूरत नहीं है। जीवन के उस मार्ग से चिपके रहना आपकी जिम्मेदारी नहीं है, जो आपकी समझ से बाहर है और आपको विकसित नहीं होने देता है।

* * *

जिम्मेदार मनुष्य अपने कार्यों के प्रति सर्वथा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे से किया जाता है। मनुष्य महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार मनुष्य इससे दूर भागता है। वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह अवगुण मनुष्य को असफल बनाता है, लेकिन सफलता के लिए मनुष्य में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

* * *

जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना स्वयं को असफलता की ओर ले जाना है। मनुष्य को अपनी जिम्मेदारी से मुँह न मोड़कर उन्हें निभाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। मनुष्य की जिम्मेदारी मात्र स्वयं के लिए ही नहीं है। उसे जिम्मेदारियाँ अपने परिवार, अपने समाज, अपने देश के प्रति भी निभानी पड़ती हैं। जिम्मेदारी निभानेवाला व्यक्ति ही सफलता की ओर बढ़ता है, क्योंकि वह जानता है कि वह जिम्मेदारी उठा सकता है।

* * *

जिम्मेदारी मनुष्य को एक आदर्श रूप में समाज में प्रस्तुत करती है। मनुष्य की स्वयं के प्रति, परिवार, समाज आदि के प्रति क्या जिम्मेदारी है? मनुष्य को जिम्मेदारी का अहसास होना, उसकी सफलता के लिए अत्यावश्यक है। जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझता है, उसे ही किसी जिम्मेदारी को पूर्ण करने का दायित्व सौंपा जाता है, न कि किसी गैर-जिम्मेदार व्यक्ति को।

* * *

जिम्मेदारी लेना, उसे पूर्ण करना साधारण कार्य नहीं है। जिम्मेदार मनुष्य अपने कार्यों के प्रति सर्वथा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे किया जाता है। मनुष्य महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार मनुष्य इससे दूर भागता है। वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह

अवगुण मनुष्य को असफल बनाता है, लेकिन सफलता के लिए मनुष्य में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

* * *

हर मनुष्य कोई न कोई जिम्मेदारी वहन करता है। कोई अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार है, तो कोई किसी अन्य कार्य के लिए। किसी पर नगर की जिम्मेदारी है, तो किसी पर संपूर्ण राष्ट्र की। जिम्मेदारी सँभालना व जिम्मेदारी लेना मनुष्य में गुणों की उत्पत्ति करता है। जो व्यक्ति सफलता व सरलतापूर्वक जिम्मेदारी निभाता है, वह दिनोदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है।

* * *

हर व्यक्ति शरीर-रक्षा, परिवार-व्यवस्था, समाज-निष्ठा, अनुशासन का परिपालन आदि कर्तव्यों से बँधा हुआ है। जिम्मेदारियाँ निभाने पर ही मनुष्य का शौर्य निखरता है। इसी आधार पर विश्वास बनता है और विश्वसनीयता के आधार पर एक धारणा बनने लगती है, जिसके अनुसार उन्हें अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं। उन्हीं को प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचने का सुअवसर प्राप्त होता है। जिम्मेदार व्यक्ति का ही व्यक्तित्व निखरता है।

* * *

जीत-हार

सफलता हासिल न हो, तो निराश न हों, दोबारा दुगुने जोश के साथ उसके लिए जुट जाएँ। जीत और हार जीवन में लगी ही रहती हैं। हार मिलने पर निराश होकर न बैठ जाएँ, खुद को समझाएँ, बार-बार कहें कि हम होंगे कामयाब एक दिन।

* * *

जीवन-संग्राम

बहुत से लोग जीवन-संग्राम में जूझने से पूर्व ही हथियार डाल देते हैं। ऐसे लोग घोर निराशावादी होते हैं। वे खेलने से पूर्व ही हार जाते हैं। सुकरात कहा करते थे कि निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब हमारी जीभ बंद हो जाती है। जो अपनी सामर्थ्य तथा क्षमता प्रदर्शित करने से पूर्व ही अपने को पराजित महसूस कर लेते हैं, उन्हें दुनिया की कोई भी ताकत विजयी नहीं बना सकती।

* * *

जोश

जीवन में सफलता का निर्धारण सबसे पहले मन में होता है, फिर उसे पूरा करने के लिए लगन के साथ परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सपना देखना ज्ञान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। ज्यादातर सफल लोग कोई बहुत कुशाग्र बुद्धिवाले नहीं होते, वे हमारे-आपके जैसे साधारण लोग ही होते हैं, लेकिन उनमें अलग ढंग से सोचने और कुछ करने का साहस होता है। पहला कदम आगे बढ़ाने की हिम्मत होती है। उसके बाद दूसरा कदम उठाने का जोश होता है। उसके बाद तीसरा कदम उठा की लगन होती है।

* * *

ज्वलंत इच्छा

जब हमारे मन में किसी चीज को पाने की या कुछ कर गुजरने की इच्छा उत्पन्न होती है, तब हमारा मन कल्पना करने लगता है कि वे चीजें कैसी होंगी या वह कार्य, जिसको हम करना चाह रहे हैं, पूरा होने पर कैसा होगा,

उसका परिणाम क्या होगा? अर्थात् कल्पना से ही हम उस इच्छा को ज्वलंत इच्छा के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। जब तक कोई भी इच्छा ज्वलंत इच्छा में परिवर्तित नहीं होती, तब तक उसका पूर्ण होना संभव नहीं होता।

* * *

टाल-मटोल

जो व्यक्ति अपने काम औरों पर टालते रहते हैं, उनके लक्ष्य कभी पूरे नहीं होते। जो अपने कीमती समय को फालतू खर्च करते इधर-उधर घूमते हैं, जो कार्य को बिना सोचे-विचारे करते हैं, जो कार्य शुरू तो कर देते हैं, परंतु संकट, बाधा या संघर्ष की स्थिति आने पर काम अधूरा छोड़कर दूसरे कार्यों में लग जाते हैं, जो कोई भी कार्य ढंग से पूर्ण करने की सामर्थ्य नहीं रखते, वे कहीं भी और कभी भी सफल नहीं हो पाते।

* * *

डर

डर और आशंकाओं की वजह से हम सृजनकर्ता के आगे हाथ जोड़ते हैं और पूजा-अर्चना करके अपना दु:खड़ा रोते हैं जिनसे छुटकारा हम स्वयं पा सकते हैं, इसलिए हमें वैसा प्रयास करना भी चाहिए। डर मन की एक स्थिति के अलावा और कुछ भी नहीं है।

* * *

तत्परता

कठिनाई का सामना करते हुए जो अपना मार्ग खुद ही बनाकर निर्दिष्ट स्थान को प्राप्त होते हैं, वही प्रशंसा प्राप्त करते हैं। सिफारिश, दौलत या बेईमानी आदि अनुचित उपायों से जो आगे बढ़ जाते हैं, उन्हें एक दिन गिरना ही पड़ता है। घृणित कार्यों से हम उन्नति कर भी जाएँ, तो क्या वह उन्नति सर्वग्राह्य है, क्या वह उन्नति स्थायी है? कदापि नहीं। भाग्यश्री उन्हीं लोगों को चुनती है, जो अपनी आस्तीन चढ़ाकर कार्य करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं। जो न धूप से परेशान होते हैं, न सर्दी से काँप उठते हैं, न परिश्रम से डरते हैं, न सदा आलस्य से भरे रहते हैं।

* * *

तनाव

काम के दबाव में थोड़ा-बहुत तनाव होना अवश्यंभावी है। यदि आपके कुछ लक्ष्य, सपने और उद्देश्य हैं और सबकुछ उनके विपरीत हो रहा है, तो आप तनाव महसूस करने लगते हैं। इस तनाव की स्थिति से निकलने के लिए आपको बस इतना करना है कि आप अपने काम पर और खुद पर विश्वास रखें। आवश्यकता हो तो थोड़ा तनावमुक्त होने का प्रयास करें और किसी और काम में मन लगाएँ।

* * *

तालमेल

प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता विकसित करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य बुनियादी रूप से एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए वह अकेले रहकर जीवित नहीं रह सकता है। कुछ लोग एक वक्तव्य विशेष को दोहराते रहते हैं और यह उनके स्वभाव का एक हिस्सा बन जाता है। किसी कथन को आप अधिक-से-अधिक दो बार दोहरा सकते हैं, लेकिन अगर आप उसे अधिक बार दोहराते हैं, तो उसका बुरा असर पड़ता है।

* * *

तुलना

जहाँ तक संभव हो, कभी किसी की अन्य से तुलना न करें। तुलना करते वक्त हमारी अवधारणा रहती है कि हम अमुक व्यक्ति को यह अहसास करा सकें कि वह भी औरों की तरह सुधरने की कोशिश करे, परंतु सामान्य रूप से परिणाम इसके विपरीत होते हैं। तुलना से व्यक्ति खीझता तथा क्रोधित होता है। कई बार वह हीन भावना का शिकार हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमें मौलिक और विशिष्ट होता है। उसके कार्य करने का तरीका, योग्यता तथा क्षमताएँ अपनी निजी होती हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति को उसकी स्वयं की विशिष्टताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने से ही हम दूसरों के दिल में अपना स्थान तो बना ही लेंगे, साथ-ही-साथ परस्पर प्रसन्नता का भी आदान-प्रदान होगा।

* * *

दाँव

जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को इतनी गहराई से चाहे कि वह उसके लिए अपना सबकुछ दाँव पर लगाने के लिए तैयार हो, तो उसका जीतना सुनिश्चित है। जब दिमाग से नकारात्मक सोच बाहर निकल जाती है, तब आस्था और विश्वास की शक्ति अंदर जाती है और अपना आधिपत्य स्थापित करती है।

* * *

दिमाग

दिमाग के पास आत्म-अनुशासन की शक्ति है, जिसके माध्यम से कोई भी वांछित आदत आकार ग्रहण कर सकती है और कायम रह सकती है। दिमाग के पास भावनात्मक शक्ति है, जिसके जरिए शरीर अपनी इच्छा के मुताबिक किसी वांछित कार्य की ओर प्रेरित रहता है।

* * *

दृढ़ता

जब कोई कार्य आप आरंभ करें, तो उस समय आपको उसमें जो घात-प्रतिघात उत्पन्न होती दिखाई दे, उसका स्वप्न देखने में समय नष्ट न करें। यदि विषैले कीड़े से बचना है, तो उसके डंक को मसल डालें। कठिनाइयों पर बार-बार विचार करने से कठिनाइयों का भूत ऐसा प्रबल और दीर्घकाय प्रतीत होने लगता है कि फिर उस कार्य से हाथ पीछे खींचना पड़ता है।

* * *

दृष्टिकोण

अपना दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रखें, अपने ऊपर एवं दूसरों पर सदैव विश्वास करें। अपने अंदर प्रत्येक कार्य के प्रति कटिबद्धता लाएँ। जिस कार्य को शुरू करें, उसे कभी अधूरा न छोड़ें।

* * *

आपका बाहरी आकर्षण लोगों को क्षण भर के लिए सम्मोहित कर सकता है, लेकिन जब आप स्वयं को योग्य एवं गुणवान बना लेंगे, तो आपकी असुंदरता या कम सुंदरता की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाएगा। अपने मन में इस बात को बैठा लें कि जीवन में शारीरिक सौंदर्य ही सबकुछ नहीं। स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर आप सफलता व लोकप्रियता दोनों को अर्जित कर सकते हैं।

* * *

यह सोचना अव्यावहारिक ही होगा कि आपके सपने को पूरा करने में सभी लोग आपकी सहायता करेंगे। जरूरी यह है कि आप किसी से सहयोग न मिलने की स्थिति के लिए सदा तैयार रहें। जीवन की कठिन परिस्थितियों के

लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है, तो इससे परेशान हुए बिना ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास करें। आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हैं या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें, इस बात का ध्यान रखें।

* * *

देह-भाषा

एक मुक्त, सच्ची, सकारात्मक और विश्वसनीय देह-भाषा विकसित करें। बोलते समय उचित दृष्टि-संपर्क बनाए रखें। बँधी मुट्ठी और अत्यधिक अंग-संचालन से आप लोगों का दिल नहीं जीत सकेंगे और याद रखें कि एक अच्छी देह-भाषा एक नेक आशय से उत्पन्न होती है, इसलिए आपको वास्तव में ईमानदार, मुक्त और विश्वसनीय होने की जरूरत है।

* * *

द्वंद्व

मन-ही-मन घुटते रहने की बजाय किसी ऐसे व्यक्ति से अपने हृदय की पीड़ा अथवा द्वंद्व को प्रकट कर दें, जिसे आप अपना विश्वासपात्र मानते हों। मनोचिकित्सक अकसर रोगी से बातचीत के जरिए ही उसकी चिकित्सा करते हैं। मानसिक अवसाद के गहरे चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए आपको अपने भीतर कुछ परिवर्तन करने होंगे। इसके लिए जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। आपको उन कारणों या तत्त्वों को भी ढूँढ़ना पड़ेगा, जिनकी मदद से आप अपना कार्य कुशलतापूर्वक पूरा कर सकें।

* * *

ध्यान-शक्ति

ध्यान करना अध्ययन में सहायक होता है और हमारी समझ तीव्र होती है। याददाश्त बढ़ती है और हमारे लिए किसी भी कार्य, नौकरी, गतिविधि या लक्ष्य पर ध्यान लगाना आसान हो जाता है और तब आप लक्ष्य अधिक आसानी एवं कुशलता से हासिल कर सकते हैं। मानसिक शक्तियों का विकास करने के लिए भी यह क्षमता आवश्यक है। यह रचनात्मक कल्पना का उपयोग करने के लिए एक शक्तिशाली साधन है। यह क्षमता विकसित हो जाने पर हमारा मन हमारी बात मानने के लिए अधिक तत्पर रहता है और निरर्थक नकारात्मक विचारों या चिंताओं में संलग्न नहीं होता है। हमें मानसिक आधिपत्य प्राप्त होता है और हम मन की सच्ची शांति का अनुभव करते हैं।

* * *

नकारात्मक मनोवृत्ति

अगर आप एक नकारात्मक मनोवृत्ति प्रदर्शित कर रहे हैं और असफलता तथा कठिनाइयों को आता देख रहे हैं, तो यही उचित समय है जब आपका सोचने का ढंग बदलना चाहिए। यही समय है कि आप नकारात्मक विचारों तथा व्यवहार से पीछा छुड़ाएँ और एक खुशहाल एवं सफल जीवन व्यतीत करें।

* * *

नकारात्मक विचार

नकारात्मक विचारों के कारण तालमेल नहीं होता और यह तब तक बढ़ता जाता है, जब तक समग्र रूप से नहीं सोचा जाता। कोई भी नकारात्मक मानसिक स्थिति विश्वास की क्षमता को नष्ट कर देगी और ऐसे नकारात्मक उत्कर्ष पर पहुँचा देगी, जहाँ सकारात्मक सोच को आसानी से जगह नहीं मिल पाती।

* * *

स्वस्थ आलोचना हमेशा अच्छी लगती है, किंतु कोई भी ऐसी नकारात्मक टीका-टिप्पणी को सुनना नहीं चाहता, जिसका कोई रचनात्मक महत्त्व नहीं होता है। आप उस स्थिति से तत्काल बाहर निकल जाना चाहेंगे, जहाँ हर कोई नकारात्मक प्रतीत होता है। प्रयासों एवं दृढ़ निश्चय के साथ आप उन निराशाजनक विचारों से सहज ही छुटकारा पा सकते हैं, जो आपको लक्ष्य तक पहुँचने से रोकते हैं।

* * *

नकारात्मकता

किसी भी लक्ष्य को पाने में सबसे बड़ी समस्या नकारात्मक चीजें होती हैं। इसलिए इसको कभी अपने ऊपर हावी न होने दें। कुछ लोग अपमानजनक प्रश्नों द्वारा हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। जैसे आप अपने व्यवसाय में अच्छा नहीं कर पाते या पैसा नहीं कमा पाते, तो क्या करेंगे? इस तरह के लोगों से निपटने के लिए आप कुछ तरीके अपना सकते हैं। आप इनके रास्ते से खुद हट जाएँ या अपनी तीक्ष्ण बुद्धि की धार से इन्हें हटा दें। किसी भी चीज से पीछा छुड़ाने के लिए हमेशा यह कहें कि मैं इस विषय पर बात नहीं करना चाहता हूँ या यह मामला खत्म हो गया है।

* * *

ईष्यालु को नजरअंदाज करें

अपने सपने को जीवंत बनाने के लिए इसके आत्मीय पहलुओं का ध्यान रखें। अपनी योग्यता तथा शक्ति को पहचानें। यदि कोई आपकी सफलता से जलता है या क्रोधित होता है, तो होने दीजिए, क्योंकि यह एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है। इस तरह के लोग जो करना चाहते हैं, उन्हें करने दीजिए। ऐसे लोग दूसरों की गलतियाँ निकालने या गप हाँकने में समय बरबाद करने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते।

* * *

नजरिया

अतीत के दु:ख का बोझ लेकर चलना अत्यधिक पीड़ादायक और निराशाजनक हो सकता है। बहुत से लोग हैं, जो पहले तो यह मानना ही नहीं चाहते कि उनका अतीत उन्हें डरा रहा है। वे इसे एक कल्पित कहानी या कोई जालसाजी मानते हैं। अगर आप उन लोगों में से हैं, तो पहले इस अस्वीकार्यता की मन:स्थिति से बाहर आएँ और इस तथ्य को स्वीकारें कि आपके लिए अतीत से छुटकारा पाना आवश्यक है। आपको यह समझने की जरूरत है कि जो हो चुका, उसे अब बदला नहीं जा सकता। आप सिर्फ इतना कर सकते हैं कि हालात के बारे में अपना नजरिया बदलें, अर्थात् उनके बारे में सोचने और अनुभव करने का तरीका बदलें।

* * *

नाकामी

नाकामी अकसर एक अप्रत्यक्ष वरदान की तरह होती है, बशर्ते यह हमें ऐसे उपयोगी सबक सिखा सके, जो हम इसके बगैर नहीं सीख सकते थे। नाकामी का जीवन से वैसा ही संबंध है, जैसा भट्ठी का कुम्हार से। यह हमें

तपाकर खरा कर देती है, फिर भी लाखों लोग नाकामी को अंतिम नतीजा मानकर बैठ जाते हैं, जबकि यह जीवन की ज्यादातर दूसरी घटनाओं की तरह क्षणभंगुर है और इस वजह से इसे अंतिम नहीं मान लिया जाना चाहिए। नाकामी किसी भी इनसान के अनुभव का सबसे फायदेमंद हिस्सा होती है, क्योंकि कई जरूरी सबक हैं, जो सफलता हासिल करने से पहले सीख लेने चाहिए और यह सबक नाकामी से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता।

* * *

नियंत्रण

आप जहाँ कहीं भी खड़े हैं, वहीं से शुरू करें और अपने ऊपर नियंत्रण करें। एक ही चीज पर आपका पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए और वह है आपकी मानसिक वृत्ति।

* * *

निराशा

अगर कोई यह समझता है कि खुशियाँ मेरे नसीब में हैं ही नहीं, प्यार मुझे मिलता ही नहीं या वह इस वहम का शिकार है कि हँसी में मेरा कोई हिस्सा नहीं, तो ऐसे व्यक्ति की तुलना उस किसान से की जा सकती है, जो इस आशंका में अपना खेत ही नहीं जोतता कि इस साल बारिश होगी ही नहीं और सूखा पड़ना तय है।

* * *

जब किसी भी कार्य में हम असफल हो जाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से निराशा हमें आ दबोचती है। निराशा के अतिरेक की लहरें हमारे जीवन के उत्साह को बहा ले जाती हैं। कई बार इस तरह की त्रासदियाँ एक ओर जहाँ हमें अकर्मण्य बनाकर हमारे लिए दु:खों का जाल बुन देती हैं, वहीं दूसरी ओर जीवन से पलायन, आत्महत्या जैसे विचारों को जन्म देती हैं। निराशा की छाँव में खड़ा व्यक्ति मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। इससे बचना चाहिए।

* * *

निश्चित मार्ग

हम जो कार्य करना चाहते हैं, उसके लिए निश्चित मार्ग तय करना आवश्यक है। लक्ष्यहीन ढंग से किए जानेवाले प्रयास बिल्कुल बेकार बैठने जैसे हैं। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य पर सावधानी के साथ विचार करता है तथा उसे पूरी तन्मयता के साथ पूरा करने की दिशा में चल पड़ता है, उसे उस मार्ग की दुविधाएँ स्वत: ही रास्ता देने लगती हैं।

* * *

निश्चित योजना

निश्चित योजना के बिना जीवन में कभी भी ऐसा कुछ हासिल नहीं किया जा सकता, जो सार्थक और महत्त्वपूर्ण हो। यह भी तब हासिल होता है, जब एक प्रक्रिया के तहत दिन-रात व्यवस्थित और निरंतर प्रयास किए जाएँ। एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य सिर्फ सोच लेने, साफ-साफ भाषा में लिख लेने और दिमाग में पूरी तरह फिक्स कर लेने से ही प्राप्त करना सुनिश्चित नहीं हो पाएगा। प्रमुख लक्ष्य हासिल करने की इच्छा को लगातार प्रयासों का समर्थन मिलना बहुत जरूरी है और उससे भी ज्यादा जरूरी है अन्य लोगों के साथ रिश्ता।

* * *

निश्चित लक्ष्य

निश्चित लक्ष्य जीवन की सभी उल्लेखनीय उपलब्धियों की शुरुआत भर है, जबकि आत्मविश्वास वह अदृश्य शक्ति है, जो किसी को तब तक उत्साहित, प्रेरित और अग्रसर करती रहती है, जब तक कि उसका लक्ष्य एक

यथार्थ न बन जाए। एक निश्चित लक्ष्य हासिल करने के लिए पूर्ण समन्वय के साथ दो या उससे अधिक दिमागों की संधि से हर एक व्यक्ति का दिमाग काफी उत्प्रेरित होता है और वैसी मानसिक स्थिति बनती है, जिसे विश्वास कहते हैं। इसकी शक्ति और क्षमता का थोड़ा एहसास गहरी दोस्ती और प्रेम के रिश्ते में होता है।

* * *

युद्ध के मैदान में उसी सेनापति की जीत होती है, जो पहले से अपना लक्ष्य निश्चित करके चलता है। फौज चाहे जितनी बड़ी है, उसे इधर-उधर लिये फिरने से और जगह-जगह पर प्रहार करने से शत्रु पर विजय असंभव है। इतिहास में वही लोग सफल रहे हैं, जिनका लक्ष्य निश्चित और सटीक था।

* * *

सफल बनने के लिए आपका कोई लक्ष्य होना चाहिए, कोई बिंदु स्थल होना चाहिए, जहाँ तक आप पहुँचना चाहते हैं। सफलता के लिए वह पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण अपेक्षा है। सरल शब्दों में, आप एक विजेता नहीं हो सकते, अगर आपके पास जीतने के लिए कुछ नहीं है। दिशा और उद्देश्य का बोध कराने के लिए अल्पकालिक व दीर्घकालिक, दोनों प्रकार के लक्ष्य अनिवार्य तत्त्व माने जाते हैं। स्पष्ट रूप से निर्धारित किसी विशिष्ट लक्ष्य के बिना आप उस यात्री जैसे हैं, जिसकी कोई मंजिल नहीं है। आपको कुछ पता नहीं होता है कि आप कहाँ जा रहे हैं या क्यों जा रहे हैं।

* * *

नेतृत्व

किसी और के नेतृत्व में चलने की बजाय अपना नेतृत्व स्वयं करें। जब तक आप भीड़ का एक हिस्सा बने रहेंगे, कभी भी दबाव में आ सकते हैं। जरूरत है कि आप स्वयं को यह याद दिलाएँ कि आपका एक बिल्कुल अलग व्यक्तित्व है, जिस तरह हर व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। आप वही हो सकते हैं, जो आप हैं। स्वयं अपना नेतृत्व करें और अपने दिलो-दिमाग का आदेश मानें।

* * *

परिणाम पर केंद्रण

टाल-मटोल करना नकारात्मक विचारों का मूल कारण है। परिणाम पर फोकस करें, न कि वहाँ पहुँचने की प्रक्रिया पर। यह न सोचें कि सर्दी के मौसम में सुबह जल्दी उठना कितना मुश्किल होगा, बल्कि सुबह-सुबह के व्यायाम से होनेवाले लाभों के बारे में विचार करें।

* * *

पसंदीदा काम

अपनी दीवानगी का पीछा करें और वही करें जो आपको पसंद है। यदि आप प्रोत्साहन और ऊर्जा का असीमित स्रोत पाना चाहते हैं, तो आपको वही करना चाहिए, जो करना आपको पसंद है। जब आप अपनी रुचि का कुछ कर रहे होते हैं, आप अपने आंतरिक ऊर्जा स्रोत का उपयोग करेंगे और सारे समय प्रोत्साहित अनुभव करेंगे।

* * *

पूर्णता

आप जहाँ भी हैं, वहाँ पूरी तरह रहकर कार्य करें। भटकते हुए मन के साथ किया गया कार्य कभी मिथक नहीं बन सकता। यह एक अत्यंत प्रभावी मंत्र है कि कार्य को सिर्फ एक बार में ही करो। जो काम हाथ में है, उसमें

अपनी समस्त शक्तियों को लगाकर समय का सदुपयोग करनेवाले व्यक्ति ही सफल रहते हैं।

* * *

प्रकृतिस्थता

कृत्रिमता या बनावटीपन हमारे जीवन को खोखला और कमजोर करता है, जबकि जितना हम प्रकृति के निकट रहते हैं, उतना ही हमारा जीवन अधिक सौम्य और सहज रहता है। यही सौम्यता और सहजता हमें हमारे कार्य और जीवन को नियंत्रित करने की शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। हम अपने समय को अपने मुताबिक निर्धारित कर सकने में सफल रहते हैं और जिन लक्ष्यों को हमने अपने जीवन का ध्येय बनाया है, उन्हें पाने में हमें कामयाबी मिलती है।

* * *

जिन व्यक्तियों की दिनचर्या प्रकृति के अनुसार नियमित होती है, उनके जीवन में सफलता, सुख, शांति और संतोष की वर्षा होती रहती है। जब हम मानसिक रूप से संतुष्ट होते हैं, तभी हम सफलता के मार्ग पर बिछे हुए अवरोधों को पार करते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचते हैं।

* * *

प्रतिकूलता

अगर कोई प्रतिकूलता आप पर हावी हो, तो बस यूँ समझ लें कि हर एक पर उसी तरह हावी है और जरा भी विचलित हुए बगैर उसी अनुपात के लाभ खोजने में जुट जाएँ तथा उसे पुष्पित-पल्लवित अवसर में बदल डालें।

* * *

हर प्रतिकूलता अपने में समान लाभ का बीज लिये रहती है। इसलिए अस्थायी हार को विफलता मानकर निराश न हों और दुगुने उत्साह से आगे कदम बढ़ाएँ। हर प्रतिकूलता के अंदर समान रूप से लाभ के बीज मौजूद हैं।

* * *

प्रतिकूलता-अनुकूलता

प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की परम आवश्यकता है। राह में यदि काँटे बिछे हों, तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो या जमीन में गाड़ दो। उन काँटों पर पाँव रखकर व्यर्थ में खून बहाने से क्या लाभ? प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता और प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब हमारे द्वारा किए जानेवाले कार्य विवेक और ज्ञान से परिपूर्ण हों।

* * *

प्रतिद्वंद्विता

अपने कार्यों को तेजी से निपटाएँ। स्वयं से प्रतिद्वंद्विता करें। इस प्रकार आप देखेंगे कि आप कार्य को कितनी जल्दी निपटा लेंगे एवं उसमें कोई कमी भी नहीं पाएँगे।

* * *

प्रतिद्वंद्वी

सफलता पानेवाले व्यक्ति किसी चीज को करने का साहस रखते हैं, इसलिए उनके सपने वास्तव में साकार होते हैं। सफलता के साथ प्रतिद्वंद्वी पैदा होना सामान्य बात है। जैसे किसी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए जरूरी हो

जाता है कि किसी-न-किसी को पीछे छोड़े। अपने लिए की गई शिकायतों पर सदा ध्यान दें, क्योंकि यह आपको दूसरों से बेहतर बनने में सहायक होती है।

* * *

प्रतिभा

स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयत्न करें। आपको यह समझना चाहिए कि कोई भी पूर्ण नहीं है और अपना सुधार करके आप खुद की बेहतरी करते हैं; साथ ही खुद की तुलना कभी किसी दूसरे से न करें। हमेशा याद रखें, इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हैं। आप बाकी लोगों से एक भिन्न अनुभव एवं प्रतिभा के साथ बढ़े हुए हैं और आपको अपने व्यक्तित्व पर गर्व होना चाहिए।

* * *

प्रतिस्पद्र्धा

स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा के जरिए ही हम स्थायी सफलता अथवा अपने लक्ष्य को अर्जित कर सकते हैं। व्यवहारकुशल व्यक्ति की प्रथम अवधारणा 'स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा में विश्वास' होनी चाहिए। सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार सूर्योदय के बाद सूर्यास्त होना तय है, उसी प्रकार असफलता के पश्चात् सफलता मिलनी निश्चित है, परंतु यह तभी संभव है, जब व्यक्ति अपने कार्य की दिशा में पूरी ईमानदारी के साथ प्रयत्नशील हो और उसका रुझान स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा के प्रति हो।

* * *

प्रभु का आशीष

आत्मा परमात्मा का अंश है। यही वजह है कि आत्मा के दु:खी होने पर परमात्मा भी दु:खी हो जाता है। जब कार्य पूरी निष्ठा, प्रसन्नता और लगन के साथ किया जाता है, तो प्रभु का आशीष प्राप्त होता है एवं सफलता अवश्य मिलती है। किसी ने ठीक ही कहा है, ''जो खुद की मदद करता है, भगवान् उसकी मदद करता है।''

* * *

प्रयास

स्वयं को पहचानिए, उस क्षेत्र को पहचानिए, जिसमें आप जाना चाहते हैं। महत्त्वाकांक्षा और पूरी लगन से उसे पूरा करने का प्रयास करिए।

* * *

प्रवृत्ति

व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं, लेकिन कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से भी खुशियाँ निचोड़ लेने की क्षमता आपमें होनी ही चाहिए।

* * *

प्रशंसा

प्रशंसा करने में हमेशा शीघ्रता कीजिए और बुराई करने में विलंब। इससे आपके व्यक्तित्व, जीवन, परिवार तथा कार्यस्थल पर जो परिवर्तन होंगे, उन्हें देखकर आप चकित रह जाएँगे। प्रोत्साहन ऐसा संवेग है, जिसके परिणाम बेहद आशाजनक व दीर्घ निकलते हैं। डर या दबाव में आकर व्यक्ति काम की औपचारिकता तो पूर्ण कर सकता है, लेकिन कभी भी अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे सकता, इसके लिए हमें प्रशंसा का सहारा लेना चाहिए।

* * *

वार्त्तालाप के दौरान खुद ही बहुत अधिक न बोलते रहें। जब कभी कोई व्यक्ति आपके लिए कोई उपहार लाए, तो उसकी प्रशंसा करना न भूलें। यह न जताएँ कि आप किसी और चीज की आशा कर रहे थे। दूसरे को एहसास कराएँ कि आप उन्हें प्यार करते हैं।

* * *

प्रसन्नता

जीवन में जब भी विपदाओं के तूफान उठें, मन घबराए, हौसला पस्त होने लगे, तो सहजता और प्रसन्नता का संतुलन बनाने का अभ्यास करें। सहजता और प्रसन्नता को धारण कर ऋषि-मुनि भी अजर-अमर हो गए। सिद्ध पुरुषों ने प्रसन्नता को एक समर्थ सिद्धि माना है।

* * *

जीवन में सफल होने के लिए प्रसन्नता अति आवश्यक है। प्रसन्न लोग कठिनतम स्थितियों में भी संतुलित रह सकते हैं और वे देर-सबेर अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं। एक उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए जरूरी है कि हम हर परिस्थिति में सहजता और प्रसन्नता से जीने का अभ्यास करें। प्रसन्नता दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रसायन है। जो इस रसायन का निरंतर सेवन करता है, वह अनेक बाधाओं को सहज ही पार कर लेता है।

* * *

जो व्यक्ति हर कार्य को प्रसन्नतापूर्वक करता है, वह संजीवनी की ऊर्जा से भरा रहता है। उसके पास दु:खी रहने के लिए वक्त नहीं होता। इसलिए जो भी कार्य करें, उसमें प्रसन्नता ढूँढ़ें।

* * *

प्रसन्नता ऐसा आधारभूत गुण है जिसके बिना आदमी चाहकर भी आशावादी नहीं बन सकता है। जब हम सकारात्मक सोचेंगे, तो विनम्रता और प्रसन्नता जैसे गुणों को अपने भीतर विकसित कर पाएँगे।

* * *

प्रसन्नता कहीं नहीं मिलती, प्रसन्न हुआ जाता है। प्रसन्नता चुनी जाती है। स्वयं आशा को प्रसन्नता का एक रूप कहा जाता है। जब हम ऊब जाते हैं, तो मनोरंजन से प्रसन्नता मिलती है। बहुत ज्यादा मनोरंजन उबा देता है, तो काम से प्रसन्नता मिलती है।

* * *

प्रोत्साहन

प्रोत्साहन जीवन का ईंधन है, ऊर्जा है। हम कभी कुछ कर नहीं पाते हैं, यदि हम उसे करने के लिए प्रोत्साहित महसूस न करें। कभी-कभी प्रोत्साहन बाहरी होता है, लेकिन अत्यंत उचित प्रकार का प्रोत्साहन आंतरिक होता है, क्योंकि जब प्रोत्साहन अंदरूनी हो, तो आप वह काम अच्छे-से-अच्छे ढंग से करेंगे। अगर आप बड़े-बड़े काम करना चाहते हैं, बेहतर करना चाहते हैं, उसके लिए आपकी प्रेरणा अंदर से आनी चाहिए और एक बार वह अग्नि आपके अंदर प्रज्वलित हो गई, तो फिर आपको कोई नहीं रोक पाएगा। आप अत्यधिक कर्मशील हो जाते हैं। आप स्वत: अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न उसमें लगा देते हैं।

* * *

फूल-सा चेहरा

जो व्यक्ति गुलाब की भाँति सुंदर व सर्वप्रिय बनना चाहते हैं, उनको चाहिए कि वे फूलों की तरह काँटों भरी जिंदगी में भी मुसकराने व विकसित होने की कला सीखें। असफलता के अवसरों पर यदि हम हाथ-पर-हाथ रख बैठ जाते हैं, तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमने फूलों से कुछ सीखा ही नहीं। उपवन में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को फूल अपनी मुसकान बाँटते हैं। अपनी वेदना को कभी व्यक्त नहीं करते। यही वजह है कि जब हम किसी प्रसन्नचित्त व्यक्ति को देखते हैं, तो सहसा ही कह उठते हैं कि देखो, इसका चेहरा कैसा फूल-सा खिल रहा है!

* * *

बाधाएँ

बाधाएँ हमें और निखारतीं तथा सँवारती हैं। अग्नि की तेज लपटों को सहकर ही सोना कुंदन बनता है। कुछ भी प्रयास न करने के बजाय प्रयास करके असफल हो जाना कहीं बेहतर है। कोई भी हार हमें यह नहीं बताती कि हममें योग्यता की कमी है। वह बताती है कि हमारे प्रयासों में कहीं-न-कहीं कोई कमी रही है जिसे हम चाहें तो अपने प्रयासों द्वारा ठीक कर सकते हैं। हमारी सफलता के मार्ग में अवरोध बनकर, जो बाधाएँ प्रकट होती हैं, उन्हें अपनी समझ-बूझ द्वारा हटाया जाना संभव है।

* * *

बुरी आदतें

बुरी आदतों को उनकी प्राथमिक अवस्था में ही कुचल देना चाहिए, क्योंकि जिस बुरी आदत से हम आज बच नहीं पा रहे हैं, वह कल निश्चित तौर पर और भी प्रभावी होकर उभरेगी और यह सिलसिला दिन-ब-दिन बढ़ता ही चला जाएगा। अंतत: लोग हमें अपमान व हिकारत की दृष्टि से देखेंगे और हम चाहकर भी सफल नहीं हो सकेंगे।

* * *

बोलने की शैली

अधिकतर सफल व्यक्तियों के बोलने की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है। वे स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से बोलते हैं। ध्यान रहे कि आप जिस भाषा में बोलते हैं, उस पर आपको पूरा अधिकार होना चाहिए। अपने उच्चारण पर अधिक ध्यान दें। वक्तृत्व-कला किसी भी अच्छे व्यक्तित्व का एक अनिवार्य गुण है।

* * *

भरोसा

उन सभी विचारों को त्याग दें, जो आपको निरुत्साहित करते हैं। अपने स्वाभिमान को आगे रखें। स्वयं में विश्वास रखें और यह मानकर चलें कि आप अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। आप जो कुछ भी करते हैं, उसमें विश्वास रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में सबसे जरूरी बात यह है कि किसी दूसरे पर भरोसा करने से पहले अपने में विश्वास करना शुरू करें।

* * *

मजबूत इरादा

जो लोग अपने इरादों में मजूबती को बरकरार रखते हैं, निश्चित रूप से वे कामयाब रहते हैं। जो लोग अपने उद्देश्यों के प्रति सदैव जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहते हैं, वे धीरे-धीरे अपने इरादों में मजबूती हासिल करते चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि कामयाब लोगों के लिए हालात हमेशा उनके मुताबिक ही रहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि बिल्कुल उलटे हालातों में लोगों ने संघर्ष करते हुए अपनी मंजिलें तय की हैं। मुश्किलों से घबराकर पीछे लौट

जानेवालों के हिस्से में कामयाबी कभी नहीं आती।

* * *

मजबूती

मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित रखता है। इस तरह के व्यक्ति न केवल स्वयं को किसी घटना का शिकार होने से बचाते हैं, बल्कि उन समस्याओं पर विजय भी प्राप्त करते हैं।

* * *

मधुर वाणी

मनुष्य को स्वयं को इतना मृदुभाषी बनाना चाहिए, जिससे उसकी वाणी से सभी मधुरता प्राप्त कर सकें। वाणी में मधुरता होगी, तो मनुष्य की सफलता के मार्ग की बाधाएँ स्वत: समाप्त होती जाएँगी। स्पष्ट एवं मधुर वाणी सफलता के लिए उत्तम गुण है, जिसके सहारे मनुष्य अपनी बाधाओं को आसानी से जीत सकता है।

* * *

मन लगाकर काम

जीवन में यदि आप खुशहाल एवं धनी बने रहना चाहते हैं, तो इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि आप जो भी कार्य करें, मन लगाकर दीवानगी की तरह करें। उस कार्य के प्रति यदि आपके अंदर जुनून होगा, तो निश्चित रूप से आप सफल होंगे एवं आपको एक आत्मिक शांति प्राप्त होगी। मन लगाकर कार्य करने से आपको वह कार्य बार-बार नहीं करना पड़ेगा अर्थात् आपकी सफलता सुनिश्चित है।

* * *

मनोबल

हार में भी अपना मनोबल ऊँचा रखें और विजयी होने पर अधिक शिष्टतापूर्ण व्यवहार करें। अपनी समस्याओं को रचनात्मक ढंग से हल करें। इनके कारण मित्रों के साथ अपने संबंधों को बिगड़ने न दें तथा अपनी बुरी आदतों की सूची बनाएँ और उनसे छुटकारा पाने की कोशिश करें।

* * *

मानसिक क्षमता

मानसिक क्षमताओं का सही ढंग से उपयोग कर औसत आदमी भी मेधावी व बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सोच सकता है। हम अपनी बुद्धिमत्ता के प्रयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में करते हैं। अपनी सोच में मामूली सा बदलाव लाकर कोई भी व्यक्ति इसका भरपूर लाभ उठा सकता है।

* * *

मानसिकता

व्यक्ति की वास्तविक सुंदरता उसके शरीर में नहीं, अपितु उसके गुणों व कार्यों में निहित होती है। व्यक्ति की योग्यता व उपलब्धियों का आकलन उसकी मानसिकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस कारण हमें मानसिक सोच में अभिवृद्धि की आवश्यकता है। सकारात्मक सोच को अपनाकर मानसिक असंतोष से छुटकारा पाया जा सकता है।

* * *

मिथ्याभिमान

अपनी क्षमताओं के बारे में कभी अहंकार न करें। अहंकार के कारण आप भूल जाते हैं कि आप एक इनसान हैं और यह भी कि कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है। मिथ्याभिमान आपको भुला देता है कि आप भी भूल करते हैं और यह भी कि आप में कुछ दोष हैं, जिन्हें दूर करना जरूरी है। इसे चाहे शुद्धीकरण प्रक्रिया कहें या आत्म-चिंतन कहें या आत्म-सुधार कहें, जो भी नाम देना चाहें, दे सकते हैं, लेकिन आपको अपने अंदर झाँकना होगा और देखना होगा कि आपकी क्या-क्या कमजोरियाँ हैं और किन दोषों से पीछा छुड़ाना है, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। अपनी कमजोरी को अपनी ताकत में बदलने का प्रयास करें और याद रखें कि अपने दोषों व कमजोरियों को पहचानना अपनी सामर्थ्य, अपनी शक्ति का दावा करने की ओर पहला बड़ा कदम साबित होता है।

* * *

मीठी बोली

मनुष्य जिस तरह की वाणी का व्यवहार करता है, उसी तरह के परिणाम उसे भोगने पड़ते हैं। जिस प्रकार मधुर वाणी के प्रभाव से धन तथा मित्र आदि बनते चले जाते हैं, उसी प्रकार निर्मित होनेवाले परिवेश में तथा हमें प्राप्त होनेवाले समादर और सम्मान में वाणी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वाणी जब अपने नकारात्मक रूप में प्रकट होती है, तो जीत हार में बदल जाया करती है। मित्रों की पंक्ति में खड़े लोग शत्रु हो जाते हैं, हमारे समस्त सुखों पर मनहूसियत तथा दु:खों के काले बादल मँडराने लगते हैं।

* * *

समाज में वही लोग आदर तथा सत्कार के अधिकारी होते हैं, जिनके होंठों पर मधुर मुसकान तथा मुँह में मीठे बोल होते हैं। मीठे बोल का जादू अपनी अलग बिसात रखता है, यह औरों के सिर चढ़कर बोलता है, दिल जीत लेता है तथा सभी को प्रेम करने की सीख देता है। यह सुनिश्चित है कि हम जब भी मिठास भरी जुबान में बात करते हैं, तो शुभ ही बोलते हैं, जबकि कटुवचन सदैव दूसरे के अहित तथा अशुभ के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

* * *

हमसे जहाँ तक संभव हो सके, अपने दो मीठे बोलों द्वारा दूसरों को राहत पहुँचाने का ध्येय होना चाहिए। कटु वचन बोलकर कभी भी किसी के मन को चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। ऐसा करके हम दूसरों को तो आघात पहुँचाते ही हैं, बाद में कटु वचनों के संताप से हमारी आत्मा भी संतप्त होती है। कटु वाणी तथा कटु व्यवहार का प्रयोग करनेवाले प्रयत्न करने पर भी दूसरों को अपना नहीं बना सकते। मृदु वाणी और मृदु व्यवहार का चुंबक लोहे (कटु भाषी)को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

* * *

हमारे व्यक्तित्व की छाप हमारी वाणी के माध्यम से औरों के मन-मस्तिष्क तथा हृदय-पटल पर अंकित हो जाती है। बहुधा प्रभावशाली लोगों की वाणी दूसरों के जीवन का संबल बन जाती है। एक तरह से समस्त कार्य-व्यवहार के मूल में वाणी का प्रभाव निहित रहता है। वाणी के बिना व्यवहार कठिन है। वाणी हमारे समूचे व्यक्तित्व तथा कृतित्व को तो अभिव्यक्त करती ही है, हमें अपनी अलग मौलिक पहचान भी प्रदान करती है। यही वजह है कि प्रिय तथा हितकारी वचनों को वाणी के तप की संज्ञा दी गई है।

* * *

मुकाबला

अपने मन से विचारों को कार्य में शीघ्र परिणत करें। विचारों के अनुसार कार्य न किया जाए, तो वे विचार केवल स्वप्नमात्र हैं। मुकाबला और मुठभेड़ करने से न घबराएँ। काम किए जाएँ। मुकाबला आखिर मनुष्य ही से तो है फिर डरने की कौन सी बात है?

* * *

मुसकान

मुसकराहट ऐसी क्रिया है, जो सदैव सकारात्मक प्रतिक्रिया लाती है। मुसकान को अपने व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष बनानेवाले लोग जिंदगी में ज्यादा सुखी, सफल तथा प्रसन्नचित्त होते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिक लोकप्रिय व प्रभावशाली भी होते हैं, उन लोगों के मुकाबले, जो अपने चेहरे पर मनहूसियत का नकाब ओढ़े रहते हैं। खुशमिजाज, जिंदादिल व हँसमुख लोग सभी के प्यारे होते हैं। उनसे हर कोई अपना संपर्क तथा संबंध बनाना या बढ़ाना चाहता है, जबकि बदमिजाज तथा क्रोधी स्वभाव के लोगों से सब दूर भागते हैं, यहाँ तक कि उनके अपने खास व सगे भी।

* * *

मेहनत

आपको अपनी उपलब्धियों या सफलताओं पर बहस करने की जरूरत नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह आपके आत्मविश्वास को घटाता है। अपनी सफलताओं को उचित ठहराने की बजाय अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने अनुभव और क्षमताओं को सही दिशा में बढ़ाएँ। हमेशा यह याद रखें कि हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होती है, इसके लिए किसी दूसरे का सहयोग काम नहीं आता। यदि कोई दूसरा व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने में असफल रहता है, तो यह जरूरी नहीं कि उस लक्ष्य को पाने में आप भी असफल हो जाएँगे। जरूरी है कि आप लक्ष्य को पाने के लिए उससे कड़ी मेहनत करें और यह भूल जाएँ कि दूसरों को किस तरह की समस्या का सामना करना पड़ा।

* * *

रचनात्मक सोच

अपनी शक्ति को एक ही दिशा में केंद्रित करके अपनी पूरी प्रतिभा के साथ जब व्यक्ति किसी कार्य को करता है, तो निश्चित ही उसके परिणाम अचरज भरे होते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कभी स्कूल का मुँह तक नहीं देखा, उन लोगों पर आज सभ्य व शिक्षित समाज के लोग शोध करने में जुटे हैं। यह सब कैसे संभव हुआ? यह उच्च स्तरीय रचनात्मक सोच का प्रतिफल है। यह सोच का वह स्तर है, जो किसी भी साधारण कार्य को असाधारण की श्रेणी में ला खड़ा करता है।

* * *

जिन इच्छाओं को हम पूरी होते देखना चाहते हैं, उनके लिए हमें सौ प्रतिशत क्षमताओं के उपयोग का कमाल अपने व्यक्तित्व में पैदा करना चाहिए। तब कोई ऐसा कारण नहीं कि जो आपने सोचा हो, वह पूरा न हो। देर-सबेर आप अपने सपनों को सच कर ही ले जाएँगे। रचनात्मक सोच किसी भी कार्य को करने का नया सुधारात्मक तरीका खोजना है। सभी प्रकार की सफलताओं का परिणाम चाहे वह घर पर हों या कार्यक्षेत्र में या समाज में, वे सिर्फ इस बात पर निर्भर करती हैं कि कार्य को किस तरह से बेहतर किया जाए और यह सबकुछ संभव तभी होगा, जब आप अपनी रचनात्मक सोच की क्षमता में सुधार करेंगे एवं मजबूती लाएँगे।

* * *

रचनात्मकता

जो व्यक्ति यह सोचता है कि समस्त कार्य-शक्ति पर उसका पूर्ण अधिकार है, आरोग्यता उसकी सहज संपत्ति है तथा अविवेक और असंतुलन से उसका घोर विरोध है, तो निश्चित ही उस व्यक्ति की शक्ति और सामर्थ्य में वृद्धि होती है। हमारे रचनात्मक होने का एक ही अर्थ है—पूर्ण आरोग्य तथा पूर्ण संपन्नता। हमें इसी लक्ष्य के योग्य बनाया गया है कि अपनी प्रतिभा से हम नित नई-नई वस्तुओं एवं विचारों का उत्पादन करें।

* * *

लक्ष्य

द्वेषपूर्ण प्रतियोगिता से बचने का सबसे अच्छा तरीका है, अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करना। कोई माने या न माने, आपकी सफलता आपको जरूर मान्यता देगी। दूसरों द्वारा की गई प्रशंसा अथवा निंदा में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। सफल होने के लिए आपको लोगों से प्रमाण-पत्र पाने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए सदा आगे बढ़ते रहें, सफलता जरूर मिलेगी।

* * *

लक्ष्य की निश्चितता और कुछ आगे कर गुजरने की आदत बेहद कल्पनाशील लोगों की कल्पना को नया रंग देती है। लक्ष्य की निश्चितता को इस तरह दिमाग पर कब्जा जमा लेना चाहिए, ताकि असफलतावाले विचारों के लिए दिमाग में न समय हो और न वजह। लक्ष्य की निश्चितता से आत्म-निर्भरता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, उत्साह, आत्म-अनुशासन का विकास होता है और प्रयास पर ध्यान लगाने में सहूलियत होती है। ये सब भौतिक सफलता हासिल करने की पूर्व शर्तें हैं।

* * *

लक्ष्य के प्रति जागरूक व्यक्ति हर ग्रुप में ऐसे कुछ लोगों को खोज लेते हैं, जो किसी-न-किसी रूप में उनके लिए मददगार साबित हो सकते हैं और निश्चित प्रमुख लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दोस्ती उनसे भी कायम कर लेते हैं। कूटनीतिक तरीके से बाकी को वे अपने रास्ते में नहीं आने देते। लक्ष्य के बिना आप स्वयं को कहाँ पाते हैं, इसका जवाब अपने ही अंदर खोजें और नए अवसरों की तैयारी करके उनका लाभ उठाएँ।

* * *

हमारे जीवन में लक्ष्य का निर्धारण हमारा भाग्य नहीं करता, हम खुद ही करते हैं, लेकिन उस मंजिल तक पहुँचने के लिए सकारात्मक सोच होना चाहिए। इसके लिए दैनिक जीवन में खुशी आवश्यक है। जब हम अपने रोजमर्रा की जिंदगी को खुशनुमा बनाते हैं, तो अपने सपनों और जीवन के बारे में भी हमारा नजरिया बदल जाता है।

* * *

वार्त्तालाप

एक खुशमिजाज और विनोदप्रिय व्यक्ति, जिसके होंठों पर सदा खिलखिलाहट रहती हो, दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जो व्यक्ति यह जानता हो कि दूसरों को किस तरह की बातों में रुचि है तथा उससे किस तरह की बातें करनी चाहिए, वह कभी असफल नहीं होगा। हरेक मौके पर उपयुक्त व उचित वार्त्तालाप कर सकने की योग्यता रखनेवाले व्यक्ति नि:संदेह सभी को प्रभावित करते हैं।

* * *

स्वयं को समय दें और देखें कि किस तरह आपके जीवन से काले बादल छँटने लगते हैं। वैयक्तिक वार्त्तालाप से अनेक समस्याएँ सुलझ सकती हैं। खुद से बातचीत करें और अपने अंदर की आवाज सुनें। अपने आपको बताते रहें कि आप एक दमदार व्यक्ति हैं, आप उस व्यक्ति जैसे नहीं हैं, जो कष्टप्रद स्मृतियों के दलदल में फँसकर रह जाता है।

* * *

वास्तविक लक्ष्य

लक्ष्य चाहे अल्पकालिक हो या दीर्घकालिक, वास्तविकता के निकट होना चाहिए। उन लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए संघर्ष न करें, जो आपकी सीमा या क्षमता के अंदर न हों। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक व्यावहारिक समय-सीमा तय करना भी जरूरी है। अल्पकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि उन्हीं के माध्यम से आप उन अंतिम लक्ष्यों तक पहुँच सकेंगे, जो लक्ष्य आपने अपने लिए तय किए हैं। इस प्रक्रिया में काफी धैर्य की आवश्यकता होगी।

* * *

विचार

अपने मन में सदा अच्छे विचारों को स्थान दें।

* * *

अशुभ विचारवाले मनुष्य रोगी एवं दुष्कर्म करनेवाले भोगी बनते हैं, जबकि शुभ विचार वाले स्वस्थ, सत्कर्म करनेवाले योगी बनते हैं।

* * *

आप विचार द्वारा भाग्य पर विजय प्राप्त करते हैं। यदि आप यह समझ लें कि मनुष्यों तथा संख्याओं के भाग्य निर्माण में विचार ही एकमात्र कारण है, तो आपको हाथ में तलवार नहीं लेनी पड़ेगी। जैसा विचार होगा, अनिवार्य रूप से वैसा ही परिणाम होगा।

* * *

कुविचार भी व्यसन की तरह हैं। मनुष्य के उच्च एवं अच्छे विचार जहाँ उसे समाज के लिए प्रेरणा के तौर पर स्थापित करते हैं, वहीं इसके विपरीत कुविचार मनुष्य को राक्षसी प्रवृत्ति का बना देते हैं। अच्छे विचार सिर्फ स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं, क्योंकि अच्छे विचार अच्छी शिक्षा ही देंगे।

* * *

गलत विचार किसी भी मनुष्य को बहुत जल्दी अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं और यदि जल्दी ही उनसे छुटकारा नहीं पाया जाता, तो वे मनुष्य को असफलता की ओर ले जाते हैं। इन सब विचारों से उत्पन्न होती है चिंता, जो मनुष्य को खोखला बनाती जाती है। जो मनुष्य ऐसे विचारों की गिरफ्त में आने के बाद जल्दी उनसे छुटकारा नहीं पाता है या नहीं पा सकता, तो यह समझना चाहिए कि वह उन विचारों का गुलाम हो गया है।

* * *

विचार इनसानी दिमाग में सबसे ज्यादा फायदा देनेवाला तत्त्व है और विचारों का सृजन कल्पना से ही होता है। सारे विचार, चाहे वे नकारात्मक हों या सकारात्मक, अच्छे हों या बुरे, सही हों या गलत, अपने शारीरिक अनुपात के हिसाब से आवृत होते हैं। विचार एक ऐसी चीज है, जिसे आप पूरी तरह काबू कर सकते हैं। विचार की शक्ति

वैचारिक आदतों से पनपती है। विचार के तौर पर जानी जानेवाली ऊर्जा नकारात्मक इकाइयों से इस हद तक दूषित हो सकती है कि पूरे तंत्रिका तंत्र की कार्य-प्रणाली गड़बड़ हो जाए और कई प्रकार की तथा अनेक छोटी-मोटी बीमारियाँ इनसान को घेर लें। विचार सारे भाग्य का प्रारंभिक बिंदु है। विचार सिर्फ पैदा होते हैं, ये अपने आप संगठित और निर्देशित नहीं होते। इन्हें रचनात्मक बनाने के लिए व्यक्तिगत पहल द्वारा निर्देशित और उत्प्रेरित करना जरूरी होता है।

* * *

शुभ विचार आपको सफलता की ओर ले जाएँगे और अशुभ विचार असफलता की ओर। आपका भविष्य आपके शुभाशुभ विचारों पर टिका होता है। अब यह मनुष्य को स्वयं निर्णय करना होता है कि वह सफलता प्राप्त करना चाहता है अथवा असफलता।

* * *

हमारी जीवन पद्धति पर हमेशा श्रेष्ठ विचारों एवं सद्गुणों का शासन होना चाहिए। रचनात्मकता या धनात्मकता के विपरीत विचारों से सदा ही अपनी रक्षा करनी चाहिए। जब हम भूमि में अच्छा बीज बोते हैं, अच्छी खाद और उचित पानी देते हैं एवं मौसम भी ठीक रहता है, तो पौधे के अंकुर फूटने से लेकर फलयुक्त होने तक की सभी क्रियाएँ भली प्रकार संपन्न होती हैं। पौधे के सूखने या नष्ट होने की संभावना तभी होती है, जब भूमि की उर्वरता कम हो जाती है या मौसम एकदम प्रतिकूल हो जाता है, पौधे को धूप या पानी ठीक से नहीं मिलता है। उसी प्रकार जब किसी व्यक्ति के विचार निष्क्रियता से बोझिल हो जाते हैं, कर्म-शक्ति क्षीण हो जाती है, उत्साह और उल्लास मंद पड़ जाते हैं, साहस और आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है, तब उसका व्यक्तित्व एकदम नाकारा तथा प्रभावहीन हो जाता है।

* * *

विनम्रता

बातचीत की पहल करने के लिए विनम्र और व्यावहारिक बनना सबसे अच्छा तरीका है। यह सभी शंकाओं तथा घबराहट को दूर कर देता है और अच्छा प्रभाव डालता है। विनम्रता आपके चाल-चलन, व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के बारे में सबकुछ बयान कर देती है। विनम्र होने के साथ-साथ व्यवहारकुशल होना भी उचित है। हालाँकि ईमानदार और स्पष्टवादी होने का लाभ अवश्य मिलता है। कभी-कभी सच्चाई को आकर्षक बनाकर प्रस्तुत करना भी आवश्यक हो जाता है।

* * *

विफलता

आप अगर विफलता की मानसिकता में बंद हो जाते हैं, तो कभी न समाप्त होनेवाली विपत्ति की सुरंग में अटककर रह जाएँगे। आप आधा-अधूरा काम करेंगे और असफल होते रहेंगे, जिससे आपकी यह धारणा पुष्ट होगी कि आपका काम घटिया है। आपके भाग्य में मामूली बने रहना, विफलता पाना ही लिखा है। आप सफलता पर कभी ध्यान नहीं लगा सकते, क्योंकि आप सदैव सफलता के बारे में सोचते रहते हैं। क्योंकि आप मन में आशंका लिये काम कर रहे हैं, आप और भी गलतियाँ कर सकते हैं। निष्कर्षत: आप सफलता के सपने नहीं देख रहे हैं, आप विफलता के भयानक सपनों में घिरे हुए हैं।

* * *

हम प्रतिपल कुछ नया सीखते हैं और अपने साधनों में वृद्धि करते हैं। सही समय पर कार्य को करनेवाले लोग असंभव लगनेवाले कार्यों को भी कर लेते हैं। जो व्यक्ति अपने काम औरों पर टालते रहते हैं, उनके लक्ष्य कभी पूरे नहीं होते। जो इधर-उधर अपने कीमती समय को फालतू खर्च करते घूमते हैं, जो कार्य को बिना सोचे-विचारे करते हैं, जो कार्य शुरू तो कर देते हैं, परंतु संकट, बाधा या संघर्ष की स्थिति आने पर काम अधूरा छोड़कर दूसरे कार्यों में लग जाते हैं, जो कोई भी कार्य ढंग से पूर्ण करने की सामर्थ्य नहीं रखते, वे कहीं भी और कभी भी सफल नहीं हो पाते।

* * *

विश्लेषण

यदि आप जीवन में प्रगति करना चाहते हैं, तो अपने चरित्र की विशेषताओं का ईमानदारी से विश्लेषण करें। लोगों को कठिनाई या विपत्ति में देखकर उनकी हँसी न उड़ाएँ, अन्यथा आप एक क्षण में अपना व्यक्तित्व खो देंगे। लोगों की बात नम्रतापूर्वक सुनें, भले ही उनके विचार निराधार या आपकी रुचि के अनुकूल न हों। अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का यह बड़ा उपाय है।

* * *

विश्वास

आपके दिमाग में सबकुछ मौजूद है, इसलिए पहले दिमाग को अपने काबू में लें, ताकि विश्वास कमजोर करनेवाली अनचाही बातें जगह नहीं बना सकें। विश्वास उन्हीं दिमागों में भाईचारा कायम करता है, जो सार्थक सोचवाले हैं। यह ऐसी अंतरचेतना है, जो सार्थक दिमाग को शक्ति, प्रेरणा और एक्शन में आने की क्षमता प्रदान करती है।

* * *

व्यक्तित्व विकास

ज्ञान का दूसरा नाम है शक्ति। कोई भी उस व्यक्ति से प्रभावित नहीं होता है, जिसे इतना भी पता न हो कि आस-पास या संसार में क्या हो रहा है। अत: अपने सामान्य ज्ञान को समृद्ध करना आवश्यक है और आपको उस विषय का विशेषज्ञ होना चाहिए, जिस क्षेत्र में आप काम कर रहे हैं। अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से अखबार पढ़ें, टी.वी. पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखें, अच्छी और लोकप्रिय पुस्तकें पढ़ें, जानकार एवं बुद्धिमान लोगों के साथ विचार-विमर्श करें, संबंध बनाएँ, संप्रेषण करें।

* * *

व्यवहार

जब हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों, तो ऐसी स्थिति में खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है। एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। विभिन्न तरह के लोग अपने द्वारा किए गए व्यवहार या असहयोगी शब्दों के प्रति अलग-अलग सिद्धांत अपनाते हैं। ऐसा आपके परिवार और दोस्तों के बीच भी होता है। यदि आपके बारे में कोई गलत बात कही जाती है और उसमें अगर सत्यता हो, तो सबसे पहले अपने आपमें सुधार करना चाहिए। यदि यह असत्य है, तो इसे हँसकर टाल देना चाहिए।

* * *

दूसरों के साथ व्यवहार में भी आपको मैत्रीभाव एवं नम्रता से पेश आना चाहिए। घमंडी बनकर आप किसी को

भी प्रभावित नहीं कर सकेंगे। अगर आपकी मौजूदगी में लोगों को परेशानी महसूस होती है, तो यह एक संकेत है कि आपको अपना व्यवहार सुधारने की जरूरत है। लोगों को आपके पास आते समय या आपसे बात करते समय सहजता का अनुभव होना चाहिए।

* * *

शक्ति

अपनी शक्ति को कभी कमतर न समझें, क्योंकि एक छोटी-सी चिनगारी भी विशाल वन को जलाकर राख कर सकती है।

* * *

शिष्टाचार

विनम्रता और शिष्टाचार अंत:करण की अभिव्यक्ति हैं। समाज, देश और परिस्थिति के अनुसार इनकी अभिव्यक्ति के तरीकों में अंतर हो सकता है, परंतु हर जगह उनका आधार यह है कि दूसरों के प्रति सम्मान, विनम्रता और मधुर स्वभाव व्यवहार में साफ नजर आना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर व्यक्ति के अंतर्मन की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर समाज की जागरूकता का भी पता चलता है। शिष्टाचार का मूल मंत्र है—विनम्रता और दूसरों का सम्मान।

* * *

शिष्ट व्यवहार से हमारा जीवन भी माधुर्य से भर जाता है। श्रेष्ठ आचरण को ही सरल भाषा में शिष्टाचार कह सकते हैं। शिष्टाचार से केवल आंतरिक सुगढ़ता नहीं आती, बल्कि नैतिक व सामाजिक जागरूकता का भी बोध होता है। व्यवहार में शिष्टाचार आने से हमारा जीवन विकास की ओर अग्रसर होने लगता है, अवनति से उन्नति, खिन्नता से प्रसन्नता, अपमान से मान की ओर। इसके विपरीत हमें कटुभाषी, असंतोष, निराशाजनकता व खिन्नता जैसे आचरण से असहयोग, उपेक्षा, अपमान जैसी कटुता ही हाथ लगती है। परस्पर स्नेह, सद्भावना, शिष्टता, सभ्यता व उदारता से हम प्रगति-उन्नति के पथ पर चलने लगते हैं।

* * *

शिष्ट, नम्र व्यवहार समाज का प्रवेश द्वार है। आपकी सहजता और वाक्पटुता से आपकी साख बढ़ सकती है। आप अपने क्षेत्र में ज्यादा प्रभुत्व कायम रख सकते हैं। वाणी का शिष्टाचार व्यवहार के शिष्टाचार को जन्म देता है। यदि आपका व्यवहार सभ्य है, तो आप जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

* * *

शिष्टाचार हमारे जीवन का ऐसा दर्पण है, जिसमें हमारा वास्तविक व्यक्तित्व झलकता है। शिष्टाचार के माध्यम से ही हमारा पहला परिचय समाज को मिलता है। शिष्ट व विनम्र व्यवहार के लिए कुछ सामान्य नियमों का पालन आवश्यक है। हम भाषा और व्यवहार में शिष्टाचार को अपनाएँ। सकारात्मक विचारों को तरजीह दें। जीवनशैली में सादगी और सज्जनता को अपनाएँ। दूसरों की अच्छी बातों का लाभ उठाएँ और अच्छे लोगों की बातों का सम्मान करें।

* * *

सभ्य और शिष्ट आचरण का ज्ञान पूर्वजों से विरासत में मिलता है। इसका अभ्यास बचपन से ही कराया जाना उचित है। वैसे तो शिष्टाचार की बातें पाठ्य-पुस्तकें में भी दी गई होती हैं, लेकिन जब शिक्षक और अभिभावक इस

दायित्व का अभ्यास अपने आचरण से कराते हैं, तो ही यह हमारे जीवन में उतरता है।

* * *

श्रम

आज के श्रम से कल को सँवारा जा सकता है, निखारा जा सकता है और उसे मनोनुकूल सार्थक बनाया जा सकता है।

* * *

संकल्प

अगर आप सोचते हैं कि मैं पराजित हो जाऊँगा, तो आप पराजित हो गए हैं। यदि आप सोचते हैं कि यह काम मेरे वश में नहीं है, तो आप उस काम को करने का साहस कभी नहीं जुटा पाएँगे। यदि आप सोचते हैं कि मैं जीतने के लिए जी तो रहा हूँ, परंतु जीत नहीं सकता, तो आप कदापि विजय हासिल नहीं कर पाएँगे। यदि आप सोचते हैं कि मैं हार जाऊँगा, तो आप हार चुके हैं। कोई भी इनाम जीतने के लिए हमें पहले उसकी प्राप्ति मन में सुनिश्चित करनी होती है। जिंदगी एक ऐसी जंग है, जिसमें अधिक बलवान अथवा अधिक ऊर्ध्वगामी ही सदैव विजयी नहीं होता। देर-सबेर वही व्यक्ति विजयी होता है, जो यह सोच लेता है कि मुझे जीतना ही है। उन्हीं लोगों की तकदीर बदलती है, जो यह सोचते हैं कि वह बदलनी चाहिए।

* * *

जो व्यक्ति एक ही कार्य को अपना जीवन संकल्प बनाकर करता है, उसकी संपूर्ण विजय होती है। किसी उद्देश्य विशेष पर अपनी समस्त शक्तियों को केंद्रित करने से उस कार्य की सिद्धि हेतु किए जानेवाले समस्त साधन ज्ञात हो जाते हैं। जो त्रुटियाँ सिद्धि में बाधा डालती हैं, उनका भी धीरे-धीरे आभास हो जाता है, जिससे उनसे पार पाना आसान होता है। ध्यान रखिए, आधे-अधूरे मन से किए गए कार्यों के परिणाम भी निश्चित ही आधे-अधूरे होते हैं।

* * *

जो व्यक्ति पूर्ण पवित्रता से यह संकल्प करता है कि मैं विश्व की समस्त महान् विद्याओं को प्राप्त करने का पात्र हूँ, सभी समृद्धियों को प्राप्त करना मेरा अधिकार है और इस प्रकार निरंतर यह घोषित करता रहे कि मेरा जीवन-लक्ष्य महान् है, जो मेरे आचार-व्यवहार और आवृत्तियों से प्रकट होता है, वह निश्चित ही अपने संकल्पों को पूर्ण करता है।

* * *

लक्ष्य एवं कठोर संकल्प के बिना जीवन खेल से बढ़कर नहीं। नित नए मंतव्य बनाते भी गए, तो भी कुछ सिद्ध नहीं होगा। दो खरगोशों के पीछे दौड़ने से एक भी हाथ नहीं आता। स्मरण रखिए, जब हम बहुत सारे मंतव्यों के साथ किसी कार्य को करना शुरू करते हैं, तो उसके परिणाम विचलित अवस्था में ही प्राप्त होंगे।

* * *

संकल्पबद्ध रूप से ईमानदारी व सूझ-बूझ के साथ किया गया परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। हमारे कार्यक्षेत्र से अधिक हमारा संकल्प मूल्यवान होता है। वस्तुत: सही सोच व उत्कृष्ट संकल्प ही हमें कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर होने में मदद करते हैं।

* * *

सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपने तन, मन और धन की समस्त ऊर्जा एक ही दिशा में व्यय करे। अन्य प्रलोभनों की अवहेलना करके व्यक्ति जब एक ही लक्ष्य को जीवन संकल्प बनाकर कार्य करते हैं, तब उनकी संपूर्ण विजय होती है। उस कार्य के प्रति मन की समस्त शक्तियों को केंद्रित करने से उस कार्य की सिद्धि के लिए समस्त साधनों का ज्ञान हो जाता है।

* * *

संतुलन

जीवन में संतुलन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अगर लगातार स्वयं से कठोरता से काम लेंगे, तो जल्दी ही थक जाएँगे। इससे आपकी कार्य-क्षमता में गिरावट आने लगेगी और काम करते समय गलत निर्णय लेने से भी कार्य-क्षमता प्रभावित होगी।

* * *

बहुत बार ऐसा होता है कि हम जैसा चाहते हैं, वैसा माहौल हमें नहीं मिल पाता। कई बार हमारी अपेक्षा के मुताबिक भी जब हमें मान-सम्मान या अहमियत नहीं मिलती, तब भी हम उखड़ जाते हैं, परंतु हमें विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित रखना चाहिए तथा मुसकराते हुए प्रत्येक व्यक्ति से बात करनी चाहिए।

* * *

संदेह

दुनिया में अपना स्थान बनाने के लिए वीरतापूर्वक लड़ें। हार को बहादुरी के साथ सहन करें। वीर पुरुष का स्वभाव उसके निकटवर्ती लोगों पर जादू का सा प्रभाव डालता है। कोई भी महान् कार्य उन व्यक्तियों द्वारा संपन्न नहीं हो सकता, जो उस कार्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

* * *

संदेह हमारी संकट-निरोध शक्ति को क्षीण करता है। संदेह हमारे आत्मविश्वास और कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए हमें जिस चिंतन की आवश्यकता होती है, उसको भी कमजोर करने का कार्य करता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। संदेह स्वाभाविक रूप से हमारे मनन और चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। इसका त्याग अवश्यंभावी है।

* * *

संवेग

नकारात्मक अथवा निराशाजनक संवेगों के अंतर्गत ईर्ष्या, द्वेष, चिंता, तनाव, दुःख, भय, हीनभावना, क्रोध, असुरक्षा, हिंसा, लोभ, कुपथ, मोह, अहंकार, शोषण, दोषारोपण, अपराध, निंदा, आलस्य, असंयम, छल, प्रपंच, षड्यंत्र तथा दुर्भावना आदि भावनाएँ आती हैं, जबकि सकारात्मक या आशाजनक संवेग हमें शांति, स्नेह, सौहार्द, प्रेम, आनंद, सुख, आत्मविश्वास, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, त्याग, दान की भावना, कर्मठता, विनम्रता, प्रशंसा, समर्पण, गुणों का अनुसरण, समय का सदुपयोग, निर्भीकता, निष्पक्षता, उत्साह, संयम, सफलता आदि के मार्ग पर प्रशस्त करते हैं।

* * *

सकारात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक दृष्टिकोण से हमारे जीवन-पथ पर उपलब्धियों के दीप स्वत: ही प्रज्वलित होने लगते हैं। अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सच्चाई के साथ उपयोग करनेवाला व्यक्ति कभी उद्विग्न नहीं रहता। उसके जीवन का लक्ष्य एकदम स्पष्ट होता है।

* * *

सकारात्मक मनोवृत्ति

सकारात्मक मनोवृत्ति खुशहाली और सफलता दिलाती है तथा आपका संपूर्ण जीवन बदल सकती है। अगर आप जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखते हैं, आपके पूरे जीवन में प्रकाश भर जाता है। यह प्रकाश न केवल आपको और जीवन के बारे में आपके नजरिए को प्रभावित करता है, बल्कि आपके समस्त पर्यावरण और आपके आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करता है।

* * *

हमारे व्यक्तित्व में सकारात्मक मनोवृत्ति बहुत महत्त्व रखती है। संकीर्ण मानसिकता वालों को कोई पसंद नहीं करता। जीवन में उसी व्यक्ति को सुशील समझा जाता है, जिसकी मानसिकता सकारात्मक एवं स्वस्थ होती है। व्यक्ति का वास्तविक आकर्षण उसकी शक्ल-सूरत में नहीं, बल्कि उसके अच्छे कार्य एवं सद्गुणों में झलकता है। इसीलिए हमें अपने व्यक्तित्व का विकास करने हेतु अपने मानसिक दृष्टिकोण में सुधार करना चाहिए।

* * *

सकारात्मक मानसिकता

सकारात्मक मानसिकता के विकास में सहायक तत्त्व हैं—खुशी का चुनाव, जीवन का उज्ज्वल पक्ष देखना, आशावादी बनना और आशापूर्ण जीवन जीना, मुसकराते रहना, नकारात्मक सोच-विचार और चिंताओं की व्यर्थता व निष्फलता पर ध्यान न देना, प्रेरणादायक कहानियाँ पढ़ना, अपने विचारों पर नियंत्रण रखना, एकाग्रता और चिंतन-मनन सीखना।

* * *

सकारात्मक मानसिकता के साथ आप जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखते हैं, आशावादी हो जाते हैं और अच्छे-से-अच्छा घटने की आशा करते हैं। यह निश्चित रूप से एक ऐसी मनोदशा है, जिसे विकसित और सुदृढ़ किया जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आपको जीवन भर सकारात्मक सोच पर चलना चाहिए। यह एक जीवन-पद्धति है और एक ऐसी तकनीक है, जिसे आपको अपने दैनिक जीवन में अवश्य शामिल करना चाहिए, अगर आप परिस्थितियों को बदलने या अपने लक्ष्यों को हासिल करने का इरादा रखते हैं।

* * *

सकारात्मक विचार

प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने का अच्छा तरीका यह है कि आप सकारात्मक और विजय प्राप्त करनेवाले विचारों से काम लें। सकारात्मक विचारों पर अडिग रहने का मतलब होता है आधी जंग जीत लेना। सकारात्मक विचारों को अपनाकर ही सफलता और असफलता के बीच के अंतर को पाटा जा सकता है। सकारात्मक व्यवहार हमें सभी तरह की परिस्थिति के वास्तविक मूल्यांकन की क्षमता प्रदान करता है। वहीं दूसरी तरफ नकारात्मक सोच बड़ी-बड़ी बाधाएँ खड़ी कर देता है। कई बार ये बाधाएँ वास्तविक होती हैं, तो कई बार मात्र काल्पनिक।

* * *

सकारात्मक सोच का विकास

आपको अपने सोच व बोलचाल शब्दकोश में से 'असंभव', 'नहीं कार्य करेगा', 'यह नहीं हो सकता' और 'इसको करने का कोई फायदा नहीं' जैसे शब्दों को बाहर निकाल फेंकना होगा।

* * *

जब हमारी मनोवृत्ति और हमारा व्यवहार सकारात्मक होता है, हम केवल सुखद अनुभूतियों और रचनात्मक कल्पनाओं को अपने मन में काम करने देते हैं। हम अपनी अंतरंग दृष्टि से यह भी स्पष्ट देख लेते हैं कि हम जीवन से वास्तव में क्या चाहते हैं और वह किस तरह घटित होना चाहिए। सकारात्मक सोच की सही शक्ति को इस तरह समझ सकते हैं कि यह आपको अपना जीवन आपकी अधिकतम क्षमता तक जीने का अवसर देती है और नकारात्मक मानसिकता को आपको नीचे खींचने का मौका नहीं देती है।

* * *

जीवन को सकारात्मक सोच एवं ऊर्जा के साथ समझने का प्रयास किया जाना चाहिए, क्योंकि जब हम जीवन को समझ पाते हैं, तब तक उम्र के उत्तरार्द्ध में पहुँच जाते हैं। जीवन हमें एक बहुमूल्य ईश्वरीय उपहार है, जिसे हमें श्रेष्ठतम सिद्ध करते हुए जीना चाहिए। जीवन का यथेष्ट लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए और लक्ष्य की ओर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हम देखेंगे हमारे जीवन की शैली ही बदल गई है। हमारा दृष्टिकोण ही बदल गया है और हम देखेंगे दृढ़ आत्मविश्वास एवं सफलता के नए आयामों ने हमारे जीवन के सुनहरे द्वार खोल दिए हैं।

* * *

सकारात्मक सोच एक विशाल वैयक्तिक गुण है और सफलता की कुंजी है। सकारात्मक मनोवृत्ति जीवन के दैनिक क्रिया-कलापों को अधिक आसानी से सँभालने में सहायक होती है, आशावाद को जन्म देती है और आपके लिए चिंता तथा नकारात्मक सोच से बचकर चलना अधिक आसान बना देती है। अगर आप इसे एक जीवनशैली के रूप में अपना लेते हैं, तो यह आपके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाती है और लोगों को अधिक खुशहाल, अधिक समझदार और अधिक सफल बनाती है।

* * *

सकारात्मक सोच सभी तरह के सुखों का आरंभिक बिंदु है, चाहे वे सुख भौतिक हों या वैसे सुख हों जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। सकारात्मक सोच से सकारात्मक इच्छावाली वस्तुएँ हासिल होती हैं, नकारात्मक सोच से गरीबी और बदहाली समेत कई अनचाही वस्तुएँ हासिल होती हैं।

* * *

हर अँधेरी रात के बाद सुबह अवश्य आती है। सदैव आशावादी दृष्टिकोण रखने से सकारात्मक सोच विकसित होती है। किसी भी बुरी आदत को अच्छी आदत में बदलने के लिए नियमित अभ्यास तथा आत्म-चिंतन पर्याप्त होता है, जो बुरी आदत को अच्छी आदत में बदलने में सहायक होता है। जरूरत है, तो मात्र चिंतन की, दृष्टिकोण की एवं सकारात्मक सोच की।

* * *

हर कोई अपने जीवन में किसी-न-किसी से प्रेरित होता है। ऐसे लोगों से प्रेरणा लीजिए, जो जीवन को जिंदादिली और खुशहाली से जीना जानते हैं। हर व्यक्ति के भीतर कुछ-न-कुछ अच्छाइयाँ जरूर होती हैं। कोई व्यक्ति

व्यवस्थित होता है, तो कोई धैर्यवान, कोई सकारात्मक सोच रखता है, तो कोई जागरूक रहता है। आप उन गुणों, अच्छाइयों से प्रेरित होकर अपने भीतर भी सकारात्मक भाव पैदा करें।

* * *

सकारात्मकता

जो भी व्यक्ति विजेता बनना या अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सकारात्मक प्रवृत्तिवाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपने सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं, तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

* * *

सच बोलना

सच बोलने की आदत बना लेना बहुत बेहतर है, हालाँकि यह कठिन कार्य है। सच बोलने की आदत जीवन में आपको बहुत सारी मनोव्यथा और विपत्ति से बचा लेगी। सच अकसर उजागर हो जाता है, भले ही हम चाहें या न चाहें तथा झूठ बोलने से स्थिति और जटिल हो जाती है तथा हम दूसरों की निगाह में बुरे बन जाते हैं।

* * *

सच्चाई

सच्चाई एक ऐसा गुण है, जो आपके समय को सुव्यवस्थित करता है और आप कम समय में अधिक उपयोगी और लाभदायक कार्यों को करने में सफल रहते हैं।

* * *

सजगता

प्रत्येक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति को इस बारे में सचेत रहना चाहिए कि वह अपने समय का सदुपयोग करते हुए अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करे। इस तरह की योजना बनाने की आवश्यकता है कि आपका समय भी व्यर्थ न हो और कार्य भी अपने वास्तविक स्वरूप में संपन्न हो सकें। अपनी क्षमताओं तथा कौशल को सचेत रखिए। जो क्षमताएँ आपके पास हैं, वे मात्रा में चाहे कितनी भी कम क्यों न हों, उनका कारोबार कीजिए। आप देखेंगे कि वे बढ़ने लगी हैं। हम बहुत बार अपनी क्षमताओं की वजह से नहीं, अपितु उद्देश्य की कमी तथा सचेतनतापूर्वक प्रदर्शन न कर पाने की कमी के कारण असफल हो जाते हैं। कार्य करने की किसी भी शैली को स्थायी तौर पर अपना ढर्रा मत बनाइए, उसमें निरंतर गुणवत्ता व सुधार के प्रयास कीजिए। आपके प्रयोग जब लोगों के सामने प्रकट होंगे, तो वे आपको स्वीकारेंगे, सराहेंगे तथा चाहेंगे।

* * *

सचेत रहकर आप अपने लक्ष्य तक अधिक आसानी से पहुँचते हैं और जो भी करते हैं, उसे श्रेष्ठ ढंग से करते हैं। जब भी कोई कार्य श्रेष्ठता के मापदंड को ध्यान में रखकर किया जाता है, तो स्वाभाविक रूप से उसकी गुणवत्ता में बढ़ोतरी हो जाती है। सर्वोच्च गुणवत्ता ही हमें औरों से अलग करती है तथा हमारी कामयाबी की मंजिल को तय करती है। सचेतनता का उपयोग हम इस तरह भी कर सकते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य को हमें सबसे पहले करने की आदत डालनी चाहिए। जब हम सचेतनतापूर्वक कार्य करते हैं, तो हमारी दिनचर्या स्वत: ही इस

तरह की होती चली जाती है कि हम कार्यों को उनके महत्त्व के क्रम में निपटाना शुरू करते हैं और इस तरह उनसे मिलनेवाले नतीजे अधिक लाभप्रद और संतोषजनक होते हैं।

* * *

सजगता एक तरह की चेतनता है, जो हमारे मन-मस्तिष्क को जाग्रत् रखती है। जो जगा हुआ है, उसके सभी कार्य सधे हुए होते हैं। असचेत रहने का अभिप्राय इस बात से भी है कि आप अपने कार्य को और अपने समय को व्यवस्थित करते समय कितने सचेत रहते हैं। जब आप सचेत होकर कोई कार्य करते हैं, तो उसमें गलती होने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है। यही नहीं, सचेत व्यक्ति कभी भी समय की बरबादी नहीं करता। सचेत व्यक्ति जिस तरह अपने समय का मूल्य समझता है, उसी तरह उसे दूसरे व्यक्ति के समय की कीमत भी पता होती है। आपका जीवन इतनी जाग्रत् अवस्था में हो कि आपको आपके मार्ग की समस्त बाधाएँ स्पष्ट दृष्टिगोचर हों, तो निश्चित ही आप सफल होंगे।

* * *

सद्व्यवहार

हमें न केवल अपने रहन-सहन का स्तर ऊँचा करना चाहिए, बल्कि दूसरों का जीवन-स्तर उठाने में उनकी सहायता करनी चाहिए। दूसरों से प्यार से पेश आएँ और उनके प्रति अच्छा व्यवहार रखें। ऐसा करके आप दूसरों में हीनभावना दूर करने की कोशिश कर सकते हैं। दूसरों के बारे में कुछ भी कहते समय सावधानी बरतें, क्योंकि दूसरे लोग भी भिन्न-भिन्न समय व विभिन्न स्थानों पर हमारे बारे में वैसी ही बातें कहेंगे और इस तरह हमारे संबंध में लोगों की एक राय बनाएँगे।

* * *

सद्व्यवहार और सहयोग

सद्व्यवहार और सहयोग व्यक्ति को लोकप्रिय बनाते हैं। इसके फलस्वरूप व्यक्ति की उन्नति एवं सफलता की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। श्रेष्ठ व्यक्तित्व चरित्र की ठोस बुनियाद पर आधारित होना चाहिए। जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सुधारना चाहता है, उसमें इच्छा और दृढ़ निश्चय का होना अनिवार्य है। उसे पता होना चाहिए कि उसके लक्ष्य क्या हैं और किस दिशा से होकर जाना है।

* * *

सपने

आप सदैव अपने को धन्य समझें कि जो कुछ आपके पास है, वह सिर्फ आपके पास है। सदैव अपने सपनों को जगाए रखें। कभी भी उन्हें मरने न दें। उनको पूरा करने का प्रयास ही निश्चित रूप से आपको कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहेगा और एक दिन सफलता आपके कदम चूमेगी।

* * *

सपने देखनेवाले लोग ही उनको हकीकत में बदलने की इच्छा रखते हैं। जिन लोगों ने भी जीवन में प्रगति व विकास के उच्चतम आयामों को स्पर्श किया है, उन सभी ने सबसे पहले अपने लक्ष्यों के बारे में सपने ही सँजोए थे।

* * *

सफल लोग

अत्यंत सफल लोग सभी विषयों में एक उदार दृष्टिकोण रखते हैं, कुछ विषयों में उनकी हमेशा विशेष रुचि रहती है; वे विषय, जिनमें उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है। ऐसा नहीं हो सकता कि वे हरफनमौला हों, लेकिन किसी भी फन के उस्ताद न हों, बल्कि वे कोई-न-कोई ऐसा विषय-क्षेत्र अवश्य तलाश लेते हैं, जिसमें वे पूरा ध्यान देते हैं, तब तक खोज-बीन करके उसे उपयोग में लाते हैं, ताकि मानवजाति को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाया जा सके। वे वही करते हैं, जिसके बारे में उन्हें अच्छी तरह पता होता है कि कैसे किया जाए।

* * *

सफल व्यक्ति कर्मठ होते हैं। वे उद्योगशील एवं परिश्रमी होते हैं तथा हमेशा यह ध्यान रखते हैं कि जो कुछ भी किया जाना आवश्यक है, उसमें कुछ बाकी न रह जाए। वे आज का काम कल पर नहीं छोड़ते और हमेशा यह सुनिश्चित करते हैं कि बृहत्तर उपलब्धियों की खोज में वे होशियारी से काम करें।

* * *

सफलता

गाँठ बाँध लें कि अपने से ऊँची कुरसी पर बैठे व्यक्तियों का दोष ढूँढ़ने में समय गुजारनेवाले कभी भी जीवन में अपनी बदौलत कोई बड़ी सफलता हासिल नहीं कर पाएँगे।

* * *

जीवन में जो भी कार्य करें, उसको सौ प्रतिशत करने की आदत डालिए, क्योंकि पूरे मन और पूरे भाव से किया गया कार्य निश्चित ही अच्छा परिणाम लाता है। संसार में सबसे बड़ा कार्य जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम जहाँ भी और जैसी भी अवस्था में हैं, वहाँ हमें अपना श्रेष्ठ देना चाहिए। जो भी हम अच्छे-से-अच्छा कर सकते हैं, उसे अधिकाधिक मात्रा में और उत्तम प्रकार से सभी के सम्मुख प्रकट करना चाहिए, इसी का नाम सफलता है।

* * *

नकारात्मक मानसिकता कहती है, आपको सफलता नहीं मिल सकती। सकारात्मक मानसिकता कहती है, आप सफलता पा सकते हैं।

* * *

पूर्व की विफलताओं और प्रतिकूलताओं का बारीकी से अवलोकन करें, जिससे यह सत्य सामने आएगा कि उसी में सफलता और अनुकूलता के वैसे ही बीज छिपे हैं। किसी भी प्रयास में नब्बे फीसदी सफलता तो इस बात से ही मिल जाती है, अगर आप समझ गए कि आप चाहते क्या हैं!

* * *

सफलता का सबसे बड़ा दुश्मन है—भय। सफलता की सीढ़ियों में शिखर पर कभी भी भीड़ नहीं होती। सफलता संयोग या किस्मत से नहीं मिलती। इसके लिए सावधानीपूर्वक योजना बनानी पड़ती है और लोगों के बीच रहनेवाली हस्तियों को कुशल अभिनय करना पड़ता है।

* * *

सबक

गलतियाँ करना मनुष्य का स्वभाव है, परंतु जो इन गलतियों से सबक नहीं लेता, वह कभी सफल नहीं होता। हम यह नहीं देखते कि भाग्य ने तो हमारा बहुत साथ दिया, पर हम अपनी गलतियों से बाज नहीं आए। इसलिए हम उन्नति नहीं कर सके और यदि उन्नति कर भी गए, तो ठीक जगह तक न पहुँचकर लुढ़क गए।

* * *

सभ्यता

अच्छी सभ्यता में उदासी, खिन्नता और निराशा के लिए कोई जगह नहीं है।

* * *

समय का महत्त्व

जो व्यक्ति आज का कार्य कल पर टालता है, उसका न तो आज ही आया और न ही कल आएगा। यदि हम पुराने दायित्वों का ही समय रहते निर्वाह न कर सके, तो नई जिम्मेदारियों को कैसे उठा पाएँगे, क्योंकि आनेवाला प्रत्येक पल हमारे लिए नई संभावनाओं एवं नए दायित्वों का संदेश लेकर आता है। इसलिए समय के महत्त्व को समझना किसी भी कामयाब व्यक्ति की पहली पहचान है।

* * *

समय

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय अवश्य आता है, जब वह अपना समुचित विकास कर सकता है। वह खास समय मानो वह घड़ी है, जब हमारा भाग्य हमारी तमाम ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए हमारे दरवाजे पर दस्तक देता है। यदि हम उसका स्वागत नहीं करते, तो वह उलटे पाँव वापस भी चला जाता है। आलसी और मंदगति के व्यक्ति सौभाग्य को पहचान नहीं पाते, जिसका परिणाम यह होता है कि उपलब्धियों के फूल उनके जीवन में नहीं खिलते, जबकि विवेकी, साहसी और तीव्र इच्छाशक्तिवाले व्यक्तियों के सपने अवश्य पूरे होते हैं।

* * *

समय प्रबंधन

अपने हर क्षण को जमा करें और इस कोष में अधिकाधिक वृद्धि करें, क्योंकि आपने यह क्षण किसी विशेष व्यक्ति के साथ बिताया है, इतना विशेष, जो आपका समय ले सके और याद रखें कि समय किसी का इंतजार नहीं करता। बीता कल इतिहास है, आनेवाला कल रहस्य, आज एक वरदान, इसलिए कहलाता है वर्तमान।

* * *

समय को संचित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे अमीर हो या गरीब, समय एक ही तरह से व्यतीत करता है। समय न तो धनी व्यक्ति के लिए तेज गति से चलता है और न ही गरीब के लिए अपनी गति धीमी करता है। समय प्रबंधन समय का समझदारी से उपयोग करने के समान है। इसे ख्याति और सफलता के बीच अंतर कहा जा सकता है। समय दुर्लभ है। जी हाँ, हर किसी को उतने ही घंटे मिलते हैं, लेकिन क्या आपने इस पर गौर नहीं किया कि लोग अकसर यह शिकायत करते रहते हैं कि उनके पास समय की कमी है? समय इतना कम है और इतना कुछ करने को है कि लोगों का ध्यान बँट जाता है। समय प्रबंधन का तात्पर्य है, प्राथमिकताओं और नजदीक आती अंतिम तारीखों को महत्त्व देना। ऐसा करने से जीवन में महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के लिए आपके पास पर्याप्त समय बच जाएगा।

* * *

समय प्रबंधन कम प्रयास से अधिक कार्य पूरे करने में आपकी मदद करता है। प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित समय आवंटित करके आपको अगला कार्य आरंभ करने के बारे में चिंता नहीं करनी पड़ती है। समय प्रबंधन के साथ आप अधिक संगठित अर्थात् व्यवस्थित हो जाते हैं और आप जो कुछ करते हैं, वे कार्य आप

आदतन करने लगते हैं, संत्रस्त होकर नहीं। इसे एक आदत में ढालकर आप अधिक उत्पादक हो जाते हैं। जैसा कि अरस्तु ने कहा था, ''हम वही बन जाते हैं, जो हम बार-बार करते हैं। अत: श्रेष्ठता एक कार्य नहीं, अपितु एक आदत है।''

* * *

समय प्रबंधन में प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। अगर आप अपने प्रत्येक लक्ष्य के समय का एक हिस्सा निर्धारित करते हैं और उसका समझदारी से हिसाब रखते हैं, तो आप न केवल अपने लक्ष्यों को पूरा कर लेंगे, बल्कि आराम के लिए कुछ समय बचा भी लेंगे। सच तो यह है कि थोड़े से समय में भी कार्योत्पादन होता है। यदि पूरे दिन या पूरे सप्ताह के लिए समय का विवेकपूर्ण विभाजन किया जाए, तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आप कितना कुछ काम पूरा कर सकते हैं।

* * *

हम जो भी हों, जहाँ भी हों, हमारा कार्यक्षेत्र कुछ भी हो, हम पर चाहे असीमित जिम्मेदारियाँ, उत्तरदायित्व एवं परेशानियाँ हों, परंतु यदि हमने उचित समय प्रबंधन कर लिया, तो हमारे कई कठिन काम भी सरल हो जाएँगे, रुके हुए कार्य पूर्ण हो जाएँगे, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रशंसा, सम्मान, सराहना मिलेगी एवं संतोष सुख का अनुभव तो हमें स्वयं ही होगा। व्यस्त रहने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, भूख लगने लगेगी, नींद अच्छी आएगी, हम प्रसन्नचित्त, तरोताजा एवं हँसमुख रहेंगे। चेहरे पर गरिमामय तेज होगा, मन में सुकून होगा। समय विभाजन कर हम कम समय में ही अधिक-से-अधिक कार्य कर पाएँगे।

* * *

समाधान

आपको अपने ऊपर विश्वास कायम करना चाहिए। आपको यह मानना होगा कि प्रत्येक कार्य किया जा सकता है। कुछ भी किया जा सकता है। सबकुछ संभव है। जब आप यह विश्वास कर लेंगे कि हर समस्या का समाधान संभव है, तो आपका दिमाग समाधान खोजने में लग जाता है और आप समाधान पा लेते हैं।

* * *

सराहना

कोई भी उस व्यक्ति के आस-पास फटकना नहीं चाहता है, जो हमेशा उदास और चिड़चिड़ा रहता है। काम और जीवन के बारे में सकारात्मक व हँसमुख रवैया बनाकर रखें। प्राय: हँसने-मुसकराने का अभ्यास करें। प्रशंसा करने और हौसला बढ़ाने में उदार बनें। अगर आप दूसरों को जानने का अवसर दें कि उनका काम सराहनीय है, वे अच्छे-से-अच्छा करने की कोशिश करेंगे। अगर आप आलोचना करना चाहते हैं, तो नरमी से करें और सुधार करने के सुझाव दें।

* * *

प्रत्येक के साथ निष्पक्षता का व्यवहार करें और किसी का भी पक्ष न लें। दूसरों की पीठ पीछे उनके बारे में चर्चा न करें। मन और मस्तिष्क खुला रखें। याद रखें कि विचार-विमर्श से समझौते की हमेशा गुंजाइश रहती है। एक कारगर मध्यस्थ बनें और मतभेदों को हल करने की कोशिश करें। इस तरह का नेतृत्व सँभालने पर आपको अपने आस-पास के लोगों से आदर और सराहना मिलेगी।

* * *

सर्वोच्च प्रदर्शन

किसी भी कार्य में सर्वोच्च प्रदर्शन का अर्थ है—उस कार्य को करते समय मन में आनंद व संतुष्टि का झरना बहे। उसी स्थिति में कार्य की सही एवं सर्वोच्च स्वीकृति होती है तथा उसके वास्तविक परिणाम प्राप्त होते हैं।

* * *

सहजता

जो लोग सहज जीवन जीते हैं, उन्हें कभी भी नकारात्मक विचार नहीं घेरते। बनावटी जीवन जीने से बेहतर होगा कि वास्तविकता में जिएँ। इससे कभी भी आपको दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा। घर-परिवार से लेकर प्रोफेशनल जीवन तक सहजता जरूरी है। असहजता न सिर्फ आपकी सफलता के मार्ग में बाधक होती है, बल्कि आपके इस व्यवहार से दूसरे भी परेशान होकर किनारा कर लेते हैं।

* * *

सहयोग

सहयोग लिये बगैर कोई भी व्यक्तिगत उपलब्धि के रास्ते में सफलता की ऊँची सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकता। सहयोगियों का चुनाव करने में सावधानी बरतना जरूरी है, खासकर उन लोगों के साथ जिनसे व्यक्ति अपने व्यवसाय के सिलसिले में नजदीकी व्यक्तिगत संबंध बनाता है।

* * *

सहिष्णुता

एक व्यक्ति का सहिष्णु होना जरूरी है और इसके कई कारण हैं, जिनमें से मुख्य यह है कि सहिष्णुता इनसान को सही तरीके से सोचना सिखाती है और तथ्यों की ओर ले जाती है, जिनसे उसके अंदर सटीक सोच की क्षमता पैदा होती है।

* * *

सामंजस्य

सामंजस्य की कमी अकसर विफलता की पहली और आखिरी तथा एकमात्र वजह होती है। सामंजस्य की सामूहिक भावना हासिल की जा सकती है अनुशासन से, स्वैच्छिक या बलपूर्वक। सामंजस्य कुदरत के नियमों में से एक है, जिसके बिना संगठित ऊर्जा जैसी चीज हो ही नहीं सकती या जीवन नहीं हो सकता।

* * *

सामर्थ्य

अपनी क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग करना ही सफलता की कुंजी है। इसके साथ ही उन कार्यों से बचकर रहना भी अत्यावश्यक है, जो आपकी कमजोरियों को उजागर करते हैं। लोगों की प्रवृत्ति होती है कि वे कमजोरियों को क्षमताओं में बदलने की भूल करने लगते हैं। वे प्रयास व्यर्थ हैं। आपको अपना समय अपनी सामर्थ्य, अपनी शक्तियों को बढ़ाने और उनका उपयोग करने में लगाना चाहिए, जो आपकी आभ्यंतरिक सक्षमता का आधार हैं।

* * *

ईश्वर ने जो भी शक्ति और सामर्थ्य हमें प्रदान किए हैं, हमें उनका समुचित उपयोग करने की कला को विकसित करना चाहिए। स्मरण रखिए, जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं, उसकी जीवन-यात्रा एक बीहड़ जंगल में भटकाव के समान है।

* * *

सामना

अपने गुणों को पहचानें, उनका महत्त्व समझें। उनसे प्यार करना और उनके बारे में खुश होना सीखें, बजाय इसके कि जो योग्यताएँ आपके पास नहीं हैं, उनके बारे में सोचते रहें। प्रत्येक समस्या का निर्भीकता से सामना करें। इससे आपको खुशी का एहसास होगा और आप प्रसन्नचित्त हो जाएँगे।

* * *

साहस

अधिकांश लोग यह चाहते हैं कि जैसा वे करें, वैसा ही सब करें, जिस चाल से और जिस ढंग से वे चलते हों, उसी तरह सब चलें। यदि लोकमत से जरा भी भिन्नता हुई, तो लोग बुरा कहने लग जाते हैं। नए कार्य को हम डर के मारे अधूरा ही छोड़ देते हैं। उसमें हमारा या संसार का जो भला होता है, उससे हाथ धोना पड़ता है। वस्त्र के पहनने में, नौकर-चाकर रखने में, रहन-सहन में, खेतीबाड़ी-व्यवसाय करने में—इन सब कार्यों में हमने कुछ नवीनता या भिन्नता दिखाई नहीं कि संसार की जीभ हमारी बुराई करने लग जाती है। इस बुराई से बचने के लिए यदि कोई शस्त्र या अस्त्र है, तो एकमात्र साहस।

* * *

पूरी दुनिया साहस से प्रेम करती है। कायरता में आकर्षण नहीं होता। भीरुपन से कोई भी अनुराग नहीं रखता, परंतु साहस व्यक्ति का सुंदर स्वरूप और आभूषण है। जितने चमकीले और लुभानेवाले फैशन चलते हैं, वे उन्हीं पुरुषों के निकाले हुए होते हैं, जो अपनी कुरूपता और हीनता को ढँकना और छिपाना चाहते हैं।

* * *

संसार में व्यर्थ भौंकनेवालों की कमी नहीं है। हम अपनी दुर्गति इसी भय से बना लेते हैं कि लोग हमारे लिए क्या विचार कर रहे हैं। निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कह डालने से पहले यदि आप बात से डर जाएँ कि लोग आपको बुरा कहेंगे, तो आप डरते-डरते विचार करने से भी डरने लग जाएँगे।

* * *

सामाजिक, राजनीतिक या व्यावसायिक क्षेत्र में किसी पुरानी प्रथा को तोड़कर उसकी जगह पर नई व्यवस्था उत्पन्न करने के लिए वही व्यक्ति खड़ा हो सकता है जिसमें साहस का आत्मबल हो। संग्राम के समय शत्रु पर आक्रमण करने में जो साहस एक सेनानायक को करना पड़ता है, उससे कहीं अधिक साहस उस व्यक्ति को करना पड़ता है, जो किसी भी प्रकार की पुरानी चाल को नवीनता से बदलना चाहता हो। सच तो यह है कि नई बात कहने के लिए सबसे पहले साहस की ही आवश्यकता है।

* * *

सीखना

अपने प्रयासों को पूर्णतया अपने जोश में लगाएँ। अपनी ऊर्जा को बिखेरें नहीं और अगर आप जीवन में सफल बनना चाहते हैं, तो सदैव सीखते रहें। यह एक और महत्त्वपूर्ण सफलता का मंत्र है, जिसकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते। अपने उद्योग में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने के लिए लगातार और निरंतर उन्नति करते रहना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

* * *

सुधार-यात्रा

अगर आप एक नकारात्मक व्यक्ति हैं और अविश्वास, बेईमानी, विश्वासघात, ईर्ष्या, तुनकमिजाजी आदि जैसी भावनाओं से ग्रस्त रहते हैं, तो इस बात की काफी संभावना है कि जो लोग आपके जीवन से आकृष्ट होते हैं, वे बिल्कुल आपकी प्रकृति के होंगे। इसके अलावा आपकी दृष्टि इतनी मलिन होगी कि आप जिस तरफ भी देखेंगे, आपको अपने ही नकारात्मक गुणों की झलक नजर आएगी। आपके लिए अब कुछ भी सही प्रतीत नहीं होगा। जब एक बार आप यह समझ चुके हैं कि अपनी दुनिया को इतना धुँधला आपने खुद बनाया है, अभी भी आशा नजर आती है। कृपया कुछ समय निकालकर उन चरम नकारात्मक गुणों की सूची बनाएँ, जो आपको अपने आस-पास के लोगों में सामान्यत: दिखाई देते हैं। एक बार यह जान लेने के बाद आप उन्हें सुधारने की ओर अपनी यात्रा आरंभ कर सकते हैं।

* * *

सुनने की आदत

लोगों से सदैव प्रश्न पूछें व उन्हें धैर्यपूर्वक सुनें। पूछने व सुनने की आदत से आपको वे जानकारियाँ मिलेंगी, जिनके द्वारा आप सदैव उचित निर्णय ले सकेंगे। याद रखें, बड़े लोग सदैव सुनने की एवं छोटे लोग सदैव बोलने की आदत में माहिर होते हैं।

* * *

सोच

सोच से अकसर इनसान वैसा ही बनता है, जैसा वह अपने बारे में सोचता है।

* * *

आप जो कुछ भी हासिल करना चाहते हैं, उसे प्राप्त करने की दिशा में अगर आप अपनी सोच नहीं बदलेंगे, तो अपने व्यवसाय में कितना भी प्रशिक्षण प्राप्त करने के बावजूद आपको वे परिणाम नहीं मिलेंगे, जो आप चाहते हैं। आपको अगर ज्यादा धन चाहिए, एक अच्छा घर चाहिए, परिवार के लिए बेहतर सुविधाएँ चाहिए, एक बेहतर कार चाहिए, परिवार और मित्रों के साथ आप अपने संबंध अधिक अच्छे बनाने की चाहत रखते हैं, वास्तव में आप, जो कुछ भी पाना चाहते हैं, उसके लिए आपको अपनी सोच भी वैसी ही बनानी पड़ेगी।

* * *

मस्तिष्क को पुरानी, पुरातनवादी सोच से बाहर निकालकर सदैव नई सोच एवं विचारों को ग्रहण करनेवाला बनाएँ। सदा नए प्रयोग करने के लिए तैयार रहें और अपने प्रत्येक कार्य में प्रगतिशील रहें।

* * *

हमारी सोच को हमारी सामाजिक परिस्थितियाँ परिवर्तित करती हैं। बुराई-ग्रस्त सामाजिक परिस्थितियों में भी अपनी सोच को सही दिशा में रखनेवाले लोगों ने अपने जीवन में अतिशय सफलताएँ अर्जित की हैं।

* * *

सोच-विचार

आप क्या कहते हैं और किस तरह कहते हैं, उस पर पूरा ध्यान दें। बोलने से पहले सोचें और गलतफहमी पैदा करने या भावनाओं को चोट पहुँचाने से बचें। अधिकतर लोग उस व्यक्ति के पास खिंचे चले जाते हैं, जो उन्हें हँसा सकता है। अपने हास्य-बोध का इस्तेमाल आपसी संबंधों को मजबूत करनेवाली क्षमताओं में वृद्धि करने के लिए

कारगर उपाय के रूप में करें।

* * *

स्पष्ट लक्ष्य

एक स्पष्ट एवं निश्चित लक्ष्य निर्धारित करें, ताकि आप अपनी दिशा को फोकस में रख सकें। अगर आपको स्पष्ट पता नहीं है कि आप किस दिशा में जा रहे हैं, तो आपके लिए अपनी मंजिल पाना असंभव होगा। यह गाड़ी चलाने जैसा है। आपको इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि आपको जाना कहाँ है, ताकि आप सीधे उसी दिशा में जाएँ और पेट्रोल तथा समय नष्ट न हो।

* * *

स्वास्थ्य

बीमार व्यक्ति को दूसरों की दया तो मिल सकती है, लेकिन वह व्यक्ति लंबे समय तक अपने व्यक्तित्व में आकर्षण बनाए नहीं रख सकेगा। दूसरों को आकृष्ट करने के लिए स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त शरीर का होना नितांत अनिवार्य है। इसके लिए नियमित रूप से व्यायाम करें, खेलों में हिस्सा लें या सुबह की सैर के लिए जाएँ। वही करें, जो आपके शरीर और आपकी मनोवृत्ति के अनुकूल हो। संतुलित भोजन करें। इससे आपके शरीर की प्रतिरक्षण क्षमता मजबूत होगी, आप स्वस्थ रहेंगे और काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

* * *

हार

छोटी-मोटी हार से न डरें, बस यह तय कर लें कि हर हार से सबक सीख लिया जाए। जब अस्थायी हार की चपेट में आएँ, जिसकी चपेट में आप पहले भी आए होंगे, तो यह न भूलें कि व्यक्ति के विश्वास की परीक्षा कई रूपों में होती है और आपकी हार या असफलता शायद एकमात्र वही परीक्षा की घड़ी हो। इसलिए हार को उससे ज्यादा जोरदार प्रयत्न की प्रेरणा समझकर स्वीकारें और इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि सफलता आपकी राह देख रही है।

* * *

हार-जीत

हमारी कमजोरी यह है कि हम खेलने में कम, उसकी हार-जीत में अधिक दिलचस्पी रखते हैं। हम जमकर खेलना नहीं चाहते और सपने देखते हैं कि सुरक्षित तरीके से कोई व्यक्ति आकर जीत को हमारी गोद में रख जाए। बहुत से लोग हैं, जो अपनी गलतियों को रोमांचक नहीं बना पाते। हमें अपने बारे में, अपने प्रयासों के बारे में विचार करना चाहिए। हमें बिना किसी हील-हुज्जत के अपनी खूबियाँ और खामियाँ कबूल करनी चाहिए।

* * *

हीनभावना

आत्मविश्वास के अभाव और स्वाभिमान की कमी के कारण व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों की तुलना में खुद को नीचा और कम प्रतिभाशाली होने की भावना से ग्रस्त हो सकता है। इससे व्यक्ति के मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति, महिला हो या पुरुष, उन कामों को करना भी कठिन समझने लगता है, जिन्हें पूरा करना उसके लिए पहले बहुत आसान था। इस तरह की समस्या से जल्दी-से-जल्दी पीछा छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए सकारात्मक सोच का होना अनिवार्य है। सभी नकारात्मक

विचारों को एकदम त्याग दें और आशा जगानेवाले विचारों को मन में जगह दें। अपने बारे में और अपने आस-पास के लोगों के बारे में सही ढंग से सोचें।

❑❑❑

आगे बढ़ने की कला

ऑरिसन स्वेट मार्डेन

आगे बढ़ने की कला

प्रभात

स्वेट मार्डेन

प्रभात प्रकाशन

ISO 9001:2015 प्रकाशक

अपनी बात

मनुष्य में ऐसी-ऐसी शक्तियाँ छिपी होती हैं कि जिनके बारे में वह स्वयं भी नहीं जानता। दुनिया के असाधारण अजूबे कार्यों, अजूबे आविष्कारों को मनुष्य ने ही किया है, बनाया है। कैसे? उसकी स्वयं की शक्ति से। हिमालय की माउंट एवरेस्ट चोटी बहुत ऊँची एवं खतरों से भरी है, लेकिन फिर भी मनुष्य उस पर चढ़ जाता है और बाद में सोचता है कि उसने यह कैसे कर दिखाया? मनुष्य अपने शरीर में एक छोटी-सी सुई चुभाने से डरता है, लेकिन जब कभी उसे चाकू अथवा बंदूक की गोली लग जाए तो वही उसके दर्द को झेल जाता है। हजारों फीट की ऊँचाइयों से मनुष्य पैराशूट की सहायता से कूद पड़ता है और वैसे थोड़ी सी ऊँचाई से डर जाता है। यह सब कैसे होता है? आंतरिक शक्ति से, आत्मविश्वास से, दृढनिश्चय से।

जिंदगी बहुत खूबसूरत है और इसकी खूबसूरती को हमेशा बनाकर रखने के लिए हमें बहुत सी बातों को ध्यान में रखकर अपनाना होता है। कभी-कभी जिंदगी में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो हमें हमेशा ध्यान रहती हैं, कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जो हमारी जिंदगी की दिशा को ही बदल देते हैं। हममें से अधिकतर ने अपने जीवन को कई सारी जटिलताओं में कैद कर लिया है। इस कारण हम सादगी में छिपी महानता को देख नहीं पाते। किसी भी एक उस चीज को चुनें, जिसमें आप सर्वश्रेष्ठ हैं। उसके बाद अन्य सभी चीजों को मना कर दें।

बौद्धिकता या रचनात्मकता ही सफलता के लिए जरूरी नहीं है। सफलता इसमें है कि आप कितनी देर तक अपने लक्ष्यों को पूरा करने में टिके रहते हैं। यह हैरत व दु:ख की बात है कि कितनी आसानी से लोग एक हार का सामना करने पर उद्देश्यों से पीछे हट जाते हैं। लेकिन महान् लोग दु:खी होते हैं, पर उस खेल में बने रहते हैं। लक्ष्य के प्रति उनका विश्वास फीका नहीं पड़ता।

हमेशा अपने जीवन की सकारात्मक बातों को ही ध्यान में रखकर आगे बढ़िए और नकारात्मक बातों को अपने मन से निकाल दीजिए। जो भी आप जीवन में करना चाहते हैं, उन सबके लिए एक योजना बनाकर ही उसे पूरा कीजिए। जीवन में कुछ बड़ा या छोटा लक्ष्य पाना हो, सभी के लिए एक योजना बनाइए। जीवन में सभी से गलतियाँ होती हैं। यह बात हमेशा ध्यान रखें कि इन गलतियों से बिल्कुल भी न घबराएँ, बल्कि इन गलतियों से सबक लें और जिंदगी में आगे बढ़ें।

जिंदगी का कोई लक्ष्य बनाइए और इस लक्ष्य के लिए अपनी पूरी ऊर्जा लगा दीजिए और जब तक लक्ष्य पूरा न हो जाए, रुकिए मत। एक लक्ष्य पूरा होने के बाद दूसरा लक्ष्य बना लीजिए। हमेशा दूसरों के लिए अपने मन में सम्मान रखिए। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दूसरों को सम्मान देने से पहले खुद को सम्मान दीजिए, क्योंकि जो खुद की इज्जत नहीं कर सकता, वह दूसरों की भी नहीं कर पाएगा।

सभी की जिंदगी में अवसर आकर दरवाजा खटखटाता है, दरवाजे को खोलिए और अवसर का स्वागत कीजिए। अवसर को पहचानिए और उसे जाने मत दीजिए। और कभी भी शॉर्टकट की तलाश न करें, क्योंकि यह अपनाया गया आसान रास्ता मुश्किल रास्ता भी साबित हो सकता है। पूरा काम किए बिना पूरी सफलता की उम्मीद मत रखिए। जीवन में बहानेबाजी के लिए बिल्कुल भी जगह न रखें, क्योंकि बहाने बनाना हारनेवालों की एक आदत होती है। हारे हुए व्यक्ति के पास बहानों की एक लिस्ट होती है। अत: बहाने मत बनाइए, आगे बढ़िए और कार्य पूरा कीजिए।

जीवन में आगे बढ़ने में पुस्तकों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बहुत सी अच्छी पुस्तकों को अपना दोस्त

बनाइए। पुस्तकें ऐसी दोस्त होती हैं कि उनसे जितनी भी बार सलाह लेंगे उतनी ही बार वे सही सलाह देंगी।

जिम्मेदारियों को स्वीकार कीजिए। आपकी आपके जीवन के प्रति, परिवार के प्रति, आपके चाहनेवालों के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं, उनको स्वीकार कीजिए और जीवन में आगे बढ़िए। जिम्मेदारियों से कभी मुँह मत मोड़िए।

जीवन में कुछ अच्छे दोस्त बनाइए। अच्छे दोस्त ही जीवन में काम आते हैं, लेकिन एक बात हमेशा ध्यान रखिए कि अच्छे दोस्त पाने के लिए पहले एक अच्छा दोस्त बनिए। दोस्तों को बदलिए मत, बल्कि दोस्ती को गहरा कीजिए। जीवन में सपने देखना सीखिए, क्योंकि हमारे सपने ही हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। अपने सपनों से प्रेरणा लीजिए और उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिए कार्य शुरू कर दीजिए। आपके सपने पूरे हो जाएँगे।

जीवन में हमेशा कुछ-न-कुछ अच्छा सीखते रहना चाहिए। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है, लेकिन वजह जरूर होती है। जीवन में हमेशा आगे बढ़ने के लिए लगातार सीखना बहुत जरूरी होता है। लगातार सीखते रहना एक अच्छी आदत है। इस आदत को विकसित कीजिए।

कुछ पाने के लिए कुछ देना भी सीखिए। जीवन में हमेशा लेन-देन का नियम चलता है। बिना कुछ दिए पाने के बारे में मत सोचिए। आकर्षण का नियम यह कहता है कि जैसा हम देते हैं, वैसा ही हम पाते हैं। दूसरों को प्यार दीजिए, उन्हें खुशियाँ दीजिए, बदले में आपको भी प्यार और खुशियाँ मिलेंगी।

बने-बनाए रास्तों पर चलनेवाले लोग अकसर पिछड़ जाते हैं, क्योंकि बने-बनाए रास्तों में भीड़ बहुत ज्यादा होती है। नया रास्ता बनाने में समय लगता है, लेकिन दूसरों से आगे निकलने का यही एकमात्र तरीका है।

जिस दिन आप सीखना बंद कर देते हैं, उसी दिन से जिंदगी में आपके आगे बढ़ने के रास्ते भी बंद हो जाते हैं। हर दिन कुछ नया सीखिए, सफल जीवन का यही सूत्र है।

अधूरी जानकारी लोगों की असफलता का मूल कारण होती है। जिस भी विषय को जानें, तो पूरी तरह से जानें, क्योंकि नकल करके पाई गई सफलता लंबे समय तक नहीं टिकती। नकल करनेवाले असफल हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें पता नहीं होता कि कब वे सही रास्ते पर जा रहे होते हैं और कब गलत रास्ते पर।

परिश्रमी और आत्मविश्वासी व्यक्तियों के जीवन में भी कभी-कभी ऐसे पल आते हैं, जब लगता है कि आगे बढ़ने के सारे दरवाजे बंद हो चुके हैं और सामने असफलता के सिवाय और कोई चारा नहीं है। ऐसे दौर में हम अकसर बेहद निराश और उदासी से घिर जाते हैं। लेकिन यह समय हार मानने का नहीं, बल्कि खुद को यह याद दिलाने का है कि आप सफल होने के लिए ही बने हैं।

आप जिन परिस्थितियों से भी गुजरे हों या फिर आपके हालात कितने भी बुरे क्यों न रहे हों, ये जल्द ही खत्म होंगे। आप इन हालातों से जूझना सीख जाएँगे और इनके साथ जीना भी सीख जाएँगे, धीरे-धीरे आपको इन हालातों की आदत हो जाएगी और सबकुछ पहले जैसा सामान्य हो जाएगा।

हर दिन के साथ जिंदगी आपको अनगिनत मौके देती है, आपको बस उन्हें पहचानने और उनका सबसे अच्छा इस्तेमाल करने के लिए प्रयासरत होना पड़ेगा। दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है, जो आपकी मदद कर सकते हैं और आपको प्रेरित कर सकते हैं। हो सकता है आप नकारात्मक सोच और हमेशा जीवन को नकारनेवाले बुरे लोगों से घिरे हों, जो आपके लक्ष्यों का मजाक उड़ाते हों तथा हमेशा आपको नीचे दिखाने की कोशिश करते हों। ऐसे लोगों से दूर ही रहें। हमें ऐसे लोगों की जरूरत नहीं है, अगर आप ऐसे लोगों के साथ जुड़े रहते हैं तो आप

कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँगे। याद रखें, हमारे आसपास अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है, जो हमेशा हमें प्रेरित करते हैं और हमारा उत्साह बढ़ाते हैं।

कमियाँ सबमें होती हैं। हो सकता है आपको अपना पतला या मोटा शरीर पसंद न हो या आप सोचते हों कि आपके अंदर कुछ विशेष गुण नहीं है या फिर आप दूसरों से बातें करने में शरमाते हैं, लोगों के सामने बोलने में डर लगता है इत्यादि। इन सभी चीजों को बदला जा सकता है, बस आपको यह जानना है कि आप ऐसा बदलाव क्यों लाना चाहते हैं और इसके प्रति हमेशा प्रयासरत रहें। अगर आप वास्तव में अपना जीवन बदलना चाहते हैं तो हर दिन अपनी इन कमियों को दूर करने का प्रयास करें।

कभी-कभी हम हालातों को इतना बढ़ा-चढ़ाकर देखने लगते हैं कि वे हमारे लिए सबसे बुरा प्रतीत होने लगते हैं, जबकि वास्तव में सबकुछ कुछ ही समय के लिए होता है और बदला जा सकता है। हमें अपने जीवन को हमेशा सुलझाने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए अपने अति-महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों को त्याग दें और लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, इसका अनुमान लगाना छोड़ दें। पुरानी बातों और भविष्य की चिंता में समय व्यर्थ न करें और वर्तमान में ध्यान केंद्रित करें।

असफल होना सफलता के लिए किए गए प्रयास का सबसे बड़ा प्रमाण है, इसका मतलब है कि आप अपने जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत हैं। किसी भी कार्य में प्रयास करने पर भी असफलता आपको अनुभव प्रदान करती है और मजबूत बनाती है और आपको सिखाती है कि किन गलतियों को दोहराने से बचना चाहिए, जो अगले प्रयास में सफलता सुनिश्चित कर सकती है।

कभी-कभी कुछ चीजों को छोड़ देना या किसी को माफ कर देना बहुत अच्छा साबित होता है। ऐसा करने से आपको शांति मिलती है और आपके मन का बोझ हलका हो जाता है। शांत मन से ही आप वर्तमान में जी सकते हैं और अपने कार्यों में ध्यान लगाकर प्रगति कर सकते हैं।

हर अगला दिन आपके लिए नई उम्मीदों का भंडार लेकर आता है। गुजरा हुआ दिन कितना ही बुरा क्यों न हो, आनेवाला दिन नया होता है और हमें तय करना होता है कि इसकी शुरुआत कैसे की जाए और इसे कैसे बिताया जाए।

ऐसी ही अनेक कथाओं का निचोड़ है—'आगे बढ़ने की कला' नाम की यह पुस्तक। उबाऊ विवरणात्मकता से बचने के लिए हमने इसे प्रेरक टिप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि आप सीधे तथ्यों को ग्रहण कर सकें।

—संपादक

आगे बढ़ने की कला

अधूरा जीवन

जिस जिंदगी के पन्ने उद्यम, साहस और धैर्य की स्याही से नहीं लिखे गए, वह अधूरा है। जहाँ विवेक का मंत्र नहीं, वह जीवन सुखी नहीं, कर्मयोगी मनुष्य ही जीवन के आदर्श होते हैं। कर्मठता ही हमारे जीवन का पर्याय है, कर्मयोगी मनुष्य के हृदय में आशा, उत्साह तथा परिश्रम की ऐसी मनोमुग्धकारी त्रिवेणी की जल-रश्मियाँ बहती हैं, जिनमें अवगाहन करके मनुष्य का रोम-रोम पुलकित हो झूम उठता है।

* * *

अनुभव

असफलताओं से घबराने की आवश्यकता नहीं, सफलता इसमें है कि आप कितनी जल्दी दोबारा खड़े होकर आगे बढ़ने के लिए तैयार हो जाते हैं और दूसरों से प्रेरित होना अच्छी बात है, पर उनकी सफलता की नकल करना हमेशा काम नहीं आता। खुद को स्वीकार करें। जोखिम लें, इस प्रक्रिया में अनुभव होंगे।

* * *

अवसर

कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है।

* * *

महान् पुरुष बहुत अच्छे अवसरों की प्रतीक्षा नहीं करते, जरा भी अनुकूल अवसर आने पर वे उसे अपने अनुकूल बना लेते हैं। उनको विशेष सामग्री की जरूरत नहीं होती है, जो साधारण सामग्री उन्हें मिल जाती है, उसी से वे अपना काम कर डालते हैं। बेंजामिन फ्रेंकलिन ने बिजली का सिद्धांत पतंग उड़ाने से ही ढूँढ़ निकाला था।

* * *

सर्वोत्तम व्यक्ति वे नहीं हैं, जिन्होंने अवसरों का इंतजार किया, बल्कि वे हैं, जिन्होंने अवसरों को अपनाया, कैद किया, जीता और गुलाम बनाया।

* * *

अव्यवस्था

अव्यवस्था आपकी बिगड़ी मानसिकता की परिचायक है।

* * *

असंभव-संभव

कोशिश से असंभव भी संभव हो जाता है। उत्तम मस्तिष्क का चिह्न उसकी कर्तव्यनिष्ठा है, जो सब प्रकार के परिवर्तन होने पर भी कभी नहीं बदलती, बल्कि कठिनाइयों का सामना करती हुई अपने ध्येय को प्राप्त करती है। छोटी मस्तिष्क क्षमताएँ आपत्तियों से दब जाती हैं, जबकि बड़ी मस्तिष्क क्षमताएँ आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं।

* * *

असहिष्णुता

असहिष्णुता की वजह है अज्ञानता, जिसे सीधे-सीधे ज्ञान की कमी कह सकते हैं। जानकार लोग शायद ही कभी

असहिष्णु होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि किसी के पास इतनी जानकारी नहीं कि वे दूसरों की जानकारी पर फैसला सुना सकें।

* * *

असहिष्णुता से ज्यादा अज्ञानता का कोई और रूप नहीं, जिसने सबसे ज्यादा दु:ख दिया है। सच कहें तो हर युद्ध की वजह असहिष्णुता ही होती है। पूँजी और श्रम के बीच मतभेद भी असहिष्णुता से ही पैदा होते हैं। बगैर सहिष्णुता को अपनाए किसी भी व्यक्ति के लिए सटीक सोच के सिद्धांत को अपनाना नामुमकिन होता है, क्योंकि असहिष्णुता के प्रभाव में आकर इनसान ज्ञान की किताब बंद कर देता है और इसके ऊपरी पन्ने पर लिखता है, 'समझो पढ़ लिया, क्योंकि मैं सब जानता हूँ!'

* * *

आत्मनियंत्रण

खुद पर काबू करना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन थोड़े से परिश्रम व लगातार कोशिशों से इस पर काबू पाया जा सकता है। स्वयं को नियंत्रित करने में यदि आप एक बार सफल हो जाते हैं तो फिर बड़ी-से-बड़ी अड़चनें भी आपको आपके लक्ष्य से डिगा नहीं पाएँगी।

* * *

आत्ममंथन

क्रोध, घृणा, अहं, मोह, आसक्ति ऐसे भाव हैं, जो मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आत्ममंथन करना चाहिए।

* * *

आत्मविजय

सबसे उत्तम और महत्त्वपूर्ण विजय अपने आप पर अधिकार कर लेना है। सच्चे अर्थों में इंद्रियजनित वासनाओं, लालसाओं, क्रोध, मोह, भय इत्यादि भावों को वश में कर लेना ही आत्मविजय है। वस्तुत: हमारी वासनाएँ हमारी हीनताएँ हैं। जब तक हम अपनी वासनाओं पर विजय प्राप्त न कर लें, तब तक हम संपूर्ण मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। अगर हममें क्रोध है तो फिर शत्रु की क्या आवश्यकता है! अगर हममें ईर्ष्या है तो हमें जलाने के लिए अग्नि की क्या जरूरत है! हम बाहरी शत्रुओं और विद्रोहियों को परास्त करने के लिए दिन-रात तरकीबें ढूँढ़ा करते हैं, तंत्र-मंत्र तक जपा करते हैं, परंतु जो शत्रु हमारे अंदर ही बैठे हमारी जड़ें काटते रहते हैं, उनसे हम अपनी रक्षा नहीं कर पाते।

* * *

आत्मविश्वास

आकर्षण और सम्माननीय व्यक्तित्व पाने के लिए जरूरी है कि अपने बारे में आप सही विचार रखें। दूसरे लोग उन्हें भाँप सकते हैं, जिनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है। इसके फलस्वरूप उनके साथ आपके संबंध पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। वे उनकी भी थाह ले सकते हैं, जो लगता है कि उनको नीचा समझते हैं। इससे आप उन्हें जल्दबाजी में खारिज कर देंगे। अगर आप इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि आप क्या हैं और आप क्या कर सकते हैं, तब तक आप दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते।

* * *

आकर्षण और सम्माननीय व्यक्तित्व पाने के लिए जरूरी है कि अपने बारे में आप सही विचार रखें। दूसरे लोग उन्हें भाँप सकते हैं, जिनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है। इसके फलस्वरूप उनके साथ आपके संबंध पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। वे उनकी भी थाह ले सकते हैं, जो लगता है कि उनको नीचा समझते हैं। इससे आप उन्हें जल्दबाजी में खारिज कर देंगे। अगर आप इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि आप क्या हैं और आप क्या कर सकते हैं, तब तक आप दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते।

* * *

आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने कार्य को पूरा करके ही छोड़ता है।

* * *

ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना हो तो अपना सफर निचली-से-निचली सतह से प्रारंभ करें और अपने काम से जिसका संबंध हो, ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और अनुपयोगी समझकर बेकार न जाने दें, बल्कि उसका पूरी बारीकी के साथ अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करें। यह सब तभी संभव है, जबकि आपके पास आत्मविश्वास की पूँजी हो।

* * *

जिसमें आत्मविश्वास हो, वह उन चिंताओं और आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनसे दूसरे मनुष्य दबे रहते हैं।

* * *

सफलता के लिए आत्मविश्वास पहली व अनिवार्य शर्त है। आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास सदा से मित्रता, वंश, सिफारिश तथा धन से अधिक प्रभावशाली रहे हैं। संसार में आत्मविश्वास सर्वोत्तम पूँजी है। इससे अधिकांश बाधाएँ दूर हो जाती हैं, अधिकतर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। आत्मविश्वास द्वारा जितने महान् साहस के कार्य संपन्न होते हैं, उतने अन्य किसी भी मानवीय गुण के कारण नहीं होते।

* * *

आत्मसंयम

इनसान ने आत्मसंयम की कमी से जितना कष्ट भोगा है, शायद ही किसी और वजह से झेला होगा। हर व्यक्ति के जीवन में कभी-न-कभी यह बुराई आ ही जाती है। हर सफल व्यक्ति को अपनी भावनाओं में एक संतुलन स्थापित करना पड़ता है। आत्मसंयम उस व्यक्ति के लिए भी एक संतुलित पहिया है, जो अति आशावादी है और जिसके उत्साह को कम करने की जरूरत है, क्योंकि यह मुमकिन है कि कोई इतना अधिक उत्साही हो जाए कि आसपास के लोग उससे ऊबने लग जाएँ।

* * *

जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है, उसी प्रकार हमें अपनी दूषित भावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्मसंयमरूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए।

* * *

सफल व्यक्तियों पर उनके चारों ओर की घटनाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, अपने चारों ओर का घटनाक्रम अधिकतर वही तय करते हैं। वे कोई कार्य इसलिए नहीं करते हैं कि हर कोई वही काम कर रहा है, बल्कि वे उन्हीं कार्यों को करते हैं, जो कुछ दुष्कर होते हुए भी उनकी सफलता में सहायक होते हैं। वे जान-बूझकर आत्मसंयम से रहते हैं।

* * *

आत्मानुशासन

आत्मानुशासन आपके इरादों और विचारों पर विजय पाने से शुरू होता है। आप जो सोचते हैं, अगर उसे नियंत्रित नहीं करते हैं तो आप जो करते हैं, उसे भी नियंत्रित नहीं कर सकेंगे। साधारणत: आत्मानुशासन आपको पहले सोचने और फिर आगे बढ़ने के योग्य बनाता है। आत्मानुशासन एकमात्र माध्यम है, जिसके जरिए वैचारिक आदतें नियंत्रित और निर्देशित की जा सकती हैं।

* * *

आत्मानुशासन का संदर्भ सिर्फ विचारशक्ति से है, क्योंकि आत्म के सारे अनुशासन दिमाग में ही जगह बनाते हैं। आत्मानुशासन के प्रयोग से विचार को प्रभावित, नियंत्रित और एक निश्चित लक्ष्य तक निर्देशित किया जा सकता है। इसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति निश्चित लक्ष्य पर दृढ रहकर आस्था की भावनाओं को गतिशील बना सकता है।

* * *

आत्मानुशासन पर मास्टरी जिसने नहीं की है, वह व्यक्ति कभी किसी और चीज का मास्टर नहीं हो सकता। आत्मानुशासन वह सिद्धांत है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वत:स्फूर्त तरीके से वैचारिक प्रवृत्तियों को आकार देकर अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ तालमेल स्थापित कर सकता है।

* * *

आदत

शुरुआत में आदत एक अदृश्य धागे जैसी होती है, लेकिन जब भी हम उस काम को दोहराते हैं तो हम उसमें एक और रेशा जोड़कर धागे को मजबूत कर लेते हैं और यह सिलसिला तब तक चलता रहता है, जब तक कि आदत मोटी रस्सी बनकर हमें कसकर बाँध नहीं लेती—हमारे विचारों और कामों को।

* * *

हमारी आदतों का कुल योग, सार तत्त्व हमारे चरित्र में ठोस जड़ जमा लेता है, जिसके फलस्वरूप हमारी आदतें या तो हमारी श्रेष्ठ मित्र हो सकती हैं या हमारे ऊपर अपना जबरदस्त कोड़ा चला सकती हैं। अच्छी आदतों को आप जितनी जल्दी अपने जीवन में ढाल लेंगे, जीवन को उतना ही अधिक सुखकर पाएँगे।

* * *

आदर्श

महान् और उदात्त चरित्र बनाने का एक ही उपाय है कि एक महान् और उदात्त आदर्श के अनुरूप जीवन बिताएँ।

* * *

आनंद

यदि हम स्थायी आनंद चाहते हैं तो हमें ऐसी वस्तुओं का मोह त्यागना होगा, जो किसी भी समय हमसे अलग हो सकती हैं।

* * *

आलोचना

जब कोई आलोचना करनेवाला न हो, तब भी आलोचना का भय बना रहता है, क्योंकि यह कल्पना के

नकारात्मक इस्तेमाल के कारण हमारे दिमाग में ही सेट हो जाता है।

* * *

आशा

आशा और आत्मविश्वास से ही हमारी शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं, इनसे हमारी उत्पादन-शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

* * *

आशा मनुष्य के लिए अमृत के समान है, जिस प्रकार पेड़-पौधों को सूरज से जीवन मिलता है, उसी प्रकार आशा से मनुष्य में नए उत्साह का संचार होता है।

* * *

जीवन में कितने भी अंधकारमय क्षण क्यों न आएँ, सब थोड़ी देर ठहरकर चले जाते हैं और फिर नई आशा की किरणें चमकने लगती हैं।

* * *

निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है, अंत:करण में आशा की चेतना का जागना।

* * *

आस्था

अवचेतन मस्तिष्क को आस्था की बदौलत मनुष्य के दिमाग के साथ जोड़कर मन में विश्वास पैदा किया जा सकता है कि वह एक पूर्ण व्यक्ति है और सक्षम है। जो कुछ व्यक्ति मन में सोचता है और पाना चाहता है, वह आस्था से हासिल करना संभव हो जाता है।

* * *

आस्था का मार्ग पकड़नेवाले व्यक्ति का दिमाग भरोसे से भरा रहता है और वह थोड़े ही समय में खुद को अवसर के अनुकूल ढाल लेता है। आस्था की शक्ति, जिस गति से काम करती है, उसी से बहुत लोगों के इस विश्वास को बल मिला है कि कुछ निश्चित बातें तो चमत्कार का परिणाम हैं।

* * *

आस्था व विश्वास के जरिए पहचानी जानेवाली अंदर की ताकत रोज व्यक्तिगत उपलब्धि का एक नया अवसर लेकर आती है और बीते कल की किसी असफलता की चिंता दूर कर देती है। आस्था व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यों की गहराई का ज्ञान देती है। इससे प्राकृतिक नियमों में व्यक्त प्रकृति की भाषा समझी जा सकती है।

* * *

भली-भाँति समझी हुई आस्था किसी आपात-स्थिति में प्रकट होती है, जो मनुष्य को अपनी विकट समस्या का निदान सामान्य वैचारिक शक्ति से ढूँढ़ने को विवश करती है। आस्था ऐसी शक्ति है, जिसका विश्लेषण करने में वैज्ञानिक भी मात खा चुके हैं। लेकिन इसे अपनाने की विधि बड़ी आसान है और कोई भी साधारण-सा व्यक्ति विनम्रतापूर्वक समझ सकता है। यह एक प्रकार से साझा संपत्ति है।

* * *

इंद्रिय-लोलुपता

संसार में जितने भी दु:ख होते हैं, उनमें से अधिकांश इंद्रिय-लोलुपता के कारण ही होते हैं। जब तक हम इंद्रियों

की उत्तेजना से दबते या प्रेरित होते रहेंगे, तब तक हमें लालसाएँ सताए बिना नहीं रहेंगी और जब तक मन संतप्त रहेगा, उसे स्थायी सुख नहीं मिल सकता। हमारी इंद्रियाँ चंचल घोड़े की तरह हमें मनमानी राह पर ले जाना चाहती हैं। जब तक कि इस घोड़े को हम वश में करके राह पर नहीं लाएँगे, तब तक अपनी जीवन-यात्रा को सफल नहीं बना सकते। अनेकानेक धर्मों में जो कुछ तप, व्रत, योग इत्यादि की साधनाएँ निर्धारित की गई हैं, वे जीवन-यात्रा को सफल बनाने के लिए ही की गई हैं। अपने पुरुषार्थ, उद्यम, साहस, संलग्नता, विवेक इत्यादि गुणों से जो कुछ भी हम आर्थिक या आध्यात्मिक लाभ उठाते हैं, उसे इंद्रिय-लोलुपता नष्ट कर देती है।

* * *

इच्छा

ऐसी कोई भी चीज, जिसके विषय में सोचने भर से हम अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं, हमारे जीवन-निर्माण की पूँजी बन सकती है। हम एक कॉपी व पेंसिल लेकर अपनी उन चीजों को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध कर सकते हैं। इन इच्छाओं को एक साथ लिखने का लाभ यह होगा कि हमें अपने स्वभाव, अपनी अपेक्षाओं, अपनी आकांक्षाओं तथा अपने सपनों से परिचित होने का मौका मिलेगा।

* * *

इच्छापूर्ति

जिन इच्छाओं को हम पूरी होते देखना चाहते हैं, उनके लिए हमें सौ प्रतिशत क्षमताओं के उपयोग का कमाल अपने व्यक्तित्व में पैदा करना होगा, तब कोई ऐसी वजह नहीं कि जो आपने सोचा हो, वह पूरा न हो, देर-सबेर आप अपने सपनों को सच कर ही लेंगे।

* * *

उज्ज्वल पक्ष

स्थितियाँ कितनी भी नकारात्मक क्यों न हों, हमें उनमें उज्ज्वल पक्ष खोज निकालना ही चाहिए। जीवन-संग्राम के विस्तृत अध्यायों पर गौर करें तो स्पष्ट होता है कि जो लोग किसी भी तरह की आस्था को जिंदा रखते हैं, वे बुरी-से-बुरी परिस्थितियों को हँसते-हँसते झेल जाते हैं।

* * *

उत्साह

उत्साह और आत्मसंयम तथा पाने से ज्यादा करने की आदत के नियमों को अपनाने के बाद ही आप दूसरों से सहयोग की उम्मीद कर सकते हैं। उत्साह वह प्रेरक बल है, जो न सिर्फ उन लोगों को शक्ति प्रदान करता है, जिनमें यह मौजूद होता है, बल्कि जो लोग ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आते हैं, उनमें भी जोश भर देता है।

* * *

उत्साह वैसी स्थिति है, जो व्यक्ति को दूसरों का सहयोग लेने में मदद तो करती ही है, साथ ही व्यक्ति को अपनी कल्पनाशक्ति की ओर खींचने और उसके इस्तेमाल को भी उत्प्रेरित करती है। उत्साह सकारात्मक कल्पना का आधार है। उत्साह से काम की नीरसता खत्म हो जाती है।

* * *

जीवन के हर क्षेत्र में कामयाब लोग उत्साही प्रवृत्ति के होते हैं। उत्साह वह प्रेरक बल है, जो न सिर्फ उन लोगों को शक्ति प्रदान करता है, जिनमें यह मौजूद होता है, बल्कि जो लोग ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आते हैं, उनमें भी

जोश भर देता है। उत्साह से काम की नीरसता खत्म हो जाती है। यह देखा गया है कि गड्ढे खोदने का मेहनती काम करनेवाले मजदूर भी गाना गाकर काम के उबाऊपन को खत्म कर देते हैं। उत्साह मूल्यवान हो, इसके लिए जरूरी है कि वह नियंत्रित और निश्चित लक्ष्यों की ओर प्रेरित हो। अनियंत्रित उत्साह आमतौर पर विनाशकारी होता है।

* * *

जो लोग अपने पसंदीदा काम में जुटे हैं, वे सबसे जल्दी सफलता हासिल करते हैं और इसकी वजह है कि जिस काम को वे पसंद करते हैं, उसे लेकर बेहद उत्साहित रहते हैं। उत्साह सकारात्मक कल्पना का आधार है। जब दिमाग उच्च दर से कंपन करता है तो यह बाहर से आनेवाली उच्च दर के कंपन को स्वीकार करता है और इस प्रकार सकारात्मक सोच का एक माहौल तैयार होता है।

* * *

उत्साह और जोश

अपने डर को पहचानें और उससे दूरी बनाने का प्रयास करें। अपनी असुरक्षा दूर करें। उत्साह और जोश सफलता दिलाते हैं। ऐसे में कदम आगे बढ़ना ही आपकी क्षमताओं को बढ़ाता है। किसी नए कार्य को करने का मन बनाएँ और इसके लिए पहल करें। कितने ही लोग अपनी क्षमताओं पर यकीन न करने के कारण अपने अच्छे विचारों को बेकार और अनुत्पादक साबित कर देते हैं।

* * *

उद्देश्यपूर्ण जीवन

उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए जरूरी है कि हम हर परिस्थिति में सहजता और प्रसन्नता से जीने का अभ्यास करें। प्रसन्नता दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रसायन है। जो इस रसायन का निरंतर सेवन करता है, वह अनेक बाधाओं को सहज ही पार कर लेता है। प्रसन्नता जीवन में सफल होने के लिए अति आवश्यक है। प्रसन्न लोग कठिनतम स्थितियों में भी संतुलित रह सकते हैं और वे देर-सबेर अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं।

* * *

ऊर्जा

बाहर से आनेवाली ऊर्जा किस स्रोत से आती है, यह किसी को पता नहीं होता। जो कुछ हम इसके बारे में जानते हैं, वह यह है कि हमें यह हर हाल में चाहिए, नहीं तो हमारी मौत हो जाएगी। हर प्रकार की ऊर्जा और प्राणी या वनस्पति को जिंदा रहने के लिए व्यवस्थित होना आवश्यक है।

* * *

एकजुटता

शक्ति संगठित और सहकारी प्रयासों से हासिल की जा सकती है। दर्जन भर पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक अपनी एकजुट शक्ति की बदौलत ही हजार लोगों की भीड़ पर भारी पड़ते हैं, जो नेतृत्वविहीन और असंगठित होती है।

* * *

एकत्रित ऊर्जा

बारिश की हर एक बूँद में एक शक्ति होती है, लेकिन जब तक इधर-उधर गिरनेवाली इन बूँदों को किसी नदी या डैम में इकट्ठा न करें, इनसे बिजली पैदा नहीं की जा सकती या फिर इन्हें किसी भट्ठी में इकट्ठा कर भाप में

तब्दील नहीं किया जाता, तब तक इन्हें शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता। शक्ति कहीं भी किसी भी प्रकार की क्यों न हो, एकत्रित ऊर्जा के जरिए ही पैदा की जाती है।

* * *

एकाग्रचित्तता

सफलता के लिए एकाग्रता का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि आत्मविश्वास का। यही सूत्र हमें सफलता की ओर ले जाता है। अत: आशा, उत्साह और आत्मविश्वास तीनों में अगर समानता है, तब तो सफलता स्वयं कदम चूमती है। अगर परिश्रम पूर्ण लगन और संयम के साथ किया गया हो, तब सफलता मिलनी निश्चित है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भी एकाग्रचित्त होना अत्यधिक आवश्यक है।

* * *

एकाग्रता

नेपोलियन बोनापार्ट में अदम्य साहस और वीरता के अलावा ऐसी कौन सी शक्ति थी, जिसके द्वारा उसकी अद्वितीय और अत्यंत विस्तृत विजय हुई? उसके जीवन-चरित्र का अवलोकन करने से पता चलता है कि उसकी एकाग्रता और लक्ष्य-बुद्धि ही विजय का रहस्य थी।

* * *

हरफनमौला व्यक्ति शायद ही किसी एक फन का उस्ताद बन पाता है। जीवन इतना जटिल है कि ऊर्जा अकसर फिजूल के कार्यों में बरबाद हो जाती है। यही वजह है कि जो लोग सफल होते हैं, वे ठोस प्रयास करते हैं और एकाग्रता के साथ कोशिश करने की आदत डाल लेते हैं।

* * *

कठिनाइयाँ

आनंद विनोद के सामने कठिनाइयाँ पिघल जाती हैं।

* * *

घात-प्रतिघात से मुठभेड़ करके जिस किसी व्यक्ति ने महत्त्व प्राप्त किया है, वही सच्चे यश को भोगता है। महत्त्वपूर्ण बनने के लिए कोई शाही सड़क नहीं है। किसी भी प्रख्यात व्यक्ति का जीवन-चरित्र पढ़ें, उसने अनेक कठिनाइयों को पार करके ही अपना मार्ग प्रशस्त किया है।

* * *

जब कुदरत किसी व्यक्ति को कठिनाइयों में डालती है, तब उसके मस्तिष्क की शक्ति को पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ा देती है। बहुत से मनुष्यों ने जीवन में जो महत्त्व और उन्नति प्राप्त की है, वह कठिनाइयों और दु:खों से ग्रस्त होने पर ही। सुगंधित द्रव्य, मसाले इत्यादि जब तोड़े और पीसे जाते हैं, तब अपनी सुगंध देते हैं।

* * *

वक्त के साथ सभी मानसिक और शारीरिक कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। वास्तविक कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है, लेकिन काल्पनिक कठिनाइयों को पराजित नहीं किया जा सकता।

* * *

कर्तव्य-कर्म

हर आदमी के लिए ऊँचाई पर स्थान है, लेकिन वहाँ पहुँचता वही है, जिसके अंतर में आत्मविश्वास होता है,

हाथ-पैरों में ताकत होती है, निगाह में ऊँचाई होती है और हृदय में सबके लिए प्रेम और सहानुभूति का सागर उमड़ता रहता है। ऐसा आदमी जानता है कि उसके ऊपर सदा निर्मल आकाश है। अगर कभी बादल घिर भी आते हैं तो वे अधिक समय नहीं टिकते हैं। अपने लक्ष्य पर आँख रखकर मजबूती से बढ़े चलना इनसान का सबसे बड़ा कर्तव्य है। किसी कार्य में असफल होने पर भाग्य को दोषी न मानकर पूरी शक्ति व निष्ठा के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाइए। अपनी आँख सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रखिए।

* * *

कल्पना

अगर आपको कोई उपयोगी आविष्कार करना है, लेकिन आपकी कल्पनाशक्ति उतनी विकसित नहीं है, उस वक्त आप क्या करेंगे? आप अपने मौजूदा काम को बेहतर बनाने की कोशिश कीजिए इसके जरिए कम-से-कम आप इस गुण को हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपनी कल्पना को जितना नियंत्रित करेंगे और जिस हद तक इसका इस्तेमाल करेंगे, उतना ही इस शक्ति का विकास होता चला जाएगा। अपने आसपास नजर दौड़ाते ही आपको ऐसे ढेरों अवसर दिखने लगेंगे, जहाँ आप अपनी कल्पना का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका इंतजार मत कीजिए कि कोई आए और आप से कहे कि यह करो, बल्कि अपनी समझ का इस्तेमाल कीजिए और अपनी कल्पना पर जोर डालिए, ताकि वह आपको यह बता सके कि आपको क्या करना है।

* * *

कल्पना की कार्यशाला में ही सभी योजनाएँ बनती हैं और इन योजनाओं के बिना कोई उपलब्धि मुमकिन नहीं है, बशर्ते इत्तफाक से कोई कामयाबी न मिल जाए। विचार इनसानी दिमाग में सबसे ज्यादा फायदा देनेवाला तत्त्व है और विचारों का सृजन कल्पना से ही होता है।

* * *

साकार कल्पना के बिना आज तक किसी ने भी न कुछ हासिल किया, न बनाया और न ही कभी कोई योजना बनाई या एक निश्चित लक्ष्य को विकसित किया। आज तक जो कुछ भी सृजित या निर्मित किया गया, सबसे पहले कल्पना के जरिए उसकी एक झलक दिमाग में पैदा हुई। कल्पना की कार्यशाला में आप पुराने, जाने-माने विचारों और अवधारणाओं या विचारों के हिस्से लेकर जा सकते हैं और फिर उन्हें कुछ और पुराने विचारों या उनके हिस्सों से जोड़कर एक ऐसे विचार तक पहुँच सकते हैं, जो नया-सा दिखता हो। दुनिया के तमाम बड़े आविष्कारों के पीछे यह प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के तौर पर काम करती है।

* * *

हम अगर किसी चीज की कल्पना कर सकते हैं, तो उसे साकार भी कर सकते हैं। अगर आप अपनी समृद्धि की कल्पना नहीं करते हैं तो आप उसे अपने बैंक के खातों में कभी देख नहीं पाएँगे। कल्पना एक ऐसा गुण है, जिसकी कोई निश्चित कीमत या मूल्य नहीं है। यह दिमाग के सबसे महत्त्वपूर्ण गुणों में से एक है, क्योंकि इसके जरिए ही मनुष्य की तमाम मंशा को वह आवेग मिलता है, जिससे वह सक्रिय हो जाता है।

* * *

कल्पनाशीलता

कल्पनाशीलता के लिए जरूरी है कि आप उन उपयोगी, सुघड़ और व्यावहारिक विचारों को लिख लेने की आदत डाल लें, जो आपके कार्यक्षेत्र से बाहर के क्षेत्रों में या फिर आपके क्षेत्र में भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इस

प्रकार आपके मन में अपनी कल्पना की मदद से विचार आने लगेंगे। शुरुआत एक सामान्य पॉकेट साइज नोटबुक से की जा सकती है, जिसमें हर एक विचार या अवधारणा या फिर अपने मन में उठनेवाले ऐसे विचारों को आप दर्ज करते जाएँ, जिनका व्यावहारिक तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है और फिर इन विचारों पर एक नई योजना के साथ काम करना शुरू कर दें। धीरे-धीरे ऐसा समय आ जाएगा, जब आपकी कल्पनाशक्ति आपके अवचेतन मन में इकट्ठा ज्ञान और विचारों के भंडार तक जाएगी, इन्हें नए विचारों के साथ जोड़ेगी और फिर आपके सामने एकदम नया विचार पेश कर देगी। यह एक व्यावहारिक प्रक्रिया है, जिसे दुनिया के कुछ बेहतरीन नेताओं, आविष्कारकों और कारोबारी हस्तियों ने सफतलापूर्वक अपनाया है।

* * *

चुनौतियाँ नेतृत्व का अभिन्न हिस्सा होती हैं। महान् नजरिए ही नेतृत्व को जन्म देने का काम करते हैं। सामान्य तौर पर हर कोई बहुत कल्पनाशील नहीं होता। लोगों में प्रतिस्पर्धी भाव का घोर अभाव होता है। आपकी मेधा लोगों को प्रभावित करने का काम करती है। कुछ लोग बहुत कल्पनाशील नहीं होते हैं, लेकिन बहुत प्रभाव छोड़नेवाले और प्रेरणा से भरे होते हैं। बहुत थोड़े लोग ही ऐसे होते हैं, जिन्हें हर चीज वरदान के तौर पर मिलती है और साथ ही मेधा भी। बहुत महान् लोग अपने को लेकर हमेशा सजग रहते हैं। वे अपनी प्रतिभा को लेकर सजग रहते हैं। वे आत्मविश्वास को लेकर भी सजगता बरतते हैं। वे किसी जगह अपने कौशल को लेकर कमी महसूस करते हैं तो उसे दूसरी बातों से पूरा करने की कोशिश करते हैं।

* * *

कष्ट

यदि कष्ट को हँसते-हँसते सहन किया जाए, तो वह भी सुखद हो जाता है, पर यह तभी हो सकता है, तब कर्म को महान् बना दिया जाए।

* * *

कसौटी

ज्यों ही मनुष्य पर आपत्ति आती है, वह अपने विवेक से काम लेने लगता है। सोना बारंबार तपाए जाने पर ही अपना असली रंग प्रकट करता है। जब तक उसको तेज आँच में तपाया और पिघलाया नहीं जाता, तब तक उसमें आंतरिक मैल लगा रहता है और वह अलग नहीं होता।

* * *

पत्थर से मूर्ति बनाई जाती है, वह मूर्ति उस पत्थर के ही अंतर्गत है। परंतु दृष्टिपथ में वह मूर्ति तभी आएगी, जब शिल्पकार के छेनी-हथौड़े उस पत्थर पर लगातार चलेंगे। विद्युत् की अग्नि पत्थर के अंदर लिप्त है। परंतु जब तक दूसरी वस्तु से रगड़ा न जाए, तब तक उसमें अग्नि नहीं जलेगी। मल्लाह जब तक तूफान के थपेड़े नहीं खाता और भँवरों में नहीं फँसता, तब तक अपने व्यवसाय में प्रवीण नहीं होता। संसार की प्रत्येक वस्तु उपयोगी तभी बनती है, जब वह अग्नि में तपाई या पानी में भिगोई जाती है या कूटी-छानी या पानी से धोई जाती है या किसी-न-किसी प्रकार का उस पर प्रहार किया जाता है।

* * *

काम

आप अपना काम जितने अच्छे तरीके से करेंगे, आप उसमें उतने की कुशल होंगे और एक समय के बाद आपमें

इतनी परिपूर्णता आ जाएगी कि जिस क्षेत्र में आप हैं, उसमें आपकी टक्कर का शायद ही कोई और होगा। जितना पाते हैं, उससे ज्यादा काम करने की वजह से आप अपनी ओर लोगों का ध्यान सकारात्मक तरीके से खींचते हैं और वह दिन दूर नहीं होता, जब आपको आपके काम के लिए आकर्षक मौके मिलने लगते हैं, बाजार में आपकी सेवाओं की माँग लगातार बनी रहेगी।

* * *

काम तो सभी पूरे हो जाते हैं, लेकिन कुछ लोग रो-धोकर करते हैं और कुछ लोग शांत, एकाग्र होकर।

* * *

कामयाब

एक कामयाब व्यक्ति की अपने सहकर्मियों के साथ अच्छी निभती है। वह ईमानदार लोगों को पसंद करता है, लेकिन अनुचित आलोचना या मैत्रीपूर्ण और शांतिपूर्ण समझौता उसे नहीं भाता। आप उसपर नकारात्मक भावनाओं का भार नहीं डाल सकते हैं। कामयाब लोगों को समस्या तब आती है, जब अकुशल तथा अयोग्य लोगों से उनका पाला पड़ता है। उन्हें विफल होने या सफलता न मिलने का भय जकड़े रहता है।

* * *

कामयाबी

कामयाब होने के लिए आपको अपनी क्षमता पर इस कदर भरोसा होना चाहिए कि आप जो एक बार सोच लें, उसे कर दिखाएँ। कामयाबी कोई ऐसी चीज नहीं, जो पेड़ पर फलती हो और जिसे आसानी से तोड़ लिया जाए। सफलता का मतलब है दृढता, आत्मबलिदान, दृढसंकल्प और एक सशक्त चरित्र।

* * *

हमें यह आदत पड़ गई है कि हम कामयाब लोगों की सिर्फ कामयाबी देखते हैं, उनकी विफलताओं, हार और विकट परिस्थितियों पर गौर नहीं करते, जिनका सामना करते हुए उन्होंने सफलता हासिल की है।

* * *

कार्यशक्ति

मनुष्य तब तक नहीं थकता, जब तक उसके जीवन में माधुर्य और उत्साह बना रहता है, हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है और मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

* * *

किस्मत के मालिक

अगर आप सही मायने में अपनी बदकिस्मती और दुर्भाग्य की वजह जानना चाहते हैं तो सितारों की तरफ मत देखिए, आईने में देखिए। अपनी किस्मत के मालिक आप खुद हैं। अपनी आत्मा को चलानेवाले भी आप हैं और इस वजह से इस बात को ध्यान में रखिए कि आप अपने दिमाग को खुद काबू में कर सकते हैं तथा उस दिमाग को उत्तेजित कर उन शक्तियों के संपर्क में ला सकते हैं, जिनकी मदद से आपकी सारी समस्याएँ सुलझ सकती हैं। इस प्रकार जो व्यक्ति अपनी समस्याओं के लिए सितारों को जिम्मेदार ठहराता है, वह अनंत बुद्धि, ईश्वर या आप कोई भी नाम देकर उसे नकार देता है।

* * *

किस्मत

हर इनसान की जिंदगी एक पहिए की तरह घूमती रहती है और इसके काम करने का तरीका ऐसा है कि भाग्य हमेशा किसी का साथ नहीं देता। यह सच है। हम सभी की जिंदगी में एक अनदेखा भाग्य या पहिया है, जो घूम रहा है और कभी यह हमारी किस्मत चमका देता है, तो कभी बिगाड़ देता है तथा हम चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाते। हालाँकि यह पहिया औसत के सिद्धांत पर काम करता है, जिसकी वजह से यह तय हो जाता है कि किसी की भी किस्मत हमेशा खराब नहीं रहेगी। यदि आज किस्मत खराब है तो इस सिद्धांत के मुताबिक यह उम्मीद है कि जब पहिया अगली बार घूमेगा तो किस्मत अच्छी हो जाएगी या अभी अच्छी है तो बिगड़ जाएगी।

* * *

कुटाई-पिसाई

अच्छे-से-अच्छे शस्त्र और औजार तब तैयार होते हैं, जब वे कई बार अग्नि में तपाए जाते हैं, हथौड़े से पीटे जाते हैं एवं सान पर चढ़ाए जाते हैं। लोहा स्वयं एक बहुत दृढ धातु हैं। हीरे का तो कहना ही क्या है, वह अत्यंत कठोर पदार्थ है, परंतु इनमें उपयोगिता और चमक-दमक कुटाई-पिसाई तथा रगड़ाई बिना नहीं आ सकती। इसी प्रकार मनुष्य में चाहे जितने गुण हों, परतु जब तक वह आपत्तियों का शिकार नहीं होता और उसको कष्ट के धक्के नहीं लगते, तब तक उसका गुण, उसका श्रेष्ठ रूप प्रकट नहीं होता।

* * *

कोशिश

जिस क्षेत्र या विषय में हमारी गहरी दिलचस्पी है, उसमें स्वयं को पूरी तरह झोंक दीजिए। सच्चाई यह है कि हम किसी भी काम को करने के लिए सोच-विचार व अटकलें ज्यादा लगाते हैं, जबकि उस दिशा में हमें कोशिश करके देखना चाहिए। हमें यह सब शुरू करने के लिए निपुणता, कोई प्रमाण-पत्र अथवा खूब धन जमा करने का इंतजार नहीं करना है। ज्यादातर व्यक्तियों की सोच यह होती है कि काम के शुरू होने का एकमात्र उपाय परंपरागत पद्धति है।

* * *

हमारी असफलताएँ यह नहीं बतातीं कि हममें प्रतिभा की कमी है, अपितु वे इस ओर इशारा करती हैं कि हमारी कोशिशों में कहीं-न-कहीं कोई कमी रही है। कई बार हमारी असफलता का कारण अपनी सामर्थ्य से बड़ी चीज के लिए इच्छा रखना भी होता है। हमें पहले पात्रता हासिल करनी चाहिए क्योंकि इच्छा का स्थान इसके बाद आता है।

* * *

क्रियाशीलता

निष्क्रिय जीवन से बढ़कर दूसरा अभिशाप नहीं है। जो लोग क्रियाशील रहते हैं, वे काम करने का संतोष पाते हैं और अपनी क्रियाशीलता से धरती का बोझ हलका करते हैं। इसके विपरीत, जो काम से बचते हैं, वे स्वयं तो परेशान होते ही हैं, समाज में भी बड़ा दूषित वायुमंडल पैदा करते हैं। कर्ममय जीवन दूसरों पर अच्छा असर डालता है, आलसी दूसरे को भी आलसी बनाता है।

* * *

क्रोध

क्रोधित होना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन क्रोध में बुराई तब पैदा होती है, जब आदमी विवेक खो देता है।

* * *

यदि हमें कोई अपवचन या गाली देता है तो हमें उस पर क्रोध आता है। उस समय यदि हम शांति से उस विचार को रोक लें और अपनी क्रोधाग्नि को अंदर-ही-अंदर रहने दें, तो दूसरे का क्रोध घटकर स्वत: ही न्यून हो जाता है। क्रोध से क्रोध नहीं जीता जा सकता, बल्कि उलटा बढ़ता है। क्रोधस्वरूप शस्त्र से बचने के लिए शांति एक ढाल है। क्रोध आने पर यदि हम चुप रहना सीख लें तो हमारे जीवन की आधी तकलीफें मिट सकती हैं।

* * *

पाँच मिनट का क्रोध जन्म भर की मित्रता को नष्ट कर देता है। जिस समय क्रोध का वेग आता है, हम अपने आपे से बाहर हो जाते हैं। हमारे विचार कुछ-के-कुछ हो जाते हैं। क्रोध को एक प्रकार का पागलपन भी समझा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्रोध को रोकना महाव्रत है। जितना ही यह रोका जाएगा उतनी ही मनुष्यत्व की उन्नति होगी। क्रोध को रोकने के लिए यदि कोई उत्तम उपाय है, तो वह मौन है। जबान पर काबू करना अपना ही क्रोध शांत करना नहीं है, बल्कि यह दूसरे के क्रोध को भी शांत कर देता है। ध्यान की ऊर्जा भी क्रोध को भस्म करने का काम करती है।

* * *

क्षमता-निर्माण

एक लक्ष्य निश्चित कर लेने के बाद क्षमताओं का निर्माण करें। विशिष्ट जीविकाओं के लिए विशिष्ट शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। आप जिस क्षेत्र में भी जाना चाहें, उसमें आप सफल होंगे, बशर्ते कि आप उसमें सर्वश्रेष्ठ बनने की चेष्टा करें। उस पर अपनी व्यक्तिगत छाप छोड़ें। चलते-चलते आप सीख जाएँगे। आप उन दक्षताओं एवं क्षमताओं को प्राप्त कर लेंगे, जो आपका सफर आसान कर देंगी। महत्त्वपूर्ण है यात्रा आरंभ करना।

* * *

क्षमा माँगना

कई बार हम सिर्फ इसलिए अस्वीकार कर दिए जाते हैं कि जाने-अनजाने की गई अपनी त्रुटियों को पहचान नहीं पाते और इससे भी बड़ी भूल तब होती है, जब त्रुटियों को पहचानते हुए भी उन्हें दूसरों पर व्यक्त कर उनसे माफी नहीं माँग पाते। क्षमा माँगना तथा क्षमा करना दोनों ही हमारे व्यक्तित्व की विशालता को प्रकट करते हैं। सच्चे दिल से माँगी गई क्षमा सिर्फ अपनी कमी मान लेने भर से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। तभी तो व्यवहारकुशल लोग एक पल भी गँवाए बिना कहते हैं, 'मैं माफी चाहता हूँ।'

* * *

यह बात स्पष्ट करती है कि संबंधों में आनेवाली दरार की आशंका से आप अशांत हैं और उसके लिए खुद को क्षमा पात्र समझते हैं।

* * *

खुलापन

खुली आँखें हर जगह सुयोग ढूँढ़ लेंगी और खुले हाथों को कभी सत्कर्म की कमी नहीं रहेगी।

* * *

खुशी

खुशी व्यक्ति को आंतरिक रूप से मजबूत रखती है। नैतिकता व कर्तव्य-बोध का पालन करते हुए जब खुशी मिलती है, तब वह सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यंत सुदृढ होती है। खुशियाँ बाँटने से उसी प्रकार बढ़ती हैं,

जिस प्रकार विद्या दान देने से बढ़ती है। एक प्रसन्न मनुष्य सुखी होता है और वह संस्कृति व सभ्यता को अपने कर्मों से जीवंत रखता है।

* * *

जो व्यक्ति ईर्ष्या, क्रोध व प्रतिशोध की भावना के कारण गलत मार्ग की ओर उन्मुख हो जाते हैं, उनका जीवन कष्टप्रद हो जाता है, जबकि मन की शुचिता व्यक्ति को सदाचरण पर चलने की प्रेरणा देती है। खुशी का जज्बा व्यक्ति को शालीन, विनम्र और व्यवहारकुशल बनाता है। जिस व्यक्ति के अंदर दिल से निकली सच्ची खुशी विराजमान रहती है, उसका लोक-व्यवहार उत्कृष्ट होता है।

* * *

गरीबी

गरीबी एक बदसूरत मुखौटा है, जो वास्तविक सुंदरता को छुपाता है, यदि आप भी अमीर और महान् बनना चाहते हैं तो आपको संघर्ष करते रहना होगा।

* * *

गलत चुनाव

सामान्य जीवन में अकसर होता यह है कि जो हम बनना चाहते हैं, वह नहीं बन पाते और कई बार माता-पिता की इच्छा, वातावरण तथा दूसरों की देखा-देखी उन व्यवसायों को चुन लेते हैं, जिनमें हमारी रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं होती। इसका नतीजा यह होता है कि हम बेमन से जब कामों को अंजाम देते हैं तो वे आधे-अधूरे ही हो पाते हैं। याद रखें कि आधे-अधूरे मन से किया गया कोई भी काम कभी भी हमें निर्धारित लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकता।

* * *

गलतियाँ

जिसे हम अनुभव कहते हैं, उसमें काफी हद तक वे बातें शामिल होती हैं, जिन्हें हमने गलतियों से सीखा है। वे गलतियाँ हमारी अपनी होती हैं और दूसरों की भी, लेकिन इन गलतियों से सीखे गए सबक को कभी नजरअंदाज न करें।

* * *

ऐसे इनसान को भी खोजना मुश्किल है, जिसने कभी कोई गलती न की हो, लेकिन एक बार की गलती से सबक लेकर जीवन में दोबारा उसे न दोहरानेवाले लोग ही बुद्धिमान कहलाते हैं। मन में ठान लेना चाहिए कि अब से गलती नहीं करेंगे।

* * *

गलतियों को अनावश्यक तूल न दें। कोशिश रहनी चाहिए कि गलती को किस तरह से सुधारा जा सकता है। अगर गलती को अनावश्यक तूल दिया जाएगा तो हो सकता है कि व्यक्ति विशेष के मन में ऐसी कोई गाँठ पड़ जाए कि वह नकारात्मक रास्ता अख्तियार कर ले। उसका आत्मविश्वास खो सकता है, वह आपको अपना शत्रु मानकर चल सकता है और मौका पड़ने पर आपको चोट भी दे सकता है। गलती किसी से भी हो सकती है। सकारात्मक रवैया अपनाने पर व्यक्ति अपनी गलती से सबक लेता है।

* * *

गुण

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम—ये छह गुण जिसमें होते हैं, देव उसी की सहायता करते हैं।

* * *

क्षमा, सहायता व सहयोग करने की आदत बना लें, ये गुण कभी व्यर्थ नहीं जाते और आड़े वक्त पर काम आते हैं।

* * *

मनुष्य का कोई गुण ऐसा नहीं है, जिसे हर मनुष्य अपने में पैदा न कर सके या विकसित न कर सके।

* * *

यदि आप हजारो-हजार की भीड़ में सबसे अलग, सबसे ऊँचे और सबके प्रिय बनना चाहते हैं तो अपने भीतर छिपे गुणों को पहचानें और उन्हें इतना सँवारें कि आपका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली बन जाए।

* * *

गुरु

आप अपने सबसे बड़े गुरु और निर्देशक हैं। पहले अपने अंदर मजबूती लाइए और अपने विचारों को दृढ कीजिए।

* * *

गुलामी

जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है, वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता।

* * *

घात-प्रतिघात

सच्चा मनुष्य वही है, जो प्रसन्नता के साथ आपत्तियों को सहन करता है और उनके अनुभव से आगे के लिए अपने निर्दिष्ट मार्ग से सफलता उत्पन्न करता है। संसार के किसी भी मार्ग में मखमल नहीं बिछी हुई है। प्रत्येक मार्ग में काँटे, पत्थर, गड्ढे, अनेकानेक घात-प्रतिघात हैं, उनमें होकर पार हो जाने का ही नाम सफलता है। याद रखिए, उन्हीं की किस्मत बदलती है, जो इसे बदलना चाहते हैं।

* * *

चाह से राह

राह दिखलाई नहीं देती, परंतु एक प्रबल इच्छा दिखलाई देती है। प्रबल इच्छा आगे चलकर साकार हो जाती है और चाह से राह बन जाती है।

* * *

चाहत

कोई चीज पाने की चाह रखना ही उसकी कामना नहीं है। चाह रखना तो कामना करने का एक निष्क्रिय रूप मात्र है। जो कुछ आपकी चाहत है, उसका पहला कदम वैसी चेतना है, जिसे मानसिक रूप से उसके लिए तैयार होने और फिर उस दिशा में हाथ-पैर हिलाने की प्रक्रिया से शुरू होती है।

* * *

चिंतन

चिंतन इनसान को शक्तिशाली और आत्मविश्वासी बनाता है। चिंतन और चिंता में वही अंतर होता है, जो एक

स्वस्थ व्यक्ति और रोगी में होता है।

* * *

स्वस्थ चिंतन मनुष्य में आत्मविश्वास की शक्ति भर देता है और वह सफलता की ओर निरंतर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत चिंताग्रस्त व्यक्ति रोगों से ग्रस्त, निराश और हताश होता है। उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण होकर नष्ट हो जाता है।

* * *

चिंता

कष्ट इतना कष्टकर नहीं होता, जितनी की उसकी चिंता कष्टकर होती है। कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, बल्कि चिंता मारती है।

* * *

कोई भी चिंता हमें विरासत में नहीं सौंपी जाती है। हम अपने अज्ञान द्वारा ही चिंताओं को आमंत्रित करते हैं। ज्ञान और विवेक ही हमें चिंतामुक्त करने की सामर्थ्य देते हैं। ज्ञान ही सत्य का दूसरा नाम है। सत्य ही भय और अंधविश्वास से हमें बचाता है।

* * *

चिंता एक ऐसी हथौड़ी है, जो मस्तिष्क के सूक्ष्म व सुकोमल सूत्रों को विघटित कर उसकी कार्य करने की शक्ति को नष्ट कर देती है। चिंता ने आज तक कभी किसी काम को पूरा नहीं किया। चिंतारूपी सर्पिणी ने जन्म लेनेवाले प्रत्येक मनुष्य को डसा है।

* * *

चुनौतियाँ

बहुत सी चुनौतियों से आँखें चार करके जिन लोगों ने कामयाबी पाई है, वही इसका सच्चा सुख भी भोग सकते हैं। चुनौतियों से जूझते-जूझते हमारे भीतर एक अद्‌भुत शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जो हमें जीवन-मार्ग में आनेवाली समस्त बाधाओं से उबारती हैं। जीवन में सफल होने के लिए कोई शाही सड़क नहीं है। किसी भी सफल व्यक्ति का जीवन-चरित्र पढ़ें, उसने अनेक कठिनाइयों को पार करके ही अपनी मंजिल पाई है।

* * *

चेतन मस्तिष्क

चेतन मस्तिष्क के विचार अवचेतन प्रकोष्ठ में तेजी से ले जाए जा सकते हैं। चेतन मस्तिष्क में उभरनेवाला विचार, योजना या लक्ष्य, जिसके पीछे पूर्ण विश्वास के साथ उसे कार्य रूप में देखने की इच्छा हो, उसे दिमाग का अवचेतन हिस्सा तत्काल अपना लेता है। ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि इस तरह की इच्छा पूरी नहीं हुई हो।

* * *

चेतना

अगर आपकी संपन्न बनने की इच्छा है तो अपने दिमाग की अवचेतन अवस्था को वैसा ही विचार उत्पन्न करने का आदेश दें, जिससे चेतना संपन्नता विकसित करे और फिर देखें कि कैसे आपकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगती है। इच्छा की शक्ति, जो ज्वलंत आकांक्षा के रूप में अभिव्यक्त होती है, उसके जरिए अवचेतन के एक्शन को गति प्रदान की जा सकती है। इस प्रकार इच्छा की शक्ति का इस्तेमाल करके अपने दिमाग को पूरी तरह काबू में लेकर

व्यक्ति असीमित शक्ति का हकदार बन सकता है।

* * *

चोटी

ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना मकसद हो तो अपना काम निचली सतह से शुरू करना चाहिए।

* * *

जब हम निश्चित और निर्धारित ढंग से किसी कार्य को करने के लिए तत्पर होते हैं तो स्वाभाविक ढंग से हमारी प्रतिभा का विकास होता है। प्रतिभा और एकाग्रता भिन्न नहीं हैं, एक ही हैं। अपने निश्चित लक्ष्य को अपनी प्रियतमा के समान समझना चाहिए। भला प्रेयसी कभी पसंद करेगी कि आप किसी अन्य को अपना प्रेम दें! ऐसा करोगे तो वह ईर्ष्या से, सौतिया डाह से मर मिटेगी।

* * *

जीवटता

डटे रहना जीवन को जीने की एक ऐसी कला है, जो हमारे लिए कामयाबी के दरवाजे खोलती है। जो डटे रहकर खोजना चाहते हैं, वही कुछ पा भी सकते हैं। जिस व्यक्ति ने अपने संकल्प को अपने लक्ष्य के सामने डटे रहकर संघर्ष किया है, सफलता ने एक-न-एक दिन निश्चित ही उसके कदम चूमे हैं।

* * *

जीवन

जीवन के हर क्षेत्र से आनेवाले सफल व्यक्तियों ने सदैव अपने विचारों और प्रयासों को एक निश्चित उद्देश्य, लक्ष्य या मुख्य मकसद को हासिल करने के लिए एकजुटता से किया है। यह सच है कि कोई कुछ सोच ले तो उसका सृजन भी कर सकता है, बशर्ते उसका दिमाग उस पर दृढता से भिड़ा रहे और लक्ष्य हासिल करने तक हार न माने। एकाग्र विचारों के साथ काम करनेवाला इनसानी दिमाग न सिर्फ महान् बल्कि, शक्तिशाली भी होता है।

* * *

जीवन-संग्राम एक लक्ष्य—दूरदृष्टि और दृढनिश्चयवाले व्यक्ति जीवन-संग्राम में निरंतर आगे बढ़ते हैं और अवश्य ही जीत हासिल करते हैं।

* * *

जैसे को तैसा

इनसान जैसा बोता है, वैसा ही काटता है। यह एक उपदेश से कहीं बढ़कर है। यह वह महान् व्यावहारिक सच है, जिसे हर सफल उपलब्धि का आधार बनाया जा सकता है। रास्ते टेढ़े-मेढ़े हों या सीधे, आप जो सोचते हैं, जैसा करते हैं, उससे कई विचार या कर्म जुड़ जाते हैं, उसका फायदा आपको आनेवाले समय में मिलता है। इस सच से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। यह उतना ही शाश्वत है, जितना कि यह ब्रह्मांड, उतना ही निश्चित, जितना कि गुरुत्वाकर्षण का नियम है। इससे मुँह मोड़ना, खुद को मूर्ख बनाने के बराबर है या अनजान बनाने के बराबर और इनमें से किसी एक की वजह से भी आप सफलता का मौका गँवा सकते हैं।

* * *

ज्ञान

केवल ज्ञान हासिल करने से कुछ नहीं मिलनेवाला है, जब तक कि इसका उपयोग न करें। एकमात्र ज्ञान ही

शक्ति नहीं है। अधकचरा ज्ञान मूर्खता से भी ज्यादा नुकसानदेह साबित होता है।

* * *

ज्वलंत इच्छा

हर गतिविधि किसी-न-किसी इच्छा का ही परिणाम है। इच्छा किसी चीज को पाने की जितनी तीव्र होगी, उतना ही उस चीज या वस्तु का पाना सार्थक होगा। जब हमारे मन में किसी चीज को पाने की या कुछ कर गुजरने की इच्छा उत्पन्न होती है, तब हमारा मन कल्पना करने लगता है कि वे चीजें कैसी होंगी? या वह कार्य, जिसको हम करना चाह रहे हैं, वह पूरा होने पर कैसा होगा? उसका परिणाम क्या होगा? अर्थात् कल्पना से ही हम उस इच्छा को ज्वलंत रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। जब तक कोई भी इच्छा ज्वलंत इच्छा में परिवर्तित नहीं होती, तब तक उसका पूर्ण होना संभव नहीं होता है। इसीलिए सपने जब तक ज्वलंत इच्छा के रूप में परिवर्तित नहीं होते, तब तक वे महज एक कोरी कल्पना ही रहते हैं और ऐसी कल्पना से कभी भी सफलता नहीं मिलती। इसलिए सफलता पाने के लिए ज्वलंत इच्छा का होना नितांत आवश्यक है।

* * *

ताकत

कुदरत को बेकार पड़े रहने से नफरत है, चाहे वह किसी भी रूप में हो। वह उन्हीं तत्त्वों को लगातार जीवित रखता है, जो इस्तेमाल में हों। एक बाँह को या शरीर के किसी भी दूसरे हिस्से को बाँध दें, इस्तेमाल न करें तो जल्द ही देखेंगे कि बेकार पड़ा हिस्सा पहले क्षीण पड़ेगा और फिर निर्जीव हो जाएगा। इस क्रम को उलट दें, एक बाँह को सामान्य से ज्यादा इस्तेमाल करें, जैसे कि एक लोहार जो दिन भर एक भारी हथौड़े को उठाए रहता है, वह बाँह ताकतवर (अंदर से विकसित) हो जाएगी।

* * *

तुलना

कभी किसी की अन्य से तुलना न करें। तुलना करते वक्त हमारी अवधारणा रहती है कि हम अमुक व्यक्ति को यह एहसास करा सकें कि वह भी औरों की तरह सुधरने की कोशिश करे। परंतु सामान्य रूप से परिणाम इसके विपरीत होते हैं। तुलना से व्यक्ति खीझता तथा क्रोधित होता है। कई बार वह हीनभावना का शिकार हो जाता है। ध्यान रखें, दूसरों को नीचा दिखाने या बहसबाजी करने से हम अपनी बात मनवा तो सकते हैं, लेकिन सामनेवाले व्यक्ति को हमेशा के लिए खो देते हैं।

* * *

दर्पण

हमारी आपत्तियाँ और क्लेश हमारी आंतरिक शक्तियों की वृद्धि करते हैं, और जिनको हम अपना शत्रु समझते हैं, वे भी हमारे लिए कल्याणकारक होते हैं। जब तक हमारा कोई शत्रु न बने, तब तक हमें हमारी बुराइयाँ और कच्चापन कौन दिखाएगा! जो मित्र होते हैं, वे तो कृपा और प्रेम से ऐसे भरे होते हैं कि हमें कड़वी, परंतु यथार्थ बात नहीं कहते, वे सदा हमारे दोषों को क्षमा की दृष्टि से देखते हैं और उनको छिपाने का प्रयत्न करते हैं। परंतु जो शत्रु होता है, वह बुराई करने में नहीं हिचकिचाता, वह हमारी घोर-से-घोर निंदा करता है, हमारी पोल खोलता है, हर पल उचित-अनुचित प्रहार करता है। यदि सच पूछिए तो वह हमारे लिए एक अच्छे दर्पण का काम करता है।

* * *

दीर्घसूत्री

जो दीर्घसूत्री हो जाता है, वह स्वावलंबी नहीं रह पाता। जब मनुष्य स्वयं निर्णय नहीं कर सकता कि अमुक कार्य किया जाए या नहीं तो उसे दूसरों का आश्रय लेना पड़ता है। फिर तो दूसरों की सहायता के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता। सौ वर्ष भी दीर्घसूत्रता और आलस्य के साथ जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा पचास वर्ष करते रहकर मरना श्रेष्ठ है।

* * *

दुर्बलता

अपनी दुर्बलताओं को पहचानना जरूरी है। व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि उसमें अपनी कमजोरियों को पहचानने की क्षमता का अभाव होता है। अगर हमें अपनी दुर्बलताओं का पता नहीं होगा या हम उन्हें पहचानते तो हैं, लेकिन उनकी अनदेखी कर देते हैं तो वे हमारे पतन का कारण बन सकती हैं और हमारी कमजोरियाँ हमारी क्षमताओं को कमजोर कर देंगी तथा उन्हें नकारात्मकता में बदल देंगी, जिनसे हम बचना चाहते हैं।

* * *

दृढ इच्छाशक्ति

दृढ इच्छाशक्ति वाले मनुष्य के मार्ग में उसकी रुकावट के लिए यदि बड़े-बड़े पत्थर डाल दिए जाएँ तो भी उसकी प्रगति नहीं रुक सकती। वह उन्हें रुकावटें समझेगा ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने मार्ग में अच्छे ढंग से जमाकर उन्हें अपनी सड़क या सीढ़ी बना लेगा, जिससे उसकी यात्रा और भी सरल हो जाएगी। ऐसे मनुष्य का यदि धन छीन लिया जाए तो वह पुन: धन कमाने के लिए अधिक परिश्रम करने लगेगा।

* * *

बाधाओं पर विजय प्राप्ति के लिए हमें एक गुरुतर व्यवस्था निर्मित करनी होती है। यह नहीं समझना चाहिए कि सिर्फ दृढ इच्छाशक्ति के सहारे ही हम सफलता को अर्जित कर लेंगे। दृढ इच्छाशक्ति सफलता की कुंजी अवश्य है, परंतु उस कुंजी को साफ करना, उसे ताले में लगाना और घुमाने का हुनर भी हमें आना चाहिए। रास्ते में आनेवाली रुकावटों को दूर करके ही हम अपनी वास्तविक मंजिल तक पहुँच सकते हैं। प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की परम आवश्यकता है। राह में यदि काँटे बिछे हों तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो या जमीन में गाड़ दो, उन काँटों पर पाँव रखकर व्यर्थ में खून बहाने से क्या लाभ! प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता। और प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब हमारे द्वारा किए जानेवाले कार्य विवेक और ज्ञान से परिपूर्ण हों।

* * *

दृष्टिकोण

जब कभी हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों तो ऐसी स्थिति में खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है। एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो इससे परेशान हुए बिना ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास

करें। आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हैं या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें, इस बात को ध्यान में रखें।

* * *

सबसे पहले लक्ष्य तय करें और उसे पूरा करने के लिए दृष्टिकोण तैयार करने पर ध्यान दें। आपके भीतर नेतृत्व के गुण हैं या नहीं, इसकी जाँच आप कैसे करेंगे? आप अपने आपसे कुछ सवाल करें और उसका जवाब जानने की कोशिश करें। क्या मेरे पास कोई दृष्टिकोण है? मेरी इच्छाएँ क्या हैं? क्या मुझे उनका पता है? उन्हें पूरा करने की इच्छा मेरे भीतर कितनी है? क्या मेरे सहयोगी काम को अच्छी तरह निबटा पा रहे हैं? उनकी कार्यकुशलता कैसी चल रही है? क्या वे अपनी पूरी क्षमता के साथ काम कर पा रहे हैं या नहीं? मुझे अपने नजरिए के विकास के लिए किनसे मिलना चाहिए? क्या मुझे उन लोगों की दरकार होती है, जो अच्छी परफॉरमेंस देते हैं?

* * *

धैर्य एवं प्रतीक्षा

एक मंतव्य को छोड़कर दूसरा मंतव्य ग्रहण करने के पूर्व बारंबार विचारने और धैर्य तथा प्रतीक्षा की आवश्यकता है, क्योंकि प्राय: देखने में आता है कि मनुष्य जब तक व्यवसाय से नितांत थककर और आपत्तिग्रस्त होकर मारे घबराहट के दूसरे काम में हाथ डालने लगता है, तब तक उसे अपने पहले कार्य में भी विजय मिल जाती है।

* * *

नकारात्मकता

जब किसी व्यक्ति के विचार नकारात्मकता से घिरे होते हैं तो उसकी सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती है, उत्साह और उल्लास मंद पड़ जाते हैं। फलस्वरूप साहस और आत्मविश्वास भी तिरोहित हो जाते हैं। नकारात्मक विचारों के चलते उसका व्यक्तित्व एकदम नकारा तथा प्रभावहीन हो जाता है। जिन लोगों की सोच शुद्ध और सफल है, उनके सामने बुरे विचारवालों की शक्ति और बड़ी-से-बड़ी सामर्थ्य भी कम और हलकी प्रतीत होती है।

* * *

नाकामी

नाकामी का जीवन से वैसा ही संबंध है, जैसा भट्ठी का कुम्हार से। यह हमें तपाकर खरा कर देता है, फिर भी लाखों लोग नाकामी को अंतिम नतीजा मानकर बैठ जाते हैं। जबकि यह जीवन की ज्यादातर दूसरी घटनाओं की तरह क्षणभंगुर है और इस वजह से इसे अंतिम नहीं मान लिया जाना चाहिए।

* * *

नाकामी किसी भी इनसान के अनुभव का सबसे फायदेमंद हिस्सा होती है, क्योंकि कई जरूरी सबक हैं, जो सफलता हासिल करने से पहले सीख लेने चाहिए और यह सबक नाकामी से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता। नाकामी अकसर एक अप्रत्यक्ष वरदान की तरह होती है, बशर्ते यह हमें ऐसे उपयोगी सबक सिखा सके, जो हम इसके बगैर नहीं सीख सकते थे।

* * *

सफल लोगों को नाकामी और अस्थायी नाकामी का भेद समझ आना चाहिए। हर किसी ने कभी-न-कभी किसी प्रकार की अस्थायी नाकामी का सामना किया है। इनसे प्राप्त अनुभव ही सबसे बड़े और फायदेमंद सबक सिखाते

हैं। सच में, हममें से ज्यादातर लोग ऐसी मिट्टी के बने हैं कि यदि हमने कभी नाकामी का सामना नहीं किया तो हम इतने अहंकारी और बेलगाम हो जाते हैं कि हम खुद को खुदा से भी बड़ा समझने लग जाते हैं। इस दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो कहा जाता है कि अपने और ईश्वर के बारे में कहते हैं, 'मैं और ईश्वर', तथा ऐसा कहते समय 'मैं' पर कुछ ज्यादा ही जोर देते हैं!

* * *

निराशा

निराशा की छोटी-सी रेखा भी मानसिक यंत्र को उसी प्रकार बेकार और निकम्मा बना देती है, जिस प्रकार धूल का छोटा-सा कण या छोटा-सा बाल चलती हुई घड़ी को बंद कर देता है।

* * *

निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है, जो हमने कुछ सत्कर्मों को करने के लिए किए थे।

* * *

निराशावाद

जीवन-संग्राम में जूझने से पूर्व ही हथियार डाल देनेवाले लोग घोर निराशावादी होते हैं। वे खेलने से पूर्व ही हार जाते हैं। जो लोग अपनी सामर्थ्य तथा क्षमता प्रदर्शित करने से पूर्व ही अपने को पराजित महसूस कर लेते हैं, उन्हें दुनिया की कोई भी ताकत विजयी नहीं बना सकती।

* * *

निर्णय-शक्ति

शीघ्र निर्णय करने से समय की बहुत बचत होती है। काम करनेवालों को समयाभाव की शिकायत नहीं होती, क्योंकि निर्णय-शक्ति से प्रेरित होकर वे अपने कार्यों को तुरंत शुरू करते हैं। परंतु आलसी और दीर्घसूत्री मनुष्यों का अधिक समय विचार करने में ही नष्ट हो जाता है एवं उन्हें समयाभाव की सदैव शिकायत बनी रहती है। असमंजस से उबरिए, अपने फैसले तुरंत और सही समय पर करने की क्षमता का विकास कीजिए, आपके व्यक्तित्व में आनेवाला परिवर्तन सभी को चौंका देगा।

* * *

सफलता प्राप्त करने के लिए निर्णय-शक्ति का होना आवश्यक है। यह सफल नेतृत्वकर्ता का अनिवार्य गुण है। वह मनुष्य, जो निश्चय करने में रुकता है, घबराता है, डाँवाँडोल होता है, छोटे-छोटे घात-प्रतिघातों से विकृत होता है, पूरा पड़ने और पूरा न पड़ने के विचार से कार्य आरंभ नहीं करता, दूसरों की सम्मति लेता फिरता है, वह कुछ भी नहीं कर पाता। ऐसे मनुष्य को चाहे जितने अच्छे अवसर प्राप्त हों, वह अपने डाँवाँडोल स्वभाव के कारण, निर्णय-शक्ति के अभाव के कारण अनेक सुअवसरों के लाभ नहीं उठा पाता। उसमें निर्णय-बल नहीं होता। वह दूसरों के हाथ की कठपुतली हो जाता है। उसका अस्तित्व और व्यक्तित्व ही नष्ट हो जाता है।

* * *

निर्मलता

यदि हृदय निर्मल न हो तो आप यह निश्चित मानिए कि न तो विचार-विमर्श निर्मल होंगे, न वार्त्तालाप और न जीवन।

* * *

निश्चित मार्ग

संलग्नता के बिना सफलता नहीं मिलती। हम जो कार्य करना चाहते हैं, उसके लिए निश्चित मार्ग तय करना आवश्यक है। लक्ष्यहीन ढंग से किए जानेवाले प्रयास बिल्कुल बेकार बैठने जैसा है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य पर सावधानी के साथ विचार करता है तथा उसे पूरी तन्मयता के साथ पूरा करने के लिए उस दिशा में चल पड़ता है। उसे उस मार्ग की दुविधाएँ स्वत: ही रास्ता देने लगती हैं।

* * *

निश्चित लक्ष्य

एक निश्चित लक्ष्य जीवन की सभी उल्लेखनीय उपलब्धियों की शुरुआत भर है, जबकि आत्मविश्वास वह अदृश्य शक्ति है, जो किसी को तब तक उत्साहित, प्रेरित और अग्रसर करती रहती है, जब तक कि उसका लक्ष्य एक यथार्थ न बन जाए। आत्मविश्वास के बिना कोई भी उपलब्धि लक्ष्य के चरण से आगे नहीं बढ़ पाती और महज उद्देश्यों का अपने आपमें कोई वजूद नहीं होता। कई लोगों के लक्ष्य अस्पष्ट होते हैं और वे जीवन में कुछ हासिल नहीं कर पाते, क्योंकि उनमें इतना भी आत्मविश्वास नहीं होता कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वे एक निश्चित योजना बना सकें।

* * *

जिस इनसान के मन में एक निश्चित लक्ष्य है और इसे हासिल करने के लिए एक निश्चित योजना है, उसने सफलता की राह नब्बे फीसदी तक पहले ही तय कर ली है। कोई भी व्यक्ति, जिसे ज्ञान है और जो व्यक्तियों के सामंजस्यपूर्ण संयोजन से शक्ति पैदा कर सकता है, वह किसी भी उचित कारोबार में सफल हो सकता है।

* * *

नेतृत्व

नेतृत्व अच्छे-बुरे की समझ देता है और विपरीत परिस्थितियों में नियंत्रण करने में सहयोग देता है, जिससे हार का मुँह न देखना पड़े। जीवन में ऐसे ही मोड़ आते हैं, जब हम परिस्थितियों और प्रयासों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाते और ऐसे में हमारा नेतृत्व कभी-कभी असफल हो जाता है। यदि कभी असफलता हाथ भी लगे तो समस्या को गंभीर होने से रोकने का प्रयास करें और कार्य को पूरा करने की सामर्थ्य रखें। यही वास्तविक नेतृत्व है।

* * *

परिवर्तन

जब किसी सकारात्मक लक्ष्य के लिए हम अपने अंदर परिवर्तन लाते हैं तो कुछ भी पाना असंभव नहीं होता। स्वयं को बदलने की कुंजी हर व्यक्ति के हाथ में होती है। ज्यादातर लोग समस्याएँ आने पर ही खुद में बदलाव लाते हैं। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम खुद से किए गए वादों को पूरा करें। इन वादों को पूरा करने से हमें हमेशा लाभ मिलता है।

* * *

जीवन आसानी से नहीं मिलता है और कुछ भी सोने की तश्तरी में पेश नहीं किया जाता है। अगर आप अपनी आंतरिक शक्ति को सुदृढ करने का प्रयास नहीं करेंगे, तब आपके लिए यह समझना कठिन होगा कि आपको किस दिशा में जाना चाहिए। अगर आपको किसी बिंदु विशेष पर अधिक देर तक टिके रहना कठिन लगता है तो बैठ जाएँ

और विचार करें कि आपके जीवन में इसका क्या असर होने वाला है। अगर आपको लगता है कि आप जिस पर नजर गड़ाए हुए हैं, उसका कोई सकारात्मक प्रभाव होगा तो उसे हासिल करने के लिए स्वयं को प्रेरित करें। यह भी याद रखें कि व्यक्तिगत परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है, जो हर आनेवाले दिन के साथ नया मोड़ लेती है।

* * *

यदि हम गेहूँ हैं तो मक्का नहीं हो सकते, यदि मक्का हैं तो गेहूँ नहीं हो सकते। परंतु यदि हम गेहूँ हैं तो यथोचित समय पर जमीन जोतने, खाद-पानी ठीक समय पर देने से उत्तम गेहूँ तो अवश्य हो सकते हैं। यदि हम ज्वार हैं तो किसी प्रकार उत्तम ज्वार तो अवश्य हो सकते हैं। हम अपनी वास्तविक क्षमताओं एवं प्रकृति में थोड़ी सी सजगता के साथ क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जिस परिस्थिति में है, उसी को अनुकूल बना सकता है। उसी स्थिति में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देकर नाम व दाम अर्जित कर सकता है। यही करना चाहिए। देश और दुनिया को बदलनेवाले महान् नेताओं ने यही किया है।

* * *

व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं। समसामयिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार व नजरिया एक खुश और नाखुश व्यक्ति के बीच सबसे बड़ा अंतर पैदा करता है। यह सही है कि हर समय हर कोई खुश नहीं रह सकता है। लेकिन कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से भी खुशियाँ निचोड़ लेने की क्षमता आपमें होनी ही चाहिए। निराशावादी लोगों को विभिन्न वस्तुओं या परिस्थितियों के प्रति नजरिए में परिवर्तन लाना चाहिए।

* * *

परिस्थितियाँ

जो लोग अपनी तमाम असफलता का दोष परिस्थितियों या किस्मत पर मढ़ने लगते हैं, उन्हें नेपोलियन की यह बात याद रखनी चाहिए, जिसने कहा था, 'चूल्हे में जाएँ परिस्थितियाँ, परिस्थितियाँ मैं बनाता हूँ।' विफलता की ज्यादातर परिस्थितियाँ और किस्मत के प्रतिकूल नतीजे खुद के बनाए हुए होते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए।

* * *

पुरुषार्थ

सच्चा पुरुषार्थी वही है, जो बार-बार असफल होने पर भी अपने प्रयत्न में शिथिलता नहीं आने देता और नए उत्साह से उद्यम करने लगता है।

* * *

पैसा

जिंदगी में पैसा ही सबकुछ नहीं होता, लेकिन सबकुछ पैसों से ही होता है।

* * *

प्रगति-रथ

सफलता की यात्रा अनवरत विकास-क्रम से जुड़ी है। किसी भी बड़े सफर की शुरुआत पहले कदम से ही होती है। जिन लोगों ने अपने सपने को साकार करने की दिशा में प्रगति की है, वे जानते हैं कि शुरुआती दिनों में छोटी-छोटी उपलब्धियाँ भी कितनी बड़ी ऊर्जा का काम करती थीं। एक-एक सफलता को जोड़कर हम ऐसा सेतु निर्मित कर लेते हैं, जिस पर हमारी प्रगति का रथ फिर बिना रुके दौड़ता ही चला जाता है।

* * *

प्रतिकूलता

एक ही जाति के दो वृक्षों को देखें। एक ही प्रकार के दो बीज एक ही क्यारी में बो दिए जाते हैं, वही कुछ दिन बाद बड़े होते हैं। उनमें से एक पौधे को हम एक स्थान पर लगा देते हैं, जहाँ उसको जल, वायु, ऋतु अपने आप ही सहन करना पड़ता है। दूसरे पौधे को हम किसी वाटिका की क्यारी में लगा देते हैं। वहाँ उसको समय-समय पर पानी दिया जाता है, धूप और ठंड से उसकी रक्षा की जाती है और उसमें खाद दी जाती है। जब दोनों पौधे पूर्ण वृक्ष बन जाते हैं, तब दोनों की लकड़ी, पत्ती, पुष्प और फल में बड़ा अंतर आ जाता है। जो अपने आप बढ़ता है और ऋतु, पानी, हवा का कष्ट उठाता है, उसकी जितनी ठोस बनावट होती है, उतनी बाग में लगाए गए वृक्ष की नहीं होती, बल्कि बागवाले वृक्ष में इतनी नरमी आ जाती है कि यदि उसको सर्दी, गरमी और खुश्की से न बचाया जाए तो उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है।

* * *

प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की आवश्यकता है। राह में काँटे पड़े हुए हों तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो, या जमीन में गाड़ दो। उन काँटों पर पाँव से या अन्य अंग से खून मत बहाओ। प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न न होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता।

* * *

प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब विवेक और ज्ञान से कार्य किए जाएँ। अंधे होकर भागने से मार्ग नहीं कट सकता। विवेक और ज्ञान के साथ उद्यम करने से मार्ग में पहाड़ भी हो तो वह हटाया जा सकता है या उसके ऊपर मार्ग बनाया जा सकता है, परंतु उस पर्वत से सिर फोड़ने से कोई लाभ नहीं हो सकता, वहाँ मार्ग नहीं बन सकता।

* * *

प्रतिभा-विकास

निराशा और छोटे मार्ग से सफलता पाने की तिकड़में छोड़े बिना आपमें वास्तविक प्रतिभा का विकास नहीं हो सकता। सदैव आशा और विश्वास से परिपूर्ण विचारों का स्वागत कीजिए, थोड़े ही दिनों में आपको आश्चर्य होगा कि आप जिन पदों की, जिन कुरसियों पर बैठने की लंबे समय से इच्छा रखते थे, वे सब आपकी ओर खिंचे चले आ रहे हैं।

* * *

प्रतीक्षा

हम जो कुछ जानते हैं, यदि उसका अभ्यास करते हैं तो उससे हमारी ज्ञानवृद्धि होती है। सावधानी से प्रतीक्षा करनेवाले को लाभ अवश्य होता है। दौड़नेवाले फिसल जाते हैं, परंतु सँभलकर चलनेवाले शीघ्र पहुँच जाते हैं। संपूर्णता के लिए बहुत धैर्य और समय की आवश्यकता है।

* * *

प्रयत्न

मनुष्य की शिक्षा स्कूल और कॉलेज में नहीं होती, किंतु कष्टों और आवश्यकताओं के अनुभव में होती है।

कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न और दौड़-धूप करता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है। यदि कठिनाइयाँ न होतीं तो सफलता भी न होती। संग्राम ही न हो तो जय या पराजय कहाँ से प्राप्त हो! सफलता प्राप्त करने के लिए ही तो प्रयत्न किया जाता है, आपत्ति उठाई जाती है। उसी से मनुष्य की उन्नति होती है। जितनी भी अधिक आपत्तियाँ सहकर मनुष्य सफलता प्राप्त करता है, उसकी सफलता उतनी ही अधिक महत्त्व की होती है।

* * *

प्रयास

सदैव स्वयं को धन्य समझें कि जो कुछ आपके पास है, वह सिर्फ आपके पास है। सदैव अपने सपनों की अलख जगाए रखें। कभी भी उन्हें सोने न दें। उनको पूरा करने का प्रयास ही निश्चित रूप से आपको कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहेगा और एक दिन सफलता आपके कदम चूमेगी।

* * *

प्रशंसा

प्रशंसा के पुष्पों की सुगंध बेहद मोहक है। वे काम जो हमारे खजाने, सिफारिश तथा प्रभाव से नहीं हो पाते, प्रशंसा के दो शब्दों से सिद्ध हो जाते हैं। व्यक्ति के काम की प्रशंसा करने से वह प्रोत्साहित होता है, प्रसन्न होता है। उसे लगता है कि मुझे अच्छा कार्य करना चाहिए, ताकि सभी लोग मुझे सराहें। यह अच्छे नेतृत्व के लिए भी लाभदायक तत्त्व है। प्रत्येक अच्छे काम के लिए तारीफ करने तथा गलती को सुधारने के लिए प्रेरित करने से सदैव सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं।

* * *

प्रसन्नता

प्रसन्नता कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसका पीछा करने की जरूरत है। वह तो अवसर आने पर स्वयं ही आकर मन-मंदिर में हँसने लगती है। प्रसन्नता-प्राप्ति का मुख्य रहस्य यह है कि मनुष्य अपने लिए सुख की कामना छोड़कर अपना जीवन दूसरों की प्रसन्नता में नियोजित करे। दूसरों को प्रसन्न करने के प्रयत्न में जो कष्ट प्राप्त होता है, वह भी प्रसन्नता ही देता है। छोटा-मोटा कष्ट तो दूर, देशभक्त तथा अनेक परोपकारियों ने अपने प्राण देकर भी अनिर्वचनीय प्रसन्नता प्राप्त की है। इतिहास ऐसे बलिदानियों से भरा पड़ा है कि जिस समय उनको मृत्युवेदी पर प्राण-हरण के लिए लाया गया, उस समय उनके मुख पर जो आह्लाद, जो तेज, जो मुसकान और जो प्रसन्नता देखी गई, वह काल के अनंत पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

* * *

प्रसन्नता है तो जीवन है, जीवन का उजाला है। जीवन में जब भी विपदाओं के तूफान उठें, मन घबराए, हौसला पस्त होने लगे तो सहजता और प्रसन्नता का संतुलन बनाने का अभ्यास करें। सहजता और प्रसन्नता को धारण कर ऋषि-मुनि भी अजर-अमर हो गए। सिद्ध पुरुषों ने प्रसन्नता को एक समर्थ सिद्धि माना है।

* * *

फल

प्रत्येक विचार या कर्म का फल अवश्य मिलता है—अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। यही प्रकृति का नियम है। इसमें देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं। इसलिए अगर आप सफल होना चाहते हैं तो अच्छे विचार रखिए, सद्कर्म करिए और जरूरतमंदों की नि:स्वार्थ भाव से सहायता तथा सेवा करिए। मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों,

बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

* * *

बदलाव

अपने उद्देश्यों, अपने कार्यों और अपनी कमजोरियों की एक सूची तैयार कीजिए। थोड़े-थोड़े दिन बाद उनमें क्या बदलाव आया है, उसको परखते रहिए। थोड़े ही समय बाद आपको अपने व्यक्तित्व में एक सकारात्मक बदलाव आता दिखाई देगा।

* * *

मानव-जीवन की दिशा बदलने में कभी एक छोटी सी बात भी अद्भुत प्रभाव दे जाती है।

* * *

बरताव

बुरा बरताव करनेवाला कितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो, वह उसकी किस्मत खराब कर देता है। ऐसे बुरे बरताव से न जाने कितने ही लोगों ने दुर्दिन देखे हैं।

* * *

बाधाएँ

प्रतिभावान व्यक्ति की राह को बाधाएँ कुछ देर रोक तो सकती हैं, लेकिन सदैव के लिए उसे हतोत्साहित नहीं कर सकतीं।

* * *

बाधाएँ जंगली जानवर की तरह हैं, अगर आप उनके सामने आँख-में-आँख डालकर लड़ते रहेंगे और डरेंगे नहीं तो निश्चित ही आप विजय पा लेंगे। बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

* * *

हमारी अधिकतर बाधाएँ पिघल जाएँगी, अगर उनके सामने दुबकने की बजाय हम उनसे निडरतापूर्वक निपटने का मानस बनाएँ।

* * *

बिना विचारे काम

बिना विचारे काम करना जितना बुरा है, उतना ही बुरा उस पर बहुत समय तक विचार करते रहना है। विवेक के साथ फैसला करने की क्षमता का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अच्छे और बुरे का पता काम किए बिना कहाँ से चलेगा! जब तक कुछ करेंगे नहीं, तब तक क्या पता चलेगा कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है! हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहने से काम कैसे पूरा होगा? संसार कार्यक्षेत्र है, अकर्मण्य बनकर बैठने के लिए नहीं।

* * *

बुद्धिमत्ता

यदि आप हालात बदल सकते हों तो लड़ते रहना अच्छा होता है, लेकिन जब हालात पर बस न चले, तथ्यों में बदलाव की स्थिति न हो तो उन्हें स्वीकार कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। यह संपूर्ण स्वास्थ्य और ज्ञान की पूँजी है।

* * *

बेहतर काम

अभ्यास ही परिपूर्ण बनाता है। आप अपना काम जितने अच्छे तरीके से करेंगे, आप उसमें उतने ही कुशल होंगे और एक समय के बाद आपमें इतनी परिपूर्णता आ जाएगी कि जिस क्षेत्र में आप हैं, उसमें आपकी टक्कर का शायद ही कोई और होगा। जितने पैसे मिलते हैं, उससे ज्यादा और बेहतर काम करने से आपको बढ़ती आमदनी के नियम का फायदा मिलता है, जिसकी मदद से आगे चलकर आपको आपके काम से भी ज्यादा पैसा मिलने लग जाता है।

* * *

बेहतर प्रदर्शन

एक कदम आगे बढ़कर सही मानसिक वृत्ति से काम करनेवाले नौकरी खोजने में कभी समय नहीं गँवाते। वे नौकरी की तलाश में हाथ-पर-हाथ धरे बैठे नहीं रहते। निराशा आती है, जाती है, काम खराब हो या अच्छा, देश में शांति हो या युद्ध वे लोग वेतन से ज्यादा काम बेहतर प्रदर्शन के साथ करते रहते हैं, ताकि उनकी माँग हमेशा रहे, वे अपने लिए रोजगार सुनिश्चित कर लेते हैं।

* * *

भटकाव

आत्मनियंत्रण के अभाव में परिश्रम, योग्यता तथा शिक्षा-दीक्षा सब व्यर्थ चले जाते हैं। जिन लोगों का मन नियंत्रित नहीं है, वे गुमराह होकर भटकते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति आज को कल के लिए टालते रहते हैं और अंतत: अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं।

* * *

भय

भय को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वह हमारे सामने उसी संकट को ला खड़ा करता है, जिससे हम भयभीत रहते हैं। भय हमारी संकट-निरोधक शक्ति को क्षीण करता है, उसकी कमर तोड़ देता है। हमें जिस चिंतन की आवश्यकता है, वह उसकी शक्ति को कमजोर कर देता है।

* * *

भय स्वाभाविक रूप से हमारे मनन अथवा चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता।

* * *

मनुष्य का सबसे बड़ा और शक्तिशाली शत्रु है—भय। भय मनुष्य के मन से ही उत्पन्न होता है। भय एक ऐसा भयानक शत्रु है, जो मनुष्य की सभी शक्तियों को धूल में मिला देता है।

* * *

भरोसा

कामयाब होने के लिए आपको अपनी क्षमता पर इस कदर भरोसा होना चाहिए कि आप, जो एक बार सोच लें, उसे कर दिखाएँ। यही नहीं, आपको अपने अंदर अपने सहयोगियों पर विश्वास करने की आदत पैदा करनी होगी, फिर चाहे वे आपके अधिकारी हों या आप उनके अधिकारी हों।

* * *

सारी समस्याओं को हल करनेवाली कुंजी आपका अपना रवैया है। अपने आपमें विश्वास करने की आपकी मानसिकता या स्वयं में विश्वास की कमी अनेक विफलताओं का कारण बनती है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मविश्वास या स्वाभिमान घट जाता है। स्वयं को उन सभी धारणाओं से बाहर निकालें, जो आपको उस स्थिति में पहुँचा देती हैं, जहाँ आपका अपने ऊपर से भरोसा उठ जाता है। इस मन:स्थिति के चलते आप कोई कोशिश करने से पहले ही हार मान लेंगे। अत: आपके लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उन सभी विचारों को त्याग दें, जो आपको निरुत्साहित करते हैं। इसके बजाय दूसरी तरह से सोचें। अपने स्वाभिमान को आगे रखें। इससे आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

* * *

भाग्य

जो भाग्य के सहारे बैठ जाते हैं, उनका भाग्य भी उन्हीं के पास बैठ जाता है।

* * *

भाग्य परिवर्तन

अपनी इच्छा को पूरा होते देखने के लिए तथा अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए किन्हीं चमत्कारों की जरूरत नहीं होती। हमें जिन साधनों की आवश्यकता पड़ती है, वे सब या तो हममें हैं या हमारे आसपास मौजूद हैं। इन साधनों तथा उपायों को अमल में लाकर हम अपने जीवन तथा अपने भाग्य को बदल सकते हैं।

* * *

भाव-नियंत्रण

इनसान बने रहना वांछनीय है। आपके अनियंत्रित व्यवहार से उत्पन्न घटना को लोग बहुधा भूल जाएँगे, लेकिन यह जानना उचित है कि भावनाओं और चिढ़न को किस तरह नियंत्रण में रखा जा सकता है। यह समझने की कोशिश अवश्य करें कि आप उग्र क्यों हो जाते हैं, आपको गुस्सा क्यों आता है, ताकि आप इन हालात से निपट सकें। हँसी-मजाक का सहारा लें। इससे आपको कठिन स्थिति से निपटने और घटनाक्रम को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद मिलेगी।

* * *

भ्रम

व्यर्थ का भ्रम मत पालो। मन में सदैव आत्मविश्वास रखो। सफलता अवश्य प्राप्त होगी। भ्रम और अंधविश्वास व्यर्थ का भय उत्पन्न करके मनुष्य को कमजोर बना देता है।

* * *

मजबूत पक्ष

अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोष देना छोड़ें। हमारा अपना विलंब इसका कारण हो सकता है। जिस वक्त आप अपने काम के प्रति जवाबदेह हो जाते हैं, आप नेतृत्व की राह पर होते हैं। मजबूत पक्ष उभारें। अपने मजबूत पक्षों और क्षमताओं को जानें। अपने लक्ष्य बड़े बनाएँ। इसका नतीजा होगा कि आप उन्हें हासिल करने की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाएँगे और अपनी सीमाओं का विस्तार करेंगे।

* * *

मदद

आप किसी से मदद चाहते हैं तो यह गाँठ बाँध लें कि आपको उस व्यक्ति को पाना है, सही मायने में उसे उतना फायदा पहुँचाना है, जितना कि आप खुद उससे चाहते हैं। यदि वह पहली बार में ध्यान नहीं देता तो उसका दोगुना फायदा कराएँ और ऐसा तब तक करते जाएँ, जब तक कि शर्म से खुद न कह दे कि उसे अब और नहीं चाहिए और वह आपकी मदद न कर दे।

* * *

आप दूसरों का सहयोग तभी हासिल कर सकते हैं, जब पहले खुद उनका सहयोग करें। कई बार ऐसा हो सकता है और ऐसा होगा भी कि आप जिस व्यक्ति की मदद करें, वह कभी आपकी मदद न करे, लेकिन यह बात दिमाग में रखिए एक व्यक्ति इसे नजरअंदाज कर दे, लेकिन कोई और आपकी मदद पर गौर करेगा और न्याय करने की इच्छा से या शायद किसी स्वार्थवश, आपकी ऐसी मदद करेगा, जिसके आप हकदार हैं।

* * *

मनपसंद काम

अपना मनपसंद काम करने की हिम्मत करना थोड़ा डरावना और उत्तेजनापूर्ण कार्य है, लेकिन दृढविश्वास, सूझ-बूझ, थोड़े से प्रोत्साहन तथा भावनात्मक सहारा पाकर कोई भी सपना वास्तविकता में बदला जा सकता है।

* * *

मनुष्य

मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है, जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाए, तो जल्दी बिगड़ जाती है।

* * *

मनोवृत्ति

जीवन इतना जटिल है कि ऊर्जा अकसर फिजूल के कार्यों में बरबाद हो जाती है। यही वजह है कि जो लोग सफल होते हैं, वे ठोस प्रयास करते हैं और एकाग्रता के साथ कोशिश करने की आदत डाल लेते हैं। जीवन की आपात-स्थितियाँ प्राय: लोगों को सड़क पर ला देती हैं, जहाँ उन्हें मजबूरन अपना रास्ता चुनना होता है। एक सड़क पर आस्था और दूसरी सड़क पर भय चिह्नित किया हुआ रहता है। वह क्या चीज है, जो ज्यादातर लोगों को भय-मार्ग की ओर ले जाती है। इसका चुनाव व्यक्ति की मानसिक मनोवृत्ति पर निर्भर है।

* * *

महानता

महान् वही है जो न किसी का शासन मानता है और न किसी पर शासन करता है। महानता की आकांक्षा करने से आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है। वे जाग्रत् होती हैं।

* * *

मेहनत

आप मेहनत से घबराएँगे तो सफलता आपसे दूर चली जाएगी।

* * *

लोगों में आमतौर पर यह आदत होती है कि जितनी कम मेहनत से काम चल जाए, उतना ही काम करते हैं।

आप इन लोगों पर गौर करेंगे तो पाएँगे कि ये लोग कुछ समय के लिए तो अपना काम चला लेते हैं, लेकिन इसके सिवाय इन्हें और कुछ नहीं मिलता। जितना पाते हैं, उससे ज्यादा काम करने की वजह से आप अपनी ओर लोगों का ध्यान सकारात्मक तरीके से खींचते हैं और वह दिन दूर नहीं होता, जब आपको आपके काम के लिए आकर्षक मौके मिलने लगते हैं, आपकी सेवाओं की माँग लगातार बनी रहेगी।

* * *

योजना

आपका काम है कि आप जीवन में सफल हों। कैसे? इसका जवाब आपको खुद देना है, लेकिन मुख्य रूप से आपको इन रास्तों पर चलना है—एक निश्चित लक्ष्य को चुनें और उसके लिए एक निश्चित योजना बनाएँ। पहले कर्म और अपनी योजनाओं को अमल में लाना शुरू करें। अपनी पहले को अपने भरोसे और क्षमता के बल पर आगे बढ़ाते हुए अपनी योजना को सफलतापूर्वक पूरा करें।

* * *

उठो, अपने जीवन की योजना बनाओ, ताकि तुम्हारी सोई हुई महान् प्रतिभा और शक्ति, जो अब तक व्यर्थ पड़ी हुई हैं, जाग उठें।

* * *

रचना

कोई भी रचना परिश्रम और धैर्य माँगती है, जबकि विनाश के लिए न श्रम की आवश्यकता है, न धैर्य की।

* * *

रचनात्मकता

जीवन के विविध उद्देश्यों में जो लोग असफल रहे हैं, उनमें उन्हीं लोगों की अधिकता है, जिनका मन नकारात्मक भावों से भरा है और विजयी व्यक्तियों में वे लोग हैं, जो रचनात्मक तथा सकारात्मक शक्तियों से ओत-प्रोत हैं। उल्लास, उत्साह, कर्मठता, परिश्रम तथा साहस से युक्त मानसिक प्रवृत्तियाँ मनुष्य की सर्वाधिक सुरक्षापूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

* * *

लक्ष्य

लक्ष्य निश्चित किए बिना तीर छोड़ें तो किस पर छोड़ें? धनुष है, बाण है, हाथ है और परिश्रम करने की शक्ति है, परंतु यदि लक्ष्य नहीं है तो बाण चलाना निरा खेल है। लक्ष्य एवं दृढ मंतव्य के बिना जीवन क्रीड़ा मात्र है। नित नए मंतव्य बनाते जाओ तो कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। दो खरगोशों के पीछे दौड़ने से एक भी हाथ नहीं आता। जिस व्यक्ति के अनेक मंतव्य होते हैं, वह प्रत्येक कार्य में विचलित रहता है।

* * *

सेना चाहे जितनी बड़ी हो, फौज को इधर-उधर लिये फिरने, स्थान-स्थान पर प्रहार करने और शत्रु से जगह-जगह मुठभेड़ करने से किसी सेनापति को विजय प्राप्त नहीं हुई। इतिहास इसी सिद्धांत की पुष्टि करता है। सेनापति स्वयं युद्ध नहीं करता, उसकी दिव्यशक्ति और उसका एकाग्रचित्त मन अपने लक्ष्य बनाने में ही लगे रहते हैं।

* * *

वहम

अगर कोई यह समझता है कि खुशियाँ मेरे नसीब में हैं ही नहीं, प्यार मुझे मिलता ही नहीं या वह इस वहम का शिकार है कि हँसी में मेरा कोई हिस्सा नहीं, तो ऐसे व्यक्ति की तुलना उस किसान से की जा सकती है, जो इस आशंका में अपना खेत ही नहीं जोतता कि इस साल बारिश होगी ही नहीं और सूखा पड़ना तय है।

* * *

वाणी

बोलते समय अपनी आवाज पर संयम रखें। बहुत जोर से बोलना या बहुत धीमे बोलना व्यक्तित्व की कमजोरी माना जाता है। जब भी आप कोई बात कहना चाहें, मोहक सुर और संयत आवाज में कहें। याद रखें कि चिल्लाकर या बहुत ऊँची आवाज में बोलना इस बात की गारंटी नहीं है कि आपकी बात सुनी जा रही है। इसके अलावा, अगर आप इतना धीमे बोलते हैं कि लोगों को आपकी बात सुनने के लिए अपने कानों पर जोर देना पड़े तो जल्दी ही उनकी रुचि समाप्त हो जाती है।

* * *

हमारे व्यक्तित्व की छाप हमारी वाणी के माध्यम से औरों के मन-मस्तिष्क तथा हृदय-पटल पर अंकित हो जाती है। बहुधा प्रसन्नचित्त लोगों की वाणी दूसरों के जीवन का संबल बन जाती है। वाणी हमारे समूचे व्यक्तित्व तथा कृतित्व को तो अभिव्यक्त करती ही है, हमें अपनी अलग मौलिक पहचान भी प्रदान करती है। कटु वचनों की चोट किसी हथियार से भी अधिक घातक होती है। शस्त्र की चोट अथवा घाव तो थोड़े समय में भरा भी जा सकता है परंतु वाणी का प्रहार मनुष्य को सदैव सालता रहता है। कटु वचनों का इस्तेमाल वाणी का दुरुपयोग है।

* * *

वार्त्तालाप

वार्त्तालाप आरंभ करने और उसे आगे बढ़ाने की योग्यता एक गुण है, जो कुछ ही लोगों में जन्मजात होता है, लेकिन यह गुण कोई भी विकसित कर सकता है। कोई वार्त्तालाप आरंभ करने के लिए आपको पता होना चाहिए कि आपके आसपास क्या हो रहा है। सामयिक विषयों की अद्यतन जानकारी रखने से आप बहुत से विषयों पर बात कर सकते हैं और चर्चा में अधिकारपूर्वक भाग ले सकते हैं। कोई वार्त्तालाप आरंभ करने का सबसे अच्छा तरीका है, अच्छी तरह अभ्यास करना। शीशे के सामने अभ्यास करना अच्छा है।

* * *

विचार

आदर्श समय कुछ नहीं होता। यदि आपके पास कोई अच्छा विचार है तो उस पर आगे की योजना बनाने के लिए तत्पर रहें। जो भी काम करें, भरपूर आनंद के साथ करें। कई बार हम खुद को दयनीय बना देते हैं, यह सोचकर कि हम अच्छा काम नहीं कर रहे हैं। कन्फ्यूशियस ने कहा है, ''जहाँ भी जाएँ, पूरे दिल के साथ जाएँ। जितनी अधिक अंदरूनी खुशी होगी, उतना ही हम सफलता के लिए प्रेरित होंगे।''

* * *

जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसे ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है, अगर हम चाहें कि विचार के विपरीत हमारी शारीरिक स्थिति हो तो ऐसा होना बिल्कुल असंभव है।

* * *

जो पर्वत हमें दूर से बड़े-बड़े दिखाई देते हैं, जब हम पास पहुँचते हैं तो उनमें भी हमें अनेक मार्ग दृष्टिगत होने

लगते हैं और जब हम उस मार्ग से होकर जाते हैं तो हमें शंका होती है कि क्या यही मार्ग पर्वत पर था, जो दूर से इतना ऊँचा दिखाई दे रहा था। पर्वत की ऊँचाई जितनी थी, उतनी ही रही। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ, जो कुछ परिवर्तन हुआ, वह केवल हमारे विचार में हुआ। जब तक हम ऊँचाई से डरते रहे, हमें मार्ग काटना दुस्साध्य हो रहा था। परंतु जब हमने दृढ इच्छा कर ली तो वही मार्ग हमारे लिए सुगम हो गया और हम पर्वत के पार हो गए।

* * *

मजबूत विचारों से आत्मा की शुद्धि होती है, मन को एक नया उत्साह मिलता है।

* * *

यदि आप सुखी और समृद्धशाली होना चाहते हैं तो आपको सुख-समृद्धि के विचार पैदा करना चाहिए।

* * *

यदि विचारों में दृढता नहीं होगी तो कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

* * *

विचार ही हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वह उसी के अनुरूप भगवान् के अस्तित्व को भी देखेगा।

* * *

व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वैसे ही रूप में वह भगवान् के अस्तित्व को देखेगा, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

* * *

हम चेतन मन एवं विचारों से अपने अवचेतन विचारों, विश्वास एवं अनुभव को नियंत्रित कर सकते हैं। विचारों के निर्माता हम ही हैं, अत: हमें इन पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। मात्र विचार बदलने से ही जीवन नियंत्रण की प्रक्रिया की शुरुआत हो जाती है। यदि हम सोचने लगे कि हम स्वयं ही अपने भाग्य विधाता एवं निर्माता हैं, तो वास्तव में ऐसा होना प्रारंभ हो जाएगा। विश्वास से बड़ी कोई शक्ति नहीं है।

* * *

विचार की शक्ति

सफलता और विफलता के बीच उतना ही अंतर होता है, जितना सकारात्मक और नकारात्मक सोच के बीच अंतर होता है। एक जैसी चीजें एक-दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं। सफलता ही सफलता को सबसे जल्दी आकर्षित करती है। गरीबी से और ज्यादा गरीबी आती है। आप जैसे ही सफल होते हैं, पूरी दुनिया अपना खजाना आपके लिए खोल देती है तथा आपको और सफल बनाने में मदद करती है। आप गरीबी का संकेत दीजिए और दुनिया आपके पास, जो भी मूल्यवान चीज बची है, उसे हासिल करने के लिए आपके पीछे पड़ जाएगी। आप बैंक से भी तभी कर्ज ले सकते हैं, जब आप समृद्ध हैं और जब पैसों की जरूरत नहीं होती, लेकिन एक बार आप गरीबी के चंगुल में फँस गए हों या बदकिस्मती से किसी आफत में पड़े हों, तब कर्ज लेने की कोशिश कीजिए, अंतर आपकी समझ में आ जाएगा। आप अपनी नियति के मालिक खुद हैं, क्योंकि आपके नियंत्रण में वह शक्ति है, जो इनसान की नियति को बदलने की क्षमता रखती है, वह शक्ति है—विचार की शक्ति।

* * *

विचारधारा

जीवन अति प्यारा व सुंदर है। मनुष्य के मन में जब चिंता और निराशा उत्पन्न हो तो उसको अपनी विचारधारा को परिवर्तित कर दूसरी ओर लगाना चाहिए। साहस, आनंद और सफलता के संबंध में विचार करें। आशावादी और आत्मविश्वासी बनें।

* * *

विजेता

यदि आप अपने जीवन में हर बाजी जीतना चाहते हैं तो आपको एक विजेता जैसा मन बनाना होगा, विजेता जैसे आचार-विचार रखने होंगे।

* * *

विनम्रता

विनम्रता मानवजाति के सबसे मूल्यवान गुणों में से एक है। विनम्र होने में कुछ नहीं जाता और फिर इसे एक आदत में शुमार कर लिया जाए तथा ईमानदारी से पालन किया जाए तो अद्‌भुत लाभ मिलता है।

* * *

विनयशीलता

आप सफलता की सीढ़ी पर कितना ऊपर जा सकते हैं, यह बात बहुत सीमा तक आपके पर्सनैलिटी डेवलपमेंट पर निर्भर करती है। आपको विनम्रता और आत्मसम्मान के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है। विनम्रता का अभिप्राय यह है कि अपने बारे में आप बड़ी मामूली राय रखते हैं। इसका मतलब है कि दूसरे लोग कुछ मामलों में आपसे बेहतर हैं, लेकिन कुछ अन्य मामलों में आप बेहतर हो सकते हैं। विनम्रता को अकसर कमजोरी समझा जाता है, अर्थात् यह कि आप अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ सकते। विनयशीलता का अर्थ यह नहीं है कि आप खुद को कम समझें। अपने आपको बहुत तुच्छ समझना उतना ही गलत है, जितना खुद को बहुत कुछ समझना। आपको चाहिए कि आप स्वयं को वैसा ही देखें, जैसे आप वास्तव में हैं—अपनी क्षमताओं के साथ अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हुए। जिसे आप कमजोरी समझते हैं, वह आपकी ताकत भी बन सकती है। उसे केवल विकसित करने की जरूरत है। अपनी दुर्बलताओं से शरमाएँ नहीं। ईश्वर ने आपको दोनों चीजें दी हैं, आपके व्यक्तित्व में क्षमताएँ हैं, तो कमियाँ भी हैं और आप इन दोनों पहलुओं के आईने में ही अपना असली रूप देख सकते हैं।

* * *

विपत्ति

यदि बुद्‌धि अनुचित पथ पर न चले तो विपत्ति कहाँ से उत्पन्न हो सकती है!

* * *

विफलता

विफलता के सर्वाधिक आम कारणों में शामिल हैं—स्पष्ट लक्ष्य की कमी या तय लक्ष्य का अभाव जिसकी दिशा में प्रयास किया जाना है, पिछलग्गुओं से ऊपर उठने का लक्ष्य बनाने के हौसले में कमी, पर्याप्त शिक्षा की कमी, अनुशासन और चातुर्य की कमी, खराब स्वास्थ्य, जिसे उपचार से दुरुस्त किया जा सकता है, बचपन में चरित्र-निर्माण के दौरान मिला प्रतिकूल माहौल, जिसकी वजह से शरीर और दिमाग बुरी आदतों का शिकार होता है, टाल-

मटोल, लगन का अभाव और अपनी गलतियों की जिम्मेदारी लेने के हौसले में कमी, नकारात्मक व्यक्तित्व, बिना कुछ किए कुछ हासिल करने की अनियंत्रित इच्छा, जो अकसर जुआ खेलने जैसी आदत के तौर पर सामने आती है, निर्णय-क्षमता का अभाव, अति सावधानी, जिससे पहल और आत्मविश्वास खत्म हो जाता है, अंधविश्वास और भेदभाव, जो सामान्य नियमों की जानकारी के अभाव से पैदा होते हैं, गलत पेशे का चुनाव, ऊर्जा को गलत कार्यों में बरबाद करना, एकाग्रता न होना, मितव्ययिता का अभाव, उत्साह की कमी, असहिष्णुता, दूसरों के साथ सामंजस्य की भावना से सहयोग करने का अभाव के बाद भी ऐसी शक्ति मिल जाना, जो खुद कमाई न गई हो। जैसा कि विरासत में संपत्ति मिलने या किसी के द्वारा ऐसी जगह पर बिठा दिए जाने से हासिल होती है, जिसका वह अधिकारी नहीं, बेईमानी, अहंकार और घमंड, सोचने के बजाय अंदाजा लगाना।

* * *

विरोध

जितने भी आविष्कारक हुए हैं, उन्होंने जो आविष्कार किए हैं, उनके लिए उनके पास पर्याप्त सामग्री नहीं थी। साधारण वस्तुओं के प्रयोग से ही उन्होंने गंभीर सिद्धांत खोज निकाले। ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है, जिसके सार्वजनिक मनन के लिए उनको खोज निकालनेवाले को कष्ट, निंदा और विरोध न झेलना पड़ा हो।

* * *

विवेक और ज्ञान

आँखों पर पट्टी बाँधकर भागने से मार्ग तय नहीं होता। विवेक और ज्ञान की ज्योति के साथ अंधकारपूर्ण पथ पर भी उपलब्धियों के सुनहरे दीपक जगमगाए जा सकते हैं। विवेक और ज्ञान के साथ उद्यम करने से मार्ग में खड़ा पहाड़ भी हटाया जा सकता है या उसके ऊपर मार्ग निकाला जा सकता है। लेकिन उस पर्वत से सिर फोड़ने से कोई लाभ नहीं हो सकता, वहाँ मार्ग नहीं बन सकता।

* * *

विश्वास

विश्वास को जगाने की आवश्यकता होती है, यह विश्वास ही हमें हमारे लक्ष्य तक ले जाता है। हमारे पास दृष्टि ही नहीं होगी तो सृष्टि के खुलते हुए द्वारों को हम नहीं देख पाएँगे।

* * *

बिना विश्वास और आश्वासन के साहस नहीं हो सकता और आधी लड़ाई तो इसी धारणा में है कि हमने जो ठाना है, उसे कर सकते हैं।

विश्वास ही जिंदगी है और संदेह मौत। वे जीत गए, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वे जीतेंगे।

* * *

वैयक्तिक वार्त्तालाप

वैयक्तिक वार्त्तालाप से अनेक समस्याएँ सुलझ सकती हैं। खुद से बातचीत करें और अपने अंदर की आवाज सुनें। अपने आपको बताते रहें कि आप एक दमदार व्यक्ति हैं, आप उस व्यक्ति जैसे नहीं हैं, जो कष्टप्रद स्मृतियों के दलदल में फँसकर रह जाता है।

* * *

व्यक्तित्व

अपने व्यक्तित्व का विकास करने की असीम संभावनाएँ आपके अंदर हैं, बशर्ते कि आपका चरित्र मजबूत हो। तभी आप उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे और समझ सकेंगे। जो दौलत आपने कमाई है, वह महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्व इस बात का है कि उस धन-दौलत को अर्जित करने के लिए आपने किन उपायों को अपनाया है। आपके चरित्र को निर्धारित करने में आपका व्यक्तित्व, आपकी क्षमताएँ, आपके विचार और आपके आदर्श सभी बहुत महत्त्व रखते हैं।

* * *

आकर्षक व्यक्तित्व आमतौर पर उन लोगों में देखने को मिलता है, जो मृदुभाषी हैं और दयालुता से बात करते हुए ऐसे शब्द चुनते हैं, जो किसी को आहत नहीं करते, उनका लहजा भी विनम्र होता है। यही नहीं, वे कपड़े भी ऐसे चुनते हैं, जो सही स्टाइल के हों और रंगों में एक सामंजस्य हो। ऐसे लोग नि:स्वार्थ होने के साथ ही न सिर्फ आसानी से मान जाते हैं, बल्कि दूसरों की मदद भी करते हैं। वे अमीर-गरीब, राजनीति, धर्म या काम-धंधे का भेदभाव भी नहीं करते। ऐसे लोग दूसरों से सख्ती से बात नहीं करते, वजह हो या न हो, किसी भी विषय पर बहस के दौरान गाली-गलौज या घटिया बातें नहीं करते, चाहे बहस धर्म या राजनीति के मुद्दों पर ही क्यों न हो रही हो। ऐसे लोग अकसर लोगों में उनकी कमियों के साथ उनकी खूबियाँ भी देखते हैं, कमियों को नजरअंदाज कर देते हैं।

* * *

आकर्षक व्यक्तित्व हासिल करने के लिए आत्मसंयम की जरूरत होती है, क्योंकि अकसर ऐसी घटनाओं और लोगों से सामना होता है, जो आपके सब्र का इम्तहान लेते हैं और आपके संतुलन को बिगाड़ सकते हैं। इनसे बच निकलने के प्रयासों का नतीजा बेहतरीन होता है, क्योंकि एक आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी ज्यादातर लोगों के मुकाबले इतने रोब से खड़े नजर आते हैं कि उनकी आकर्षक खूबियाँ और भी निखरकर सामने आती हैं।

* * *

आपकी आवाज, उतार-चढ़ाव, लहजा, तीव्रता और इस्तेमाल की जानेवाली भाषा आपके व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं, क्योंकि उनसे आपकी पहचान बोलते ही हो जाती है कि आप शालीन हैं या नहीं। आप जिस तरीके से हाथ मिलाते हैं, वह भी आपके व्यक्तित्व का एक अहम हिस्सा होता है। अगर हाथ मिलाते समय आप ढीला-ढाला और मरी हुई मछली जैसा निर्जीव-सा हाथ आगे करते हैं तो आप ऐसा व्यक्तित्व पेश कर रहे हैं, जिसमें न उत्साह है, न पहल। कोई भी व्यक्ति एक आकर्षक व्यक्तित्व हासिल कर सकता है, ऐसे व्यक्ति जीवन में संघर्ष के काँटों के बीच से अपना रास्ता बातचीत के जरिए निकालने के लिए कृतसंकल्प होते हैं, ताकि दूसरों के साथ शांति से रह सकें।

* * *

ईश्वर किसी को भी बिल्कुल एक जैसा नहीं बनाता है। हर व्यक्ति अलग एवं अनूठा होता है। उसके गुण और योग्यताएँ किसी भी दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती हैं। आप इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि आपके जैसा कोई नहीं है। जरूरत इस बात की है कि आप अपने व्यक्तित्व और अपनी क्षमताओं को विकसित करें और पता लगाएँ कि जीवन के विशाल गोरखधंधों में आप कहाँ खड़े हैं। आपका व्यक्तित्व चाहे जो हो, आप उपयोगी हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप अपनी क्षमताओं का विकास करें, क्योंकि आपको पूर्ण बनाने के लिए ईश्वर आपके साथ काम करता है। सृष्टिकर्ता के बारे में आपकी धारणा से यह निश्चित होता है कि आप किस तरह उसकी सेवा करते हैं। अगर आपकी धारणा में खोट है तो आप कहीं के नहीं रहेंगे।

* * *

एक सफल व्यक्तित्व वह आकर्षक व्यक्तित्व होता है, जो किसी से दुश्मनी मोल नहीं लेता। व्यक्तित्व को एक शब्द में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। यह तमाम गुणों, भावों, विशेषताओं, रूपों इत्यादि का एक मिला-जुला रूप होता है, जो आपको दुनिया के दूसरे लोगों से अलग करता है। आपके कपड़े आपके व्यक्तित्व का अहम हिस्सा हैं, जिस प्रकार के कपड़े आप पहनते हैं, रंगों का सामंजस्य, जो आपके कपड़ों में दिखता है, उसकी गुणवत्ता और उसके अलावा कई बातें, जो आपकी अंदरूनी विशेषताएँ हैं, वे बताती हैं कि आपका व्यक्तित्व कैसा है।

* * *

एक आकर्षक व्यक्तित्व से हर कोई प्रभावित होता है और दूसरों को प्रभावित किए बिना आप आज के इस प्रतियोगी संसार में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए व्यक्तित्व विकास का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है। एक अच्छा व्यक्तित्व रखनेवाला व्यक्ति अधिक विश्वास के साथ कठिनाइयों को पार कर सकता है। बहुत से लोग अभी तक यह सोचते हैं कि व्यक्तित्व का संबंध व्यक्ति के शारीरिक बनाव-ठनाव से है। अगर कोई व्यक्ति तंदुरुस्त हो और बढ़िया कपड़े पहने हुए हो तो कहा जाता है कि उस पुरुष-महिला का व्यक्तित्व बढ़िया है, लेकिन यह कोई विवेकपूर्ण दृष्टिकोण नहीं है। यदि व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व कमजोर हो तो उसके बोलने या उसके व्यवहार से जल्दी ही उसकी असलियत खुल जाएगी। ऐसा व्यक्ति दूसरों पर कोई अमिट छाप नहीं छोड़ सकता। जीविका की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ना बहुत कठिन कार्य हो जाता है। अत: किसी भी व्यक्ति को अंदरूनी और बाहरी दोनों व्यक्तित्वों को सुदृढ किया जाना चाहिए।

* * *

सद्व्यवहार और सहयोग व्यक्ति को लोकप्रिय बनाता है। इसके फलस्वरूप उसकी उन्नति एवं सफलता की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। साथ ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व चरित्र की ठोस बुनियाद पर आधारित होना चाहिए।

* * *

शक्ति

विकेंद्रण से हम मानसिक स्तर पर कई भागों में बँट जाते हैं, जब स्वाभाविक रूप से हमारी शक्ति विकेंद्रित हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि कई दिशाओं में शक्ति बँट जाने से उसके परिणाम भी बँटे हुए रूप में मिलते हैं। इसलिए जिस भी कार्य को हम करें, उसमें अपनी शत प्रतिशत शक्ति इस्तेमाल करने का हुनर आना चाहिए।

* * *

शक्ति व्यवस्थित ज्ञान से पैदा होती है, लेकिन यह समझ लें कि इसके प्रयोग और इस्तेमाल से यह अंतस् में विकसित होती है! कोई बिना किसी शक्ति के रहते भी ज्ञान का चलता-फिरता सार-संग्रह बन सकता है। यह ज्ञान उस हद तक ही शक्ति बनता है, जहाँ तक इसे व्यवस्थित, वर्गीकृत और कार्य करने में प्रयुक्त किया जाता है। कुछ बेहतरीन शिक्षित लोग उन लोगों से भी कम सामान्य ज्ञान रखते हैं, जिन्हें मूर्ख कहा जाता है, लेकिन इन दोनों के बीच अंतर यह होता है कि पहले ने जो भी ज्ञान उनके पास था, उसका इस्तेमाल किया, जबकि दूसरे ने ऐसा किया ही नहीं।

* * *

शक्तिशाली

दूसरों को कष्ट न देकर उन्हें कष्टों से मुक्ति दिलाना ही व्यक्ति के शक्तिशाली होने का प्रमाण है।

* * *

शत्रु

अशांति व क्रोध हमारे जीवन के सबसे बड़े शत्रु हैं। बहुत से लोगों को अपनी भूलों का जब एहसास होता है तो हृदय में माफी माँगने की भावना उठती है, लेकिन वे अपनी बात नहीं कह पाते। ध्यान रखिए, जब तक गलती मानने के पीछे सच्ची भावना नहीं होगी, तब तक उसका समुचित असर भी पैदा नहीं होगा। औपचारिकतावश सॉरी कह देने भर से काम नहीं चलता। हमारा रोम-रोम इस बात को कहते हुए प्रतीत होना चाहिए कि वास्तव में हम संबंधित बात के प्रति शर्मिंदा हैं। अत: सॉरी कहने से पहले अपना मन पक्का कर लें। जाँच-परख लें कि आपका मन और वचन एकाकार हैं भी या नहीं?

* * *

शत्रु का प्रहार

शत्रु-स्वरूप आरसी में हमें हमारी न्यूनता, हीनता, भ्रम, व्यर्थ व्यय इत्यादि दोष यथार्थ रूप में दिखाई देने लगते हैं, बल्कि जितने हममें दोष होते है, उनसे भी बढ़कर वह हमें दिखाता है। शत्रु का प्रहार क्या है, मानो किसी डॉक्टर का नश्तर है। जैसे डॉक्टर का नश्तर हमारे शरीर के फोड़े को चीरकर उसकी जड़ तक का मवाद निकालकर उसे स्वच्छ कर देता है, उसी प्रकार शत्रु का प्रहार हमारी बुराइयों और अशक्तियों को चीरकर स्वच्छ कर देता है।

* * *

शिक्षित

एक शिक्षित व्यक्ति वह है, जो यह जानता है कि अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को हासिल करने के लिए जिन चीजों की जरूरत है, उसे कैसे हासिल किया जाए और ऐसा करते हुए दूसरे के अधिकारों का हनन भी न हो। यह कई लोगों को आश्चर्यचकित कर सकता है कि कई तथाकथित जाने-माने विद्वान् उस योग्यता के पास भी नहीं भटकते, जो शिक्षित कहे जाने के लिए जरूरी है। यह भी कई लोगों को अपार अचरज में डाल सकता है, जो यह सोचते हैं कि उनमें विद्वत्ता की कमी है, जिससे वे खुद को शिक्षित कह सकें।

* * *

श्रोतापन

सुनना एक बड़ी कला है और किसी महान् वार्त्ताकार अर्थात् वार्त्ता-कुशल व्यक्ति के लिए यह एक अनिवार्य साधन है। हालाँकि यह कुछ विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है, अधिकतर लोग अनुभव करते हैं कि अच्छे श्रोता अच्छे बातूनी भी होते हैं। आपको बीच-बीच में सिर हिलाकर यह जताना और सूचित करना चाहिए कि आप वास्तव में सुन रहे हैं। बातचीत के दौरान कुछ उद्देश्यपरक प्रश्न पूछकर भी आप अपनी दिलचस्पी जाहिर कर सकते हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

* * *

संकेत

तात्कालिक पराजय या विफलता कुदरत के प्रतीक हैं, जिनके जरिए वह इशारा कर देती है कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। हम जरा भी होशियार हैं तो इन इशारों पर ध्यान देते हैं, एक नया रास्ता चुनते हैं और अंतत: तय

किए गए अपने मुख्य लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

* * *

संगठित प्रयास

शक्ति का आधार संगठित प्रयास या ऊर्जा है। शरीर और दिमाग को एक समय में किसी एक काम में लगाए बिना ऊर्जा को संगठित नहीं किया जा सकता। एक सामान्य आवर्धक लेंस के इस्तेमाल से सूरज की किरणें एक बोर्ड पर केंद्रित होते ही कुछ ही मिनट में एक छिद्र बना देती हैं। वही किरणें अगर केंद्रित न हों तो बोर्ड में जरा सी गरमी भी पैदा नहीं होगी। इनसान का दिमाग भी काफी हद तक आवर्धक लेंस के जैसा है, क्योंकि जिस प्रकार लेंस सूरज की किरणों को एक स्थान पर केंद्रित करता है, उसी तरह दिमाग भी अपने अंदर के तत्त्वों को इकट्ठा कर किसी कार्य को एकजुटता से करने के लिए प्रेरित करता है।

* * *

संघर्ष

अचानक अथवा बिना परिश्रम किए मिलनेवाली विजय कोई महत्त्व नहीं रखती। हम उसका मूल्य नहीं जान पाते। जबकि वह विजय आनंददायक होती है, जो खूब लड़ने से प्राप्त होती है। मनुष्य की बल-वृद्धि इच्छाशक्ति के उस संघर्ष का फल है, जिसमें कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ता है। हम इसे प्रयत्न भी कह सकते हैं।

* * *

संतुलन

बहुत से लोग हैं, जिन्हें हम महान् समझते हैं, लेकिन उन्हें भी भीषण समस्याओं को पार करना पड़ा था। हर कोई उचित आत्मसम्मान की इच्छा रखता है। आपको दूसरों की अपेक्षा खुद को श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए, बल्कि अपनी क्षमताओं में विश्वास रखना चाहिए। आत्मविश्वास में कमी आपको रोके रखेगी और कठिन कार्य नहीं करने देगी। अति-विश्वास आपको पर्याप्त तैयारियाँ करने से पहले ही परिस्थितियों से जूझने की ओर धकेल देगा। विनयशीलता और आत्मविश्वास के बीच संतुलन आपको पूर्णता प्रदान करता है।

* * *

संदेह

जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। संदेह स्वाभाविक रूप से हमारे मनन और चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। संदेह एक तरह का अविश्वास है, जो हमें दूसरे लोगों से तोड़ने का कार्य करता है।

* * *

जिस समय हमारे मन में संदेह पैदा होता है, उस समय हमसे कोई रचनात्मक कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सकता। हमें चाहिए कि हम संदेह को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वह हमारे सामने उसी संकट को ला खड़ा करता है, जिससे हम भयभीत रहते हैं। संदेह हमारी संकट-निरोध-शक्ति को क्षीण करता है। हमारे आत्मविश्वास और कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए हमें जिस चिंतन की आवश्यकता होती है, उसको भी कमजोर करने का कार्य करता है।

* * *

जो व्यक्ति अपनी योग्यता पर संदेह करता है, वह न किसी अन्य का भला कर सकता है और न ही स्वयं को लाभ पहुँचा सकता है।

* * *

संदेह और संशय हमारी कामयाबी के मार्ग के अवरोधक हैं। यह हमारे मन में एक प्रकार की अप्रत्यक्ष चिंता को जन्म देता है, फलत: हमारा अचेतन मन उस कार्य विशेष को करने के प्रति अपेक्षित आदेश ग्रहण नहीं कर पाता। अनमने मन से जब हम किसी कार्य को करते हैं तो वह कभी भी ठीक नहीं होता। व्यावहारिक रूप से जिस व्यक्ति के सामने हमारा वह कार्य प्रस्तुत होता है, वह हमारी योग्यता को उतनी ही सीमा-रेखा के अंतर्गत मापकर देखता है। हमें ध्यान रखना चाहिए कि जीवन और कार्यक्षेत्र की चुनौतियों के बीच बहानेबाजी के लिए कोई गुंजाइश कभी भी नहीं होती।

* * *

हम दिन भर जो सोचते हैं और करते हैं, वही निर्बाध रूप से हमारे भविष्य को शक्ल दे रहा होता है। वास्तव में सच्ची उपलब्धि न तो संग्रह में है, न प्राप्ति में, अपितु सृजनशीलता में है। सृजनशीलता संदेह के साथ कभी भी नहीं हो सकती। बहुत बार अनावश्यक सोच-विचार एवं संदेह करते रहने से स्वास्थ्य और भी बिगड़ जाता है। संदेह से भरा व्यक्ति जब कभी बीमारी के क्षणों में होता है तो काल्पनिक संकटों एवं पलायनवादी प्रवृत्ति से केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली प्रभावित होती है। चूँकि बीमार व्यक्ति लेटे रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकता, अत: इस तरह की सोच से तनाव पैदा होता है, उससे स्वास्थ्य को भयंकर हानि पहुँचती है।

* * *

संभव

कुछ भी किया जा सकता है। सबकुछ संभव है। जब आप यह विश्वास कर लेंगे कि हर समस्या का समाधान संभव है, तो आपका दिमाग समाधान खोजने में लग जाता है और आप समाधान पा लेते हैं। मस्तिष्क को पुरानी, पुरातनवादी सोच से बाहर निकालकर सदैव नई सोच एवं विचारों को ग्रहण करनेवाला बनाएँ। सदा नए प्रयोग करने के लिए तैयार रहें। अपने प्रत्येक कार्य में प्रगतिशील रहें।

* * *

सकारात्मक विचार

जिन लोगों ने अपने जीवन में कामयाब होने का ख्वाब देखा है, उन्हें यह बात निश्चित कर लेनी चाहिए कि सकारात्मक विचारों के पंख लगाकर ही वे सफलता के स्वच्छंद गगन में उड़ान भर सकते हैं। नकारात्मक विचारों से अपना दामन छुड़ाए बिना हम सफलता की मंजिल तक नहीं पहुँच सकते। दूषित व बुरे विचार हमारी कार्यक्षमता को तो प्रभावित करते ही हैं। नकारात्मक विचार उत्साह व आत्मविश्वास को घटाते हैं।

* * *

भय, चिंता और परेशानी जैसे नकारात्मक विचार न सिर्फ पाचन क्रिया के लिए आवश्यक रसों के प्रवाह को रोकते हैं, बल्कि वे शरीर के विभिन्न अंगों तक ऊर्जा ले जानेवाली तंत्रिका लाइन में भी गाँठ बाँध देते हैं। सकारात्मक विचार ऐसी गाँठों को खोल देते हैं और तंत्रिका ऊर्जा को प्रवाहित होने देते हैं।

* * *

सकारात्मक व्यवहार

जो भी व्यक्ति विजेता बनना या अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सकारात्मक प्रवृत्तिवाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपनी सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

* * *

सकारात्मक विचारों पर अडिग रहने का मतलब है—आधी जंग जीत लेना। सकारात्मक विचारों को अपनाकर ही सफलता और असफलता के बीच के अंतर को पाटा जा सकता है। जरूरी नहीं है कि हर परिस्थितियों में सफलता ही मिले। लेकिन हर परिस्थिति से कुछ-न-कुछ लाभ तो लिया ही जा सकता है। सकारात्मक व्यवहार हमें सभी तरह की परिस्थितियों से वास्तविक मूल्यांकन की क्षमता प्रदान करता है।

* * *

सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच एक विशाल वैयक्तिक गुण है और सफलता की कुंजी है। प्रत्येक स्थिति में सकारात्मक पक्ष को देखने की मानसिकता बनाएँ। अगर आप यह सीख लें तो आपके लिए यह सबसे अच्छी बात होगी। सकारात्मक मनोवृत्ति जीवन के दैनिक क्रिया-कलापों को अधिक आसानी से सँभालने में सहायक होती है। यह आपके जीवन में आशावाद को जन्म देती है और आपके लिए चिंता तथा नकारात्मक सोच से बचकर चलना अधिक आसान बना देती है। अगर आप इसे एक जीवन-शैली के रूप में अपना लेते हैं तो यह आपके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाती है और लोगों को अधिक खुशहाल, अधिक समझदार और अधिक सफल बनाती है।

* * *

सक्रियता

व्यक्ति कोई भी प्रयत्न करता है, उसका सुपरिणाम चाहता है, सफलता चाहता है। जिस प्रयत्न का कोई परिणाम न आए, जिस पुरुषार्थ का कोई फल न हो, उसके प्रति हमारे मन में बहुत आकांक्षा और जिज्ञासा नहीं जागती। लेकिन बिना सक्रियता के कुछ नहीं हो सकता। हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहें तो क्या मिलेगा? हमारी सफलता इस बात में है कि हम सावधान रहकर, जो भी काम हमारे हाथ में हो, उसे अच्छी तरह पूरा करें।

* * *

सपना

एक सपना हमारे अंदर काफी कुछ परिवर्तन ला देता है। यह हमें नए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

* * *

सफलता

अपनी सफलता को भाग्य, भ्रष्टाचार व धन की कमी जैसे कुंठित विचार लाकर अवसर को मत टालिए। जुट जाएँ सफलता पाने की चेष्टा में। इस प्रकार आप आत्मसम्मान से इस समाज में जी सकते हैं। इस प्रकार जुट जाइए संपूर्ण शक्ति के साथ और पहनाएँ अपनी मेहनत को सफलता का जामा।

* * *

संसार में सबसे बड़ा कार्य, जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम जहाँ भी और जैसी भी अवस्था में हैं, वहाँ

हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहिए। जो भी हम अच्छे-से-अच्छा कर सकते हैं, उसे अधिकाधिक मात्रा में और उत्तम प्रकार से सभी के सम्मुख प्रकट करना चाहिए, इसी का नाम सफलता है।

* * *

संसार में सबसे बड़ी बात, जो मनुष्य कर सकता है, वह यह है कि जैसी भी व्यवस्था में वह रखा गया है और जैसी भी सामग्री उसके पास है, उसे अधिक-से-अधिक मात्रा में और उत्तम-से-उत्तम प्रकार से काम में लाए। इसी का नाम सफलता है।

* * *

सफलता उन व्यक्तियों के पास नहीं आती, जो इंतजार करते हैं और यह अपने पास आने के लिए किसी का इंतजार भी नहीं करती है। अधिकतर सफल व्यक्तियों ने कुछ नए गुणों या उन्हें प्राप्त अवसरों द्वारा ही अपने गंतव्य को प्राप्त नहीं किया है। उन्होंने तो अपने हाथ में आए अवसरों का विकास किया है। असफलता और सफलता के बीच अंतर बस इतना है, जैसे कोई काम लगभग सही करना तथा बिल्कुल सही प्रकार से करना।

* * *

सफलता पाने का कोई गुप्त तरीका नहीं है, बल्कि सफलता का रास्ता तो किसी भी व्यक्ति के लिए खुला है, जिसका एक लक्ष्य है और जो सभी सफल लोगों में सामान्यत: देखी गई विशेषताओं अर्थात् उनकी विचार-शैली, मनोवृत्ति एवं व्यवहार को अपने में ढालता है।

* * *

सबक

कभी छोटी-मोटी हार से न डरें, बस यह तय कर लें कि हर हार से सबक सीख लिया जाए। जिसे हम अनुभव कहते हैं, उसमें काफी हद तक वे बातें शामिल होती हैं, जिन्हें हमने गलतियों से सीखा है। वे गलतियाँ हमारी अपनी होती हैं और दूसरों की भी, लेकिन इन गलतियों से सीखे गए सबक को कभी नजरअंदाज न करें।

* * *

समय का अस्तित्व

जीवन में घड़ी का इस्तेमाल मत कीजिए। जो व्यक्ति घड़ी देखते रहते हैं, उन्हें समय की लत पड़ जाती है। परंतु जो लोग किसी लक्ष्य अथवा कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, उनके लिए समय का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। ऐसा करके आप अपनी आंतरिक लयों के साथ जीवन बिताने का अभ्यास कर लेते हैं। फलस्वरूप अपने आसपास के लोगों के साथ ही समन्वय स्थापित करने में सुगमता रहती है।

* * *

समय प्रबंधन

समय को संचित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे अमीर हो या गरीब, समय एक ही तरह से व्यतीत करता है। समय न तो धनी व्यक्ति के लिए तेज गति से चलता है और न ही गरीब के लिए अपनी गति धीमी करता है। समय प्रबंधन समय का समझदारी से उपयोग करने के समान है। समय प्रबंधन में प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। अगर आप अपने प्रत्येक लक्ष्य के लिए समय का एक हिस्सा निर्धारित करते हैं और उसका समझदारी से हिसाब रखते हैं, तो आप न केवल अपने लक्ष्यों को पूरा कर लेंगे, बल्कि आराम के लिए कुछ समय बचा भी लेंगे।

* * *

समाधान

सृजनशीलता का अर्थ है—अपनी बौद्धिक क्षमताओं, अनुभूतियों का उपयोग करना और पुरानी समस्याओं के नए समाधान प्रस्तुत करना, कार्यों को नए ढंग से कराना या सामान्य घटनाक्रम के प्रति एक पूर्णतया भिन्न दृष्टिकोण अपनाना। अत्यधिक सफल व्यक्ति सदैव रचनात्मक चिंतन द्वारा अपने परिवेश की उन जरूरतों को पूरा करने का हल तलाशते हैं, जिनका उन्हें एहसास होता है।

* * *

सवाल

रोजाना खुद से यह सवाल करें कि कैसे आप और बेहतर तरीके से कार्य कर सकते हैं। कैसे आप और अधिक कार्य कर सकते हैं। लोगों से सदैव प्रश्न पूछें व उन्हें धैर्यपूर्वक सुनें। पूछने व सुनने की आदत से आपको वे जानकारियाँ मिलेंगी, जिनके द्वारा आप सदैव उचित निर्णय ले सकेंगे।

* * *

सहयोग

अप्रिय व्यक्तित्व वाले इनसान के साथ कोई सहयोग नहीं करना चाहता। जो उत्साही नहीं या जिसमें संयम की कमी है, उसके साथ भी कोई सहयोग नहीं करना चाहता।

* * *

सहयोग-भाव

दूसरों को उनके उद्देश्य हासिल करने में सहायता करें। अधीनस्थों को अपनी भूमिकाएँ निभाने के लिए सही स्पेस और अधिकार दें। खुद तक सीमित न रहें। गलतियों को तर्कपूर्ण तरीके से सोचना और स्वीकार करना बड़ा अंतर लाता है। गलतियों पर भावुक प्रतिक्रिया हमारे निर्णयों को बदल देती है और अपराधबोध पैदा करती है।

* * *

सहिष्णुता

बगैर सहिष्णुता को अपनाए किसी भी व्यक्ति के लिए सटीक सोच के सिद्धांत को अपनाना नामुमकिन होता है, क्योंकि असहिष्णुता के प्रभाव में आकर इनसान ज्ञान की किताब बंद कर देता है और इसके ऊपरी पन्ने पर लिखता है, समझो पढ़ लिया, क्योंकि मैं सब जानता हूँ!

* * *

व्यक्ति का सहिष्णु होना जरूरी है, क्योंकि सहिष्णुता इनसान को सही तरीके से सोचना सिखाती है और तथ्यों की ओर ले जाती है, जिनसे उसके अंदर सटीक सोच की क्षमता पैदा होती है। जिन लोगों का दिमाग असहिष्णुता की वजह से भ्रष्ट हो चुका है, वे चाहे किसी भी प्रकार और प्रकृति के क्यों न हों, कभी भी सटीक विचारक नहीं बन सकते हैं, जबकि सटीक सोच से ही हम असहिष्णुता पर काबू पा सकते हैं।

* * *

सहिष्णु होने का मौका मिलना आपके लिए एक सौभाग्य है। आपको सहिष्णु होने के लिए किसी से इजाजत की जरूरत नहीं, यह ऐसी चीज है, जो आपके दिमाग में आती है और आप इस पर फैसला कर सकते हैं, यानी यह आपकी ही जिम्मेदारी बनती है।

* * *

सही शिक्षा

सही शिक्षा का मतलब है दिमाग का विकास, न कि सिर्फ ज्ञान का संग्रह और उसका वर्गीकरण। शिक्षा में वह शक्ति होती है, जो किसी की हर जरूरत को पूरा कर सके, बिना दूसरों के अधिकारों में दखल दिए। शिक्षा का मतलब है करना, न कि सिर्फ जानना।

* * *

सात्त्विकता

जिस व्यक्ति को सफलता प्राप्त करनी है और अपने व्यक्तित्व का विकास करना है, उसे चाहिए कि वह शुभ विचारों तथा सात्त्विकता को अपने जीवन में आश्रय दे, क्योंकि इससे पवित्रता का संचार होता है। पवित्रता में देवों का वास है और जहाँ दैवी आभा विद्यमान है, वहाँ उन्नति एवं विकास के रास्ते स्वत: ही खुलते चले जाते हैं।

* * *

सामान्य-बोध

अत्यधिक सफल लोगों में सामान्य बोध होता है कि उन्हें कब और क्या करना है। वे अपने दैनिक क्रिया-कलापों एवं संबंधों में हमेशा सामान्य समझदारी का प्रयोग करते हैं। यह ज्ञान मुख्यत: अनुभव और दैनिक क्रियाकलापों से प्राप्त होता है। सफल व्यक्ति जीवन से ही सीखते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें कुछ अधिक मेहनत करनी पड़े, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि वास्तविक ज्ञान उन घटनाओं को समझने में है, जो उनके आसपास घट रही हैं और उसके साथ ही यह समझ भी होनी चाहिए कि उनसे किस तरह सही ढंग से निपटा जाए।

* * *

साहसी मनुष्य

जिस तरफ रास्ता दिखलाई देता है, उधर ही जाने की इच्छा होती है। जहाँ मार्ग दृष्टिगत नहीं होता, वहाँ जाने के लिए विचार भी नहीं होता। यह व्यवहार साधारण इच्छा रखनेवाले व्यक्ति के लिए है, परंतु इच्छुक और साहसी मनुष्य इस सामान्य नियम को बदल देते हैं।

* * *

सुअवसर

ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में ऐसा एक सुअवसर जरूर देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। सवाल केवल इतना है कि कौन कितनी सूझबूझ और मेहनत से उस मौके का फायदा उठा पाता है।

* * *

कमजोर व्यक्ति सुअवसरों का इंतजार करते रहते हैं, निर्भीक व्यक्ति इन्हें बनाते हैं।

* * *

सुख

बबूल के पौधे लगाने से उनपर कभी भी आम नहीं लग सकते। दूसरों के सुख की हम चिंता करें तो अपने आप ही हमें सुख मिलेगा। इस संसार में हम जो भी दूसरों को देते हैं, वही हमें वापस मिलता है, कई बार कई गुना अधिक मात्रा में।

* * *

सुविचार

जिनका मन उत्साहपूर्ण, स्फूर्तिदायक, आध्यात्मिक विचारों से परिपूर्ण रहता है, वे सदा युवा रहकर दीर्घायु को प्राप्त होते हैं।

* * *

सुव्यवहार

हमारे मुँह से वह बात कभी निकलनी नहीं चाहिए, जिसके बारे में हमने कभी थोड़ा-बहुत विचार न किया हो। हमारे बहुत से कार्य हमारे व्यवहार में शामिल बहुत सी खामियों की वजह से पूरे नहीं हो पाते। व्यवहार में शालीनता, दूसरों के प्रति विनम्रता तथा अपनी समझ को विकसित करके हम अपनी सोच को बदल सकते हैं, जिससे निश्चित ही सकारात्मक परिणाम आते हैं। व्यवहारजन्य सोच को परिवर्तित करने में सहायक हैं—दूसरों के प्रति प्रेमपूर्ण रवैया, अपनी वाणी और व्यवहार को नियंत्रित रखना, आदर एवं सम्मान की भावना का विकास, प्रत्येक व्यक्ति के मानवीय गुणों की कद्र इत्यादि।

* * *

सूत्र

जीवन एक वरदान है, इसका महत्त्व जानिए। एक कमजोर व रोते-पीटते इनसान के बजाय जिंदादिल व बहादुर व्यक्ति के रूप में जिंदा रहिए। यही सुख-सफलता का सूत्र है।

* * *

सोच

अगर लोग अपने जीवन की महान् ऊँचाइयों को हासिल करते हैं या गुमनामी के अँधेरे में खो जाते हैं तो यह उनकी सोच की वजह से होता है, जिसे वे अपने दिमाग पर हावी होने देते हैं।

* * *

आज तमाम सफल लोग जिस जगह पर हैं, वे वहाँ दृढसंकल्प की वजह से हैं, उतनी ही पक्की सोच की वजह से जितना पक्का है दिन के बाद रात का होना। आप अपने पैसों को या प्यार और दोस्ती को पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन विचार एक ऐसी चीज है, जिसे आप पूरी तरह काबू में कर सकते हैं। इस दुनिया में आने पर भी आपका काबू नहीं था और न ही इस दुनिया से जाने पर आपका कोई नियंत्रण होगा, लेकिन आप अपनी मनोदशा को पूरी तरह नियंत्रित कर सकते हैं। आप उस दिमाग को बाहरी प्रभावों की वजह से या तो सकारात्मक सोचवाला बना सकते हैं या नकारात्मक। दैवी शक्ति ने आपको अपने दिमाग पर पूर्ण नियंत्रण की ताकत दी है और नियंत्रण के साथ यह जिम्मेदारी दी है कि आप इसका सर्वोत्तम इस्तेमाल कर सकें।

* * *

आप जो कुछ भी हासिल करना चाहते हैं, उसे प्राप्त करने की दिशा में अगर आप अपनी सोच नहीं बदलेंगे तो अपने व्यवसाय में कितना भी प्रशिक्षण प्राप्त करने के बावजूद आपको वे परिणाम नहीं मिलेंगे, जो आप चाहते हैं। आपको अगर ज्यादा धन चाहिए, एक अच्छा घर चाहिए, परिवार के लिए बेहतर सुविधाएँ चाहिए, एक बेहतर कार चाहिए, परिवार और मित्रों के साथ आप अपने संबंध अधिक अच्छे बनाने की चाहत रखते हैं—वास्तव में आप जो कुछ भी पाना चाहते हैं, उसके लिए आपको अपनी सोच भी वैसी ही बनानी पड़ेगी।

* * *

आपके पास जो कुछ है, अच्छा या बुरा या आप जो कुछ हासिल करनेवाले हैं, उसके पीछे आपकी सोच होती है। सकारात्मक सोच से सकारात्मक इच्छावाली वस्तुएँ हासिल होती हैं, नकारात्मक सोच से गरीबी और बदहाली समेत कई अनचाही वस्तुएँ हासिल होती हैं। आपका दिमाग वह चुंबक है, जिससे आपके पास मौजूद चीजें चिपक जाती हैं और यह अच्छी तरह जान लीजिए कि आपका दिमाग कभी सफलता को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता, यदि आप गरीबी और असफलता के बारे में सोच रहे हैं।

* * *

इनसान की सोच उसकी शख्सियत का आईना होती है। जैसी सोच वह मन में रखेगा वैसे ही भाव उसके चेहरे पर उभर आते हैं।

* * *

कोई भी परिस्थिति अथवा व्यक्ति अच्छा या बुरा नहीं होता, हमारी सोच ही उसे अच्छा या बुरा बनाती है। कई बार ऐसा होता है कि जो व्यक्ति हमें अत्यधिक प्रिय होता है, उसमें भी हमें कमियाँ और बुराइयाँ दिखाई देने लगती हैं। कई बार हमारी सोच हमारे निहित स्वार्थों और अपेक्षाओं के कारण भी परिवर्तित होती है। वे व्यक्ति जिन्हें जीवन, समाज और अपने कार्यक्षेत्र में सफल रहना है, उन्हें चाहिए कि वे अपनी सोच और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने की कला सीखें।

* * *

हमारी विचार-शक्ति इस सिद्धांत पर निर्भर करती है कि हमारी अपनी सोच क्या है और हम उसे किस दिशा एवं दशा में प्रयोग करते हैं। असल में मानसिक क्षमताओं का सही ढंग से उपयोग कर औसत आदमी भी मेधावी व बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सोच सकता है। हम अपनी बुद्धिमत्ता के प्रयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में करते हैं। अपनी सोच में मामूली सा बदलाव लाकर कोई भी व्यक्ति इसका भरपूर लाभ उठा सकता है।

* * *

हमें छोटी-छोटी घटनाओं और परिस्थितियों से त्वरित तौर पर प्रभावित नहीं होना चाहिए। बल्कि परिस्थितियाँ जैसी हैं, हमें उन्हें वैसे ही स्वीकार करना चाहिए। हमारे जीवन में जो भी लोग मिलते हैं, उनके साथ एक सामंजस्य की कला का विकास करना चाहिए। इसका निरंतर अभ्यास करने से जो परिणाम सामने आएँगे, वे आपके जीवन और आपकी सोच को बदलने में सहायक सिद्ध होंगे।

* * *

स्व-अनुशासन

स्व-अनुशासन के जरिए ही व्यक्ति आत्मविश्वास, लक्ष्य की निश्चितता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, सही निर्णय की क्षमता और अन्य गुण हासिल करता है।

* * *

स्वप्न-लता

स्वप्नरूपी लता को श्रम-स्वरूप जल से सींचना चाहिए, उसमें विवेकस्वरूप खाद डालनी चाहिए और उस लता को विस्तृत होने के लिए ज्ञानस्वरूप लकड़ी के सहारे पर रखना चाहिए। तब कहीं वह बेल फलती-फूलती है।

* * *

स्वभाव

इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है, जिसे पूर्ण कहा जा सके। उसे आवश्यकता होती है—देखभाल की, आत्मसंयम की।

* * *

घर की खुशहाली में स्वभाव का बड़ा महत्त्व होता है।

* * *

स्वभाव कच्ची मिट्टी की भाँति होता है, जिसकी कोई शक्ल नहीं होती। इसे आकृति देने की आवश्यकता होती है।

* * *

स्वास्थ्य

दूसरों को आकृष्ट करने के लिए स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त शरीर का होना नितांत अनिवार्य है। अगर आप शरीर को भला-चंगा आकर्षक बनाने के लिए प्रयास करें तो अवश्य ही उसमें सफल हो सकते हैं। नियमित रूप से व्यायाम करें, खेलों में हिस्सा लें या सुबह की सैर के लिए जाएँ। वही करें, जो आपके शरीर और आपकी मनोवृत्ति के अनुकूल हो। संतुलित भोजन करें। इससे आपके शरीर की प्रतिरक्षण क्षमता मजबूत होगी, आप स्वस्थ रहेंगे और काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

* * *

हँसी

प्रकृति ने हमारे भीतरी अंगों के व्यायाम के लिए और हमें आनंद प्रदान करने के लिए ही हँसी बनाई है।

* * *

हौसला

उठो और हौसले के साथ अँधेरे से उजाले की ओर बढ़ चलो।

* * *

हौसलामंद इनसान हालात का गुलाम नहीं होता। हौसले की कमी इनसान को आगे बढ़ने से रोक देती है।

❑❑❑

अपना भाग्य स्वयं बदलें

ऑरिसन स्वेट मार्डेन

अपना भाग्य स्वयं बदलें

प्रभात

स्वेट मार्डेन

अपनी बात

मनुष्य अपने भाग्य को अपने प्रयास से बदलकर मनचाही सफलता अर्जित कर सकता है। अपना भाग्य बदलने के लिए मनुष्य को ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ता, बस अपने मन को समझाना होगा कि वह यह कर सकता है। उसे अपनी अंतर-शक्ति, आत्मविश्वास, कर्मठता, क्षमताएँ, उत्साह, रचनात्मकता इत्यादि, जैसे—गुणों को उत्प्रेरित करने होंगे; साथ ही अज्ञान, अहंकार, चिंता, क्रोध, लक्ष्यहीनता, नकारात्मकता, लोकनिंदा, भय इत्यादि, जैसे—दुर्गुणों को त्यागना होगा, फिर अपना भाग्य बदलने से उन्हें कोई नहीं रोक सकता। आज के श्रम से कल को सँवारा जा सकता है, निखारा जा सकता है और उसे मनोनुकूल सार्थक बनाया जा सकता है।

आशा और आत्मविश्वास से हमारी शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं, इनसे हमारी, उत्पादन-शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। आशा मनुष्य के लिए अमृत के समान है। जिस प्रकार पेड़-पौधों को सूरज से जीवन मिलता है, उसी प्रकार आशा से मनुष्य में नए उत्साह का संचार होता है।

इनसान की सोच उसकी शख्सियत का आईना होती है। जैसी सोच वह मन में रखेगा, वैसे ही भाव उसके चेहरे पर उभर आते हैं। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में एक सुअवसर जरूर देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन-वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। सवाल केवल इतना है कि कौन कितनी सूझबूझ और मेहनत से उस मौके का फायदा उठा पाता है।

उठो और हौसले के साथ अँधेरे से उजाले की ओर बढ़ चलो। उठो, अपने जीवन की योजना बनाओ, ताकि आपकी सोई हुई महान् प्रतिभा और शक्ति, जो अब तक व्यर्थ पड़ी हुई है, जाग उठे।

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम—ये छह गुण, जिसमें होते हैं, देव उसी की सहायता करते हैं।

कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से, वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है। व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वैसे ही रूप में वह भगवान् के अस्तित्व को देखेगा, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है, उसी प्रकार हमें अपनी दूषित भावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्मसंयम रूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए। जिसमें आत्मविश्वास हो, वह उन चिंताओं और आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनमें दूसरे मनुष्य दबे रहते हैं।

जीवन अति प्यारा व सुंदर है। मनुष्य के मन में जब चिंता और निराशा उत्पन्न हो तो उसको अपनी विचारधारा को परिवर्तित कर दूसरी ओर लगाना चाहिए। साहस, आनंद और सफलता के संबंध में विचार करें। आशावादी और आत्मविश्वासी बनें।

मनुष्य तब तक नहीं थकता, जब तक उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है और मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

व्यर्थ का भ्रम मत पालो। मन में सदैव आत्मविश्वास रखो। सफलता अवश्य प्राप्त होगी। भ्रम और अंधविश्वास व्यर्थ का भय उत्पन्न करके मनुष्य स्वयं को कमजोर बना देते हैं।

शुरुआत में आदत एक अदृश्य धागे जैसी होती है, लेकिन जब भी हम उस काम को दोहराते हैं तो हम उसमें एक और रेशा जोड़कर धागे को मजबूत कर लेते हैं और यह सिलसिला तब तक चलता रहता है, जब तक कि आदत मोटी रस्सी बनकर हमें कसकर बाँध नहीं लेती—हमारे विचारों और कामों को।

स्वस्थ चिंतन मनुष्य में आत्मविश्वास की शक्ति भर देता है और वह सफलता की ओर निरंतर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत चिंताग्रस्त व्यक्ति रोगों से ग्रस्त, निराश और हताश होता है। उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण होकर नष्ट हो जाता है।

जो भाग्य के सहारे बैठ जाते हैं, उनका भाग्य भी उन्हीं के पास बैठ जाता है। जो व्यक्ति अपनी योग्यता पर संदेह करता है, वह न किसी अन्य का भला कर सकता है और न ही स्वयं को लाभ पहुँचा सकता है।

निराशा की छोटी सी रेखा भी मानसिक यंत्र को उसी प्रकार बेकार और निकम्मा बना देती है, जिस प्रकार धूल का छोटा सा कण या छोटा सा बाल चलती हुई घड़ी को बंद कर देता है। निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है, अंत:करण में आशा की चेतना का जागना। निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है, जो हमने कुछ सत्कर्मो को करने के लिए किए थे।

परमात्मा से संबंध जुड़ जाने पर भय, शंका, संदेह या संकीर्णता दूर होकर दिव्यता का प्रकाश होने लगता है। प्रत्येक विचार, प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है—अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। यही प्रकृति का नियम है। इसमें देर हो सकती है, पर अँधेर नहीं। इसलिए अगर आप सफल होना चाहते हैं, स्वयं अपना भाग्य बदलना चाहते हैं तो अच्छे विचार रखिए, सद्कर्म करिए और जरूरतमंदों की नि:स्वार्थ भाव से सहायता तथा सेवा करिए। मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों, बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

अपना भाग्य स्वयं बदलने के उपायों के रूप में इस पुस्तक 'अपना भाग्य स्वयं बदलें' में ऐसी ही छोटी-छोटी सरल युक्तियाँ सुझाई गई हैं। उबाऊ विवरणात्मकता से बचने के लिए हमने इसे प्रेरक टिप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि आप सीधे तथ्यों को ग्रहण कर सकें।

—संपादक

अपना भाग्य स्वयं बदलें

अंतरशक्ति

आंतरिक शक्ति व्यक्ति की वह जीवंत शक्ति होती है, जिसके बल पर वह ऐसे कार्य भी कर लेता है, जो आश्चर्यजनक होते हैं। और फिर व्यक्ति यह सोचता है कि 'मैंने यह कैसे कर लिया?' व्यक्ति की आंतरिक शक्ति उसके रंग-रूप, उसकी लंबाई-चौड़ाई की भाँति दिखाई नहीं देती। वह तो उसके वे गुण होते हैं, जिन्हें न तो वह देख सकता है और न ही अन्य कोई। लेकिन जब व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानता है तो ऐसे कार्य कर लेता है, जिन्हें देखकर बाद में वह स्वयं भी आश्चर्यचकित हो जाता है।

* * *

व्यक्ति प्राय: यही सोचता है कि यह तो बहुत कठिन कार्य है, मेरे वश का नहीं है, लेकिन जब उसे अपनी आंतरिक शक्ति का ज्ञान होता है तो वह उसको कर जाता है। व्यक्ति अपने आंतरिक गुणों को आत्मविश्वास पैदा करके प्राप्त कर सकता है। यदि व्यक्ति दृढ-निश्चय कर ले तो वह किसी भी काम को आसानी से कर सकता है। सर्वप्रथम आवश्यकता है कि व्यक्ति स्वयं को पहचाने।

* * *

अंधविश्वास

अंधविश्वास में लोग कभी-कभी इतना बड़ा धोखा खा जाते हैं कि उससे उबरना कठिन हो जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि विश्वास सभी पर करो, लेकिन अंधविश्वास किसी पर नहीं। अनेक लोग अपनी चतुराई से लोगों को अपने जाल में फँसा लेते हैं। चालाक लोग ऐसे ही अवसरों की तलाश में रहते हैं। जहाँ उन्हें अवसर मिला और उन्होंने धोखा दिया। फिर अंधविश्वासी व्यक्ति केवल हाथ मलता रह जाता है।

* * *

व्यक्ति जब ठोकर खाता है, तब सँभलता है, लेकिन वह पहले से सँभल कर चले तो ठोकर ही क्यों खाए। अंधविश्वास वह अवगुण है, जिसका लाभ चापलूस, धूर्त, ठग, पाखंडी, कर्महीन लोग उठाते हैं। इसलिए किसी पर भी अंधविश्वास नहीं करना चाहिए, अन्यथा यह आपकी सफलता में बाधक हो सकता है।

* * *

अज्ञान

अज्ञान वह अवगुण है, जो व्यक्ति को पशुओं की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। अज्ञानी व्यक्ति बहुधा लोगों से ठगा जाता है। अज्ञान वह बीज है, जो अंकुरित होकर वृक्ष बनता है और उस वृक्ष पर अवगुणों के फल लगते हैं। अज्ञान अवगुणों का बीज है, जिसे कभी अंकुरित नहीं होने देना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति अवगुणों का भंडार बनकर जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं कर पाता। ज्ञान की एक किरण अज्ञान के घनघोर अंधकार को दूर कर सकती है, जबकि अज्ञान व्यक्ति को घोर अंधकार में धकेल देता है।

* * *

ज्ञान प्राप्त करके ही स्वयं को पहचाना जा सकता है। अज्ञान के बादल छटने पर व्यक्ति स्वत: ही सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है। अज्ञान ही व्यक्ति के गुणों को बाँधे रखता है। अज्ञानी व्यक्ति से सफलता की आशा व्यर्थ है। अज्ञानी व्यक्ति अपनी कुबुद्धि से बनते कार्य को बिगाड़ लेता है। अज्ञानी व्यक्ति अवसर को पहचान कर

भी उसका लाभ उठाने में असमर्थ रहता है। अज्ञानता के कारण वह असफल होता है।

* * *

अधकचरा ज्ञान

शिक्षा के लिए कभी शॉर्टकट नहीं अपनाना चाहिए अन्यथा अधकचरा ज्ञान ही मिलता है, जोकि हानिकारक होता है। स्थायी और पूर्ण शिक्षा ही ग्रहण करनी चाहिए, जिससे चहुँ ओर आपकी प्रशंसा हो और जब आप इस दुनिया से जाएँ, तब भी आपकी सफलता की गाथाएँ दुनिया में अमर रहें।

अनुभव और क्षमता आपको अपनी उपलब्धियों या सफलताओं पर बहस करने की जरूरत नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को घटाता है। अपनी सफलताओं को उचित ठहराने की बजाय अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने अनुभव और क्षमताओं को सही दिशा में बढ़ाएँ। हमेशा यह याद रखें कि हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होती है, इसके लिए किसी दूसरे का सहयोग काम नहीं आता।

* * *

अमरता

व्यक्ति द्वारा स्वयं को पहचानना स्वयं को सफल बनाना है। यदि वह स्वयं को नहीं पहचानता तो असफल है। व्यक्ति अपने अंदर गुणों का विकास कर, अवगुणों को त्यागकर सफलता प्राप्त कर सकता है। जो सफल है, वही अमर है। शेष सभी मृत्यु है। अब यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह मृत्यु का वरण करता है या अमरता का। उसके लिए दोनों राहें खुली हैं, बस चलने की देर है।

* * *

अवगुण-त्याग

सफलता प्राप्त करने के लिए एकाकीपन, भय, संकोच, भावुकता तथा हीनभावना जैसे अवगुणों को अपने पास भटकने भी न दें। अपनी लगन, इच्छा व परिश्रम पर निराशा व आलस्य की छाया न पड़ने दें। सफलता पाने के लिए समय का महत्त्व समझें। उसका एक-एक पल उपयोग में लाएँ।

* * *

अवसर

अवसर एक वरदान होता है, जो जीवन में बार-बार नहीं आता है। अत: उसके स्वागत के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए और पूर्ण आत्मविश्वास तथा निष्ठा के साथ सामने आए हुए अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

* * *

अवसर कभी-कभी व्यक्ति को स्वत: ही मिल जाते हैं, बस आवश्यकता होती है, उन्हें पहचानने की उन्हें पकड़ने की। जो अवसर को पहचान लेता है, वह भाग्य निर्माण के सूत्र को पा लेता है, अर्थात् उस अवसर का लाभ उठा लेता है। कभी-कभी अवसर पैदा करने पड़ते हैं, लेकिन यहाँ भी वही बात लागू होती है कि अवसर का उचित लाभ उठाना। अवसर बनाकर अर्थात् पैदा करके भी यदि उनका समुचित लाभ न उठाया जाए तो वह प्रयास विफल होगा।

* * *

अवसर व्यक्ति के जीवन में सफल भाग्य निर्माण के वे सोपान हैं, जिन्हें पाकर वह सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है। कहा जाता है कि अवसर पर चौका मारना ही शोभा देता है, यदि प्रत्येक गेंद पर आँख बंद करके खिलाड़ी

चौका मारता रहे तो उसे पवेलियन में ही बैठना पड़ेगा। वह मैदान पर अपना हुनर नहीं दिखा सकेगा। इसी प्रकार, जब व्यक्ति को उचित अवसर मिले, तब उसे तुरंत पकड़ लेना चाहिए। अवसर को कभी गँवाना नहीं चाहिए, अन्यथा यही हाल होता है कि 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।'

* * *

ईश्वर हमें सदैव जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है, परंतु जिसमें अपनी योग्यता का विश्वास न हो, उसके हाथ से अवसर निकल जाता है। कुछ और कदम भी हैं, जो हम अपनी जूझने की क्षमता को बढ़ाने के लिए उठा सकते हैं। जब हम अपने को विलक्षण व कठिन परिस्थितियों में पाते हैं, तब उनसे भाग जाने की बजाय हमें उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए।

* * *

जिस प्रकार मृत्यु आने पर उससे यह नहीं कहा जा सकता कि कल आ जाना, उसी प्रकार आज जो अवसर प्राप्त हुआ है, उससे भी यह नहीं कहा जा सकता कि 'हे अवसर! कल आ जाना।' आज जो भी सामने हैं, उसे स्वीकार करें, कल की प्रतीक्षा न करें। कल की बात करनेवाले का तात्पर्य अप्रत्यक्ष रूप से उस कार्य को टालना है, जो उस व्यक्ति के नकारात्मक रवैये को प्रकट करता है। इस प्रकार के लोग जीवन में सफल नहीं होते। इसलिए कल को छोड़ें, आज को पकड़े, क्योंकि आज सफल है और कल असफल।

* * *

बहुत से व्यक्ति ऐसे देखे जा सकते हैं, जो अवसर का रोना रोते रहते हैं कि 'अवसर न मिल सकने के कारण मैं असफल रहा, अन्यथा मैं न जाने क्या-क्या कर देता।' यह सब उन लोगों के लिए होता है, जो स्वयं कुछ उन्नति नहीं करना चाहते। ऐसे लोग अवसर मिलने पर भी उसे पहचान नहीं पाते हैं और इनसे अवसर पैदा करने की तो उम्मीद ही व्यर्थ है।

* * *

मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि अपनी किसी भी प्रिय रुचि को निखारकर सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ जीवन की उबकाई, नीरसता व असंतुष्टि से बचा जा सकता है। मूड नहीं बना है, इस बीमारी से बचें। अच्छा समय मूड के कारण रुकता नहीं है। इस प्रकार अच्छा अवसर हाथ से निकल जाता है और पीछे रह जाता है केवल पछतावा।

* * *

व्यक्ति के जीवन में लाभ अथवा सफलता के पथ पर आगे बढ़ने के क्षण जब भी आएँ तो उन्हें उसी समय पकड़ लेना चाहिए, क्योंकि पता नहीं, आज का अवसर चूकने पर न जाने वे लाभदायक क्षण जीवन में फिर कब आएँ। क्योंकि अवसर का समय निश्चित नहीं होता और ऐसे अवसर वे ही छोड़ते हैं, जो जीवन में कुछ नहीं करना चाहते। सफलता के इच्छुक लोग ऐसे अवसरों को कल पर नहीं टालते, अपितु लाभकारी क्षणों की रात-दिन प्रतीक्षा करते हैं और प्राप्त होते ही उन्हें लपक लेते हैं।

* * *

अवसर का लाभ

सफलता उन व्यक्तियों के पास नहीं आती, जो इंतजार करते हैं और यह अपने पास आने के लिए किसी का इंतजार भी नहीं करती है। अधिकतर सफल व्यक्तियों ने कुछ नए गुणों या उन्हें प्राप्त अवसरों द्वारा ही अपने गंतव्य

को प्राप्त नहीं किया है। उन्होंने तो अपने हाथ में आए अवसरों का विकास किया है। असफलता और सफलता के बीच अंतर बस इतना है, जैसे कोई काम लगभग सही करना तथा बिल्कुल सही प्रकार से करना।

* * *

असफलता

असफलता दूसरों के कारण से नहीं, अपितु स्वयं की कमजोरियों के कारण मिलती है। लोग इन्हीं उलझनों में व्यस्त रहते हैं कि कब करें, कैसे करें, शायद हो सकता था या हो सके, कल कर लेंगे या मेरी जगह तुम चले जाना आदि-आदि। स्वयं के कार्य के लिए इतनी उलझनें, इतने बहाने। अब व्यक्ति सफल कैसे हों, जब वे स्वयं ही, स्वयं की सफलता में अनेक परेशानियों को जन्म देने लगें।

* * *

जब हम अपने स्वयं के जीवन में झाँकेंगे, तब हमें अपनी असफलता का ज्ञान होगा, न कि केवल हम यही देखते रहें कि उस व्यक्ति में वह कमी है। अर्थात् हम केवल दूसरों के दोष ही निकालते रहते हैं, स्वयं के नहीं। यही असफल होने का सबसे बड़ा कारण है। यह सब त्याग कर देखें, फिर आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपने अपनी असफलताओं के कारणों पर विजय पा ली है।

* * *

हम पूर्ण लगन, ईमानदारी से अपने कार्यों को करते हैं और अपने कार्य व मेहनत के प्रति पूर्णत: आश्वस्त होते हैं कि हम अवश्य सफल होंगे, किंतु फिर भी असफल! क्या आपने अपने कार्यों को संपन्न करने के लिए कोई योजना बनाई? क्या आप स्वयं के प्रति एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण ईमानदार रहे? क्या आपमें आत्मविश्वास की कमी थी? क्या आप उस कार्य के प्रति दृढ निश्चयी थे? क्या आप समाज से कटे हुए थे? क्या आपमें साहस की कमी थी? क्या आपको अपने कार्य आदि का अनुभव था? आदि ऐसे कई कारक हैं, जो हमें असफलता की ओर ढकेलते हैं।

* * *

अहंकार

अहंकार मूर्ख और चापलूस किस्म के लोगों की औषधि है, जिसे लेते ही उनके संपूर्ण शरीर में उत्साह का संचार होता है, जबकि सफलता चाहनेवाले लोग इससे दूर भागते हैं, क्योंकि वे इसे विष समान समझते हैं। अहंकारी व्यक्ति अपने अहंकार में सामनेवाले को कुछ नहीं समझता। वह यह भी भूल जाता है कि उसके सामने कौन है? क्या है? वह सामनेवाले का अपमान करने से भी नहीं चूकता।

* * *

अहंकार व्यक्ति का वह दुर्गुण है, जिसके चलते वह कुछ नहीं होते हुए भी स्वयं को सर्वोपरि समझता है। या अनेक गुणों के होते हुए भी इस दुर्गुण के कारण वह कुछ नहीं होता, क्योंकि अहंकार में वह इतना मस्त हो जाता है कि अपने सद्गुणों का भी नाश कर बैठता है।

* * *

अहंकारी व्यक्ति का सिर हमेशा झुकता है और क्षण भर में व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में लेकर उसे असफलता की ओर धकेल देता है। अहंकाररूपी अवगुण से व्यक्ति को सतत बचना चाहिए, क्योंकि अपना भाग्य बदलकर सफलता चाहनेवालों के लिए यह बहुत घातक है।

* * *

अहंकारी व्यक्ति सफलता की सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर खड़ा रहकर ही स्वयं को सर्वोपरि समझता है। इसी भावावेश में वह सफलता से दूर रह जाता है। उसका स्वाद तक नहीं चख पाता। सर्वगुण संपन्न व्यक्ति भी जब इस अहंकार का शिकार होता है तो यदि वह सफलता के उच्च शिखर पर बैठा हो तो भी धम्म से नीचे आ गिरता है।

* * *

जब व्यक्ति अत्यधिक शक्तिशाली हो, अत्यधिक धनवान हो या किसी और कारण से दूसरों से गुणों में अधिक हो तो उसे अहंकार हो जाता है तथा वह विवेक खोकर गलत मार्ग अपना लेता है। इस प्रकार अपनी भाग्य निर्माण की सफलता को भी क्षति पहुँचाने का कार्य करता है, क्योंकि भाग्य निर्माण की सफलता प्राप्त करना, जितना कठिन है, उससे कई गुना अधिक कठिन है, उसे बचाकर रखना, अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखना।

* * *

सफलता और असफलता व्यक्ति जीवन की दो सीढ़ियाँ हैं। असफलता व्यक्ति को सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अग्रसर करती है। व्यक्ति एक बार, दो बार या तीन बार असफल होगा, अंततः ये असफलताएँ उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगी। लेकिन व्यक्ति को स्वयं को सफलता की सीढ़ी पर चढ़ाना है, न कि सफलता के अहंकार को स्वयं पर हावी होने देना है। यदि व्यक्ति पर सफलता का अहंकार चढ़ा तो उसे अनेक दुर्गुण आ घेरेंगे और वह सफल होकर भी कुछ प्राप्त नहीं कर पाएगा।

* * *

आत्मविश्वास

अगर परिश्रम पूर्ण लगन और संयम के साथ किया गया हो, तब सफलता मिलना निश्चित है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भी एकाग्रचित्त होना अत्यधिक आवश्यक है। ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना हो तो अपना सफर निचली-से-निचली सतह से प्रारंभ करो और अपने काम से जिसका संबंध हो, ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ एवं अनुपयोगी समझकर बेकार न जाने दो, बल्कि उसका पूरी बारीकी के साथ अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करो। यह सब तभी संभव है, जब आपके पास आत्मविश्वास की पूँजी हो।

* * *

अपने प्रगति-पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहनेवाले आत्मविश्वासी व्यक्तियों के लिए मदद के अनसोचे व अनचाहे झरने बहते हैं। अनापेक्षित व्यवधानों के चलते यदि थोड़ी सी देर के वास्ते रुकना या पीछे हटना भी पड़े तो कोई हताश होने की आवश्यकता नहीं। आत्मविश्वास के धनी मनुष्यों को पता है कि जरा पीछे हटकर पुनः दौड़ लगाकर कूदने से ही लंबी छलाँग लगाई जा सकती है। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग के तहत यदि थोड़ा सा पीछे हटना भी पड़े तो वह संघर्ष में विजय प्राप्ति हेतु व्यूह रचना का एक अंग है।

* * *

आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास सदा से मित्रता, वंश, सिफारिश तथा धन से अधिक प्रभावशाली रहे हैं। संसार में आत्मविश्वास सर्वोत्तम पूँजी है। इससे अधिकांश बाधाएँ दूर हो जाती हैं, अधिकतर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। आत्मविश्वास द्वारा जितने महान् साहस के कार्य संपन्न होते हैं, उतने अन्य किसी भी मानवीय गुण के कारण नहीं होते।

* * *

आत्मविश्वास की कमी तथा निराशा से पूर्ण मानसिक अवस्था हमारे स्वास्थ्य व सौंदर्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव

डालती है। इससे अनेक मनोवैज्ञानिक विकृतियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। नींद में कमी, भूख न लगना, किसी भी कार्य में मन न लगना तथा चिड़चिड़ापन व खीझ आत्मविश्वास की कमी से ही उत्पन्न होते हैं। आत्मविश्वास पैदा करने के लिए अनिवार्य तत्त्व यह भी है कि हमें खुद अपना महत्त्व आँकना आना चाहिए।

* * *

आत्मविश्वास की कमी से हममें असुरक्षा और हीनता का आभास होता है। अगर हमारा आत्मविश्वास कम हो तो हमारा रवैया नकारात्मक रहता है और हम तनाव से ग्रस्त रहते हैं। नतीजतन हमारी एकाग्रता भी कम हो जाती है और हम निर्णय लेते समय भ्रमित एवं गतिहीन हो जाते हैं। इससे हमारा व्यक्तित्व पूरी तरह से खिल नहीं पाता। ऐसे में सफलता तो कोसों दूर रहती है।

* * *

आत्मविश्वास की कुंजी है आशावादी होना। जहाँ सफलता प्राप्त करने की आशा होती है, वहीं उस कार्य को करने का आत्मविश्वास होता है। आशावादी होने पर व्यक्ति में उत्साह, कार्यकुशलता, साहस आदि, जैसे गुण स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं। यही गुण व्यक्ति में आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं।

* * *

आत्मविश्वास को बढ़ाने की दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम होगा, जब हम स्वयं को मायूस कर देनेवाले व्यक्तियों व नकारात्मक परिस्थितियों से कोसों दूर रखें, क्योंकि ये हमारे आत्मविश्वास को एकदम क्षीण कर देते हैं। इन सब के विपरीत हमें अपना उत्साह बढ़ाने के लिए खुद को सकारात्मक वैचारिक-संदेश देते रहना चाहिए कि मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ, पूरा हूँ, संपूर्ण हूँ। मुझमें कोई कमी नहीं है। मैं कोई भी कार्य करने में सक्षम हूँ। मैं सही हूँ।

* * *

आत्मविश्वास बढ़ाने की प्रक्रिया कोई रातोरात संपन्न नहीं होती, बल्कि धीरे-धीरे नन्हे-नन्हे कदमों को मिला-मिलाकर बनती है, इसलिए हमें धीरे-धीरे अपने को कठिन परिस्थितियों से सामना करवाकर और उन पर विजय पाकर आगे बढ़ना होगा। कई बार हम विफल होंगे, मगर हमें हार माने बिना फिर भी उसी पथ पर चलते रहना पड़ेगा।

* * *

आत्मविश्वास में बहुत शक्ति होती है। आत्मविश्वास किसी भी परिस्थिति में उचित निर्णय लेने का साहस प्रदान करता है। जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास होता है, वह अपने सामने आनेवाले हर अच्छे अवसर को पहचान लेता है और पूर्ण निष्ठा से कार्य करते हुए अपने सपनों को साकार करता है।

* * *

आत्मविश्वास वह फौलादी किला है, जिसके समक्ष हथियारबंद भी नि:सहाय हो जाते हैं। जब हम अपने आत्मविश्वास के साथ किसी कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं तो आगे भी वही आत्मविश्वास सफलता के लिए कार्य करता है। इस तरह हमारा आत्मविश्वास बढ़ता जाता है और वह हमारे लिए स्वाभाविक हो जाता है, अर्थात् हमारा स्वभाव वैसा ही हो जाता है।

आत्मविश्वास वह हथियार है, जिसके द्वारा हम बड़े-से-बड़ा कार्य आसानी से कर सकते हैं, बड़ी-से-बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं, जो आत्मविश्वास से भरपूर है, जीवन में अनवरत सफलताएँ अर्जित करता चला जाता है।

* * *

आत्मविश्वास व्यक्ति को स्वयं में पैदा करना पड़ता है। इसे प्राप्त करने की कुंजी है—दृढ निश्चय। जब हम दृढ निश्चय से सोच लेते हैं कि हाँ, हम यह कर सकते हैं, तब अवश्य ही आप उसे कर सकते हैं, क्योंकि वह वाक्य आप नहीं आपका आत्मविश्वास बोलता है। बस प्राप्त कर लिया आपने आत्मविश्वास और मिल गई आपको मनचाही भाग्य निर्माण की कुंजी।

* * *

आत्मविश्वासी लोग स्वयं तो सफल होते ही हैं, साथ ही दुनिया में दूसरों के लिए अपने कार्यों के रूप में प्रेरणा छोड़ जाते हैं और उन प्रेरणाओं को केवल वे ही ग्रहण करते हैं, जिनमें सफलता प्राप्त करने की, अपना भाग्य बदलने की ललक होती है।

* * *

आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी ओजस्वी वाणी के प्रभाव से लोगों को प्रभावित करते हैं। उनकी वाणी में वह उत्साह होता है, जिससे वे दूसरों के मन में भी वही उमंग और जोश भरकर उन्हें अपना दास बना लेते हैं।

* * *

आत्मविश्वासी व्यक्ति की कद्र समाज में बढ़ जाती है। वे अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। लोग उन्हें नायक के रूप में देखने लगते हैं। उनकी सफलता की कहानी किसी से छिपी नहीं रहती। वे लोगों के आदर्श बन जाते हैं।

* * *

आत्मविश्वासी व्यक्ति के चेहरे पर सफलता की कहानी स्पष्ट पढ़ी जा सकती है। उसका चेहरा खिला-खिला अलग ही दिखाई देगा। इसके विपरीत वह व्यक्ति, जिसमें आत्मविश्वास की कमी होगी, वह शंका और निराशाओं में घिरा हुआ दिखाई देगा। उसके चेहरे पर कभी भी सफलता की मुसकान नहीं होगी।

* * *

आत्मविश्वास एक ऐसा प्रकाश है, जो भयंकर अंधकार में भी हमें उचित मार्ग दिखाता है। आत्मविश्वास के कारण ही भाग्य निर्माण होता है और सफलता मिलती है तथा सफलता का पूरक आत्मविश्वास है। जब भी हम कोई कार्य प्रारंभ करते हैं तो उसमें सफलता की पूरी-पूरी गारंटी हमें कतई नहीं मिल सकती। हाँ, कार्य पूर्ण रूप से होने तक मार्ग में आत्मविश्वास का दामन यदि हमने नहीं छोड़ा तो सफलता की संभावनाएँ निश्चित रूप से बढ़ जाती हैं।

* * *

कई बार आपने देखा होगा कि सर्कस में एक व्यक्ति शेर के पिंजरे में खड़ा केवल एक हंटर हाथ में लिए हुए खतरनाक शेरों से करतब करवाता है—आत्मविश्वास के कारण। इसी आत्मविश्वास के कारण उन लोगों में साहस का संचार होता है और वे ऐसे रोमांचक कारनामे करते हैं, जिन्हें देखकर लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते हैं। आप भी ये सब कार्य कर सकते हैं—अपने अंदर आत्मविश्वास का संचार करके।

* * *

काम के दबाव में थोड़ा-बहुत तनाव होना अवश्यंभावी है। यदि आपके कुछ लक्ष्य, सपने और उद्देश्य हैं और सबकुछ उनके विपरीत हो रहा है, तो आप तनाव महसूस करने लगते हैं। इस तनाव की स्थिति से निकलने के लिए

आपको बस इतना करना है कि आप अपने काम पर और खुद पर विश्वास रखें। आवश्यकता हो तो थोड़ा तनाव मुक्त होने का प्रयास करें तथा किसी और काम में मन लगाएँ।

* * *

कोई भी मनुष्य पैदा होते समय अधिक या कम आत्मविश्वास लेकर नहीं आता। हमारा स्वयं का कृतित्व, व्यक्तित्व तथा हमारे मन, मस्तिष्क व जीवन को प्रभावित करनेवाले कारक ही हमारी इस ऊर्जा को घटाने या बढ़ाने का काम करते हैं।

* * *

गलत कार्यों में लगे रहनेवाले, आपराधिक मामलों में संलिप्त, फरजी हथकंडों से उन्नति करनेवाले, कम शिक्षित, झूठे, मक्कार व स्वार्थी लोगों में आत्मविश्वास की ऊर्जा नहीं होती। आत्मविश्वास के धनी व्यक्ति जहाँ-जहाँ जाते हैं, सभी के दिलों पर राज करते हैं। लोगों का उन पर विश्वास होता है। सभी उन पर भरोसा करते हैं। वे जो चाहते हैं, मामूली प्रयासों से प्राप्त कर लेते हैं।

* * *

जिन लोगों में आत्मविश्वास की कमी होती है, वे अपने भाग्य निर्माण और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भरे मन से प्रयास करते ही नहीं। संकोच करते रहने तथा सहमे-सहमे रहनेवालों की किस्मत में सफलता नहीं होती।

* * *

जिन व्यक्तियों की इच्छाशक्ति बहुत अधिक दुर्बल अर्थात् आत्मविश्वास क्षीण हो जाता है। वे किसी सरल कार्य में भी सफलता प्राप्त करने में हमेशा वंचित रहते हैं। तभी तो विलियम जेम्स कहते हैं, 'जीवन से कभी डरो मत और हमेशा विश्वास यही रखो कि यह जीवन जीने योग्य है और तुम्हारा यही विश्वास जीवन में तथ्यों के नए निर्माण में सच्चा सहायक साबित होगा।'

* * *

जिन व्यक्तियों को अपनी योग्यता पर विश्वास नहीं होता, स्वयं तो दिग्भ्रमित होते ही हैं, दूसरों को भी प्रेरणा देने के विपरीत हतोत्साहित करते हैं कि 'मैं इस कार्य को नहीं कर पाया। इसमें तो अनेक कठिनाइयाँ हैं।' यह सुनकर दूसरे लोग भी हतोत्साहित हो जाते हैं। उनमें भी आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। ऐसे लोग स्वयं के लिए तो घातक होते ही हैं, समाज के लिए भी घातक होते हैं।

* * *

जिस काम को पूरा करने में, जिसके विषय में आपको अपनी शक्तियों पर पूरा विश्वास होता है, आप उसी काम को कर सकते हैं। जो व्यक्ति यह सोचता है कि संसार में सभी व्यक्ति धनी नहीं हो सकते और अधिकांश व्यक्तियों को गरीब ही रहना पड़ेगा तथा मैं भी उन्हीं में से एक हूँ तो वह व्यक्ति कभी भी धनी नहीं हो सकता। आपने प्राय: देखा होगा कि अधिकांश व्यक्ति कॉलेज से पहले ही पढ़ाई छोड़ बैठते हैं। इसका एक ही कारण उनका यह सोचना है कि वह इस योग्य कहाँ?

* * *

जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास का अभाव होगा, वह अन्य चीजों पर किस प्रकार विश्वास उत्पन्न कर सकता है और सफलता भी ऐसे अविश्वासी व्यक्तियों से हमेशा दूर रहती है। सफलता के लिए एकाग्रता का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि आत्मविश्वास। यही सूत्र हमें सफलता की ओर ले जाता है। अत: आशा,

उत्साह और आत्मविश्वास तीनों में अगर समानता है, तब सफलता स्वयं कदम चूमती है।

* * *

जिस व्यक्ति को अपने पर विश्वास होता है, वह हर असंभव से कार्य को अपने परिश्रम और साहस से संभव बना लेता है। ठीक उसी तरह, जिस प्रकार एक कुशल सारथि एक उद्दंड घोड़े को अपने प्रयासों से अपने वश में करने में सफलता अर्जित कर लेता है।

* * *

जिसे अपनी छिपी हुई शक्ति प्राप्त हो जाती है, वह जानता है कि अब वह जो भी कार्य करेगा, उसमें अवश्य सफल होगा। वह इस बात की कभी चिंता नहीं करता कि अभीष्ट कार्य को करने में क्या-क्या परेशानियाँ उत्पन्न होंगी? लोग क्या कहेंगे? उसे एक ही धुन सवार होती है कि उसे सफल होना है, अपना भाग्य बदलना है। उसके इस अडिग आत्मविश्वास के समक्ष उसके साथी, उसके आलोचक, उसके दुश्मन भी झुक जाते हैं अथवा उसके साथी बन जाते हैं।

* * *

जीवन में आत्मविश्वास का कोई विकल्प नहीं। यह वो मास्टर चाबी है, जो सभी मनुष्यों के लिए भाग्यरूपी महल के स्वर्णद्वारों को खोलने का काम करती है। ध्यान रखिए, सबसे पहले हमारी सोच बड़ी बनती है, उसके बाद हम।

* * *

जीवन में भाग्य निर्माण और सफलता अर्जित करने के लिए आत्मविश्वास सबसे पहली व अनिवार्य शर्त है। आपको अपने गिरेबान में झाँककर देखने तथा फिर खुद पर यकीन करने का हौसला पैदा करना होगा, फिर कोई ताकत नहीं है, जो आपको आपके लक्ष्य से डिगा दे। कामयाबी के बुलंद आसमान पर उपलब्धि भरे हस्ताक्षरों के रूप में निश्चित रूप से आप चमकेंगे।

* * *

जो मनुष्य आत्मविश्वास की उच्च अवस्था को प्राप्त होते हैं, उनकी मानसिक क्षमताएँ व कुशलताएँ खुद-ब-खुद बढ़ जाती हैं। उनके फैसलों में विश्वास की खनक होती है, जबकि आत्मविश्वासहीन व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर बिना पैंदी के लोटे की भाँति इधर से उधर लुढ़कते रहते हैं।

* * *

पक्का इरादा बड़े-से-बड़े कार्य को छोटा बना देता है। आत्मविश्वास स्वयं अपने आप में आस्था है। जब भी हम अपने मन में इस संकल्प को दोहराते हैं कि 'मैं अमुक कार्य को कर डालूँगा' तो आप निश्चित मानिए आधा काम तो तभी पूर्ण हो जाता है। आत्मविश्वास बाधाओं की तेज आँधी में भी अपने मार्ग पर डटे रहने की शक्ति का आधार है। यह सर्वमान्य सत्य है कि ऐसी कोई मुश्किल नहीं, जिसका कि कोई हल न हो सके। बाधाएँ अपने संग समाधान के संकेत भी लेकर आती हैं।

* * *

बहुत बार आपने देखा होगा कि मेलों में लोग मौत के कुएँ में मोटर साइकिल चलाते हैं। कई लोग मौत के कुएँ में स्वयं को आग की भेंट चढ़ाकर छलाँग लगाते हैं। कैसे? क्योंकि उनमें पूर्ण आत्मविश्वास भरा होता है कि वे ये कार्य अवश्य कर लेंगे।

* * *

बहुत से लोग, जिनके जीवन के शुरुआती पारिवारिक अनुभव पूरे तौर पर धनात्मक या ऋणात्मक रहे हों, अपने बाद के जीवन में आत्मविश्वास की कमी के अधिक शिकार हो जाते हैं। यह इसलिए भी होता है कि पूर्ण रूप से धनात्मक अनुभव वाला बच्चा जब बड़ा होकर अपने सामाजिक जीवन में ऐसी ही इच्छाएँ धारण करता है तो उन्हें पाने में नाकामयाब हो जाता है। इसी तरह नकारात्मक अनुभवों वाला बालक समाज में स्वयं को हीन मानकर लोगों से ठीक से घुल-मिल नहीं पाता और आत्मविश्वास की कमी का शिकार हो जाता है।

* * *

बाधाओं का मुकाबला करना सीखें। मन में थोड़ा भी भय उत्पन्न न होने दें। बस आत्मविश्वास के साथ बाधाओं से भिड़ जाएँ। फिर स्वयं अनुभव होगा कि 'वह कार्य तो बड़ा आसान था, मैं तो उसे वैसे ही कठिन समझ रहा था।'

* * *

वे लोग, जो जीवन में सफल होने के सपने देखते हैं तथा जिनके हृदय आत्मविश्वास के खजाने से लबरेज हैं, उन्हें नकारात्मक विचारों से सदैव बचना चाहिए। साथ ही ऐसे व्यक्तियों से भी दूर रहें, जो आपको हमेशा हतोत्साहित करने की फिराक में रहते हों। समाज में ऐसे बहुत से लोग मिल जाएँगे, जो खुद तो परिश्रम करना नहीं चाहते, दूसरों को भी किसी लक्ष्य विशेष की साधना में तल्लीन देखकर मन-ही-मन कुढ़ते रहते हैं। ऐसे शुभचिंतकों से बचिए। वे न तो स्वयं ही जीवन में कुछ बन पाए हैं और न ही किसी और को कुछ बनते देख खुश होंगे।

* * *

व्यक्ति को अपने आत्मशासन को, अपने आत्मविश्वास को जगाना चाहिए, जिससे वह उत्साह से कार्य कर सफलता प्राप्त करे, अन्यथा वह निराशा में ऊटपटांग कार्य करने लगता है, जो उसे असफलता की ओर धकेलते हैं।

* * *

स्ट्रीवन एक न्यायप्रिय, नीतिनिपुण व्यक्ति था। एक बार उसके पास एक व्यक्ति ने आकर पूछा, 'यदि कोई आप पर हमला करे तो आप क्या करेंगे?' स्ट्रीवन ने उत्तर दिया, 'मैं कुछ नहीं करूँगा।' यह सुनकर उस व्यक्ति को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, 'ऐसा क्यों कि आप कुछ नहीं करेंगे?' स्ट्रीवन ने कहा, 'मेरा किला बहुत सुरक्षित है। वह फौलादी दीवारों का बना है। उसे कोई भी भेद नहीं सकता, इसलिए मैं कुछ नहीं करूँगा।' वह व्यक्ति पुन: विस्मित होकर बोला, 'आपका किला! आपने कब किला बनवाया? कहाँ है आपका किला?' स्ट्रीवन ने जवाब दिया, 'अरे भाई, मेरा आत्मविश्वास ही मेरा किला है, जो बहुत कम लोगों के पास होता है और जिसके पास आत्मविश्वासरूपी किला होता है, वह कभी भी स्वयं को असुरक्षित अनुभव नहीं करता। वह सर्वदा सुरक्षित रहता है। अत: कोई भी मुझ पर हमला नहीं कर सकता।' जब उस व्यक्ति ने स्ट्रीवन के आत्मविश्वास को देखा तो वह उसके समक्ष नतमस्तक हो गया। वास्तव में वह व्यक्ति विपक्षी सेना का सरदार था और स्ट्रीवन पर हमला करने के लिए वहाँ आया था। परंतु स्ट्रीवन के आत्मविश्वास को देख वह बिना हमला किए, वहाँ से चुपचाप लौट गया।

* * *

हम किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन पर दृष्टि डालें तो पाएँगे कि उसकी सफलता के पीछे उनका आत्मविश्वास कार्य करता है। वह किसी भी कार्य को करने पर अपने मन में शंका उत्पन्न नहीं होने देता, केवल

उनके मन में यह दृढ विश्वास होता है कि उसे इस कार्य में सफलता प्राप्त करनी है, अपना भाग्य निर्माण करना है।

* * *

हर कार्य को करने के पूर्व मन-मस्तिष्क में ये होना चाहिए कि हम जो कार्य कर रहे हैं या करने जा रहे हैं, उसमें पूर्ण रूप से सफलता मिलना, लगभग निश्चित ही है। यदि आशा नहीं हो, तो फिर उत्साह व विश्वास भी कभी-कभी क्षीण हो जाता है। सफलता के लिए मनुष्य का सर्वप्रथम अपने मन पर पूर्ण रूप से अधिकार होना चाहिए। उसके बाद उसे अपना संपूर्ण ध्यान अध्ययन की ओर ही केंद्रित करके रखना चाहिए, क्योंकि विश्वास मानव मन का सच्चा सेनापति होता है, जो उसकी आत्म क्षमताएँ अर्थात् शक्ति को निरंतर बढ़ाते हुए उत्साह व आशा को बनाए रखता है।

* * *

आदत

खुश रहना भी एक आदत है। लगन से मेहनत करना भी एक आदत है। कोल्हू का बैल सारा दिन घूमता रहता है, लेकिन रहता वहीं का वहीं है। पढ़े-लिखे होने से अच्छा है, पढ़ते-लिखते रहना। दलदल में रहोगे तो तैरना नहीं सीखोगे। ख्वाहिश को पूरा करने की कोशिश करें, ताकि भविष्य में खेद नहीं रहे कि कोशिश नहीं की थी।

* * *

आदतें

कई आदतें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम खुद ही नहीं छोड़ना चाहते और कहते हैं कि छूटती नहीं। इनके बारे में गंभीरता से सोचें, चिंतन करें। हर समय कोई महापुरुष आपको शिक्षा देने के लिए भले ही मौजूद न हो, लेकिन उसकी बातें हमेशा आपके साथ रहती हैं।

* * *

आदतों का निर्माण, दूसरों से शिकायत और भाग्य का रोना, जैसी आदतों का त्याग करें। दूसरों की प्रशंसा खुले मन से करें, प्रशंसा एक ऐसा गुण है, जो सबको आपका हितैषी बना देती है। विपरीत परिस्थितियों में संयम से काम लें और धैर्यपूर्वक उनका सामना करें। यह सफलता प्राप्ति का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। जीवन में सिर्फ इच्छाएँ नहीं पालिए, लक्ष्य बनाइए। सोचिए, जो भी मेरे पास है, मेरे लिए खास है।

* * *

आलस्य

आलस्य व्यक्ति का महाअवगुण है, जो उसकी सफलता को असफलता में बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आलस्य एक रोग की भाँति है, जो एक बार व्यक्ति को जकड़ ले तो बहुत मुश्किल से छोड़ता है। आलसी व्यक्ति प्राय: भाग्य पर विश्वास करते हैं। वे इस भरोसे हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहते हैं कि भाग्य में जो होगा, मिल जाएगा, इसके लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन जब तक व्यक्ति कर्म नहीं करता, तब तक उसे वह नहीं मिलता, जो वह चाहता है।

* * *

व्यक्ति व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचकर चिंतामुक्त होकर कार्य करे तो आलस्य में कभी नहीं घिरता। क्योंकि इससे उसका चित्त एकाग्रता प्राप्त कर कार्यों में लगता है और वह ताजगी अनुभव करने लगता है। आलस्य से बचने का सरल उपाय है, व्यर्थ के काम से बचें। ये चिंता के अतिरिक्त कुछ नहीं देते। निरंतर अच्छे कार्यों में लगे रहें। इससे

आलस्य दूर होगा, आपके गुणों का विकास होगा, अवगुण दूर होंगे, सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।

* * *

आलोचना

आपके कार्य की कई बार आलोचना की जाती है। यह आलोचना आपको अवसर प्रदान करती है—अपनी कार्यक्षमता में सुधार लाने का। गलतियाँ सभी से होती हैं, मगर सफलता उन्हीं को मिलती है, जो गलतियों से सीखते हैं। जीवन में आपको ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे, जो आपकी सदैव आलोचना करेंगे। वे आलोचना करने के लिए ही बने हैं। इन सभी बातों को नजरअंदाज करते हुए अपने काम को साबित करने का प्रयास करें। अपने ऊपर गलतियाँ हावी न होने दें। आगे बढ़कर काम सीखने और उस पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करें।

* * *

आशा

आशा से ही आसमान टिका है। जब तक आप आशावान रहेंगे, तब तक वास्तव में आपके सिर पर आसमान टिका दिखाई देता रहेगा, लेकिन जब आप आशा का साथ छोड़ देंगे, उसी दिन आपके सिर पर टिका हुआ आसमान आपके ऊपर ही गिर जाएगा और आप नष्ट हो जाएँगे, असफल हो जाएँगे। सफलता का दूसरा नाम आशा है। किसी भी कार्य के लिए आशावान होना जरूरी है, तभी आप सफल हो सकते हैं। सफलता की कुंजी है आशा।

* * *

एक ओर आशा है तो दूसरी ओर निराशा। जहाँ आशा है, वहाँ सफलता है, जहाँ निराशा है, वहाँ असफलता। इसलिए व्यक्ति को आशावादी होना चाहिए, निराशावादी हरगिज नहीं।

* * *

जब व्यक्ति कोई कार्य करता है तो कई बार उसके समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न होती हैं कि अब वह यह काम नहीं कर पाएगा, यह तो बहुत कठिन है, इसे करना असंभव है, किंतु उस क्षण उसकी उस काम के प्रति आशा-आस्थाय उसे वह शक्ति प्रदान करती है, जो उस कार्य को सफल बनाने के लिए आवश्यक होती है और वह उस कार्य को कर जाता है।

* * *

जिस व्यक्ति के मन में अपने लक्षित कार्य के प्रति जब तक आशा नहीं होती, तब तक वह कुछ नहीं करेगा, हाथ-पर-हाथ रखकर बैठा रहेगा। उसके मन में उत्साह समाप्त हो जाएगा। उसका आत्मविश्वास खत्म हो जाएगा और धीरे-धीरे वह नष्ट हो जाएगा अर्थात् जीवन में असफलता के अतिरिक्त उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

* * *

आशावाद

आशा वह गुण है, जो व्यक्ति को उसके परिश्रम के साथ बाँधे रखता है। जब व्यक्ति कोई कार्य प्रारंभ करता है तो आशा करता है कि उसे लक्षित कार्य का सुपरिणाम मिलेगा। परिणाम की अपेक्षा में ही वह परिश्रम करता है। उसकी यही आशा उसे कर्मशील बनाती है। आशा के कारण ही उस कार्य में उसकी आस्था होती है।

* * *

ऐसे अनेक सफल व्यक्ति हैं, जिनकी सफलता का राज उनका आशावान एवं प्रसन्नचित्त होना है। उन सफल

व्यक्तियों के मुखमंडल पर हमेशा प्रसन्नता रहती है और यही गुण उन्हें सबसे अलग करता है। आशा से ही आस्था उत्पन्न होती है। व्यक्ति की आस्था ईश्वर में है, क्योंकि उससे उसे आशा है। यह आशा उसे ईश्वर के प्रति आशावान बनाती है।

* * *

जो व्यक्ति आशावादी होता है, वही अपना भाग्य स्वयं बदल पाता है, सफलता प्राप्त करता है। जो आशावादी होगा, वही किसी भी कार्य को करने का बीड़ा उठा सकेगा और पूर्ण आत्मविश्वास से उस कार्य को करेगा।

* * *

बहानेबाजी या टालते रहने की प्रवृत्ति मनुष्य को अकर्मण्य बना देती है। समस्या का समाधान करें। घबराएँ नहीं। असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। निरंतर प्रयास करते रहें। सदैव सकारात्मक विचार अपनाएँ, आशावादी बनें, क्योंकि निराशावादी विचारधारा ही व्यक्ति को कुंठित कर असफलता की ओर धकेलती जाती है।

* * *

व्यक्ति के हृदय में किसी के प्रति, किसी कार्य के प्रति जितनी अधिक आशा होती है, उसके प्रति उसकी आशा भी उतनी ही अधिक गहरी होगी। यही आस्था उसे यह प्रेरणा देती है कि जो कार्य करो, उसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

* * *

व्यक्ति जब कोई कार्य प्रारंभ करता है और यदि वह आशावान है तो उसके समक्ष कैसी भी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाएँ, आशा की बस एक किरण उस कार्य को सफल बनाने के लिए पर्याप्त होती है और अंततः वह सफल होता है। आशावादी व्यक्ति के चेहरे पर चमक स्पष्ट देखी जा सकती है। वह प्रायः अपने कार्य के प्रति आशावान होता है और उसे पूर्ण निष्ठा से करता है।

* * *

सीधी बातचीत मित्रता बनाए रखने का श्रेष्ठ तरीका है। हर दिन की शुरुआत सुखद, संतुष्ट व सुखी नजरिए से कीजिए। आप पाएँगे कि आपका दिन सुखद व सफल गुजरेगा। सफलता के लिए इंतजार करने आना चाहिए। पौधे से फल की इच्छा रखना मूर्खता से अधिक कुछ भी नहीं है। असफलता सफलता प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

* * *

ईमानदारी

ईमानदारी व्यक्ति का सर्वोत्तम गुण है। उसकी ईमानदारी उसकी प्रतिष्ठा से प्रदर्शित होती है। उससे ही वह समाज में प्रशंसनीय बनता है। व्यक्ति को सर्वप्रथम स्वयं के प्रति ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी दूसरों को धोखा देने के चक्कर में वह स्वयं को ही धोखा देता है।

* * *

ईमानदारी व्यक्ति के चरित्र को प्रदर्शित करती है। ईमानदार व्यक्ति में आत्मविश्वास झलकता है। वह जो भी कार्य करता है, उसमें सफलता का उसे पूर्ण विश्वास होता है, जबकि वह व्यक्ति, जो ईमानदार नहीं होगा, चापलूस होने के साथ-साथ दब्बू किस्म का भी होता है। उसके किसी भी कार्य में आत्मविश्वास की कमी होगी। वह किसी भी कार्य को करने से पूर्व सोचेगा कि वह यह काम किसकी सहायता से कर सकता है और जब वह उस प्रकार के

व्यक्ति को खोज लेगा तो उसकी चापलूसी में लग जाएगा। व्यक्ति के अंदर यह दुर्गुण उसकी असफलता की निशानी है।

* * *

लोग अपने विषय में बढ़ा-चढ़ाकर बात करते हैं, जबकि वे कुछ होते नहीं हैं। इस प्रकार वे स्वयं के प्रति ही ईमानदार नहीं होते, फिर दूसरों के प्रति ईमानदारी की बात तक सोचना भी बेमानी होगा। इस प्रकार सफल होने की बात तो समाप्त ही हो गई। इसलिए सर्वप्रथम स्वयं के प्रति ईमानदार होना अति आवश्यक है।

* * *

ईमानदारी एवं निष्ठा

किसी भी कार्य को पूरी ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक मन लगाकर करें। बोझिल मन से नहीं। अपने कार्यों का जुड़ाव इस तरह बनाएँ, जिससे कि आप उन्हें बिना किसी दबाव के खुशी-खुशी कर सकें। अपने अनुभवों से जो कुछ सीखा और समझा है, उस पर विश्वास करें।

* * *

ईर्ष्या

ईर्ष्या वह खतरनाक और नशीला कीड़ा है, जो व्यक्ति को एक बार काट ले तो वह हमेशा उसी के मद में चूर रहने लगता है और केवल दु:ख-ही-दु:ख प्राप्त करता है, क्योंकि वह केवल दूसरों को उन्नत देखकर परेशान रहता है। दूसरा सुखी है, तो उसके प्रति ईर्ष्या है, दूसरा सुंदर है, तो ईर्ष्या है, मेरी तरक्की क्यों नहीं हो रही, उसकी हो रही है, तो उसे ईर्ष्या है। उसकी सबसे मित्रता है, वह सबसे अच्छा व्यवहार करता है, सभी उसे चाहते हैं, मुझे नहीं, तो उसे ईर्ष्या है। क्यों नहीं, आप स्वयं भी वैसे ही बनें, जिससे आपको किसी से ईर्ष्या करने की आवश्यकता ही नहीं पड़े।

* * *

ईर्ष्या व्यक्ति को अंदर-ही-अंदर अग्नि के समान जलाती रहती है। ईर्ष्या की अग्नि व्यक्ति को क्रोधी बना देती है। वह व्यक्तियों को नीचा दिखाने के अवसर ढूँढ़ता रहता है।

* * *

छोटी-छोटी बातों से व्यक्ति के मन में ईर्ष्या के भाव पैदा होते हैं और धीरे-धीरे वे भाव विकराल रूप भी धारण कर सकते हैं। ईर्ष्या का भाव व्यक्ति के विचारों को मलिन करता है। उसके मन में गलत विचार पैदा होते हैं। गलत विचार व्यक्ति को गलत मार्ग पर ले जाते हैं। व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या तब करता है, जब वह दूसरों से गुणों में कमजोर हो। अपने अवगुणों के कारण वह सफल नहीं होता तो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं कर पाता और उसके मन में ईर्ष्या घर कर जाती है। ईर्ष्या के इस भाव से तभी बचा जा सकता है, जब असफल व्यक्ति दूसरों के गुणों को देखे, उन्हें अपनाए, उनसे प्रेरणा लेकर कार्य करे।

* * *

उत्साह

उत्साह वह गुण है, जो यह प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति में कितनी ऊर्जा है। किसी भी कार्य को करने के लिए व्यक्ति में भरपूर उत्साह होना चाहिए, बिना उत्साह के किया जानेवाला कार्य अनुचित परिणाम देता है। उत्साह व्यक्ति का वह महत्त्वपूर्ण गुण है, जो दृढ निश्चय, आत्मविश्वास, धैर्य, विवेक आदि जैसे उसके अन्य गुणों को

दोगुना कर देता है, जिससे वह व्यक्ति बिना बाधा के कार्य को करता जाता है और सफल होता है।

* * *

कोई भी कार्य उत्साह और सकारात्मक सोच के साथ प्रारंभ करना चाहिए। निरुत्साह से प्रारंभ किए जानेवाले कार्य का परिणाम क्या होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

* * *

कोई भी कार्य उत्साह से किया जाना चाहिए। उसके प्रति सदैव सकारात्मक सोच रहनी चाहिए। तब उत्साह का संचार स्वत: होता है, किंतु किसी को हतोत्साहित कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह जितना करता है, हतोत्साहित किए जाने पर और नीचे चला जाता है। हतोत्साहित करने पर व्यक्ति को निराशा, हीन-भावना आदि दुर्गुण घेर लेते हैं, जो उसे जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं देते। भाग्य निर्माण व सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साह से कार्य करें और दूसरों को भी उत्साहित करें। सफलता निश्चित मिलेगी।

* * *

निरुत्साह से किया जानेवाला कार्य कभी पूरा नहीं होता, क्योंकि उसका प्रारंभ ही उचित नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति उत्साह से कार्य करता है तो वह केवल स्वयं ही कार्य नहीं करता, अपितु उसे देखकर अन्य लोगों का भी उत्साह बढ़ता है कि वे भी ऐसा कर सकते हैं। और वे भी प्रेरणा लेकर उत्साह से भर जाते हैं।

* * *

व्यक्ति में उत्साह तीन प्रकार से जाग्रत् होता है—एक तो वह स्वयं ही कार्य को पूर्ण करने की लगन में पूर्ण उत्साह से उसे करता है। दूसरे, जब वह अन्य किसी से प्रेरित होता है और तीसरा, जब व्यक्ति को बड़ा काम करने कि लिए प्रोत्साहित किया जाए। उत्साहवर्द्धन वह विद्या है, जो मरते हुए के लिए संजीवनी की तरह कार्य करती है।

* * *

व्यक्ति के उत्साह को देखकर उसके आसपास के लोग भी उत्साह से भर जाते हैं—केवल वे, जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, वे ही ऐसी प्रेरणा ग्रहण करते हैं। दरअसल उत्साह उन लोगों का गहना है, जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

* * *

उद्देश्य

भाग्य बदलने के लिए यह अत्यंत जरूरी है कि आपका उद्देश्य स्पष्ट हो, साथ ही आपको इस बात की भी समझ होनी चाहिए कि उद्देश्य प्राप्ति के बाद आपकी आगामी कार्ययोजना क्या होगी। जो लोग अपने इरादों को मजूबत रखते हैं, निश्चित रूप से वे कामयाब रहते हैं। जो लोग अपने उद्देश्यों के प्रति सदैव जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहते हैं, वे धीरे-धीरे अपने इरादों में मजबूत हासिल करते चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि कामयाब लोगों के लिए हालात हमेशा उनके मुताबिक ही रहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि बिल्कुल उल्टे हालातों में लोगों ने संघर्ष करते हुए अपनी मंजिलें तय की हैं। मुश्किलों से घबरा कर पीछे लौट जानेवालों के हिस्से में कामयाबी कभी नहीं आती।

* * *

उद्देश्यहीनता

जिनका कोई उद्देश्य नहीं, वे अपना जीवन निरुद्देश्य गुजार देते हैं। उन्हें अच्छी शिक्षा भी गलत लगेगी और

गलत को वे अच्छी मानकर अपना लेंगे। परंतु अंत में असफल होकर पछतावे के अतिरिक्त उनके हाथ कुछ नहीं लगता।

* * *

एकाग्रता

कोई भी काम यदि एकाग्रता से किया जाए तो वह अवश्य पूरा होता है, लेकिन ध्यान रखना होगा कि वह एकाग्रता दिखावटी न हो।

* * *

कड़ी मेहनत

यदि कोई दूसरा व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने में असफल रहता है तो यह जरूरी नहीं कि उस लक्ष्य को पाने में आप भी असफल हो जाएँगे। जरूरी है कि आप लक्ष्य को पाने के लिए उससे कड़ी मेहनत करें और यह भूल जाएँ कि दूसरों को किस तरह कि समस्या का सामना करना पड़ा।

* * *

कर्म

कर्म ही पूजा है। कर्म व्यक्ति को महान् बनाते हैं। कर्म से ही व्यक्ति की पहचान है। जब भी दो व्यक्ति मिलते हैं तो सर्वप्रथम प्रश्न यही होता है कि 'आप क्या करते हैं?' कर्म से ही ज्ञात होता है कि फलां व्यक्ति क्या है? कर्म भले ही कोई भी हो, वही उस व्यक्ति की पहचान निश्चित करता है।

* * *

कर्महीन व्यक्ति आलसी, चापलूस, मूर्ख, नकारा होने के साथ-साथ भाग्य के सहारे जीने वाले होते हैं। उनका उन्नति का मार्ग प्राय: अवरुद्ध रहता है। वे बस भाग्य को पकड़े बैठे रहते हैं और कर्महीन होते जाते हैं। जबकि कर्म का ही महत्त्व है। कर्म से ही संसार है। प्रकृति भी कर्म करती है।

* * *

व्यक्ति को सौभाग्य-दुर्भाग्य के सहारे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। उसे अपना कर्म करते रहना चाहिए। अन्यथा इतना समय निकल जाता है कि फिर उसके लिए केवल यही कहने को बचता है कि 'मेरा दुर्भाग्य था कि मैं कुछ नहीं कर सका, मैं सफल नहीं हो सका।' कार्य को पूर्ण ईमानदारी, लगन, मेहनत से करने पर ही व्यक्ति की चहुँ ओर प्रशंसा होती है और वह सभी का पूज्य हो जाता है।

* * *

हम जो भी हैं, जो कुछ भी करते हैं, वह तभी होता है, जब हम उसे वास्तव में करना चाहते हैं। जहाज समंदर के किनारे सर्वाधिक सुरक्षित रहता है। मगर क्या आप नहीं जानते कि उसे किनारे के लिए नहीं, बल्कि समंदर के बीच में जाने के लिए बनाया गया है?

* * *

कर्म-कर्तव्य

जो व्यक्ति कर्म को अपना कर्तव्य समझकर करता है, वही कर्म उसे परम लक्ष्य प्राप्त कराता है, व्यक्ति को सफलता देता है। इसलिए कर्म को कर्तव्य समझकर कर्मानुसार करें। इस प्रकार किया गया कार्य व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से अलग करता है, भीड़ से अलग।

* * *

कर्मठता

कुछ लोग कहते हैं, यह भी कोई जिंदगी है कि हर घड़ी काम करते रहो। बहुत दिन जीने के लिए आराम बड़ा जरूरी है। ऐसा कहने में एक बुनियादी दोष है। हर घड़ी काम करने का मतलब यह नहीं है कि आदमी कभी आराम ही न करे। उसका मतलब है, आदमी कर्मठ रहे, आलस न करें। सच बात यह है कि निष्क्रिय जीवन से बढ़कर दूसरा अभिशाप नहीं है। जो लोग क्रियाशील रहते हैं, वे काम करने का संतोष पाते हैं और अपनी प्रसन्नता से धरती का बोझ हल्का करते हैं। इसके विपरीत जो काम से बचते हैं, वे स्वयं तो परेशान होते ही हैं, समाज में भी बड़ा दूषित वायुमंडल पैदा करते हैं। कर्ममय जीवन दूसरों पर अच्छा असर डालता है, आलसी दूसरे को आलसी बनाता है।

* * *

कल

कल अर्थात् आनेवाला कल, जो कभी नहीं आता है और हमेशा कल ही बना रहता है। बहुत से लोगों की यह आदत होती है कि किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा कल पर निर्भर रहते हैं कि कल कर लेंगे। मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं, जो उसे लाभान्वित करते हैं, अर्थात् वे क्षण उसे सफल बनाते हैं, लेकिन किन्हें? केवल उन्हें, जो उस अवसर को भाँपकर उसका लाभ उठाते हैं। और जो उसे कल पर छोड़ देते हैं, वे कल का ही इंतजार करते रह जाते हैं।

* * *

कल हमेशा कल ही बना रहता है। बहुत से लोगों की यह आदत होती है कि किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा कल पर निर्भर रहते हैं कि कल कर लेंगे। व्यक्ति जीवन में कभी-कभी बहुत से ऐसे क्षण भी आते हैं, जो उसे लाभान्वित करते हैं अर्थात् वे क्षण उसे सफल बनाते हैं, लेकिन जो उन्हें कल पर छोड़ देते हैं, वे कल का ही इंतजार करते रह जाते हैं।

* * *

काम पर ध्यान

किसी भी चीज से पीछा छुड़ाने के लिए हमेशा यह कहें कि मैं इस विषय पर बात नहीं करना चाहता हूँ या यह मामला खत्म हो गया है। इस तरह की बातों के प्रति यह भी कहा जाता है कि मैं अपने आपको इस विषय में बात करने में असहज महसूस कर रहा हूँ। यदि आपका ऐसे लोगों से सामना होता है, जो आपसे यह जानना चाहते हैं कि असफल होने पर आप क्या करेंगे तो उनसे आप सीधे कहें कि मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह से कर रहा हूँ।

* * *

जिन बातों से आपको चिढ़ होती है, वैसी बातें न तो किसी से कहें और न ही कही गई बातों पर ध्यान दें। बहुत से लोगों की आदत होती है कि वे अपनी मनोभावनाओं को चुटकुलेबाजी या किसी और तौर-तरीकों से जाहिर करके सामनेवाले को नीचा दिखाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को सहानुभूतिपूर्वक उपेक्षित कर देना ही उचित है।

* * *

काम बोझ नहीं

काम को काम समझें बोझ नहीं। यदि किसी कारणवश वह पूरा न हो पाए तो बेवजह भावनाओं में न बहें। इससे

आप दूसरे कार्यों को पूरी क्षमता के साथ नहीं कर पाएँगे। काम का दायरा बेवजह न फैलाएँ। एक काम को पूरा करने के पश्चात् ही दूसरे काम को हाथ में लें।

* * *

काम से प्यार

हमारी तीन महत्त्वपूर्ण संपत्तियाँ हैं—शरीर, समय एवं मनोवृत्ति। सफलता के ये तीन नियम हमेशा याद रखें—मेहनत, आत्मविश्वास एवं आत्मविकास। कोई भी काम सिर्फ काम चलाने के लिए नहीं, परंतु आगे बढ़ने के लिए करें। यदि आप पूरी जिंदगी के लिए खुशी चाहते हैं तो अपने काम से प्यार करना सीखें।

* * *

कारवाई

जब कोई कार्य आरंभ करें, तो उस समय आपको उसमें जो घात-प्रतिघात उत्पन्न होते दिखाई दे, उनका स्वप्न देखने में समय नष्ट न करें। यदि विषैले कीड़े से बचना है तो उसके डंक को मसल डालो। कठिनाइयों पर बार-बार विचार करने से कठिनाइयों का भूत ऐसा प्रबल और दीर्घकाय प्रतीत होने लगता है कि फिर उस कार्य से हाथ पीछे खींचना पड़ता है।

* * *

कार्यक्षमता

हम अपने काम करने की क्षमता को बढ़ा सकते हैं, बशर्ते हम अपने समय का ठीक तरह खयाल रखें। इसे नष्ट न करें। इसके हिसाब से काम करने की योजना बनाएँ। अगर आप समय बरबाद करते हैं, तो तनाव बढ़ता है, तरह-तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं और ध्यान लक्ष्य से भटक जाता है। इसके साथ ही आपकी उत्पादकता में भी कमी आ जाती है।

* * *

कार्य-निर्धारण

एक दिन पहले ही यह विचार कर लीजिए कि कल आपको कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण काम करने हैं और इनमें अधिकतम समय कितना लगाना है। ताकि आप अन्य कार्यों को भी सहजता से पूरा कर सकें। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि आपको अपनी प्राथमिकताएँ भी स्पष्ट हो जाएँगी और साथ ही आप निर्धारित समय में काम को पूरा करना भी सीख जाएँगे।

* * *

कार्य-प्राथमिकता

महत्त्वहीन विवरण में न फसें। आप कभी भी कार्यों को उस तरीके से नहीं कर सकते, जैसा कि आपने सोच रखा है, ऐसा करना अप्रभावी होगा। कार्य को प्राथमिकता के अनुसार करें। चूँकि आप सभी काम को अकेले नहीं कर सकते, अत: जरूरी काम पहले कर लें, बाकी रहने दें। दूसरों को भी काम करने दें। कोई काम यदि ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है और उसे दूसरे भी कर सकते हैं तो वैसे काम दूसरों को करने दें। इससे आप और महत्त्वपूर्ण काम में अपना ध्यान लगा सकेंगे।

* * *

कार्य-समायोजन

आपका समय जिस भी काम करने से नष्ट होता है या इससे आप अपने काम से दूर होते जाते हैं। एक काम और दूसरे काम के बीच 5-10 मिनट का अवकाश रखें, इससे पहले काम को समेटने में भी थोड़ा समय मिल जाएगा। अपने कार्यों का समायोजन इस तरह बनाएँ, जिससे कि आप उन्हें बिना किसी दबाव के खुशी-खुशी कर सकें।

* * *

कुंठित विचार

अपनी सफलता को भाग्य, भ्रष्टाचार व धन की कमी जैसे कुंठित विचार लाकर अवसर को मत टालिए, जुट जाएँ सफलता पाने की चेष्टा में। इस प्रकार आप आत्मसम्मान से इस समाज में जी सकते हैं।

* * *

क्रमबद्धता

अपनी दुर्बलताओं की पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें। स्वयं सीखने और अनुभव-प्राप्ति के स्वभाव को विकसित करें। सामाजिक सक्रियता बनाए रखें, इससे आपको सफलता मिलने में आसानी होगी। लक्ष्य सदैव एक रखें। दो लक्ष्य रखने पर आपकी स्थिति दो नावों पर एक साथ पैर रखकर सफर तय करने की हो जाएगी, जिसमें आपका डूबना निश्चित है।

* * *

क्रोध

क्रोध करनेवालों से लोग कटने लगते हैं, अर्थात् उनसे दूर भागने लगते हैं। उनसे बात करने में कतराने लगते हैं, क्योंकि न जाने कब वे भड़क जाएँ और झगड़ा हो जाए। एक तरह से ऐसे व्यक्ति समाज से कट जाते हैं, जो उनकी सफलता के लिए अत्यंत घातक होता है। क्रोध व्यक्ति का एक बहुत ही घातक अवगुण है। किसी भी कार्य में सफलता और अपना भाग्य बदलने के लिए इस अवगुण पर विजय पाना अत्यंत आवश्यक है।

* * *

क्रोध के बढ़ने पर व्यक्ति का मन, बुद्धि आदि उसके वश में नहीं रहते। तब व्यक्ति को केवल वही करना पड़ता है, जो क्रोध चाहता है। वह व्यक्ति को असफलता, अपराध, गलत निर्णय आदि की ओर ले जाता है।

* * *

क्रोध प्राय: साधारण कारणों से उत्पन्न होता है और साधारणत: ही उसे समाप्त भी किया जा सकता है, जो शांतचित्त, आत्मविश्वास, दृढ निश्चय से नियंत्रित हो सकता है।

* * *

क्रोध व्यक्ति का एक बहुत खतरनाक अवगुण है। क्रोध वह कीड़ा है, जो सूक्ष्म रूप में व्यक्ति के अंदर घुसता है। यदि उस कीड़े पर तुरंत नियंत्रण नहीं किया जाए तो वह विकराल रूप धारण कर लेता है और व्यक्ति को विनाश के मार्ग पर धकेल देता है।

* * *

क्रोध ही है, जो व्यक्ति को मूढ़ बना देता है। बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी क्रोध के बंधन में बँधकर विनाश करता है। क्रोध पर विजय पानेवाला सफलता प्राप्त करता है। क्रोध से बचने के लिए मन में शांति बनाए रखना आवश्यक है। व्यर्थ की बातों में नहीं उलझना चाहिए, प्रसन्न रहकर क्रोध के आवेग को रोकना चाहिए।

* * *

क्रोधी व्यक्ति आवेश में आकर हत्या या आत्महत्या तक कर लेता है। कोई-कोई बात उसे सहन नहीं होती और आवेश-ही-आवेश में वह अपनी जीवन-लीला समाप्त कर बैठता है, क्योंकि क्रोध उसकी बुद्धि को हर लेता है, उसके सोचने-समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है। लेकिन जो व्यक्ति इस आवेश पर काबू पा लेता है, वह घातक क्रोध से बचकर स्वयं का नुकसान होने से तो बचाता ही है, साथ ही दूसरों को भी नुकसान से बचाता है। आवेश क्षणिक होता है। व्यक्ति शांत रहकर उसे शांत कर सकता है।

* * *

प्रसन्नचित्त रहना क्रोध न आने की प्रमुख औषधि है, जो ब्रह्मास्त्र की भाँति कार्य करती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति को या तो बहुत कम क्रोध आता है या आता ही नहीं है, क्योंकि क्रोध के दुष्परिणामों को वह जानता है। क्रोध समाप्त होने पर ही व्यक्ति को स्वयं की भूल ज्ञात होती है कि उसने क्या खोया, क्या पाया। क्रोध व्यक्ति को असफलता के पास तो पहुँचाता ही है, साथ उन लोगों को भी आहत करता है, जो उसकी क्रोधाग्नि की चपेट में आते हैं। क्रोधी व्यक्ति का मानसिक संतुलन कभी ठीक नहीं रहता।

* * *

बहुत से क्रोधी व्यक्ति आसपास देखे जा सकते हैं, जो क्रोध में ऐसे पागल होते हैं कि बस। जैसे—एक बार किसी व्यक्ति को हाथ पर थोड़ी सी चोट लग गई। उस पर एक मक्खी मँडराने लगी। व्यक्ति उसे बार-बार उड़ाता, लेकिन वह फिर आकर बैठ जाती। जनाब का पारा सातवें आसमान पर। उन्होंने झपट्टा मार कर मक्खी को पकड़ा। मक्खी में जान ही कितनी होती है, बेचारी मर गई। परंतु उनका क्रोध शांत नहीं हुआ। उसे एक पत्थर पर रखा और हथौड़े से पीट-पीटकर ऐसा कर दिया कि पता ही नहीं लगा कि उसे कुचला या पत्थर तोड़ा। यह क्रोध था या हैवानियत? तनिक क्रोध में वह व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठा और मरी हुई मक्खी को हथौड़े से पीटने लगा।

* * *

व्यक्ति क्रोध से स्वयं को जलाता है, क्योंकि इससे वह स्वयं का ही अधिक नुकसान करता है। क्रोधी व्यक्ति से तनिक भी वार्त्तालाप झगड़े का कारण बन सकता है, क्योंकि वह छोटी सी बात भी सहन नहीं कर सकता और अपने आवेग को रोक नहीं पाता।

* * *

क्षमता

अपनी क्षमताओं को समझें। आत्मसम्मान की भावना विकसित करें। प्यार की भाषा बोलें। किसी के साथ ऐसा व्यवहार बिल्कुल भी न करें, जैसा कि आप अपने लिए नहीं चाहते हैं। समझदारी और विश्वास का सही इस्तेमाल करना सीखें। किसी की बातों पर पूरी तरह भरोसा तो करें, लेकिन मन में एक प्रश्न चिह्न भी रखें। इससे आप धोखा नहीं खाएँगे।

* * *

क्षमता-ज्ञान

रेस में दौड़ने पर ही व्यक्ति को अपनी क्षमता का ज्ञान होता है। संभव है कि एक-दो बार वह असफल हो जाए, लेकिन उस असफलता से उसकी आस्था बढ़ जाती है और एक दिन वह सफलता प्राप्त कर लेता है।

* * *

क्षमताहीन व्यक्ति यदि व्यक्ति में स्वयं व्यक्तित्व-विकास की क्षमता होगी तो उसे बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह स्वयं अपनी क्षमता का उपयोग कर अपने व्यक्तित्व का निर्माता स्वयं कर सकता है। और यही गुण व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाते हैं, जबकि क्षमताहीन व्यक्ति व्यक्तित्व विकास के अवसर ही खोजता रह जाता है।

* * *

खूबियाँ

हमारे भीतर जो भी खूबियाँ हैं, हमें उनका दिल खोलकर उपयोग करना चहिए। हम जिस वस्तु को उपयोग में नहीं लाते, वह धीरे-धीरे समाप्त होती चली जाती है। हम यदि अच्छे हैं, हमारी सोच अच्छी है तथा हम लोगों की भलाई के बारे में विचार करते हैं तो उसको प्रकट करना भी सीखिए।

* * *

गलत नीति

साम, दाम, दंड, भेद जैसी नीतियों का प्रयोग करके मिली सफलता स्वयं को पूर्ण संतुष्ट नहीं कर पाती। इस प्रकार की सफलता किसी को प्रेरणा नहीं दे सकती, क्योंकि उस सफलता के पीछे न तो उस व्यक्ति का दृढ निश्चय होता है, न आत्मविश्वास और न ही मेहनत।

* * *

गलतियाँ

उपलब्धि तथा श्रेय कोशिश एवं नाकामी के स्वाभाविक मार्ग पर उगे हरे छायादार वृक्षों-जैसे हैं। बहुत कम लोग समझ पाते हैं कि हमारी साहसिक गलतियाँ ही सफलता की सीढ़ियाँ बन जाती हैं। पराजय हमारी असफलता का कारण नहीं हैं, बल्कि पराजय में जो सीख, नसीहत तथा अनुभव छिपा है, उसे न पहचान पाना ही हमें असफल बनाता है। हमें चाहिए कि हम स्वीकारना सीखें, अपनी गलतियों तथा उपलब्धियों के साथ जुड़ी जिम्मेदारियों को।

* * *

हम खेलने में कम उसकी हार-जीत में अधिक दिलचस्पी रखते हैं। हम जमकर खेलना नहीं चाहते और सपने देखते हैं कि सुरक्षित तरीके से जीत को कोई आकर हमारी गोद में रख जाए। बहुत से लोग हैं, जो अपनी गलतियों को रोमांचक नहीं बना पाते। हमें अपने बारे में, अपने प्रयासों के बारे में विचार करना चाहिए। हमें बिना किसी हील-हुज्जत के अपनी खूबियाँ, खामियाँ कबूल करनी चाहिए।

* * *

गुण

अच्छे गुण होंगे तो आदमी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाएगा, क्योंकि कार्यकुशलता ही सर्वोत्तम गुण है, जिसके कारण व्यक्ति को सम्मान मिलता है।

* * *

जो अपने गुणों को अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रस्तुत करता है, वह सफलता की ओर अग्रसर होता है। गुण सभी में होते हैं, अर्थात् सभी में कुछ-न-कुछ गुण होते हैं, लेकिन गुणी वही होता है, जो अपने गुणों का सही उपयोग जानता हो।

* * *

गुणावगुण

अवगुण व्यक्ति के वे दोष हैं, जो उसे नकारा, आलसी, चापलूस, अभिमानी, क्रोधी, लालची तो बनाते ही हैं, साथ ही उसे अंदर से खोखला भी कर देते हैं, अर्थात् यह कहा जा सकता है कि ये वे दीमक हैं, जो व्यक्ति को असफलता तो देते ही हैं साथ ही उसे नष्ट भी कर देते हैं।

* * *

अवगुण व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति को समाप्त कर देते हैं। उसे जीवन में नकारात्मकता का पाठ पढ़ाते हैं। उसे उसके गुणों से विमुख कर देते हैं। उसे कुंठित कर देते हैं। इन अवगुणों से बाधित होकर वह अपना कर्म भूलकर अपने कार्यों को बिगाड़ना प्रारंभ कर देता है और जीवन में असफल हो जाता है। इन अवगुणों के कारण व्यक्ति स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु समाज के लिए भी हानिकारक होता है, क्योंकि वह स्वयं तो कुछ कर नहीं सकता, बल्कि जहाँ रहता है, वहाँ के वातावरण को भी दूषित कर देता है।

* * *

चलते रहो

अपने मस्तिष्क को अपना रास्ता स्वयं खोजने की शक्ति दीजिए। मेहनत कीजिए, लेकिन बिना योजना के नहीं। एक-एक कदम उठाइए। जब एक कदम उठा चुके हों, तब तैयारी करें। आकांक्षा क्षणिक नहीं होती, न ही उन्मादी होती है। आवेग कहता है—रुको मत, चलते रहो। ढलो मत, निखरते रहो।

* * *

चापलूसी

चाटुकार व्यक्ति अपना काम निकालने के लिए नई-नई योजनाएँ बनाता रहता है। इसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े, चाहे लोगों का काम करना पड़े, जी-हजूरी, बच्चों को घुमाना, बाजार से सामान लाना, उनकी झूठी प्रशंसा करना इत्यादि। चापलूस व्यक्ति इन अवगुणों का भंडार होता है। वह कर्तव्य को भूलकर ऐसे कार्यों को करने लगता है, जो उसे असफल बनाते हैं, क्योंकि फिर उसके जीवन का लक्ष्य केवल चापलूसी ही हो जाता है। वह केवल जी-हजूरी करके अपने को पथभ्रष्ट करते रहते हैं। साथ ही दूसरों को भी स्वयं जैसा बनाने का प्रयास करते हैं।

* * *

चापलूस में कोई गुण नहीं होता। यह जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं देती। चापलूसी एक अभिशाप है। इससे बचना चाहिए और अपने आत्मसम्मान, अपने गुणों को पहचानकर उनके अनुसार कार्य करना चाहिए। इस प्रकार कठिन-से-कठिन कार्य आपके गुणों के कारण सरल एवं सिद्ध हो जाएगा। चापूलसी अस्थायी दर्द निवारक औषधि है, अत: इसे स्थायी समाधान के लिए नहीं लिया जा सकता।

* * *

चापलूसी वह दुर्गुण है, जो चापलूस व्यक्तियों को दूसरों का गुलाम बनाए रखता है, क्योंकि चापलूस व्यक्तियों में वे गुण नहीं होते हैं, जिनके बल पर वे जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। इसलिए वे प्राय: अपना काम बनाने के लिए दूसरों की जी-हजूरी में लगे रहते हैं।

* * *

चाह से राह

जहाँ चाह होती है, वहीं राह होती है। काम के प्रति आशावान होना सफलता की निशानी है। जो रेस में दौड़ता है, वही विजय पाता है। जो डूबता है, वही अथाह सागर से हीरे-मोती निकालने में सफल होता है। जो चढ़ पाता है, वही पेड़ से फल तोड़ सकता है। अन्यथा नीचे खड़ा-खड़ा या तो पत्थर मारता रहता है या फल के गिरने की प्रतीक्षा करता है।

* * *

चिंता

अधिकतर व्यक्ति भविष्य की चिंता में अपना वर्तमान चौपट कर लेते हैं। बस वे सोचते रहते हैं कि आनेवाले समय में क्या होगा? यह चिंता उन्हें घेरती है, तो वे आज को भी भूल जाते हैं। आज के कार्य के लिए उनके पास जो ऊर्जा होती है, उसे वे भविष्य के विषय में सोचकर समाप्त कर देते हैं। चिंता कोई औषधि है, जिसे लेने से वह समस्या हल हो जाएगी। चिंता औषधि नहीं, अपितु एक धीमा विष है, जो व्यक्ति को धीरे-धीरे क्षीण करता जाता है।

* * *

चिंता को ढूँढ़ने के लिए व्यक्ति को कहीं जाना नहीं पड़ता, अपितु यह कहें कि चिंता अपने शिकार को स्वयं ढूँढ़ लेती है। व्यक्ति चिंता के अनेकानेक कारण बना लेता है। घर-परिवार की चिंता, बच्चे की बीमारी, पढ़ाई आदि की चिंता, नौकरी की चिंता, शादी की चिंता, धन की कमी, आस-पड़ोस सुखी है, उसे लेकर चिंता, सफेद होते बालों की चिंता, वृद्धावस्था की चिंता, आदि-आदि। व्यक्ति पग-पग पर चिंता के कारण बना लेता है और उन्हें जबरदस्ती गले लगाकर बैठ जाता है। स्वयं को भ्रम की स्थिति में रखता है। मृत्यु अटल है। उसकी चिंता कि कहीं मृत्यु न आ जाए? मेरे बाद क्या होगा?

* * *

चिंता वह दीमक है, जो व्यक्ति को अंदर-ही-अंदर खोखला कर देती है। कोई भी ऐसी समस्या नहीं है, जो चिंता करने से सुलझती हो अथवा चिंता उसका हल हो, अपितु चिंता को छोड़कर उस समस्या को हल करने के उपायों से समस्या सुलझती है। जो व्यक्ति चिंता जैसे महादुर्गुण पर काबू पा लेता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

* * *

चिंता व्यक्ति की योग्यता को चट कर जाती है, क्योंकि चिंता के कारण वह कहीं और ध्यान नहीं लगा पाता तथा अपनी आंतरिक शक्ति को भूल जाता है। समस्या को कैसे सुलझाना है, उसे भूलकर वह केवल समस्या पर केंद्रित रहता है और उसके चारों ओर घूमता हुआ स्वयं को रोगों से ग्रस्त कर लेता है। इसके विपरीत यदि वह उस समस्या के हल को खोज ले तो न समस्या रहेगी, न ही चिंता।

* * *

चिंता से भागना नहीं चाहिए, क्योंकि चिंता आपको छोड़ेगी नहीं। वह आपके ही साथ लगी रहती है। लेकिन चिंता को कैसे भगाया जा सकता है? उसका उपाय यही है कि चिंता के प्रति अपनी मानसिकता बदलें अर्थात् चिंता से मुक्ति पाने के उपाय अपनाएँ। चिंता बाहरी नहीं होती कि उसे कपड़ों की तरह उतारकर एक ओर रख दिया जाए। चिंता व्यक्ति के अंतर्मन में बसती है। अत: मन को वश में करने पर चिंता दूर होती है। अपने मन को वश में करके उस समस्या का हल ढूँढ़ना चाहिए, जिसके कारण चिंता मन में घर बनाती है।

* * *

जिस प्रकार बिजली चले जाने पर ही दीपक, मोमबत्ती, लालटेन आदि को जलाया जाता है, उसी प्रकार जब समस्या उत्पन्न हो, ठीक तभी उसे सुलझाना चाहिए। यदि उसके विषय में पहले से सोचकर तनाव पाला जाए जैसे —रात में बिजली चली गई तो? यदि मोमबत्ती नहीं मिली तो? दीपक टूट गया तो? लालटेन का काँच टूट गया तो? बत्ती हवा से बुझ गई तो? ये बातें चिंता का कारण बनती हैं। कहने का अर्थ यह है कि समस्या को सामने उपस्थित होने पर ही सुलझाना चाहिए न कि उसके विषय में पहले से ही सोच-सोचकर परेशान होना चाहिए।

* * *

व्यक्ति अकारण परेशानियों को इतना एकत्र कर लेता है कि उसे उनकी चिंता सताने लगती है और वह अपनी खुशियों को अपनी सफलता को उनमें उलझा डालता है, जो व्यक्ति को निष्क्रिय कर उस पर आधिपत्य जमा लेती हैं। फिर व्यक्ति छटपटाता रहता है, लेकिन उनसे मुक्त नहीं हो पाता। बहुत ही कम लोग इनसे छुटकारा पाने में सफल होते हैं। वे लोग, जो वास्तव में छुटकारा पाना चाहते हैं अर्थात् वे ही चिंता से मुक्ति पाते हैं, जो चिंता का त्याग करते हैं।

* * *

भय की आशंका चिंता को जन्म देती है। कहीं ऐसा न हो जाए, वैसा न हो जाए, उधर कोई है, उसने मुझसे ऐसे कहा, आदि-आदि विचार चिंता के मुख्य कारण हैं। व्यक्ति का कोई कार्य न होने पर या कोई अन्य कारण से वह चिंताग्रस्त हो जाता है। धीरे-धीरे चिंता उसे अनेक रोगों, जैसे—रक्तचाप, हृदयाघात आदि से जकड़ लेती है, जो व्यक्ति की सफलता के लिए घातक होते हैं।

* * *

चिंता नहीं चिंतन

चिंता ऐसा विकार है, जो मन-मस्तिष्क को झकझोर कर रख देता है। इसलिए चिंता नहीं चिंतन कीजिए, यह सोचिए आप औरों से बेहतर क्यों हैं? इस सवाल का जबाव यदि आप स्वयं से पूछते हैं तो आपकी चिंताओं का निवारण स्वयं हो जाएगा।

* * *

जिम्मेदारी

अकसर अपनी जिंदगी में हम लोगों से सुनते आए हैं कि हम जिम्मेदारी के कारण जिंदगी का मजा नहीं ले पाते हैं। जिन पर जिम्मेदारी नहीं होती, वह मस्त मलंग की तरह सुख से जीता है। यह बात बिल्कुल सही नहीं है। विश्व में अधिक ऊँचाई पर पहुँचनेवाले सभी लोग जिम्मेदार होते हैं या यह कहें कि जो लोग जिम्मेदार होते हैं, वे ही ऊँचाइयों को छू सकते हैं। जिम्मेदार व्यक्ति की व्यापार, व्यवहार और समाज में कद तथा इज्जत होती है।

* * *

कई लोग जिम्मेदारी से घबराते हैं। जिम्मेदारी उन्हें तनावग्रस्त कर देती है। उनका मन सतत जिम्मेदारी से दबा सा रहता है। कुछ लोग नींद का भी सुख नहीं ले पाते। वे तनावयुक्त रहते हैं, यह देखकर कि अमुक व्यक्ति उनकी बात ही नहीं सुनता या मेरा बच्चा मेरी बहुत अवज्ञा करता है। निस्संदेह जिम्मेदारी कई की नींद हराम कर देती है। क्यों न हम अपने जीवन के कुछ ठोस सिद्धांत बना लें।

* * *

जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना स्वयं को असफलता की ओर ले जाना है। व्यक्ति को सदैव अपनी जिम्मेदारियों को

निभाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। व्यक्ति की जिम्मेदारी मात्र स्वयं के लिए ही नहीं है, बल्कि अपने परिवार, अपने समाज, अपने देश के प्रति भी निभानी पड़ती है।

* * *

जिम्मेदारी निभाने वाला व्यक्ति ही भाग्य निर्माण व सफलता की ओर बढ़ता है, क्योंकि वह जिम्मेदारी उठा सकता है। जिम्मेदारी लेना, उसे पूर्ण करना साधारण कार्य नहीं है। जिम्मेदार व्यक्ति अपने कार्यों के प्रति सर्वदा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे किया जाता है।

* * *

जिम्मेदारी व्यक्ति को एक आदर्श रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करती है। व्यक्ति को जिम्मेदारी का अहसास होना, उसके भाग्य निर्माण व सफलता के लिए अत्यावश्यक है। जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझता है, उसे ही किसी जिम्मेदारी को पूर्ण करने का दायित्व सौंपा जाता है, गैर जिम्मेदार को नहीं।

* * *

व्यक्ति महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार व्यक्ति इससे दूर भागता है, वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह अवगुण व्यक्ति को असफल बनाता है। इसलिए सफलता के लिए व्यक्ति में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

* * *

हर मनुष्य कोई-न-कोई जिम्मेदारी वहन करता है। कोई अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार है तो कोई किसी अन्य कार्य के लिए। किसी को नगर की जिम्मेदारी है, तो किसी को संपूर्ण राष्ट्र की। जिम्मेदारी सँभालना व जिम्मेदारी लेना मनुष्य में गुणों की उत्पत्ति करता है। जो व्यक्ति सफलता व सरलतापूर्वक जिम्मेदारी निभाता है, वह दिनोदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है।

* * *

हर व्यक्ति शरीर-रक्षा, परिवार-व्यवस्था, समाज-निष्ठा, अनुशासन का परिपालन आदि कर्तव्यों से बँधा हुआ है। जिम्मेदारियाँ निभाने पर ही मनुष्य का शौर्य निखरता है। इसी आधार पर विश्वास बनता है और विश्वसनीयता के आधार पर एक धारणा बनने लगती है, जिसके अनुसार उन्हें अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं। उन्हीं को प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचने का सुअवसर प्राप्त होता है। जिम्मेदार व्यक्ति का ही व्यक्तित्व निखरता है।

* * *

जीवन-नियंत्रण

हम चेतन मन एवं विचारों से अपने अवचेतन विचारों, विश्वासों एवं अनुभवों को नियंत्रित कर सकते हैं। विचारों के निर्माता हम ही हैं। अत: हमें इन पर नियंत्रण रखने आना चाहिए। मात्र विचार बदलने से ही जीवन-नियंत्रण की प्रक्रिया की शुरुआत हो जाती है। यदि हम सोचने लगे कि हम स्वयं ही अपने भाग्य विधाता एवं निर्माता हैं तो वास्तव में ऐसा होना प्रारंभ हो जाएगा। विश्वास से बड़ी कोई शक्ति नहीं है।

* * *

जीवनोपयोग

मनुष्य को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह खुद ढाल ले अपने वातावरण को, अपने घर को और मित्रों के दायरे को, अपने रोजगार को तथा सारे कामकाज को। इस तरह मनुष्य अपने जीवन का संपूर्ण उपयोग कर सकता

है।

* * *

जोखिम

गहरे पानी में उतरने की तैयारी ही इस बात की सूचना है कि हम जोखिम उठाने के लिए मन बना चुके हैं। खतरा मोल लिये हैं, क्योंकि बिना समुद्र के गहरे पानी में उतरे मछली नहीं पकड़ी जा सकती। हिमालय की चोटी पर नहीं पहुँचा जा सकता, चाँद के घर मेहमान नवाजी नहीं की जा सकती। जोखिम उठानेवाले लोग जीवन में उत्साह से भरे होते हैं। जोखिम से बचने का मतलब है, अपनी जगह खड़े रहना, कुछ करना नहीं, कुछ सीखना नहीं...आदि। भला ये भी कोई जीवन है?

* * *

जिसने जोखिम उठाना नहीं सीखा, वह संकट के समय घबरा जाता है। जोखिम उठाने की आदत डालकर आत्मविश्वास पैदा कीजिए तथा अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाइए। ध्यान रखिए जितने अधिक परिश्रम व शक्ति के साथ कोई कार्य किया जाएगा, उसके सफल होने के अवसर भी उतने ही गुना बढ़ जाएँगे।

* * *

जोखिम उठाना जीवन जीने का एक तरीका है। कहा भी गया है कि बिना जोखिम उठाए लाभ नहीं मिलता। जितना बड़ा खतरा होता है, उतना ही अधिक लाभ होता है।

* * *

जोखिम उठाने की आदत डालने के लिए किसी खतरे में पड़ने या अवसर की तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ती। अवसर तो हर समय, हर जगह आते ही रहते हैं। हर निर्णय में जोखिम का हिस्सा रहता है। अत: किसी भी कार्य को पूर्ण मनोभाव से करना चाहिए। डरने की आदत छोड़नी होगी, तभी हम अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकेंगे।

* * *

ज्ञान

अज्ञानी व्यक्ति केवल अंधकार में भटककर अपने जीवन को नष्ट करता रहता है। ज्ञान ही व्यक्ति के हृदय की मलिनता को दूर करता है। ज्ञानरूपी दीपक के प्रकाश से अज्ञान का अँधेरा भागता है। जब व्यक्ति में ज्ञानरूपी अग्नि का संचार होता है तो वह उस व्यक्ति के समस्त दुष्कर्मों को भस्म करके उसे कुंदन बना देती है। इसलिए ज्ञान के दीपक को सर्वदा प्रज्वलित रखना चाहिए, जिससे अज्ञान का अंधकार व्यक्ति को घेरने न पाए। ज्ञान ही व्यक्ति को भाग्य निर्माण व सफलता की ओर ले जाता है।

* * *

अज्ञानी व्यक्ति परनिंदा, दुष्कर्म आदि में लिप्त रहता है और अपने जीवन को असफलता की ओर ले जाता है। ज्ञानी व्यक्ति को किसी बात का भय नहीं सताता। वह प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने में सक्षम होता है। ज्ञान ही व्यक्ति को निरंतर गतिमान बनाता है, अन्यथा व्यक्ति अज्ञान के अँधेरे में ही भटकता रहता है।

* * *

ज्ञान जहाँ से, जैसे भी मिले, उसे ग्रहण करना ही अज्ञानता को दूर भगाना है, अन्यथा यह दुर्गुण व्यक्ति को कभी भी पनपने नहीं देता। व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने के लिए इस दुर्गुण को जल्द-से-जल्द स्वयं से दूर कर देना

चाहिए। इसे दूर करने के लिए पुस्तकों का अध्ययन, ज्ञानी व्यक्तियों से वार्त्तालाप आदि किया जा सकता है।

* * *

ज्ञान व्यक्ति को सही राह दिखाता है, लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह सही राह पकड़े अथवा गलत। ज्ञान व्यक्ति के हृदय में उत्तम विचारों का संचार करता है। ज्ञान व्यक्ति को भटकने नहीं देता, सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

* * *

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक ज्ञान प्राप्त करता रहता है। ज्ञान जहाँ से, जिस किसी से, किसी भी प्रकार मिले, प्राप्त करते रहना चाहिए। व्यक्ति की ज्ञान पिपासा शांत होने का तात्पर्य होगा कि वह अपने जीवन से निराश हो गया है, क्योंकि उस समय वह कुछ भी सीखने का प्रयास ही नहीं करेगा।

* * *

झूठ

बात-बात में झूठ न बोलें। ये बातें व्यक्तित्व पर बुरा असर डाल सकती हैं। इन बातों से आपकी बनी-बनाई छवि धूमिल हो सकती है। फिर आप चाहे जितने शिक्षित हों, ये छोटी-छोटी बातें असफलता की ओर अग्रसर करती हैं। खयाल रहे कि कम बोलें, नपे-तुले शब्दों का प्रयोग करें, जिससे आपकी वाणी से सभी प्रभावित हों। कम शब्दों में अधिक बात कहें। थोथे चने की तरह ज्यादा न बजें।

* * *

डरना मना

संसार में व्यर्थ भौंकने वालों की कमी नहीं है। हम अपनी दुर्गति इसी भय से बना लेते हैं कि लोग हमारे लिए क्या विचार कर रहे हैं। निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कह डालने से पहले यदि आप बात से डर जाएँ कि लोग आपको बुरा कहेंगे तो आप डरते-डरते विचार करने से भी डरने लगेंगे।

* * *

दिनचर्या

समय-सारिणी में पूरी दिनचर्या को शामिल करें। हर काम को पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। सोकर जल्दी उठने को अनिवार्यता के तौर पर लें। निश्चित कर लें कि कम-से-कम छह घंटे की नींद मिल जाए। व्यायाम अथवा खेलकूद को कतई दरकिनार न करें। एक ही दिन में सभी विषयों की किताब पढ़ने की बजाय हर विषय के लिए अलग-अलग दिन निर्धारित करें।

* * *

दुर्गुण

छल, कपट, धोखा—ये वे दुर्गुण हैं, जो व्यक्ति को नकारा, निकम्मा, लोभी, चोर, लालची आदि बनाते हैं, अर्थात् यह कहा जाए कि व्यक्ति को जीवन में असफल करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए किसी को छलना, धोखा देना कहाँ कि इनसानियत है? अथवा उनके सहारे क्या व्यक्ति सफल हो सकता है?

* * *

डींग हाँकना व्यक्ति को ठगी के रास्ते पर डालता है, साथ ही उसकी छवि भी बिगाड़ता है। क्योंकि पोल खुलने पर उसकी झूठी शान को, झूठी आदत को एक सिरे से नकार दिया जाता है। ऐसे लोग समाज से कट जाते हैं,

अविश्वसनीय हो जाते हैं, जीवन में सफल नहीं होते। अत: व्यक्ति को स्पष्टवादी होना चाहिए, जिससे उसकी सफलता में रुकावट पैदा न हो।

* * *

धोखा खाने पर व्यक्ति तुरंत धोखेबाज के विरुद्ध हो जाता है, अर्थात् धोखेबाज व्यक्ति कभी किसी के स्नेह का पात्र नहीं हो सकता। फिर सफलता कैसे प्राप्त कर सकता है? धोखा देना एक महादुर्गुण है, जो व्यक्ति को असफलता के गहन अंधकार की ओर ले जाता है, जिससे बचने पर ही व्यक्ति सही मार्ग पर अग्रसर हो पाता है।

* * *

व्यक्ति अपनी बड़ाई, अपनी शानो-शौकत को इस तरह से प्रकट करने की कोशिश करता है कि दूसरा व्यक्ति उससे तुरंत प्रभावित हो जाए, लेकिन जब उसकी असलियत सामने आती है तो वह कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रहता। इस प्रकार के लोग भ्रमित रखते हैं, लेकिन उनका पिटारा पूरी तरह से खाली होता है। लोगों की आँखों में आखिर कब तक धूल झोंकी जा सकती है? एक-न-एक दिन तो वास्तविकता का पता चल ही जाता है। इधर-उधर की बातें करके लोगों को बेवकूफ बनाना, यह दुर्गुण है।

* * *

व्यक्ति किसी को धोखा नहीं देता, अपितु स्वयं ही अपने इस दुर्गुण के कारण धोखा खाता है, क्योंकि वह दूसरे को धोखा देकर स्वयं के लिए असफलता की सीढ़ी तैयार करता है। धोखा देना धीरे-धीरे व्यक्ति की आदत बन जाती है। फिर वह बात-बात पर झूठ बोलता है, दूसरों को अँधेरे में रखता है। व्यक्ति की यह आदत अपने करीबी लोगों को भी प्रभावित करती है। जहाँ छोटे इस आदत को अपना लेते हैं, वहीं बड़े ऐसे व्यक्ति से परेशान हो जाते हैं, क्योंकि यह आदत झगड़े-फसाद का कारण बनती है। लेकिन फिर भी व्यक्ति अपनी इस आदत को छोड़ता नहीं है। यह एक ऐसी आदत होती है, जिसमें व्यक्ति को धोखा देने का एक नशा-सा हो जाता है। वह दूसरों को धोखा देने में अपनी शान समझता है, लेकिन व्यक्ति किसी को धोखा देने में केवल एक बार सफल हो सकता है, अगली बार वह मुँह के बल गिरता है, क्योंकि उस पर कोई भी विश्वास नहीं करता। इसके कारण उसे अपने मान-सम्मान से भी हाथ धोना पड़ता है।

* * *

दृढ निश्चय

प्रबल इच्छा का तात्पर्य उस दृढ निश्चय से है, जो हमें अपने किसी लक्ष्य या सपने की खातिर करना होता है। यह लक्ष्यशक्ति, ओहदा, धन या ऐसी ही अन्य कोई वस्तु हो सकती है। कुछ बड़ा पाने या करने के लिए महत्त्वाकांक्षा अनिवार्य है। जीवन में कुछ बड़ा करने का दृढ निश्चय।

* * *

अवगुण व्यक्ति की सफलता में बाधक और असफलता के साथी होता है। जिस समय व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ निश्चय करता है उसी समय उसके अवगुण उससे दूर भागने लगते हैं। व्यक्ति को दूसरों के गुणों को अपनाना चाहिए और अवगुणों को छोड़ देना चाहिए। दूसरों के गुण देखने चाहिए और स्वयं के अवगुण, यही अपना भाग्य बदलने और सफल होने का महामंत्र है।

* * *

जब तक आप दृढ निश्चय के साथ किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं करेंगे कि मुझे यह प्राप्त ही करनी है, तब

तक आप उसे नहीं पा सकेंगे। लेकिन जैसे ही आप उसे पाने के लिए मन में दृढ निश्चय कर लेंगे, आपको वह वस्तु लेने से कोई भी नहीं रोक सकेगा। यही बात भाग्य बदलने के लिए लागू होती है। जब तक अपना भाग्य बदलने के लिए आपके मन में दृढ निश्चय नहीं होगा, आप हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहेंगे और असफलता की ओर बढ़ते जाएँगे। लेकिन दृढ निश्चय करते ही आप सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले जाएँगे।

* * *

जब हम अपना भाग्य बदलने के लिए दृढ निश्चय कर लेते हैं, तो हमारे अंदर छिपी हुई दैवीय शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं और वे अपना कार्य आरंभ कर देती हैं, जिससे हमें सफलता की ओर आगे बढ़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

* * *

जिस प्रकार एक चट्टान दृढता से खड़ी रहती है, अपने स्थान से टस-से-मस नहीं होती, उसी प्रकार अपना भाग्य बदलने के लिए व्यक्ति के मन में चट्टानी दृढ निश्चय होना चाहिए कि मुझे अपना भाग्य बदलना ही है। यदि आपका निश्चय दृढ होगा, तो आप कहेंगे कि बाधाएँ तो आती रहती हैं। उनसे निबटना मुझे आता है।

* * *

दृढ निश्चय द्वारा ही आपमें वे शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, जो आपको अपना भाग्य बदलने में सफलता दिलाती हैं। आत्मविश्वास दृढ निश्चय का जनक है, क्योंकि आत्मविश्वास एक ऐसी ताकत है, जिसके द्वारा बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है।

* * *

दृष्टिकोण

व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं। समसामयिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार व नजरिया एक खुश और नाखुश व्यक्ति के बीच सबसे बड़ा अंतर पैदा करता है। निराशावादी लोगों को विभिन्न वस्तुओं या परिस्थितियों के प्रति नजरिए में परिवर्तन लाना चाहिए।

* * *

सफलता या असफलता के पीछे हमारे दृष्टिकोण व मानसिकता की बहुत बड़ी भूमिका होती है। हम बुरी-से-बुरी चीज को अच्छे नजरिए से देख सकते हैं, जबकि अच्छी-से-अच्छी चीज को हमारी सोच क्षण भर में बुरा बना देती है। असफलता से सबक लेकर आगे बढने की नीति को एक हथियार के रूप में ग्रहण करनेवाले व्यक्ति निश्चित रूप से कामयाबी की ऊँचाइयों को छूते हैं।

* * *

धैर्य

धैर्य व्यक्ति का वह आभूषण है, जो विषम परिस्थितियों में उत्पन्न कठिनाइयों को टाल सकता है, वहीं दूसरी ओर कठिन कार्यों को भी आसान कर सकता है। जो लोग तुरंत सफलता चाहते हैं अर्थात् पहले पायदान से सीधे अंतिम पायदान पर पहुँचते हैं, उनकी सफलता क्षणिक होती है और वे कठिन परिस्थितियों में अपना धैर्य खो बैठते हैं, जो उन्हें असफल बना देता है।

* * *

धैर्य व्यक्ति के लिए एक महत्त्वपूर्ण गुण है, क्योंकि व्यक्ति की सफलता-असफलता धैर्य पर ही टिकी होती है।

जरा सा धैर्य खोकर अधीर होने पर आपका बनता कार्य बिगड़ सकता है। व्यक्ति को अपने धैर्य का बाँध कभी टूटने नहीं देना चाहिए, अन्यथा निराशा, परेशानी, क्रोध, चिंता आदि जैसे—अवगुण तुरंत व्यक्ति को जकड़ सकते हैं, जो उसे असफलता की ओर ले जाते हैं।

* * *

ध्यान केंद्रण

किसी भी चीज को शुरू करने से पहले अपने मन में यह सवाल करें कि अपने काम को पूरा करने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? यह सवाल करने के बाद आप अपने काम करने की क्षमता में और मजबूती देखेंगे। अपने फैसले से आए परिणामों पर कभी अफसोस न करें। जब अपने आप को प्राथमिकता देने लगेंगे और अपने चुने हुए रास्ते पर चलते रहेंगे तो जिंदगी के दूसरे पहलुओं में आए मौकों को गवाँ सकते हैं। अपने आप पर विश्वास रखें। लालच और अफसोस को अपने से दूर रखें। समय बरबाद न करें और अपने काम पर ध्यान केंद्रित करें।

* * *

नकारात्मक सोच

नकारात्मक सोच रखनेवाले व्यक्ति के पास किसी भी काम को न करने के सैकड़ों बहाने होते हैं और इस प्रकार की सोच रखनेवाला व्यक्ति कार्यों को 'कल' पर टालता रहता है, जो कभी नहीं आता। नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति हमेशा अच्छाई को बुराई साबित करने की सोच रखता है और स्वयं को गुणों की खान सिद्ध करने का प्रयास करता है।

* * *

नकारात्मक सोच वह अवगुण है, जो व्यक्ति को घेर ले तो उसके मुँह से केवल 'ना' ही निकलेगा, 'हाँ' कभी नहीं। नहीं होगा, नहीं हो सकता, शायद वह मिले, वह नहीं गया होगा, वह नहीं आएगा आदि-आदि बहाने इस प्रकार के व्यक्ति की सोच में सम्मिलित हो जाते हैं। नकारात्मक सोच व्यक्ति को लोगों से दूर करती है। वह उसे काम से दूर ले जाती है, उलझनों को बढ़ाती है, क्योंकि इस सोच के कारण लोग न तो उस पर विश्वास करते हैं और न ही उसके साथ उठना-बैठना पसंद करते हैं। इस प्रकार वह अपने कार्यों को आसानी से नहीं कर पाता अर्थात् उसकी सफलता उससे दूर होती जाती है और तनाव, चिंता आदि, जैसे—दुर्गुण उसे घेर लेते हैं। वह चिड़चिड़ा होकर लोगों से लड़ता-झगड़ा रहता है।

* * *

नकारात्मकता

किसी भी लक्ष्य को पाने में सबसे बड़ी समस्या नकारात्मक चीजें होती हैं, इसलिए इसको कभी अपने ऊपर हावी न होने दें। कुछ लोग अपमानजनक प्रश्नों द्वारा हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। जैसे आप अपने व्यवसाय में अच्छा नहीं कर पाते या पैसा नहीं कमा पाते तो क्या करेंगे? इस तरह के लोगों से निपटने के लिए आप कुछ तरीके अपना सकते हैं। आप इनके रास्ते से खुद हट जाएँ या अपनी तीक्ष्ण बुद्धि की धार से इन्हें हटा दें।

* * *

निडरता

जो लोग भाग्य बदलना या सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें डरने की जरूरत नहीं है। यदि आप जरूरत के अनुसार स्थितियों को बदलना चाहते हैं तो अपने वर्तमान की परिस्थितियों में बदलाव कीजिए। सफलता पानेवाले

व्यक्ति किसी चीज को करने का साहस रखते हैं, इसलिए उनके सपने वास्तव में साकार होते हैं। सफलता के साथ प्रतिद्वंद्वी पैदा होना सामान्य बात है। जैसे किसी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए जरूरी हो जाता है कि किसी-न-किसी को पीछे छोड़े। कुछ लोग अपनी सफलता के प्रति हीनभावना से ग्रस्त होते हैं और अपना ज्यादा समय दूसरों की योग्यता या सफलता से अपने आपको बेहतर साबित करने में बरबाद कर देते हैं। अपने लिए की गई शिकायतों पर सदा ध्यान दें, क्योंकि यह आपको दूसरों से बेहतर बनने में सहायक होती है।

* * *

निरंतरता

नदी की शुरुआत जहाँ से होती है, वहाँ वह बेहद सँकरी और छोटी होती है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती है, चौड़ी होकर बड़ी नदी में बदलने लगती है। हमारे जीवन में किसी बड़े काम की शुरुआत भी इसी प्रकार होती है। जिस तरह नदी का पानी हमेशा आगे ही बढ़ता रहता है, ठीक उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में निरंतर परिश्रम करते हुए आगे बढ़े तो सफलता जरूर मिलती है।

* * *

निरंतर प्रयास के बिना सब व्यर्थ है, प्रतिभा भी। इससे असामान्य बात क्या होगी कि बहुत से प्रतिभा-संपन्न लोग ऐसे मिल जाएँगे, जो असफल हैं। यह दुनिया पढ़े-लिखे मूर्खों से पटी पड़ी है। केवल निरंतरता और दृढ निश्चय ही सर्वशक्तिमान हैं।

* * *

निरंतर प्रयास ही सफलता की निशानी है। अनेक बार अनेक जगहों पर ऐसा देखा गया है कि पढ़े-लिखे लोग भी अपनी असफलता की कहानी सुनाते हैं। अपने भाग्य को कोसते हैं कि मेरा भाग्य ही ऐसा रहा कि मैं असफल हुआ, यह मेरी किस्मत में नहीं था मुझे अवसर नहीं मिल पाया नहीं तो मैं यह कर लेता, वह कर लेता आदि-आदि। अब यह मूर्खता ही है। यदि ऐसे पढ़े-लिखे असफल व्यक्ति दृढतापूर्वक अपने लक्ष्य का पीछा करते तो क्या वे असफल होते? किंतु वे लोग असफलताओं को अपना सबकुछ मानकर हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहते हैं। साथ ही दूसरों को भी वैसी ही प्रेरणा देते हैं। बहुत से लोग उनकी असफलताओं को देखकर उस प्रकार के कार्यों में हाथ भी नहीं डालते।

* * *

निराशा

किसी काम में असफल होना, सफलता के लिए अग्रसर होना है, क्योंकि जब ठोकर लगती है, तभी व्यक्ति आगे सँभल कर चलता है। निराशा ही व्यक्ति में आशा का संचार करती है। निराश व्यक्ति ही विचार मंथन करता है और सोचता है कि उसने कहाँ गलती की? और वह अपनी गलती को सुधारकर अपने कार्य में सफल होता है, निराशा से पार पाता है।

* * *

निराशा अवगुण कब बनता है? जब व्यक्ति किसी कार्य में असफल हो और उसे निराशा घेर ले। निराश होकर वह बैठ जाए, उस असफलता का हल न ढूँढ़े, तब निराशा नामक अग्नि जन्म लेती है, जिससे व्यक्ति के बाकी सभी गुण जलकर भस्म हो जाते हैं। निराशा में ही आशा छिपी है, लेकिन तब, जब निराशा के कारणों को ज्ञात कर उनसे छुटकारा पाया जाए। अन्यथा निराशा अवगुण में परिवर्तित होकर व्यक्ति को असफलता का मार्ग दिखाती है।

* * *

निराशावाद

निराशा अनेक दुर्गुणों को जन्म देती है। निराशावादी होने पर व्यक्ति के मन में प्राय: किसी भी कार्य के प्रति शंका बनी रहती है कि मैं अमुक कार्य कर पाऊँगा अथवा नहीं। उस कार्य में न जाने कैसी-कैसी परेशानियाँ आएँ आदि, इस प्रकार की अनेक शंकाएँ उसे परेशान करती हैं। इन शंकाओं को गढ़ते-गढ़ते वह आसान कार्य भी नहीं कर पाता और छोटे-छोटे कार्यों से भी घबराने लगता है। यह उस व्यक्ति के आत्मविश्वास की कमी को इंगित करते हैं और वह असफल होता है। उसके कदम लड़खड़ाते रहते हैं और वह गर्त की ओर जा पहुँचता है। वह भूल-भुलैया में ही भटकता रहता है और जहाँ से प्रारंभ करता है, घूम-फिरकर वहीं पहुँच जाता है।

* * *

निराशात्मक कमी उन लोगों में पाई जाती है, जो निकम्मे, नकारा और आलसी होते हैं, जो लोग न तो सफलता पाना चाहते हैं, न उसे पाने का मार्ग ही जानते हैं। ये लोग अपने वातावरण को भी प्रभावित करते हैं, खुद तो प्रभावित रहते ही हैं। ये केवल लेते-ही-लेते हैं, किसी को कुछ देते नहीं हैं। ऐसा कोई कार्य नहीं करते, जो दूसरों के लिए प्रेरणा का कार्य करे। दुर्गुणों से भरे ऐसे लोग दूसरों की सफलता से भी कुछ नहीं सीख पाते। धीरे-धीरे नष्ट होते जाते हैं और इस संसार में उनका नाम तक लेनेवाला नहीं बचता।

* * *

निराशावादी व्यक्ति यही सोचता रहेगा कि यदि अमुक कार्य में मुझे सफलता नहीं मिली, तब क्या होगा? क्या मैं इस कार्य को इसके परिणाम तक पहुँचा सकूँगा। इस प्रकार के दुर्गुण निराशावादी को घेरकर उसे असफल कर देते हैं। उस व्यक्ति की कार्यक्षमता भी ऐसे विचारों से नष्ट हो जाती है। वह उस कार्य को करने की स्थिति में होने के बाद भी निराशा के कारण उसे नहीं कर पाता। उसके मन में उदासी, मायूसी, निराशा आदि लक्षण घर कर लेते हैं और ये वे दुर्गुण हैं, जो उसे पनपने नहीं देते। कहा गया है कि आशा कि एक किरण भी मौत को जीवन में बदलने के लिए पर्याप्त है।

* * *

नेतृत्व

भाग्य निर्माण के क्रम में नेतृत्व का गुण आवश्यक है, जिससे किसी कार्य को करने की पहल कर सकें। साथ ही उस पर नियंत्रण रखें और उस कार्य को बीच में न छोड़ें। नेतृत्व अच्छे-बुरे की समझ देता है और विपरीत परिस्थितियों में नियंत्रण करने में सहयोग देता है, जिससे हार का मुँह न देखना पड़े। जीवन में ऐसे ही मोड़ आते हैं, जब हम परिस्थितियों और प्रयासों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाते और ऐसे में हमारा नेतृत्व कभी-कभी असफल हो जाता है। यदि कभी असफलता हाथ भी लगे तो समस्या को गंभीर होने से रोकने का प्रयास करें और कार्य को पूरा करने की सामर्थ्य रखें। यही वास्तविक नेतृत्व है।

* * *

परख

अपने आप को परखें और अपने मन में चल रही परेशानियाँ दूर करें। आंतरिक संघर्ष आपकी समय की धारणा को जटिल बनाते हैं। यह बड़ा ही सुखद होता है, जब आपको पता चलता है कि आपके पास खुद के लिए कितना समय है। अपने मन में अतीत में मिली उपलब्धियों और कड़वे अनुभवों की तसवीर बना लें, साथ ही अपने भविष्य की भी तसवीर बना लें। इससे आपको प्राथमिकताओं को एक लय में लाने में मदद मिलेगी। आंतरिक संगठन और बाहरी संगठन का तालमेल बहुत जरूरी है।

* * *

पुरुषार्थ

आदमी कोई भी प्रयत्न करता है, उसका परिणाम चाहता है, सफलता चाहता है। जिस प्रयत्न का कोई परिणाम न आए, जिस पुरुषार्थ का कोई फल न हो, उसके प्रति हमारे मन में बहुत आकांक्षा और जिज्ञासा नहीं जागती। सफलता के लिए तीन शर्तें हैं—सम्यक् दृष्टि, सम्यक उपाय और सम्यक प्रयत्न। जब दृष्टि सम्यक नहीं होती, तो सफलता नहीं मिलती। और पुरुषार्थ सम्यक नहीं होता, तो सफलता नहीं मिलती। ये तीनों बातें अनिवार्य हैं और तीनों में से एक को भी नहीं छोड़ा जा सकता। तीनों परस्पर संबद्ध हैं।

* * *

दृष्टि ठीक नहीं होती, हमारा ज्ञान सम्यक नहीं होता तो पुरुषार्थ की सफलता नहीं हो सकती। हम परिणाम की भावना नहीं रख सकते। सबसे महत्त्व की बात है दृष्टि का सम्यक होना। बहुत बार ऐसा होता है कि बताया कुछ जाता है और पकड़ कुछ लिया जाता है। इससे भ्राँति पैदा हो जाती है।

* * *

पुरुषार्थ व्यक्ति का वह गुण है, जिस पर उसका संपूर्ण जीवन टिका होता है। बहुत से लोग भाग्य के सहारे अपना बहुमूल्य समय व्यतीत करते रहते हैं, लेकिन पुरुषार्थ नहीं करते। जबकि वे यदि पुरुषार्थ करें तो अपने दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकते हैं।

* * *

पुरुषार्थ से व्यक्ति स्वयं के लिए तो करता ही है, लेकिन स्वयं के लिए किया गया वही कार्य दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा बनता है। जब कोई व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से, अपनी मेहनत से कोई व्यापारिक प्रतिष्ठान, उद्योग आदि स्थापित करता है तो वह यह केवल स्वयं के लिए नहीं करता, वह दूसरों को भी काम देता है, सफल होने की प्रेरणा देता है, दूसरों को मेहनत, लगन, आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाता है। उसका वह कार्य अब दूसरों के लिए होता है, क्योंकि वह हजारों व्यक्तियों की शक्ति है, उनके लिए वंदनीय है, उन्हें राह दिखानेवाला है। यह सब व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से करता है।

* * *

प्रकृति की शक्तियाँ

प्रकृति की शक्तियाँ, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, अत्यंत शांत होती हैं। बादलों की गर्जना, बिजली की कड़क और चमक, समुद्र का तेज बहाव बहुत भीषण प्रतीत होता है। ये प्रकृति की शक्तियाँ हैं। किसी को प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देतीं, परंतु अपने कार्य रात-दिन करती हैं। बिजली की चमक सूर्य के मधुर और शांतिप्रद प्रकाश से कितनी तेज प्रतीत होती है? इस भीषण दमक और चमक की सूर्य के प्रकाश से क्या तुलना हो सकती है? वह प्रकाश, जो संसार के समस्त पदार्थों को पुष्ट करता है। सूर्य के इसी शांत और मधुर प्रकाश की उदारता से समस्त वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। यही प्रकाश प्राणियों को अन्न, फल-फूल, कंदमूल देकर पुष्ट करता है। उनका महत्त्व शांति में छिपा रहता है।

* * *

प्रतिक्रिया

अमूमन व्यवहार में हम कुछ अप्रिय प्रसंगों का सामना करते हैं। ऐसे में अनावश्यक प्रतिक्रिया से बचकर हम अपनी ऊर्जा और समय को बचा सकते हैं। विवेक के प्रयोग से हम विरोधियों को भी सकारात्मक संदेश दे सकते हैं।

* * *

प्रयास

ऐसे भाग्यशाली लोग कम ही होते हैं, जिन्हें अपने पहले प्रयास में ही सफलता मिल जाती है। कामयाब लोगों से आप कभी पूछेंगे तो आपको पता चलेगा कि कामयाबी की मंजिल तक पहुँचने से पहले वे कितनी बार नाकामयाब रहे थे। अत: किसी परीक्षा में सफल नहीं होने पर खुद को दुनिया का निकृष्ट व्यक्ति समझ लेने की प्रवृत्ति गलत है। कई बार नाकामयाबी की वजह किसी ऐसे लक्ष्य पर अपना समय व धन खर्च करना भी होता है, जो हमारी सामर्थ्य से बाहर रहता है।

* * *

व्यक्ति स्वयं प्रयास करे, कार्य करे तो इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। वह कर्म के प्रति दृढ निश्चयी बनेगा, अनुशासन में रहेगा। औरों से प्रेरणा लें। कार्य करने से पूर्व चिंतन, मनन, विचार करें। अपने जीवन के सिद्धांत

बनाएँ, मन में परोपकार की भावना जगाएँ।

* * *

प्राथमिकताएँ

मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी होने के नाते सदा इतने कार्य सोच सकता है, जितने वह कभी पूर्ण नहीं कर सकता। अपनी प्राथमिकताएँ तय करें। क्या पहले करना है, क्या बाद में और क्या कभी नहीं करना है, इसका निर्णय भलीभाँति सोच विचार कर करें।

* * *

प्रेरणा

प्रेरणा वह औषधि है, जो एक उत्प्रेरक की भाँति कार्य करती है। जब कोई व्यक्ति यह औषधि (प्रेरणा) ग्रहण करता है तो उसे लक्षित कार्य करने की धुन सवार हो जाती है और वह उस कार्य को ही अपना लक्ष्य बना लेता है। प्रेरणा ऐसी होनी चाहिए, जो हमें सही मार्ग दिखाए और वही हमें ग्रहण करनी चाहिए।

* * *

प्रेरणा वह चाबी होती है, जो हमें सफल बना सकती है, लेकिन केवल उन्हें, जो सफल होना चाहते हैं। प्रेरणा भी केवल वे ही व्यक्ति ग्रहण करते हैं, जो जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

* * *

वैसे तो सभी लोग अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करते हैं, किंतु जब कोई व्यक्ति विशेष या कठिन कार्य करके अपनी विशेष क्षमता प्रस्तुत करता है तो वह क्षमता लोगों के लिए प्रेरणा बन जाती है। उस विशेष कार्य करनेवाले से भी यह पूछा जाता है कि आपको प्रेरणा कहाँ से मिली, क्योंकि तभी उसने औरों से हटकर कार्य किया। स्वाभाविक है कि उसने भी कहीं-न-कहीं से अलग करने की प्रेरणा पाई होगी। अर्थात् किसी भी अच्छे-बुरे कार्य के पीछे अच्छी-बुरी प्रेरणा छिपी होती है।

* * *

हम अपने चारों ओर दृष्टि डालें तो हमें ऐसे बहुत से कार्य दिखाई दे जाएँगे, जिनसे हमें किसी-न-किसी प्रकार की प्रेरणा मिलेगी। ये प्रेरणाएँ हमें जीवन में सफलता की ओर ले जाती हैं। गलत प्रेरणाएँ असफलता की ओर अग्रसर करती हैं।

* * *

बड़ी सोच

बड़ी सोच रखना सफलता प्राप्ति की एक अनिवार्य विशिष्टता है। बड़ी सोच तब पनपती है, जब आप अपने मन के चक्षुओं में उस बृहत् लक्ष्य को देखते हैं, जो आपसे कहीं ज्यादा बड़ा होता है। बड़ी सोच रखना ऐसे सपनों को संजोना है, जिनको आप हकीकत में बदलने के लिए कार्य करते हैं।

* * *

बदलाव

जब किसी सकारात्मक लक्ष्य के लिए आप अपने अंदर परिवर्तन लाते हैं तो कुछ भी पाना असंभव नहीं होता। स्वयं को बदलने की कुंजी हर व्यक्ति के हाथ में होती है। ज्यादातर लोग समस्याएँ आने पर ही खुद में बदलाव लाते हैं। समस्या के पैदा होने से पहले ही अपने अंदर आवश्यक परिवर्तन लाना जरूरी होता है। किसी समस्या के

उत्पन्न हो जाने के बाद दबाव में कुछ करने की बजाय यह एक बेहतर विकल्प है। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम खुद से किए गए वादों को पूरा करें। इन वादों को पूरा करने से हमें हमेशा लाभ मिलता है।

* * *

भय-त्याग

भय को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वह हमारे सामने उसी संकट को ला खड़ा करता है, जिससे हम भयभीत रहते हैं। भय हमारी संकट-निरोधक शक्ति को क्षीण करता है, उसकी कमर तोड़ देता है। हमें जिस चिंतन की आवश्यकता है, वह उसकी शक्ति को कमजोर कर देता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। भय स्वाभाविक रूप से हमारे मनन अथवा चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है।

* * *

मजबूती

मनुष्य जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, उसके कर्तव्य बढ़ते जाते हैं। वह जितनी खूबी से उनका पालन करता है, उतना ही वह अच्छा नागरिक बनता है और समाज को सुखी बनाता है। हर आदमी के लिए ऊँचाई पर स्थान है, लेकिन वहाँ पहुँचता वही है, जिसके अंतर में आत्मविश्वास होता है, हाथ-पैरों में ताकत होती है, निगाह में ऊँचाई होती है और हृदय में सबके लिए प्रेम व सहानुभूति का सागर उमड़ता रहता है। ऐसा आदमी जानता है कि उसके ऊपर सदा निर्मल आकाश है। अगर कभी बादल घिर भी आते हैं तो वे अधिक समय नहीं टिकते हैं। अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते मजबूती से बढ़ते चलना इनसान का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

* * *

मन पर नियंत्रण

व्यक्ति को व्यर्थ के छल, कपट, भ्रम में नहीं फँसना चाहिए और एकाग्रचित्त होकर अपने कर्तव्य-पथ पर बढ़ना चाहिए। व्यक्ति का हृदय, मन बहुत चंचल होता है और तनिक में ही व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर सकता है। वह उसके चित्त को भंग कर सकता है। मन को अपने वश में रखना चाहिए, जिससे वह इधर-उधर न भटके, न ही व्यक्ति उसके अनुसार इधर-उधर भटके। व्यक्ति का मन वाहन के गतियंत्र की भाँति कार्य करता है। उसे जितनी गति मिली, वह उतनी ही गति से उसी ओर खिंच जाता है, बढ़ जाता है, जिस ओर वह जाना चाहता है। अब यह व्यक्ति की चित्त-बुद्धि का कार्य है कि वह कितनी गति देना चाहती है।

* * *

मन-संदेह

भय और चिंता की भावना हमारे अचेतन मन को कार्य करने से रोक देती है। जिस कार्य को हम पूर्ण करना चाहते हैं, उसके संबंध में हमारी यह चिंता कि यह कार्य पूर्ण होगा या नहीं, हमारे उस कार्य के पूर्ण होने में बाधक बन जाया करती है, क्योंकि जिस समय मन में संदेह बस जाता है, उस समय उससे कोई भी रचनात्मक कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सकता है।

* * *

मान्यता

जिंदगी समझौते का दूसरा नाम है। जो हम सोचते हैं या जो चीज पाना चाहते हैं, वह हमेशा हमें नही मिलतीं।

कभी-कभी लोग किसी चीज को पाने की योग्यता रखते हैं, लेकिन अपनी योग्यता को कम करके आँकते हैं। द्वेषपूर्ण प्रतियोगिता से बचने का सबसे अच्छा तरीका है, अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करना। कोई माने या न माने आपकी सफलता आपको जरूर मान्यता देगी। दूसरों द्वारा की गई प्रशंसा अथवा निंदा में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। सफल होने के लिए आपको लोगों से प्रमाण-पत्र पाने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए सदा आगे बढ़ते रहें, सफलता जरूर मिलेगी।

* * *

मुकाबला

दुनिया में जो आपका स्थान है, उसे प्राप्त करो कठिनाई के साथ वीरतापूर्वक लड़ो। हार को बहादुरी के साथ सहन करो। वीर पुरुष का स्वभाव उसके निकटवर्ती लोगों पर जादू-सा प्रभाव डालता है। कोई भी महान् कार्य उन व्यक्तियों द्वारा संपन्न नहीं हो सकता, जो उस कार्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

* * *

सफल लोग अपने निरंतर विश्वास से जीतते हैं, लेकिन वे असफलताओं का मुकाबला भी उसी विश्वास से करते हैं। सफलता के लिए विश्वास पैदा कीजिए। असफल होने पर भी उस विश्वास को कायम रखिए। सफल व्यक्ति सकारात्मक ढंग से प्रशंसा करते हैं और हँसी-मजाक करने पर बुरा नहीं मानते। वे उत्साह फैलाते हैं। उनकी सकारात्मकता चारों तरफ फैलती है और उसकी खुशबू हर जगह बिखरती रहती है।

* * *

मेहनत

अपना भाग्य बदलने के लिए सभी लोग लालायित रहते हैं और तुरंत परिणाम भी चाहते हैं, परंतु अधिकांश लोग सफलता के लिए मेहनत करना नहीं चाहते हैं, उन्हें कुछ हासिल नहीं हो सकता।

* * *

भाग्य बदलकर मिली सफलता के पीछे जो मेहनत, लगन, आत्मविश्वास, दृढ निश्चय छिपा होता है, वह कुछ गिने-चुने लोगों में ही पाया जाता है। और जिनमें ये गुण विद्यमान होते हैं, उन्हें सफलता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। आज बहुत से लोग महान् तो बनना चाहते हैं, लेकिन कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते, उनका महान् बनना संदिग्ध होता है।

* * *

मौन

जीवन की विभिन्न समस्याओं में मौन का प्रयोग बहुत कारगर सिद्ध होता है। मौन मन को एकाग्र करता है। इसके प्रयोग से अंतर्मन में स्थित सत्य और विवेक के उन आदर्शों को अपनाने में सहायता मिलती है, जो शब्दों के कोलाहल में अमूमन दब जाते हैं।

* * *

योग्यता व शक्ति

अपने सपने को जीवंत बनाने के लिए इसके आत्मीय पहलुओं का ध्यान रखें। अपनी योग्यता तथा शक्ति को पहचानें। यदि कोई आपकी सफलता से जलता है या क्रोधित होता है तो होने दीजिए, क्योंकि यह एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृति है। इस तरह के लोग, जो करना चाहते हैं, उन्हें करने दीजिए, ऐसे लोग दूसरों की गलतियाँ

निकालने या गप हाँकने में समय बरबाद करने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते हैं।

* * *

योग्यता-विस्तार

कठिन कार्य को पहले करने का प्रयास करें। अपनी योग्यता को निरंतर विकसित करें। सोच-समझकर बोलें, क्योंकि वार्त्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वयं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करें। समय की पाबंदी और उसका सदुपयोग जीवन में सफलता-प्राप्ति का सशक्त माध्यम है।

* * *

योजनाबद्धता

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें, क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। योजनाबद्ध रूप से अपने कार्य को अनजाम दें, समय बिल्कुल व्यर्थ न गवाएँ। अनावश्यक और निरर्थक बातों को नजरअंदाज करके अपने उद्देश्य पर नजर रखें। चिंताओं में समय व्यर्थ न करें।

* * *

रचनात्मक-क्षमता

प्रशिक्षित व रचनाशील मस्तिष्क का साथ भाग्य भी देता है। रचनात्मक क्षमता वाले व्यक्ति भीड़-भाड़ तथा प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण माहौल में सबसे अलग, सबसे जुदा दिखाई देते हैं।

* * *

रचनात्मकता

अपने भविष्य का निर्णय करने वाली सामग्री, आपको कहीं बाहर से नहीं जुटानी पड़ती, बल्कि वह तो आपके भीतर ही होती है। आपको करना केवल यह होता है कि उस भीतर की सामग्री का सही-सही उपयोग करना सीख लें। आप अपनी रचनात्मकता की लौ को कभी बुझने मत दीजिए। आप अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का जिस मात्रा में उपयोग करेंगे, उसी अनुपात में आपके काम में पूर्णता आएगी।

* * *

जिन लोगों के व्यक्तित्व में रचनात्मकता की चिंगारी सुलग रही होती है, वे प्रत्येक कार्य अच्छी तरह से करते हैं। ऐसा करके उन्हें वास्तव में आनंद की अनुभूति होती है। यह परिस्थिति कार्य की गुणवत्ता के दृष्टिकोण से एक आदर्श अवस्था कही जा सकती है।

* * *

यदि आप समाज पर यह छाप डालना चाहते हैं कि आपका चरित्र, आपकी क्रियाशक्ति, व्यक्तित्व प्रबल है तो प्रत्येक दशा में आपके विचार रचनात्मक होने चाहिए। आपके मन पर इन्हीं रचनात्मक विचारों का प्रभाव होना चाहिए।

* * *

रचनाधर्मिता

अपने गुणों में इजाफा करके हम अपनी रचनाधर्मिता का संपोषण कर सकते हैं। सद्भावना, आशावादिता तथा अध्यवसाय सरीखी विशेषताएँ हमारे व्यक्तित्व में रचनात्मकता का संचार करती हैं। कुछ लोगों में रचनात्मकता स्वभाविक रूप से होती है, जबकि कुछ लोग थोड़ी सी तैयारी से इसे विकसित करने में सफल हो सकते हैं।

* * *

रचनाशीलता

लोगों का प्रतिनिधित्व करें, अपने अनुभवों को उनके साथ बाँटें। साथ के लोगों को महत्त्व दें और उन्हें अपनी क्षमताओं को पेश करने का पूरा मौका दें। उनकी रचनात्मकताओं को बाहर लाने में पूरी मदद करें। उनके कामों में दखल न दें। उन्हें सिर्फ और सिर्फ आपके साथ और विश्वास की जरूरत है। भिन्न-भिन्न कामों को करने के लिए लगाए गए समय और उनको करने के क्रम को सोच-विचार कर व्यवस्थित करने से दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है।

* * *

लक्ष्य

'न' कहने की आदत डालें, जिससे आप लोगों के दबाव में न आकर अपने समय का दुरुपयोग बचा पाएँगे। लक्ष्य स्पष्ट रखें। उसी के अनुसार कार्य करें। सब चलता है वाला रवैया छोड़कर अनुशासन का पालन करें। अपने सोने और उठने का समय निर्धारित करें। अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करते रहें, किंतु इसके लिए समर्पण और धैर्य का होना बहुत जरूरी है ।

* * *

अनावाश्यक तनाव आपको आपके लक्ष्यों से भटका सकता है। धैर्यपूर्वक स्थिति का सामना कीजिए और अपने जीवन के लक्ष्यों को पुन: निर्धारित कीजिए और देखिए कितनी जल्दी आप सफलता के कितने करीब पहुँच जाते हैं।

* * *

अपना लक्ष्य निर्धारित करके ही उस सफलता की ओर बढ़ें। ऐसा न हो कि आपकी नीति के ढुल-मुल हो जाने से असफलता ही हाथ लगे। एक से अधिक लक्ष्य होने पर उनकी प्राथमिकता के अनुसार निश्चित करें और निष्ठा व लगनपूर्वक हर लक्ष्य की ओर बढें, ताकि सफलता मिले।

* * *

उद्देश्य निश्चित करने का अर्थ यह नहीं है कि आपने अपना इसे निश्चित किया और आपका काम समाप्त। उद्देश्य निश्चित करने के पश्चात् उसे प्राप्त करने अर्थात् उसे पाने में अनेक बाधाएँ आ सकती हैं। उन बाधाओं को पार कर अपना लक्ष्य, अपना उद्देश्य प्राप्त करना सफलता है। एक बच्चा जब चलना सीखता है तो वह कई बार गिरता है, फिर उठकर चलता है और इस प्रकार वह चलना सीख जाता है, क्योंकि उसमें खड़े होने के लिए आत्मविश्वास जाग जाता है और वह सफल होता है।

* * *

कोई उद्देश्य निर्धारित किया जाता है तो उसे पाना प्रमुख होता है। बाधाएँ तो आती ही रहती हैं, उनसे विचलित नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति मार्ग में आनेवाली बाधाओं से डर जाता है, वह अपने लक्ष्य को कदापि नहीं पा सकता। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी दृष्टि केवल अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखनी चाहिए। आपकी सफलता से ईर्ष्या करनेवाले आपकी बाधाएँ बन सकते हैं, वे आपको दिग्भ्रमित कर सकते हैं।

* * *

गलत परामर्शों को सुननेवाला, उनसे उत्साहित होनेवाला तथा इनका स्वागत करनेवाला व्यक्ति अवश्य ही अपने मार्ग से भटक जाता है। हम संकल्प कर लें, अपने लक्ष्य को निरंतर दोहराते रहें, बार-बार अपने लक्ष्य की पूर्ति का

प्रण करते रहें, तभी हम अपने पथ पर आरूढ़ बने रह सकते हैं और शनैः-शनैः उस लक्ष्य के लिए कार्य करना हमारा आचरण बन सकता है। वह हमारा स्वभाव बन सकता है, तब हम अपने जीवन के प्रभाव को पूर्णतया अपने लक्ष्य की ओर मोड़ सकते हैं। अपनी सब शक्तियों को उसी की सिद्धि के लिए लगा सकते हैं। कुछ समय के उपरांत हम से कर्म-संबंधी हमारी योग्यता और परिश्रम की ऐसी प्रचंड तरंग प्रवाहित होगी, जो न केवल सब विघ्न-बाधाओं को बहा ले जाएँगी, अपितु हमें भी हमारे लक्ष्य के निकट ले जाकर खड़ा कर देगी।

* * *

जिंदगी के कुछ लक्ष्य निर्धारित कीजिए और निश्चित समय में उन्हें पाने की कोशिश कीजिए। जीवन के बारे में स्पष्ट नजरिया रखें। आप अपने आप से क्या चाहते हैं, इसका स्पष्ट रूप से आपको पता हो, जिससे आप उसी के अनुरूप समय प्रबंधन कर सकें।

* * *

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। निरुद्देश्य लोग इस धरती पर बोझ होते हैं, वे केवल अपना जीवन गुजारते हैं, जीते नहीं हैं। उनका उद्देश्य होता है खाना, पीना और सोना अर्थात् केवल दिन बिताना।

* * *

जीवन में हर काम सोच-समझकर अपनी शक्तिनुसार और योग्यता के अनुसार चुनें और उसे पूर्ण करके ही दम लें। चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हो। लक्ष्य निर्धारित करने में दिग्भ्रमित न हों, जीवन में सफलता तभी मिलती है, जब कार्य योजनाबद्ध तरीके से हो।

* * *

प्रत्येक छोटे-छोटे, अच्छे-बुरे कार्य के पीछे एक-न-एक उद्देश्य छिपा होता है। यदि कोई व्यक्ति कहीं बैठा है अथवा कहीं खड़ा है तो उसका कोई उद्देश्य नहीं है। लेकिन यदि वह उस स्थान से उठा अथवा उसने खड़े होने के स्थान से अपना एक कदम बढ़ाया, तो एक उद्देश्य के लिए, कुछ करने के लिए यदि कोई अच्छा कार्य किया उद्देश्य को निर्धारित कर किसी को मारा-पीटा, उसकी हत्या की तो भी एक उद्देश्य के लिए। अर्थात् बिना उद्देश्य कोई कार्य नहीं होता।

* * *

बहुमूल्य लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य, जो व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निर्धारित करता है। लेकिन मात्र लक्ष्य निर्धारित करने से सफलता नहीं मिलती, बल्कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार अर्थात् प्रगतिशील साधना करनी पड़ती है। तभी लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात् सफलता मिलना निश्चित होता है। लक्ष्य निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि इससे हमें पता रहता है कि अभी हम उस स्थान पर नहीं पहुँचे हैं, जहाँ के लिए हमने लक्ष्य निर्धारित किया था।

* * *

व्यक्ति अपना जो लक्ष्य निर्धारित करे, उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करें, न कि लक्ष्य के कुछ पड़ावों को पाकर ही संतुष्ट हो जाए। अकसर होता यह है कि कुछ लोग अपना लक्ष्य निर्धारित तो कर लेते हैं, लेकिन उसे पाने के लिए जो कठिनाइयाँ आती हैं, उनसे घबरा जाते हैं एवं अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं तथा उसे वहीं छोड़ कहीं और अपना मन लगा लेते हैं। कुछ वे होते हैं, जो अपना लक्ष्य निर्धारित करके उस पर चलते हैं। कुछ हद तक वे सफलता

प्राप्त भी कर लेते हैं, लेकिन जब अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तो वहीं फुल स्टाप लगा देते हैं और जितना मिला, उसमें ही संतुष्ट हो जाते हैं, अर्थात् जहाँ तक अपने लक्ष्य के मार्ग में पहुँचते हैं, उस पर यही सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि चलो जितना मिला उतना ही सही, यही मेरे भाग्य में था। लेकिन उनकी यही सोच उन्हें पथभ्रष्ट कर देती है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। कर्तव्य-पथ पर आग में तपकर जो अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, वही वास्तविक सफल व्यक्ति होता है।

* * *

हमारे जीवन में लक्ष्य का निर्धारण हमारा भाग्य नहीं करता, हम खुद ही करते हैं, लेकिन उस मंजिल तक पहुँचने के लिए सकारात्मक सोच होनी चाहिए। इसके लिए दैनिक जीवन में खुशी आवश्यक है। चिंता का जीवन बिताने से हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, मन में संदेह की भावना आ जाती है और हम अपने सपनों को साकार करने में असफल रह जाते हैं। जब हम अपने रोजमर्रा की जिंदगी खुशनुमा बनाते हैं तो अपने सपनों और जीवन के बारे में भी हमारा नजरिया बदल जाता है। वह आशावादी होता है, कदम आगे बढ़ाने के लिए उसमें आत्मविश्वास आ जाता है।

* * *

लक्ष्य निर्धारण

जब हमें यह लगता है कि हम जिस लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ आगे बढ़ रहे हैं और उसमें सफल होना आसान नहीं है तो हमारे पैर उस राह में डगमगाने लगते हैं। लिहाजा यह अनिवार्य है कि हम अपने जीवन का जो भी लक्ष्य एक बार निर्धारित कर लें, उसके बाद उसे प्राप्त करने के बारे में कभी संदेह को जन्म नहीं दें और इस प्रकार की सोच के साथ जब हम आगे बढ़ेंगे, तो हमारा समय कभी बरबाद नहीं होगा।

* * *

लक्ष्य-हासिल

सफलता किसी व्यक्ति द्वारा चुने गए लक्ष्यों को हासिल करना है। ऐसे लक्ष्य, जिनकी कोई व्यक्ति आकांक्षा रखता है और उनके लिए कार्य करता है, भले ही वे कुछ भी हों। यह हमारे प्रयत्नों का सकारात्मक परिणाम है। उपलब्धियों के सिलसिले को जब एक साथ रखकर जीवन की बड़ी उपलब्धियों के साथ जोड़ा जाता है, तो उसे सफलता के रूप में जाना जाता है।

* * *

लगन व परिश्रम

सपने साकार करने में समय लगता है, लेकिन यदि दिल में उत्साह, ईमानदारी और परिश्रम करने की तमन्ना है, तो वे पूरे हो जाते हैं। कहा जाता है कि हम जैसा सोचते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। जीवन में सफलता का निर्धारण सबसे पहले मन में होता है, फिर उसे पूरा करने के लिए लगन के साथ परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सपना देखना ज्ञान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। ज्यादातर सफल लोग कोई बहुत कुशाग्र बुद्धिवाले नहीं होते—वे हमारे-आपके जैसे साधारण लोग ही होते हैं। लेकिन उनमें अलग ढंग से सोचने और कुछ करने का साहस होता है। उनमें पहला कदम आगे बढ़ाने की हिम्मत होती है, उसके बाद दूसरा कदम उठाने का जोश होता है। उसके बाद तीसरा कदम चलने की लगन होती है।

* * *

लड़ाई के हथियार

आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हैं या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें इस बात को ध्यान में रखें।

* * *

लालच

लालच पैदा होते ही व्यक्ति को मित्रता, रिश्ते-नाते आदि किसी का ध्यान नहीं रहता। बस उसे वही वस्तु सर्वोपरि दिखाई देती है, जिसके कारण उसके मन में लोभ अर्थात् लालच समाया हो। लोभ व्यक्ति की व्यक्तिता छीन लेता है। इसके कारण व्यक्ति राक्षसी प्रवृत्ति का हो जाता है और छीना-झपटी, छल-कपट आदि में उलझकर जीवन का उद्देश्य भूल बैठता है। लालच नामक दुर्गुण से दूर रहना अत्यंत आवश्यक है विशेषकर उन लोगों के लिए, जो जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं, कुछ करना चाहते हैं अर्थात् अपना भाग्य बदलना चाहते हैं।

* * *

लोभ ऐसा दुर्गुण है, जो नजर पड़ते ही व्यक्ति को जकड़ लेता है। कहा भी गया है 'लालच बुरी बला।' लालच वास्तव में एक बला है, जो एक बार पीछे पड़ जाए, तो उससे बचना मुश्किल हो जाता है। थोड़ा सा लालच बड़ी हानि करवा बैठता है। यहाँ तक कि हत्या, डकैती, अपहरण तक।

* * *

लोकनिंदा-भय

हममें बहुत बार अच्छे विचार प्रविष्ट होते हैं, परंतु लोकनिंदा के भय के कारण हम कार्य करने से वंचित रह जाते हैं। अधिकांश लोग यही चाहते हैं कि जैसा वे करें, वैसा ही सब करें, जिस चाल से और जिस ढंग से वे चलते हों उसी तरह सब चलें। यदि लोकमत से जरा भी भिन्नता हुई, तो लोग बुरा कहने लग जाते हैं। नए कार्य को हम डर के मारे अधूरा ही छोड़ देते हैं। उसमें हमारा या संसार का जो भला होता है, उससे हाथ धोना पड़ता है। वस्त्र के पहनने में, नौकर-चाकर रखने में, रहन-सहन में, खेतीबाड़ी, व्यवसाय करने में, इन सब कार्यों में हमने कुछ नवीनता या भिन्नता दिखाई नहीं कि संसार की जीभ हमारी बुराई करने लग जाती है। इस बुराई से बचने के लिए यदि कोई शस्त्र या अस्त्र है, तो एकमात्र साहस है।

* * *

वाणी

छोटी-छोटी बातों के लिए असत्य वाणी मुँह से निकालना केवल असफलता का चुनाव करनेवाले लोगों को ही शोभा देता है। व्यक्ति को इतना मृदुभाषी बनाना चाहिए, जिससे उसकी वाणी से सभी मधुरता प्राप्त कर सकें। वाणी में मधुरता होगी, तो व्यक्ति की सफलता के मार्ग की बाधाएँ स्वत: समाप्त होती जाएँगी। शब्दों को मुँह से इस प्रकार निकालना चाहिए, जो सीधे हृदय पर छाप छोड़ें। स्पष्ट एवं मधुर वाणी सफलता के लिए उत्तम गुण है, जिसके सहारे व्यक्ति अपनी बाधाओं को आसानी से जीत सकता है।

* * *

यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह कैसे शब्द बोलता है। यदि वह ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जो सुननेवाले की आत्मा को तृप्त कर दें, तो उसकी छवि सुननेवाले के मन पर अलग बनेगी, लेकिन यदि वह विषैले

बाण छोड़ता है, तो सुननेवाले पर ऐसे घाव होंगे, जो जीवन भर किसी औषधि से नहीं भर पाएँगे और न ही उन घावों की टीस कम हो पाएगी। व्यक्ति की वाणी में सत्यता होनी चाहिए। सत्यता का प्रभाव व्यक्ति को सर्वोपरि बनाता है, जो भाग्य निर्माण में सहायक होता है।

* * *

व्यक्ति के कुछ बोलते ही ज्ञात हो जाता है कि उसके आचार-विचार कैसे हैं? संस्कृति कैसी है? व्यक्ति की वाणी उसके व्यक्तित्व का आईना होती है। व्यक्ति की वाणी मधुर होनी चाहिए, जो स्वयं को और दूसरों को कष्ट न पहुँचाए। अच्छी भाषा के प्रयोग से बिगड़ते काम बनाए जा सकते हैं। वहीं अगर आपकी वाणी कड़वाहट भरी होगी, तो आपके बनते काम में सैकड़ों रोड़े अटक जाएँगे और संभव है कि वह हो ही नहीं।

* * *

वातावरण

व्यक्ति के आसपास की परिस्थितियाँ व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं, जो भाग्य-निर्माण में महती भूमिका निभाता है। व्यक्ति जहाँ रहता है, उसके आसपास कैसे लोग रहते हैं? वह किस वातावरण में उठता-बैठता है? क्या कार्य करता है? उसके मित्रादि कैसे हैं? उसे कैसा वातावरण प्रदान करते हैं? ये सभी बातें व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं और उन्हीं के अनुरूप व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सच है कि जैसा वातावरण होगा, वैसे ही विचार बनेंगे और व्यक्ति उसी के अनुरूप ढल जाता है।

* * *

विचार-शक्ति

अपना भाग्य स्वयं बदलने के लिए आवश्यकता है कि व्यक्ति के विचार अच्छे हों, उसके विचार भटकें नहीं। जब मन इधर-उधर भटकेगा तो विचार भी भटकेंगे और गलत विचार जैसे—ईर्ष्या, क्रोध, घृणा आदि मन में जगह बना लेंगे। गलत विचार किसी भी व्यक्ति को बहुत जल्दी अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं और यदि जल्दी ही उनसे छुटकारा नहीं पाया जाता है तो वे व्यक्ति को असफलता की ओर ले जाते हैं। इन सब विचारों से उत्पन्न होती है चिंता, जो व्यक्ति को खोखला बनाती जाती है। चिंता चिता समान होती है। इसलिए चिंता को पनपने नहीं देना चाहिए। अन्यथा वह बहुत जल्दी ही चिता का रूप ले लेती है।

* * *

आपका दिमाग एक समय में केवल एक ही विचार रख सकता है, जो सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी, लेकिन आप नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदल सकते हैं, क्योंकि आप सबकुछ कर सकते हैं। मौकों का इंतजार कर वक्त बरबाद न करें। खुद पर यकीन करें और अपना काम करें। आप अगर रात को ही अपने कपड़े निकालकर रख लेते हैं तो सुबह उठकर समय खराब नहीं होगा। यदि हमारा ज्यादातर शॉपिंग करने में बरबाद होता है, तो एक लिस्ट बनाएँ और एक बार में सारा सामान ले आएँ।

* * *

आपका प्रत्येक विचार आपके भविष्य का निर्माता है। भले ही वह विचार शुभ हो अथवा अशुभ। यदि आपके विचार शुभ होंगे तो वे आपके भाग्य निर्माता होंगे और अशुभ विचार आपको असफलता की ओर ले जाएँगे। वस्तुत: आपका भविष्य आपके शुभाशुभ विचारों पर टिका होता है। अब यह व्यक्ति को स्वयं निर्णय करना होता है कि वह सफलता प्राप्त करना चाहता है अथवा असफलता।

* * *

कहा गया है कि तुम विचार द्वारा भाग्य पर विजय प्राप्त करते हो। यदि तुम यह समझ लो कि मनुष्यों के भाग्य निर्माण में विचार ही एकमात्र कारण है तो तुम्हें हाथ में तलवार नहीं लेनी पड़ेगी। जैसा विचार होगा, अनिवार्य रूप से वैसा ही परिणाम होगा।

* * *

जब तक व्यक्ति का मन शांत नहीं होगा, तब तक उसके मन में अच्छे विचारों का आना संभव नहीं होगा। धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों द्वारा व्यक्ति आत्मीय शांति प्राप्त कर सकता है। मन शांत होने पर अच्छे विचारों का आगमन होगा, जो उसे अच्छे कार्यों की प्रेरणा देकर भाग्य निर्माण की ओर ले जाएँगे।

* * *

जब व्यक्ति कुविचारों की गिरफ्त में आ जाता है तो यह कहता है कि बड़ी चिंता की बात है, क्या करें, क्या न करें? कुविचारों का वह गुलाम हो जाता है। अच्छी पुस्तकें, मनोरंजन, परिवार आदि में मन लगाकर वह इन कुविचारों से बच सकता है। किसी भी परिस्थिति में हमें व्यसनों का गुलाम नहीं होना चाहिए। और जैसी परिस्थिति हो, उसे उसी प्रकार से निबटाया जाना चाहिए, जो उस समस्या या परिस्थिति के लिए आवश्यक हो।

* * *

जिस प्रकार कोई दीवार नींव के बिना खड़ी नहीं रह सकती, उसी प्रकार व्यक्ति समाज में तभी स्थान बना सकता है, जब उसके विचार अच्छे होंगे। अन्यथा कुविचारों के साथ व्यक्ति की क्या स्थिति हो सकती है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

* * *

जीवन में विचारों का आदान-प्रदान भी विशेष महत्त्व रखता है। महान् व्यक्तियों के विचारों से भी प्रेरणा मिलती है। महान् विचार व्यक्ति के लिए उत्प्रेरक होते हैं। व्यक्ति के स्वयं के विचार और दूसरों के वे उच्च विचार, जो कि व्यक्ति ग्रहण कर उन पर अमल करें तो वे सफलता में महत्ती भूमिका निभाते हैं। इसलिए भले ही कोई साधारण रहता हो, लेकिन उसके विचार सदैव उच्च ही होने चाहिए।

* * *

मन ही अच्छे-बुरे विचारों को अपने अंदर स्थान देता है। मन को वश में करके कुविचारों को जगह बनाने से पहले ही नष्ट किया जा सकता है। केवल अच्छे विचारों को अपनाना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति पढ़ा-लिखा होगा, तभी उसके मन में अच्छे विचार आएँगे। एक निरक्षर के मन में भी विचारों की हलचल होती रहती हैं। इसलिए वह भी अच्छे-बुरे विचारों का ज्ञान रखता है। सभी के अपने अलग-अलग विचार होते हैं। बहुत से ऐसे व्यक्ति भी देखे जा सकते हैं, जिनके विचार आपस में मेल भी खाते हैं।

* * *

यदि कोई व्यक्ति दूसरों के गलत कार्यों पर विचार करता है तो उसके मन में भी गलत विचार आ सकते हैं, लेकिन जो व्यक्ति उन गलत विचारों से सीख लेकर उन्हें छोड़ देता है, वही अच्छे आचार-विचारवाला होता है। बिना विचारे कार्य करने पर पछतावे के अतिरिक्त कुछ हासिल नहीं होता। विचार-विमर्श करके किया जानेवाला कार्य इच्छा पूर्ण करता है।

* * *

यदि मनुष्य आत्मोन्नति तथा अपने व्यक्तित्व को विकसित करना चाहता है, तो शुभ विचारों तथा सात्त्विकता को आश्रय देकर जीवन में पवित्रता का संचार करे। पवित्रता में देवों का वास है। यहीं पर उन्नति तथा विकास का अभ्युदय है।

* * *

विचार व्यक्ति की वह शक्ति है, जो उसे संचालित रखती है और केवल सद्विचार ही व्यक्ति को व्यक्ति बनाते हैं और सद्विचारों पर ही व्यक्ति-जीवन की भाग्य निर्माण प्रक्रिया और सफलता-असफलता टिकी होती है।

* * *

विचार सर्वत्र व्याप्त है। विचार हमारे भीतर है, बाहर है, प्रत्येक स्थान पर हैं। जिस घर में हम जनमे, जहाँ से हमें संस्कार मिले। वास्तव में हमारा जन्म विचारों में ही तो हुआ। आज हम जो कुछ भी हैं, अपने विचारों के ही कारण हैं। वस्तुत: हम हैं ही क्या? हम और कुछ भी नहीं, अपने और अपने से जुड़े लोगों के विचारों का प्रतिबिंब हैं, प्रतिफल हैं।

* * *

व्यक्ति के उच्च एवं आदर्श विचार, जहाँ उसे समाज के लिए प्रेरणा के तौर पर स्थापित करते हैं, वहीं कुविचार व्यक्ति को राक्षसी प्रवृत्ति का बना देते हैं। अच्छे विचार सिर्फ स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं, क्योंकि अच्छे विचार अच्छी शिक्षा ही देंगे।

* * *

व्यक्ति के विचार उसके भाग्य बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अच्छे विचार उसे सफलता की ओर ले जाते हैं, वहीं बुरे विचार असफलता की ओर। सफलता पाने में विचारों का अत्यधिक महत्त्व है। किसी भी कार्य को करने से पहले व्यक्ति विचार-विमर्श अवश्य करता है, किंतु सिर्फ वही व्यक्ति, जो सफलता प्राप्त करना चाहता है। अन्यथा बिना विचारे, जो कार्य किया जाता है, वह मुसीबत ही खड़ी करता है।

* * *

व्यक्ति को अपने विचारों की शक्ति को सर्वदा बनाए रखना चाहिए। अच्छे विचार मन में बुराइयों को बसने नहीं देते, बल्कि दूसरों के मन को भी अपने विचारों की शक्ति से स्वच्छ व निर्मल बना देते हैं। व्यक्ति का सारा कार्य उसके विचार के अनुसार चलता है। विचार बदलता है, परंतु जीवन चलता है विचार के अनुसार ही।

* * *

व्यक्ति में विचारों की पूरी शृंखला विकसित होने के साथ ही उसके विचारों में परिपक्वता आती है। बहरहाल विचारों में शृंखला का विकास प्रत्येक व्यक्ति के हृदय के साथ उसके मस्तिष्क में भी होता है। इन्हीं विचारों से मनुष्य की प्रवृत्ति तथा प्रकृति विकसित होती है।

* * *

सभी व्यक्तियों को ज्ञात होना चाहिए कि उनके भीतर कुछ विशिष्ट चीज हैं, जिनके माध्यम से वे अपने आपको भीड़ से अलग खड़ा कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की सोच, उसके विचार अलग-अलग होते हैं। मसलन एक व्यक्ति की खूबियाँ और उसकी आंतरिक विशेषताएँ अलग-अलग होती हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में भिन्न विचार विद्यमान होते हैं।

* * *

स्पष्ट एवं सद्विचारों को सर्वदा अपनाने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति के स्पष्ट विचारों में वह जादू होता है, जो लोगों में नई शक्ति का संचार कर उन्हें भाग्य निर्माण की ओर अग्रसर कर सकता है, जब सद्विचारों को सही ढंग से लोगों तक पहुँचाया जाए।

* * *

हम अपने विचारों को सकारात्मक अथवा आशाजनक बनाए रखें, ताकि हमारे मानसिक संवेग सकारात्मकता की तरफ उन्मुख हो सकें। इसके लिए हमें अपने विचारों को शुद्ध रखना होगा। हमारी वैचारिक संपदा ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। इसे सहेज कर रखिए, ये आपको औरों से अलग दिखने व बनने में बड़ी भूमिका अदा करेगी। सकारात्मक मानसिकता हमारे जीवन के संपूर्ण पथ को आलोकित करती है।

* * *

हमारी जीवन-पद्धति पर हमेशा श्रेष्ठ विचारों एवं सद्गुणों का शासन होना चाहिए। हमें इस दिशा में सदा प्रयत्नशील व सतर्क रहना चाहिए कि बुरे विचार कभी हमारे मन पर प्रभावी न हों। हमें रचनात्मकता या धनात्मकता के विपरीत विचारों से सदा ही अपनी रक्षा करनी चाहिए। जब हम भूमि में अच्छा बीज बोते हैं, अच्छा खाद और उचित पानी देते हैं, मौसम भी ठीक रहता है, तो पौधे के अंकुर फूटने से लेकर फलयुक्त होने तक की सभी क्रियाएँ, भली प्रकार संपन्न होती हैं।

* * *

विचारधारा

'मुझमें वे विशेषताएँ नहीं, जो अन्य लोगों में है। मैं सदा ही असफल रहा हूँ, मेरा भाग्य कभी साथ नहीं देता', यदि आपकी विचारधारा इसी रूप में बह रही है तो समझ लीजिए कि अपने मार्ग में आप स्वयं ही झाड़-झंखाड़ खड़े कर रहे हैं। ऐसा कर आप न सिर्फ अपनी शांति और संतोष गँवा रहे हैं, बल्कि बीमारियों, कष्टों और भाग्यहीनता को भी निमंत्रण दे रहे हैं।

* * *

विपरीत हालात

तजुर्बों का कोई छोटा मार्ग नहीं, वे हमारे लिए सबसे बड़े सबक का काम करते हैं। विपरीत हालातों से हार मानने के बजाय उन्हें अपने हक में करने के उपाय अमल में लाने की जरूरत है। क्षणिक लोभ के चक्कर में दूरगामी लक्ष्यों से समझौता करना उचित नहीं।

* * *

विवेक

विवेक भाग्य निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण गुण है, जो जीवन में पग-पग पर काम आता है। विवेकानुसार कार्य करने पर व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है, जबकि अविवेक व्यक्ति के लिए खतरे पैदा कर सकता है। स्वविवेक से कार्य करने पर व्यक्ति भाग्य निर्माण की सही राह पकड़ सकता है, वहीं विवेकहीन होने पर व्यक्ति अपने काम बिगाड़ सकता है।

* * *

विवेकशीलता

विवेकशील व्यक्ति कार्य करने से पूर्व उसके प्रत्येक पहलू पर विचार करता है, जिससे कि असफलता से बचा

जा सके। जबकि विवेकहीन व्यक्ति उतावलेपन से कार्य करके अपनी हानि कर बैठता है। साथ ही दूसरों को भी नुकसान पहुँचाता है।

* * *

विवेकशील व्यक्ति हमेशा सोच-समझकर कदम उठाते हैं। ईर्ष्या, क्रोध, लालच, गर्व आदि सभी विकार विवेक के शत्रु हैं। जब व्यक्ति किसी व्यक्ति की सफलता से ईर्ष्या करता है तो वह अपना विवेक खो देता है और उसके विरुद्ध लोगों को भड़काता है। जब व्यक्ति अधीर होता है तो उसे क्रोध आता है। क्रोध में आपा खोकर वह विवेकहीन हो जाता है और अपना अहित करता है। साथ ही दूसरों के लिए भी हानिकारक बन जाता है।

* * *

विवेकशीलता व बुद्धिमत्ता

यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर हम अपने लक्ष्यों को निर्धारित करें। हमारे निर्णय तथ्यपरक हों तथा हमारी पृष्ठभूमि से विवेकशीलता व बुद्धिमत्ता की झलक दृष्टिगोचर होनी चाहिए। भावनाओं में बहकर अपना बंटाधार कराना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं है। अपनी उपलब्धियों पर अभिमान करना, भारी-भरकम व्यक्तित्व की निशानी नहीं है। नाकामयाबी से डाँवाँडोल न हों। सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख प्रकृति की विशेषता है।

* * *

विवेकहीनता

व्यक्ति जब किसी वस्तु आदि के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो जाता है तो उसके मन में लालच समा जाता है। वह अवैध तरीके से उस वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास करता है, इसके लिए वह हिंसक प्रवृत्ति तक अपना लेता है। उसके मन में एक ही खयाल रहता है कि किसी भी प्रकार उसे वह वस्तु प्राप्त करनी है, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े। और यही वह क्षण होता है, जब व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है।

* * *

व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व विकास के प्रति निरंतर सजग रहकर आप सफलता व उपलब्धियों के क्षितिज पर अपने वर्चस्व के सुनहरे हस्ताक्षर कर सकते हैं। व्यक्तित्व में श्रेष्ठता से आपका, आपके परिवार का व संपर्क-क्षेत्र का तो भला होगा ही, आप और बेहतर सुंदर व सभ्य समाज निर्मित करने में अपना बेशकीमती योगदान देंगे। श्रेष्ठ और सक्षम मनुष्यों से भरी-पूरी दुनिया अनेक मायनों में स्वर्ग होगी।

* * *

व्यक्तित्व-निर्माण

जो लोग अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे अपनी भावनाओं, आवेश, उद्वेग, विचारों तथा क्रोध आदि पर पूर्ण नियंत्रण रखें। अपने इर्द-गिर्द के वातावरण में पूर्ण रुचि लेने की आदत विकसित करना भी व्यक्तित्व विकास का सहायक तत्त्व है।

* * *

व्यक्ति में स्वयं के व्यक्तित्व विकास की क्षमता होनी चाहिए, क्योंकि अपना व्यक्तित्व निर्माता वह स्वयं होता है। कोई दूसरा उसको प्रभावित करता है, लेकिन यह उसके ऊपर निर्भर करता है कि वह उस प्रभाव से किस प्रकार

प्रभावित होता है।

* * *

व्यक्तित्व विकास के मामले में आत्मानुशासन की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आत्मानुशासन से अभिप्राय व्यक्ति द्वारा अपने कार्यकलापों, अपनी प्रवृत्तियों, अपनी आदतों, विचारों, तथा दिनचर्या पर नियंत्रण रखना है। मसलन आप प्रतिदिन पौ-फटे उठना, तो चाहते हैं, परंतु उठ नहीं पाते हैं तो इसका तात्पर्य यह है कि आप में आत्मानुशासन का अभाव है। यही नहीं कई बार तय कर चुकने व संकल्प साधने के बावजूद आप यदि किसी बुरी आदत को अलविदा नहीं कह पा रहे हैं तो यह आपके आत्मनियंत्रण की बेचारगी का द्योतक है।

* * *

स्थिर व गतिहीन होना व्यक्तित्व की नियति नहीं, हम अपनी इच्छाओं, आदर्शों व मनोकामनाओं के अनुरूप अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन कर सकते हैं। वस्तुत: हमारी समग्र शिक्षाएँ व अवधारणाएँ हमारे व्यक्तित्व को निर्मित करती हैं। हालाँकि हमारे व्यक्तित्व के कुछ पक्ष ऐसे भी हो सकते हैं, जिनमें बदलाव लाना मुश्किल जान पड़े, परंतु ज्यादातर मामलों में आत्मानुशासन द्वारा हम स्वयं को अधिक काबिल तथा प्रभावशाली बना सकते हैं।

* * *

व्यवहार

किसी भी व्यक्ति को अच्छा व्यवहार करने पर उसे प्रचारित नहीं करना पड़ता है कि 'मैं सद्व्यवहारी हूँ'। उसका यह गुण स्वत: एक प्रचार होता है, जिसका दूसरे लोग स्वयं प्रचार करते हैं। उसकी यह प्रशंसा एक-दूसरे से होती हुई जगव्याप्त हो जाती है। जो उसके भाग्य निर्माण व सफलता के लिए भी आवश्यक होती है।

* * *

व्यवहार व्यक्ति का वह गुण है, जो उसे समाज में स्थापित करता है। व्यक्ति का व्यवहार उसके भाग्य निर्माण, सफलता-असफलता की सीढ़ियाँ निश्चित करता है। व्यक्ति का व्यवहार किसके साथ कैसा है, समाज में यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। साथ ही व्यक्ति जहाँ कार्य करता है, जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ उसका व्यवहार कैसा है? ये सभी बातें व्यक्ति के भाग्य निर्माण, सफलता-असफलता पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

* * *

व्यवहारप्रियता

प्यार की भाषा बोलें। किसी के साथ ऐसा व्यवहार बिल्कुल भी न करें, जैसा कि आप अपने लिए नहीं चाहते हैं। समझदारी और विश्वास का सही इस्तेमाल करना सीखें। किसी की बातों पर पूरी तरह भरोसा तो करें, लेकिन मन में एक प्रश्न चिह्न भी रखें, इससे आप धोखा नहीं खाएँगे।

* * *

व्यावहारिक दृष्टिकोण

जीवन में कामयाबी अर्जित करने के लिए हम अपना मूल्यांकन करें तो हममें अपने निकट संबंधियों व संगी-साथियों की भी वास्तविक स्थितियों का निष्पक्ष आकलन करने की समझ-बूझ होनी चाहिए। हमें तमाम पूर्वग्रहों से मुक्त होकर व्यापक व व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने की जरूरत है। जिंदगी अपने विविध रंगों व शक्लो-सूरत में हमसे रूबरू होती है। कभी हमें वह खुशगवार लगती है, तो कभी मनहूस। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जिंदगी की चुनौतियों से मुँह चुराने के बजाय हम उनका डटकर मुकाबला करें।

* * *

शक्ति

जिस प्रकार एक चुंबक लौह धातु को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार व्यक्ति भी अपनी शक्तियों के बल पर सफलता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

* * *

शिक्षा

जो व्यक्ति गलत शिक्षा ग्रहण करता है, अपना जीवन असफलता के नाम लिख देता है। उसे हमेशा निराशा घेरे रहती है। उसमें आत्मविश्वास की कमी होगी। वह स्वयं तो भटकता है, दूसरों को भी गलत मार्ग की ओर जाने की प्रेरणा देता है।

* * *

शिक्षा छोटे से भी मिले तो उसे ग्रहण करना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने में गर्व नहीं करना चाहिए। अपनी शिक्षा पर गर्व भी नहीं करना चाहिए। गर्व करेंगे, तो समाज से कट जाएँगे।

* * *

स्कूल-कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करके, जब कोई व्यक्ति समाज में कदम रखता है, उसे समाज में भी भाँति-भाँति के शिक्षक मिलते हैं। उनमें से बहुत कम शिक्षक सही शिक्षा देंगे, किंतु अधिकतर ऐसे होंगे, जो गलत रास्ता अपनाने के लिए बाध्य करेंगे। लेकिन जिसे सफलता प्राप्त करनी है और जिसने अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित कर रखा है, वह अपने मार्ग से कभी नहीं डिग सकता।

* * *

संगति

अच्छे लोगों की संगत से अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है, जो सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके विपरीत यदि गलत संगत करेंगे तो स्वाभाविक है, गलत ही शिक्षा मिलेगी और वह गलत शिक्षा असफलता की ओर ले जाएगी।

* * *

अगर आप स्वयं के सम्मान के प्रति सचेत रहेंगे तो स्वाभाविक है कि आप ऐसे लोगों के साथ से बचेंगे, जिससे आपके सम्मान को ठेस पहुँचे। जिस प्रकार कड़वा बोलने से अच्छा चुप रहना है, उसी प्रकार कुसंगति से बचने का उपाय यही है कि आप अकेले ही रहें।

* * *

जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को ध्यान में रखता है और भाग्य निर्माण व सफलता चाहता है, वह कभी भी बुरी संगति में नहीं पड़ता। और यदि पड़ भी जाता है तो दूसरों को अपनी संगति से अच्छा बना देता है, उन्हें भी सही राह दिखाता है।

* * *

व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि भाग्य निर्माण व सफलता प्राप्त करने के लिए ध्यान रखे कि वह किस प्रकार के लोगों के साथ उठता-बैठता है। उसकी संगति कैसी है। संगति का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता है। जैसी संगति होगी, वैसे ही गुण व्यक्ति में आएँगे, भले ही वह कितना ही सुसंस्कृत हो।

* * *

संगति का प्रभाव बहुत प्रभावशाली होता है। यदि व्यक्ति अच्छे लोगों की संगति करता है तो उसे अच्छे विचार, अच्छे सुझाव आदि सुनने को मिलते हैं और उस पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है। बुरी संगति व्यक्ति पर बुरा प्रभाव डालती है।

* * *

स्वच्छ जल में थोड़ी सी भी गंदगी डालने पर वह मैला हो जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति का हृदय भी स्वच्छ व निर्मल होता है। उसे जिस प्रकार का संग मिलता है, जैसे विचार उसे प्रभावित करते हैं, वह वैसा ही हो जाता है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कुसंगति के मार्ग की ओर देखे भी नहीं। कुसंगति के लिए मित्र आदि के दबाव से बचे। उन्हें भी इस दुर्गुण से दूर रहने को प्रेरित करे।

* * *

संघर्ष

प्रत्येक व्यक्ति के सीने में यह अरमान होता है कि वह बड़ा काम करे। कुछ नया करे। जब हम सुनियोजित तरीके से अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं तो संघर्ष करने के लिए एक अच्छा-खासा रास्ता मिल जाता है। जब हम लक्ष्य को छू लेते हैं तो हमारा संघर्ष भी स्वत: पुरस्कृत हो जाता है। उधर प्रतिफल की आशा हमें अंत तक कार्य करने तथा संघर्ष करने के लिए मदद प्रदान करती है।

* * *

संतुलन

बहुत बार ऐसा होता है कि हम जैसा चाहते हैं, वैसा माहौल हमें नहीं मिल पाता। कई बार हमारी अपेक्षा के मुताबिक भी जब हमें मान-सम्मान या अहमियत नहीं मिलती, तब भी हम उखड़ जाते हैं। परंतु हमें विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित रखना चाहिए तथा मुसकराते हुए प्रत्येक व्यक्ति से बात करनी चाहिए।

* * *

संपर्क

सफलता के लिए लोगों से सतत संपर्क बनाए रखना जरूरी है। लोगों से लंबे समय तक संपर्क बनाए रखना हर किसी के बस की बात नहीं है। रिश्तों को मेंटेन वहीं लोग कर पाते हैं जो लंबे समय तक बेहतर रिश्ते बनाने में यकीन करते हैं। बाकी लोग, तो अपना काम निकलने पर भूल जाते हैं। वही व्यक्ति अपनी निजी और पेशेवर दोनों ही प्रकार के जीवन में उन्नति करता है या खुश रहता है, जिसका नेटवर्क अच्छे व गुणी लोगों से जुड़ा होता है। ये रिलेशन उस वक्त हमारे लिए संजीवनी का काम करते है, जब एक के बाद एक आती परेशानियों के वार से हम मूर्छित हो जाते हैं।

* * *

सकारात्मक छवि

नकारात्मक छवि आपकी सफलता में बाधा बनकर सामने आती है, जो आपके सपनों और उद्देश्य को प्रभावित करती है। आप काम आरंभ करने से पहले ही निराश हो जाते हैं। अपनी छवि के बारे में यह सोच स्वयं आपके द्वारा विकसित की गई है, जिसे केवल आप अनुभव करते हैं। ऐसे समय में आप खुद से कहने लगते हैं कि मैं अच्छा नहीं हूँ। मुझे सही लोगों की पहचान नहीं। इन परिस्थितियों में आपको अपनी सोच नकारात्मक से

सकारात्मक में बदलने का प्रयास करना चाहिए, जिससे आप हर कार्य में निपुण हो जाएँगे।

* * *

सकारात्मक दृष्टिकोण

जब हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों तो ऐसी स्थिति में खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है। एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। विभिन्न तरह के लोग अपने द्वारा किए गए व्यवहार या असहयोगी शब्दों के प्रति अलग-अलग सिद्धांत अपनाते हैं। ऐसा आपके परिवार और दोस्तों के बीच भी होता है। यह सोचना अव्यावहारिक ही होगा कि आपके सपने को पूरा करने में सभी लोग आपकी सहायता करेंगे। जरूरी यह है कि आप किसी से सहयोग न मिलने की स्थिति के लिए सदा तैयार रहें। जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो इससे परेशान हुए बिना, ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास करें।

* * *

सकारात्मक वातावरण

जीवन एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें हम अनुभव और जरूरी सबक प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा न सिर्फ हम अपने अस्तित्व में बदलाव ला सकते हैं, वरन् अपने चारों तरफ एक सकारात्मक वातावरण फैला सकते हैं। हमें जीवन को ऋणात्मक प्रवृत्तियों में बरबाद नहीं करना चाहिए तथा व्यर्थ के दोषारोपन अपने पर तरस खाने और जीवन की असमानताओं की शिकायत करने में नहीं गँवाना चाहिए। जब तक जीवन है, उसे बेहतर बनाएँ।

* * *

सकारात्मक विचार

सकारात्मक विचारवाले लोग समाज के अन्य व्यक्तियों के मुकाबले अधिक सफल, लोकप्रिय व प्रभावशाली होते हैं। लोग उनकी स्वयं ही मदद करने को उत्सुक रहते हैं। उनके बड़े-से-बड़े व जटिल कार्य भी मामूली से प्रयासों से सिद्ध होता जाते हैं।

* * *

सकारात्मक विचारधारा

सकारात्मक विचारधारा के लोगों को समाज में सामंजस्य स्थापित करने में कोई अड़चन नहीं होती। यदि हम अपने जीवन से विरोधाभासों को तिरोहित करने में कामयाब हो जाएँ तो यह सामंजस्य और भी बेहतर हो सकता है।

* * *

सकारात्मक व्यवहार

जो भी व्यक्ति भाग्य निर्माण कर अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सभी तरह की सुख-सुविधाओं का मालिक होने का मतलब सिर्फ खुशियाँ ही आपके हिस्से में हों, जरूरी नहीं है। सकारात्मक प्रवृत्तिवाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपनी सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

* * *

नकारात्मक विचारों से स्वयं के साथ-साथ संबंधियों को भी मानसिक ठेस पहुँचती है। सकारात्मक व्यवहार से ही हम इस तरह की बातों से पीछा छुड़ाते हुए स्वयं को नई परिस्थितियों के लिए तैयार कर सकते हैं, इसलिए स्वयं को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए। मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित रखता है। इस तरह के व्यक्ति न केवल स्वयं को किसी घटना का शिकार होने से बचाते हैं, बल्कि उन समस्याओं पर विजय भी प्राप्त करते हैं।

* * *

सकारात्मक सोच

जिज्ञासा व्यक्ति को सकारात्मक बनाती है। जिज्ञासा पैदा होना व्यक्ति के सकारात्मक होने की निशानी होती है। सकारात्मक सोच व्यक्ति से बड़ा कार्य कराती है, जबकि नकारात्मक सोच गर्त में धकेलती है। सकारात्मक सोच महानता का मार्ग प्रशस्त करती है। सकारात्मक सोच के बल पर ही बड़े कार्य कर नाम कमाया जा सकता है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

* * *

भाग्य निर्माण व सफलता चाहनेवालों के लिए सकारात्मक सोच का गुण होना लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। सोच सर्वदा सकारात्मक होनी चाहिए। नकारात्मकता व्यक्ति को असफलता का मुँह दिखाती है। सकारात्मक रवैया कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा देता है और व्यक्ति पूर्ण उत्साह से लक्षित कार्य को करता है। व्यक्ति किसी भी कार्य को तभी आसानी से पूरा कर सकता है, जब वह उस कार्य के प्रति रुचि रखता हो, उसके प्रति सकारात्मक हो।

* * *

सकारात्मकता

हममें से अधिकांश का यह स्वभाव बन गया है कि अच्छाइयों को हम नजरंदाज करते जाते हैं और बुराइयों पर अधिक ध्यान देकर निराश होते चले जाते हैं। हमारे चारों ओर प्रतिक्षण बहुत कुछ अच्छा भी घटित हो रहा है। बुराइयों को अनदेखा कर तमाम पूर्वग्रहों से रहित होकर अपना ध्यान अच्छाइयों एवं सकारात्मकता पर केंद्रित करें। आप पाएँगे कि आपके चारों ओर अच्छाइयों एवं सकारात्मकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाएगी।

* * *

सच्ची उपलब्धि

सच्ची उपलब्धि न तो संग्रह में है, न प्राप्ति में है, अपितु सर्जनशीलता में है। हम सही मायनों में अपने मस्तिष्क तथा अपनी आंतरिक ऊर्जा पर ही निर्भर करते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य अपना सितारा खुद है और वह आत्मा, जो इनसान को ईमानदार तथा परिपूर्ण बना दे, उसके आगे नतमस्तक हो जाते हैं—सारी ज्योति, सारा प्रभाव, सारा भाग्य। हमें रचनात्मकता की जलधारा को पूरे वेग से बहाना चाहिए, फिर वह दिन भी आएगा, जब यही गंगा उपलब्धियों के महासागर से जा मिलेगी।

* * *

सत्प्रेरणा

जिस प्रकार शरीर से नहाने का प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है और हमें प्रतिदिन नहाना पड़ता है, उसी प्रकार दिमाग से सत्प्रेरणा का प्रभाव भी धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है। अत: प्रतिदिन किसी प्रकार की धार्मिक-

आध्यात्मिक सत्प्रेरणा के लिए समय अवश्य निकालें, ताकि सदा स्वउन्नति के मार्ग पर अग्रसर रह सकें।

* * *

सद्व्यवहार

बच्चों के समक्ष कभी भूल से भी गलत कार्य न करें, झूठ न बोलें, किसी को अपशब्द न कहें, क्योंकि आपका ऐसा व्यवहार बच्चों के लिए शिक्षा का कार्य करेगा। बड़े जो करते हैं, बच्चे उन्हें शिक्षा के रूप में ग्रहण करते हैं, इसलिए उन्हें अच्छी शिक्षा देने के लिए उनके सामने सदैव सद्व्यवहार रखें, लड़े-झगड़ें नहीं। यह शिक्षा उनके लिए मजबूत नींव के समान होती है, क्योंकि वे अपने बड़ों से ही सीखते हैं और जीवन में उसी शिक्षा का अनुसरण करते हैं।

* * *

सपने साकार

सपनों को पूरा करने में समय लगता है। कोई कहता है कि इसके लिए मेरे पास पैसा नहीं है, समय नहीं है, सहायता करनेवाला कोई नहीं है, तो ये सब बेकार की बातें हैं। अगर आप दो दिन का काम एक दिन में ही करना चाहते हैं तो जैसे आपका शरीर साथ नहीं देगा, वैसे ही सपना भी साथ नहीं देगा। इसलिए जो काम आज करना है, वही कीजिए और जो कल करना है, उसे कल के लिए छोड़ दीजिए। आज का दिन खुशी से बिताइए और रात को चौन की नींद सोइए। लेकिन जिस तरह आज का काम आज पूरा किया है, उसी तरह से कल भी कल का काम पूरा कीजिए, परसों भी।

* * *

सपनों को साकार करना सपने देखने की तरह सहज नहीं होता। उस सपने को बार-बार देखना होता है, साथ ही उसे पूरा करने के लिए सतत प्रयत्नशील भी रहना होता है। इसमें समय और श्रम लगता है।

* * *

सफलता

प्रत्येक व्यक्ति के लिए सफलता के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं। सफलता का अर्थ कई रूपों और परिभाषाओं में होता है। किसी भी लक्ष्य को निर्धारित करने से पूर्व अपनी योग्यता, कार्यक्षमता व समय-अवधि को सुनिश्चित कर लें। यह निर्भर करता है कि आप जीवन में क्या तलाश रहे हैं। सफलता एक यात्रा है, गंतव्य नहीं है, आपको लगातार आगे बढ़ते रहना है।

* * *

सफलता का सृजन

कोई भी व्यक्ति सफल रूप में पैदा नहीं होता है, बल्कि वे तो इसका सृजन करते हैं। सफलता कोई इत्तेफाक नहीं है या लॉटरी के टिकट में निहित नहीं होती है, इसे तो आपको स्वयं सृजित करना होता है। सफलता के रहस्यों की जानकारी और उनका सही कार्यान्वयन निश्चित तौर पर किसी व्यक्ति के जीवन में सफलता हासिल करने में मददगार हो सकता है।

* * *

सबसे बड़ी बाधा

असफल लोग स्वयं अपनी सफलता के मार्ग में सबसे बड़े बाधक बनते हैं। सच तो यह है कि बाधाएँ,

परिस्थितियाँ व अवसर आदिकाल से व्यक्ति की असफलता के कारक नहीं हैं। अपितु व्यक्ति स्वयं अपनी सफलता के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक है, क्योंकि वह सफलता के लिए प्रयास न करके दूसरों की आलोचना में ही अपना समय व्यतीत करता रहता है। दूसरों के कार्यों में दोष ढूँढ़ेंगे, लेकिन स्वयं अपने कार्य पर ध्यान नहीं देंगे। अब वे सफल कैसे हों? बहुत से लोग सफलता प्राप्त करने के लिए शॉर्टकट अपनाते हैं, लेकिन इस प्रकार के व्यक्तियों में और एक पूर्ण सफल व्यक्ति में वही अंतर है, जो किसी फल के पेड़ पर ही पकने और उस फल के भूसे में दबकर पकने में होता है।

* * *

समय का सदुपयोग

जीवन जीने की कला में समय का सदुपयोग या समय-प्रबंधन विशेष भूमिका निभाता है। उद्देश्य की प्राप्ति की तो हर एक को लालसा होती है, पर वह यह नहीं जानता कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति का मार्ग कितना दुर्गम है, कठिनाइयों भरा है। यह पता ही नहीं होता कि जीवन को व्यवस्थित कर ही हम इन मंजिलों को प्राप्त कर सकते हैं। जीवन व्यवस्थित होता है समय-प्रबंधन के साथ। यही एक मात्र साधन है, जो मनुष्य को उसके उद्देश्यों की ओर प्रेरित करता है।

* * *

जो समय को बरबाद करता है, समय उसको बरबाद कर देता है। इसलिए समय का सही उपयोग कीजिए। लोग कहते हैं कि समय से पहले और भाग्य से अधिक न किसी को मिला है और न किसी को मिलेगा, लेकिन आप समय के साथ चलकर देखिए। कठिन काम थोड़ा समय लेता है, इसलिए खुद पर विश्वास कीजिए और योजना के साथ उसे करने की ठान लीजिए। समय का सही इस्तेमाल कीजिए और मौके का फायदा उठाइए, फिर आप विजेता बन सकते हैं।

* * *

समय का सदुपयोग न करने से मन चंचल हो जाता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी काम ठीक प्रकार नहीं कर सकता। उससे सफलता दूर भागेगी। ऐसा व्यक्ति बर्बर और उद्दंड होगा। उसमें उचित कार्यक्षमता की भावना का अभाव होता है। वह न ज्ञानार्जन कर सकेगा न धनार्जन। वह केवल अशांति का शिकारी बनकर रह जाएगा। उसका जीवन अभावों से भरा रहता है। वह निंदा का पात्र बनेगा और जीवन के अंतिम क्षणों में उसे पछताना पड़ेगा, पछताने से भी उसके हाथ कुछ नहीं आएगा। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने समय का सदुपयोग करके जीवन को मार्ग पर ले चले। वह अपने भावी जीवन को भी सुखमय बनाए।

* * *

समय किसी के लिए रुकता नहीं और बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। समय डॉक्टर भी है, दवा भी और इलाज भी है। 'प्रत्येक काम नियम से और समय पर ही शोभा देता है' इत्यादि ब्रह्म वाक्य हमें पता होते हुए भी हम व्यर्थ की बुराई, निंदा, टीका-टिप्पणी, आरोप, ताने, लांछन, अनर्गल वार्त्तालाप इत्यादि में समय नष्ट करते रहते हैं। इससे हम पाते कुछ नहीं है, बल्कि खोते ही हैं। हमारी नियमित दिनचर्या के कई घंटे इन्हीं फालतू बातों में नष्ट होते रहते हैं। अत: स्वयं को अनुशासन में रखकर इस नष्ट होनेवाले समय को सार्थक, सदुपयोग में लगाया जा सकता है।

* * *

समय की सारी ताकत वर्तमान में ही सिमटी होती है। वर्तमान पर ध्यान देने से ही हमारा भविष्य सँवरता है। एक दृष्टि से कहें तो समय रुपए की तरह कीमती होने के बावजूद रुपए की तरह नहीं है, क्योंकि इसे पकड़ कर नहीं रखा जा सकता। जब भी हमें समय मिलता है, हमें तत्काल उसका उपयोग करना होता है। जो समय एक बार बीत जाता है, वह हमेशा के लिए हमसे दूर हो जाता है, इसीलिए हम बीते हुए समय को याद तो कर सकते हैं, लेकिन दोबारा हासिल नहीं कर सकते।

* * *

हमेशा वक्त का ध्यान रखें। अपने पास एक घड़ी रखें। कभी-कभी काम की व्यस्तता में समय का अहसास नहीं रहता। अत: अच्छे समय प्रबंधक अपने पास एक घड़ी जरूर रखते हैं। यदि आपको कोई काम करना है और आप अलार्म लगाते हैं तो अलार्म 15 मिनट पहले का लगाएँ। सिर्फ एक मुख्य काम पर ध्यान केंद्रित करें। इससे आपका काम शीघ्र और पूर्ण रूप से होगा। अपने बिताए हुए समय का ध्यान रखें। इससे अभी आप अपने प्रोजेक्ट पर कितना समय लगा चुके हैं, इसका पता चलेगा और आपके पास कितना समय बच गया है, यह भी ध्यान में रहेगा।

* * *

समय की कीमत

एक वर्ष की कीमत उस लड़के से पूछिए, जो परीक्षा में फेल हो गया है और एक वर्ष पिछड़ गया है। वह महसूस करता है एक वर्ष की कीमत। एक महीने की कीमत उस महिला से पूछिए, जिसने बच्चे को एक महीने देरी से या जल्दी जन्म दिया है। वह जानती है एक महीने की कीमत। एक दिन की कीमत आकस्मिक कार्य करनेवाले मजदूर से पूछिए, जिसे यदि एक दिन काम न मिले तो रोटी का सवाल खड़ा हो जाता है। वह जानता है एक दिन की कीमत। एक घंटे की कीमत उस लड़के से पूछिए, जो अपनी प्रेमिका की प्रतीक्षा कर रहा होता है और वह एक घंटा देर से आती है, तो वह जानता है कि उस एक घंटे की कीमत क्या है? एक मिनट की कीमत उस यात्री से पूछिए, जिसकी बस या रेल एक मिनट देर से पहुँचने की वजह से निकल गई है। यात्रा रद्द होने पर उसे एक मिनट की कीमत समझ में आती है। एक सेकेंड की कीमत उससे पूछिए, जो एक सेकेंड की देर होने से किसी दुर्घटना से बच गया है, वह बताएगा एक सेकंड की कितनी कीमत होती है। एक माइक्रोसेकेंड की कीमत एक अंतरिक्ष वैज्ञानिक से पूछिए, जो ब्रह्मांड की खोज में लगा है, जिसकी कि एक माइक्रोसेकेंड की गलत गणना से अंतरिक्ष मिशन ही फेल हो चुका है। वह समझाएगा एक माइक्रोसेकेंड की कीमत।

* * *

समय ही सबसे बड़ा धन है। जब तक हम समय की कीमत नहीं समझेंगे, तब तक अपना भाग्य नहीं बना सकेंगे। भाग्य बनाने के लिए समय की कीमत से वाकिफ होना होगा। कम समय में ज्यादा काम करने की क्षमता उत्पन्न करें तथा सही समय पर काम को पूरा करें। फिर आप समय से आगे निकल सकते हैं। समय-प्रबंधन को भाग्य बनाने की कुंजी माना जाता है। यह कुंजी जिसके हाथ लग गई, उसके क्या कहने। वह कुबेर के खजाने वाली तिजोरी को खोलने में कामयाब हो जाएगा। दरअसल कामयाब जिंदगी, कामयाब दिनों, घंटों और मिनटों की शृंखला है।

* * *

समय की खेती

हर काम को स्फूर्ति से निपटाएँ। टालमटोल न करें। अवसर को न जानें दें। समय की कमी का रोना रोने की

बजाय उसकी खेती करें। यानि अपने 24 घंटे को किस तरह से 48 घंटे में बदल सकते हैं, वह करें। ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है और दूसरा क्षण देने के पूर्व उस क्षण को ले लेता है।

* * *

समय की गति

समय की गति व्यक्तिपरक और सापेक्षीय होती है। अपनी-अपनी परिस्थितियों के हिसाब से किसी के लिए एक घंटे में बीतने वाला समय लंबा, तो किसी के लिए छोटा होता है। अगर हम कार्य नहीं कर रहे होते या फिर अरुचिपूर्ण तरीके से कार्य कर रहे होते हैं, तब बीतनेवाला समय हमें बहुत बड़ा लगता है, लेकिन रुचिपूर्वक कार्य करते समय यही समयांतराल हमें अत्यंत छोटा महसूस होता है।

* * *

समय की महत्ता

जिंदगी में सफल होने के लिए कार्यों को एक निश्चित समय पर करना जरूरी होता है, क्योंकि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, इसीलिए हमें समय का सदुपयोग करना बहुत जरूरी है। एक मिनट हमारे जीवन को नहीं बदल सकता, लेकिन एक मिनट में लिया गया निर्णय हमारे जीवन को बदल भी सकता है, समय की अहमियत भी हर किसी के लिए अलग-अलग होती है।

* * *

समय एक अच्छा चिकित्सक भी है, यह बड़े-से-बड़े घाव को भरने में सक्षम है। समय को एक अच्छा अध्यापक भी माना गया है। ये हमें हमेशा सिखाता रहता है, स्कूल में हमें सीखने के बाद परीक्षा देनी पड़ती है, लेकिन समय पहले हमारी परीक्षा लेता है और फिर सिखाता है।

* * *

समय एक ऐसा चक्र है, जो न किसी के लिए रुकता है और न किसी के लिए वापस आता है। कहते हैं, समय बड़ा अजीब होता है, इसके साथ चलो तो किस्मत बदल देता है और न चलो, तो किस्मत को ही बदल देता है। समय को भगवान् की बनाई इस सृष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब यह बदलता है तो इनसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है।

* * *

समय को जिंदगी के सामान माना गया है, कहते हैं, अगर आप समय को बरबाद कर रहे हैं तो जिंदगी को बरबाद कर रहे है, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे हैं तो अपनी जिंदगी को अच्छा बना रहे हैं।

* * *

समय तो उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है। जीवन का महल समय की घंटे-मिनटों की ईंट से बनता है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर-गरीब नहीं बनाया, उसने अपनी बहुमूल्य संपदा, यानी कि चौबीस घंटे सभी को बराबर बाँटे हैं। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो, परंतु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता, जिस क्षण को हम व्यर्थ समझकर बरबाद कर रहे हैं, वही पल हमारे लिए सौभाग्य की सफलता का क्षण हो। आनेवाला पल तो आकाशकुसुम की तरह है, इसकी खुशबू से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।

* * *

समय पर कार्य शुरू करनेवाला आदमी ही कार्य को समय पर खत्म कर सकता है। कहते हैं, दो प्रकार के व्यक्ति ही जीवन में असफल होते हैं, एक वे जो सोचते हैं, पर समय पर काम को शुरू नहीं करते और दूसरे वे, जो कार्य रूप में परिणत तो कर देते हैं, पर सोचते कभी नहीं। कहने का मतलब, बिना सोच- समझे किया गया कार्य भी असफल होने का कारण हो सकता है, इसीलिए जो भी करें सोच-विचारकर और समय पर करें।

* * *

समय-प्रबंधन

शक्ति हासिल करते रहने के लिए समय-समय पर विश्राम की आवश्यकता है। शक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति आवश्यक हैं, इनके अभाव में हम अपनी जिम्मेदारियाँ एवं उत्तरदायित्व निभाने के लिए न्याय नहीं कर पाएँगे। हम जो भी हों, जहाँ भी हों, हमारा कार्यक्षेत्र कुछ भी हो, हम पर चाहे असीमित जिम्मेदारियाँ, उत्तरदायित्व एवं परेशानियाँ हों, परंतु यदि हमने उचित समय-प्रबंधन कर लिया तो हमारे कई कठिन काम भी सरल हो जाएँगे, रुके हुए कार्य पूर्ण हो जाएँगे, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रशंसा सम्मान, सराहना मिलेगी एवं संतोष-सुख का अनुभव तो हमें स्वयं ही होगा। व्यस्त रहने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, भूख लगने लगेगी, नींद अच्छी आएगी, हम प्रसन्नचित्त, तरोताजा एवं हँसमुख रहेंगे। चेहरे पर गरिमामय तेज होगा, मन में सुकून होगा। समय विभाजन कर हम कम समय में ही अधिक-से-अधिक कार्य कर पाएँगे।

* * *

समय बहुमूल्य है। खोई हुई संपत्ति हम पुन: अर्जित कर सकते हैं, किंतु समय नहीं। इस जीवन में हमें प्रकृति ने एक निश्चित समय दिया है। समय का गणित बहुत सरल है। जितने समय के लिए हमें जीवन जीने को मिला है, उसमें से जितना समय बीत गया, उसे घटाने पर शेष समय आ जाएगा। प्रतिक्षण, प्रति पल यह समय कम होता जा रहा है। शेष समय रोज कम होता रहेगा, इसमें किसी भी प्रकार से वृद्धि करना संभव नहीं है। हम मात्र इतना भर ही कर सकते हैं कि शेष समय का विभाजन कर इस शेष समय में अधिक-से-अधिक कार्य कर जाएँ।

* * *

मनुष्य को सौभाग्य-दुर्भाग्य के सहारे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। उसे समय पर समय-प्रबंधन के साथ अपना सब काम करते रहना चाहिए, अन्यथा इतना समय निकल जाता है कि फिर उसके लिए केवल यही कहने को बचता है कि मेरा दुर्भाग्य था कि मैं कुछ नहीं कर सका, मैं सफल नहीं हो सका।

* * *

समय को उचित रूप में प्रबंधित कर हम अपनी कार्यक्षमता को तो बड़ा ही सकते हैं, साथ ही अन्य महत्त्वपूर्ण काम, जो वक्त की कमी के कारण हमसे छूट जाते हैं, वे भी आसानी से पूरे किए जा सकते हैं। समय-प्रबंधन आपको सफलता दिला सकता है, वहीं अगर आप समय बरबाद करते हैं तो यह आपको तनाव में डालने के साथ-साथ लक्ष्य से आपके ध्यान को भी भटका सकता है।

* * *

समय को दोष मत दीजिए, वक्त की कमी का बहाना न बनाइए। वक्त पर नियंत्रण करना सीखिए। वक्त को अपने ऊपर हावी मत होने दीजिए। जरा सा ढर्रा बदल लेंगे तो देखेंगे कि आप को वक्त की कोई कमी नहीं है। आपके दोनों हाथों में वक्त-ही-वक्त है। आपकी झोली वक्त से हर वक्त भरी है। वक्त की कद्र करना सीखें। जो

वक्त की कद्र नहीं करता, वक्त भी उसकी कद्र नहीं करता। उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाता है।

* * *

समय को हम कभी पकड़ नहीं पाते हैं, जितना पीछे पड़ते हैं, उतना ही वह आगे निकल जाता है। बड़ी विचित्र बात है कि हम समय का महत्त्व जानते हुए भी उसे व्यर्थ जाया करते हैं। इसका मूल कारण है समय-प्रबंधन में हमारी असमर्थता। हम यह भूल जाते हैं कि जीवन प्रबंधन के लिए समय का प्रबंधन करना अति आवश्यक है, वरना व्यस्तता हमारे जीवन पर हावी हो जाती है। अच्छा समय-प्रबंधन, अच्छी समझ पर निर्भर होता है। जब तक हम इस संसाधन को ठीक से समझ नहीं पाएँगे, तब तक हम इसका सही इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे।

* * *

समय को हम सीमा में नहीं बाँध सकते, परंतु समयानुसार अपने आपको व्यवस्थित कर आसमान को छूने की कल्पना जरूर कर सकते हैं। समय की बरबादी हमारे जीवन को अव्यवस्थित तो करती ही है, साथ ही यह हमारे सपनों, हमारी मंजिल, हमारी आशाओं के मार्ग में बाधक भी सिद्ध होती है। समय को अपने सपनों के अनुकूल बनाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है समय का समुचित उपयोग।

* * *

समय-प्रबंधन की योजना बनाने को पर्याप्त समय दें। कहा गया है कि योजना बनाने में विफल होना, अपनी विफलता की योजना बनाना है। विभिन्न स्तरों पर लक्ष्य निर्धारित करें एवं उनकी प्राप्ति के लिए लिखित चरणबद्ध योजना बनाएँ। प्रत्येक दिन के समुचित उपयोग की योजना पिछले दिन ही बना लें। इससे समय की बरबादी पर कारगर रोक लगेगी।

* * *

समय बलवान

समय की महिमा और मर्यादा में जीवन के सभी रहस्य समाए हैं। समय का हर पल बहुमूल्य है। प्रतिक्षण बेशकीमती है। समय क्षण-क्षण की बूँदों से विनिर्मित एक अनंत धारा है, जिसमें जीवन अनवरत बहता रहता है। काल का कोई क्षण सामान्य नहीं होता। यह असामान्य और अद्भुत होता है, क्योंकि वह कोई क्षण ही था, जिसने हमें जीवन दिया। वह कोई क्षण ही है, जो सफलता और असफलता का अनुदान देता है। हर क्षण एक अनोखा अवसर लेकर आता है। उस क्षण के सदुपयोग में ही सच्ची सार्थकता है। अस्त-व्यस्त जीवनशैली और नकारात्मक आदतें भी बहुमूल्य अवसरों को होली के समान जलाती रहती हैं। ये साधनों को, जिनके द्वारा सफलता पाई जा सकती हैं, उन्हें या तो नष्ट कर देती हैं या जटिल बना देती हैं।

* * *

समय महान् है और समय से बड़ा न कोई बलवान है। समय न कभी झुकता है, न रुकता है और न ही किसी का इंतजार करता है। और समय ही ऐसा चिकित्सक है, जो हर घाव को भर देता है, इसलिए समय की पूजा और उसका हर वक्त सम्मान करना सीखें। कहते हैं, अगर वक्त आपके साथ है, तो आप पूरी दुनिया को झुका सकते हैं, लेकिन यह वक्त ऐसे ही किसी का साथ नहीं देता, हम जब तक उसकी कद्र करते हैं, तब तक वह भी हमारी कद्र करता है।

* * *

समय-चक्र

समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है। किसी के लिए रुकता नहीं है। जिस तरह मुट्टी में बँधी हुई रेत को फिसलने से नहीं रोका जा सकता, उसी तरह समय के पहिए को भी नहीं रोका जा सकता है। प्रतियोगिता के दौर में समय के साथ चलना जरूरी है। आप अपना कार्य जितने व्यवस्थित तरीके से करेंगे, काम उतना ही बेहतर और जल्दी होगा।

* * *

समय-सारिणी

समय-सारिणी व्यावहारिक हो। सारिणी को एक चुनौती के तौर पर न लेकर थोड़ा लचीलापन जरूर कायम रखें। समय-सारिणी का मूल उद्देश्य पढ़ाई को नियमित एवं व्यवस्थित करना है, इसलिए समय-सारिणी बनाते समय ध्यान रखें कि इसका मूल उद्देश्य पूरा होना चाहिए। दिमाग को तरोताजा रखने के लिए मनोरंजन अति आवश्यक है। समय-सारिणी में मनोरंजन को भी स्थान लाजमी है। परिस्थितिवश यदि आपकी दिनचर्या गड़बड़ा जाती है तो इसमें हताश या परेशान होने की जरूरत नहीं है। स्थिति सामान्य होते ही फिर से समय-सारिणी के मुताबिक चलिए।

* * *

समसामयिक जानकारी

अखबार पढ़ने की आदत डालें। समसामयिक गतिविधियों व घटनाओं की जानकारी बनाए रखें। प्रमुख चर्चित व मशहूर लेखकों की पुस्तकों को अवश्य पढ़ें। ऐसा करने से आप किसी भी कार्यक्रम, कॉन्फ्रेंस या बातचीत के अवसर का पूरा-पूरा उपयोग कर सकेंगे। इससे एक ओर जहाँ दूसरे लोगों से आपके संबंधों में निकटता बढ़ेगी, वहीं दूसरी ओर आपका ज्ञानवर्धन भी होता रहेगा।

* * *

समस्याएँ

समस्याएँ हमेशा आपके साथ हैं, इनके बारे में दिन-रात विचार करने से ये कम नहीं होतीं, बल्कि बढ़ती जाती हैं, इसलिए हर पल को खुशी के साथ जिओ। ऐसा करके आपकी हर समस्या का अंत जल्दी हो जाएगा और फिर ये समस्याएँ आपको परेशान नहीं करेंगी।

* * *

समाधान

दुनिया में अच्छाई के साथ बुराई भी है, इसलिए परिस्थितियों से घबराएँ नहीं। लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। हर समस्या के एक से ज्यादा समाधान हो सकते हैं, इसलिए अनुरूपता बिंदु से परे सोचें। संभव है, समाधान वहीं कहीं छिपा हो।

* * *

सर्वश्रेष्ठ कला

सब कलाओं में सबसे श्रेष्ठ कला अपने मनुष्य-जीवन को सफल एवं विजयी बनाना मानी गई है। इस कला का ठीक ढंग से प्रयोग कर कोई भी व्यक्ति कुशल बन सकता है।

* * *

सहनशीलता

अपने 'सेंस ऑफ ह्यूमर' को अच्छा बनाएँ। आपकी पहली कोशिश होनी चाहिए कि दूसरों से मजाक न करें

और यदि कोई आपसे मजाक करता है, तब उसे सहने की क्षमता विकसित करें।

सहनशीलता एक ऐसा गुण है, जिसे विकसित कर लिया जाए तो बड़ी-से-बड़ी मुश्किल से भी पार पाया जा सकता है।

* * *

साधन और साध्य

हमारी सफलता इस बात में है कि हम सावधान रहकर, जो भी काम हमारे हाथ में हो, उसे अच्छी तरह पूरा करें। कुछ लोग जीवन की सफलता पैसों से आँकते हैं। जिसने अधिक कमाई कर ली, उसके लिए माना जाता है कि वह जिंदगी में सफल रहा। पर धन सफलता की असली कसौटी नहीं है। धन साधन है, जीवन का साध्य नहीं हो सकता।

* * *

सामंजस्य

बुद्धिमान या कामयाब लोग वही हैं, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अद्‌भुत सामंजस्य बनाए रखते हैं। इस सूत्र की विशेषता को ध्यान में रखते हुए भी आर्मी समेत बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ साक्षात्कार के दौरान उम्मीदवार से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी वह कितना संतुलन बनाए रख सकता है?

* * *

साहस

अपने मन से विचारों को कार्य में शीघ्र परिणत करो। विचारों के अनुसार कार्य न किया जाए तो वे विचार केवल स्वप्न मात्र हैं। मुकाबला और मुठभेड़ करने से न घबराओ। काम किए जाओ। मुकाबला आखिर मनुष्य ही से तो है, फिर डरने की कौन सी बात है?

* * *

किसी भी कुत्सित प्रथा को तोड़ने के लिए जो व्यक्ति अग्रसर होता है, उसको गालियाँ खानी ही पड़ेगी और सबका बुरा बनना पड़ेगा। यदि उसमें साहस नहीं है तो वह ऐसी प्रतिकूल व्यवस्था उत्पन्न कराने के लिए खड़ा ही नहीं हो सकता।

* * *

जिस व्यक्ति को दुनिया में कुछ करना है, तो उसे उत्तरदायित्व से नहीं घबराना चाहिए। उत्तरदायित्व वही व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, जो असफलता झेलने और लोकमत के नियमों का खंडन सहन करने का साहस रखता है। जिस व्यक्ति में साहस नहीं है, वह उन आज्ञाओं को कार्यरूप में परिणत नहीं कर सकता जो परमात्मा ने उसके जन्म के समय उसके लिए मोहरबंद करके रख दी हैं।

* * *

पूरी दुनिया साहस से प्रेम करती हैं। कायरता में आकर्षण नहीं होता। भीरुपन से कोई भी अनुराग नहीं रखता, परंतु साहस व्यक्ति का सुंदर स्वरूप और आभूषण है। जितने चमकीले और लुभाने वाले फैशन चलते हैं, वे उन्हीं पुरुषों के निकाले हुए होते हैं, जो अपनी कुरूपता और हीनता को ढकना और छिपाना चाहते हैं।

* * *

भय मूर्खता है। भयरहित अवस्था ही सच्चा ज्ञान है। विपदा आने पर डरनेवाला मूर्ख है। विपत्तियों के बीच में मन

की स्थिरता और साहस के साथ उनका सामना करनेवाला ज्ञानी है।

* * *

भय से डरने पर भय और बढ़ता है। उससे लड़ने पर भय दूर भागता है। मन को स्थिर रखकर अपने आत्मज्ञान से विपदाओं को दूर भगाना चाहिए। जो ऐसा करता है, वही अपना भाग्य बदल सकता है। जब आप एक बार साहस करके कोई कठिन कार्य करते हैं तो आपका साहस दोगना हो जाता है और भय भाग जाता है। जिस प्रकार काम ही काम को सिखाता है, उसी प्रकार साहस-ही-साहस को बढ़ाता है।

* * *

मधु (शहद) मक्खियों के छत्ते से निकलता है। उन मक्खियों के जहरीले डंक होते हैं। उनके बटोरे हुए मधु को वही मनुष्य प्राप्त कर सकता है, जो उनके डंकों से नहीं घबराता। गुलाब के पौधे में सुगंधित पुष्पों के साथ-साथ काँटे भी लगे रहते हैं। उनके पुष्पों के सौरभ का आनंद वही मनुष्य लेता है, जिसमें काँटों की पीड़ा सहन करने का साहस हो। संसार में जितने महान् पुरुष हुए हैं, सबके मार्ग में अत्यंत कठिनाइयों के जाल बिछे देखे गए। वास्तव में महत्ता दुर्गम संकटों का आह्वान करती है और उनका निराकरण करके ही अपने अस्तित्व को सार्थक सिद्ध करती है।

* * *

साधारणत: लोग तभी तक आपकी प्रशंसा करेंगे, जब तक आप उनके अनुयायी बने रहेंगे। जहाँ आपने कोई नई बात की नहीं कि लोग आपका सिर फोड़ने को तैयार हो जाएँगे। आपको गालियाँ देंगे, आपके रास्ते में काँटे बिछाएँगे, आपको पागल तक बताएँगे। जिद्दी, व्यर्थव्ययी, हठी, घमंडी, क्रोधी इन शब्दों की बौछार आप पर करने लगेंगे। यदि आप इन सब प्रहारों से अपना संरक्षण कर सकते हैं तो वह साहस द्वारा ही कर सकते हैं और फिर वह दिन भी आता है, जब यही नया सिद्धांत या नई बात पूरे समाज में या कभी-कभी पूरी दुनिया में आपको स्वीकृति प्रदान कराती है।

* * *

सामाजिक, राजनीतिक या व्यवसाय-क्षेत्र में किसी पुरानी प्रथा को तोड़कर उसकी जगह पर नई व्यवस्था उत्पन्न करने के लिए वही व्यक्ति खड़ा हो सकता है, जिसमें साहस का आत्मबल हो। संग्राम के समय शत्रु पर आक्रमण करने में जो साहस एक सेनानायक को करना पड़ता है, उससे कहीं अधिक साहस उस व्यक्ति को करना पड़ता है, जो किसी भी प्रकार की पुरानी चाल को नवीनता से बदलना चाहता हो।

* * *

यदि साहस न हो तो एक समाज सुधारक जनसाधारण को निर्भीकतापूर्वक सत्य-पथ नहीं दिखा सकता। यदि उसमें साहस नहीं है तो जनसाधारण का उससे क्या कल्याण हो सकता है? साहस बिना वह उनको केवल प्रसन्न करने में ही अपनी शक्ति को समाप्त कर देगा।

* * *

सुअवसर

हर इनसान के जीवन में एक बार सुअवसर दस्तक देता है, उस क्षण को पहचान कर पकड़ने का प्रयत्न करें। यदि एक बार सफल न हो पाए, तो पछताकर या रोकर समय बरबाद न करें। नए अवसर आपकी राह में रहेंगे। बस आपकी मेहनत, लगन व एकाग्रता आवश्यक होगी।

* * *

सुधार

यदि आपके बारे में कोई गलत बात कही जाती है और उसमें अगर सत्यता हो तो सबसे पहले हमें अपने आप में सुधार करना चाहिए। यदि यह असत्य है तो इसे हँसकर टाल देना चाहिए।

* * *

सुनिश्चित विजय

अपने प्रयासों में पूर्णता तथा इरादों में पवित्रता लेकर कार्य करनेवाले लोग एक हजार बारहार कर भी अंतत: जीत जाते हैं। अपनी मौलिकता को बचाए रखकर कार्य करनेवाले लोगों की विजय सुनिश्चित है।

* * *

सुव्यवहार

कोई भी माहौल अथवा वातावरण तभी खुशनुमा रह सकता है, जब आप स्वयं खुश रहें। आपका संयमित, कुशलतापूर्ण तथा व्यवस्थित व्यवहार ही आपका असली परिचायक है।

* * *

सुशिक्षा

अच्छी शिक्षा पाने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसके विपरीत गलत शिक्षा बहुत आसानी से मिल जाती है। सफलता प्राप्त करनेवाले गलत शिक्षा कभी ग्रहण नहीं करेंगे, क्योंकि उन्हें इधर-उधर भटकना नहीं है, अपितु अपना उद्देश्य पूरा करना है, अपने लक्ष्य को भेदना है।

* * *

अच्छी शिक्षा सभी के लिए सफलता के द्वार खोलती है और उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्रसर करती है। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति शिक्षा को मात्र औपचारिकता के लिए ग्रहण करता है तो वह असफलता की ओर बढ़ता है। साथ ही वह अपने उद्देश्य से भी भटका होता है, फिर वह सफल कैसे हो सकता है?

* * *

सृजन

सफल लोग सबकी परवाह करते हैं। उनका यह लिहाज भी उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। बदलती मन:स्थिति ही एक स्वस्थ व रचनाशील व्यक्तित्त्व की निशानी है। नकल नहीं, सृजन करें। प्रयास करें अपनी आत्मा के छिद्रों को पहचानकर उन्हें सिलने का।

* * *

सोच

अपनी सोच को सही तरीके से सपनों को पूरा करने के लिए अमल में लाने का प्रयास करें। हर व्यक्ति के अपने सपने होते हैं, जो बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। एक अच्छी सोच के बावजूद वे डरते हैं कि कहीं लोग हम पर हँसेंगे, यह जानकर आश्चर्य होगा कि ज्यादातर लोग अपने सपने इसलिए नहीं पूरे कर पाते, क्योंकि वे उनके टूट जाने या पूरा न हो पाने के डर से परेशान रहते हैं। युवाओं को स्वयं से कहना होगा कि उनमें सपनों को पूरा करने की क्षमता है और आप उन्हें पूरा होता देखेंगे।

* * *

स्पष्ट दृष्टिकोण

सफल लोग उन कार्यों में अपने प्रमुख कौशलों का सही प्रयोग करते हैं, जिनमें उनकी रुचि होती है तथा उन्हें वे वास्तव में करना चाहते हैं। वे अपनी शक्ति तथा कमजोरी का अच्छी तरह मूल्यांकन कर सकते हैं तथा इसके अनुरूप वे अपनी सफलता के मंदिर का निर्माण करते हैं। वे अपनी शक्ति को सही रूप देने और अपनी कमजोरियों के प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए प्रयास करते हैं। वे जो कुछ करना चाहते हैं, उसके प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण तथा लक्ष्य रखते हैं।

* * *

स्वार्थता

जो व्यक्ति केवल स्वयं के लिए जीता है, वह जीवन का वास्तविक आनंद प्राप्त नहीं कर पाता, क्योंकि वह जीवन भर स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता है और कभी आत्मसंतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता। स्वार्थ को छोड़ दूसरों के लिए जीनेवाले व्यक्ति को अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उसके गुणों, उसकी योग्यता के बल पर उनके कार्य पूरे होते हैं और वह व्यक्ति जीवन में आत्मसंतुष्टि भी प्राप्त करता है।

* * *

स्वार्थ वह दुर्गुण है, जो व्यक्ति को अपनों से दूर करता है, मानव मन को दु:खी करता है। जब व्यक्ति में स्व अर्थात् 'स्वयं के लिए ही' की भावना जागृत होती है, तो वह स्वार्थी हो जाता है। केवल स्वयं के लिए ही जीना व्यक्ति को समाज से अलग-थलग करता है, क्योंकि तब वह दूसरों का ध्यान नहीं रखता और न ही कभी किसी का सहयोग करता है, जो जीवन में उसकी सफलता के लिए बहुत बड़ी बाधा है। स्वार्थ-सिद्धि के व्यवसाय में गुरु को सही शिष्य नहीं मिल रहा है। शिष्य को सही गुरु नहीं मिल रहा है। अच्छा गुरु और अच्छा शिष्य दोनों एक-दूसरे को पाने के लिए तड़प रहे हैं, लेकिन वे ही एक-दूसरे को खोज पाते हैं, जिनके मन में स्वार्थ की भावना न हो।

* * *

हीन-भावना

'आप यह नहीं कर सकते, आप में छोटापन झलकता है, आप मेरे जैसा कुछ नहीं कर सकते।' यह भावना लोगों में तभी जागृत होती है, जब आप स्वयं को दूसरों से हीन प्रदर्शित करते हैं। आपके आचार-विचार, व्यवहार आपके सामनेवाले को आप पर दबाव बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। व्यक्ति में क्या अंदरुनी ताकत है, वह स्वयं भी नहीं जानता। लेकिन जब उन्हें जाग्रत् करता है, तो स्वयं ही हक्का-बक्का रह जाता है कि वह कुछ भी कर सकता है। इसलिए हीन-भावना से ग्रस्त होने की अपेक्षा आत्मविश्वास से कार्य करना चाहिए।

* * *

हीन व्यक्तों की स्थिति ऐसी होती है कि वे अपनी ही परछाईं से डरने लगते हैं और उससे बचने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार हीन-भावना भी व्यक्ति का पीछा तब तक नहीं छोड़ती, जब तक कि वह उससे बचने का प्रयास न करे। जहाँ व्यक्ति हीन-भावना से बचा, वहीं उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए लालसा जागी।

* * *

हीन-भावना व्यक्ति को दब्बू बनाती है। हीन-भावना के कारण व्यक्ति अकारण स्वयं को दूसरों से कमजोर, असहाय समझने लगता है। हीन-भावना से वे व्यक्ति ग्रस्त होते हैं, जिनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। इस

प्रकार की भावना से ग्रस्त व्यक्तियों को अंदर-ही-अंदर भय सताता रहता है कि कोई कुछ कह न दे, उनसे कोई गलती न हो जाए, वे यह नहीं कर सके तो कोई क्या कहेगा। यह बिना बात का भय उन्हें गर्त में ले जाता है, जिससे वे अपनी शक्तियों को भूल जाते हैं। वे लोगों से छिपते फिरते हैं। अन्य लोगों से नजरें बचाते फिरते हैं। इस प्रकार के लोग एकांतप्रिय होते हैं। ये लोग मित्रों और सगे-संबंधियों तक से दूर भागते हैं कि कहीं उनसे बातचीत न करनी पड़ जाए या ऐसा न हो जाए कि सगे-संबंधी, मित्रादि उनका अपमान कर दें, डाँट दें, मारे न आदि-आदि विचार स्वत: ही उनके मन में विचरते रहते हैं।

* * *

हीन-भावना से ग्रस्त व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। क्योंकि वे न तो किसी से कुछ सुन पाते हैं और न ही अपनी बात किसी से कह पाते हैं। व्यक्ति को अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए जिससे हीन-भावना जगह नहीं बना पाए। इसके लिए लोगों से मिलना, उनके बीच उठना-बैठना, उनसे बातचीत करनी चाहिए। जिससे आत्मविश्वास पैदा हो। लोगों के सवालों काय तर्कों का सामना करने का साहस पैदा हो।

❐❐❐

सफलता की सीढ़ियाँ

ऑरिसन स्वेट मार्डेन

सफलता की सीढ़ियाँ

प्रभात

स्वेट मार्डेन

अपनी बात

मनुष्य के जीवन में दो सीढ़ियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। वे दो सीढ़ियाँ हैं—सफलता और असफलता। कुछ मनुष्य, जो प्रारंभ से ही जीवन को सफल बनाने के कार्य में जुट जाते हैं, अपने गुणों में वृद्धि करते हुए सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते चले जाते हैं। उनमें जीवन-पथ में आनेवाली बाधाओं को पार करने की क्षमता होती है। वे बड़ी-से-बड़ी बाधा को आसानी से पार कर जाते हैं, क्योंकि यही बाधाएँ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

दूसरी सीढ़ी है असफलता। असफलता मनुष्य को सफलता के लिए प्रेरित करती है। ठोकर लगने पर मनुष्य सँभलकर चलता है, ठीक उसी प्रकार, जब किसी मनुष्य को किसी कार्य में असफलता मिलती है, तो वह उसे और सही ढंग एवं उत्साह से कार्य करने की प्रेरणा देती है। अत: असफलता सफलता के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, लेकिन केवल उन लोगों को जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। वे मनुष्य, जो अवगुण से संपन्न होते हैं, असफलता की सीढ़ी का चुनाव करते हैं।

जीवन में मनुष्य की अनेक लालसाएँ होती हैं, जो मनुष्य को भटका भी सकती हैं और सफलता भी दिला सकती हैं। इस जीवन में अनेक पड़ाव आते हैं, जिन्हें धीरता से पार करना चाहिए न कि अधीरता, चंचलता से अपने कार्य करने चाहिए।

जीवन में सफलता-असफलता के बीच जो युद्ध होता है, उसमें कर्तव्य-पथ पर बढ़ते हुए जीवन को सफल करना चाहिए। जीवन को एक प्रश्न की भाँति हल करते हुए सफलता के लिए प्रयास करना चाहिए। मृत्यु अटल है। मृत्यु के भय से उलझकर जीवन को असफल नहीं बनाना चाहिए।

जिस प्रकार बोझ को यदि बोझ समझकर उठाया जाए, तो वह बोझ ही लगता है, लेकिन बोझ समझकर न उठाया जाए, तो वह आसानी से उठाया जा सकता है। ठीक उसी प्रकार इस जीवन को सफल बनाना है, यह समझकर जिया जाए, तो मनुष्य अवश्य सफल होता है।

मनुष्य अपने जीवन को कल के चक्कर में अर्थात् भविष्य के चक्कर में उलझाकर इधर-उधर भटक जाता है, जबकि उसे ज्ञात होना चाहिए कि 'आज सफल है, कल असफल।' इसलिए आज को जानें और कल को जाने दें अर्थात् वर्तमान के अनुसार कार्य करें। जो वर्तमान में है, उसे पूरा करें, न कि भविष्य की चिंता में उलझकर अवगुणों को पालें।

जीवन में बाधाएँ तो आती ही रहती हैं, परंतु उनसे डरने, घबराने से पार नहीं पाया जा सकता। उनसे पार पाया जा सकता है, तो केवल उनका सामना करके। बाधाएँ तभी डराती हैं, जब मनुष्य अपने कर्तव्य-पथ से डिगता है। इसलिए बाधाओं का डटकर मुकाबला करना ही सफलता का द्योतक है। बाधाओं को बाधा समझने पर उनसे पार नहीं पाया जा सकता। बाधा को कठिन, किंतु असंभव नहीं समझकर पार करना चाहिए। इससे सरलतापूर्वक उससे पार पाया जा सकता है।

मन में सद्भावना रखकर मनुष्य को अपना कर्म करना चाहिए। सद्भावना से किया गया कर्म फलदायक होता है। गलत भावना मनुष्य के मन में अवगुणों का संचार करती है। भावना अच्छी-बुरी होती है। जहाँ अच्छी भावना मनुष्य की मित्र है, वहीं बुरी भावना शत्रु, क्योंकि अच्छी भावनाएँ मनुष्य को सफल बनाती हैं और बुरी भावनाएँ असफल। अच्छी-बुरी भावनाएँ मनुष्य की बुद्धि की उपज होती हैं। जैसी बुद्धि होगी, वैसी ही भावना होगी।

बुद्धि का महत्त्व तब अधिक है, जब उसका सही उपयोग हो अर्थात् जब मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग करके

सही कार्य करे, स्वयं भी सफल हो और दूसरों को भी उसका लाभ दे। बुद्धिमान मनुष्य ही कहीं टिक पाता है, बुद्धिहीन मनुष्य प्राय: दूसरों पर ही निर्भर रहता है, साथ ही मनुष्य को व्यर्थ के छल, कपट, भ्रम में नहीं फँसना चाहिए और एकाग्रचित्त होकर अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। मनुष्य का हृदय, मन बहुत चंचल होता है और तनिक में ही मनुष्य को पथभ्रष्ट कर सकता है। वह उसके चित्त को भंग कर सकता है। मन को अपने वश में रखना चाहिए, जिससे वह इधर-उधर न भटके, न ही मनुष्य उसके अनुसार इधर-उधर भटके। मनुष्य का मन वाहन के गतियंत्र की भाँति कार्य करता है। उसे जितनी गति मिली, वह उतनी ही गति से उसी ओर खिंच जाता है, बढ़ जाता है, जिस ओर वह जाना चाहता है। अब यह मनुष्य की चित्त-बुद्धि का कार्य है कि वह कितनी गति देना चाहती है।

क्रोध भी सफलता के मार्ग की बड़ी बाधा है। जब मनुष्य को क्रोध आता है, तो वह किसी को अपशब्द कह देता है, भड़क जाता है। मन तो इधर-उधर अपनी मनमानी कर सकता है, लेकिन मनुष्य उसे वश में करके उसकी भटकन को दूर कर उसे अपने अनुसार चला सकता है। मन की भटकन मनुष्य को सफलता के मार्ग से विचलित कर सकती है। मनुष्य को एक निश्चित लक्ष्य बनाकर, उद्देश्य बनाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए। यदि मनुष्य अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर निरंतर अपने कर्तव्य-पथ पर बढ़ रहे हैं, तो कोई भी उन्हें सफलता प्राप्त करने से नहीं रोक सकता।

कभी-कभी ऐसा होता है कि मनुष्य सफलता प्राप्त करने के लिए अपने उद्देश्य तक पहुँचते-पहुँचते बहुत समय व्यतीत कर देता है अर्थात् जीवन की बाधाओं से लड़ते-लड़ते वह उस समय को खो देता है, जो उसका सुनहरा समय होता है, लेकिन फिर भी उस मनुष्य को इस बात का दु:ख नहीं होता है कि उसने जो चाहा, वह नहीं मिला, परंतु उसे इस बात की प्रसन्नता होती है कि उसने अपना जीवन अपने आदर्शों के अनुसार जिया और उसके जीवन से दूसरों को, समाज को या अन्य किसी को प्रेरणा मिली, तो यह भी उसके लिए सफलता ही है, क्योंकि उसका जीवन निष्कंलक तो होता ही है, साथ ही परोपकार से भी पूर्ण होता है।

मनुष्य में ऐसी-ऐसी शक्तियाँ छिपी होती हैं कि जिनके बारे में वह स्वयं भी नहीं जानता। दुनिया के असाधारण अजूबे कार्यों, अजूबे आविष्कारों को मनुष्य ने ही किया है, कैसे? उसकी स्वयं की शक्ति से। हिमालय की माउंट एवरेस्ट चोटी बहुत ऊँची एवं खतरों से भरी है, लेकिन फिर भी मनुष्य उस पर चढ़ जाता है और बाद में सोचता है कि उसने यह कैसे कर दिखाया! मनुष्य अपने शरीर में एक छोटी-सी सुई चुभाने से डरता है, लेकिन जब कभी उसे चाकू अथवा बंदूक की गोली लग जाए, तो वही उसके दर्द को झेल जाता है। हजारों फीट की ऊँचाइयों से मनुष्य पैराशूट की सहायता से कूद पड़ता है और वैसे थोड़ी सी ऊँचाई से डर जाता है। यह सब कैसे होता है? आंतरिक शक्ति से, आत्मविश्वास से, दृढ़ निश्चय से।

मनुष्य द्वारा स्वयं को पहचानना स्वयं को सफल बनाना है। यदि वह स्वयं को नहीं पहचानता तो असफल है। अत: असफल क्यों? स्वयं को पहचानें और सफल हों। इस प्रकार मनुष्य अपने अंदर गुणों का विकास कर अवगुणों को त्यागकर सफलता प्राप्त कर सकता है और मनुष्य को सफलता ही प्राप्त करनी चाहिए, तभी यह जीवन सार्थक है अन्यथा पृथ्वी पर अनेक लोग जन्म लेते हैं और व्यर्थ जीवन जीकर मर जाते हैं। उनके पश्चात् उनकी अगली पीढ़ी तक उनका नाम लेना भूल जाती है।

यह सही है कि असफलता में ही सफलता का रहस्य छिपा हुआ है, किंतु फिर भी असफल क्यों, असफलता क्यों हाथ लगती है? हम पूर्ण लगन, ईमानदारी से अपने कार्यों को करते हैं और अपने कार्य व मेहनत के प्रति

पूर्णत: आश्वस्त होते हैं कि हम अवश्य सफल होंगे, किंतु फिर भी असफल! क्या आपने अपने कार्यों को संपन्न करने के लिए कोई योजना बनाई, क्या आप स्वयं के प्रति एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण ईमानदार रहे, क्या आपमें आत्मविश्वास की कमी थी? क्या आप उस कार्य के प्रति दृढ़निश्चयी थे, क्या आप समाज से कटे हुए थे? क्या आपमें साहस की कमी थी, क्या आपको अपने कार्य आदि का अनुभव था, आदि ऐसे कई कारक हैं, जो हमें असफलता की ओर ढकेलते हैं।

जब हम अपने स्वयं के, किसी अन्य के नहीं, जीवन में झाँकेंगे, तब हमें अपनी असफलता का ज्ञान होगा, न कि केवल हम यही देखते रहें कि उस मनुष्य में अमुक कमी है अर्थात् हम केवल दूसरों के दोष ही निकालते रहते हैं, स्वयं के नहीं। यही असफल होने का सबसे बड़ा कारण है। यह सब त्यागकर देखें, फिर आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपने अपनी असफलताओं के कारणों पर विजय पा ली है।

असफलता के कारण? क्या हैं असफलता के कारण, इस बात पर आपने कभी विचार किया, कभी इस ओर ध्यान दिया? अधिकतर लोगों का उत्तर होगा, ''नहीं, मैंने अपनी असफलताओं पर कभी ध्यान नहीं दिया।'' अब वे लोग स्वयं ही विचार करें कि उन्होंने अपनी असफलताओं के कारणों पर कभी ध्यान नहीं दिया, तो वे सफल कैसे होंगे? असफलता किसी दूसरे के कारण से नहीं, अपितु स्वयं की कमजोरियों के कारण मिलती है। लोग इन्हीं उलझनों में व्यस्त रहते हैं कि कब करें, कैसे करें, शायद हो सकता था या हो सके, कल कर लेंगे या मेरी जगह तुम चले जाना आदि-आदि। यह क्या बात हुई! स्वयं के कार्यों के लिए इतनी उलझनें, इतने बहाने! अब व्यक्ति सफल कैसे हों? जब वे स्वयं ही स्वयं की सफलता में अनेक परेशानियों को जन्म देने लगें।

प्रत्येक व्यक्ति सफलता चाहता है, परंतु कुछ चुने हुए लोग ही उसे प्राप्त करते हैं, क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि वे सफलता कैसे प्राप्त कर सकते हैं। जिससे भी प्रश्न किया जाए, ''क्या वे सफल होना चाहते हैं, तो सभी का एक ही उत्तर होगा, हाँ।'' लेकिन जब उनसे पूछा जाए कि आप सफलता प्राप्त करने के लिए क्या कर रहे हैं, तब बहुत से लोगों का उत्तर होगा, ''बस, अपने कार्य में लगे हैं, अब देखते हैं कि सफलता मिलती है या नहीं।'' अर्थात् निराशाजनक उत्तर। इसके विपरीत कुछ गिने-चुने लोग कहेंगे, ''हाँ, मैं सफलता प्राप्त करके रहूँगा, क्योंकि मुझमें आत्मविश्वास है। मुझमें दृढ़ निश्चय है। मैं अपना कार्य पूर्ण लगन और मेहनत से कर रहा हूँ। कैसे नहीं मिलेगी सफलता।''

यहाँ दो प्रतिक्रियाएँ सामने आईं—आशा और निराशा। एक ओर आशा है, तो दूसरी ओर निराशा। इसका निर्णय भी स्पष्ट है कि जहाँ आशा है, वहाँ सफलता है, जहाँ निराशा है, वहाँ असफलता। इसलिए मनुष्य को आशावादी होना चाहिए निराशावादी हरगिज नहीं। सफलता का तात्पर्य केवल सफल होना नहीं है, अपितु अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करना अर्थात् पूर्ण युद्ध पर विजय, न कि छोटी-छोटी लड़ाइयों पर विजय।

इसका और विश्लेषण किया जाए, तो यह अर्थ निकलता है कि मनुष्य अपना जो लक्ष्य निर्धारित करे, उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करे, न कि लक्ष्य के कुछ पड़ावों को पार कर ही संतुष्ट हो जाएँ। अकसर होता यह है कि कुछ लोग अपना लक्ष्य निर्धारित तो कर लेते हैं, लेकिन उसे पाने के लिए जो कठिनाइयाँ आती हैं, उनसे घबरा जाते हैं और अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और उसे वहीं छोड़ कहीं और अपना मन लगा लेते हैं। कुछ वे होते हैं, जो अपना लक्ष्य निर्धारित करके उस पर चलते हैं। कुछ हद तक वे सफलता प्राप्त भी कर लेते हैं, लेकिन जब अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो वहीं फुल स्टाप लगा देते हैं और जितना मिला, उसमें ही संतुष्ट हो जाते हैं अर्थात् जहाँ तक अपने लक्ष्य के मार्ग में पहुँचते हैं, उस पर यही सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि चलो, जितना

मिला, उतना ही सही, यही मेरे भाग्य में था, लेकिन उनकी यही सोच उन्हें पथभ्रष्ट कर देती है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

इन सबके अतिरिक्त कुछ गिने-चुने ही लोग ऐसे होते हैं, जो अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसे पाते हैं, क्योंकि वे दृढ़ निश्चय के साथ अपने मार्ग में आनेवाली सभी बाधाओं का डटकर मुकाबला करके पूरी लड़ाई जीतते हैं अर्थात् पूर्ण विजय प्राप्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत से लोग अजीबोगरीब या अनैतिक हथकंडे अपनाकर अपने लक्ष्य को पा तो लेते हैं, लेकिन उसका लाभ नहीं उठा पाते अर्थात् वे यह नहीं जानते कि सफलता क्या होती है। बस, उन्हें यह मालूम होता है कि 'मैं सफल हूँ', लेकिन कैसे, इसका जवाब उनके पास नहीं होता, लेकिन अपने कर्तव्य-पथ पर आग में तपकर जो अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, वही वास्तविक सफल व्यक्ति होता है।

सफलता प्राप्त करने के लिए न तो पहाड़ तोड़ना पड़ता है और न ही पहाड़ पर चढ़ना पड़ता है। बस अपने कार्यों को सही ढंग से करते हुए बाधाओं को पार करना सफल होने की निशानी है। बाधाओं से तात्पर्य उन समस्याओं से है, जो सफलता के लिए किए जानेवाले कार्यों के बीच में आती हैं, जो लक्ष्य-प्राप्ति में रुकावटें पैदा करती हैं। वे समस्याएँ आत्मविश्वास की कमी और कार्यों की उचित रूपरेखा न बनाने आदि के कारण हो सकती हैं।

मनुष्य को सफलता प्राप्त करने के लिए अनेक गुणों को अपने में समाहित करना पड़ता है, जिससे आनेवाली कठिनाइयों पर विजय पाई जा सके और कार्य का सही प्रारंभ आपको सफलता की सीढ़ियों तक ले जाता है। बहुमूल्य लक्ष्य की प्रगतिशील साधना सफलता कहलाती है। बहुमूल्य लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य, जो व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निर्धारित करता है, लेकिन मात्र लक्ष्य निर्धारित करने से सफलता नहीं मिलती, बल्कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार अर्थात् प्रगतिशील साधना करनी पड़ती है। तभी लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात् सफलता का मिलना निश्चित होता है। लक्ष्य निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि इससे हमें पता रहता है कि अभी हम उस स्थान पर नहीं पहुँचे हैं, जहाँ के लिए हमने लक्ष्य निर्धारित किया था।

दूरस्थ तथा संदिग्ध कार्यों को छोड़कर सन्निकट एवं निश्चित कार्यों को हाथ में लेना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए अर्थात् लक्ष्य भी निश्चित, सुदृढ़ और ऐसा होना चाहिए, जिसे साधा जा सके। लक्ष्य ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसका न सिर हो, न पैर। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई लक्ष्य निर्धारित कर ले कि ''मैं अपने शरीर पर पंख लगाकर उड़ूँगा'' तो यह तो संदिग्ध व बेसिर-पैर का लक्ष्य हुआ! इसमें कैसे सफलता मिलेगी? इसके विपरीत यदि कोई अपना लक्ष्य बनाता है कि ''मैं ऐसा आविष्कार करूँगा, जिससे मनुष्य उड़ सके'', तब हाँ, यदि उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए पूर्ण आत्मविश्वास, लगन और दृढ़ निश्चय से मेहनत की जाए, तो अवश्य सफलता प्राप्त की जा सकती है।

नकारात्मक सोच सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा होती है, तभी तो कहा गया है, ''रोते हुए जाओगे, तो मरे की खबर लाओगे।'' अर्थात् कोई भी कार्य उत्साह से और सकारात्मक सोच के साथ प्रारंभ करना चाहिए, क्योंकि कहा गया है, प्रारंभ अच्छा तो अंत भी अच्छा। कोई भी कार्य किया जाए, तो उसके प्रति उत्साह होना चाहिए। निरुत्साह से प्रारंभ किए जानेवाले कार्य का परिणाम क्या होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

एक बार की बात है, नेपोलियन बोनापार्ट का एक घोर विरोधी था। वह हमेशा उसकी आलोचना करता रहता था, लेकिन नेपोलियन ने उसे उच्च पद पर आसीन कर दिया। एक दिन एक अन्य अधिकारी ने नेपोलियन से कहा,

''सर! वह व्यक्ति, जिसे आपने उच्च पद पर बिठा दिया है, आपकी आलोचना कर रहा था।'' यह सुनकर नेपोलियन ने कहा, ''मैंने उसे जिस पद पर नियुक्त किया है, वह व्यक्ति उस पद पर नियुक्त होने की पूर्ण योग्यता रखता है। अत: इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है कि वह मेरी आलोचना करता है, मुझे केवल उसके कार्य से मतलब है। उसका जो कार्य है, मुझे उसकी आवश्यकता है, उसकी आलोचना की नहीं।'' उस आलोचक के काम अर्थात् उसके गुण के कारण वह प्रशंसनीय हुआ। हमें भी अपने कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिए। अत: ऐसे गुण पैदा करने चाहिए, जो हमें सफलता के मार्ग पर अग्रसर करें, न कि दुर्गुणों को अपनाकर असफल हों।

हीरा अपने गुणों के कारण शिरोधार्य होता है, मुकुट में सजता है। जो अपने गुणों को अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रस्तुत करता है, वह सफलता की ओर अग्रसर होता है। गुण सभी में होते हैं अर्थात् सभी में कुछ-न-कुछ गुण होते हैं, लेकिन गुणी वही होता है, जो अपने गुणों का सही उपयोग जानता हो। गुणों से तात्पर्य अच्छे गुणों से है, न कि अवगुणों से, क्योंकि सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम गुणों की आवश्यकता होती है।

सफलता सभी पाना चाहते हैं, पर कई बार चूक जाते हैं। कुछ लोग जानबूझकर असफल बने रहना चाहते हैं और अपनी असफलता के ऐसे-ऐसे तर्क देते हैं कि सुनकर हँसी आ जाती है। इनमें से कुछ लोग तो बिल्कुल दया के पात्र दिखाई देते हैं। उनके विचार देखिए—

''हम तो जीवन में कभी तरक्की कर ही नहीं सकते।''

''हम नौकरी छोड़कर अपना व्यवसाय करें? असंभव!''

''क्या करें, हमारे पास साधन ही नहीं हैं और वैसे साधन जुटाना, तो हमारे लिए असंभव है।''

''मैं जीवन में कभी अपना मकान बना पाऊँगा, यह संभव ही नहीं है। अरे भई! हम तो धरती से जुड़े गरीब हैं। गरीबी में ही पैदा हुए हैं और गरीबी में ही मर जाएँगे।''

''हमें तो अपना व्यवसाय बदलना ही असंभव है। इसके लिए कितनी भागदौड़ करनी पड़ती है!''

ऐसी बात करनेवाले लोग वास्तव में मनोबल से हीन होते हैं। निराशा और एक अनजाने भय ने उनके दिमाग पर कब्जा कर लिया होता है। कोई उनसे यह पूछे कि जो काम फिलहाल कर रहे हैं, वह भी किसी प्रकार उनके लिए संभव हो पाया या नहीं, उन्होंने इस स्थिति को वश में किया या नहीं, फिर दूसरे ऐसे कौन से काम हैं, जिन्हें करने का वे प्रयास करें और वे पूरे न हों? कहा गया है कि कोई व्यक्ति जब तक किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करेगा, तब तक वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं हो सकेगी।

नील नदी के युद्ध का निकट समय आ ही रहा था। नेलसन ने अपने कमांडरों के सामने युद्ध का मानचित्र फैलाया। कैप्टन बेरी ने उसे देखा और प्रसन्न होते हुए बोल उठा, ''यदि हम विजयी हुए तो संसार क्या कहेगा?''

नेलसन भला कैसे चुप रह सकता था, तड़ाक से बोला, ''हमारे पास 'यदि' के लिए कोई स्थान नहीं। निश्चित रूप से विजय हमारी ही होगी। हाँ, यह बात दूसरी है कि हमारी विजय-गाथा कहनेवाला कोई जीवित रहेगा या नहीं!''

थोड़ी देर बाद, जब कमांडर लोग अपने खेमों को जाने लगे तो नेलसन फिर दृढ़ निश्चयपूर्वक बोला, ''कल इस समय से पूर्व या तो मैं विजयी हो जाऊँगा या वेस्ट मिन्स्टर गिरजे में मेरे लिए कब्र की तैयारी हो जाएगी।'' सब लोग चले गए। जहाँ नेलसन के साथी पराजय की संभावना देख रहे थे, वहीं नेलसन की तीक्ष्ण दृष्टि एवं साहसी आत्मा को अपूर्व विजय का अवसर दिखाई दे रहा था।

सेंट बरनार्ड की घाटी की जाँच-पड़ताल और निरीक्षण करके इंजीनियर लोग लौटे तो नेपोलियन ने पूछा, ''क्या

सचमुच एल्प्स पर्वत पार करना असंभव है?''

इंजीनियरों ने थोड़ा झिझकते हुए उत्तर दिया, ''श्रीमान्, संभव है कि हम पार कर लें।''

''जवानो, आगे बढ़ो।'' नेपोलियन के मुँह से अनायास यह बात निकल पड़ी। उसने दुर्गम मार्ग और उसमें आनेवाली कठिनाइयों की ओर किंचित् ध्यान दिए बिना यह आदेश दे दिया।

साठ हजार सैनिकों का भारी शस्त्रास्त्र लेकर एल्प्स पर्वत की दुर्गम चोटियों को पार करना वस्तुतः बहुत ही कठिन कार्य था, परंतु उस समय उसका साथी जेनेवा में शत्रु सेनाओं से घिरा हुआ था और भूखों मर रहा था। विजय के मद में अंधे ऑस्ट्रियन सैनिक नील के फाटकों पर धावा बोल रहे थे। ऐसे में नेपोलियन कैसे चुप बैठ सकता था, अपने साथियों को विपत्ति में पड़ा कैसे छोड़ सकता था? जब यह असंभव बात नेपोलियन ने संभव कर दिखाई, तो लोग कहने लगे, ''अरे वाह! यह कौन सी बड़ी बात थी? यह तो पहले ही संभव था।''

वैसे अधिकांश व्यक्ति और सैनिक एल्प्स पर्वत की कठिनाइयों के कारण ही इस कार्य को दुष्कर समझते थे। सेनाएँ उनके पास थीं, भयंकर शस्त्रास्त्र भी थे, परंतु उनके पास एक ही वस्तु की कमी थी और वह थी दृढ़ इच्छाशक्ति, जिसके कारण नेपोलियन का कलेजा वज्र के समान कठोर हो जाता था। बड़ी-से-बड़ी आपत्ति आने पर भी वह अपनी आवश्यकता के अनुरूप अवसरों को अपने अनुकूल बना लेता था। क्या यह अद्भुत बात बिना प्रयास के अपने ही आप हो गई!

होरेशस ने टाइवर नदी के पुल पर केवल दो सैनिकों के साथ नब्बे हजार टक्सनों की सेना को पुल टूटने तक कैसे रोके रखा, यह सब कैसे हुआ? अपनी पराजय देखकर सीजर स्वयं भाला लेकर युद्ध के मैदान में कूद पड़ा और युद्ध का पासा पलट दिया। यदि रीड ऑस्ट्रियन भालों के सामने अपनी छाती न तान देता, तो स्वतंत्रता का मार्ग कैसे खुलता?

नेपोलियन अनेक वर्षों तक युद्धों में कैसे विजयी होता चला गया? इतिहास ऐसे हजारों उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिनसे यह सिद्ध होता है कि आत्मा की आवाज सुनकर दृढ़ निश्चयपूर्वक, जो भी कार्य किया जाता है, संसार की कोई भी शक्ति उसकी सफलता में आड़े नहीं आ सकती। कोई भी बाधा उसमें रुकावट नहीं डाल सकती।

ऐसी ही अनेक कथाओं का निचोड़ है—'सफलता की सीढ़ियाँ' नाम की यह पुस्तक। उबाऊ विवरणात्मकता से बचने के लिए हमने इसे प्रेरक टिप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि आप सीधे तथ्यों को ग्रहण कर सकें।

—संपादक

सफलता की सीढ़ियाँ

अंगारा

अंगारा बनकर जो अपने मन की चिंताओं, भय और दु:ख को जला डालते हैं, उनको जीवन में सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

* * *

अकर्मण्यता

बहानेबाजी या टालते रहने की प्रवृत्ति इनसान को अकर्मण्य बनाती है। समस्या का समाधान करें, घबराकर पलायन न करें। असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। निरंतर प्रयासरत रहें।

* * *

कड़ी मेहनत

अगर दस बार सफलता हासिल हुई है, तो नौ बार का श्रेय कड़ी मेहनत को जाता है। सफलता हासिल होने पर हम कौशल और भाग्य की बात करते हैं, मगर अकसर इन जरूरी बातों को भूल जाते हैं कि उसके पीछे हमने कितने घंटे लगाए थे, कितनी मेहनत की थी और कितनी बार हम नाकाम हुए थे।

* * *

अच्छाइयाँ

अपने विषय में एक सूची बनाएँ कि आप क्या हैं। अपनी क्षमताओं और अच्छाइयों को लिखें। अपने दोष, कमियों और बुराइयों को लिखें। अपने दोषों और कमियों को धीरे-धीरे दूर करें और अपनी अच्छाइयों को याद रखें। ये अच्छाइयाँ आपको हर मंजिल तक ले जा सकेंगी।

* * *

अडिगता

हममें से किसी के लिए भी जीवन सरल नहीं है, लेकिन इससे क्या? हममें अडिगता होनी चाहिए तथा इससे भी अधिक अपने में विश्वास होना चाहिए। हमें यह विश्वास होना चाहिए कि हम सभी में कुछ-न-कुछ विशेषता है तथा इसे अवश्य ही प्राप्त किया जाना चाहिए।

* * *

अध्ययन

असफलता का अध्ययन करें, ताकि आप सफलता की राह में आगे बढ़ सकें।

* * *

अनाथ

याद रखिए, असफलता अनाथ होती है, लेकिन सफलता के बहुत सारे रिश्तेदार होते हैं।

* * *

अनुपात

हर महान् व्यक्ति उसी अनुपात में महान् बना है और हर सफल व्यक्ति उसी अनुपात में सफल हुआ है, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

* * *

अनुभव

कभी-कभी जीवन में मुश्किलें एक के बाद एक या एक साथ भी कई आ जाती हैं और हम अपने आपको उनके जंगल में राह भटके हुए की तरह भ्रमित करते रहते हैं। जब हमें जीवन के कड़वे अनुभव होते हैं या कोई ठोकर लगती है, तो उस समय हो सकता है कि हम विचलित हो जाएँ। इससे उबरकर सीख भी मिलती है और जीवन में मुश्किलों का सामना करने का साहस भी आता है। फिर हम पाते हैं कि हमारी क्षमता भी बढ़ गई है और जीवन में हम और भी सफलता हासिल कर रहे हैं। तो मुश्किलों से घबराएँ नहीं, बल्कि उनका सामना करें। आप पाएँगे कि आपको उन मुश्किलों ने और भी निखार दिया है।

* * *

आप तब तक असफल नहीं हैं, जब तक अपने ध्येय की प्राप्ति में प्रयासरत हैं। ध्येय को पाने से पहले यदि आपको असफलता दिखाई दे, तो वह झूठी है, दिखावटी है, बनावटी है, उसे अस्वीकार कर दें। हाँ, इस अनुभव से कुछ सीख सकें, तो सीख लें और लक्ष्य के अगले पड़ाव की ओर आगे बढ़ते रहें। बिना ऐसे अनुभवों के कुछ सीखा नहीं जा सकता।

* * *

विपरीत हालात के सामने साहस और समृद्धि के सामने विनम्रता को ही हमें बतौर अभिभावक, आदर्श की तरह पेश करना चाहिए। तभी हमारे बच्चे भी हमसे यह अनुभव लेंगे और इसी के जरिए वे इनके साथ जीना सीखेंगे और तब और केवल तभी, हम लचीले वयस्कों की तरह बड़ा होने में उनकी मदद कर पाएँगे, उनके जीवन में आनेवाली तमाम चुनौतियों और खुशियों, सफलताओं और असफलताओं का सामना कर पाने लायक बना पाएँगे।

* * *

अभीष्ट

ध्येय मानव की शक्ति, क्षमता एक सीमित और निर्धारित परिधि में रहती है। कोई भी व्यक्ति एक साथ अनेक लक्ष्य, अनेक कार्यक्रमों का बोझ नहीं ढो सकता। कोई भी व्यक्ति अनेक दिशाओं में भाग-दौड़ नहीं कर सकता। प्रत्येक उस व्यक्ति को, जो सफलता प्राप्त करना चाहता है, एक ही लक्ष्य का चुनाव करना पड़ेगा। उसे ही अपना अभीष्ट ध्येय बनाना पड़ेगा। उसी के अनुसार कार्यक्रमों में लगना पड़ेगा। युद्ध के लंबे और विस्तृत क्षेत्र में किसी फौजी टुकड़ी का नायक दुश्मन से भिड़ने के लिए मोरचा बना लेता है। उसी मोरचे पर जब वह डटकर संघर्ष करता है, तो बहुत कुछ सफलता मिल जाती है। यही बात जीवन-संग्राम पर भी लागू होती है।

* * *

अवसर

'मूड नहीं बना' है या 'अभी मूड नहीं' है नामक बीमारी से बचें। अच्छा समय मूड के कारण रुकता नहीं है और इस प्रकार अच्छा अवसर मुट्ठी से रेत की तरह फिसल जाता है। इसके बाद रह जाता है केवल पछतावा।

* * *

आशावादी लोग हर खतरे में भी अवसर देखते हैं और निराशावादी लोग हर अवसर में खतरा देखते हैं।

* * *

यही अवसर है। अवसर का बहाना मत बनाइए। अवसर तो पग-पग पर बिखरे पड़े हैं। स्कूल अथवा कॉलेज का प्रत्येक पाठ एक अवसर है, प्रत्येक परीक्षा एक अवसर है, प्रत्येक अच्छी बात या सदुपदेश एक अवसर है, व्यापार

संबंधी कोई भी बात एक अवसर है। अभाव का रोना कायर रोते हैं। बिना साधन के जो सफलता पाता है, उसका जीवन ही सुखमय होता है।

* * *

साहसी बनें और किसी अवसर के खो जाने पर कभी भी आँसू न बहाएँ। आँसू कायर बहाते हैं।

* * *

अशांत

अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों, बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

* * *

असंभव

असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असंभव है, जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।

* * *

असफलता

अगर हमें असफलता के दौर से न गुजरना पड़े, तो कभी भी सफलता का स्वाद उतना अच्छा नहीं लगेगा।

* * *

असफलता सफलता प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

* * *

असफलता सफलता है, यदि हम उससे सीख लें तो।

* * *

असफलता से सफलता का सृजन कीजिए। निराशा और असफलता सफलता के दो निश्चित आधार-स्तंभ हैं।

* * *

इस दुनिया में आज तक कोई भी ऐसा महान् व्यक्ति नहीं हुआ, जो कभी असफल न हुआ हो। सफलता की मंजिल तक पहुँचने के लिए आपको असफलता की सीढ़ियों पर चलकर जाना होगा। असफलताएँ हमारी छुपी प्रतिभा और कौशल को उभारती हैं। इनसे निराश मत होइए। चरित्रवान व्यक्ति कभी निराश नहीं होते हैं, क्योंकि उनकी उच्च भावनाएँ उन्हें सदा असीम ऊर्जा से युक्त रखती हैं। वे हर समय मुश्किलों से लड़कर अपना लक्ष्य पा लेने की क्षमता रखते हैं। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है। इसी के बल पर वे अपनी परिस्थितियों में सुधार कर लेते हैं।

* * *

बिना असफलता के सफलता का कोई स्वाद नहीं है, उसकी कोई समझ नहीं है।

* * *

सफलता आपको सफल बनाती है, पर असफलता आपको महान् बनाती है। आपकी असफलता यह तय करती है कि आप कितने महान् हैं। इतिहास में जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार असफल हुए हैं।

* * *

सफलता की सभी कथाएँ बड़ी-बड़ी असफलताओं की कहानी हैं।

* * *

हर सफल व्यक्ति की कहानी असफलता से शुरू होती है, ऐसी कहानियों की भरमार है, जिसमें सफल बनने से पहले किन-किन असफलताओं का सामना करना पड़ा। किसी को मंदबुद्धि कहा गया, तो किसी को छोटे-से-छोटे काम के लायक भी नहीं समझा गया। किसी को कॉलेज से निकाल दिया, तो किसी के पास पढ़ने के पैसे भी नहीं थे।

* * *

प्रयास

कुछ नया और अलग कर रहे हैं, तो यह जरूरी नहीं कि सबकुछ सही ही होगा, लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ देंगे, तो कभी सफल नहीं हो सकेंगे।

* * *

अहंकार और घमंड

अपने अंदर अहंकार और घमंड, इन दो चीजों को न लाएँ। इनसे पूरी तरह से दूर रहें, क्योंकि इनके रहने तक आप कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

* * *

आँधी

कमान उन्हीं के हाथों में होती है, नेता वही होते हैं, जो अपना मार्ग स्वयं निर्मित करते हैं और उस पर जनसमूह को ले जाते हैं। इतिहास ऐसे ही नेतृत्व को याद रखता है। अंधानुकरण कर भेड़चाल चलनेवाले लोग कभी सफल नहीं हो सकते। सफलता की रेखाएँ उन्हीं व्यक्तियों के कपाल पर अंकित हैं, जिनके हृदय में नवीन आविष्कारों की आँधी पैदा हुआ करती है।

* * *

आचरण

व्यक्ति का आचरण एवं उसके कर्म ही उसकी पहचान होते हैं। यदि हम दूसरों के हृदय में स्थायी जगह बनाना चाहते हैं, तो इसका आधार हमारे ईमानदारीपूर्ण कर्म ही हो सकते हैं। महज शब्दों द्वारा अपनत्व बताना रेत पर बनी लकीरों की तरह होता है, जिन्हें हर आती-जाती सागर की लहर बनाती-मिटाती रहती है, पर कर्म पाषाण पर उकेरी आकृति की तरह होता है, जो एक स्थायी स्मृति बन जाता है। कोई भी सामाजिक गतिविधि जनसहयोग के बगैर पूर्ण नहीं हो सकती। लोग तभी हमारे साथ रहेंगे, जब उन्हें हमारी ईमानदारी पर भरोसा होगा और हमारा साथ उन्हें गरिमापूर्ण महसूस हो। बेईमानी, भय और उपेक्षा की नींव पर हम सहयोग की इमारत खड़ी नहीं कर सकते।

* * *

आत्मविश्वास

अपने आत्मविश्वास और चरित्र के बल पर एक साधनरहित व्यक्ति भी महान् सफलता प्राप्त कर सकता है।

* * *

अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहते हुए लगातार परिश्रम से अपने आत्मविश्वास को जगाया जा सकता है। इसी

के बल पर अपनी संकल्पशक्ति को भी मजबूत किया जा सकता है। आत्मविश्वासी बनकर आप व्यक्तिगत सफलता तो पाएँगे ही, समाज में भी आपको सम्मान मिलेगा।

* * *

आज के प्रतिस्पर्धी युग में कोई भी कार्य कठिन जरूर हो सकता है, परंतु असंभव नहीं। जरूरत है, तो बस आत्मविश्वास की। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति की आधी क्षमता शरीर और कौशल के साथ जुड़ी होती है और शेष क्षमता आत्मविश्वास के सहारे टिकी रहती है, परंतु सभी इसका उपयोग नहीं कर पाते, जो करते हैं सफलता एक-न-एक दिन उनके कदम चूमती है। आत्मविश्वास से ही व्यक्ति के भीतर की क्षमता जाग्रत् होती है। कई लोगों में योग्यता व क्षमता तो होती है, लेकिन आत्मविश्वास नहीं होता, इसलिए सफलता भी उनसे दूर रहती है। सफलता तभी मिलेगी, जब आप अपनी क्षमताओं पर विश्वास करते हुए अटूट लगन व मेहनत से काम करें।

* * *

आत्मविश्वास से अधिक जरूरी है स्पष्टता का होना। यदि आप किसी भीड़ को पार कर कहीं पहुँचना चाहते हैं, आपकी दृष्टि सही जगह पर है और आप देख पा रहे हैं कि भीड़ कहाँ खड़ी है, तो आप बहुत आसानी से बिना किसी से टकराए अपना रास्ता बनाते हुए अपनी मंजिल तक पहुँच जाएँगे, लेकिन आपकी नजर अगर सही जगह पर नहीं है और महज विश्वास है, तो आप हर किसी से टकराते रहेंगे। लोगों को लगता है कि महज उनका आत्मविश्वास ही उनके अंदर की स्पष्टता की कमी को पूरा कर देगा, लेकिन ऐसा कतई नहीं है। मान लीजिए कि आप अपने जीवन के सभी बड़े फैसले सिक्का उछालकर करते हैं कि चित आए तो इधर, पट आए तो उधर और यदि ऐसा करने से सौ फीसदी आपको अपने सवालों के जवाब मिल जाते हों, तो फिर दुनिया में आपके लिए सिर्फ दो ही तरह के रोजगार बचते हैं—मौसम विभाग में भविष्यवाणी का या फिर ज्योतिष का। इसके अलावा और कोई व्यवसाय आपके लिए नहीं होगा।

* * *

आशा और आत्मविश्वास चिरसंगी हैं। समुद्र में लहरें स्वाभाविक हैं, दीप-शिखा का प्रकाश से अटूट संबंध है। अग्नि में ऊष्मा होगी ही। आशावादी व्यक्ति का आत्मविश्वासी होना भी अवश्यंभावी है। आत्मविश्वास से आंतरिक शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं। इन शक्तियों को वह जिस कार्य में जुटा दे, वहीं आश्चर्यजनक सफलता दिखाई देने लगेगी। संपूर्ण मानसिक चेष्टाओं से किए हुए कार्य प्राय: असफल नहीं होते, किंतु निराशा वह मानवीय दुर्गुण है, जो बुद्धि को भ्रमित कर देती है। मानसिक शक्तियों को लुंज-पुंज कर देती है। ऐसा व्यक्ति आधे मन से डरा-डरा सा कार्य करेगा। ऐसी अवस्था में सफलता प्राप्त कैसे कर सकेगा? जहाँ आशा नहीं, वहाँ प्रयत्न के ध्येय की प्राप्ति न आज तक कोई कर सका है, न आगे संभव है।

* * *

एक बार किसी कार्य को करने का लक्ष्य निर्धारित कर लेने के बाद इसे हर कीमत तथा कठिनाई की लागत पर पूरा करें। किसी कठिन कार्य को करने से उत्पन्न आत्मविश्वास अभूतपूर्व होता है।

* * *

कई बार यह देखा जाता है कि हम किसी कार्य को करने की क्षमता एवं योग्यता रखते हैं, परंतु हममें आत्मविश्वास नहीं होता। इस प्रकार हम अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहते हैं।

* * *

किसी भी कार्य की सफलता में जितना बड़ा योगदान हमारे अभ्यास और परिश्रम का होता है, उतना ही आत्मविश्वास का भी होता है। मनोवैज्ञानिक आत्मविश्वास को प्रेरणा का ही एक आयाम मानते हैं। जितनी अधिक प्रेरणा होगी, उतना ही अधिक आत्मविश्वास और सफलता की संभावना होगी। आत्मविश्वास बढ़ाने के कई तरीके हो सकते हैं। अपने अतीत की सफल घटनाओं को याद करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अपना कोई आदर्श भी बनाया जा सकता है।

* * *

जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो, उसे सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

* * *

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास में दूसरों को गलत और खुद को सही मानने की आदत असफलता की बड़ी निशानी है। अपने आगे किसी को सही न समझनेवाले व्यक्ति हमेशा यह सोचते हैं कि केवल वे ही सही हैं और इसी अति आत्मविश्वास के चलते वे बार-बार असफलता का मुँह देखते हैं।

* * *

यदि आपमें आत्मविश्वास नहीं है, तो आप हमेशा न जीतने का बहाना खोज लेंगे।

* * *

हमारे पास कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो ज्यादा आत्मविश्वासी होते हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं पर बहुत ज्यादा विश्वास होता है। इस कारण वे दैनिक जीवन में बड़ा जोखिम उठाते हैं। इससे बार-बार उन्हें हार का सामना भी करना पड़ता है। इनसान को अपनी क्षमताओं का पूरी तरह से पता होना चाहिए। उसे किसी भी भुलावे में नहीं रहना चाहिए। कई बार साधारण व्यक्ति को सच्चाई का पता होता है, पर विशेषज्ञ भूल कर जाते हैं, इसलिए उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है।

* * *

हमें सफलता के जिस भी मुकाम तक जाना हो, पहले हमें तय करना होता है कि हमें कहाँ जाना है और फिर वहाँ तक पहुँचने के लिए हमें पूर्व निर्धारित करना पड़ता है कि हम वहाँ तक कैसे पहुँचेंगे। सफलता प्राप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है कि हमें अपने आप पर विश्वास हो।

* * *

हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि जो व्यक्ति किसी के सामने खुलकर अपनी बात रखते हैं, उनमें आत्मविश्वास उस व्यक्ति से हमेशा अधिक होता है, जो व्यक्ति किसी भी तथ्य को छुपाकर अपनी बात रखते हैं। जिन व्यक्तियों को पढ़ पाना मुश्किल होता है, उनको पसंद करनेवालों की संख्या हमेशा उनके बनिस्बत कम होती है, जो व्यक्ति खुले विचारों के होते हैं।

* * *

आनंद

वही सफल होता है, जिसका काम उसे निरंतर आनंद देता है।

* * *

आदत

आपने ऐसे कई लोगों को देखा होगा, जो अपनी इच्छा से किसी काम में रुचि नहीं लेते, किसी-न-किसी की स्वीकृति तलाशते रहते हैं और उसी के बाद काम करना शुरू करते हैं। उन्हें लगता है कि अगर अपनी इच्छा से कोई काम किया जाएगा, तो काम में गड़बड़ हो जाएगी, इसलिए वे किसी बड़े या समझदार व्यक्ति की इजाजत या सलाह लेने के बाद ही काम करना शुरू करते हैं। कई बार इस चक्कर में काम करने में बहुत देर हो जाती है और मनचाहा फल नहीं मिल पाता है। इस आदत को बदलें।

* * *

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। जैसे एक व्यक्ति जब लेखक बनकर अपनी पहचान बनाना चाहता है, तो उसे अपनी नींद व गप्प की आदत को त्यागना पड़ेगा। नींद, आलस्य, गप्प-गोष्ठी जैसी आदतों को त्यागकर ही अपने लक्ष्य की ओर कदम उठाएँ।

* * *

जो लोग परेशानियों और अपनी आदतों के आगे जल्दी घुटने टेक देते हैं, वे असफलताओं को साथ ढोने के आदी बन जाते हैं, जिसका प्रभाव उनके वर्तमान और भविष्य दोनों पर पड़ता है।

* * *

ज्यादातर लोग चीजों को जस-का-तस रखना चाहते हैं। वे फायदा कमाने के बजाय नुकसान होने से रोकने की जुगत में लगे रहते हैं। कई बार हमें बेहतर चीज मिलनेवाली होती है, पर हम अपनी आदत के गुलाम बनकर पुरानी चीजों से ही चिपके रहते हैं।

* * *

सफल होना भी एक आदत होती है, जो धीरे-धीरे आती है।

* * *

आशा

आशा व्यक्ति का शुभ संकल्प है। प्राणियों में वह अमृत है। जैसे सारा वनस्पति जगत् सूर्य से प्रेरणा पाता है, वैसे ही व्यक्ति में आशाएँ ही पूर्ण शक्ति का संचार करती हैं। व्यक्ति की प्रत्येक उन्नति, जीवन की सफलता, जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति का संचार आशाओं द्वारा होता है। आशाएँ न होतीं, तो संसार नीरस, अव्यक्त और निश्चेष्ट-सा दिखाई देता।

* * *

आशाएँ जीवन का शुभ लक्षण हैं। इनके सहारे व्यक्ति घोर विपत्तियों में दुश्चिंताओं को हँसते-हँसते जीत लेता है। जो केवल दुनिया का रोना रोते रहते हैं, उन्हें अर्द्धमृत ही समझना चाहिए, किंतु आशावान व्यक्ति पौरुष के लिए सदैव लगनशील रहता है। वह अपने हाथ में फावड़ा लेकर टूट पड़ता है, खेतों में मिट्टी से सोना पैदा कर लेता है। आशावान व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। वह औरों के आगे अपना हाथ नहीं बढ़ाता, बल्कि औरों को जीवन देता है।

* * *

इस संसार के सारे कार्य आशाओं पर चलते हैं। विद्यार्थी अपना समय, धन लगाकर दिन-रात श्रमपूर्वक अध्ययन में लगा रहता है। अध्यापकों की झिड़कियाँ सुनता है, अपना सुख-चैन सभी छोड़कर केवल ज्ञानार्जन में लगा रहता है, इसलिए कि वह पढ़-लिखकर सभ्य, सुशिक्षित नागरिक बनेगा। देश-जाति के उत्थान में भागीदार बनेगा।

सम्मानपूर्वक जीवन जिएगा। खेत-खलिहानों से लेकर कारखानों तक में जितने भी व्यवसाय फैले हैं, उनके मूल में कोई-न-कोई आशा ही क्रियाशील होती है।

* * *

आशा और आत्मविश्वास

जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही उच्च शिखर पर पहुँचता है।

* * *

अगर हम सिर्फ यही मानकर बैठे रहेंगे कि दुनिया एक बेहतर जगह है, यहाँ कोई समस्या नहीं है, तो हम संभावित खतरों की समय रहते तैयारी नहीं कर पाएँगे। अगर हम दुनिया के हर रूप को सही तरह से स्वीकार नहीं करेंगे, तो परेशान होते ही रहेंगे। इसलिए ज्यादा आशावादी न होकर बस कार्य में लगे रहना चाहिए।

* * *

आशावाद

आशावादी व्यक्ति परिस्थितियों से घबराता नहीं, पर निराश व्यक्ति के जीवन में छोटा सा झटका लगा, बस पाँव ढीले पड़ गए, चिंताओं ने आ दबाया। कई बार तो ऐसे व्यक्तियों के हार्टफेल भी हो जाते हैं।

* * *

व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं, वह अपनी किस्मत को लिखनेवाला खुद है, पर यह तभी संभव है, जब वह आशावादी हो। आशावादी व्यक्ति किसी भी काम को शुरू करने से पहले उस पर गंभीरता से विचार करते हैं। अपनी क्षमता और कमजोरियों को ध्यान में रखकर योजना बनाते हैं। राह में आनेवाली मुश्किलों का हल खोज निकालते हैं। आवश्यक साधन जुटाकर फिर पूरी लगन व मेहनत से जुट जाते हैं, जिससे मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियाँ भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पातीं और आखिर में सफलता उनके कदम चूमती है।

* * *

इच्छा

सफल होने के लिए सफलता की इच्छा असफलता के भय से अधिक होनी चाहिए।

* * *

इच्छाशक्ति

आपका माथा और हाथ, दोनों ही आपकी किस्मत को बनाने और बिगाड़ने वाले हैं। आप माथे अर्थात् मस्तिष्क से सोचें, योजनाएँ बनाएँ, उन्हें पूरा करने के लिए विश्वास जगाएँ, उन्हें प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति जगाएँ, हाथों से अपनी सोच एवं योजनाओं पर अमल करने का प्रयास करें। फिर देखें, आपका भाग्य कैसे नहीं बदलता।

* * *

ऐसे लोगों से संबंध बनाएँ, जो आपकी तरह महत्त्वाकांक्षी व परिश्रमी हों तथा सच्ची व दृढ़ इच्छाशक्तिवाले हों। निराश व्यक्ति का साथ निराशा ही देगा। निराशा सफलता की घोर दुश्मन है।

* * *

दुनिया में बहुत से चमत्कार घटित होते हैं। वे सब इनसान के विचार और इच्छाशक्ति के बल पर घटित हो पाते हैं। कहते हैं कि जब आप किसी चीज को शिद्दत से चाहते हैं, तो सारी कायनात उसे पाने में आपकी मदद करती है। जो लोग अपनी जिंदगी में कुछ असाधारण या खास करते हैं, क्या उन सबमें कोई असाधारण या दैवी शक्ति

होती है, सबमें तो नहीं हो सकती, फिर साधारण से दिखनेवाले लोग भी असाधारण से काम को कैसे कर पाते हैं! यह सब संभव हो पाता है उनकी सोच और उनके विचारों की शक्ति के बल पर।

* * *

दृढ़ रहने की इच्छाशक्ति अकसर सफलता और असफलता के बीच का अंतर होती है ।

* * *

यदि आज आप थोड़े से भी सफल हैं, तो आप उस विषय में सोचें, जब आपने यहाँ तक पहुँचने के अवसर को चुना और यहाँ तक पहुँचे। कोई अवसर कितनी विशेष उपलब्धि दिलाएगा, पहले से ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता। आपमें इच्छाशक्ति है, काम करने की लगन है, तो आपको किसी भी अवसर से लाभ उठाने से कोई नहीं रोक सकता। अवसर तो ईश्वर की कृपारूपी बहती सरिता है। इसमें डुबकी लगाकर अपने जीवन को सफल एवं धन्य क्यों नहीं बना लेते? अवसर न मिलने का रोना कौन लोग रोते हैं, पहले इस तथ्य पर गौर करें। ऐसा करनेवाले वही लोग हैं, जो निर्बल हैं। जो संशय में जीते हैं। जो हीनता से ग्रस्त हैं, दब्बू और डरपोक हैं।

* * *

लक्ष्य-प्राप्ति के लिए जरूरी है अदम्य इच्छाशक्ति का होना। इच्छाशक्ति ही व्यक्ति को उसके लक्ष्य तक लेकर जाती है। चाहे रास्ता कितना ही लंबा क्यों न हो, चाहे कितना ही त्याग क्यों न करना पड़े, इच्छाशक्ति ऐसी ऊर्जा या ताकत है, जो व्यक्ति को उसके उद्देश्य तक अवश्य पहुँचाती है। जीवन में गंभीर चुनौतियाँ क्यों न हों, यदि व्यक्ति में चुनौतियों का सामना करने की इच्छाशक्ति है, तो कुछ भी असंभव नहीं है। प्रबल इच्छाशक्ति रखनेवाला कोई भी व्यक्ति कार्यकुशल बन सकता है। इच्छाशक्ति सफलता की कुंजी है, इसलिए अपने भीतर इसे पैदा करें। इच्छाशक्ति के बल पर ही साहसी, परिश्रमी एवं धुन के पक्के लोग विश्व कीर्तिमान रचते हैं।

* * *

इजाजत

उठो, मुकाबला करो और जीतो। सफलता प्राप्त करने के लिए तुम्हें न तो किसी से इजाजत की जरूरत है और न ही किसी की सिफारिश की।

* * *

इरादा

जहाँ असफल लोग सोते हैं, वहीं सफल लोग रोज अपने नए-नए इरादों के साथ आगे बढ़ते चले जाते हैं। जब दूसरे लोग विदेशों में घूम रहे होते हैं, तब ऐसे लोग दिन-रात काम करते हैं। सुबह के समय जल्दी उठकर पूरी सुबह को ही अपने कब्जे में कर लें, ताकि आप अच्छे-से-अच्छा काम कर सकें। एक स्वस्थ नाश्ते की तरह अपने शरीर को बनाएँ और एक अच्छी किताब की तरह अपने मस्तिष्क को बनाएँ। जब दुनिया में बाकी लोग पलंग पर आराम कर रहे होते हैं, तभी आपको अपने ये सारे काम कर लेने चाहिए और सुबह को अपने कब्जे में कर लेना चाहिए।

* * *

किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हमारे इरादे फौलाद की तरह पक्के होने चाहिए। हम एक बार जो करने की ठान लेते हैं और पूरी मेहनत से उसे करते हैं, पर उसके बीच में हमें कई परेशानियाँ आती हैं। उस समय हमें उन परेशानियों से लड़ना चाहिए, हार नहीं माननी चाहिए।

* * *

ईमानदारी

कोई भी सामाजिक गतिविधि जनसहयोग के बगैर पूरी नहीं होती। यदि हम दूसरों के दिल में स्थायी जगह चाहते हैं, तो इसका आधार हमारे ईमानदारीपूर्ण काम से ही मिल पाता है।

* * *

उत्साह

बार-बार असफल होने पर भी उत्साह न खोना ही सफलता है।

* * *

उपलब्धियाँ

किसी एक क्षेत्र में असफल हुआ व्यक्ति दूसरे किसी अन्य क्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित कर सकता है।

* * *

उपाय

सफल लोगों को जब भी किसी समस्या के समाधान की जरूरत होती है, तो वे नए उपायों के साथ आते हैं। हमेशा अपने क्षेत्र के बाहर वे ऐसे लोगों को रखते हैं, जिन पर उन्हें पूरा भरोसा हो। उन्हीं के साथ वे अपने क्षेत्र से बाहर जाते हैं, महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल करते हैं और अपनी संस्था को आगे बढ़ाने में योगदान करते हैं। इसी वजह से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को वे आकर्षित करते चले जाते हैं और मजबूत रिश्तों का निर्माण करते हैं।

* * *

एक साथ

एक साथ आना शुरुआत है, एक साथ रहना तरक्की है और एक साथ काम करना सफलता है।

* * *

एकाग्र रहनेवाला सदा सफलता का वरण करता है।

* * *

एकाग्रता

एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है। किसी भी प्रकार की सफलता तभी प्राप्त हो सकती है, जब कार्य को पूर्ण एकाग्रता के साथ किया जाए।

* * *

कई लोग काम कुछ करते हैं और उनका मन उलझा रहता है किन्हीं दूसरी बातों में, ऐसे व्यक्ति अपने काम को पूरा-पूरा अंजाम नहीं दे पाते। बैठे हैं दुकान पर और मन घूम रहा है पार्क में। काम कर रहे हैं दफ्तर में, किंतु मन उलझा रहता है राजनीतिक दाव-पेचों में। अतएव उन्हें किसी भी तरफ से सफलता नहीं मिलती। चाहे कितना ही छोटा, सामान्य लक्ष्य क्यों न चुना जाए, व्यक्ति यदि अंत तक उसमें एकाग्र होकर लगा रहेगा, तो ही वह सफलता का स्वाद चख सकेगा। किसी भी कार्य को हाथ में लेकर उसे पूरा करने में कोई कसर न रखना ही सफलता का मूलमंत्र है।

* * *

यदि हम अपने मन को किसी एक विषय पर फोकस कर लें, तो कोई वजह नहीं कि हम अपने लक्ष्य को हासिल

न कर सकें। कोई भी लक्ष्य हासिल करने के लिए एकाग्रता जरूरी है और इस एकाग्रता में मन अपनी अहम भूमिका निभाता है। जब हम एकाग्र हो गए, तो समझें कि हम सफल हो गए।

* * *

कठोर परिश्रम

लोग दूसरों की प्रगति देखकर अकसर सोचा करते हैं कि वह उतनी ऊँचाई पर कैसे इतनी जल्दी पहुँच गया। वे लोग यह नहीं सोचते कि यह स्थान, जो उसने पाया है, वर्षों के कठोर परिश्रम से पाया है।

* * *

कड़ी मेहनत

दुनिया आपको मुफ्त में कुछ नहीं देती। सफलता जैसी बेशकीमती चीज तो बिल्कुल नहीं। अत: सफलता का पकवान चखने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी।

* * *

व्यक्ति के सफलता के रास्ते में जितने ज्यादा जोखिम और कष्ट आते हैं, वह इनसान अपने जीवन में उतना ही ज्यादा सफल इनसान बनता है। कुछ लोग बिना कोई कर्म किए ही अपने बिस्तर पर सोते-सोते फल पाने का इंतजार करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति कुछ नहीं, बस अपने जीवन में सोते-सोते सभी बड़े अवसरों को खो देते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत है। इसका कोई छोटा रास्ता नहीं होता।

* * *

कमजोर कड़ी

हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ कमजोरियाँ होती हैं। शतरंज के खेल की तरह हमें हर कदम सोच-समझकर अपनी ताकत एवं सीमाओं का आकलन करते हुए उठाना चाहिए। हाँ, सावधानी शतरंज के खेल से भी अधिक रखनी चाहिए, क्योंकि जीवन कोई खेल नहीं है। जीत या सफलता सुनिश्चित करने का तरीका है हार की संभावना समाप्त कर देना। सफलता की तैयारी का महत्त्वपूर्ण भाग है उन कारकों को पहचानकर मूल से समाप्त कर देना, जिनसे असफलता आ सकती है। ये वे कारक हैं, जो आपकी तैयारी की कमजोर कड़ी हैं। ये वे कारक हैं, जो लक्ष्य से आपका ध्यान विचलित कर सकते हैं। ये वे कारक हैं, जिनका आपका प्रतिद्वंद्वी लाभ उठा सकता है। पराजय से बचना विजय ही को निमंत्रण है। नुकसान की संभावना समाप्त होने पर ही नफे की शुरुआत होती है। इसी तरह असफलता की संभावना से रहित तैयारी ही सफलता की गारंटी है।

* * *

करना व सोचना

जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं। पहले वे जो सोचते हैं, पर करते नहीं; दूसरे वे जो करते हैं, पर सोचते नहीं।

* * *

कर्म

व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। इनसान अपने विचारों और कर्मों से अपने भाग्य का निर्माण करता है। यह बात सुनते तो सब हैं, लेकिन इसे वास्तविक अर्थों में समझ बहुत कम लोग पाते हैं और अगर कोई भी इनसान इसे समझ ले, तो वह अपने जीवन को बदल लेता है।

* * *

कल्पना व कर्म

सफलता तो तभी मिलती है, जब आप अपनी कल्पना के ढाँचे में कर्म का रंग भी भरें।

* * *

कसौटी

जिस दिन आप तय करते हैं कि आपको सफलता पानी है, उसी दिन से अपने आपको असफलता का सामना करने के लिए तैयार कर लेना चाहिए, क्योंकि असफलता वह कसौटी है, जिस पर आपको परखा जाता है कि आप सफलता के योग्य हैं या नहीं। यदि आप में दृढ़ इच्छाशक्ति है और आप हर असफलता की चुनौती का सामना कर आगे बढ़ने में सक्षम हैं, तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता।

* * *

काबिलीयत

भयभीत न हों। कोई भी महान् काम करने के लिए आपको किसी से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इसलिए कि वे बुद्धिमान हैं, उन्हें अपने सिर पर न बिठाएँ। आप भी अनुभवी हैं। आप भी महान् सफलता हासिल कर सकते हैं। दूसरों को अपने से ज्यादा बुद्धिमान मानना, मतलब अपने विश्वास और हिम्मत को कम करना है। ऐसा करने से आपकी काबिलीयत में भी कमी आएगी, क्योंकि उस समय आप यह सोचने लगेंगे कि आप उनकी तरह बुद्धिमान या महान् नहीं हैं।

* * *

काम का भूत

जीवन में इतनी निश्चिंतता रहे कि खाते समय, सोते समय, मनोरंजन के समय काम का भूत परेशान न करे। अपने आनंद, शांति, संतोष को बेचकर यदि स्वर्ग का वैभव मिलता हो, तो विवेकशील व्यक्ति को उसे अस्वीकार कर देना ही श्रेयस्कर होगा। कार्य को खेल मानकर कीजिए। इससे वह आपकी शक्तियों का शोषक न बनकर उर्वरक खाद का काम देता रहेगा।

* * *

काम पर ध्यान

जो लोग दूसरों के काम को ताकने की बजाय अपने काम पर ध्यान देते हैं, वे अन्य सफल लोगों से प्रेरणा लेते हुए मंजिल की ओर बढ़ते चले जाते हैं। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए वे किसी के काम में कमियाँ निकालने की बजाय अपने काम में और सुधार करते जाते हैं, जिसका नतीजा बाद में उन्हें सफलता के रूप में प्राप्त होता है।

* * *

काल्पनिकता

जो बिना असफल हुए पूर्ण सफल होने का आग्रह करते हैं, वे कभी भी अपनी क्षमताओं को पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं कर पाते, क्योंकि वे धरती पर किसी यथार्थ वस्तु की अपेक्षा चंद्रमा पर किसी कल्पित लक्ष्य पर तीर मारते हैं। इस मानवीय काया द्वारा हवा में करतब दिखानेवाले काल्पनिक सुपरमैन की भूमिका कल्पना में ही संभव है। यथार्थ से उसका कोई सरोकार नहीं हो सकता।

* * *

किस्मत

आपने अकसर लोगों को यह कहते सुना होगा कि जो किस्मत में होगा, मिलकर ही रहेगा और ऐसा सोचकर अकसर लोग किसी चमत्कार के इंतजार में सारी जिंदगी निकाल देते हैं। चमत्कार अकसर नहीं होते और चमत्कार भी उन्हीं के जीवन में घटते हैं, जो अपने जीवन में क्या पाना है, यह तय कर लेते हैं।

* * *

किस्मत को दोष देना बंद कर दें। इसके बजाय आपको हर असफलता का विश्लेषण करना चाहिए। यह पता लगाएँ कि गलती कहाँ हुई थी। याद रखें, तकदीर को दोष देने से कोई व्यक्ति वहाँ नहीं पहुँचा, जहाँ वह पहुँचना चाहता था।

* * *

सफल लोग किस्मत में विश्वास नहीं करते। वे मानते हैं कि हर बात के पीछे कोई-न-कोई वजह होती है। आदमी जैसा काम करेगा, वैसा ही पाएगा। इसलिए वे जानते हैं कि अगर उन्हें कुछ पाना है, तो उसे हासिल करने के लिए उन्हें सभी जरूरी काम भी करने होंगे।

* * *

कीमत

एक मिनट की सफलता बरसों की असफलता की कीमत चुका देती है।

याद रखिए, सफलता की भी एक कीमत होती है। क्या आप वह कीमत देने के लिए तैयार हैं?

* * *

सफलता के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। वह कीमत होती है अपने जीवन का एक लंबा समय और उस लंबे समय में किया हुआ अथाह परिश्रम। किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करनी हो, तो उसे समय देना पड़ता है, वह भी नियमित रूप से। ऐसा नहीं कि अचानक कुछ करने का जोश आए, कुछ दिनों तक पूरी ताकत से उसमें लगे रहें, फिर आलस्य में उसको अधूरा छोड़ दिया।

* * *

समय

समय के महत्त्व को समझें। व्यर्थ के कामों में अपने कीमती समय को न गवाएँ। आपके पास जितना भी समय बचा है, उसे अच्छे कामों में खर्च कीजिए और अच्छे लोगों के लिए खर्च कीजिए।

* * *

कोशिश

अगर आप ऐसी स्थिति से बचना चाहते हैं, तो आपको कुछ और कोशिशें करने की जरूरत है। जीवन बेहद आसान हो सकता है। किसी ऐसे व्यक्ति को अपना साथी बना लें, जिसे आप अब तक नापसंद करते रहे हों। उस व्यक्ति के साथ समय बिताएँ, बड़े प्यार के साथ और खुश होकर। उन सभी कामों को करने की आदत डालें, जो आपको अब तक नापसंद थे। उन लोगों के साथ रहना सीखें, जो आपको पसंद नहीं हैं और साथ-ही-साथ जीवन को प्रेम, आनंद और सूझबूझ के साथ जिएँ।

* * *

अपने कामों को ईमानदारी और निष्कपटता से करें। किसी भी काम को अधूरा न छोड़ें। जब तक सफलता नहीं मिलती, कोशिश करते रहें। अपने सहकर्मियों पर भरोसा रखें।

* * *

कहते हैं अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप अकेले कुछ नहीं कर सकते। इस बात को सही तरीके से समझें। अकसर लोग कुछ बुरे लोगों की वजह से खुद को सभी से काट से लेते हैं, फलत: कड़ी मेहनत के बावजूद सफलता प्राप्त नहीं कर पाते और अनभिज्ञ बने रहने से उनकी नकारात्मक छवि भी बन जाती है। इसलिए कोशिश करें कि सभी छोटे-बड़े लोगों को साथ लेकर चलें, जिससे आपमें नेतृत्व क्षमता का विकास हो और जो आप तक अधिक मौके पहुँचाने में भी मदद करेगा।

* * *

जीवन में कुछ बातें या घटनाएँ संयोगवश हो सकती हैं, लेकिन अगर आप इस इंतजार में बैठे रहेंगे कि सबकुछ अपने आप अकस्मात् ही आपको हासिल होगा, तो शायद आप सारी जिंदगी इंतजार ही करते रह जाएँगे, क्योंकि संयोग हमेशा तो नहीं हो सकता, यहाँ तक कि भौतिक विज्ञान की क्वांटम थ्योरी भी यही कहती है कि अगर आप असंख्य बार तक कोशिश करते रहेंगे, तो एक दिन टहलते हुए दीवार के बीच से भी निकल सकते हैं। आपके बार-बार करने से कणों में स्पंदन होता रहेगा, जिसकी वजह से शायद दीवार के बीच से निकल पाना भी संभव हो जाए, लेकिन जब तक आप इस अवस्था को हासिल करेंगे, आपकी खोपड़ी फट चुकी होगी। तो जब तक आप किसी संयोग का इंतजार करते रहेंगे, आप व्यग्र रहेंगे, लेकिन जब आप पक्के इरादे के साथ अपनी क्षमताओं का भरपूर इस्तेमाल करते हुए अपनी मंजिल की तरफ बढ़ेंगे, तब यह बात मायने नहीं रखती कि क्या हुआ और क्या नहीं हुआ। आपके साथ जो भी होगा, कम-से-कम वह आपके वश में होगा। सुकूनमय जीवन होगा।

* * *

महान् बनने की कोशिश न करें। 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा', इसकी चिंता छोड़कर अगर अपने जीवन के लक्ष्य पर ध्यान देंगे और उसका दायरा बढ़ाएँगे, तो आप खुद एक असाधारण व्यक्ति बन जाएँगे। अगर आप गौर करें, तो पाएँगे कि हमारे सामने जितने भी महान् व्यक्ति हैं, उनमें से किसी ने कभी महान् बनने की कोशिश नहीं की, बल्कि उनका नजरिया 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा' से कहीं आगे का रहा।

* * *

हारना सबसे बुरी विफलता नहीं है, कोशिश न करना ही सबसे बड़ी विफलता है।

* * *

क्रमिक एवं शाश्वत

जीवन में सफलता का बड़ा महत्त्व है, लेकिन असफल होने पर समूचे जीवन को ही नकार देना, न केवल स्वयं के प्रति, बल्कि समूची मानवता के प्रति अन्याय है। जीवन का उद्देश्य इसकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक शक्तियों का उत्तरोत्तर एवं निरंतर विकास है। यह क्रमिक एवं शाश्वत है। सफलता और असफलता तो क्षणिक हैं, कोई भी व्यक्ति न तो स्थायी असफल होता है और न स्थायी सफल।

* * *

क्षमता

अगर आप सर्वश्रेष्ठ देकर सर्वश्रेष्ठ बनने की क्षमता को जानते हैं, तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक

सकता।

* * *

पानी को एक निश्चित ताप तक गरम करने पर ही उससे भाप बनती है—वह भाप, जिसकी शक्ति से विशालकाय इंजन धक्का पाकर अपने पथ पर आगे बढ़ता है। यदि भाप अन्य रास्तों से निकल जाए या पानी को कम दर्जे की गरमी दी जाए, जिससे भाप पैदा नहीं हो, तो इंजन आगे नहीं बढ़ेगा। जीवनरूपी इंजन को भी अपने लक्ष्य, उद्देश्य की ओर अग्रसर करने में अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित करना पड़ता है। किसी कार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक क्षमता की आवश्यकता है।

* * *

लोगों को हमेशा ही उन रास्तों की खोज में लगे रहना चाहिए, जिन रास्तों पर चलकर वे अपने प्रदर्शन की क्षमता को बढ़ा सकें, ताकि प्रतियोगिता की इस दुनिया में आगे बढ़ सकें।

* * *

खयाली पुलाव

सफलता के लिए सोच एवं खयाली पुलाव बनाने के बीच अंतर को समझना आवश्यक है। महज खयाली पुलाव बना लेने से ही सफलता नहीं प्राप्त होती, सोच पर अमल करने की भी आवश्यकता होती है। खाली बैठे-बैठे सोचना व्यर्थ ही होता है। इसके और सफलता के बीच कोई संबंध नहीं होता। सफलता के लिए उस संबध को जान लेना अति आवश्यक है। खाली खयाली पुलाव बनाना समय बरबाद करने का एक तरीका भर है। सफलता के लिए इस प्रकार की आदतों को छोड़ दें।

* * *

खराब आदत

इनसान की खराब आदतों में से एक है—अपनी विफलता का जिम्मेदार दूसरों को ठहराना। इनसान की फितरत है कि जब वह किसी वजह से सफल नहीं हो पाता है, तो वह अपने आस-पास के लोगों और परिचितों को दोषी ठहराने लगता है, लेकिन यह आदत उसकी भविष्य में सफल होने की संभावनाएँ भी कम कर देती है।

* * *

गलतियाँ

गलतियाँ करना व्यक्ति का स्वाभाविक गुण है, गलतियाँ कष्ट देती हैं, पर इन्हें सुधारने पर हम सफलता के नए द्वार पर होते हैं।

* * *

गलतियों से सबक

जिंदगी में हर कोई सफल पैदा नहीं होता और हर किसी को अपनी जिंदगी खुद से बनानी होती है और जब हम अपने लिए ऐसा करते हैं, तो बहुत संभावना है कि हम गलतियाँ भी करते हैं, लेकिन ऐसे में अपनी गलतियों से सबक लेना चाहिए। आज के काम के बीच में अपने अतीत की गलतियों को कभी आड़े नहीं आने दें।

* * *

गलती

आपकी गलती आपका अनुभव बढ़ाती है, आपका अनुभव आपकी गलतियाँ कम करता है। अगर आप अपनी

गलतियों से सीखते हैं, तो दूसरे आपकी सफलता से सीखते हैं।

* * *

कभी गलती न करना सफलता नहीं है, बल्कि एक गलती को कभी न दोहराना ही सफलता है।

* * *

चरणबद्ध प्रक्रिया

सफलता एक चरणबद्ध प्रक्रिया है, इसलिए छोटी-छोटी उपलब्धियों के बल पर आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए अगर आप कोई बड़ा काम नहीं कर पा रहे हैं, तो छोटे या सामान्य काम से ही शुरुआत कर सकते हैं। सच तो यह है कि अपनी रुचि के क्षेत्र में यह सामान्य काम ही सफलता की ओर आपका पहला कदम होगा। प्रत्येक अगला कदम आपको लक्ष्य के नजदीक ले जाएगा। क्योंकि बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। आपके वे छोटे-छोटे कदम एक दिन बड़ी दूरी तय कर लेंगे।

* * *

चरित्र

चरित्रवान व्यक्ति कभी निराश नहीं होते, क्योंकि उनकी भावनाएँ उदात्त एवं ऊर्ध्वगामी होती हैं। वे हर क्षण कठिनाइयों से लड़कर अपना अभीष्ट पा लेने की क्षमता रखते है।

* * *

चाह

सबसे पहले आपको अपने जीवन में क्या चाहिए, अपनी चाह, यह तय करना चाहिए और उसे पाने के लिए पूरी लगन से कोशिश करते रहना चाहिए, जब तक आपको वह मिल न जाए; और याद रखिए, सबको सबकुछ नहीं मिल सकता, अपने लिए आपको क्या चाहिए, यह आपको पता होना जरूरी है।

* * *

सफलता प्राप्त करनेवाले इनसान बेसुध होकर दिन भर काम करते हैं, लेकिन हर काम करने का उनका एक उद्देश्य होता है। वे हमेशा परिणाम देखना चाहते हैं और वे अपना काम भी परिणाम मिलने की चाह से करते हैं, न कि काम में व्यस्त रहने की चाह में।

* * *

चिंतन

सफलता, समृद्धि और ख्याति प्राप्त करने का भी एक निश्चित समय होता है। सफलता का चिंतन करनेवाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त कर सकता है।

* * *

चिंता, डर और शंका

ऐसे इनसान, जो चिंता, डर और शंकाओं से घिरे होते हैं, कभी सफल नहीं होते और न ही उन्हें मानसिक शांति मिलती है।

* * *

चुनौतियाँ

एक बात समझ लें, परेशानियाँ और चुनौतियाँ हमेशा जीवन में रहती हैं, जो उनसे लड़ता है, वह जीतता है और

सफल होता है और जो भागता है, वह भागता ही रह जाता है।

* * *

जो व्यक्ति जीवन में जितनी ज्यादा चुनौतियों का सामना करता है, वह उतनी ही तेजी से सफल होता है। चुनौतियाँ इनसान की सोई हुई शक्तियों को जगा देती हैं, इसलिए चुनौतियाँ लें। इनसान जीवन में निश्चिंतता चाहता है, क्योंकि वह बदलाव से डरता है। इनसान भूल जाता है कि विकास के लिए डर को दूर करना जरूरी है। पुराने अनुभवों के आधार पर निर्णय लेना अच्छी बात है, पर जीवन में जोखिम न लेनेवाला व्यक्ति मृत व्यक्ति के समान है।

* * *

चुनौतियों का सामना

कई लोग कठिनाइयों और नाकामियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं होते, क्योंकि उन्होंने कभी किसी काम में डटे रहने की इच्छाशक्ति ही विकसित नहीं की होती, इसलिए नाकामी हाथ लगने पर वे बहुत जल्दी हथियार डाल देते हैं। नाकाम होने पर कई लोग इस तरह व्यवहार करते हैं, जिससे वे खुद को बहुत हानि पहुँचाते हैं। वे खुद पर तरस खाने लगते हैं, सभी को दोषी ठहराते हैं, अपना दिल खट्टा कर लेते हैं और हार मान लेते हैं। यह नजरिया सही नहीं है। इससे कोई फायदा भी नहीं होता। दरअसल हम यह भूल जाते हैं कि परीक्षाओं से हमें कुछ-न-कुछ फायदा होता है। हर क्लेश से हम कुछ-न-कुछ सीखते हैं। व्यक्ति सीखता है कि नाकाम होने पर कोई मर नहीं जाता है, न ही वह हमेशा नाकाम ही रहेगा, बल्कि इससे व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति बढ़ती है और अगली बार सामना करने के लिए वह तैयार रहता है।

* * *

माना कि नाकाम होने के बाद फिर से उसी काम को शुरू करना हमेशा आसान नहीं होता। कभी-कभी हमें ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे हमें लगता है कि हमारी सभी कोशिशों पर पानी फिर गया है, और मंजिल पास आने के बजाय, ऐसा लगता है कि हमारी मंजिल तो और भी दूर खिसकती जा रही है। हमारा दिल शायद बैठ जाए या हम खुद को किसी भी काम के काबिल न समझें और शायद मायूस या हताश हो जाएँ।

* * *

छोटा मार्ग

जीवन के बहुत से कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें छोटे मार्ग से काम नहीं बनता। अत: आपको प्रत्येक कार्य में छोटे मार्ग की तलाश नहीं करनी चाहिए। किसी भी कार्य में जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है, उतनी ऊर्जा तो आपको खर्च करनी ही चाहिए, तभी वह कार्य सही से होगा और सकारात्मक नतीजा दे पाएगा।

* * *

छोटा लक्ष्य

सबसे पहले एक मार्ग का चयन करें और उस पर पूरी तरह फोकस करें। आपने सुना ही होगा कि दो नाव में सवार होकर चलने से किनारा नहीं मिलता, इसलिए एक छोटे बिंदु अर्थात् एक छोटा लक्ष्य बनाकर काम करें। अगर शुरू से बड़े रूप में काम करेंगे, तो सही और गलत नहीं समझ पाएँगे।

* * *

छोटी शुरुआत

बहुत अच्छा करने की अपेक्षा यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि कुछ किया जाए। यह न भूला जाए कि प्रत्येक कार्य की एक छोटी सी शुरुआत होती है। हजारों मील की यात्रा एक छोटे से पग से प्रारंभ होती है व पर्वत शिखर तक पहुँचने का मार्ग उसके सबसे निचले भाग से होकर जाता है। यात्रा के पहले कदम पर काँटा चुभ जाने से अथवा पर्वत शिखर पर चढ़ने की शुरुआत में ही हलकी सी ठोकर लग जाने से ही निराश हो जाना, यात्रा से मुँह मोड़ लेना, कर्तव्य से पलायन कर जाना; न केवल अशोभनीय है, बल्कि हास्यास्पद भी।

* * *

जरूरतानुसार

जब आप अपनी जरूरत के अनुसार काम करते हैं, तभी अपने आपको सशक्त बना सकते हैं।

* * *

जल्दबाजी

काम में आई कोई भी मुसीबत या खुशखबरी से हतोत्साहित या उत्साहित होकर जल्दबाजी में निर्णय न लें। जल्दी में लिये निर्णय कभी कारगर साबित नहीं होते। अगर टीम के किसी सदस्य से कोई गलती हुई है, तो उसे एक मौका जरूर दें। ऐसे मामलों में कभी जल्दबाजी न करें।

* * *

जागरूकता

किसी भी तरह की सफलता के रास्ते में कई बाधाएँ भी मुमकिन हैं, इसलिए सारी संभावनाओं और स्थितियों के आकलन और विश्लेषण के साथ विषय, कार्य और स्थिति के प्रति जागरूकता व सावधानी रखें।

* * *

जानकारियाँ

कुछ लोग सोचते हैं कि किसी भी काम या चीज के बारे में जरूरत से ज्यादा जानकारियाँ जुटा लेने से सफलता की संभावना बढ़ जाएगी, जबकि हर बार ऐसा नहीं होता है। अगर जानकारियाँ आपके काम पर असर नहीं डाल रही हैं, तो उन्हें इकट्ठा करने से आपको कोई फायदा नहीं होगा।

* * *

जिम्मेदारी

सफल लोगों में एक सबसे अलग बात जो होती है, वह यह है कि वे लोग जानते हैं कि मना कैसे किया जाता है, इसलिए वे सामनेवाला नाराज नहीं हो, इस डर से फालतू की जिम्मेदारियाँ नहीं लेते, क्योंकि उन्हें पता है कि उन्हें किस तरह से काम करना है, इसलिए अपने काम के आड़े आनेवाली कोई भी जिम्मेदारी, जो उनकी जरूरतों से बाहर की होती है, को लेने से वे बचते हैं।

* * *

जुनून

अपने अंदर सीखने का जुनून पैदा करें। किताबें पढ़ें। अच्छी किताबों की सूची बना लें। पत्रिकाएँ पढ़ें। पढ़ने-लिखनेवालों के साथ संबंध बढ़ाएँ। उनकी बातों को ध्यान के साथ सुनें। हर चीज के बारे में खोजी सोच रखें।

* * *

जोखिम

जो लोग जोखिम लेने से डरते हैं, वे जीवन की कई संभावित सफलताओं के दरवाजे खुद ही बंद कर रहे होते हैं। बस जोखिम और पागलपन के बीच का भेद जरूर पता होना चाहिए।

* * *

झूठ न बोलें

कभी भी झूठ बोलकर अपने आपको महान् बनाने की कोशिश न करें। झूठ बोलने की आदत आपको लंबे समय के लिए अंधकार में डाल सकती है। अपनी जुबान से हमेशा प्यार भरे मीठे और सुंदर वचन ही बोलें।

* * *

टालने की आदत

कई बार आप काम को टालते चले जाते हैं। कार्य टालने की आदत आपको असफलता की राह पर ले जाती है। किसी कार्य को करने के लिए अगर किसी से विचार-विमर्श करना जरूरी है और इस कारण से देर हो रही है, तब तो ठीक है अन्यथा उसे समय पर पूरा करने की आदत डालें। अगर किसी काम को करने में आपको दिक्कत महसूस हो रही है, तो अपने साथियों या सीनियर्स से इस संदर्भ में बात जरूर कर लें, लेकिन कार्य को टालने की आदत न डालें।

* * *

टालमटोल

दुनिया में सबसे ज्यादा लोग टालमटोल की बीमारी से परेशान हैं। जो काम हमें आज करना चाहिए, उसे हम कल पर टाल देते हैं और बाद में उसे पूरा करना भूल जाते हैं। ज्यादातर लोग इसी वजह से अपना लक्ष्य पूरा नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें मौजूदा परिस्थितियों को बदलने में कष्ट महसूस होता है। कुछ लोग आलस्य, तो कुछ लोग छोटी-मोटी परेशानियों के कारण बुरी परिस्थितियों में ही जीवन जीते रहते हैं। ऐसे लोग बदलाव से घबराते हैं।

* * *

टोकाटाकी

अगर आप सच में सफल होना चाहते हैं, तो एक बात का हमेशा ध्यान रखें कि किसी भी व्यक्ति को बीच में न टोकें, जब तक कि वह अपनी बात पूरी नहीं कर लेता है। एक अच्छे श्रोता बनें। लोगों को ध्यान से सुनें और कोशिश करें कि उनकी सफल-असफल कहानियों के बीच आपके काम आ सकनेवाले बिंदु खोजें और देखें कि लोगों ने क्या गलतियाँ की हैं और उनसे आप कैसे बच सकते हैं।

* * *

ठोकर

असफलता तो एक स्पीड ब्रेकर की तरह है, यह आपको धीमा कर सकती है पर रोक नहीं सकती और जो रुक गया, वह कभी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता। यही जीवन का रोमांच है कि ठोकर खाकर ही हम सँभलना सीख सकते हैं। हम उससे बचने की कोशिश कर सकते हैं, पर ठोकर कहते ही उसे हैं, जो सावधानी के बाद भी लगती है।

* * *

तात्पर्य

असफलता का तात्पर्य यह नहीं कि आप विफल हैं, इसका मतलब सिर्फ यह है कि आप अब तक सफल नहीं

हुए हैं।

* * *

तैयारी

मेहनत कीजिए, लेकिन बिना योजना के नहीं। एक-एक कदम उठाइए। जब एक कदम उठा चुके हों, तब तैयारी करें।

* * *

सफलता पहले से की गई तैयारी पर निर्भर है और बिना ऐसी तैयारी के असफलता निश्चित है।

* * *

त्रासदी

जीवन की त्रासदी इस बात में नहीं है कि आप अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचते हैं, त्रासदी तो इस बात की है कि आपके पास प्राप्त करने के लिए कोई लक्ष्य ही नहीं है।

* * *

दरवाजा

जहाँ दरवाजों से पहुँचा जा सकता है, वहाँ दीवारों में सिर टकराकर रास्ता बनाने की कोशिश करना कठोर श्रम का उदाहरण हो सकता है, पर साथ ही यह उदाहरण है वज्र मूर्खता का भी है। हम अपना श्रेष्ठ तभी दे सकते हैं या अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग तभी कर सकते हैं, जब सौहार्दपूर्ण व तनावरहित वातावरण में काम कर रहे हों। जिस प्रकार जहाँ प्रकाश हो, वहाँ अंधकार नहीं हो सकता, उसी प्रकार जहाँ खुशी हो, प्रसन्नता हो, वहाँ तनाव नहीं हो सकता।

* * *

दृढ़ संकल्प

सफलता पाने के लिए दृढ़ संकल्प का होना बेहद जरूरी है। यह दृढ़ संकल्प ही है, जिसकी वजह से कोई इनसान सफलता के मार्ग में आनेवाली हर चुनौती, संकट और विपत्ति का हिम्मत, धैर्य और साहस के साथ सामना कर पाता है। एक बार दृढ़ संकल्प कर लिया, तो चाहे जो हो जाए, हारना नहीं है, बस हर आनेवाली चुनौती को चुनौती देना है और अपने विश्वास को इतना दृढ़ बनाना है कि बड़े-से-बड़ा मुसीबत का पहाड़ एक-न-एक दिन उसके आगे चूर हो ही जाए।

* * *

यदि आप दृढ़ संकल्प और पूर्णता के साथ काम करेंगे, तो सफलता जरूर मिलेगी।

* * *

दृढ़ता

अपने भरोसे पर दृढ़ रहें, फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो। किसी भी बलिदान के लिए हमेशा तैयार रहें। अपने द्वारा चुने हुए रास्ते को कभी न छोड़ें।

* * *

दृष्टिकोण और सिद्धांत

सफलता कहीं और नहीं, बल्कि आपके विश्वास और सिद्धांतों पर ही निर्भर करती है। अपने मौलिक गुणों,

विश्वास और रुचियों को समझें और उन्हें प्राथमिकता दें, क्योंकि ये आपको सफलता की राह दिखाएँगे, मंजिल तक ले जाएँगे और समझाएँगे कि सफलता आपके दृष्टिकोण और सिद्धांतों में निहित है।

* * *

दोषारोपण

असफल लोगों की यह खास आदत होती है कि वे अपनी असफलता का दोष हमेशा दूसरों पर मढ़ने लगते हैं, लेकिन किसी भी कार्य में गलती होने या असफल होने पर उसका दोषारोपण दूसरों पर करना ठीक नहीं होता। कारण, किसी-न-किसी दिन आपकी पोल खुल ही जाएगी, तब आपके पास किसी भी प्रकार का कोई बहाना नहीं होगा। इसलिए अगर किसी कार्य को पूरा करने में आपसे कोई गलती हुई है, तो उसे स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है।

* * *

धारणा

एक घर में एक ही परिस्थितियों में दो बच्चों का लालन-पालन होता है। दोनों की उत्पत्ति भी एक ही कोख से होती है। दोनों को समान परिवेश मिलता है, लेकिन एक उन्नति कर लेता है, जबकि दूसरा फिसड्डी रह जाता है। ऐसा क्यों होता है, इसके पीछे सीधा सा तर्क है, एक ने 'उन्नति' के विषय में सोचा और दूसरे ने अपने मस्तिष्क में धारणा बना ली कि इन परिस्थितियों में उसके लिए सफलता प्राप्त करना या ऊँचे सपने देखना ठीक नहीं। वह फिसड्डी रह जाता है। इसके विपरीत दूसरे ने कुछ हटकर सोचा। उसने सोचा, चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों, मुझे तो आगे जाना ही है। उसे स्वयं पर विश्वास था, वह सफल हो गया। दोनों में अंतर सिर्फ 'सोच' का था। जिसने परिस्थितियों से समझौता करना उपयुक्त समझा और अपनी इच्छा को भी सीमित दायरे में रखा, वह फिसड्डी बन गया और जिसने विपरीत परिस्थितियों को चुनौती दी, हार न मानने की ठान ली, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाई, वह आगे गया।

* * *

धैर्य और संयम

छोटी या थोड़ी सी सफलता मिलने पर मन व विचार पर काबू या उतावलेपन से बचना चाहिए, क्योंकि बिना धैर्य और संयम के सफलता साथ छोड़ देती है, बल्कि तरक्की के रास्ते भी बंद हो जाते हैं।

* * *

धैर्य

धैर्य का मतलब काम के दौरान अच्छा नजरिया अपनाना है। धैर्य का मतलब इंतजार करना नहीं होता, बल्कि काम के दौरान अच्छा नजरिया रखने की काबिलीयत धैर्य कहलाता है। इसलिए जब आप कोई प्रयास करें, तो उसे वक्त भी दें। इसका मतलब कुछ पलों के लिए स्थायित्व और चैन खोना हो सकता है, लेकिन यह धैर्य रखने से ही जाहिर होगा कि आप जो पाना चाहते हैं, उसके प्रति कितने दृढ़ हैं और अगर दृढ़ हैं, तो नाकामियों के बावजूद काम पूरा होगा। धैर्य से हर कदम पर आप बेहतरी महसूस करेंगे और आपको आपके संघर्ष आसान लगने लगेंगे।

* * *

धैर्य के माध्यम से कई लोग उन परिस्थितियों में भी सफल हो जाते हैं, जो कि एक निश्चित असफलता जान पड़ती हैं।

* * *

ध्यान केंद्रण

आप भी अपने दिमाग से 'मेरा क्या होगा' की चिंता निकाल दें और अपनी क्षमता के हिसाब से बेहतरीन काम करने पर अपना ध्यान केंद्रित करें। आप खुद ही असाधारण व्यक्ति हो जाएँगे, क्योंकि तब आपका मकसद अपने आस-पास की दुनिया को बेहतर बनाना होगा। ऐसे में करने के लिए इतना कुछ होगा कि इस सोच के साथ आपकी क्षमताओं का विकास खुद-ब-खुद होगा और आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा।

* * *

ध्येय की दृढ़ता

सफलता के मार्ग पर व्यक्ति की गाड़ी तभी तक चलती है, जब तक इसमें लगन एवं उत्साह का ईंधन होता है। लगन एवं उत्साह उत्पन्न होता है समर्पण एवं चाहत से। सफलता की पहली शर्त, पहला सूत्र यह है कि सफलता की ऐसी चाहत होनी चाहिए जैसे जीवन के लिए प्राणवायु की। सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में है। यह सत्य सभी मानेंगे कि समय अपनी चाल से चलता है, न धीमा, न तेज। समय उनके लिए अच्छा चलता प्रतीत होता है, जो समय के साथ चलते हैं और उनके लिए खराब चलता है, जो समय से पीछे चलते हैं या तेज भागने की कोशिश करते हैं। जब तक समय प्रबंधन नहीं होता, तब तक समय हमारे नियंत्रण के बाहर चलता रहेगा। अत: काम की आज-कल पर टालमटोल नहीं होनी चाहिए।

* * *

नई राहें

असफलता का भय एक ऐसा भूत है, जो व्यक्ति के भीतर की सारी शक्ति को खींच लेता है व उसकी रचनात्मकता को समाप्त कर देता है। अपनी शक्ति खो देने पर व्यक्ति असमर्थ हो जाता है। यह भय मस्तिष्क पर परदा डाल देता है तथा मन को कायर बना देता है। अत: जीवन में प्रगति के लिए अनिवार्य है कि असफलता के भ्रामक भूत को मन से भगा दें। इसे सफलता की दिशा में एक आवश्यक सोपान मानते हुए इससे आवश्यक शिक्षण लें। ऐसा किया जा सका, तो फिर किसी को किसी भी परिस्थिति में निराशा, घुटन व कुंठा के अँधेरों में न भटकना पड़ेगा और न ही जिंदगी से पलायन करने की सूझेगी। उलटे ऐसी स्थितियों में सफलता की नई राहें मिलेंगी और जीवन की प्रकाश पथ पर सतत और अविराम प्रशस्ति होगी।

* * *

नजरिया

गिलास आधा खाली है या आधा भरा, यह आपके नजरिए पर निर्भर करता है। आधा भरा देखना आपके सकारात्मक नजरिए को दरशाता है। हमें हर पल अपने नजरिए को सकारात्मक बनाना चाहिए। सफलता एवं सोच के बीच गहरा संबंध है। कार्य करने से पूर्व ही नकारात्मक सोच लेने से उस कार्य में सफलता की संभावना संदिग्ध हो जाती है। उसमें सफल होने की संभावना भी कम हो जाती है। आपमें वास्तव में सफल होने की ललक है, तो आपको अपनी सोच में बदलाव लाना ही होगा। आपकी सोच ही आपके जीवन में परिवर्तन ला सकती है। सोच बदलने पर ही जीवन बदलेगा। आपकी सोच ही आपकी सफलता का रास्ता तय करेगी।

* * *

नयापन

ऐसा नहीं है कि आप एक बार हिट हो गए, तो सदा के लिए कहानी बन गई। प्रतिस्पर्धा के बदलते रूप के चलते आपको लगातार मेहनत के साथ-साथ अपने आपमें नयापन लाते रहना होगा। आपके क्षेत्र में रोज हजारों नए लोग आ रहे हैं। सबकी चाहत अपने आपको बेहतर साबित करने की है। इसलिए आपको अपनी किसी भी उपलब्धि पर अधिक समय न गँवाकर आगे की नई रणनीति तैयार कर लेनी चाहिए, जिससे आप समय-समय पर अपनी क्षमता को साबित करते रहें। इससे आपके विकास-क्रम पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाएँगे।

* * *

नाकामियाँ

सफलता और विफलता घटनाओं को परिभाषित करनेवाली शब्दावलियाँ हैं, लोगों को परिभाषित करनेवाली नहीं। इसका अर्थ यह है कि हम खुद पर नजर दौड़ाएँ और खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में भी देखें, जिसे जीवन में कभी असफलता, तो कभी सफलता मिलती है। हमें उन चीजों को स्वीकार करना चाहिए, जिनमें हम नाकाम रहे और हमें अपनी नाकामी के बारे में बात करते हुए सहज रहना चाहिए। क्या हम अपने अतीत की नाकामियों को स्वीकार करते हैं और उनसे हमने क्या सीखा, इसका लेखा-जोखा रखते हैं, क्या हम इस बारे में सहज रहते हैं कि कुछ मामलों में अपनी नाकामी को अपने बच्चों को बता पाएँ, यदि हम अपनी नाकामियों और उनसे निपटने के अपने तरीकों के बारे में होनेवाली बात को रात के खाने के समय की बातचीत का अहम हिस्सा बना पाएँ, तभी हम अपने बच्चों की भी नाकामी को जीवन की किसी अन्य घटना की तरह स्वीकार कर लेने के लिए मदद कर पाएँगे, सीखने के एक अवसर के रूप में बजाय कि उन्हें पूरी तरह से नकार दें।

* * *

नाकामी और सफलता

उन्हें देखना चाहिए कि हम नाकामी और सफलता का कैसा अनुभव कर रहे हैं, लेकिन सबसे बढ़कर उन्हें यह देखने की जरूरत है कि नाकामी और सफलता हमारे जीवन की अस्थायी घटनाएँ हैं, जीवन तय करनेवाली स्थायी स्थिति नहीं। याद रखें, सफलता कभी अंतिम नहीं होती, विफलता कभी मारक नहीं होती, साहस ही है, जिसकी अहमियत होती है।

* * *

कुछ नहीं करना और सफल होने से बेहतर है प्रयास करके नाकाम हो जाना। अगर नाकाम रहे, तो सबकुछ खत्म नहीं होता। ध्यान रहे, अतीत की छाया भविष्य पर न पड़ने दें। बीते कल की आज शिकायत करने से आनेवाला कल बेहतर नहीं होगा। बदलाव लाएँ और पीछे मुड़कर न देखें। सच्ची खुशी तभी आएगी, जब समस्याओं के बारे में शिकायत करना छोड़ देंगे।

* * *

निरंतर श्रम एवं प्रयत्न

लोग भूल जाते हैं कि जीवन की उन्नति किसी एक प्रयत्न की सफलता पर आधारित नहीं होती, वह तो निरंतर श्रम एवं प्रयत्न पर निर्भर करती है। जीवन की उन्नति के अवसर लगातार परिश्रम, निरंतर अध्यवसाय तथा अचल निष्ठा से आते हैं। एक साथ सबकुछ पा लेने की ललक जिनमें होती है, वे एक बार में शतप्रतिशत सफल होना चाहते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, यह अपने आपमें एक भ्रामक धारणा है। एक पत्थर के बड़े टुकड़े को तोड़ने

के लिए हथौड़े से कई प्रहार किए जाते हैं, लेकिन इसके छोटे-छोटे टुकड़े उसके अंतिम एक प्रहार में होते हैं। तो क्या इसका अभिप्राय यह हुआ कि अंतिम चोट से पहले के सभी प्रयासों को विफल माना जाए। ऐसा तथ्यत: गलत है। एक ही बार में सबकुछ हासिल कर लेने की मनोवृत्ति वाले लोग अंतिम चोट के पहले के प्रयासों को कितना ही विफल मानें, लेकिन इनकी अपनी महत्ता है, जो अपनी प्रत्येक चोट के साथ अंतिम सफलता की भूमिका तैयार कर रहे थे।

* * *

निरंतरता

जितना हो सके, उतना करना, मगर लगातार करना, उसे करने में लगे रहना। अगर व्यक्ति लगातार उतना करता है, जितना उससे हो सकता है, तो समय आने पर उसे इसके अच्छे नतीजे मिलेंगे। व्यक्ति अगर अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगातार, बिना हारे कोशिश करता ही रहेगा, तो वह जरूर प्रगति करेगा और उसमें लगे रहने की वजह से उसमें हमेशा जोश भरा रहता है। इसलिए उसके हारने की या दौड़ से निकाल दिए जाने की गुंजाइश कम रहती है। जी हाँ, आप भी ऐसे दौड़िए कि अपनी मंजिल तक पहुँचकर जीत हासिल कर सकें।

* * *

निराशा

इसमें कोई शक नहीं कि निराशा चाहे वह छोटे-से-छोटे रूप में ही क्यों न हो, एक भयंकर मानसिक बीमारी है, जो बढ़ते-बढ़ते एक-न-एक दिन सारे जीवन का ही नाश करके रख देती है। यह एक ऐसा भँवर है, जो जिंदगी की नाव को पतन के गर्त में डुबोकर रख देती है। यह एक ऐसा दलदल है, जिसमे फँसा आदमी रोने, तड़पने और पश्चात्ताप करने के अलावा और कुछ नहीं कर पाता।

* * *

निराश व्यक्ति अपने और दूसरों में बुराइयाँ ही देखते रहने के आदी होते हैं। इस दुनिया की अच्छी चीजों और जीवन के उज्ज्वल पहलुओं से वे हमेशा आँखें मूँदे रहते हैं। अपने आपको बुरा और दु:खी समझने के अलावा वे दूसरों से भी घृणा करते हैं। अपने जीवन को दु:खमय और भाररूप करने के अतिरिक्त वे दूसरों के जीवन में भी नकारात्मकता भर देते हैं, इसलिए सभी उनसे बचकर रहना चाहते हैं।

* * *

निराशा व्यक्ति की आत्मिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति को भी अस्त-व्यस्त कर देती है। ऐसे लोग पूरी मुस्तैदी से किसी भी काम में नहीं लग पाते। किसी तरह अगर काम करना शुरू भी करते हैं, तो जल्दी ही उनका मन उचटने लगता है। थोड़ी सी मुसीबत आई नहीं कि वे काम छोड़ बैठते हैं, घबराहट और काल्पनिक भय उन्हें व्यथित कर देता है और फिर इस तरह निराश व्यक्ति को जिंदगी में असफलता पर असफलता मिलती रहती है।

* * *

निराशा व्यक्ति की शक्ति को खा जानेवाली पिशाचिनी है। उस उत्साह की सबसे बड़ी दुश्मन है, जो सफलता की सबसे मूल शर्त है। निराश लोग उन्नति की इच्छा से रहित होकर मोह के भँवर में पड़े रहते हैं। यह व्यक्ति को कर्तव्य और पुरुषार्थ से हटाकर भाग्यवादी बना देती है। उसकी प्रगति के सारे रास्ते बंद कर देती है। निराश व्यक्ति भाग्य को ही सबकुछ मानते हैं और उसी के भरोसे हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे चाहते हैं कि कोई जादू की छड़ी हाथ लग जाए, जिससे रातोरात सारी मुसीबतों से छुटकारा मिल जाए। अपनी मेहनत के दम पर भाग्य-निर्माण

की क्षमता को वे लगभग भूल से जाते हैं। निराशा व्यक्ति के दिलो-दिमाग समेत हर चीज को जंग लगा देती है। ऐसे व्यक्ति हर समय निराशाजनक विचारों में डूबे रहते हैं। यही वजह है कि निराश व्यक्ति जल्दी ही कमजोर, बीमार और अशक्त हो जाते हैं।

* * *

निराशा से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है, इसलिए इसका समूल नाश करके आशावाद अपनाना चाहिए। मानवीय प्रगति का आधार आशावादिता ही है, अत: संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपको सर्वप्रथम आशावादिता का आश्रय लेना चाहिए।

* * *

निराशावाद

निराशावाद भयंकर राक्षस है, जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है। निराशावादी प्रगति की भावना का त्याग कर देते हैं। यदि कभी उन्नति करने का कुछ खयाल आया भी, तो विपत्तियों के पहाड़ उन्हें दिखाई देने लगते हैं। कार्य आरंभ नहीं हुआ कि चिंताओं के बादल मँडराने लगे, पर आशावादी व्यक्ति प्रसन्न होकर कार्य प्रारंभ करता है। गतिमान बने रहने के लिए मुसीबतों को सहायक मानकर चलता है। उत्साहपूर्वक अंत तक पूर्व नियोजित कार्य में संलग्न रहता है, इसी से उसकी आशाएँ फलवती होती हैं। आशा ही जीवन है, निराशा को तो मृत्यु ही मानना चाहिए।

* * *

निर्णय

अगर कभी हमारी नौकरी चली जाती है, तो हम खुद को नाकाम मानने लगते हैं, कभी-कभी इस हद तक कि जैसे नाकामी से कभी उबर ही नहीं पाएँगे। हम यह सोचते हैं कि उक्त नौकरी में नाकामी हमारे लिए एक फैसला है, हमारी पूरी जिंदगी पर एक निर्णय है, जो हमें कभी उबरने का मौका नहीं देगा और यही विचार हमें अपने बारे में अलग ढंग से नहीं सोचने देता है।

* * *

निर्दिष्ट दिशा-लक्ष्य

बहुत से लोगों के जीवन में असफल होनेवाले कारणों में एक कारण अपने लिए एक निर्दिष्ट दिशा-लक्ष्य का चुनाव न करना भी रहता है। कभी इधर, कभी उधर, एक को छोड़कर दूसरे में, दूसरे को छोड़कर तीसरे काम में लगनेवाले व्यक्ति किसी में भी सफलता प्राप्त नहीं करते। इसलिए अपने जीवन की एक दिशा निर्धारित कीजिए और सदैव उसी ओर चलते रहिए। कई लोग एक कार्य में बहुत सा समय बिताकर उसे छोड़ बैठते हैं और फिर दूसरे काम को हाथ में लेते हैं। इस तरह के अधिकांश लोग जीवन में असफलता का ही सामना करते हैं।

* * *

निर्भरता

हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने जीवन का प्रतिक्षण, प्रतिघंटा और प्रतिदिन कैसे बिताते हैं।

* * *

निश्चय

कुछ पाने के लिए सबसे पहले मानसिक स्तर पर दृढ़ निश्चय करें कि आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सकारात्मक विचारों का आना परम आवश्यक है। विचार आपकी प्रेरणा बनेंगे। विचार ही आपकी सफलता का आधार बनेंगे। किसी लक्ष्य को पाने से पूर्व ही मन में धारणा बना लेना कि मैं इसे नहीं कर सकता, इस स्थिति में आप कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाएँगे। व्यक्ति स्फूर्तिवान तथा ऊर्जावान तन से नहीं, मन से होता है। आपका मन सोचता है—आप ऊर्जावान एवं स्फूर्तिवान हैं, तो आप वाकई ऊर्जावान-स्फूर्तिवान बन सकते हैं।

* * *

संदेह और अनिश्चय ये दोनों दो परस्पर विरोधी दिशाएँ हैं। जहाँ संदेह होगा, आप वहाँ किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकते। जिसके मन में यह संदेह होगा कि पता नहीं मैं इस काम को कर पाऊँगा भी या नहीं, वह कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। सफलता पाने के लिए, तो दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है। जब तक आप अपने शब्दकोश से दुर्भाग्य, असंभव और अनिश्चय, संदेह आदि को निकालकर बाहर नहीं करेंगे, तब तक आपको जीवन के किसी क्षेत्र में भी सफलता नहीं मिल सकती। आपका ऐसा ही विश्वास रहा, तो एक दिन आपके लिए अपने पैरों पर खड़ा होना भी असंभव हो जाएगा। आँखें खोलिए और इस सत्य को समझिए कि आपको जीवन में कुछ करना और बनना है।

* * *

निश्चित दिशा

बिना दिशा निश्चित किए यदि समुद्र में एक जलयान को छोड़ दिया जाए, तो उसका क्या परिणाम होगा, आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं। इधर-उधर डोलता हुआ जलयान या तो समुद्री चट्टानों से या फिर तट से टकराकर समुद्र में डूब जाएगा, लेकिन जब उसी जलयान की दिशा निश्चित होगी, तो समुद्र को चीरते हुए वह अपनी मंजिल तक पहुँच जाएगा। यही बात हमारे जीवन पर भी लागू होती है। बिना अपना लक्ष्य तय किए हम अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच सकते। भाग्य के भरोसे बैठे रहना ठीक नहीं है।

* * *

निष्ठा

यदि आप पूर्ण निष्ठा के साथ उद्यम कर रहे हैं, तो एक क्षण को भी व्यर्थ मत जाने दीजिए। आप जो काम कर सकते हैं अथवा जिस काम को करने का स्वप्न देखते हैं, उसे आरंभ कर दीजिए।

परिणाम

आप जैसा सोचेंगे, उसके परिणाम भी वैसे ही प्राप्त होंगे। मन में सफलता पाने के बीज रोपित करेंगे, तो उसके परिणाम सफलता के रूप में प्राप्त होंगे। असफलता के विषय में सोचकर सफलता पाने के प्रयास करेंगे, तो किसी भी स्थिति में आपको सफलता नहीं मिल सकती है। सोच में तो असफलता बसी हुई है, तो परिणाम सफलता के रूप में कैसे प्राप्त होगा? जैसा संदेश आप अपने अवचेतन मस्तिष्क को देंगे, वैसा ही परिणाम आपको प्राप्त होगा। अमीर बनना चाहते हैं, तो पहले अमीर बनने के विषय में सोचें, फिर अमीर बनने के प्रयास करें।

* * *

कोई भी काम शुरू करने से पहले उसके परिणाम के बारे में जरूर सोच लें और उसी के अनुसार क्रिया करें। खुशी और शांति पाने के लिए अपने दिमाग में हमेशा किए जा रहे काम के परिणाम को याद रखिए।

* * *

हमारे मानसिक नजरिए से ही हमें सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। परिणाम का सकारात्मक चित्र खींचने से उसके इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। नकारात्मक परिणाम के विषय में सोचने से नकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। अपने वार्त्तालाप में सदैव, 'मैं अवश्य ही सफलता प्राप्त करूँगा'—इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करें। बाधाओं एवं कठिनाइयों से कभी मत घबराएँ। इनका सामना करना सीखें।

* * *

परिवर्तन

परिवर्तन के नियम से संचालित विश्व में दिन-रात, सर्दी-गरमी, धूप-छाँव की तरह सफलता-असफलता का क्रम भी सहज प्राकृतिक है। यहाँ स्थायी असफलता नाम की कोई चीज नहीं है। जो असफलता आज हमें दिखाई पड़ती है, वह वस्तुत: अभीष्ट सफलता का एक सोपान मात्र है, लेकिन एक ही बार में सबकुछ पा लेने की ललक बिना तनिक भी असफल हुए पूर्ण सफलता की कल्पना करती है। इसी वजह से असफलता को सहज रूप से स्वीकार कर पाना असंभव हो जाता है और कई लोग तो प्रगति की दिशा में अपना प्रयास तक छोड़ बैठते हैं। निराशा, कुंठा, घुटन, हताशा, विक्षिप्तता ऐसे ही व्यक्तियों की दु:खद नियति बन जाती है।

* * *

परिवर्तन एक प्राकृतिक नियम है, अत: परिवर्तन को स्वीकार करें। परिवर्तन को स्वीकारने पर अन्य सभी बातें अपने आप ही परिवर्तित हो जाएँगी।

* * *

परिश्रम

इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति ने कठोर परिश्रम द्वारा असंभव को भी संभव कर दिखाया है। परिश्रम व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। शारीरिक और मानसिक परिश्रम के उचित तालमेल से व्यक्ति के तन और मन, दोनों स्वस्थ रह सकते हैं।

* * *

दरअसल, वास्तविक सफलता पाने के लिए परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है और जब सफलता मिले, तो अपने मन, विचार और व्यवहार पर नियंत्रण रखना चाहिए। उतावलेपन में व्यक्ति कई बार जो कुछ भी सफलता प्राप्त करता है, उसे और विस्तार देने की बजाय जल्द ही खो देता है। इसलिए हर परिस्थिति में संयम बनाए रखना चाहिए। दक्षता का कोई अंतिम पड़ाव नहीं होता। इसलिए खुद को हमेशा सीखने की प्रक्रिया में रखें। धैर्य और सावधानी सफलता की बड़ी कसौटी हैं। इसमें आप जितने दक्ष होंगे, सफलता की संभावनाएँ उतनी ही प्रबल होंगी। न तो किसी से सीखी गई बात भूलनी चाहिए, न ही किसी व्यक्ति के सहयोग और उपकार को।

* * *

परिश्रम से बचकर कोई और रास्ता ढूँढ़ना समय की बरबादी है। जीवन में सफलता और परिश्रम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए सफलता की इच्छा रखनेवाले को कठोर परिश्रम के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

* * *

परिस्थिति

विकट परिस्थिति में भी ज्यादा दु:खी न होकर, उसको हटाने के बारे में सोचना चाहिए।

* * *

परीक्षा

जिस परीक्षा को पास कर हम खुशी में फूले नहीं समाते, अगले क्षण से हमारी अपनी नजर में ही उसका महत्त्व घटने लगता है और हम किसी नई परीक्षा की तैयारी में लग जाते हैं। इसके अलावा हमारी आज की सफलता किसी विशेष कार्य-क्षेत्र की है, न कि समूचे जीवन की।

* * *

जीवन में मिलनेवाली विफलताएँ दरअसल विधाता की तरफ से ली जानेवाली हमारी परीक्षा ही समझिए। हम अपने जीवन में लक्ष्य को पा सकेंगे या नहीं, यह हमारी पात्रता पर निर्भर है। हमें अपना ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित रखकर आगे बढ़ना चाहिए। मान लीजिए आपको नदी के उस पार जाना है, बीच में तूफान आ जाता है, तो अगर आपकी नजर लक्ष्य से भटक जाती है, तो आप भी भटक सकते हैं, पर अगर आपकी नजर लक्ष्य पर केंद्रित है, तो पानी का तेज बहाव भी आपको रोक नहीं पाएगा, कारण आपकी एकाग्रता है, क्योंकि आपका ध्यान तूफान पर नहीं लक्ष्य पर था।

* * *

परेशानी

रसायनशास्त्र का एक नियम है, जो जिंदगी पर भी लागू होता है। जब कोई अणु टूटकर पुन: अपनी पूर्व अवस्था में आता है, तो वह पहले से अधिक मजबूत होता है। इसी तरह हम किसी परेशानी का सामना करने के बाद पहले से अधिक मजबूत हो जाते हैं और जीवन में और भी तरक्की करते हैं।

* * *

पुरुषार्थ

आशाएँ पुरुषार्थ को जगा देती हैं, जिससे व्यक्ति बड़े-बड़े कार्य करने में समर्थ होता है।

* * *

संकल्प और निष्ठा

जब तक व्यक्ति अपनी संपूर्ण शक्ति, क्षमता को अपने लक्ष्य की पूर्ति में नहीं लगाता, तब तक सफलता संदिग्ध ही रहती है। अधूरे मन से, जी चुराकर, बोझ समझकर अपने काम में लगनेवाले लोगों को प्राय: असफलता ही मिलती है। किसी काम की इच्छा करने से या लक्ष्य का चुनाव करने से ही काम की पूर्ति नहीं हो जाती। काम के लिए, लक्ष्य के लिए पूर्ण संकल्प और निष्ठा के साथ प्राणपण से उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए जुट जाना होता है, तभी सफलता की मंजिल पाई जा सकती है। बिना श्रम और प्रयास के सफलता की आशा करना आकाश के तारे तोड़ने के समान खयाली पुलाव ही है। अत: अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए, सफलता के लिए अपनी समस्त शक्ति और क्षमता का उपयोग कीजिए। प्राणपण से उसमें जुट जाइए।

* * *

प्रकृति का नियम

ठोकर खाना, गिरना, फिर उठना और चलना, यह तो प्रकृति का नियम है। जो गिरेगा ही नहीं, वह उठेगा कैसे और सफलता के मार्ग पर आगे कैसे बढ़ेगा?

* * *

दुनिया में हरेक इनसान की सफलता अलग है, जिसका सबसे मुख्य रूप एक सफल इनसान बनना है। ऐसे लोग अपने जीवन में आनंद और खुशियों को बढ़ाने की कोशिश करते हैं और इन सभी आदतों को अपनाकर ही आप अपने जीवन को बदल सकते हैं। यदि आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचना है, तो आपको बदले में कुछ-न-कुछ तो जरूर देना ही पड़ेगा। यही प्रकृति का नियम है।

* * *

प्रतिभा

आपकी प्रतिभा आपको भगवान् का दिया गया उपहार है, आप इसके साथ क्या करते हैं, यह आपके द्वारा भगवान् को दिया गया उपहार होता है।

* * *

प्रतिभाशाली व्यक्तियों को निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है। इसी के सहारे वे अपनी परिस्थितियों में सुधार कर लेते हैं।

* * *

प्रतियोगिता

याद रखें, हर किसी को बदला जा सकता है और हर किसी को हराया जा सकता है, बल्कि आपको भी। प्रतियोगिता की इज्जत करना सीखें और कभी भी न डरें, क्योंकि ऐसा कई बार हो सकता है कि प्रतियोगिता देखकर आप डर जाएँ।

* * *

प्रतीक्षा

अवसर की प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्तियों को महान् या सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता। महान् व्यक्ति तो वे हैं, जो अवसर को अपना अनुगामी, अपना दास, अपना आज्ञापालक बना लेते हैं। लाखों अवसरों को खोजने पर शायद ही कोई ऐसा अवसर मिले, जो विशेष रूप से आपकी सहायता कर सके। यदि आप विचार करेंगे, तो आपको पता लगेगा कि अवसर आपके सामने सदैव उपस्थित होते रहते हैं।

* * *

प्रभाव की शक्ति

बच्चों के जीवन में अपने प्रभाव की शक्ति का कम आकलन कभी नहीं करना चाहिए, चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक। हमें सकारात्मक चीजों को बढ़ाने और नकारात्मक चीजों को न्यूनतम करने की कोशिश करते रहना चाहिए।

* * *

प्रयत्न या प्रयास

उचित यही है कि आज हमारी जैसी परिस्थितियाँ हैं, उनमें संतोष अनुभव करें और आगे के लिए उनसे अच्छे परिणामों की आशा करें, तभी हम जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। एक सी परिस्थिति में पड़े रहना अकर्मण्य पुरुषों को शोभा दे सकता है, किंतु आपकी शान इसी में है कि आप हर घड़ी सुंदर भविष्य की आशा करें। आज जिस पद पर हैं, कल उससे बड़ा दर्जा मिले, ऐसी आशा करें और अभी से उनके लिए प्रयत्न शुरू कर दें।

* * *

लगातार प्रयत्न करनेवाले लोगों की गोद में सफलता स्वयं आकर बैठ जाती है।

* * *

असफल होने पर आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है, परंतु प्रयास छोड़ देने पर आपकी असफलता सुनिश्चित है।

* * *

एक सम्राट् कई युद्धों में लगातार पराजित होता रहा। इक्कीसवीं बार उसके रक्षक सैनिकों को छोड़कर और कोई शेष न रहा। वह एक गुफा में बैठा विचार कर रहा था, तभी एक चिकने पत्थर पर चढ़ने का प्रयास करती हुई चींटी दिखाई दी। वह बार-बार गिर जाती, किंतु ऊपर चढ़ने की आशा से पुनः प्रयास करती। यह देखकर तैमूर के हृदय में फिर से आशा का संचार हुआ। उसने सोचा यदि छोटी-सी चींटी इतनी बार असफल होने पर भी निराश नहीं होती और वह अपना प्रयास नहीं छोड़ती, तो मैं ही हिम्मत क्यों हारूँ? वह नई शक्ति जुटाने में लग पड़ा और फिर से दुश्मन पर विजय पाई।

* * *

जीवन में सफलता का मूल मंत्र है—हर असफलता को सफलता के प्रथम पग के रूप में स्वीकार करना। इस स्वीकारोक्ति के साथ सतत प्रयास में निरंतरता रखना। प्रयास कितना ही अधूरा, छोटा या अपूर्ण क्यों न हो, यदि यह सतत जारी रहा, तो प्रत्येक चरण में हुई भूलों से कुछ सीखते हुए सुधार का क्रम भी चलता रहेगा और अंततः समय

आने पर पूर्णता का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

* * *

विफल होना मंजूर किया जा सकता है, लेकिन सफल होने के लिए प्रयास न करना मंजूर नहीं किया जा सकता।

* * *

सतत प्रयास ही व्यक्ति की अभीष्ट सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

* * *

सदैव सफल होने के विषय में ही सोचें। इससे आपके मस्तिष्क में सकारात्मक धारणा बनेगी और आप सफलता के पथ पर अग्रसर होना प्रारंभ कर देंगे। इसके लिए बस प्रयास करने की आवश्यकता है।

* * *

सफलता की कला वास्तव में हमारे मस्तिष्क के दक्षतापूर्ण संचालन की एक कला है। सफलता हमारे भीतर ही निहित होती है। उसे बाहर निकालने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। यदि हमारे प्रयास सकारात्मक होते हैं, तो हम सफलता की ओर बढ़ जाते हैं और यदि हमारे प्रयास नकारात्मक होते हैं, तो हम सफलता से दूर होते चले जाते हैं। हमारे मनोभावों का हमारी जिंदगी में बड़ा महत्त्व होता है।

* * *

सफलता तभी मिलती है, जब छोटे-छोटे प्रयास नियमित रूप से किए जाएँ।

* * *

स्कॉटलैंड का राजा ब्रूस दुश्मनों से हारकर एक गुफा में छुपा अतीत के चिंतन में मगन था। बीते हुए दिनों की यादें बार-बार उसके जेहन में बिजली की तरह कौंधतीं, पर उम्मीद की कोई सुनहरी किरण दिखाने के बजाय वे उसके मन को निराशा के और भी ज्यादा अँधेरों में डुबो दे रही थीं। साम्राज्य, सेना, अधिकार, वैभव, प्रतिष्ठा और परिवार की याद से उसका मन दु:ख और संताप से भर उठता। उसे लगने लगा कि राज्य पाना तो असंभव ही है, क्योंकि सबकुछ खो चुका था। अब जब कुछ पाया ही नहीं जा सकता, तो फिर जीने का ही क्या फायदा? उसे खुद का जीवन भार लगने लगा और उसे त्याग देना ही उसने बेहतर समझा। खुद का अंत करे या न करे, विचारों की इसी उधेड़बुन में पड़ा वह यह सोच ही रहा था कि अचानक सामने गुफा की दीवार पर उसकी नजरें टिक गईं। एक चींटी, जो अपने से कहीं ज्यादा बोझ लिये गुफा की दीवार पर चढ़ रही थी, नीचे गिर पड़ी, लेकिन तुरंत ही उसने फिर से चढ़ना शुरू किया, पर गुफा की दीवार चिकनी होने की वजह से दोबारा गिर गई। वह बार-बार गिरती और दोबारा ऊपर चढ़ने का प्रयास करती। यह देखकर ब्रूस के हृदय में आशा का संचार हुआ। उसने सोचा जब एक छोटी-सी चींटी भी इतनी बार असफल होने पर निराश नहीं हुई और निरंतर प्रयास करना नहीं छोड़ती, तो फिर मैं इससे कहीं ज्यादा सामर्थ्यवान होने पर भी हिम्मत क्यों हार जाऊँ? ब्रूस उसी समय उठ खड़ा हुआ और अपनी शक्ति इकट्ठा करने के बाद पूरे जोश से दुश्मन से लड़ा, लेकिन दुर्भाग्य से फिर हार गया, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। कई बार वह इसी तरह हारा, पर आखिरकार जीत ही गया और अपने खोए हुए राज्य को हासिल करने में सफल रहा।

* * *

प्रयोग

सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप चौबीस घंटे में कितने प्रयोग कर पाते हैं।

* * *

प्रयोगशील

प्रयोगशील बनें। कोई भी समस्या या मुश्किल तभी तक पहाड़ जैसी लगेगी, जब तक आप इसे पहाड़ जैसा समझेंगे। अगर आप मानते हैं कि यह नहीं सुलझ सकती, तो यह सचमुच नहीं सुलझेगी। यह विश्वास रखें कि यह सुलझ सकती है और इसके बाद आपके मन में इसके समाधान अपने आप आने लगेंगे। यह असंभव है, ऐसा कभी न तो सोचें, न ही कहें।

* * *

प्रशंसा

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय बरबाद न करें, उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करें।

* * *

प्रेरक शक्ति

प्रत्येक असफलता के साथ एक ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है, जो सफलता को अधिक सुनिश्चित करती है। शिशु चलने के अपने प्रथम प्रयास में असफल रहता है, लेकिन प्रत्येक बार गिरने के साथ ही वह कुछ सीखता जाता है और समस्त असफलताओं से वह स्वयं को संतुलित करना व बिना गिरे चलना सीख जाता है। अत: सफल होने के लिए हमें असफलता को आवश्यक प्रेरक शक्ति के रूप में ही स्वीकार करना होगा। यदि हम असफलता से भागने की कोशिश में जीवन से पलायन करने की कोशिश करते रहे, तो हम सफलता से भी उतना ही दूर चले जाएँगे।

* * *

प्रेरणा

आप जिस भी व्यक्ति से प्रेरित हैं, उसका अनुसरण करें। इससे आपको जीवन की सही दिशा मिलेगी, साथ ही सफलता भी। जरूरी नहीं कि आपका आदर्श व्यक्ति बाहर का हो। कभी-कभी दोस्त, रिश्तेदार या पड़ोसी भी ऐसा काम कर जाते हैं कि हमारा दिल उन्हें आदर्श मानने लगता है।

* * *

जब आप किसी कार्य की शुरुआत करते हैं, तो आपकी प्रेरणा का स्तर बहुत ऊपर होता है, लेकिन असफलता या तनाव से सामना होने पर यह कम हो सकता है। यह पता करें कि आपके लक्ष्य का कौन सा भाग आपको ज्यादा पसंद है और स्वयं को आगे बढ़ाने के लिए उसे याद करें। कभी-कभी कार्य से अवकाश लेकर खुद को समझने की कोशिश कीजिए। अपनी ताकत और उपलब्धियों को याद कीजिए और खुद पर गर्व महसूस करिए, ये सब आपको प्रेरणा देंगे।

* * *

मंद स्मृति से पीड़ित बच्चों पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि यदि उनको कलात्मक रुचि की ओर प्रेरित किया जाए, तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास तीव्र गति से होता है। नई प्रेरणा ही उनके जीवन में मील का पत्थर साबित हो सकती है।

* * *

सफल व्यक्ति बाकी लोगों से प्रेरणा तो लेते हैं, लेकिन वे उनके जैसा बनने की कोशिश नहीं करते। वे अपने सरल, सहज और मूल स्वभाव में बने हुए हमेशा कुछ-न-कुछ रचनात्मक करने की कोशिश करते हैं।

* * *

बचाव

जिन लोगों के पास खाली समय होता है, वे हमेशा काम करनेवाले लोगों का समय बरबाद करते हैं। हमेशा ऐसे लोगों से बचकर रहना चाहिए। यदि आपके जीवन में इस समय ऐसे लोग हैं, तो वे आपको उतना सफल नहीं होने देंगे, जितना आप उनसे दूर रहकर सफल हो सकते हैं।

* * *

बदलाव

अगर आपको अकसर ऐसा लगता है कि सफलता आपके हाथ नहीं आ रही, तो शायद अब आपको अपनी कोशिशों में कुछ बदलाव लाने की जरूरत है।

* * *

समय के साथ अपने लक्ष्य को पाने में आप जिस भी सफलता या असफलता का सामना करें, तो उसमें सुधार के लिए अपने लक्ष्य में बदलाव लाकर उसे समय के अनुसार ढालते रहिए। याद रखिए कि परिवर्तन संसार का नियम है।

* * *

बहाना

अपने आपको झूठे बहाने देना बंद करें। अगर आप हर काम के लिए बहाना देंगे, तो आपकी सफलता भी बहाना देती रहेगी और फिर आप अपनी सफलता के लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाएँगे।

* * *

बातचीत

बहस से कभी किसी मुद्दे का हल नहीं निकलता, जबकि सोच-समझकर बातचीत करने से सभी मुश्किलों का हल निकल सकता है।

* * *

बाधा

श्रेष्ठ एवं सफल लोग अपनी शक्ति पर ज्यादा ध्यान देते हैं और साथ ही दूसरों की शक्ति का भी ध्यान रखते हैं। उनका ध्यान इस बात पर सबसे ज्यादा होता है कि वे क्या कर सकते हैं, जबकि इस बात पर बहुत कम होता है कि वे क्या नहीं कर सकते हैं। वे असफलता को अपनी सफलता के रास्ते की बाधा नहीं बनने देते, लेकिन असफलता से कुछ-न-कुछ जरूर सीखते हैं। सफल इनसान अपना ज्यादातर समय अपनी कमजोरियों पर नहीं लगाते, बल्कि वे ज्यादातर समय अपने प्रदर्शन को विकसित करने में लगाते हैं।

* * *

बार-बार

मैं अपनी जिंदगी में बार-बार असफल हुआ हूँ और इसीलिए मैं सफल होता हूँ।

* * *

मंजिल

अगर हम समय-समय पर इसकी जाँच करते रहें कि हम अपनी जिंदगी को कैसे चला रहे हैं, तो यह बुद्धिमानी

की बात होगी, साथ ही हमें खुद से यह सवाल पूछते रहना चाहिए कि हमारी जिंदगी कौन सा मोड़ ले रही है और क्या हमें कुछ फेरबदल करने की जरूरत है। अपने मन में यह बात साफ-साफ रखना बहुत जरूरी है कि हम क्या हासिल करना चाहते हैं और क्यों! अगर हमारे मन में अपनी मंजिल एकदम साफ दिखती है, तो हम इतनी जल्दी हार मानने को तैयार नहीं होंगे।

* * *

मन-जीवन

सफलता सबसे पहले आपके मन में घटित होती है। उसके बाद ही वह जीवन में उतरती है।

* * *

मनोवृत्ति एवं धारणा

कोई सफल होता है या असफल, यह पूरी तरह व्यक्ति की मनोवृत्ति एवं उसकी धारणाओं पर निर्भर करता है। जो एकाकी सफलता को ही पाना चाहते हैं, वे प्राय: स्वयं को एक असफल व्यक्ति मान बैठते हैं। दु:ख, हताशा, निराशा, हीनता उनकी नियति बन जाती हैं, उनका जीवन किन्हीं अनजाने अँधेरों में खोता चला जाता है।

* * *

सफलता के लिए उचित मनोवृत्ति का होना आवश्यक है, क्योंकि जैसी मनोवृत्ति होगी, वैसा ही व्यवहार होगा। जैसा व्यवहार होगा, वैसे ही कार्य होंगे। जैसे कार्य होंगे, परिणाम भी उसी के अनुकूल होंगे।

* * *

हमारे मन के भाव ही हमारे जीवन की दिशा को तय करते हैं। हम जीवन में कितना ऊपर जाएँगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी मनोवृत्ति किस तरह की है। हमारे जीवन का हरेक पक्ष हमारे मन द्वारा ही नियंत्रित होता है। हमारी सफलता-असफलता सब मनोवृत्ति पर निर्भर करती है।

* * *

महानता

लोगों की अच्छी आदतों को, उनकी महानता को देखने की कोशिश करें। दूसरों की कमियों को ढूँढ़ना बंद करें। अपने दिल पर हाथ रखें और अपनी कमियों के बारे में जानें। अपने दिल में आपको बहुत सी नकारात्मकता और कमियाँ मिलेंगी।

* * *

महान्

जो कभी भी कहीं असफल नहीं हुआ, वह आदमी महान् नहीं हो सकता।

महान् बनने की कोशिश न करें। 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा', इसकी चिंता छोड़कर अगर अपने लक्ष्य पर ध्यान देंगे और उसका दायरा बढ़ाएँगे, तो आप खुद एक असाधारण व्यक्ति बन जाएँगे।

* * *

लक्ष्य

हम सारी जिंदगी खुद को दूसरे के चश्मे से देखते हैं और कोशिश सभी की यही रहती है कि हम, जो नहीं हैं, वह बन जाएँ और लोग हमें पसंद करें। अपनी ऊर्जा को इन फालतू के कामों पर खर्च करना छोड़िए। आप जैसे हैं, बहुत अच्छे हैं। अपनी अच्छाइयों को पहचानिए और अगर आपको विश्वास न हो तो आप जितने भी महान् लोगों

को जानते हैं, सबके जीवन को देखिए, आपको उनमें से कोई भी ऐसा नहीं मिलेगा, जिसने महान् बनने की कोशिश की हो। उनके लक्ष्य महान् थे, लक्ष्य को पाने की भूख भी प्रबल थी।

* * *

महान् नेता

सफल इनसान उदार ही होते हैं। उनमें अपने और अपनी टीम में होनेवाले बदलाव को देखने की चाह होती है। जब उन्हें अपने लक्ष्य को हासिल करने का कोई और अच्छा मार्ग मिलता है, तो वे उस रास्ते पर चलने से कतई नहीं डरते और नए रास्ते पर चलते हुए नए विचारों का निर्माण करते जाते हैं और दूसरों को उस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। श्रेष्ठ और सफल इनसान महान् नेता भी होते हैं, क्योंकि वे अपने साथ अपनी पूरी टीम को भी लेकर चलते हैं।

* * *

मार्ग-निर्माण

सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करते हैं और उस पर जनसमूह को ले जाते हैं। वे किसी की नकल नहीं करते हैं।

* * *

मुश्किलें

सफल इनसानों में मुश्किलों को स्वीकारने की चाह होती है, मुश्किलों का वे आसानी से सामना करते हैं और उनसे कुछ सीखकर ही आगे बढ़ते हैं। वे खुद ही अपने आपको प्रेरित करते हैं, खुद ही अवसरों का निर्माण करते हैं और हमेशा नए अवसरों की खोज में लगे रहते हैं। शुरू से ही उनमें कुछ नया, कुछ अलग करने की चाह होती है। वे अच्छी तरह से अपनी जवाबदेहियों को समझकर उन्हें बखूबी निभाते हैं और अपने कॅरियर में आगे बढ़ने के लिए यह उन्हें काफी मददगार साबित होता है।

जहाँ दुनिया में लोग सबसे सरल, तेज और आसान रास्ता अपनाकर सफल बनना चाहते हैं, वहीं आपको मुश्किलों में रास्ता बनाकर सफल होने की कोशिश करनी चाहिए। मुश्किलों से दूर भागकर आप अपनी सफलता को खुद से और भी दूर करते चले जाते हैं। आपको सफलता के रास्ते में आनेवाली मुश्किलों डटकर का सामना करना चाहिए। आँख-से-आँख मिलाकर आनेवाली मुश्किलों का सामना करना चाहिए और हमेशा यही सोचना चाहिए कि आप कोई भी मुश्किल भरा काम कर सकते हैं।

* * *

मूलमंत्र

अपने को जानना और अंतर में बसे ईश्वर के रूप को पहचानना, यही सफल जीवन का मूलमंत्र है।

* * *

मेहनत

अगर आप मेहनत से घबराएँगे, तो समझिए कि सफलता आपसे दूर चली जाएगी।

* * *

मौका

असफलता फिर से अधिक सूझ-बूझ के साथ कार्य आरंभ करने का एक मौका मात्र है।

* * *

कोई बात परेशान कर रही है, तो मुसकराएँ और खुद को उसका मुकाबला करने के लिए तैयार करें। देखिए, हर पल नई शुरुआत और नया अंत है। दूसरा मौका मिलेगा। अगले ही पल। बस इसे अच्छा बनाने की जरूरत है और ऐसा न किया, तो कुछ यूँ होगा, जब दाँत थे, तब चने नहीं थे, अब चने हैं, पर दाँत नहीं।

* * *

बहुत से व्यक्ति किसी खास अवसर की प्रतीक्षा किया करते हैं। वे अकसर कहा करते हैं, ''मुझको मौका मिलने दो।'' साधारण अवसरों को वे उपयोगी नहीं समझते। उन्हें यह ज्ञात नहीं कि कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटे-छोटे अवसर को भी व्यक्ति अपने बुद्धि-चातुर्य से महत्त्वपूर्ण बना सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि आप छोटे अवसर को भी हाथ से न जाने दें। कई बार छोटे-छोटे अवसर ही व्यक्ति की बहुत बड़ी उपलब्धि का कारण बन जाते हैं।

* * *

मौलिकता

मौलिकता मनुष्य के अंदर होती है, यह हर व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत रचना होती है, इसलिए यदि आप अपने जीवन को सफलताओं से समृद्ध बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको मौलिक बनना पड़ेगा।

* * *

योजना

अगर आप सफल होने के लिए योजना नहीं बना रहे हो, तो इस बात की संभावना अधिक है कि आप असफल होने की योजना बना रहे हैं। सबसे पहले आपको यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि आपको करना क्या है। आप अपना लक्ष्य चुनने में सोच-विचार कीजिए और एक बार आपने यह निर्धारित कर लिया कि आपको करना क्या है, तो फिर उसे पूरा कैसे करना है, इसके लिए योजना बनाइए।

* * *

असफलता आपको महान् कार्यों के लिए तैयार करने की प्रकृति की योजना है।

* * *

किसी भी कार्य को करने में अड़चनें आती हैं और योजना बनाकर चलने से उन अड़चनों को आप तुरंत हल कर सकते हैं। इसके साथ-साथ योजना आपको घबराने नहीं देती, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होने देती।

* * *

कुछ लोग आँखें बंद करके काम करने में लगे रहते हैं। वे योजना नहीं बनाते कि काम कब खत्म होगा। वे खुद को ज्यादा समझदार समझते हैं, इसलिए भविष्य को मुट्ठी में कैद करने की सोचते हैं। अगर कोई परियोजना उनका साथी दो घंटे में पूरी करता है, तो वे सोचते हैं कि इसे तो मैं एक घंटे में ही कर सकता था, जबकि वास्तविकता यह नहीं होती। जीवन में योजना निर्माण को महत्त्व दें।

* * *

जीवन के किसी भी क्षेत्र में योजना के साथ चलने व उसका सदुपयोग करनेवाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँच सकता है। योजनाबद्ध तरीके से शुरू किया गया कार्य समय से पूरा होता है और अपेक्षित परिणाम देता है, इसलिए समय के महत्त्व को समझें।

* * *

बिना कार्य-योजना के दृढ़ संकल्प सिर्फ एक मानसिक क्रिया बनकर रह जाता है और यथार्थ में नहीं बदल पाता। जीवन में किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए उसकी सही और पूरी कार्य-योजना पहले से तैयार रखना बहुत जरूरी है।

* * *

जीवन में कोई भी कार्य अचानक या संयोग से नहीं होता और अगर ऐसा हो भी जाता है, तो ऐसा काम स्थायी नहीं होता। आपके वही कार्य आपका जिंदगी भर साथ देते हैं, जिनको आपने सोच-समझकर और एक योजना बनाकर किया हो। अत: संयोग में नहीं, बल्कि अच्छी योजना में विश्वास रखिए।

* * *

योजना बनाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले एक समय सारणी बनाएँ कि कब कितना समय आप दे सकते हैं और कब कौन सा काम आप करेंगे। इससे आपके काम एक-दूसरे के आड़े नहीं आएँगे और आप सभी चीजों के साथ न्याय कर पाएँगे, साथ ही अपने लक्ष्य को भी उसमें अंकित करें और उसी के हिसाब से योजना बनाएँ। अगर टीम में काम कर रहे हैं, तो सभी के समय, लक्ष्य और काम पहले से तय करें और समय-समय पर उनका अवलोकन करते रहें।

* * *

सफल लोग अपने दिन की योजना दिन की शुरुआत के साथ ही बना लेते हैं कि किस काम को प्राथमिकता देनी है इसलिए वे लोग जल्दी उठते हैं। किसी भी मीटिंग में देर से नहीं जाते। समय की यही पाबंदी उन्हें बाकी लोगों से अलग करती है।

* * *

सिर्फ सोचने और योजना बनाने मात्र से ही लक्ष्य नहीं पाया जा सकता। उसके लिए परिश्रम करना पड़ता है, वह भी कठिन।

* * *

रचनात्मक कार्य

खाली समय को किसी रचनात्मक कार्य में लगाएँ। जीवन बहुमूल्य है, प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करें। सोचने में अपना बहुमूल्य समय व्यतीत न करें, स्वयं को प्रेरित करें।

* * *

रवैया

घर से बाहर पहला कदम रखने से पहले आपके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यही होती है कि अपने दिन का सामना करने के लिए आप किस रवैए को अपनाते हैं। नकारात्मक रवैया आपके दिन को बुरा, बहुत बुरा बना सकता है, लेकिन एक सकारात्मक रवैया आपके जीवन में अच्छे और महान् विचारों की वर्षा कर सकता है। इसीलिए घर से बाहर निकलने से पहले अपने रवैये को निश्चित कर लें, क्योंकि जितना अच्छा रवैया आप अपनाएँगे, उतना ही अच्छा आपका दिन बीतेगा।

* * *

रहस्य

आत्मविश्वास सफलता का प्रमुख रहस्य है।

* * *

जीवन में सफलता का रहस्य, हर आनेवाले अवसर के लिए तैयार रहना है।

* * *

राजा

जिस व्यक्ति ने अपना साहस, अपना चरित्र, अपना आत्मसम्मान या आत्मविश्वास नहीं खोया है, वह असफल नहीं हो सकता, वह अभी भी एक राजा है।

* * *

राह

कुछ लोग सफलता की राह देखते हैं और बाकी उठ खड़े हो उसके लिए जी-जान लगा देते हैं।

* * *

लक्ष्य

अधिकांश बड़े लक्ष्य हासिल न हो पाने का कारण यह है कि हम छोटी चीजों को पहले करने में अपना कीमती समय बिता देते हैं।

* * *

अपने घर के दीवार पर, जहाँ आप सोते हैं, वहाँ पर भी बड़े-बड़े अक्षरों में अपने लक्ष्य को लिखें। ज्यादातर व्यक्ति अपने लक्ष्य से इसलिए भटक जाते हैं, क्योंकि वे अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं। अगर आप अपने लक्ष्य को लिखा हुआ हमेशा देखते रहेंगे, तो आप हमेशा अपने लक्ष्य को याद करते रहेंगे और रास्ता भी नहीं भटकेंगे।

* * *

अपने लक्ष्य को सकारात्मक तरीके से निर्मित करना चाहिए, न कि नकारात्मक भाव से। लक्ष्य का उद्देश्य आपको गतिशील बनाए रखने, प्रेरित करने के लिए होना चाहिए। जब आप अपना लक्ष्य निर्धारित करें, तो यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि आप अपनी क्षमताओं व शक्तियों का पूरा उपयोग कर रहे हैं। लक्ष्य हासिल करने के लिए आपको अपनी क्षमताओं का भी पता होना चाहिए। ऐसे बहुत से लोग हैं, जो अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल ठीक ढंग से नहीं किया और अपने लक्ष्य को सीमित दायरे में ही रखा।

* * *

अपने लक्ष्य को सही दिशा दीजिए, मतलब एक योजना बनाइए कि कौन सा कार्य आपको पहले करना होगा और कौन सा उसके बाद। इसके साथ-साथ आप यह भी योजना बनाइए कि किसी कार्य को करने में क्या-क्या आवश्यकता होगी, और क्या आपके पास वे जरूरी संसाधन मौजूद हैं।

* * *

आप अपने जीवन में कुछ पाने के लिए कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर पाए हैं। शायद ऐसा इसलिए है, क्योंकि आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए सही तरीके से कोशिश नहीं कर रहे हों। कभी-कभी लोग अपने लक्ष्य को पाने के लिए कुछ छोटी-मोटी कोशिशें करते हैं और असफल होने पर अपने लक्ष्य को छोड़ देते हैं, पर असलियत में बात यह होती है कि हमने उस हद तक कोशिश नहीं की होती है, जो हमारे लक्ष्य को पाने के लिए सही है।

* * *

आपको अपने लक्ष्य पर और अपने आप पर अटूट विश्वास की जरूरत है। अगर आप यह विश्वास ही नहीं करेंगे कि आप अपने लक्ष्य तक पहुँच पाएँगे, तो आप कैसे रास्ता ढूँढ़ेंगे और लक्ष्य तक पहुँचेंगे, साथ ही अपने जीवन में सकारात्मक सोच लाएँ। अपनी सोच को ऊँचा करें, क्योंकि आप जितना बड़ा सोचेंगे, उतना बड़ा पाएँगे।

* * *

आपने कितने ही लक्ष्य क्यों न पूरे कर लिये हों, अपनी निगाह अगले लक्ष्य पर टिका लें। लगातार सफलता जरूरी है।

* * *

एक चीज को लक्ष्य बनाकर उस दिशा में प्रयत्न करना होता है। नियमित रूप से लगातार परिश्रम करना पड़ता है। हमारा मन भटकाने के लिए बहुत सारी चीजें सामने आएँगी, पर उन पर ध्यान न देते हुए पूरी एकाग्रता से किया हुआ परिश्रम ही व्यक्ति को सफलता दिला सकता है। कई बार व्यक्ति परिश्रम तो करता है, पर उसका श्रम बिखरा हुआ होता है। वह कुछ दिनों के लिए एक लक्ष्य पर काम करता है। कुछ दिनों बाद पुराने लक्ष्य से उसका मोह भंग हो जाता है और वह नया लक्ष्य बनाकर उस दिशा में काम करने लग जाता है। उसके कुछ दिनों बाद इस नए लक्ष्य से भी उसका मोह भंग हो जाता है। एक और नया लक्ष्य बनाकर उस पर काम करना शुरू कर देता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी काम पूरा नहीं कर पाता। उसका हर काम अधूरा छूट जाता है।

* * *

किसी काम में असफल होने पर भाग्य को दोषी न मानकर पूरी शक्ति व निष्ठा के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाइए। अपनी आँख सिर्फ अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखिए।

* * *

किसी खास मार्ग या काम में डटे रहने के लिए पहला कदम है, ऐसे फायदेमंद और कारगर लक्ष्य रखना, जिन्हें हम हासिल कर सकें। अगर मेहनत को रंग देना है, तो समझदारी से अपने लक्ष्य तय करने होंगे और पूरी मेहनत करनी होगी और हमेशा अपने लक्ष्य को ध्यान में रखना होगा, ठीक उसी तरह जैसे किसी दौड़ में धावक का पूरा-पूरा ध्यान अंतिम रेखा पर होता है।

* * *

जब यह बात अच्छी तरह समझ ली जाती है कि अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए कौन-कौन से जरूरी काम करने हैं, तब यह बात हमें अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखने में मदद देती है, और अगर हम बीच में नाकाम हो भी जाते हैं, तो यह हमें निराश होकर हार नहीं मानने देती, बल्कि यह हमें फिर से उस काम में लग जाने या जुट जाने में मदद करती है।

* * *

जीवन का लक्ष्य हमारे सामर्थ्य, इच्छाशक्ति और योग्यता पर आधारित होना चाहिए। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि आप यह तय करें कि आप किस रास्ते पर चलना चाहते हैं। उसके बाद यह सोचें कि किन साधनों से आप उस रास्ते पर चलते हुए अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं। जैसे-जैसे आप रास्ते पर आगे बढ़ते जाएँगे, आपके साधन भी बढ़ते जाएँगे। यदि आप असफलता की असहनीय वेदना से बचना चाहते हैं, तो सिर्फ लक्ष्य ही दिखाई देना चाहिए।

* * *

जीवन में एक लक्ष्य, एक ध्येय और एक कार्य का चुनाव सफलता की पहली माँग है। संसार के महान् कहे जानेवाले और सामान्य दर्जे के लोगों में एक यही अंतर रहा है। महान् बननेवाले अपने जीवन को एक दिशा में प्रेरितकर उसमें अपने आपको खपा देते हैं। दूसरी ओर सामान्य लोग कभी इधर, कभी उधर भटकते रहकर जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण सफलता अर्जित नहीं कर पाते।

* * *

निरंतर कार्य करते रहने से लक्ष्य प्राप्त करना आसान है और उस निरंतरता को बनाए रखना ज्यादा कठिन और अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। लक्ष्य प्राप्त करने का अर्थ यह नहीं कि हमारी जिम्मेदारियाँ पूर्ण हो गईं, बल्कि अब और बढ़ गईं, क्योंकि अब हमारा लक्ष्य उन जिम्मेदारियों और कर्तव्य को निभाना है, जो हमें लक्ष्य पूर्ण होने के दौरान मिली हैं, जिससे लक्ष्य की गरिमा को बनाए रखा जा सके। इस हेतु अपने ऊपर काम को सवार नहीं होने दिया जाए वरन् काम के ऊपर सवार रहें। कार्य करना, लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना एक स्वभाव बना लिया जाए।

* * *

बहुत से असफल लोग यह सोचते हैं कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिंदगी ही उन्हें कभी आकर्षित करेगी। ऐसे इनसान क्या करना चाहते हैं कि बजाय क्या कर रहे हैं, इस बात पर ज्यादा ध्यान देते हैं। यदि आप अपने लक्ष्य को रोज पुनर्स्थापित करते हैं, तो आपके लिए सबसे अच्छी बात यह होगी कि आप आसानी से उसे प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

यह हम पर निर्भर है कि हम अपने सपनों में किस ऊँचाई तक उड़ते हैं। यह भी हमें खुद ही सोचना है कि हम ढेर सारी चीजों को पाने की इच्छा में अपनी शक्ति खर्च करें या किसी एक लक्ष्य को पाने की इच्छा में अपनी पूरी शक्ति खर्च करें।

* * *

लक्ष्य उस समय निर्धारित हो जाना चाहिए, जब आपके सामने कई विकल्प खुले हों और उनमें से आपको कोई एक चुनना हो। उस क्षेत्र का चुनाव कर आगे बढ़ें। लक्ष्य का चुनाव करने में जल्दबाजी न करें, क्योंकि यह आपकी जिंदगी बदल सकता है।

* * *

लक्ष्य के प्रति समर्पित इनसान के लिए विफलता जैसी कोई चीज नहीं होती। अगर एक दिन में आप सौ बार गिरते हैं, तो इसका मतलब हुआ कि आपको सौ सबक मिल गए। अगर आप अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाएँ, तो आपका दिमाग भी उसी तरह सुनियोजित हो जाएगा। जब आपका दिमाग सुनियोजित रहेगा, तो आपकी भावनाएँ भी उसी के अनुसार रहेंगी, क्योंकि जैसी आपकी सोच होगी, वैसी ही आपकी भावनाएँ होंगी। एक बार जब आपकी सोच और आपकी भावनाएँ सुनियोजित हो जाएँगी, आपकी ऊर्जा की दिशा भी वही होगी और फिर आपका शरीर भी एक लय में आ जाएगा। जब ये चारों एक ही दिशा में बढ़ेंगे, तो लक्ष्य हासिल करने की आपकी क्षमता गजब की होगी। फिर कई मायनों में आप अपने भाग्य के रचयिता होंगे।

* * *

लक्ष्य निर्धारित करने के बाद इस काबिल बनें कि हम उसे साध सकें, इसके लिए निरंतर ज्ञान और अभ्यास की

आवश्यकता होगी। अपने आपको इस काबिल बनाए रखें कि लक्ष्य पाने की दौड़ में आप शामिल रहें, उस दौड़ से बाहर निकलने का कोई जोखिम न लें।

* * *

सफलता एक दिन में नहीं मिलती। कई बार कर्म एक पीढ़ी करती है और सफलता दूसरी पीढ़ी को मिलती है। जीवन चलने का नाम है। सभी आगे बढ़ना चाहते हैं, लेकिन कुछ ही लोग सफलता की सीढ़ी पर चढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। बाकी लोग बहुत नीचे की सीढ़ी तक सफर तय कर पाते हैं। अगर हमें जीवन में कुछ करना है, तो सबसे पहले उस लक्ष्य की कल्पना अपने मन में करनी होगी। तभी जाकर हम अपने लक्ष्य के नजदीक पहुँच सकते हैं।

* * *

सफलता की सीढ़ी बनाने के क्रम में पहला कदम होना चाहिए—अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना। लक्ष्य कुछ इस तरीके का हो, जो संभव हो। ऐसा नहीं कि एक दिन में करोड़पति बनना, हर दिन अंतरिक्ष में उड़ने जाऊँ या फिर कोई जादू हो जाए।

* * *

सफलता मिलेगी सटीक लक्ष्य से। जब तक आपके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं होगा, आप कभी सफल नहीं हो सकते।

* * *

सभी लक्ष्य पूरा होने में समय लेते हैं। यहाँ तक कि जब आप बहुत से कार्य एक साथ कर रहे हों, तो सामान्य चीजों को करने में भी समय लग सकता है, इसलिए आगे बढ़ने और उस बढ़त को बरकरार रखने के लिए धैर्य पहला गुण है, जिसकी आपको जरूरत है। जब आपका धैर्य कम होने लगे, तब आप यह याद कीजिए कि आपने क्या लक्ष्य निर्धारित किया है और यह भी कि जब आप उसे प्राप्त करेंगे, तो कैसा महसूस करेंगे। आप उसे प्राप्त करने की खुशी को महसूस करिए और अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ते रहिए।

* * *

सोचिए अगर आप लंदन जाना चाहते हैं, तो आप लंदन जाने के लिए रास्ता भी ढूँढ़ेंगे, पर अगर आपको कहाँ जाना है, पता ही नहीं है, आप कैसे जाएँगे? उसी प्रकार अगर आपको यह पता ही नहीं है कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है, आप उसे पाएँगे कैसे या वहाँ पहुँचेंगे कैसे?

* * *

लगन एवं उत्साह

अगर लगन से कुछ फायदा पाना है, तो हमें सही लक्ष्य रखना जरूरी है। कई लोग ऐसी-ऐसी चीजों के पीछे भागते हैं, जिनसे खुशी नहीं मिलती।

* * *

लगन लगाएँ। समस्याओं या नाकामी के बावजूद अपने मकसद, हालात या काम में दृढ़ता के साथ और मजबूती से टिके रहें। चाहे कितनी भी विपत्ति क्यों न आए, मगर हार माने बिना, दृढ़ता से अपने मकसद को पूरा करने का निश्चय करना और उस पर डटे रहना।

* * *

सफलता के रास्ते पर व्यक्ति की गाड़ी तभी तक पटरी पर चलती है, जब तक उसमें लगन एवं उत्साह हो। सफलता की पहली शर्त, पहला सूत्र यही है कि सफलता की ऐसी चाहत होनी चाहिए, जैसे जीवन के लिए प्राणवायु की। सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में निहित है।

* * *

लगनशीलता

अगर हम अपने उद्देश्य के प्रति लगनशील होंगे, तो अवश्य ही अपने लक्ष्य में सफल होंगे। कई बार हम देखते हैं कि हम पूर्व में उद्देश्य निर्धारित कर लेते हैं और आत्मविश्वास भी होता है और उद्देश्य-प्राप्ति हेतु कड़ी मेहनत नहीं करते, इस प्रकार हम असफल हो जाते हैं।

* * *

लोगों से जुड़ाव

सोचिए, आपकी एक कंपनी है, जहाँ पर आपके कर्मचारी काम करते हैं। यह तो जाहिर है कि उनकी रात-दिन की मेहनत के कारण ही आपकी कंपनी आगे बढ़ पाएगी। जब तक आप अपनी कंपनी के लोगों से जुड़े रहेंगे, सब सही-गलत और उनकी सुविधा-असुविधा को समझेंगे, तभी कर्मचारी सही तरीके से कार्य करेंगे और आपकी कंपनी सफलता के शिखर पर पहुँच पाएगी।

* * *

वक्त

अभी वक्त अच्छा है, इसका आनंद लें, लेकिन वक्त बदलता है, यह हमेशा अच्छा नहीं रहेगा। वक्त बुरा है, चिंता न करें, क्योंकि यह भी सदा के लिए नहीं रहेगा। यह सोचकर हँसना और जीवन का आनंद लेना बंद न करें कि जीवन आसान नहीं है।

* * *

विगत

यह कहना कठिन होता है कि असंभव क्या है, क्योंकि विगत का स्वप्न आज की आशा और कल की वास्तविकता होती है।

* * *

विचार

आपकी कार्यकुशलता आपके सोच पर ही निर्भर करती है। इच्छापूर्ति के लिए उत्साह तथा परिश्रम से कार्य करने पर ही आपकी जीत का मार्ग प्रशस्त होगा। नकारात्मक विचार तथा सोच आपको हतोत्साहित करेंगे, आप निष्क्रिय होकर अकर्मण्यता से कार्य करेंगे। इस स्थिति में आप कुछ भी परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते।

* * *

कई लोग सिर्फ विचारों में ही जीते हैं और कुछ भी बड़ा काम नहीं कर पाते। ऐसे लोग योजना बनाने में माहिर होते हैं, पर उन्हें साकार करने में तनिक भी मेहनत नहीं करते। कई बार व्यक्ति यह भी सोचता है कि कुछ बड़ा करने के चक्कर में उससे गलती हो सकती है। इससे उसकी छवि खराब हो सकती है। इसलिए इनसान कुछ भी नया करने से बचता है। हर व्यक्ति रचनात्मक होता है। वह सफलता प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इसके लिए उसे अपने मन में बैठी झिझक को दूर करना चाहिए। झिझक दूर होने पर वह तेजी से सफलता की ओर

बढ़ सकता है।

* * *

कई लोगों को केवल अपने ही विचार पसंद आते हैं। यह लक्षण भेद-भाव और टीमवर्क की कद्र न करनेवालों के हैं। ऐसे लोग कभी यह नहीं चाहते कि कोई और व्यक्ति भी सफलता हासिल करे। कोई कंपनी सिर्फ एक व्यक्ति के विचारों को अपनाती रहे, तो क्या वह तरक्की कर पाएगी?

* * *

चलो जादू की बात करते हैं। जादू में क्या होता है? कोई काम, जो संभव नहीं दिखता, लेकिन जादूगर उसे संभव कर दिखाता है। जब इनसान कोई विचार अपने मन में बार-बार सोचता है, तो धीरे-धीरे वह उसका संकल्प बन जाता है, फिर वही संकल्प एक दिन कार्य रूप में परिणत हो जाता है। सफल व्यक्ति के मन में भी सफलता के विचार होते हैं। उनकी सोच और संकल्प उन्हें उसी दिशा में प्रेरित करते हैं।

* * *

नए विचार नई क्रांति को जन्म देते हैं। नए विचार नई योजनाओं के वाहक और सफलता की धुरी होते हैं।

* * *

विचार व्यक्ति को बना देते हैं या तोड़ देते हैं। महान् धर्मगुरुओं द्वारा ब्रह्मांड, ब्रह्मांडीय मस्तिष्क को सोच द्वारा सृजित किया गया है। यह ब्रह्मांडीय मस्तिष्क सूचनाओं का महाराजपथ है, जो सभी मानव मस्तिष्कों को एक साथ जोड़ता है। हम काफी हद तक दूसरों द्वारा समाचार-पत्र, चलचित्र, रेडियो और आकस्मिक भेंट-मुलाकातों के दौरान एक छोटे से विचार के माध्यम से भी एक अलग साँचे में ढाल दिए जाते हैं।

* * *

विचारों में चुंबकीय शक्ति होती है। जैसे ही आप खुद को बताते हैं कि 'मैं हार गया हूँ। मैं इस समस्या से नहीं जीत सकता।' आप नकारात्मक विचारों को आकर्षित करते हैं और इनमें से प्रत्येक विचार आपको यह विश्वास दिलाता है कि आप सही हैं कि आप वास्तव में हार चुके हैं। इसके बजाय यह विचार करें, 'इस समस्या को सुलझाने का कोई तो रास्ता होगा।' और तत्काल सकारात्मक विचार आने लगेंगे, जिससे आपको समस्या सुलझाने में मदद मिलेगी। 'कोई न कोई तरीका तो है' यह सोचना, यह विश्वास करना सचमुच महत्त्वपूर्ण है।

* * *

व्यक्ति किसी भी कार्य के पहले उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करता है। आनेवाली कठिनाई का निराकरण खोज निकालता है, आवश्यक साधन जुटा लेता है, तब पूर्ण तत्परता व लगन के साथ कार्य में प्रवृत्त होता है, जिससे बड़ी-बड़ी परिस्थितियाँ भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पातीं। सफलता ऐसे ही व्यक्ति पाया करते हैं।

* * *

विचारधारा

हमेशा सकारात्मक विचारधारा अपनाएँ, आशावादी बनें, क्योंकि निराशावादी विचारधारा ही इनसान को कुंठित कर असफलता की ओर धकेलती जाती है।

* * *

विचारों का मूल्य

परिस्थितियों के आदर्श होने का इंतजार न करें। वे कभी आदर्श नहीं होंगी। भविष्य की बाधाओं और कठिनाइयों

की उम्मीद करें और जब वे आएँ, तब आप उन्हें सुलझाने का तरीका खोंजे। याद रखें, केवल विचारों से सफलता नहीं मिलती, विचारों का मूल्य तभी है, जब आप उन पर अमल करें।

* * *

विनम्रता

जीवन में विनम्रता के बिना कोई भी व्यक्ति सफल नहीं बन सकता। सफलता के लिए हमें हमेशा कुछ-न-कुछ सीखने की चाह रखनी चाहिए। अगर आप अपनी इस बात पर डटे रहेंगे कि आपसे ज्यादा होशियार और चालाक दुनिया में कोई नहीं है, तो आप गलत हैं। मृत शरीर हमेशा तना हुआ रहता है और झुका हुआ इनसान बहुत ही विनम्र भाववाला होता है।

* * *

विफलता

अधिकतर महान् लोगों ने अपनी सबसे बड़ी सफलता अपनी सबसे बड़ी विफलता के एक कदम आगे हासिल की है।

* * *

विलक्षण शक्ति

सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

* * *

विश्वास

असल में सफल लोग अपने निरंतर विश्वास से जीतते हैं, लेकिन वे असफलताओं का मुकाबला भी उसी विश्वास से करते हैं।

* * *

जिन्हें अपने आप पर विश्वास नहीं, वे कभी सफल नहीं हो सकते।

* * *

मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है, जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है।

* * *

यह मत सोचिए कि यह कार्य आपके वश का नहीं या जो बात आप सोच रहे हैं, वह असंभव है। व्यक्ति के हृदय में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि मैं मार्ग की खोज कर लूँगा अथवा अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करूँगा।

* * *

सफलता के लिए विश्वास पैदा कीजिए। असफल होने पर भी उस विश्वास को कायम रखिए।

* * *

व्यक्तित्व

अपने जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों को सँभालने के लिए हमें अलग-अलग किरदार निभाने पड़ते हैं। अगर आप ऐसा बखूबी कर सकें, तो आप बिना किसी दिक्कत के अपनी हर जिम्मेदारी आसानी से निभा सकेंगे, लेकिन अधिकतर लोगों का व्यक्तित्व चट्टान की तरह होता है, जो हमेशा उन पर हावी रहता है।

* * *

व्यवहार

सफलता और असफलता में सिर्फ इस बात का फर्क है कि असफलता से होनेवाली निराशा से भरी स्थितियाँ और हतोत्साहित करनेवाली बातों के प्रति हमारा रवैया क्या होता है यानी हम असफलता के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

* * *

व्यापक दृष्टिकोण

सिद्धांतत: जीवन में वही सबसे अधिक सफल व्यक्ति है, जो सबसे अधिक जानकार है। जो क्षेत्र हमारी दृष्टि परिधि में होता है, हम साधारणत: उसी के प्रति सचेत एवं जागरूक होते हैं। यही बात हमारे दृष्टिकोण या नजरिए के बारे में भी सत्य है। हमारा कार्यक्षेत्र एवं नियंत्रण क्षेत्र बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाएँ। अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाने का तरीका है—अपने आँख-कान खोलकर रखना, बुद्धि को सूक्ष्म और हृदय को विशाल बनाना। अँधेरे में रास्ता दिखाने हेतु एक दीपक पर्याप्त होता है। आशावाद के जहाज पर चढ़कर हम मुसीबतों एवं समस्याओं के तूफानों से उफनते असफलताओं के महासागर को भी पार कर सकते हैं।

* * *

व्यावहारिक महत्त्व

जीवन के आरंभ में ही कुछ असफलताएँ मिल जाने का बहुत अधिक व्यावहारिक महत्त्व है।

* * *

शक्ति और योग्यता

अपने को दुर्बल समझने की भावना वास्तव में सच नहीं होती। यह तो मन की एक बीमारी है, जिसके भयंकर परिणाम होते हैं। उसे अपनी शक्ति का पता ही नहीं है। उसने बिना अपने आपको तौले यह समझ रखा है कि वह शक्तिहीन है, बदकिस्मत है। जरा सोचिए कि कोई भी व्यक्ति बदकिस्मती के चक्रव्यूह से कैसे निकल सकता है, जब तक कि उसे स्वयं ही विश्वास न हो कि वह इससे निकल भी सकता है।

* * *

जीवन में हर काम सोच-समझकर अपनी शक्ति और योग्यतानुसार ही चुनें और उसे पूर्ण करके ही दम लें, चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हो।

* * *

शब्दकोश

हमारा जीवन शब्दकोश के शब्दों की तरह है। इन शब्दों में से बहुत से शब्दों की हमें जानकारी नहीं होती और यदि होती भी है, तो हम अपने जीवन में बहुत से शब्दों का इस्तेमाल ही नहीं करते। अत: यह समझ लें कि जितना अधिक शब्दों का प्रयोग आप करेंगे, उतने ही आप सफल कहलाएँगे।

* * *

शिकायत

दूसरों की शिकायत करनेवाला व्यक्ति हमेशा अशांत बना रहता है और कभी भी सफल नहीं हो पाता। सफलता

और शांति पाने के लिए बेहतर है कि स्वयं को बदलें।

* * *

शिक्षा

अर्धज्ञान या अपर्याप्त शिक्षा से कोई भी व्यक्ति सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। आपका अनुभव और ज्ञान ही सफलता का पहला कदम है। इसके बिना तो आप अपनी सफलता के लिए यात्रा शुरू ही नहीं कर सकते। पहले अपनी शिक्षा पूरी करें, अपने विषय पर पूरी तरह से अपना अधिकार होने के बाद ही अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें।

* * *

शुरुआत

हालाँकि कोई भी व्यक्ति अतीत में जाकर नई शुरुआत नहीं कर सकता है, लेकिन कोई भी व्यक्ति अभी शुरुआत कर सकता है और एक नया अंत प्राप्त कर सकता है।

* * *

संकल्प

तमाम कोशिशों के बाद मनचाहे परिणाम न मिलने या अपेक्षा पूरा न होने पर भी लक्ष्य से न भटकें और न उसे छोड़ने का विचार करें, बल्कि मजबूत संकल्प और दोगुनी मेहनत के साथ उसे पाने में जुट जाएँ।

* * *

संघर्ष

जब तक आप सफल होने के लिए जीवन-मृत्यु जैसा तीव्र संघर्ष नहीं करेंगे, तब तक सफल नहीं हो पाएँगे अर्थात् सफलता पाने के लिए तन, मन और पूरी ईमानदारी से संघर्ष करना होगा। सफल होने का यही एकमात्र रहस्य है और कुछ नहीं।

* * *

एक प्रेरक कहावत है—संघर्ष से सफलता। यह वाक्य हमें बड़ी शक्ति देता है, जिंदगी में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जीवन में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं और कभी-कभी तो इतने अप्रत्याशित ढंग से कि सँभलने का भी मौका नहीं मिलता। यही तो जीवन की ठोकरें हैं, जिन्हें खाकर ही हम सँभलना सीख सकते हैं। उनसे बचने की कोशिश तो करनी है, पर ठोकर कहते ही उसे हैं, जो सावधानी के बाद भी लगती है और आखिर एक नई सीख भी दे जाती है।

* * *

हर सफलता के लिए संघर्ष की जरूरत होती हैं। धैर्य रखें, सकारात्मक रहें।

* * *

संप्रेषण क्षमता

दुनिया के तमाम शोधों ने यह साबित कर दिया है कि किसी भी व्यक्ति की सफलता में पचास प्रतिशत हिस्सा उसकी संप्रेषण क्षमता का होता है। आपके पास कितनी ही योग्यता, ज्ञान और अनुभव हो, लेकिन इन सबको अभिव्यक्त करने की क्षमता आप में यदि नहीं है, तो आप सफलता का स्वाद कभी चख ही नहीं सकते।

* * *

संभव

संभव की सीमाओं को जानने का एक ही तरीका है कि उनसे थोड़ा आगे असंभव के दायरे में निकल जाइए।

* * *

सँभलना

व्यक्ति जब गिरकर उठना सीख लेता है, वहीं से उसे सफलता का गुरु मंत्र मिल जाता है और वह एक पग पीछे नहीं, अपितु आगे बढ़ता है। गिरकर सँभलना भी सफल व्यक्ति का एक गुण है।

* * *

संभावना

जब तक किसी व्यक्ति द्वारा अपनी संभावनाओं से अधिक कार्य नहीं किया जाता है, तब तक उस व्यक्ति द्वारा वह सबकुछ नहीं किया जा सकेगा, जो वह कर सकता है।

* * *

जीवन संभावनाओं से भरा है। जीवन में संभावनाओं को कभी भी नहीं नकारना चाहिए। हो सकता है कल तक आपको जिस काम को करने में दिक्कत आती थी, आज वह उतना मुश्किल न लगे, आप उसे आसानी से कर सकें। ऐसी ही बहुत सारी बातें, हालात, चीजें या लोग हमें पसंद नहीं होते और ये सब हमारी सफलता की राह में रोड़ा बन जाते हैं।

* * *

संयम

जब भी कोई काम न बनें, मन टूट जाए, असफलता सामने आ जाए, तो उस समय अपने मन और मस्तिष्क को एकदम स्थिर रखें। स्वयं को शांत रखें। उस समय बौखला जाने या उदासीन होकर अथवा निराश बैठ जाने से काम तो नहीं बनेगा। संयम से काम लें। इस बात को तय कर लें कि जो हो गया है, अब उसको बदला नहीं जा सकता।

* * *

संवाद

अगर आपको सफलता प्राप्त करनी है, तो आपको लोगों के सामने खड़े होकर उनका तथा उनके प्रश्नों का उत्तर देना होगा। लोगों के सामने अपने सुझावों तथा विचारों को रखने से उनके और आपके बीच एक नेटवर्क बनता है। एक अच्छा नेटवर्क या लोगों से लोगों का संवाद सफलता पाने के लिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि इस तरह आप अपनी बात को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

* * *

सकारात्मक सोच

कार्य के प्रतिकूल परिणाम आने पर भी हिम्मत व हौसला न छोड़ें। सकारात्मक सोच एवं नजरिए से आपकी भावनाएँ भी सकारात्मक होंगी और सकारात्मक कदम उठाने में भी सक्षम बनेंगे। सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए नियमित रूप से ध्यान लगाएँ, सकारात्मक सोच बढ़ानेवाला साहित्य पढ़ें तथा ऐसे लोगों की संगत करें, जो आपको सदैव प्रोत्साहित करें।

* * *

चीन की एक नीति-कथा है। उत्तरी चीन में एक बुजुर्ग रहता था, जो उत्तरी पहाड़ का महामूर्ख कहलाता था।

उसके घर के सामने दो बड़े पहाड़ थे। आने-जाने में बाधा थी। सो, उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और उनके हाथों में फावड़ा थमाकर, दृढ़ता से दोनों पहाड़ों को काटना आरंभ कर दिया। उन्हें देखकर कस्बे के लोगों ने उनकी खिल्ली उड़ाई, ''तुम सचमुच महामूर्ख हो! इन बड़े-बड़े पहाड़ों को खोदना तुम बाप-बेटों के बस से बाहर है।'' कथित मूर्ख बुजुर्ग ने कहा, ''मेरी मृत्यु के बाद मेरे बेटे यह कार्य जारी रखेंगे, बेटों के बाद पोते और पोतों के बाद परपोते। इस प्रकार, पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहाड़ काटने का सिलसिला जारी रहेगा।'' उसने आगे जोड़ा, ''हालाँकि पहाड़ बहुत ऊँचे हैं, लेकिन हमारे इरादों और हौसलों से अधिक ऊँचे तो नहीं हो सकते। हम निरंतर उन्हें जितना खोदते जाएँगे, वे उतने ही छोटे होते जाएँगे।'' सुनकर लोग दंग रह गए कि जिसे वे महामूर्ख समझते थे, उसने सफलता के मूलमंत्र का रहस्य बता दिया। दृढ संकल्प, कड़ी मेहनत, लगन के साथ-साथ सकारात्मक सोच के जरिए ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

* * *

सकारात्मकता

ज्यादातर लोग जीवन में घटित केवल बुरी घटनाओं पर चिंतन करते हैं, सकारात्मक घटनाओं में खुद का योगदान नहीं मानते। ऐसे लोगों के मन में यह चीज घर कर जाती है कि बुराई अच्छाई से ज्यादा बलवान है और वे हमेशा बुराई से डरते हैं। आपको रास्ते में पड़ी हर रस्सी को साँप समझने की भूल से बचना होगा। सकारात्मक बनिए, अच्छे की कल्पना कीजिए। जब तक डर सामने आकर खड़ा न हो जाए, तक मन को मजबूत रखिए और कोशिश करते रहिए।

* * *

सफल इनसान

सफल इनसान हमेशा ही नए-नए विचारों और उपायों के साथ आते हैं, ताकि उन्हें उनका ज्यादा-से-ज्यादा लाभ मिल सके। सफल इनसान वे कहलाते हैं, जिनके पास मुसीबतों का सामना करने के श्रेष्ठ उपाय होते हैं, ताकि वे दूसरों की भी सहायता कर सकें और इसका श्रेय वे खुद नहीं लेते, बल्कि दूसरों को भी देते हैं। वे अपने कामों पर तो पूरा ध्यान देते ही हैं, लेकिन साथ ही दूसरों को विकसित करने में भी लगे रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए अपने साथ-साथ अपने सहकर्मियों का विकास भी जरूरी होता है।

* * *

सफल लोगों को अपने जीवन में अनेक किरदार निभाने पड़ते हैं। उनका व्यक्तित्व नरम व लचीला होता है। हमें अपने दिमाग को खुला रखना चाहिए और तथ्यों को कसौटी पर परखकर ही फैसला लेना चाहिए। कल जो नुकसान था, वह आज फायदा बन सकता है। बस जरूरत है भावनाओं को अलग करके सोचने की।

* * *

सफल व्यक्ति का लक्ष्य सफलता पाने के बाद ही खत्म होता है। जब हमें जीवन के कड़वे अनुभव होते हैं या हमें निराशा घेर लेती है, उस समय हो सकता है कि हम विचलित हो जाएँ, पर ये सब जिंदगी के अनुभव हैं, जो किसी शिक्षक की तरह आपकी जिंदगी को तराशकर हीरा बनाने का काम करते हैं। आपको सिखाते हैं कि जिंदगी में मुश्किलों का सामना कैसे किया जाए। उन मुश्किलों से लड़ने का साहस दिलाते हैं। फिर जब हम अपने आपको आँकते हैं, तो पाते हैं कि हमारी क्षमता और भी बढ़ गई है। जीवन में हम और भी बड़ी सफलता हासिल कर सकते हैं। असफलता हमें निखारने का काम करती है।

* * *

सफल होने के लिए असफलता आवश्यक है, ताकि आपको यह पता चल सके कि अगली बार क्या नहीं करना है।

* * *

सफलता का आनंद

जो व्यक्ति अपने काम का हिसाब-किताब देखकर, उसका बोझा ढोते हुए चलता है, वह बीच में ही चकनाचूर हो जाता है। सफलता तक नहीं पहुँच पाता। कदाचित् वह सफल भी हो जाए, तो उस समय इतना थका हुआ होता है कि सफलता का आनंद नहीं ले पाता। अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी अपने आनंद, विश्राम एवं शांति को तिरोहित न होने दिया जाए।

* * *

सफलता की कसौटी

व्यक्ति के पास काम, दाम, नाम, सम्मान और कमान, ये सभी हों, उसे सफल कहा जा सकता है। सफल का अर्थ है—सफल = फल सहित, अर्थात् उपलब्धि सहित, महत्त्व सहित। सफलता का अर्थ डिग्री पाना, नौकरी लगना, पैसा कमाना मात्र नहीं है। व्यक्ति की सामाजिक हैसियत एवं उपयोगिता भी उसकी सफलता की कसौटी है। इस बात को यूँ भी कहा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति सफल होना चाहता है, तो उसका उपर्युक्त पाँच उपलब्धियों पर अधिकार होना चाहिए।

* * *

सफलता की चाबी

अगर आपको जिंदगी में कभी असफलता नहीं मिली, तो इसका मतलब है कि आपने कभी कोई नया काम नहीं किया। असफलता ही सफलता की चाबी है। इसके बिना आप सफलता के द्वार नहीं खोल सकते। अगर आप भी कभी असफल हुए हैं, तो खुशी की बात है कि आपने दूसरों से कुछ अलग करने की ठानी है।

* * *

सफलता की परिभाषा

किसी दूसरे द्वारा रचित सफलता की परिभाषा को अपना न समझें।

* * *

सफलता के मोती

सफलता के मोती यूँ ही धूल में बिखरे हुए नहीं पड़े हैं। उन्हें पाने के लिए गहराई में उतरने की हिम्मत जुटानी होगी, बहुत ज्यादा कठोर परिश्रम करने और हमेशा करते रहने की शपथ लेनी होगी।

* * *

सफलता के सूत्र

सफलता पाने और प्राप्त सफलता को लंबे समय तक बनाए रखने के सूत्र हैं—उद्यम, संयम, दक्षता, धैर्य, सावधानी, स्मृति और सोच-विचार। सफलता पाने की जल्दबाजी या बेचैनी में कई लोग आसान और छोटे रास्ते या तरीकों को चुन तो लेते हैं, लेकिन इससे मनचाही और स्थायी सफलता नहीं पाई जा सकती। इससे व्यक्ति निराशा के दौर में पहुँच जाता है।

* * *

सफलता

हम जो चाहते हैं, उसे पा सकें, यही सफलता है। इस सफलता को पाकर, जो सुख की अनुभूति होती है, वह अवर्णनीय है।

* * *

सफलता-असफलता

सफलता को कभी अपने सिर पर न चढ़ने दें और असफलता को कभी दिल में न उतरने दें।

* * *

सबक

कभी-कभी जिंदगी कुछ दरवाजे इसलिए बंद कर देती है, क्योंकि यह समय आगे बढ़ने का होता है। देखा जाए, तो यह अच्छा भी है, क्योंकि जब तक हालात दबाव न डालें, हम आगे नहीं बढ़ते। जब समय कठिन हो, तो याद रखें कि कोई भी दर्द बिना उद्देश्य के नहीं होता है। जिससे चोट लगी, उसे नजरअंदाज कर दें, लेकिन इससे जो सबक मिला, उसे कभी न भूलें।

* * *

कुछ विफलता आनी ही आनी है, हमारे जीवन में और हमारे बच्चों के जीवन में। अपने बच्चों को ऐसे जीवन कौशलों से सुसज्जित करना, जिनकी मदद से वे नाकाम होने की स्थिति में उनका इस्तेमाल अपने बारे में ज्यादा गहरी समझ बनाने में कर सकें और परिस्थिति से नए सबक हासिल कर सकें, यह एक अनमोल उपहार होगा, जो हम उन्हें दे सकते हैं—किसी बड़े-से-बड़े बैंक बैलेंस से भी ज्यादा कीमती होगा यह उपहार। यह उन्हें लचीलेपन की अहमियत सिखाएगा—बुरे मौकों का सामना कर पाना और विपरीत स्थितियों को खुद पर हावी न होने देना सिखाएगा। जितना जल्दी वे जीवन के इस सबक को सीख लें, उतना ही उनके लिए अच्छा रहेगा।

* * *

समय का महत्त्व

सफलता पाने के लिए समय का महत्त्व समझें। उसका एक-एक पल उपयोग में लाएँ। एक से अधिक लक्ष्य होने पर प्राथमिकता के अनुसार उन्हें निश्चित करें और निष्ठा व लगनपूर्वक हर लक्ष्य की ओर बढ़ें।

* * *

सफलता प्राप्त कर चुके लोग, यह जानते हैं कि समय का उनके जीवन में बहुत महत्त्व है, इसीलिए उन्हें जरा भी समय व्यर्थ गँवाना पसंद नहीं होता। जब कभी भी उन्हें उनके द्वारा की गई गलती का अहसास होता है, तो वे तुरंत उसकी जिम्मेदारी लेते हुए अपनी गलती को सुधारने की कोशिश करने लगते हैं। वे सिर्फ अपनी जिम्मेदारियाँ ही साथ लेकर नहीं चलते, बल्कि दूसरों की जिम्मेदारियों को भी समझते हैं।

* * *

समय की बरबादी

बेकार गपशप का हिस्सा बनकर समय की बरबादी न करें, क्योंकि आप जानते हैं कि आपको क्या करना है, इसलिए गपशप का हिस्सा बना कर समय खराब करना कोई समझदारी नहीं है। जो किसी और के बारे में बात करता है, जाहिर सी बात है, आपके बारे में भी बात करता ही होगा। सफल लोग खुलकर बात करते हैं। दूसरों की

चर्चा में समय बरबाद करना एक बड़े स्तर की बेवकूफी है।

* * *

समय धन से अधिक मूल्यवान होता है, अत: आपको धन के साथ-ही-साथ समय का भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसा इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि धन को आप खोने के बाद भी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन यदि एक बार समय को खो दिया, तो उसे किसी भी कीमत पर प्राप्त नहीं किया जा सकता।

* * *

समाधान

यदि आप सफल होना चाहते हैं, तो अपना ध्यान समस्या खोजने में नहीं, समाधान खोजने में लगाइए।

* * *

सफल इनसान हमेशा ही कुछ अलग करते हैं और ऐसा करने का उनके पास सबसे अच्छा रास्ता यही होता है कि वे सही प्रश्न पूछें, क्योंकि लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग पर चलते समय कई प्रश्न आपके दिमाग में उपस्थित होते हैं और उनका समाधान आपको तभी मिलेगा, जब आप सही प्रश्न पूछेंगे। इसी से आपको पता चल सकता है कि आप कहाँ जा रहे हैं और कैसे और ज्यादा अपने आपमें बदलाव ला सकते हैं।

* * *

सफलता प्राप्त करनेवाले इनसान अपने काम और समय को लेकर अति सक्रिय होते हैं। उनका हर दिन क्या जरूरी और महत्त्वपूर्ण है, उसे करने से शुरू होता है। वे कभी भी मुश्किलों को अपने लक्ष्य के रास्ते की बाधा नहीं बनने देते और इसी तरह वे प्रतिक्रियात्मक भी बन सकते हैं। ऐसे लोग खुद को दूसरे स्थान पर रखने की बजाय पहले स्थान पर रखते हैं, क्योंकि वे हमेशा ही जानते हैं कि ऐसा करने से ऊँचे पद पर रहते हुए वे लोगों की सहायता कर सकते हैं, साथ ही जितने भी लोग उनके साथ काम करते हैं, उन सबकी भी समस्याओं का समाधान ऐसे लोग करते हैं।

* * *

सरल मार्ग

इतना तो स्पष्ट है कि सफलता की इच्छा करना तो आसान है, पर सफलता के लिए जो तैयारी करनी पड़ती है, वह आसान नहीं होती, इसलिए बहुत कम लोगों में उस तैयारी की इच्छा होती है। लोग परिश्रम की कठिन राह से गुजरना नहीं चाहते। वे सरल मार्ग ढूँढ़ते रहते हैं। सरल मार्ग ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पूरा जीवन बीत जाता है। ऐसे लोगों को न सरल मार्ग मिलता है, न सफलता। परिश्रम से बचने के कितने तरीके ढूँढ़े जाते हैं, पर उनमें से कोई तरीका ऐसा नहीं, जो सफलता की ओर ले जा सके।

* * *

सलाह

आप अपने जीवन में कुछ अच्छे और सफल इनसानों का चुनाव करें, जिनके बारे में आप सबकुछ जानते हों, या जो आपको दिल से चाहते हों या जिनकी आपमें रुचि है और उन्हीं की सलाह, उनके द्वारा बताए गए उपायों पर चलने की कोशिश करें। ऐसा करने से ही आपमें आंतरिक और शारीरिक बदलाव होगा और आपके प्रदर्शन में भी सुधार आएगा।

* * *

किसी कार्य को करने के संदर्भ में अपने सहयोगियों या सीनियर्स से सलाह लेने में अगर आप संकोच करते हैं, तो आपका यह रवैया ठीक नहीं कहलाएगा। अगर किसी कार्य के संदर्भ में आपको कोई बात समझ नहीं आ रही है या आपके मन में दुविधा उत्पन्न हो रही है, तो बेहतर यही होगा कि आप अपने साथियों से सलाह-मशवरा करें। हालाँकि इस संदर्भ में यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि सलाह हमेशा ऐसे लोगों से लें, जो सही सलाह देते हों। नकारात्मक विचारोंवाले लोगों से सलाह लेने से बचें।

* * *

बहुत से लोग इस बात से नफरत करते हैं कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके जवाब में लोग उन्हें गलत बोलें और कुछ नया करने की सलाह दें। दूसरों की सलाह को स्वीकार करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यदि आप यह निर्णय ले लेते हैं कि आप उनकी सलाह को सुनेंगे और अपने कार्य में सुधार की कोशिश करेंगे, तो आपका प्रदर्शन और भी ज्यादा अच्छा होने लगेगा।

* * *

सहायता

कभी किसी को मायूस न करें और सभी के लिए दयालु रहें। सभी की सहायता करें। अपने दिल से नफरत को निकाल दें, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करें और धरती पर हरेक प्राणी के साथ प्यार से रहें। आलोचनाओं से दूर ही रहें। कभी किसी का बुरा न चाहें। हमेशा अच्छे विचारों को ही दिमाग में आने दें।

* * *

साथ

अगर आप लोगों से दोस्ती नहीं कर सकते, तो उनसे जुड़ नहीं सकते। जीवन में कोई भी व्यक्ति अकेला ही सफल नहीं बन सकता। वह बहुत सारे व्यक्तियों को साथ लेकर ही सफल बनता है।

* * *

सामंजस्य

लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना सफलता का एक अति महत्त्वपूर्ण सूत्र है।

* * *

सामना

यदि आप छत्ते से शहद खाना चाहते हैं, तो आपको इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि मधुमक्खियाँ आपको जरूर डंक मारेंगी। मतलब यह कि यदि आप कोई अच्छा कार्य करना चाहते हैं या सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको रास्ते में पड़नेवाली परेशानियों और कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि आप तैयार हैं, तो कदम बढ़ा दीजिए।

* * *

साहस

सफलता कभी अंतिम नहीं होती, विफलता कभी घातक नहीं होती। जो मायने रखता है, वह है—साहस।

* * *

सीख

असफलता को आप किस तरह से लेते हैं, यह आप पर निर्भर करता है, क्योंकि हर असफलता आपको कुछ

सिखाती है। असफलता में राह में मिलनेवाली सीख को समझकर जो आगे बढ़ता जाता है, वह सफलता को पा लेता है। सफलता के लिए जितना जरूरी लक्ष्य और योजना है, उतना ही जरूरी असफलता का सामना करने की ताकत भी।

* * *

जिस व्यक्ति में ताउम्र सीखने की चाह होती है, सफलता उसके कदम चूमती है। सीखने की चाह ही कुछ करने में सहायक होती है और सीखनेवाला व्यक्ति ही वक्त के साथ कदम बढ़ा सकता है।

* * *

बच्चे उसी से सीखते हैं, जो वे देखते हैं और अनुभव करते हैं, उससे नहीं जो हम कहते हैं या जिस पर चीखते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि वे सफलता और विफलता के आस-पास जीवन के सबक हमारे ही तरीके से सीखेंगे कि हम कैसे अभिभावक के रूप में सफलता और विफलता का अपने लिए अनुभव करते हैं और कैसे उनका सामना करते हैं। उन्हें यह देखने की जरूरत है कि हम विफलता को कैसे स्वीकार करते हैं। उन्हें हमें अपनी नाकामियों से सीखते हुए देखना चाहिए। उन्हें हमें गिरते हुए और फिर तेजी से खड़े होते हुए भी देखना चाहिए—नई ऊँचाइयों की ओर, बेशक कभी-कभी फिर से गिर जाने के लिए भी। उन्हें यह भी देखना चाहिए कि कैसे हम कुछ मामलों में सफल रहते हैं और सफलता पर सहज बने रहते हैं। उन्हें देखना चाहिए कि हम सफलता की खुशी का कैसा अनुभव करते हैं।

* * *

याद रखें, दर्द दो तरह के होते हैं—एक, जो आपको चोट पहुँचाता है और दूसरा, जो आपको बदलता है। दोनों ही सिखाते हैं।

* * *

सीखना

गलतियों से न सीखना ही एकमात्र सबसे बड़ी गलती होती है।

* * *

नई तकनीकी सीखने के लिए स्वयं को तैयार रखिए। कभी यह मत सोचिए कि आपको सब आता है। यह आपका अहंकार है, जो आपको सफल बनने से रोक सकता है।

* * *

सफलता के अवसरों को भुनाने व जल्दी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए किसी भी कार्य या कला में कुशलता या महारत बड़ी मददगार होती है, इसलिए बिना अहंकार के सीखने की जिज्ञासा बनाए रखें।

* * *

सीखने की प्रक्रिया कभी बंद नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यही आपको अनुभव और संतुष्टि देती है। अपनी असफलताओं से भी सबक लें। दरअसल यही बताती हैं कि कमी कहाँ है, जरूरत किस बात की है और आपसे क्या गलती हुई है।

* * *

सीढ़ी

अपनी असफलताओं को खुद पर हावी मत होने दो, बल्कि असफलताओं को ही अपनी सफलता की सीढ़ी के

रूप में इस्तेमाल करो।

* * *

आप सफलता की सीढ़ी असफलता के कपड़े पहनकर नहीं चढ़ सकते।
महापुरुषों ने असफलता को ही सफलता की सीढ़ी बताया है।

* * *

सफलता के लिए कोई लिफ्ट नहीं जाती, इसलिए सीढ़ियों से ही जाना पड़ेगा।

* * *

सुअवसर

कार्य के चुनाव के लिए अपनी रुचि और पसंद को स्थान देना ठीक है, किंतु फिर भी अनुभवहीनता एवं अज्ञान की स्थिति में व्यक्ति की रुचि और पसंद का दायरा बहुत ही सीमित और संकीर्ण रहता है। ऐसी स्थिति में कई व्यक्ति जीवन में आनेवाले कई सुअवसरों को अपनी रुचि का विषय न समझकर टाल देते हैं। हालाँकि दृढ निश्चयी व्यक्ति इन अवसरों से लाभ उठाकर बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

* * *

सफलता-प्राप्ति के लिए व्यक्ति को सतर्क रहते हुए अवसर की ताक में रहना चाहिए। साहस के साथ सुअवसर को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए और पूरी शक्ति लगाकर दृढता के साथ प्राप्त अवसर के सहारे सर्वोत्तम ढंग से सफलता तक पहुँचना चाहिए। निश्चित सफलता के लिए इन्हीं सद्‌गुणों की आवश्यकता होती है।

* * *

सुधार

अपने खुद के रचनात्मक आलोचक बनने का साहस रखें। अपनी गलतियाँ और कमजोरियाँ खोजें और फिर उन्हें सुधारें। इससे आप पेशेवर बन जाएँगे।

* * *

सोच

अपने सोच की दिशा बदलें और हर चीज के बारे में सकारात्मक सोचें। अपने हर दिन की शुरुआत इस सोच के साथ करें कि मुझे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी और मैं अपने लिए निर्धारित कार्यों को ईमानदारी से पूरा करूँगा। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि सकारात्मक सोच रखने से आपकी जिंदगी खुशहाल रहती है और आप हमेशा हर हाल में खुश रह सकते हैं। यही नहीं, सकारात्मक सोच का असर यह होता है कि विपरीत स्थितियों में भी आप सही निर्णय ले पाते हैं।

* * *

अपनी सोच को सदैव बड़ा रखें, क्योंकि मौके भी उन्हीं को दिए जाते हैं, जिनके अंदर कुछ बड़ा करने की चाहत होती है।

* * *

आप जैसा सोचते हैं, वैसे ही बन और बना सकते हैं। अगर आप अच्छा सोचेंगे, तो आप अच्छाइयों की तरफ बढ़ेंगे और जब आप बुरा सोचेंगे, तो बुराइयाँ आपकी ओर आकर्षित होंगी।

* * *

आपकी सोच ही कार्य के प्रति आपको ऊर्जावान बनाती है। सकारात्मक सोच मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, इसके विपरीत नकारात्मक सोच नकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। नकारात्मक ऊर्जा के साथ कार्य करनेवाला अपने को हताश एवं निराश पाता है। हताशा और निराशा ही सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनती हैं। आप जरा सोचकर देखें, जब भी कार्य करने से पहले मस्तिष्क को यह संदेश दे दिया जाता है, मैं सफल नहीं हो सकता, तो ऐसी स्थिति में क्या आप सफल हुए हैं। नहीं, कदापि नहीं। सफल होने से पहले सफलता के साथ सोचना सीखें, यह सोच ही आपके जीवन में परिवर्तन ला सकती है।

* * *

आपको कोई भी काम करने से पहले हमेशा दूर का सोचकर चलना चाहिए। इसके लिए आप जो भी कार्य करने जा रहे हैं, उसे करने से पहले यह जरूर सोच लेना चाहिए कि इसके क्या परिणाम होंगे। अपनी सोच को ऐसा बनाएँ कि किस कार्य के भविष्य में क्या परिणाम होंगे, इसकी परख आप पहले ही कर लें।

* * *

एक बार जापान के वैज्ञानिकों ने आदमी की सोच पर अध्ययन किया। उन्होंने एक ऑफिस में दो बोतलों में पानी भरा। एक बोतल के ऊपर प्रेम लिखा और दूसरी बोतल पर नफरत, और उन दोनों बोतलों को ऐसे स्थान पर रख दिया जहाँ से सभी कर्मचारियों का आना-जाना रहता था। कुछ महीनों बाद दोनों बोतलों के पानी को निकालकर जाँच की गई और देखा कि जिस बोतल पर प्रेम लिखा था, उसका पानी स्वाद में मीठा था और जिस बोतल पर नफरत लिखा था, उसका स्वाद कड़वा और बहुत बुरा था। यह कैसे संभव है? जब दोनों बोतलों में एक सा पानी था और दोनों एक ही स्थान पर रखी हुई थीं, तो एक का स्वाद मीठा और एक का कड़वा कैसे? चमत्कार जैसा। जब वैज्ञानिकों ने इसका अध्ययन किया, तो पाया कि न तो यह कोई जादू था और न ही कोई रासायनिक क्रिया। यह सब इनसानी सोच का परिणाम था। यह सब कैसे मुमकिन हुआ? जिस बोतल पर प्रेम लिखा था, उस पर जब लोगों की नजर पड़ती थी, तो उन्हें अच्छा लगता था और उनका सोच और नजरिया उसके प्रति अच्छा हो जाता था और जिस बोतल पर नफरत लिखा था, उसके प्रति उनकी नजर अच्छी नहीं होती थी। तो क्या इनसान की सोच में इतना ज्यादा असर हो सकता है? यह मुमकिन है।

* * *

जब व्यक्ति यह सोचने लगता है कि यह काम मेरे लिए असंभव है और मैं यह काम नहीं कर सकता, तो किसी विज्ञान या किसी टोने-टोटके में इतनी ताकत नहीं कि उसके दम पर उससे वह काम करा लिया जाए।

* * *

व्यक्ति के सोचने और उसके वैसा होने में बड़ा गहरा संबंध है। जब इनसान की सोच और विचारों में इतनी गहरी शक्ति होती है, तो फिर लोग इसका फायदा क्यों नहीं उठा पाते? शायद अज्ञानता या अविश्वास के कारण या फिर कह सकते हैं कि वे अपनी खुद की शक्तियों को सही से जान नहीं पाते। जब सोच और नजरिए से पानी का स्वाद बदल सकता है, फिर जीती-जागती इनसानी जिंदगी क्यों नहीं? आप जैसा सोचते हैं, वैसा ही बन जाते हैं। फिर बहुत सारे लोग अच्छे और सफल क्यों नहीं बन पाते? शायद इसलिए, क्योंकि वे वैसा सोचते ही नहीं हैं। व्यक्ति को भगवान् ने बहुत सारी शक्तियाँ दी हैं, वह अगर उनका सही तरीके से उपयोग करना सीख ले, तो फिर अपनी जिंदगी में बहुत कुछ हासिल कर सकता है। सोचने और विचारने की शक्ति भी उनमें से एक है। अच्छा सोचो, तो अच्छे हो जाओगे, बुरा सोचो तो बुरे बन जाओगे। तो फिर क्यों न आज से ही आप अपने जीवन के बारे में अच्छा

और सकारात्मक सोचना शुरू कर दें।

* * *

सफलता के लिए सोच को बदलना होगा। आपकी सोच ही आपको उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकती है।

* * *

सोच को बदलो, सितारे बदल जाएँगे; नजर को बदलो, नजारे बदल जाएँगे, कश्ती को बदलने की जरूरत नहीं, दिशा को बदलो, मंजिल मिल जाएगी।

* * *

हम आसपास वही देखते हैं, जैसी हमारी सोच है। अगर हम डरे हुए हैं, तो आस-पास डर पैदा करनेवाली चीजें ही नजर आएँगी। कहा गया है कि नजर बदलोगे, तो नजारा बदल जाएगा। हमें अपनी सोच के दायरे से बाहर निकलना होगा, तभी हम सफलता की सीढ़ी चढ़ पाएँगे।

* * *

हमारी सोच सभी सफलताओं, समस्त सांसारिक प्राप्तियों, सभी महान् खोजों एवं आविष्कारों तथा समस्त उपलब्धियों का मौलिक स्रोत है। हमारे विचार हमारे कॅरियर और वास्तव में हमारे दैनंदिन जीवन के निर्धारक होते हैं, विचार सभी कार्यों के पीछे के मार्ग निर्देशक बल होते हैं। हमारे कार्य अनजाने में ही हमें सफलता या असफलता की तरफ ले जाते हैं।

* * *

सोच-विचार

दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं। एक वे जो हर कार्य को पहले से सोच-समझकर और नियोजित तरीके से पूरा करते हैं। दूसरे वे जो अपने कार्य को पूरा करने के लिए किसी प्रकार की योजना नहीं बनाते और बिना किसी सोच-विचार के ही उसे अंजाम देने में लग जाते हैं। ऐसे लोगों की जिंदगी हमेशा अव्यवस्थित रहती है। इसलिए कोई भी काम करने से पहले उसके बारे में पूरी तरह से सोच-विचार कर लें, साथ ही सभी कार्यों को किसी डायरी या प्लानर पर नोट अवश्य कर लें। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि कोई भी काम छूटेगा नहीं। यही नहीं, आपके सारे काम बहुत आराम से और सही ढंग से पूरे हो सकेंगे।

* * *

सौ सबक

सफल लोगों के जीवन में विफलता नाम की कोई चीज नहीं होती, अगर आप सौ बार असफल होते हैं, तो मान लीजिए आपको सौ नए सबक मिल गए और आप लक्ष्य को चूकने में दुबारा वह गलती नहीं करनेवाले। जब आप लक्ष्य पर केंद्रित रहेंगे, तो आपका दिमाग भी हमेशा लक्ष्य के विषय में ही सोचेगा। इससे आपकी ऊर्जा भी लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होने लगेगी।

* * *

स्थिरता

अगर आप तेजी से सफल होना चाहते हैं, तो आपको स्थिर दिमाग के साथ काम करना चाहिए। मन के चंचल होने पर काम पूरा नहीं हो पाता और ध्यान भटक जाता है। जब भी आप किसी काम को नए तरीके से पूरा करना चाहें, तो आपको इसकी सीमा भी पता होनी चाहिए। आपको किसी भी विषय को लेकर ज्यादा उत्तेजित नहीं होना

चाहिए। इसके बजाय पूरी प्रक्रिया को समझना चाहिए और फिर कोई निर्णय लेना चाहिए। दिमाग की स्थिरता होने पर ही आप आगे बढ़ सकते हैं।

* * *

स्पष्ट दृष्टि

हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि हम किसी भी परिस्थिति में वही देखते हैं, जो हम देखना चाहते हैं। अच्छे पहलू को देखें और हार को जीत में बदल लें। अगर आप स्पष्ट दृष्टि विकसित कर लेते हैं, तो सारी चीजें आपके लिए अच्छा काम करने लगेंगी।

* * *

स्पष्ट दृष्टिकोण

हम देखते हैं हमारे चारों ओर ऐसे कई लोग हैं, जो सफलता के लिए कठोर श्रम करते हैं, पर सफलता कुछ गिने-चुने लोगों को ही मिलती है। हम इसे तकदीर का खेल कहते हैं, पर यदि विश्लेषणात्मक नजरिए से देखें, तो पाएँगे कि सफल एवं असफल व्यक्तियों में एक मूलभूत अंतर है। यद्यपि कठोर श्रम दोनों करते हैं, पर सफल व्यक्तियों के पास एक स्पष्ट दृष्टिकोण होता है। वे अँधेरे में तीर नहीं चलाते। उन्हें प्रस्तुत समस्या की समझ होती है और उसके निदान की एक तर्कपरक, व्यावहारिक योजना होती है।

* * *

स्वप्नद्रष्टा

ऐसे सभी व्यक्ति, जिन्होंने महान् सफलताएँ हासिल की हैं, महान् स्वप्नद्रष्टा भी होते हैं।

* * *

स्वार्थी न बनें, दूसरों के लिए हमेशा अच्छा करें। आपसे जितना बन सके, उतनी सबकी सहायता करें। स्वार्थी न बनें। अपने मतलब को किसी की सहायता करते समय भूल जाएँ। आपकी यह आदत भविष्य में सहायक साबित होगी और आपका जीवन आनंद और खुशी से भर जाएगा।

* * *

हारना मना है

उठो और याद रखो कि असफलता गिरने में नहीं, असफलता गिरकर हार मान लेने में है।

* * *

याद रखें, दुनिया में जो लोग सबसे ऊँची सफलता पर पहुँचते हैं, उनमें अधिकतर ऐसे लोग होते हैं, जो परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानते हैं। ऐसे लोग खुद से कहते हैं—जिद करो और दुनिया बदलो। जीवन में आनेवाली परेशानियों से विचलित होकर, हमें अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।

❑❑❑

स्वेट मार्डेन के प्रेरक विचार

ऑरिसन स्वेट मार्डेन

के प्रेरक विचार

महेश दत्त शर्मा

अपनी बात

मनुष्य में ऐसी-ऐसी शक्तियाँ छिपी होती हैं कि जिनके बारे में वह स्वयं भी नहीं जानता। दुनिया के असाधारण अजूबे कार्यों, अजूबे आविष्कारों को मनुष्य ने ही किया है, बनाया है। कैसे? उसकी स्वयं की शक्ति से। हिमालय की माउंट एवरेस्ट चोटी बहुत ऊँची एवं खतरों से भरी है, लेकिन फिर भी मनुष्य उस पर चढ़ जाता है और बाद में सोचता है कि उसने यह कैसे कर दिखाया? मनुष्य अपने शरीर में एक छोटी-सी सूई चुभोने से डरता है, लेकिन जब कभी उसे चाकू अथवा बंदूक की गोली लग जाए तो वही उसके दर्द को झेल जाता है। हजारों फीट की ऊँचाइयों से मनुष्य पैराशूट की सहायता से कूद पड़ता है और वैसे थोड़ी-सी ऊँचाई से डर जाता है। यह सब कैसे होता है? आंतरिक शक्ति से, आत्मविश्वास से, दृढ़ निश्चय से।

जिंदगी बहुत खूबसूरत है और इसकी खूबसूरती को हमेशा बनाए रखने के लिए हमें बहुत-सी बातों को ध्यान में रखकर अपनाना होता है। कभी-कभी जिंदगी में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जो हमें हमेशा ध्यान रहती हैं, कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जो हमारी जिंदगी की दिशा को ही बदल देते हैं। हम में से अधिकतर लोगों ने अपने जीवन को कई सारी जटिलताओं में कैद कर लिया है। इस कारण, हम सादगी में छिपी महानता को देख नहीं पाते। किसी भी एक उस चीज को चुनें, जिसमें आप सर्वश्रेष्ठ हैं। उसके बाद अन्य सभी चीजों को मना कर दें।

बौद्धिकता या रचनात्मकता ही सफलता के लिए जरूरी नहीं है। सफलता इसमें है कि आप कितनी देर तक अपने लक्ष्यों को पूरा करने में टिके रहते हैं। यह हैरत व दु:ख की बात है कि कितनी आसानी से लोग एक हार का सामना करने पर उद्देश्यों से पीछे हट जाते हैं, लेकिन महान् लोग दु:खी होते हैं, पर उस खेल में बने रहते हैं। लक्ष्य के प्रति उनका विश्वास फीका नहीं पड़ता।

हमेशा अपने जीवन की सकारात्मक बातों को ही ध्यान में रखकर आगे बढ़िए और नकारात्मक बातों को अपने मन से निकल दीजिए। जो भी आप जीवन में करना चाहते हैं, उन सबके लिए एक योजना बनाकर ही उसे पूरा कीजिए। जीवन में कुछ बड़ा लक्ष्य पाना हो या छोटा, सभी के लिए एक योजना बनाइए। जीवन में सभी से गलतियाँ होती हैं। यह बात हमेशा ध्यान रखें कि इन गलतियों से बिल्कुल भी न घबराएँ, बल्कि इन गलतियों से सबक लें और जिंदगी में आगे बढ़ें।

जिंदगी का कोई लक्ष्य बनाइए और इस लक्ष्य के लिए अपनी पूरी ऊर्जा लगा दीजिए और जब तक लक्ष्य पूरा न हो जाए, रुकिए मत। एक लक्ष्य पूरा होने के बाद दूसरा लक्ष्य बना लीजिए। हमेशा दूसरों के लिए अपने मन में सम्मान रखिए। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दूसरों को सम्मान देने से पहले खुद को सम्मान दीजिए, क्योंकि जो खुद की इज्जत नहीं कर सकता, वह दूसरों की भी नहीं कर पाएगा।

सभी की जिंदगी में अवसर आकर दरवाजा खटखटाता है। दरवाजे को खोलिए और अवसर का स्वागत कीजिए। अवसर को पहचानिए और उसे जाने मत दीजिए। और कभी भी शॉर्टकट की तलाश न करें, क्योंकि अपनाया गया आसान रास्ता मुश्किल रास्ता भी साबित हो सकता है। पूरा काम किए बिना पूरी सफलता की उम्मीद मत रखिए। जीवन में बहानेबाजी के लिए बिल्कुल भी जगह न रखें, क्योंकि बहाने बनाना हारनेवालों की एक आदत होती है। हारे हुए व्यक्ति के पास बहानों की एक लिस्ट होती है। अत: बहाने मत बनाइए। आगे बढ़िए और कार्य पूरा कीजिए।

जीवन में आगे बढ़ने में किताबों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बहुत-सी अच्छी किताबों को अपना दोस्त

बनाइए। किताबें ऐसी दोस्त होती हैं कि उनसे जितनी भी बार सलाह लेंगे, उतनी ही बार वे सही सलाह देंगी।
जिम्मेदारियों को स्वीकार कीजिए। आपकी आपके जीवन के प्रति, परिवार के प्रति, आपके चाहनेवालों के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं, उनको स्वीकार कीजिए और जीवन में आगे बढ़िए। जिम्मेदारियों से कभी मुँह मत मोड़िए।
जीवन में कुछ अच्छे दोस्त बनाइए। अच्छे दोस्त ही जीवन में काम आते हैं। एक बात हमेशा ध्यान रखिए कि अच्छे दोस्त पाने के लिए पहले एक अच्छा दोस्त बनिए। दोस्तों को बदलिए मत, बल्कि दोस्ती को गहरा कीजिए। जीवन में सपने देखना सीखिए, क्योंकि हमारे सपने ही हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। अपने सपनों से प्रेरणा लीजिए और उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिए कार्य शुरू कर दीजिए। आपके सपने पूरे हो जाएँगे।
जीवन में हमेशा कुछ-न-कुछ अच्छा सीखते रहना चाहिए। सीखने की कोई उम्र नहीं होती, लेकिन वजह जरूर होती है। जीवन में हमेशा आगे बढ़ने के लिए लगातार सीखना बहुत जरूरी होता है। लगातार सीखते रहना एक अच्छी आदत है। इस आदत को विकसित कीजिए।
कुछ पाने के लिए कुछ देना भी सीखिए। जीवन में हमेशा लेन-देन का नियम चलता है। बिना कुछ दिए पाने के बारे में मत सोचिए। आकर्षण का नियम यह कहता है कि जैसा हम देते हैं, वैसा ही हम पाते हैं। दूसरों को प्यार दीजिए। उन्हें खुशियाँ दीजिए, बदले में आपको भी प्यार और खुशियाँ मिलेंगी।
बने-बनाए रास्तों पर चलनेवाले लोग अकसर पिछड़ जाते हैं, क्योंकि बने-बनाए रास्तों में भीड़ बहुत ज्यादा होती है। नया रास्ता बनाने में समय लगता है, लेकिन दूसरों से आगे निकलने का यही एकमात्र तरीका है।
जिस दिन आप सीखना बंद कर देते हैं, उसी दिन से जिंदगी में आपके आगे बढ़ने के रास्ते भी बंद हो जाते हैं। हर दिन कुछ नया सीखिए, सफल जीवन का यही सूत्र है।
अधूरी जानकारी लोगों की असफलता का मूल कारण होती है। जिस भी विषय को जानें, तो पूरी तरह से जानें, क्योंकि नकल करके पाई गई सफलता लंबे समय तक नहीं टिकती। नकल करनेवाले असफल हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें पता नहीं होता कि कब वो सही रास्ते पर जा रहे होते हैं और कब गलत रास्ते पर।
परिश्रमी और आत्मविश्वासी व्यक्तियों के जीवन में भी कभी-कभी ऐसे पल आते हैं, जब उन्हें लगता है कि आगे बढ़ने के सारे दरवाजे बंद हो चुके हैं और सामने असफलता के सिवाय और कोई चारा नहीं है। ऐसे दौर में हम अकसर बेहद निराश और उदासी से घिर जाते हैं, लेकिन यह समय हार मानने का नहीं, बल्कि खुद को यह याद दिलाने का है कि आप सफल होने के लिए ही बने हैं।
आप जिन परिस्थितियों से भी गुजरे हों, या फिर आपके हालत कितने भी बुरे क्यों न रहे हों, ये जल्द ही खत्म होंगे। आप इन हालातों से जूझना सीख जाएँगे और इनके साथ जीना भी सीख जाएँगे, धीरे-धीरे आपको इन हालातों की आदत हो जाएगी और सबकुछ पहले जैसा सामान्य हो जाएगा।
हर दिन के साथ जिंदगी आपको अनगिनत मौके देती है। आपको बस उन्हें पहचानने और उनका सबसे अच्छा इस्तेमाल करने के लिए प्रयासरत होना पड़ेगा। दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है, जो आपकी मदद कर सकते हैं और आपको प्रेरित कर सकते हैं। हो सकता है, आप नकारात्मक सोच और हमेशा जीवन को नकारने वाले बुरे लोगों से घिरे हों, जो आपके लक्ष्यों का मजाक उड़ाते हों और हमेशा आपको नीचा दिखाने की कोशिश करते हों। ऐसे लोगों से दूर ही रहें। हमें ऐसे लोगों की जरूरत नहीं है। अगर आप ऐसे लोगों के साथ जुड़े रहते हैं तो आप कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाएँगे। याद रखें, हमारे आस-पास अच्छे लोगों की भी कमी नहीं है, जो हमेशा हमें प्रेरित करते हैं और हमारा उत्साह बढ़ाते हैं।

कमियाँ सबमें होती हैं। हो सकता है, आपको अपना पतला या मोटा शरीर पसंद न हो या आप सोचते हों कि आपके अंदर कुछ विशेष गुण नहीं है या फिर आप दूसरों से बातें करने में शरमाते हैं, लोगों के सामने बोलने में डर लगता है इत्यादि। इन सभी चीजों को बदला जा सकता है। बस, आपको यह जानना है कि आप ऐसा बदलाव क्यों लाना चाहते हैं और इसके प्रति हमेशा प्रयासरत रहें। अगर आप वास्तव में अपना जीवन बदलना चाहते हैं तो हर दिन अपनी इन कमियों को दूर करने का प्रयास करें।

कभी-कभी हम हालात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर देखने लगते हैं कि वो हमारे लिए सबसे बुरा प्रतीत होने लगते हैं, जबकि वास्तव में सबकुछ कुछ ही समय के लिए होता है और बदला जा सकता है। हमें अपने जीवन को हमेशा सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए अपने अति महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों को त्याग दें और लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, इसका अनुमान लगाना छोड़ दें। पुरानी बातों और भविष्य की चिंता में समय व्यर्थ न करें और वर्तमान में ध्यान केंद्रित करें।

असफल होना सफलता के लिए किए गए प्रयास का सबसे बड़ा प्रमाण है। इसका मतलब है कि आप अपने जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत हैं। किसी भी कार्य में प्रयास करने पर भी असफलता आपको अनुभव प्रदान करती है, मजबूत बनाती है और आपको सिखाती है कि किन गलतियों को दोहराने से आपको बचना चाहिए, जो अगले प्रयास में सफलता सुनिश्चित कर सकती हैं।

कभी-कभी कुछ चीजों को छोड़ देना या किसी को माफ कर देना बहुत अच्छा साबित होता है। ऐसा करने से आपको शांति मिलती है और आपके मन से बोझ हल्का हो जाता है। शांत मन से ही आप वर्तमान में जी सकते हैं और अपने कार्यों में ध्यान लगाकर प्रगति कर सकते हैं।

हर अगला दिन आपके लिए नई उम्मीदों का भंडार लेकर आता है। गुजरा दिन कितना ही बुरा क्यों न हो, आनेवाला दिन नया होता है और हमें तय करना होता है कि इसकी शुरुआत कैसे की जाए और इस कैसे बिताया जाए।

ऐसी ही अनेक प्रेरक विचार से गुँथी उपयोगी पुस्तक। उबाऊ विवरणात्मकता से बचने के लिए हमने इसे प्रेरक टिप्स के रूप में प्रस्तुत किया है, ताकि आप सीधे तथ्यों को ग्रहण कर सकें।

—संपादक

स्वेट मार्डेन : संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वेट मार्डेन का पूरा नाम ऑरिसन स्वेट मार्डेन था। वे अमेरिका में एक नई तरह की—प्रेरक और आत्म-सहायक **सोच**—के विकास और आंदोलन के सूत्रधार बने। उन्होंने समाज के सभी वर्गों, खासकर युवा वर्ग के आत्मोत्थान और सफलता के लिए एक-से-एक बेहतरीन पुस्तकें लिखीं और अपने विचार-आंदोलन की धूम मचाकर रख दी। उनकी पुस्तकों की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सौ वर्ष बाद आज भी उनकी दर्जनों पुस्तकें लगातार बिकनेवाली पुस्तकों में शामिल हैं और उनमें निहित विचार तरोताजा और समसामयिक महत्त्व के जान पड़ते हैं।

संघर्षपूर्ण जीवन

स्वेट मार्डेन का जन्म 11 जून, 1848 को लुईस और मार्था दंपती के यहाँ थार्नटन गोर, न्यू हैंपशायर, संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ।

स्वेट मार्डेन अभी तीन साल के ही थे कि उसकी माँ का निधन हो गया और जब वे सात साल के हुए, उनके पिता चल बसे। अब अपना और दो बहनों की जीविका का भार उनके कंधों पर आ पड़ा। उन्हें मजदूरी से लेकर अनेक छोटे-मोटे काम करने पड़े। इसी बीच उनकी रुचि सेल्फ हैल्प की किताबें पढ़ने में जगी और धीरे-धीरे वे स्वयं प्रखर लेखक के रूप में उभर गए।

जीवन की तमाम विसंगतियों के बीच उन्होंने बोस्टन यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया और वहाँ से वर्ष 1871 में ग्रेजुएशन किया। बाद में उन्होंने वकालत भी पास की। अपना और घर खर्च उन्होंने एक होटल में काम करते हुए अर्जित किया और बाद में उसी होटल को खरीद लिया। साथ ही, और भी कई होटलों की मिलकियत हासिल की। सन् 1890 के दशक में भीषण मंदी के दौर में एक बार फिर उनके सारे होटल बिक गए और वे सड़क पर आ गए। इसके बाद उन्होंने लेखन और मोटिवेशन को अपना पेशा बना लिया।

वे आजीवन अविवाहित रहे। 74 साल की उम्र में 10 मार्च, 1924 को लॉस एंजेल्स, कैलिफोर्निया में उनका निधन हो गया।

स्वेट मार्डेन की कुछ प्रमुख सदाबहार प्रेरक पुस्तकें

पुशिंग द फ्रंट (1894, 1911)
हाऊ टू सक्सेस (1896)
द सीक्रेट ऑफ अचीवमेंट (1898)
स्टेपिंग स्टोंस (1902)
द मेकिंग ऑफ ए मैन (1905)
एवरी मैन ए किंग (1906)
द ऑप्टिमिस्टिक लाइफ (1907)
ही कैन हू थिंक्स ही कैन (1909)
पीस, पॉवर एंड प्लेंटी (1909)
बी गुड टू योरसेल्फ (1910)
गैटिंग ऑन (1910)
द मिरेकल ऑफ राइट थॉट (1910)

वूमेन एंड द होम (1915)
एवरीबडी अहैड (1916)
द विक्टोरियस एटीट्यूड (1916)
सैलिंग थिंग्स (1916)
हाऊ टू गैट व्हाट यू वांट (1917)
जॉय ऑफ लिविंग (1917)
मेकिंग लाइफ ए मास्टरपीस (1917)
लव्स वे (1918)
यू कैन, बट विल यू? (1920)
सक्सेस फंडामेंटल्स (1920)
प्रॉसपैरिटी - हाऊ टू अटेक्ट (1922)
हाऊ टू चूज योर कॅरियर (1922)
मेकिंग योरसेल्फ (1923)
मास्टरफुल पर्सनैलिटी (1923)
द कॉन्क्वेस्ट ऑफ वरी (1924)
मेकिंग फ्रेंड्स विद नर्व्स (1925)
प्रस्तुत पुस्तक में उपर्युक्त पुस्तकों के सार तत्त्व को बिंदुवार प्रेरक विचारों के रूप में दिया गया है। आइए, आगे बढ़ते हैं।

❑

स्वेट मार्डेन के प्रेरक विचार

अंगारा— अंगारा बनकर जो अपने मन की चिंताओं, भय और दु:खों को जला डालते हैं, उनको जीवन में सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

अंतरशक्ति— आंतरिक शक्ति किसी भी व्यक्ति की वह जीवंत शक्ति होती है, जिसके बल पर वह ऐसे कार्य भी कर लेता है, जो आश्चर्यजनक होते हैं। और फिर व्यक्ति यह सोचता है कि 'मैंने यह कैसे कर लिया?' व्यक्ति की आंतरिक शक्ति उसके रंग-रूप, उसकी लंबाई-चौड़ाई की भाँति दिखाई नहीं देती। वह तो उसके वे गुण होते हैं, जिन्हें न तो वह देख सकता है और न ही अन्य कोई। लेकिन जब व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानता है तो ऐसे कार्य कर लेता है, जिन्हें देखकर बाद में वह स्वयं भी आश्चर्यचकित हो जाता है।

अंतरशक्ति— व्यक्ति प्राय: यही सोचता है कि यह तो बहुत कठिन कार्य है; मेरे वश का नहीं है, लेकिन जब उसे अपनी आंतरिक शक्ति का ज्ञान होता है तो वह उसको कर जाता है। व्यक्ति अपने आंतरिक गुणों को आत्मविश्वास पैदा करके प्राप्त कर सकता है। यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय कर ले तो वह किसी भी काम को आसानी से कर सकता है। सर्वप्रथम आवश्यकता है कि व्यक्ति स्वयं को पहचाने।

अंतर्चेतना— अंतर्चेतना से मिलनेवाले दिशा-निर्देशों को ग्रहण करने के लिए अपना दिमाग हमेशा खुला रखें। जब भी आपको अपनी योजना में सुधार लाने या किसी नई योजना की ओर बढ़ने की प्रेरणा का झटका महसूस हो, बिना किसी संदेह या हिचकिचाहट के उस पर अमल करें। जिस पल आपका दिमाग हकीकत को समझता है और यह सोचने लगता है कि किसी भी विषय का कोई अंतिम सत्य नहीं है और उस विषय से जुड़ी कई सच्चाइयाँ सामने आ सकती हैं, उसी पल आप सहिष्णुता के नियम से सीखने लग जाते हैं।

अंधविश्वास— अंधविश्वास में लोग कभी-कभी इतना बड़ा धोखा खा जाते हैं कि उससे उबरना कठिन हो जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि विश्वास सभी पर करो, लेकिन अंधविश्वास किसी पर नहीं। अनेक लोग अपनी चतुराई से लोगों को अपने जाल में फँसा लेते हैं। चालाक लोग ऐसे ही अवसरों की तलाश में रहते हैं। जहाँ उन्हें अवसर मिला और उन्होंने धोखा दिया। फिर अंधविश्वासी व्यक्ति केवल हाथ मलता रह जाता है।

अंधविश्वास— व्यक्ति जब ठोकर खाता है, तब सँभलता है, लेकिन वह पहले से सँभलकर चले तो ठोकर ही क्यों खाए? अंधविश्वास वह अवगुण है, जिसका लाभ चापलूस, धूर्त, ठग, पाखंडी, कर्महीन लोग उठाते हैं। इसलिए किसी पर भी अंधविश्वास नहीं करना चाहिए, अन्यथा यह आपकी सफलता में बाधक हो सकता है।

अकर्मण्यता— बहानेबाजी या टालते रहने की प्रवृति इनसान को अकर्मण्य बनाती है। समस्या का समाधान करें, घबराकर पलायन न करें। असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। निरंतर प्रयासरत रहें।

अच्छाइयाँ— अपने विषय में एक सूची बनाएँ कि आप क्या हैं? अपनी क्षमताओं और अच्छाइयों को लिखें। फिर अपने दोषों, कमियों और बुराइयों को लिखें। अपने दोषों और कमियों को धीरे-धीरे दूर करें और अपनी अच्छाइयों को याद रखें। ये अच्छाइयाँ आप को हर मंजिल तक ले जा सकेंगी।

अच्छे कपड़े पहनें— अच्छे ढंग के कपड़े पहने व्यक्ति की हर जगह सराहना होती है। अच्छे कपड़े पहनने से व्यक्ति में चुस्ती-फुरती का एहसास होता है। वह अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और तनावमुक्त महसूस करता है। उसके चेहरे पर खुशी की चमक रहती है। उसके हाथ मिलाने में अधिक विश्वास झलकता है। घटिया कपड़े पहनने से हमेशा हीन भावना पनपती है।

अज्ञान— अज्ञान वह अवगुण है, जो व्यक्ति को पशुओं की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। अज्ञानी व्यक्ति बहुधा

लोगों से ठगा जाता है। अज्ञान वह बीज है, जो अंकुरित होकर वृक्ष बनता है और उस वृक्ष पर अवगुणों के फल लगते हैं। अज्ञान अवगुणों का बीज है, जिसे कभी अंकुरित नहीं होने देना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति अवगुणों का भंडार बनकर जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं कर पाता। ज्ञान की एक किरण अज्ञान के घनघोर अंधकार को दूर कर सकती है, जबकि अज्ञान व्यक्ति को घोर अंधकार में धकेल देता है।

अज्ञान—ज्ञान प्राप्त करके ही स्वयं को पहचाना जा सकता है। अज्ञान के बादल छँटने पर व्यक्ति स्वत: ही सफलता की ओर अग्रसर होने लगता है। अज्ञान ही व्यक्ति के गुणों को बाँधे रखता है। अज्ञानी व्यक्ति से सफलता की आशा व्यर्थ है। अज्ञानी व्यक्ति अपनी कुबुद्धि से बनते कार्य को बिगाड़ लेता है। अज्ञानी व्यक्ति अवसर को पहचान कर भी उसका लाभ उठाने में असमर्थ रहता है। अज्ञानता के कारण वह असफल होता है।

अडिगता—हममें से जीवन किसी के लिए भी सरल नहीं है, लेकिन इससे क्या? हममें अडिगता होनी चाहिए तथा इससे भी अधिक अपने में विश्वास होना चाहिए। हमें यह विश्वास होना चाहिए कि हम सभी में कुछ-न-कुछ विशेषता है तथा इसे अवश्य ही प्राप्त किया जाना चाहिए।

अधकचरा ज्ञान—शिक्षा के लिए कभी शॉर्टकट नहीं अपनाना चाहिए, अन्यथा अधकचरा ज्ञान ही मिलता है, जोकि हानिकारक होता है। स्थाई और पूर्ण शिक्षा ही ग्रहण करनी चाहिए, जिससे चहुँ ओर आपकी प्रशंसा हो और जब आप इस दुनिया से जाएँ, तब भी आपकी सफलता की गाथाएँ दुनिया में अमर रहें।

अधूरा जीवन—जिस जिंदगी के पन्ने उद्यम, साहस और धैर्य की स्याही से नहीं लिखे गए, वह अधूरा है। जहाँ विवेक का मंत्र नहीं, वह जीवन सुखी नहीं। कर्मयोगी मनुष्य ही जीवन के आदर्श होते हैं। कर्मठता ही हमारे जीवन का पर्याय है। कर्मयोगी मनुष्य के हृदय में आशा, उत्साह तथा परिश्रम की ऐसी मनोमुग्धकारी त्रिवेणी की जल रश्मियाँ बहती हैं, जिनमें अवगाहन करके मनुष्य का रोम-रोम पुलकित हो झूम उठता है।

अध्ययन—असफलता का अध्ययन करें, ताकि आप सफलता की राह में आगे बढ़ सकें।

अध्ययन—जीवन का पूरा आनंद उठाते हुए जीनेवाले लोग जीवन भर सीखते रहते हैं। वे नई-नई बातों को सीखने से कभी रुकते नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावकारी एवं कुशल ढंग से अध्ययन करना चाहिए तथा नई जानकारियाँ हासिल करनी चाहिए।

अनाथ—याद रखिए, असफलता अनाथ होती है, लेकिन सफलता के बहुत सारे रिश्तेदार होते हैं।

अनियंत्रित व्यवहार—बार-बार अधीरता, घबराहट दिखाना बेवकूफी है और इससे नियंत्रण, समझदारी एवं संवेदनशीलता की कमी जाहिर होती है। आपके अनियंत्रित व्यवहार से उत्पन्न घटना को लोग बहुधा भूल जाएँगे, लेकिन यह जानना उचित है कि भावनाओं और चिढ़ को किस तरह नियंत्रण में रखा जा सकता है। और अगर यह बार-बार उठनेवाली समस्या बन चुकी है तो बेहतर होगा कि अपने क्रोध के बारे में किसी से बातचीत या सलाह-मशविरा करें।

अनुपात—हर महान् व्यक्ति उसी अनुपात में महान् बना है, और हर सफल व्यक्ति उसी अनुपात में सफल हुआ है, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

अनुभव और क्षमता—आपको अपनी उपलब्धियों या सफलताओं पर बहस करने की जरूरत नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को घटाता है। अपनी सफलताओं को उचित ठहराने की बजाय अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने अनुभव और क्षमताओं को सही दिशा में बढ़ाएँ। हमेशा यह याद रखें कि हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होती है, इसके लिए किसी दूसरे का सहयोग काम नहीं आता।

अनुभव—अनुभव का कोई विकल्प नहीं है। आप जितना अधिक और जितनी जल्दी अनुभव प्राप्त कर सकें, उतना ही अधिक आपके लिए अच्छा होगा। अनुभव प्राप्त करके आप अपने हितों एवं लक्ष्यों का समर्थन कर सकेंगे या उनका दिशांतरण कर सकेंगे।

अनुभव—असफलताओं से घबराने की आवश्यकता नहीं। सफलता इसमें है कि आप कितनी जल्दी दोबारा खड़े होकर आगे बढ़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। दूसरों से प्रेरित होना अच्छी बात है, पर उनकी सफलता की नकल करना हमेशा काम नहीं आता। खुद को स्वीकार करें। जोखिम लें, इस प्रक्रिया में अनुभव होंगे।

अनुभव—आप तब तक असफल नहीं हैं, जब तक अपने ध्येय की प्राप्ति में प्रयासरत हैं। ध्येय को पाने से पहले यदि आपको असफलता दिखाई दे तो वह झूठी है, दिखावटी है, बनावटी है, उसे अस्वीकार कर दें। हाँ, इस अनुभव से कुछ सीख सकें तो सीख लें और लक्ष्य के अगले पड़ाव की ओर आगे बढ़ते रहें। बिना ऐसे अनुभवों के कुछ सीखा नहीं जा सकता।

अनुभव—कभी-कभी जीवन में एक के बाद एक या एक साथ भी कई मुश्किलें आ जाती हैं और हम अपने आपको उनके जंगल में राह भटके हुए की तरह भ्रमित करते रहते हैं। जब हमें जीवन के कड़वे अनुभव होते हैं या कोई ठोकर लगती है तो उस समय हो सकता है कि हम विचलित हो जाएँ। इससे उबरकर सीख भी मिलती है और जीवन में मुश्किलों का सामना करने का साहस भी आता है। फिर हम पाते हैं कि हमारी क्षमता भी बढ़ गई है और जीवन में हम और भी सफलता हासिल कर रहे हैं। तो मुश्किलों से घबराएँ नहीं, बल्कि उनका सामना करें। आप पाएँगे कि आपको उन मुश्किलों ने और भी निखार दिया है।

अनुभव—विपरीत हालात के सामने साहस और समृद्धि के सामने विनम्रता को ही हमें बतौर अभिभावक, आदर्श की तरह पेश करना चाहिए। तभी हमारे बच्चे भी हमसे यही अनुभव लेंगे और इसी के जरिए वे इनके साथ जीना सीखेंगे। और तब, और केवल तभी, हम लचीले वयस्कों की तरह बड़ा होने में उनकी मदद कर पाएँगे, उनके जीवन में आनेवाली तमाम चुनौतियों और खुशियों, सफलताओं और नाकामियों का सामना कर पाने लायक बना पाएँगे।

अभिलाषा—अभिलाषा तभी फलदायक होती है, जब वह दृढ़ निश्चय में परिणत कर दी जाती है।

अभीष्ट—आपको जो चाहिए, सदा उसी के बारे में सोचें। सफल व्यक्ति और साधारण व्यक्ति के बीच मुख्य अंतर यह है कि सफल व्यक्ति हर समय उसी के बारे में सोचता है, जो उसे चाहिए। जब आप अपने अभीष्ट के बारे में सोचते रहते हैं, आपके मस्तिष्क की पेशियाँ सुदृढ़ होती हैं और आप अपनी दिशा पर ध्यान लगाए रहते हैं।

अभीष्ट ध्येय—मानव की शक्ति, क्षमता एक सीमित और निर्धारित परिधि में रहती है। कोई भी व्यक्ति एक साथ अनेक लक्ष्य, अनेक कार्यक्रमों का बोझा नहीं ढो सकता। कोई भी व्यक्ति अनेक दिशाओं में भाग-दौड़ नहीं कर सकता। प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए, जो सफलता प्राप्त करना चाहता है, एक ही लक्ष्य का चुनाव करना पड़ेगा। उसे ही अपना अभीष्ट ध्येय बनाना पड़ेगा। उसी के अनुसार कार्यक्रमों में लगना पड़ेगा। युद्ध के लंबे और विस्तृत क्षेत्र में किसी फौजी टुकड़ी का नायक दुश्मन से भिड़ने के लिए मोर्चा बना लेता है, उसी मोर्चे पर जब वह डटकर संघर्ष करता है तो बहुत कुछ सफलता मिल जाती है। यही बात जीवन संग्राम पर भी लागू होती है।

अमरता—व्यक्ति द्वारा स्वयं को पहचानना स्वयं को सफल बनाना है। यदि वह स्वयं को नहीं पहचानता तो असफल है। व्यक्ति अपने अंदर गुणों का विकास कर, अवगुणों का त्यागकर सफलता प्राप्त कर सकता है। जो सफल है, वही अमर है। शेष सभी मृत्यु है। अब यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह मृत्यु का वरण करता है या

अमरता का? उसके लिए दोनों राहें खुली हैं। बस, चलने की देर है।

अवगुण— अवगुण व्यक्ति के वे दोष हैं, जो उसे नाकारा, आलसी, चापलूस, अभिमानी, क्रोधी, लालची तो बनाते ही हैं, साथ ही उसे अंदर से खोखला भी कर देते हैं, अर्थात् यह कहा जा सकता है कि ये वे दीमक हैं, जो व्यक्ति को असफलता तो देते ही हैं, साथ ही उसे नष्ट भी कर देते हैं।

अवगुण— अवगुण व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति को समाप्त कर देते हैं। उसे जीवन में नकारात्मकता का पाठ पढ़ाते हैं। उसे उसके गुणों से विमुख कर देते हैं। उसे कुंठित कर देते हैं। इन अवगुणों से बाधित होकर वह अपना कर्म भूलकर अपने कार्यों को बिगाड़ना प्रारंभ कर देता है और जीवन में असफल हो जाता है। इन अवगुणों के कारण व्यक्ति स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु समाज के लिए भी हानिकारक होता है, क्योंकि वह स्वयं तो कुछ कर नहीं सकता, बल्कि जहाँ रहता है, वहाँ के वातावरण को भी दूषित कर देता है।

अवगुण-त्याग— सफलता प्राप्त करने के लिए एकाकीपन, भय, संकोच, भावुकता तथा हीन भावना जैसे अवगुणों को अपने पास फटकने भी न दें। अपनी लगन, इच्छा व परिश्रम पर निराशा व आलस्य की छाया न पड़ने दें। सफलता पाने के लिए समय का महत्त्व समझें। उसका एक-एक पल उपयोग में लाएँ।

अवसर का लाभ— सफलता उन व्यक्तियों के पास नहीं आती, जो इंतजार करते हैं और यह अपने पास आने के लिए किसी का इंतजार भी नहीं करती। अधिकतर सफल व्यक्तियों ने कुछ नए गुणों या उन्हें प्राप्त अवसरों द्वारा ही अपने गंतव्य को प्राप्त नहीं किया है। उन्होंने तो अपने हाथ में आए अवसरों का विकास किया है। असफलता और सफलता के बीच अंतर बस इतना है, जैसे कोई काम लगभग सही करना तथा बिल्कुल सही प्रकार से करना।

अवसर— अवसर एक वरदान होता है, जो जीवन में बार-बार नहीं आता। अत: उसके स्वागत के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए और पूर्ण आत्मविश्वास और निष्ठा के साथ सामने आए हुए अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

अवसर— अवसर कभी-कभी व्यक्ति को स्वत: ही मिल जाते हैं। बस, आवश्यकता होती है, उन्हें पहचानने की, उन्हें पकड़ने की। जो अवसर को पहचान लेता है, वह भाग्य निर्माण के सूत्र को पा लेता है, अर्थात् उस अवसर का लाभ उठा लेता है। कभी-कभी अवसर पैदा करने पड़ते हैं, लेकिन यहाँ भी वही बात लागू होती है कि अवसर का उचित लाभ उठाना। अवसर बनाकर अर्थात् पैदा करके भी यदि उनका समुचित लाभ न उठाया जाए तो वह प्रयास विफल होगा।

अवसर— अवसर व्यक्ति के जीवन में सफल भाग्य निर्माण के वे सोपान हैं, जिन्हें पाकर वह सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है। कहा जाता है कि अवसर पर चौका मारना शोभा देता है, यदि प्रत्येक गेंद पर आँख बंद करके खिलाड़ी चौका मारता रहे तो उसे पैवेलियन में ही बैठना पड़ेगा। वह मैदान पर अपना हुनर नहीं दिखा सकेगा। इसी प्रकार, जब व्यक्ति को उचित अवसर मिले, तब उसे तुरंत पकड़ लेना चाहिए। अवसर को कभी गँवाना नहीं चाहिए, अन्यथा यही हाल होता है कि 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत।'

अवसर— अवसर से लाभ उठाने में असाधारण रूप से वही लोग सफल हुए है, जिन्होंने प्राप्त अवसरों में सुधार लाकर उन्हें अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न किया।

अवसर— ईश्वर हमें सदैव जीवन में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है, परंतु जिसमें अपनी योग्यता का विश्वास न हो, उसके हाथ से अवसर निकल जाता है। कुछ और कदम भी हैं, जो हम अपनी जूझने की क्षमता को बढ़ाने के लिए उठा सकते हैं। जब हम अपने को विलक्षण व कठिन परिस्थितियों में पाते हैं, तब उनसे भाग जाने की बजाय हमें उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए।

अवसर—कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग करने से वही छोटा अवसर बड़ा हो जाता है।

अवसर—जिस प्रकार मृत्यु आने पर उससे यह नहीं कहा जा सकता कि कल आ जाना, उसी प्रकार आज जो अवसर प्राप्त हुआ है, उससे भी यह नहीं कहा जा सकता कि 'हे अवसर! कल आ जाना।' आज जो भी सामने हैं, उसे स्वीकार करें, कल की प्रतीक्षा न करें। कल की बात करनेवाले का तात्पर्य अप्रत्यक्ष रूप से उस कार्य को टालना है, जो उस व्यक्ति के नकारात्मक रवैये को प्रकट करता है। इस प्रकार के लोग जीवन में सफल नहीं होते। इसलिए कल को छोड़ें, आज को पकड़ें, क्योंकि आज सफल है और कल असफल।

अवसर—बहुत से व्यक्ति ऐसे देखे जा सकते हैं, जो अवसर का रोना रोते रहते हैं कि 'अवसर न मिल सकने के कारण मैं असफल रहा, अन्यथा मैं न जाने क्या-क्या कर देता।' यह सब उन लोगों के लिए होता है, जो स्वयं कुछ उन्नति नहीं करना चाहते। ऐसे लोग अवसर मिलने पर भी उसे पहचान नहीं पाते हैं और इनसे अवसर पैदा करने की तो उम्मीद ही व्यर्थ है।

अवसर—मनोवैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि अपनी किसी भी प्रिय रुचि को निखारकर सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ जीवन की उबकाई, नीरसता व असंतुष्टि से बचा जा सकता है। मूड नहीं बना है, इस बीमारी से बचें। अच्छा समय मूड के कारण रुकता नहीं है। इस प्रकार, अच्छा अवसर हाथ से निकल जाता है और पीछे रह जाता है, केवल पछतावा।

अवसर—महान् पुरुष बहुत अच्छे अवसरों की प्रतीक्षा नहीं करते। जरा भी अनुकूल अवसर आने पर वे उसे अपने अनुकूल बना लेते हैं। उनको विशेष सामग्री की जरूरत नहीं होती। जो साधारण सामग्री उन्हें मिल जाती है, उसी से वे अपना काम कर डालते हैं। बेंजामिन फ्रेंकलिन ने बिजली का सिद्धांत पतंग उड़ाने से ही ढूँढ़ निकाला था।

अवसर—व्यक्ति के जीवन में लाभ अथवा सफलता के पथ पर आगे बढ़ने के क्षण जब भी आएँ तो उन्हें उसी समय पकड़ लेना चाहिए, क्योंकि पता नहीं, आज का अवसर चूकने पर न जाने वे लाभदायक क्षण जीवन में फिर कब आएँ। क्योंकि अवसर का समय निश्चित नहीं होता और ऐसे अवसर वे ही छोड़ते हैं, जो जीवन में कुछ नहीं करना चाहते। सफलता के इच्छुक लोग ऐसे अवसरों को कल पर नहीं टालते, अपितु लाभकारी क्षणों की रात-दिन प्रतीक्षा करते हैं और प्राप्त होते ही उन्हें लपक लेते हैं।

अवसर—सर्वत्र ही सदा ही मौके मिलते रहते हैं। मौकों की कमी नहीं है। कमी है उन्हें ढूँढ़ने की, उनके लिए तैयार रहने की और उनसे उचित लाभ उठाने की। हम भ्रम में रहते हैं और प्राय: जो वस्तु हमारे पास आती है, वह हमें दिखाई नहीं देती। अवसर के मिलते ही उसे पकड़ लो। उसे हाथ से न जाने दो। उसे अधिकाधिक अपने मुताबिक बनाओ।

अवसर—सर्वोत्तम व्यक्ति वे नहीं हैं, जिन्होंने अवसरों का इंतजार किया, बल्कि वे हैं, जिन्होंने अवसरों को अपनाया, कैद किया, जीता और गुलाम बनाया।

अवसर—'मूड नहीं बना' है या 'अभी मूड नहीं' है, नामक बीमारी से बचें। अच्छा समय मूड के कारण रुकता नहीं है और इस प्रकार, अच्छा अवसर मुट्ठी से रेत की तरह फिसल जाता है। इसके बाद रह जाता है, केवल पछतावा।

अवसर—यही अवसर है। अवसर का बहाना मत बनाइए। अवसर तो पग-पग पर बिखरे पड़े हैं। स्कूल अथवा कॉलेज का प्रत्येक पाठ एक अवसर है, प्रत्येक परीक्षा एक अवसर है, प्रत्येक अच्छी बात या सदुपदेश एक

अवसर है, व्यापार-संबंधी कोई भी बात एक अवसर है। अभाव का रोना कायर रोते हैं। बिना साधन के जो सफलता पाता है, उसका जीवन ही सुखमय होता है।

अवसर— साहसी बनें और किसी अवसर के खो जाने पर कभी भी आँसू न बहाएँ। आँसू कायर बहाते हैं।

अवसाद— उदासी, विषाद अथवा ग्लानि की मानसिकता व्यक्तित्व विकास में सबसे बड़ी बाधा और प्रगति के भी प्रतिकूल है। मानसिक अवसाद से घिरे व्यक्ति का मन किसी भी काम में नहीं लगता। वह किसी भी विषय पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। जीवन में दिलचस्पी नहीं लेता। उदास, निराश व विषादग्रस्त लोगों के नजरिए में बदलाव आ जाता है। उन्हें लगता है कि वे जीवन में कुछ कर नहीं सकते। वे अपनी छोटी-छोटी गलतियों के लिए परेशान रहते हैं तथा हरदम उन्हीं के बारे में सोचते रहते हैं। मानसिक अवसाद को दूर करने का बेहतरीन उपाय यह है कि आप अपने काम में व्यस्त रहें। अकेले रहने की आदत को छोड़ें। दोस्तों के साथ बाहर जाएँ। लोगों से मिलें-जुलें।

अवसाद— मानसिक अवसाद के गहरे चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए आपको जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। कभी-कभार सहकर्मी के साथ ठहाके लगाने में भी कोई बुराई नहीं है। याद रखिए, यदि आप रोते हैं तो आपके साथ कोई नहीं रोएगा। हाँ, यदि आप हँसते हैं तो हो सकता है कि कुछ लोग आपकी हँसी में शामिल होने के लिए साथ आ जाएँ।

अव्यवस्था— अव्यवस्था आपकी बिगड़ी मानसिकता की परिचायक है।

अशांत— अगर आप सफल होना चाहते हैं तो मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों, बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

असंभव— असफलता के विचार से सफलता का उत्पन्न होना उतना ही असंभव है, जितना बबूल के पेड़ से गुलाब के फूल का निकलना।

असंभव-संभव— कोशिश से असंभव भी संभव हो जाता है। उत्तम मस्तिक का चिह्न उसकी कर्तव्यनिष्ठा है, जो सब प्रकार के परिवर्तन होने पर भी कभी नहीं बदलती, बल्कि कठिनाइयों का सामना करती हुई, अपने ध्येय को प्राप्त करती है। छोटी मस्तिष्क क्षमताएँ आपत्तियों से दब जाती हैं, जबकि बड़ी मस्तिष्क क्षमताएँ आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं।

असफलता— अगर हमें असफलता के दौर से न गुजरना पड़े तो कभी भी सफलता का स्वाद उतना अच्छा नहीं लगेगा।

असफलता— असफलता दूसरों के कारण से नहीं, अपितु स्वयं की कमजोरियों के कारण मिलती है। लोग इन्हीं उलझनों में व्यस्त रहते हैं कि कब करें, कैसे करें, शायद हो सकता था या हो सके, कल कर लेंगे या मेरी जगह तुम चले जाना आदि-आदि। स्वयं के कार्य के लिए इतनी उलझनें, इतने बहाने? अब व्यक्ति सफल कैसे हों, जब वे स्वयं ही स्वयं की सफलता में अनेक परेशानियों को जन्म देने लगें।

असफलता— असफलता ही सफलता है, यदि हम उससे सीख लें तो।

असफलता— असफलता से सफलता का सृजन कीजिए। निराशा और असफलता, सफलता के दो निश्चित आधार स्तंभ हैं।

असफलता— इस दुनिया में आज तक कोई भी ऐसा महान् व्यक्ति नहीं हुआ, जो कभी असफल न हुआ हो। सफलता की मंजिल तक पहुँचने के लिए आपको असफलता की सीढ़ियों पर चलकर जाना होगा। असफलताएँ

हमारी छुपी प्रतिभा और कौशल को उभारती हैं। इनसे निराश मत होइए। चरित्रवान व्यक्ति कभी निराश नहीं होते हैं, क्योंकि उनकी उच्च भावनाएँ उन्हें सदा असीम ऊर्जा से युक्त रखती हैं। वे हर समय मुश्किलों से लड़कर अपना लक्ष्य पा लेने की क्षमता रखते हैं। प्रतिभाशाली व्यक्तियों को निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है। इसी के बल पर वे अपनी परिस्थितियों में सुधार कर लेते हैं।

असफलता— गलतियों से सीखें। नाकामयाबी सिर्फ एक घटना तथा सीखने योग्य अनुभव है। यह एक बढ़ता हुआ कदम है, जो सफलता की ओर ले जाता है। सफल व्यक्तियों ने न जाने कितने बार असफलता का मुँह देखा है। उनके लिए असफलता सिर्फ एक गुजरी हुई घटना है, जैसे पुल के नीचे बहता पानी।

असफलता— जब हम अपने स्वयं के जीवन में झाँकेंगे, तब हमें अपनी असफलता का ज्ञान होगा न कि केवल हम यही देखते रहें कि उस व्यक्ति में वह कमी है अर्थात् हम केवल दूसरों के दोष ही निकालते रहते हैं, स्वयं के नहीं। यही असफल होने का सबसे बड़ा कारण है। यह सब त्याग कर देखें फिर आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपने अपनी असफलताओं के कारणों पर विजय पा ली है।

असफलता— बिना असफलता के सफलता का कोई स्वाद नहीं है, उसकी कोई समझ नहीं है।

असफलता— सफलता आपको सफल बनती है, पर असफलता आपको महान् बनाती है। आपकी असफलता यह तय करती है कि आप कितने महान् हैं। इतिहास में जितने भी महापुरुष हुए हैं, वो जीवन में सफल बनने से पहले लगातार कई बार असफल हुए हैं।

असफलता— सफलता की सभी कथाएँ बड़ी-बड़ी असफलताओं की कहानियाँ हैं।

असफलता— सफलता प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

असफलता— हम पूर्ण लगन, ईमानदारी से अपने कार्यों को करते हैं और अपने कार्य व मेहनत के प्रति पूर्णत: आश्वस्त होते हैं कि हम अवश्य सफल होंगे, किंतु फिर भी असफल! क्या आपने अपने कार्यों को संपन्न करने के लिए कोई योजना बनाई? क्या आप स्वयं के प्रति एवं अपने कार्य के प्रति पूर्ण ईमानदार रहे? क्या आपमें आत्मविश्वास की कमी थी? क्या आप उस कार्य के प्रति दृढ़ निश्चयी थे? क्या आप समाज से कटे हुए थे? क्या आपमें साहस की कमी थी? क्या आपको अपने कार्य आदि का अनुभव था आदि ऐसे कई कारक हैं, जो हमें असफलता की ओर ढकेलते हैं।

असफलता— हर सफल व्यक्ति की कहानी असफलता से शुरू होती है। ऐसी कहानियों की भरमार है, जिसमें सफल बनने से पहले किन असफलताओं का सामना करना पड़ा। किसी को मंदबुद्धि कहा गया, तो किसी को छोटे-से-छोटे काम के लायक भी नहीं समझा गया। किसी को कॉलेज से निकल दिया, तो किसी के पास पढ़ने के पैसे भी नहीं थे।

असली शिक्षा— आदमी की असली शिक्षा कष्टों और अभावों के बीच होती है। कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न और दौड़-धूप करता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है। यदि कठिनाइयाँ न होतीं तो सफलता भी न होती। संग्राम ही न हो तो जय या विजय कहाँ से प्राप्त हो?

असहिष्णुता— असहिष्णुता की वजह है—अज्ञानता, जिसे सीधे-सीधे ज्ञान की कमी कह सकते हैं। जानकार लोग शायद ही कभी असहिष्णु होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि किसी के पास इतनी जानकारी नहीं कि वे दूसरों की जानकारी पर फैसला सुना सकें।

असहिष्णुता— असहिष्णुता से ज्यादा अज्ञानता का कोई और रूप नहीं, जिसने सबसे ज्यादा दु:ख दिया है। सच

कहें तो हर युद्ध की वजह असहिष्णुता ही होती है। पूँजी और श्रम के बीच मतभेद भी असहिष्णुता से ही पैदा होते हैं। बगैर सहिष्णुता को अपनाए, किसी भी व्यक्ति के लिए सटीक सोच के सिद्धांत को अपनाना नामुमकिन होता है, क्योंकि असहिष्णुता के प्रभाव में आकर इनसान ज्ञान की किताब बंद कर देता है और इसके ऊपरी पन्ने पर लिखता है, 'समझो पढ़ लिया, क्योंकि मैं सब जानता हूँ!'

अहंकार और घमंड—अपने अंदर अहंकार और घमंड, इन दो चीजों को न लाएँ। इनसे पूरी तरह से दूर रहें, क्योंकि इनके रहने तक आप कभी भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

अहंकार—अहंकार क्षण भर में मनुष्य को अपनी गिरफ्त में लेकर उसे असफलता की ओर धकेल देता है। अहंकारी मनुष्य का सिर हमेशा झुकता है। इसलिए अहंकार रूपी अवगुण से मनुष्य को सतत बचना चाहिए, क्योंकि सफलता चाहनेवालों के लिए यह बहुत घातक होता है।

अहंकार—अहंकार मूर्ख और चापलूस किस्म के लोगों की औषधि है, जिसे लेते ही उनके संपूर्ण शरीर में उत्साह का संचार होता है, जबकि सफलता चाहनेवाले लोग इससे दूर भागते हैं, क्योंकि वे इसे विष समान समझते हैं। अहंकारी व्यक्ति अपने अहंकार में सामनेवाले को कुछ नहीं समझता। वह यह भी भूल जाता है कि उसके सामने कौन है? क्या है? वह सामनेवाले का अपमान करने से भी नहीं चूकता।

अहंकार—अहंकार व्यक्ति का वह दुर्गुण है, जिसके चलते वह कुछ नहीं होते हुए भी स्वयं को सर्वोपरि समझता है या अनेक गुणों के होते हुए भी इस दुर्गुण के कारण वह कुछ नहीं होता, क्योंकि अहंकार में वह इतना मस्त हो जाता है कि अपने सद्गुणों का भी नाश कर बैठता है।

अहंकार—अहंकारी व्यक्ति का सिर हमेशा झुकता है और क्षण भर में व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में लेकर उसे असफलता की ओर धकेल देता है। अहंकाररूपी अवगुण से व्यक्ति को सतत् बचना चाहिए, क्योंकि अपना भाग्य बदलकर सफलता चाहनेवालों के लिए यह बहुत घातक है।

अहंकार—अहंकारी व्यक्ति सफलता की सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर खड़ा रहकर ही स्वयं को सर्वोपरि समझता है। इसी भावावेश में वह सफलता से दूर रह जाता है। उसका स्वाद तक नहीं चख पाता। सर्वगुण संपन्न व्यक्ति भी जब इस अहंकार का शिकार होता है तो यदि वह सफलता के उच्च शिखर पर बैठा हो तो भी धम्म-से नीचे आ गिरता है।

अहंकार—जब व्यक्ति अत्यधिक शक्तिशाली हो अत्यधिक धनवान या किसी और कारण से दूसरों से गुणों में अधिक हो तो उसे अहंकार हो जाता है और वह विवेक खोकर गलत मार्ग अपना लेता है। इस प्रकार, अपनी भाग्य निर्माण की सफलता को भी क्षति पहुँचाने का कार्य करता है; क्योंकि भाग्य निर्माण की सफलता प्राप्त करना जितना कठिन है, उससे कई गुना अधिक कठिन है, उसे बचाकर रखना और अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखना।

अहंकार—सफलता और असफलता व्यक्ति के जीवन की दो सीढ़ियाँ हैं। असफलता व्यक्ति को सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अग्रसर करती है। व्यक्ति एक बार, दो बार या तीन बार असफल होगा। अंततः ये असफलताएँ उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगी, लेकिन व्यक्ति को स्वयं को सफलता की सीढ़ी पर चढ़ाना है, न कि सफलता के अहंकार को स्वयं पर हावी होने देना है। यदि व्यक्ति पर सफलता का अहंकार चढ़ा तो उसे अनेक दुर्गुण आ घेरेंगे और वह सफल होकर भी कुछ प्राप्त नहीं कर पाएगा।

अहंकार—स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर आप सफलता व लोकप्रियता, दोनों को अर्जित कर सकते हैं। अहंकारी अथवा घमंडी व्यक्ति को न केवल समाज, वरन् उसका अपना परिवार तथा मित्रगण तक पसंद नहीं

करते। आप कितने ही प्रतिभाशाली और योग्य क्यों न हों, यदि आप घमंडी हैं तो लोग आपको पसंद नहीं करेंगे। घमंडी व्यक्ति से व्यवहार कुशलता की उम्मीद करना बेमानी है।

आँधी—कमान उन्हीं के हाथों में होती है, नेता वही होते हैं, जो अपना मार्ग स्वयं निर्माण करते हैं और उस पर जनसमूह को ले जाते हैं। इतिहास ऐसे ही नेतृत्व को याद रखता है। अंधानुकरण कर भेड़ चाल चलनेवाले लोग कभी सफल नहीं हो सकते। सफलता की रेखाएँ उन्हीं व्यक्तियों के कपाल पर अंकित हैं, जिनके हृदय में नवीन आविष्कारों की आँधी पैदा हुआ करती है।

आंतरिक भाव—सफलता वह नहीं है, जिसको संसार सफलता बताता है। अपनी सफलता का परिणाम, अपना हृदय ही बताएगा। एक विशाल मकान की ऊँचाई संसार की दृष्टि में वही है, जो उस मकान के शिखर से पृथ्वी तक दिखाई देती है। इसी प्रकार, लोग आपके बाहरी गुण देख सकते हैं। आपके श्रम, आपके धन, आपके व्यवसाय को, आपके मकान की सजावट को देखकर लोग आपके जीवन की सफलता का माप बता सकते हैं, परंतु आपके आंतरिक भाव, आपको ही स्पष्ट दिखाई दे सकते हैं।

आकर्षण-शक्ति—वैयक्तिक आकर्षण-शक्ति पूर्णतया एक तरह का मानसिक वैशिष्ट्य है और भौतिक देह का उससे कोई संबंध नहीं है। सच में वैयक्तिक चुंबकत्व के दो ध्रुव होते हैं—शारीरिक और मानसिक। वास्तव में, एक चुंबकीय प्रभावशाली व्यक्ति को दोनों ध्रुवों का विकास साथ-साथ करना चाहिए। जब दोनों समकालिक और सुविकसित हों, तब आप वास्तव में एक चमत्कारिक व्यक्ति को उभरते देख सकते हैं। एक ऐसा व्यक्ति, जिसके भाग्य में सफलता निश्चित होती है। मानसिक चुंबकत्व उन विचार तरंगों को उत्पन्न कर सकता है, जो दूसरों को प्रभावित करती हैं। शारीरिक चुंबकत्व वह शक्ति है, जो दूसरों में उसी शक्ति को बाहर आने के लिए प्रेरित करती है।

आचरण—व्यक्ति का आचरण एवं उसके कर्म ही उसकी पहचान होते हैं। यदि हम दूसरों के हृदय में स्थायी जगह बनाना चाहते हैं तो इसका आधार हमारे ईमानदारीपूर्ण कर्म ही हो सकते हैं। महज शब्दों द्वारा अपनत्व बताना रेत पर बनी लकीरों की तरह होता है, जिन्हें सागर की हर आती-जाती लहर बनाती-मिटाती रहती है, पर कर्म पाषाण पर उकेरी आकृति की तरह होता है, जो एक स्थायी स्मृति बन जाता है। कोई भी सामाजिक गतिविधि जन सहयोग के बगैर पूर्ण नहीं हो सकती। लोग तभी हमारे साथ रहेंगे, जब उन्हें हमारी ईमानदारी पर भरोसा होगा और हमारा साथ उन्हें गरिमापूर्ण महसूस हो। बेइमानी, भय और उपेक्षा की नींव पर हम सहयोग की इमारत खड़ी नहीं कर सकते।

अहंकार—हमारी जितनी भी कोशिशें हैं, उन सबके मूल में आत्म-प्रेरणा विद्यमान है, वहाँ अवसर या मौके जैसी बातें गौण हैं। चमत्कार अथवा मौकों की तलाश में रहनेवाला व्यक्ति सफलता को अर्जित नहीं कर पाता। संकल्पबद्ध रूप से ईमानदारी व सूझ-बूझ के साथ किया गया परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। हमारे कार्यक्षेत्र से अधिक हमारा संकल्प मूल्यवान होता है। सही सोच व उत्कृष्ट संकल्प ही हमें कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर होने में मदद करते हैं।

आत्मनियंत्रण—खुद पर काबू करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन थोड़े से परिश्रम व लगातार कोशिशों से इस पर काबू पाया जा सकता है। स्वयं को नियंत्रित करने में यदि आप एक बार सफल हो जाते हैं तो फिर बड़ी-से-बड़ी अड़चनें भी आपको आपके लक्ष्य से डिगा नहीं पाएँगी।

आत्ममंथन—क्रोध, घृणा, अहम्, मोह, आसक्ति आदि ऐसे भाव हैं, जो मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति

समाप्त कर देते हैं, और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आत्ममंथन करना चाहिए।

आत्मविजय— सबसे उत्तम और महत्त्वपूर्ण विजय अपने आप पर अधिकार कर लेना है। सच्चे अर्थों में इंद्रियजनित वासनाओं, लालसाओं, क्रोध, मोह, भय इत्यादि भावों को वश में कर लेना ही आत्मविजय है। वस्तुत: हमारी वासनाएँ हमारी हीनताएँ हैं। जब तक हम अपनी वासनाओं पर विजय प्राप्त न कर लें, तब तक हम संपूर्ण मनुष्य कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। अगर हममें क्रोध है, तो फिर शत्रु की क्या आवश्यकता है? अगर हममें ईर्ष्या है, तो हमें जलाने के लिए अग्नि की क्या जरूरत है? हम बाहरी शत्रुओं और विद्रोहियों को परास्त करने के लिए दिन-रात तकरीबें ढूँढ़ा करते हैं, तंत्र और मंत्र तक जपा करते हैं, परंतु जो शत्रु हमारे अंदर ही बैठे हमारी जड़ें काटते रहते हैं, उनसे हम अपनी रक्षा नहीं कर पाते।

आत्मविश्वास— अगर कोई भी कार्य परिश्रम पूर्ण लगन और संयम के साथ किया गया हो, तब सफलता मिलना निश्चित है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भी एकाग्रचित्त होना अत्यधिक आवश्यक है। ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना हो, तो अपना सफर निचली-से-निचली सतह से प्रारंभ करो और अपने काम से जिसका संबंध हो, ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और अनुपयोगी समझकर बेकार न जाने दो, बल्कि उसका पूरी बारीकी के साथ अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करो। यह सब तभी संभव है, जब आपके पास आत्मविश्वास की पूँजी हो।

आत्मविश्वास— अपने आत्मविश्वास और चरित्र के बल पर एक साधनरहित व्यक्ति भी महान् सफलता प्राप्त कर सकता है।

आत्मविश्वास— अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहते हुए लगातार परिश्रम से अपने आत्मविश्वास को जगाया जा सकता है। इसी के बल पर अपनी संकल्पशक्ति को भी मजबूत किया जा सकता है। आत्मविश्वासी बनकर आप व्यक्तिगत सफलता तो पाएँगे ही, समाज में भी आपको सम्मान मिलेगा।

आत्मविश्वास— अपने प्रगति पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहनेवाले आत्मविश्वासी व्यक्तियों के लिए मदद के अनसोचे व अनचाहे झरने बहते हैं। अनापेक्षित व्यवधानों के चलते यदि थोड़ी सी देर के वास्ते रुकना या पीछे हटना भी पड़े तो कोई हताश होने की आवश्यकता नहीं। आत्मविश्वास के धनी मनुष्यों को पता है कि जरा पीछे हटकर पुन: दौड़ लगाकर कूदने से ही लंबी छलाँग लगाई जा सकती है। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग के तहत यदि थोड़ा-सा पीछे हटना भी पड़े तो वह संघर्ष में विजय प्राप्ति हेतु व्यूह रचना का एक अंग है।

आत्मविश्वास— आकर्षक और सम्माननीय व्यक्तित्व पाने के लिए जरूरी है कि अपने बारे में आप सही विचार रखें। दूसरे लोग उन्हें भाँप सकते हैं, जिनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है। इसके फलस्वरूप उनके साथ आपके संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। वे उनकी भी थाह ले सकते हैं, जो लगता है कि उनको नीचा समझते हैं। इससे आप उन्हें जल्दबाजी में खारिज कर देंगे। अगर आप इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि आप क्या हैं और आप क्या कर सकते हैं, तो आप दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते।

आत्मविश्वास— आज के प्रतिस्पर्धी युग में कोई भी कार्य कठिन जरूर हो सकता है, परंतु असंभव नहीं। जरूरत है तो बस आत्मविश्वास की। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति की आधी क्षमता शरीर और कौशल के साथ जुड़ी होती है, और शेष क्षमता आत्मविश्वास के सहारे टिकी रहती है, परंतु सभी इसका उपयोग नहीं कर पाते। जो करते हैं, सफलता एक-न-एक दिन उनके कदम चूमती है। आत्मविश्वास से ही व्यक्ति के भीतर की क्षमता जाग्रत् होती है। कई लोगों में योग्यता व क्षमता तो होती है, लेकिन आत्मविश्वास नहीं होता, इसलिए सफलता भी उनसे दूर रहती

है। सफलता तभी मिलेगी, जब आप अपनी क्षमताओं पर विश्वास करते हुए अटूट लगन व मेहनत से काम करें।

आत्मविश्वास— आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास सदा से मित्रता, वंश, सिफारिश तथा धन से अधिक प्रभावशाली रहे हैं। संसार में आत्मविश्वास सर्वोत्तम पूँजी है। इससे अधिकांश बाधाएँ दूर हो जाती हैं व अधिकतर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। आत्मविश्वास द्वारा जितने महान् साहस के कार्य संपन्न होते हैं, उतने अन्य किसी भी मानवीय गुण के कारण नहीं होते।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास एक अनुभूति, एक मनोभाव है, जो समय के साथ विकसित होता है। आपको या दूसरों को कठिन लगनेवाली किसी स्थिति के बारे में काररवाई करने की योग्यता आत्मविश्वास कहलाती है। जो स्थितियाँ हमें असुविधाजनक प्रतीत होती हैं, उनको सँभालने के लिए हमें आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। हालाँकि उस समय स्थिति से निपटना एक कठिन कार्य हो सकता है, लेकिन उसके परिणामस्वरूप मिलनेवाले लाभ बहुत अधिक हैं। चूँकि आपने सफलतापूर्वक कोई कठिन कार्य पूरा कर दिखाया, इसलिए अब आपको यह भरोसा हो गया है कि आप वे कार्य सँभाल सकते हैं, जो दूसरों को मुश्किल लगते हैं। लोग मुड़कर आपकी तरफ देखेंगे और आपकी सहायता को दोहराने के लिए आपसे प्रेरित होंगे। आपके उदाहरण से उन्हें यह समझने का सुखद एहसास होगा कि अगर कोई अन्य व्यक्ति ऐसा कर सकता है तो वे भी कर सकते हैं। आत्मविश्वास एक भावना है कि कोई कार्य कितना भी कठिन क्यों न हो, आप उसे पूरा करके रहेंगे और अंत में सबकुछ ठीक हो जाएगा।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास एक ऐसा प्रकाश है, जो भयंकर अंधकार में भी हमें उचित मार्ग दिखाता है। आत्मविश्वास के कारण ही भाग्य निर्माण होता है और सफलता मिलती है तथा सफलता का पूरक आत्मविश्वास है। जब भी हम कोई कार्य प्रारंभ करते हैं, तो उसमें सफलता की पूरी-पूरी गारंटी हमें कतई नहीं मिल सकती। हाँ, कार्य पूर्ण रूप होने तक मार्ग में आत्मविश्वास का दामन यदि हमने नहीं छोड़ा तो सफलता की संभावनाएँ निश्चित रूप से बढ़ जाती हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास की कमी तथा निराशा से पूर्ण मानसिक अवस्था हमारे स्वास्थ्य व सौंदर्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इससे अनेक मनोवैज्ञानिक विकृतियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। नींद में कमी, भूख न लगना, किसी भी कार्य में मन न लगना तथा चिड़चिड़ापन व खीझ आत्मविश्वास की कमी से ही उत्पन्न होते हैं। आत्मविश्वास पैदा करने के लिए अनिवार्य तत्त्व यह भी है कि हमें खुद अपना महत्त्व आँकना आना चाहिए।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास की कमी से हममें असुरक्षा और हीनता का आभास होता है। अगर हमारा आत्मविश्वास कम हो तो हमारा रवैया नकारात्मक रहता है और हम तनाव से ग्रस्त रहते हैं। नतीजतन, हमारी एकाग्रता भी कम हो जाती है और हम निर्णय लेते समय भ्रमित और गतिहीन से हो जाते हैं। इससे हमारा व्यक्तित्व पूरी तरह से खिल नहीं पाता। ऐसे में सफलता तो कोसों दूर रहती है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास की कुंजी है, आशावादी होना। जहाँ सफलता प्राप्त करने की आशा होती है, वहीं उस कार्य को करने का आत्मविश्वास होता है। आशावादी होने पर व्यक्ति में उत्साह, कार्यकुशलता, साहस आदि जैसे गुण स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं। यही गुण व्यक्ति में आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास के साथ हजारों विपत्तियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास को बढ़ाने की दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम होगा, जब हम स्वयं को मायूस कर देनेवाले व्यक्तियों व नकारात्मक परिस्थितियों से कोसों दूर रखें, क्योंकि ये हमारे आत्मविश्वास को एकदम

क्षीण कर देते हैं। इन सब के विपरीत हमें अपना उत्साह बढ़ाने के लिए खुद को सकारात्मक वैचारिक संदेश देते रहना चाहिए कि मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ, पूरा हूँ, संपूर्ण हूँ। मुझमें कोई कमी नहीं है। मैं कोई भी कार्य करने में सक्षम हूँ। मैं सही हूँ।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास चेहरे पर आत्मविश्वास का भाव हरेक को प्रभावित करता है। अगर आप अपने चेहरे पर विफलता और निराशा का भाव लिये फिरेंगे तो लोग आपसे दूर रहेंगे। अगर आपको जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और आप चिंताग्रस्त हैं, तब भी आपकी सोच और आपके चेहरे का भाव सकारात्मक होना चाहिए। दूसरों के साथ मजबूती से हाथ मिलाएँ। हाथ मिलाते हुए या बात करते समय दृष्टि-संपर्क बनाए रखें। कम बोलें और निश्चय के साथ बोलें।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास दूसरों को गलत और खुद को सही मानने की आदत असफलता की बड़ी निशानी है। अपने आगे किसी को सही न समझने वाले व्यक्ति हमेशा यह सोचते हैं कि केवल वे ही सही हैं और इसी अति आत्मविश्वास के चलते वे बार-बार असफलता का मुँह देखते हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास बढ़ाने की प्रक्रिया कोई रातोरात संपन्न नहीं होती, बल्कि धीरे-धीरे नन्हे-नन्हे कदमों को मिला-मिलाकर बनती है। इसलिए हमें धीरे-धीरे अपने को कठिन परिस्थितियों से सामना करवाकर और उन पर विजय पाकर आगे बढ़ना होगा। कई बार हम विफल होंगे, मगर हमें हार माने बिना फिर भी उसी पथ पर चलते रहना पड़ेगा।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास में बहुत शक्ति होती है। आत्मविश्वास किसी भी परिस्थिति में उचित निर्णय लेने का साहस प्रदान करता है। जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास होता है, वह अपने सामने आनेवाले हर अच्छे अवसर को पहचान लेता है और पूर्ण निष्ठा से कार्य करते हुए अपने सपनों को साकार करता है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास में वह शक्ति होती है, जिसके सहारे हम सहस विपत्तियों का सामना कर, उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास वह फौलादी किला है, जिसके समक्ष हथियारबंद भी निस्सहाय हो जाते हैं। जब हम अपने आत्मविश्वास के साथ किसी कार्य में सफलता प्राप्त करते हैं तो आगे भी वही आत्मविश्वास सफलता के लिए कार्य करता है। इस तरह हमारा आत्मविश्वास बढ़ता जाता है और वह हमारे लिए स्वाभाविक हो जाता है, अर्थात् हमारा स्वभाव वैसा ही हो जाता है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास वह हथियार है, जिसके द्वारा हम बड़े-से-बड़ा कार्य आसानी से कर सकते हैं, बड़ी-से-बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। जो आत्मविश्वास से भरपूर है, वह जीवन में अनवरत सफलताएँ अर्जित करता चला जाता है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास व्यक्ति को स्वयं में पैदा करना पड़ता है। इसे प्राप्त करने की कुंजी है—दृढ़ निश्चय। जब हम दृढ़-निश्चय से सोच लेते हैं कि हाँ, हम यह कर सकते हैं, तब अवश्य ही आप उसे कर सकते हैं, क्योंकि वह वाक्य आप नहीं आपका आत्मविश्वास बोलता है। बस, प्राप्त कर लिया आपने आत्मविश्वास और मिल गई आपको मनचाही भाग्य निर्माण की कुंजी।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वास से अधिक जरूरी है, स्पष्टता का होना। यदि आप किसी भीड़ को पार कर कहीं पहुँचना चाहते हैं, आपकी दृष्टि सही जगह पर है और आप देख पा रहे हैं कि भीड़ कहाँ खड़ी है, तो आप बहुत आसानी से बिना किसी से टकराए अपना रास्ता बनाते हुए अपनी मंजिल तक पहुँच जाएँगे। लेकिन आपकी नजर

अगर सही जगह पर नहीं है और महज विश्वास है, तो आप हर किसी से टकराते रहेंगे। लोगों को लगता है कि महज उनका आत्मविश्वास ही उनके अंदर की स्पष्टता की कमी को पूरा कर देगा, लेकिन ऐसा कतई नहीं है। मान लीजिए कि आप अपने जीवन के सभी बड़े फैसले सिक्का उछालकर करते हैं कि चित आए तो इधर, पट आए तो उधर और यदि ऐसा करने से सौ फीसदी आपको अपने सवालों के जवाब मिल जाते हों, तो फिर दुनिया में आपके लिए सिर्फ दो ही तरह के रोजगार बच जाते हैं—मौसम विभाग में भविष्यवाणी का या फिर ज्योतिष का। इसके अलावा और कोई व्यवसाय आपके लिए नहीं होगा।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वासी लोग स्वयं तो सफल होते ही हैं, साथ ही दुनिया में दूसरों के लिए अपने कार्यों के रूप में प्रेरणा छोड़ जाते हैं और उन प्रेरणाओं को केवल वे ही ग्रहण करते हैं, जिनमें सफलता प्राप्त करने की, अपना भाग्य बदलने की ललक होती है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी ओजस्वी वाणी के प्रभाव से लोगों को प्रभावित करते हैं। उनकी वाणी में वह उत्साह होता है, जिससे वे दूसरों के मन में भी वही उमंग और जोश भरकर उन्हें अपना दास बना लेते हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने कार्य को पूरा करके ही छोड़ता है।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वासी व्यक्ति की कद्र समाज में बढ़ जाती है। वे अन्य लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। लोग उन्हें नायक के रूप में देखने लगते हैं। उनकी सफलता की कहानी किसी से छिपी नहीं रहती। वे लोगों के आदर्श बन जाते हैं।

आत्मविश्वास— आत्मविश्वासी व्यक्ति के चेहरे पर सफलता की कहानी स्पष्ट पढ़ी जा सकती है। उसका चेहरा खिला-खिला अलग ही दिखाई देगा। इसके विपरीत वह व्यक्ति, जिसमें आत्मविश्वास की कमी होगी, वह शंका और निराशाओं में घिरा हुआ दिखाई देगा। उसके चेहरे पर कभी भी सफलता की मुसकान नहीं होगी।

आत्मविश्वास— आशा और आत्मविश्वास चिरसंगी हैं। समुद्र में लहरें स्वाभाविक हैं। दीप शिखा का प्रकाश से अटूट संबंध है। अग्नि में ऊष्मा होगी ही। आशावादी व्यक्ति का आत्मविश्वासी होना भी अवश्यंभावी है। आत्मविश्वास से आंतरिक शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं। इन शक्तियों को वह जिस कार्य में जुटा दे, वहीं आश्चर्यजनक सफलता दिखाई देने लगेगी। संपूर्ण मानसिक चेष्टाओं से किए हुए कार्य प्राय: असफल नहीं होते, किंतु निराशा वह मानवीय दुर्गुण है, जो बुद्धि को भ्रमित कर देती है। मानसिक शक्तियों को लुंज-पुंज कर देती है। ऐसा व्यक्ति आधे मन से डरा-डरा सा कार्य करेगा। ऐसी अवस्था में सफलता प्राप्त कैसे कर सकेगा? जहाँ आशा नहीं, वहाँ प्रयत्न के ध्येय की प्राप्ति न आज तक कोई कर सका है, न आगे संभव है।

आत्मविश्वास— ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना हो तो अपना सफर निचली-से-निचली सतह से प्रारंभ करें और अपने काम से जिसका संबंध हो, ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और अनुपयोगी समझकर बेकार न जाने दें, बल्कि उसका पूरी बारीकी के साथ अध्ययन कर ज्ञान प्राप्त करें। यह सब तभी संभव है, जबकि आपके पास आत्मविश्वास की पूँजी हो।

आत्मविश्वास— एक बार किसी कार्य को करने का लक्ष्य निर्धारित कर लेने के बाद, इसे हर कीमत तथा कठिनाई की लागत पर पूरा करें। किसी कठिन कार्य को करने से उत्पन्न आत्मविश्वास अभूतपूर्व होता है।

आत्मविश्वास— कई बार आपने देखा होगा कि सर्कस में एक व्यक्ति शेर के पिंजरे में खड़ा केवल एक हंटर हाथ में लिए हुए खतरनाक शेरों से करतब करवाता है—आत्मविश्वास के कारण। इसी आत्मविश्वास के कारण उन

लोगों में साहस का संचार होता है और वे ऐसे रोमांचक कारनामे करते हैं, जिन्हें देखकर लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते हैं। आप भी ये सब कार्य कर सकते हैं—अपने अंदर आत्मविश्वास का संचार करके।

आत्मविश्वास— कई बार यह देखा जाता है कि हम किसी कार्य को करने की क्षमता एवं योग्यता रखते हैं, परंतु हममें आत्मविश्वास नहीं होता। इस प्रकार, हम अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहते हैं।

आत्मविश्वास— काम के दबाव में थोड़ा-बहुत तनाव होना अवश्यंभावी है। यदि आपके कुछ लक्ष्य, सपने और उद्देश्य हैं और सबकुछ उनके विपरीत हो रहा है तो आप तनाव महसूस करने लगते हैं। इस तनाव की स्थिति से निकलने के लिए आपको बस इतना करना है कि आप अपने काम पर और खुद पर विश्वास रखें। आवश्यकता हो तो थोड़ा तनाव मुक्त होने का प्रयास करें और किसी और काम में मन लगाएँ।

आत्मविश्वास— किसी भी कार्य की सफलता में जितना बड़ा योगदान हमारे अभ्यास और परिश्रम का होता है, उतना ही आत्मविश्वास का भी होता है। मनोवैज्ञानिक आत्मविश्वास को प्रेरणा का ही एक आयाम मानते हैं। जितनी अधिक प्रेरणा होगी, उतना ही अधिक आत्मविश्वास और सफलता की संभावना होगी। आत्मविश्वास बढ़ाने के कई तरीके हो सकते हैं। अपने अतीत की सफल घटनाओं को याद करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। अपना कोई आदर्श भी बनाया जा सकता है।

आत्मविश्वास— कोई भी मनुष्य पैदा होते समय अधिक या कम आत्मविश्वास लेकर नहीं आता। हमारा स्वयं का कृतित्व, व्यक्तित्व तथा हमारे मन, मस्तिष्क व जीवन को प्रभावित करनेवाले कारक ही हमारी इस ऊर्जा को घटाने या बढ़ाने का काम करते हैं।

आत्मविश्वास— गलत कार्यों में लगे रहनेवाले, आपराधिक मामलों में संलिप्त, फर्जी हथकंडों से उन्नति करनेवाले, कम शिक्षित, झूठे, मक्कार व स्वार्थी लोगों में आत्मविश्वास की ऊर्जा नहीं होती। आत्मविश्वास के धनी व्यक्ति जहाँ-जहाँ जाते हैं, सभी के दिलों पर राज करते हैं। लोगों का उन पर विश्वास होता है। सभी उन पर भरोसा करते हैं। वे जो चाहते हैं, मामूली से प्रयासों से प्राप्त कर लेते हैं।

आत्मविश्वास— जिन लोगों में आत्मविश्वास की कमी होती है, वे अपने भाग्य निर्माण और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरे मन से प्रयास करते ही नहीं। संकोच करते रहने तथा डरे-सहमे रहनेवालों की किस्मत में सफलता नहीं होती।

आत्मविश्वास— जिन लोगों में आत्मविश्वास है, उन्होंने यहाँ तक पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत की है और इस यात्रा में उन्होंने कई ठोकरें भी खाई हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान हो जाता है कि उन हालात में उन्हें क्या करना चाहिए, जहाँ उन्हें दबाव में काम करना पड़ रहा है और असफलता भी हाथ लग सकती है। इस मन:स्थिति के साथ वे कठिन-से-कठिन कार्य की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेते हैं, भले ही कार्य में कितना भी खतरा या जोखिम क्यों न हो? अगर दूसरों को ऐसा लगता भी है कि वे निर्भीक हैं, तब भी सच यही है कि उन्होंने उस भय के साथ रहना सीख लिया है।

आत्मविश्वास— जिन व्यक्तियों की इच्छाशक्ति बहुत अधिक दुर्बल, अर्थात् आत्मविश्वास क्षीण हो जाता है, वे किसी सरल कार्य में भी सफलता प्राप्त करने में हमेशा वंचित रहते हैं। तभी तो विलियम जेम्स कहते हैं, "जीवन से कभी डरो मत और हमेशा विश्वास यही रखो कि यह जीवन जीने योग्य है और तुम्हारा यही विश्वास जीवन में, तथ्यों के नए निर्माण में सच्चा सहायक साबित होगा।"

आत्मविश्वास— जिन व्यक्तियों को अपनी योग्यता पर विश्वास नहीं होता, स्वयं तो दिग्भ्रमित होते ही हैं, दूसरों को

भी प्रेरणा देने के विपरीत हतोत्साहित करते रहते हैं कि "मैं इस कार्य को नहीं कर पाया। इसमें तो अनेक कठिनाइयाँ हैं।" यह सुनकर दूसरे लोग भी हतोत्साहित हो जाते हैं। उनमें भी आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। ऐसे लोग स्वयं के लिए तो घातक होते ही हैं, समाज के लिए भी घातक होते हैं।

आत्मविश्वास— जिस काम को पूरा करने में, जिसके विषय में आपको अपनी शक्तियों पर पूरा विश्वास होता है, आप उसी काम को कर सकते हैं। जो व्यक्ति यह सोचता है कि संसार में सभी व्यक्ति धनी नहीं हो सकते और अधिकांश व्यक्तियों को गरीब ही रहना पड़ेगा और मैं भी उन्हीं में से एक हूँ, तो वह व्यक्ति कभी भी धनी नहीं हो सकता। आपने प्राय: देखा होगा कि अधिकांश व्यक्ति कॉलेज से पहले ही पढ़ाई छोड़ बैठते हैं। इसका एक ही कारण उनका यह सोचना है कि वह इस योग्य कहाँ?

आत्मविश्वास— जिस व्यक्ति के पास आत्मविश्वास का अभाव होगा, वह अन्य चीजों पर किस प्रकार विश्वास उत्पन्न कर सकता है और सफलता भी ऐसे अविश्वासी व्यक्तियों से हमेशा दूर रहती है। सफलता के लिए एकाग्रता का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि आत्मविश्वास। यही सूत्र हमें सफलता की ओर ले जाता है। अत: आशा, उत्साह और आत्मविश्वास, तीनों में अगर समानता है, तब तो सफलता स्वयं कदम चूमती है।

आत्मविश्वास— जिस व्यक्ति को अपने पर विश्वास होता है, वह हर असंभव से कार्य को अपने परिश्रम और साहस से संभव बना लेता है। ठीक उसी तरह, जिस प्रकार एक कुशल घुड़सवार एक उद्दंड घोड़े को अपने प्रयासों से अपने वश में करने में सफलता अर्जित कर लेता है।

आत्मविश्वास— जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास हो, उसे सफलता पाने से कोई नहीं रोक सकता।

आत्मविश्वास— जिसमें आत्मविश्वास हो, वह उन चिंताओं और आशंकाओं से मुक्त रहता है, जिनमें दूसरे मनुष्य दबे रहते हैं।

आत्मविश्वास— जिसे अपनी छिपी हुई शक्ति प्राप्त हो जाती है, वह जानता है कि अब वह जो भी कार्य करेगा, उसमें अवश्य सफल होगा। वह इस बात की कभी चिंता नहीं करता कि अभीष्ट कार्य को करने में क्या-क्या परेशानियाँ उत्पन्न होंगी? लोग क्या कहेंगे? उसे एक ही धुन सवार होती है कि उसे सफल होना है, अपना भाग्य बदलना है। उसके इस अडिग आत्मविश्वास के समक्ष उसके साथी, उसके आलोचक, उसके दुश्मन भी झुक जाते हैं अथवा उसके साथी बन जाते हैं।

आत्मविश्वास— जीवन में आत्मविश्वास का कोई विकल्प नहीं। यह वो मास्टर चाबी है, जो सभी मनुष्यों के लिए भाग्यरूपी महल के स्वर्ण-द्वारों को खोलने का काम करती है। ध्यान रखिए, सबसे पहले हमारी सोच बड़ी बनती है, उसके बाद हम।

आत्मविश्वास— जीवन में भाग्य निर्माण और सफलता अर्जित करने के लिए आत्मविश्वास सबसे पहली व अनिवार्य शर्त है। आपको अपने गिरेबान में झाँककर देखना तथा फिर खुद पर यकीन करने का हौसला पैदा करना होगा। फिर कोई ताकत नहीं है, जो आपको आपके लक्ष्य से डिगा दे। कामयाबी के बुलंद आसमान पर उपलब्धि भरे हस्ताक्षरों के रूप में निश्चित रूप से आप चमकेंगे।

आत्मविश्वास— जो मनुष्य आत्मविश्वास की उच्च अवस्था को प्राप्त होते हैं, उनकी मानसिक क्षमताएँ व कुशलताएँ खुद-ब-खुद बढ़ जाती हैं। उनके फैसलों में विश्वास की खनक होती है, जबकि आत्मविश्वासहीन व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर बिना पेंदी के लोटे की भाँति इधर से उधर लुढ़कते रहते हैं।

आत्मविश्वास— पक्का इरादा बड़े-से-बड़े कार्य को छोटा बना देता है। आत्मविश्वास स्वयं अपने आप में आस्था

है। जब भी हम अपने मन में इस संकल्प को दोहराते हैं कि 'मैं अमुक कार्य को कर डालूँगा' तो आप निश्चित मानिए, आपका आधा काम तो तभी पूर्ण हो जाता है। आत्मविश्वास बाधाओं की तेज आँधी में भी अपने मार्ग पर डटे रहने की शक्ति का आधार है। यह सर्वमान्य सत्य है कि ऐसी कोई मुश्किल नहीं, जिसका कि कोई हल न हो सके। बाधाएँ अपने संग समाधान के संकेत भी लेकर आती हैं।

आत्मविश्वास— बहुत सी बार आपने देखा होगा कि मेलों में लोग मौत के कुएँ में मोटर साइकिल चलाते हैं। कई लोग मौत के कुएँ में स्वयं को आग की भेंट चढ़ाकर छलाँग लगाते हैं। कैसे? क्योंकि उनमें पूर्ण आत्मविश्वास भरा होता है कि वे ये कार्य अवश्य कर लेंगे।

आत्मविश्वास— बहुत से लोग जिनके जीवन के शुरुआती पारिवारिक अनुभव पूरे तौर पर धनात्मक या ऋणात्मक रहे हों, अपने बाद के जीवन में आत्मविश्वास की कमी के अधिक शिकार हो जाते हैं। यह इसलिए भी होता है कि क्योंकि पूर्ण रूप से धनात्मक अनुभव वाला बच्चा जब बड़ा होकर अपने सामाजिक जीवन में ऐसी ही इच्छाएँ धारण करता है, तो उन्हें पाने में नाकामयाब हो जाता है। इसी तरह नकारात्मक अनुभवों वाला बालक समाज में स्वयं को हीन मानकर लोगों से ठीक से घुल-मिल नहीं पाता और आत्मविश्वास की कमी का शिकार हो जाता है।

आत्मविश्वास— बाधाओं का मुकाबला करना सीखें। मन में थोड़ा भी भय उत्पन्न न होने दें। बस, आत्मविश्वास के साथ बाधाओं से भिड़ जाएँ। फिर स्वयं अनुभव होगा कि 'वह कार्य तो बड़ा आसान था, मैं तो उसे वैसे ही कठिन समझ रहा था।'

आत्मविश्वास— यदि आप में आत्मविश्वास नहीं है तो आप हमेशा न जीतने का बहाना खोज लेंगे।

आत्मविश्वास— वे लोग, जो जीवन में सफल होने के सपने देखते हैं तथा जिनके हृदय आत्मविश्वास के खजाने से लबरेज हैं, उन्हें नकारात्मक विचारों से सदैव बचना चाहिए। साथ ही, ऐसे व्यक्तियों से भी दूर रहें, जो आपको हमेशा हतोत्साहित करने की फिराक में रहते हों। समाज में ऐसे बहुत से लोग मिल जाएँगे, जो खुद तो परिश्रम करना नहीं चाहते, दूसरों को भी किसी लक्ष्य विशेष की साधना में तल्लीन देखकर मन-ही-मन कुढ़ते रहते हैं। ऐसे शुभचिंतकों से बचिए। वे न तो स्वयं ही जीवन में कुछ बन पाए हैं और न ही किसी और को कुछ बनते देख राजी होंगे।

आत्मविश्वास— व्यक्ति को अपने आत्मशासन को, अपने आत्मविश्वास को जगाना चाहिए, जिससे वह उत्साह से कार्य कर सफलता प्राप्त करे, अन्यथा वह निराशा में ऊटपटाँग कार्य करने लगता है, जो उसे असफलता की ओर धकेलते हैं।

आत्मविश्वास— सफलता के लिए आत्मविश्वास पहली व अनिवार्य शर्त है। आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास सदा से मित्रता, वंश, सिफारिश तथा धन से अधिक प्रभावशाली रहे हैं। संसार में आत्मविश्वास सर्वोत्तम पूँजी है। इससे अधिकांश बाधाएँ दूर हो जाती हैं, अधिकतर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होती है। आत्मविश्वास द्वारा जितने महान् साहस के कार्य संपन्न होते हैं, उतने अन्य किसी भी मानवीय गुण के कारण नहीं होते।

आत्मविश्वास— स्ट्रीवन एक न्यायप्रिय, नीति-निपुण व्यक्ति था। एक बार एक व्यक्ति ने उसके पास आकर पूछा, "यदि कोई आप पर हमला करे तो आप क्या करेंगे?" स्ट्रीवन ने उत्तर दिया, "मैं कुछ नहीं करूँगा।" यह सुनकर उस व्यक्ति को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "ऐसा क्यों, कि आप कुछ नहीं करेंगे?" स्ट्रीवन ने कहा, "मेरा किला बहुत सुरक्षित है। वह फौलादी दीवारों का बना है। उसे कोई भी भेद नहीं सकता, इसलिए मैं कुछ नहीं करूँगा।" वह व्यक्ति पुन: विस्मित होकर बोला, "आपका किला? आपने कब किला बनवाया? कहाँ है आपका

किला?" स्ट्रीवन ने जवाब दिया, "अरे भाई, मेरा आत्मविश्वास ही मेरा किला है, जो बहुत कम लोगों के पास होता है और जिसके पास आत्मविश्वासरूपी किला होता है, वह कभी भी स्वयं को असुरक्षित अनुभव नहीं करता। वह सर्वदा सुरक्षित रहता है। अत: कोई भी मुझ पर हमला नहीं कर सकता।" जब उस व्यक्ति ने स्ट्रीवन के आत्मविश्वास को देखा तो वह उसके समक्ष नतमस्तक हो गया। वास्तव में वह व्यक्ति विपक्षी सेना का सरदार था और स्ट्रीवन पर हमला करने के लिए वहाँ आया था, परंतु स्ट्रीवन के आत्मविश्वास को देख, वह बिना हमला किए वहाँ से चुपचाप लौट गया।

आत्मविश्वास—हम किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन पर दृष्टि डालें तो पाएँगे कि उसकी सफलता के पीछे उनका आत्मविश्वास कार्य करता है। वह किसी भी कार्य को करने पर अपने मन में शंका उत्पन्न नहीं होने देता। केवल उनके मन में यह दृढ़ विश्वास होता है कि उसे इस कार्य में सफलता प्राप्त करनी है, अपना भाग्य निर्माण करना है।

आत्मविश्वास—हमारे पास कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जो ज्यादा आत्मविश्वासी होते हैं। उन्हें अपनी क्षमताओं पर बहुत ज्यादा विश्वास होता है। इस कारण वे दैनिक जीवन में बड़ा जोखिम उठाते हैं। इससे बार-बार उन्हें हार का सामना भी करना पड़ता है। इनसान को अपनी क्षमताओं का पूरी तरह से पता होना चाहिए। उसे किसी भी भुलावे में नहीं रहना चाहिए। कई बार साधारण व्यक्ति को सच्चाई का पता होता है, पर विशेषज्ञ भूल कर जाते हैं, इसलिए उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है।

आत्मविश्वास—हमें सफलता के जिस भी मुकाम तक जाना हो, पहले हमें तय करना होता है कि हमें कहाँ जाना है और फिर वहाँ तक पहुँचने के लिए हमें पूर्व निर्धारित करना पड़ता है कि हम वहाँ तक कैसे पहुँचेंगे? सफलता प्राप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है कि हमें अपने आप पर विश्वास होना चाहिए।

आत्मविश्वास—हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि जो व्यक्ति किसी से खुलकर अपनी बात रखते हैं, उनमें आत्मविश्वास उस व्यक्ति से हमेशा अधिक होता है, जो व्यक्ति किसी भी तथ्य को छुपाकर अपनी बात रखते हैं। जिन व्यक्तियों को पढ़ पाना मुश्किल होता है, उनको पसंद करनेवालों की संख्या हमेशा उनके बनिस्वत कम होती है, जो व्यक्ति खुले विचारों के होते हैं।

आत्मविश्वास—हर कार्य को करने के पूर्व मन-मस्तिष्क में ये होना चाहिए कि हम जो कार्य कर रहे हैं या करने जा रहे हैं, उसमें पूर्ण रूप से सफलता मिलना लगभग निश्चित ही है। यदि आशा नहीं हो तो फिर उत्साह व विश्वास भी कभी-कभी क्षीण हो जाता है। सफलता के लिए मनुष्य का सर्वप्रथम अपने मन पर पूर्ण रूप से अधिकार होना चाहिए। उसके बाद उसे अपना संपूर्ण ध्यान अध्ययन की ओर ही केंद्रित करके रखना चाहिए, क्योंकि विश्वास मानव मन का सच्चा सेनापति होता है, जो उसकी आत्म क्षमताएँ, अर्थात् शक्ति को निरंतर बढ़ाते हुए उत्साह व आशा को बनाए रखता है।

आत्मशक्ति—प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में कुछ भी संभव बनाने की पर्याप्त आत्म-शक्ति रखता है, लेकिन फिर ऐसा क्यों है कि हमें अपने लक्ष्यों को पूरा करना और अपने सपनों को साकार करना कठिन लगता है? सच कहा जाए तो व्यक्ति खुद ही अपना सबसे बड़ा शत्रु है। यह सब इस पर निर्भर करता है कि अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए आप कितने आत्म-प्रेरित हैं? अगर आप अपनी आंतरिक शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास नहीं करेंगे, तब आपके लिए यह समझना कठिन होगा कि आपको किस दिशा में जाना चाहिए? खुद से बात करें और खुद को बताएँ कि आप मजबूत हैं। इसके सहारे आप अवश्य ही उस आत्मविश्वास का निर्माण कर सकेंगे। आपको स्वयं

पर विश्वास करना होगा और यह समझना होगा कि आपके अंदर वह शक्ति और साहस है, जो आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता दिखाएगा। अपने में विश्वास करें और अपने लक्ष्य का एक काल्पनिक चित्र बनाएँ। हर दिन की शुरुआत सकारात्मक कथनों से करें और अगर कुछ गलत हो जाए, तब भी उसे सही अर्थ में लें। विफलताओं से मिली सीख प्राय: सफलता की कुंजी होती है।

आत्मसंयम— इनसान ने आत्मसंयम की कमी से जितना कष्ट भोगा है, शायद ही किसी और वजह से झेला होगा। हर व्यक्ति के जीवन में कभी-न-कभी यह बुराई आ ही जाती है। हर सफल व्यक्ति को अपनी भावनाओं में एक संतुलन स्थापित करना पड़ता है। आत्मसंयम उस व्यक्ति के लिए भी एक संतुलित पहिया है, जो अति आशावादी है और जिसके उत्साह को कम करने की जरूरत है, क्योंकि यह मुमकिन है कि कोई इतना अधिक उत्साही हो जाए कि आस-पास के लोग उससे ऊबने लग जाएँ।

आत्मसंयम— जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है, उसी प्रकार हमें अपनी दूषित भावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्मसंयम रूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए।

आत्मसंयम— नकारात्मक विचारों को बहिष्कृत करने का मतलब न केवल ऐसे लक्ष्य निर्धारित करना है, जिन्हें प्राप्त किया जा सके, बल्कि एक आत्म-नियंत्रित ढंग से उनको पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाना भी है। ऐसा करने से आपका ध्यान उस कार्य पर लगा रहेगा, जो आपको पूरा करना है। आपको पता होना चाहिए कि क्या करना है और क्या नहीं। सही तरीके से सही काम करें।

आत्मसंयम— सफल व्यक्तियों पर उनके चारों ओर की घटनाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, अपने चारों ओर का घटनाक्रम अधिकतर वही तय करते हैं। वे कोई कार्य इसलिए नहीं करते हैं कि हर कोई वही काम कर रहा है, बल्कि वे उन्हीं कार्यों को करते हैं, जो कुछ दुष्कर होते हुए भी उनकी सफलता में सहायक होते हैं। वे जान-बूझकर आत्मसंयम से रहते हैं।

आत्मानुशासन— आत्मानुशासन आपके इरादों और विचारों पर विजय पाने से शुरू होती है। आप जो सोचते हैं, अगर उसे नियंत्रित नहीं करते हैं, तो आप जो करते हैं, उसे भी नियंत्रित नहीं कर सकेंगे। साधारणत: आत्मानुशासन आपको पहले सोचने और फिर आगे बढ़ने के योग्य बनाता है। आत्मानुशासन एकमात्र माध्यम है, जिसके जरिए वैचारिक आदतें नियंत्रित और निर्देशित की जा सकती हैं।

आत्मानुशासन— आत्मानुशासन का संदर्भ सिर्फ विचारशक्ति से है, क्योंकि आत्म के सारे अनुशासन दिमाग में ही जगह बनाते हैं। आत्मानुशासन के प्रयोग से विचार को प्रभावित, नियंत्रित और एक निश्चित लक्ष्य तक निर्देशित किया जा सकता है। इसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति निश्चित लक्ष्य पर दृढ़ रहकर आस्था की भावनाओं को गतिशील बना सकता है।

आत्मानुशासन— आत्मानुशासन पर मास्टरी जिसने नहीं की है, वह व्यक्ति कभी किसी और चीज का मास्टर नहीं हो सकता। आत्म-अनुशासन वह सिद्धांत है, जिसके द्वारा व्यक्ति स्वत:स्फूर्त तरीके से वैचारिक प्रवृत्तियों को आकार देकर अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के साथ तालमेल स्थापित कर सकता है।

आदत— आपने ऐसे कई लोगों को देखा होगा, जो अपनी इच्छा से किसी काम में रुचि नहीं लेते, किसी-न-किसी की स्वीकृति तलाशते रहते हैं और उसी के बाद काम करना शुरू करते हैं। उन्हें लगता है कि अगर अपनी इच्छा से कोई काम किया जाएगा तो काम में गड़बड़ हो जाएगी। इसलिए वे किसी बड़े या समझदार व्यक्ति की इजाजत या सलाह लेने के बाद ही काम करना शुरू करते हैं। कई बार इस चक्कर में काम करने में बहुत देर हो जाती है और

मनचाहा फल नहीं मिल पाता है। इस आदत को बदलें।

आदत— कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। जैसे एक व्यक्ति जब लेखक बनकर अपनी पहचान बनाना चाहता है तो उसे अपनी नींद व गप्प मारने की आदत को त्यागना पड़ेगा। नींद, आलस्य, गप्प-गोष्ठी जैसी आदतों को त्यागकर ही अपने लक्ष्य की ओर कदम उठाएँ।

आदत— खुश रहना भी एक आदत है। लगन से मेहनत करना भी एक आदत है। कोल्हू का बैल सारा दिन घूमता रहता है, लेकिन रहता वहीं-का-वहीं है। पढ़े-लिखे होने से अच्छा है, पढ़ते-लिखते रहना। दलदल में रहोगे, तो तैरना नहीं सीखोगे। ख्वाहिश को पूरा करने की कोशिश करें, ताकि भविष्य में खेद नहीं रहे कि कोशिश नहीं की थी।

आदत— जो लोग परेशानियों और अपनी आदतों के आगे जल्दी घुटने टेक देते हैं, वे असफलताओं को साथ ढोने के आदी बन जाते हैं, जिसका प्रभाव उनके वर्तमान और भविष्य, दोनों पर पड़ता है।

आदत— ज्यादातर लोग चीजों को जस-का-तस रखना चाहते हैं। वे फायदा कमाने के बजाय नुकसान होने से रोकने की जुगत में लगे रहते हैं। कई बार हमें बेहतर चीज मिलने वाली होती है, पर हम अपनी आदत के गुलाम बनकर पुरानी चीजों से ही चिपके रहते हैं।

आदत—शुरुआत में आदत एक अदृश्य धागे जैसी होती है, लेकिन जब भी हम उस काम को दोहराते हैं, तो हम उसमें एक और रेशा जोड़कर धागे को मजबूत कर लेते हैं और यह सिलसिला तब तक चलता रहता है, जब तक कि आदत मोटी रस्सी बनकर हमें कसकर बाँध नहीं लेती—हमारे विचारों और कामों को।

आदत—सफल होना भी एक आदत होती है, जो धीरे-धीरे आती है।

आदत—हमारी आदतों का कुल योग, सार तत्त्व हमारे चरित्र में ठोस जड़ जमा लेता है, जिसके फलस्वरूप हमारी आदतें या तो हमारी श्रेष्ठ मित्र हो सकती हैं या हमारे ऊपर अपना जबरदस्त कोड़ा चला सकती हैं। अच्छी आदतों को आप जितनी जल्दी अपने जीवन में ढाल लेंगे, जीवन को उतना ही अधिक सुखकर पाएँगे।

आदतों का निर्माण—दूसरों से शिकायत और भाग्य का रोना जैसी आदतों का त्याग करें। दूसरों की प्रशंसा खुले मन से करें, प्रशंसा एक ऐसा गुण है, जो सबको आपका हितैषी बना देती है। विपरीत परिस्थितियों में संयम से काम लें और धैर्यपूर्वक उनका सामना करना करें। यह सफलता प्राप्ति का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। जीवन में सिर्फ इच्छाएँ नहीं पालिए, लक्ष्य बनाइए। सोचिए, जो भी मेरे पास है, मेरे लिए खास है।

आदतें—आमतौर पर हर आदमी की अपनी कुछ ठेठ आदतें होती हैं। आपकी भद्दी आदतें दूसरों के लिए परेशानी का कारण बन जाती हैं। फिर किस तरह आप उन्हें प्रभावित करेंगे? स्वच्छता, समय की पाबंदी, अपना काम समय पर समाप्त करना, काम के प्रति ईमानदारी और निष्ठा, दूसरों की बात धैर्यपूर्वक सुनना, धूम्रपान और शराबखोरी से दूर रहना। ये कुछ ऐसी अच्छी आदतें हैं, जो आपके व्यक्तित्व को निखार देती हैं और उसे अधिक ओजस्वी बनाती हैं। आप लोगों के चहेते बन जाते हैं।

आदतें—कई आदतें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम खुद ही नहीं छोड़ना चाहते और कहते हैं कि छूटती नहीं। इनके बारे में गंभीरता से सोचें, चिंतन करें। हर समय कोई महापुरुष आपको शिक्षा देने के लिए भले ही मौजूद न हो, लेकिन उसकी बातें हमेशा आपके साथ रहती हैं।

आदर्श—अपने आदर्श तक पहुँचने के लिए आपकी आस्था व श्रद्धा आपकी बड़ी सहायता करती है।

आदर्श—अपने व्यक्तित्व को ऐसा बनाएँ कि दूसरे, आपको अपना आदर्श मानें। जब आप कठिन परिस्थितियों में भी अपना दिमागी संतुलन बनाए रखेंगे, हर हाल में खुश रहेंगे, दूसरों के सुख-दु:ख में उनकी मदद करने को हमेशा तत्पर रहेंगे तो आप किसी आदर्श व्यक्ति से कम नहीं होंगे। सोचिए, आखिर आप अपने पिता, माता या गुरु को अपना आदर्श क्यों मानते हैं? उनमें जरूर ऐसे गुण होंगे, जो हर किसी को प्रभावित करते होंगे, तो क्यों न आप भी दूसरों के आदर्श बनें?

आदर्श—महान् और उदात्त चरित्र बनाने का एक ही उपाय है कि तुम एक महान् और उदात्त आदर्श के अनुरूप जीवन बिताओ।

आनंद—यदि हम स्थायी आनंद चाहते हैं तो हमें ऐसी वस्तुओं का मोह त्यागना होगा, जो किसी भी समय हमसे अलग हो सकती हैं।

आनंद—वही सफल होता है, जिसका काम उसे निरंतर आनंद देता है।

आभार ज्ञापन—दूसरों के पास जो कुछ है, उसे देखकर ईर्ष्या करना बहुत आसान है। दूसरे के पाले की घास वैसे भी अधिक हरी दिखाई देती है। कृतज्ञता सीखना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन चीजों के बारे में सोच-विचार करना सीखें, जिनके लिए आपको आभार मानना चाहिए।

आलस्य—आलस्य व्यक्ति का महाअवगुण है, जो उसकी सफलता को असफलता में बदलने में महत्त्वपूर्ण

भूमिका निभाता है। आलस्य एक रोग की भाँति है, जो एक बार व्यक्ति को जकड़ ले तो बहुत मुश्किल से छोड़ता है। आलसी व्यक्ति प्राय: भाग्य पर विश्वास करते हैं। वे इस भरोसे हाथ पर हाथ रखे बैठे रहते हैं कि भाग्य में जो होगा, मिल जाएगा। इसके लिए इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन जब तक व्यक्ति कर्म नहीं करता, तब तक उसे वह नहीं मिलता, जो वह चाहता है।

आलस्य— व्यक्ति व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचकर, चिंता-मुक्त होकर कार्य करे तो आलस्य में कभी नहीं घिरता, क्योंकि इससे उसका चित्त एकाग्रता प्राप्त कर कार्यों में लगता है और वह ताजगी अनुभव करने लगता है। आलस्य से बचने का सरल उपाय है, व्यर्थ के काम से बचें। ये चिंता के अतिरिक्त कुछ नहीं देते। निरंतर अच्छे कार्यों में लगे रहें। इससे आलस्य दूर होगा, आपके गुणों का विकास होगा, अवगुण दूर होंगे और सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।

आलोचना— आपके कार्य की कई बार आलोचना की जाती है। यह आलोचना आपको अवसर प्रदान करती है— अपनी कार्य-क्षमता में सुधार लाने का। गलतियाँ सभी से होती हैं, मगर सफलता उन्हीं को मिलती है, जो गलतियों से सीखते हैं। जीवन में आपको ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे, जो आपकी सदैव आलोचना करेंगे। वे आलोचना करने के लिए ही बने हैं। इन सभी बातों को नजरअंदाज करते हुए अपने काम को साबित करने का प्रयास करें। अपने ऊपर गलतियों को हावी न होने दें। आगे बढ़कर काम सीखने और उस पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करें।

आलोचना— जब कोई आलोचना करनेवाला न हो, तब भी आलोचना का भय बना रहता है, क्योंकि यह कल्पना के नकारात्मक इस्तेमाल के कारण हमारे दिमाग में ही सेट हो जाता है।

आशा और आत्मविश्वास— जिस व्यक्ति में सफलता के लिए आशा और आत्मविश्वास है, वही उच्च शिखर पर पहुँचता है।

आशा— आशा और आत्मविश्वास से ही हमारी शक्तियाँ जाग्रत् होती हैं। इनसे हमारी उत्पादन शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

आशा— आशा मनुष्य के लिए अमृत के समान है। जिस प्रकार पेड़-पौधों को सूरज से जीवन मिलता है, उसी प्रकार आशा से मनुष्य में नए उत्साह का संचार होता है।

आशा— आशा व्यक्ति का शुभ संकल्प है। प्राणियों में वह अमृत है। जैसे सारा वनस्पति जगत् सूर्य से प्रेरणा पाता है, वैसे ही व्यक्ति में आशाएँ ही पूर्ण शक्ति का संचार करती हैं। व्यक्ति की प्रत्येक उन्नति, जीवन की सफलता जीवन लक्ष्य की प्राप्ति का संचार आशाओं द्वारा होता है। आशाएँ न होतीं तो संसार नीरस अव्यक्त और निश्चेष्ट-सा दिखाई देता।

आशा— संसार के सारे कार्य आशाओं पर चलते हैं। विद्यार्थी अपना समय, धन लगाकर दिन-रात श्रमपूर्वक अध्ययन में लगा रहता है। अध्यापकों की झिड़कियाँ सुनता है, अपना सुख-चैन सभी छोड़कर केवल ज्ञानार्जन में लगा रहता है, इसलिए कि वह पढ़-लिखकर सभ्य, सुशिक्षित नागरिक बनेगा। देश-जाति के उत्थान में भागीदार बनेगा। सम्मानपूर्वक जीवन जिएगा। खेत-खलिहानों से लेकर कारखानों तक में जितने भी व्यवसाय फैले हैं, उनके मूल में कोई-न-कोई आशा ही क्रियाशील होती है।

आशा— आशा से ही आसमान टिका है। जब तक आप आशावान रहेंगे, तब तक वास्तव में आपके सिर पर आसमान टिका दिखाई देता रहेगा, लेकिन जब आप आशा का साथ छोड़ देंगे, उसी दिन आपके सिर पर टिका हुआ आसमान आपके ऊपर ही गिर जाएगा और आप नष्ट हो जाएँगे, असफल हो जाएँगे। सफलता का दूसरा नाम

आशा है। किसी भी कार्य के लिए आशावान होना जरूरी है, तभी आप सफल हो सकते हैं। सफलता की कुंजी है —आशा।

आशा— आशाएँ जीवन का शुभ लक्षण हैं। इनके सहारे व्यक्ति घोर विपत्तियों में दुश्चिंताओं को हँसते-हँसते जीत लेता है। जो केवल दुनिया का रोना रोते रहते हैं, उन्हें अर्द्धमृत ही समझना चाहिए, किंतु आशावान व्यक्ति पौरुष के लिए सदैव लगनशील रहता है। वह अपने हाथ में फावड़ा लेकर टूट पड़ता है, खेतों में मिट्टी से सोना पैदा कर लेता है। आशावान व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता है। वह औरों के आगे अपना हाथ नहीं बढ़ाता, बल्कि औरों को जीवन देता है।

आशा— जब व्यक्ति कोई कार्य करता है तो कई बार उसके समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न होती हैं कि अब वह यह काम नहीं कर पाएगा; यह तो बहुत कठिन है; इसे करना असंभव है, किंतु उस क्षण उसकी उस काम के प्रति आशा-आस्था, उसे वह शक्ति प्रदान करती है, जो उस कार्य को सफल बनाने के लिए आवश्यक होती है और वह उस कार्य को कर जाता है।

आशा— जिस व्यक्ति के मन में अपने लक्षित कार्य के प्रति जब तक आशा नहीं होती, तब तक वह कुछ नहीं करेगा, हाथ-पर-हाथ रखकर बैठा रहेगा। उसके मन में उत्साह समाप्त हो जाएगा। उसका आत्मविश्वास खत्म हो जाएगा और धीरे-धीरे वह नष्ट हो जाएगा, अर्थात् जीवन में असफलता के अतिरिक्त उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

आशा— जीवन में कितने भी अंधकारमय क्षण क्यों न आएँ, सब थोड़ी देर ठहरकर चले जाते हैं और फिर नई आशा की किरणें चमकने लगती हैं।

आशा— निराशा से बचने का एकमात्र उपाय है, अंत:करण में आशा की चेतना का जागना।

आशावाद— आशा वह गुण है, जो व्यक्ति को उसके परिश्रम के साथ बाँधे रखता है। जब व्यक्ति कोई कार्य प्रारंभ करता है तो आशा करता है कि उसे लक्षित कार्य का सुपरिणाम मिलेगा। परिणाम की अपेक्षा में ही वह परिश्रम करता है। उसकी यही आशा उसे कर्मशील बनाती है। आशा के कारण ही उस कार्य में उसकी आस्था होती है।

आशावाद— अगर हम सिर्फ यही मानकर बैठे रहेंगे कि दुनिया एक बेहतर जगह है, यहाँ कोई समस्या नहीं है तो हम संभावित खतरों की समय रहते तैयारी नहीं कर पाएँगे। अगर हम दुनिया के हर रूप को सही तरह से स्वीकार नहीं करेंगे, तो परेशान होते ही रहेंगे। इसलिए ज्यादा आशावादी न होकर बस कार्य में लगे रहना चाहिए।

आशावाद— आशावादी व्यक्ति परिस्थितियों से घबराता नहीं, पर निराश व्यक्ति के जीवन में छोटा सा झटका लगा, बस पाँव ढीले पड़ गए, चिंताओं ने आ दबाया। कई बार तो ऐसे व्यक्तियों के हार्टफेल भी हो जाते हैं।

आशावाद— ऐसे अनेक सफल व्यक्ति हैं, जिनकी सफलता का राज उनका आशावान एवं प्रसन्नचित्त होना है। उन सफल व्यक्तियों के मुखमंडल पर हमेशा प्रसन्नता रहती है, और यही गुण उन्हें सबसे अलग करता है। आशा से ही आस्था उत्पन्न होती है। व्यक्ति की आस्था ईश्वर में है, क्योंकि उससे उसे आशा है। यह आशा उसे ईश्वर के प्रति आशावान बनाती है।

आशावाद— कभी निराश न हों, हार न मानें। आप चाहे कुछ भी करें, आपको कभी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अगर आप प्रत्येक सफल व्यक्ति की जीवनी पढ़ें, तो आपको पता लग जाएगा कि कभी आशा न छोड़ना उनकी सफलता का एक मंत्र रहा। अगर आप हार मान लेंगे तो सफल होने के उद्देश्य से आपके द्वारा खर्च की गई सारी शक्ति और पहले किया गया सारा प्रयास विफल हो जाएगा। अत: अपने निश्चय पर अटल रहें और कभी आशा न छोड़ें, भले ही स्थिति कितनी भी कठिन हो जाए।

आशावाद—जो व्यक्ति आशावादी होता है, वही अपना भाग्य स्वयं बदल पाता है, सफलता प्राप्त करता है। जो आशावादी होगा, वही किसी भी कार्य को करने का बीड़ा उठा सकेगा और पूर्ण आत्मविश्वास से उस कार्य को करेगा।

आशावाद—प्रसन्न रहनेवालों के मुकाबले निराशावादी लोग शीघ्र रोगग्रस्त होते हैं। ऐसे लोग अपने मानसिक तनाव के कारण स्वयं तो दु:खी होते ही हैं, अपने परिवार के सदस्यों तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को भी अपने व्यवहार से दु:खी कर देते हैं जबकि आशावादी लोग अपने दृढ़ संकल्प, कठोर श्रम एवं आत्मविश्वास से जीवन में जिस वस्तु को पाना चाहते हैं, पा ही लेते हैं। ऐसे लोगों के निर्णय अपने स्वविवेक पर आधारित होते हैं। वे सुनते तो सभी की हैं, किंतु करते अपने मन की हैं।

आशावाद—बहानेबाजी या टालते रहने की प्रवृत्ति मनुष्य को अकर्मण्य बना देती है। समस्या का समाधान करें। घबराएँ नहीं। असफलता ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। निरंतर प्रयास करते रहें। सदैव सकारात्मक विचार अपनाएँ, आशावादी बनें क्योंकि निराशावादी विचारधारा ही व्यक्ति को कुंठित कर असफलता की ओर धकेलती जाती है।

आशावाद—व्यक्ति के हृदय में किसी के प्रति, किसी कार्य के प्रति जितनी अधिक आशा होती है, उसकी उसके प्रति आशा भी उतनी ही अधिक गहरी होगी। यही आस्था उसे यह प्रेरणा देती है कि जो कार्य करो, उसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आशावाद—व्यक्ति जब कोई कार्य प्रारंभ करता है और यदि वह आशावान है, तो उसके समक्ष कैसी भी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाएँ, आशा की बस एक किरण उस कार्य को सफल बनाने के लिए पर्याप्त होती है और अंतत: वह सफल होता है। आशावादी व्यक्ति के चेहरे पर चमक स्पष्ट देखी जा सकती है। वह प्राय: अपने कार्य के प्रति आशावान होता है और उसे पूर्ण निष्ठा से करता है।

आशावाद—व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं, वह अपनी किस्मत को लिखनेवाला खुद है, पर यह तभी संभव है, जब वह आशावादी हो। आशावादी व्यक्ति किसी भी काम को शुरू करने से पहले उस पर गंभीरता से विचार करते हैं। अपनी क्षमता और कमजोरियों को ध्यान में रखकर योजना बनाते हैं। राह में आनेवाली मुश्किलों का हल खोज निकालते हैं, आवश्यक साधन जुटाकर फिर पूरी लगन व मेहनत से जुट जाते हैं, जिससे मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियाँ भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पातीं और आखिर में सफलता उनके कदम चूमती है।

आशावाद—सीधी बातचीत मित्रता बनाए रखने का श्रेष्ठ तरीका है। हर दिन की शुरुआत सुखद, संतुष्ट व सुखी नजरिए से कीजिए। आप पाएँगे कि आपका दिन सुखद व सफल गुजरेगा। सफलता के लिए इंतजार करना आना चाहिए। पौधे से फल की इच्छा रखना मूर्खता से अधिक कुछ भी नहीं है। असफलता सफलता प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

आशावादी लोग हर खतरे में भी अवसर देखते हैं और निराशावादी लोग हर अवसर में खतरा देखते हैं।

आस्था—अवचेतन मस्तिष्क को आस्था की बदौलत मनुष्य के दिमाग के साथ जोड़कर मन में विश्वास पैदा किया जा सकता है कि वह एक पूर्ण व्यक्ति है और सक्षम है। जो कुछ व्यक्ति मन में सोचता है और पाना चाहता है, वह आस्था से हासिल करना संभव हो जाता है।

आस्था—आस्था का मार्ग पकड़नेवाले व्यक्ति का दिमाग भरोसे से भरा रहता है और वह थोड़े ही समय में खुद को अवसर के अनुकूल ढाल लेता है। आस्था की शक्ति जिस गति से काम करती है, उसी से बहुत लोगों के इस

विश्वास को बल मिला है कि कुछ निश्चित बातें तो चमत्कार का परिणाम हैं।

आस्था— आस्था व विश्वास के जरिए पहचानी जानेवाली अंदर की ताकत रोज व्यक्तिगत उपलब्धि का एक नया अवसर लेकर आती है और बीते कल की किसी असफलता की चिंता दूर कर देती है। आस्था व्यक्ति को प्रकृति के रहस्यों की गहराई का ज्ञान देती है। इससे प्राकृतिक नियमों में व्यक्त प्रकृति की भाषा समझी जा सकती है।

आस्था— भलीभाँति समझी हुई आस्था किसी आपात् स्थिति में प्रकट होती है, जो मनुष्य को अपनी विकट समस्या का निदान सामान्य वैचारिक शक्ति से उत्तर ढूँढ़ने को विवश करती है। आस्था ऐसी शक्ति है, जिसका विश्लेषण करने में वैज्ञानिक भी मात खा चुके हैं, लेकिन इसे अपनाने की विधि बड़ी आसान है और जिसे कोई भी साधारण सा व्यक्ति विनम्रतापूर्वक समझ सकता है। यह एक प्रकार से साझा संपत्ति है।

इंद्रिय-लोलुपता— संसार में जितने भी दु:ख होते हैं, उनमें से अधिकांश इंद्रिय-लोलुपता के कारण ही होते हैं। जब तक हम इंद्रियों की उत्तेजना से दबते या प्रेरित होते रहेंगे, तब तक हमें लालसाएँ सताए बिना नहीं रहेंगी और जब तक मन संतप्त रहेगा, उसे स्थायी सुख नहीं मिल सकता। हमारी इंद्रियाँ चंचल घोड़े की तरह हमें मनमानी राह पर ले जाना चाहती हैं। जब तक कि इस घोड़े को हम वश में करके राह पर नहीं लगाएँगे, तब तक अपनी जीवन यात्रा को सफल नहीं बना सकते। अनेकानेक धर्मों में जो कुछ तप, व्रत, योग इत्यादि की, साधनाएँ निर्धारित की गई हैं, वे जीवन यात्रा को सफल बनाने के लिए ही की गई हैं। अपने पुरुषार्थ, उद्यम, साहस, संलग्नता, विवेक इत्यादि गुणों से जो कुछ भी हम आर्थिक या आध्यात्मिक लाभ उठाते हैं, उसे इंद्रिय-लोलुपता नष्ट कर देती है।

इच्छा— ऐसी कोई भी चीज, जिसके विषय में सोचने भर से हम अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं, वह हमारे जीवन निर्माण की पूँजी बन सकती है। हम एक कॉपी व पेंसिल लेकर अपनी उन चीजों को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध कर सकते हैं। इन इच्छाओं को एक साथ लिखने का लाभ यह होगा कि हमें अपने स्वभाव, अपनी अपेक्षाओं, अपनी आकांक्षाओं तथा अपने सपनों से परिचित होने का मौका मिलेगा।

इच्छा— सफल होने के लिए सफलता की इच्छा असफलता के भय से अधिक होनी चाहिए।

इच्छा-पूर्ति— जिन इच्छाओं को हम पूरी होते देखना चाहते हैं, उनके लिए हमें सौ प्रतिशत क्षमताओं के उपयोग का कमाल अपने व्यक्तित्व में पैदा करना होगा, तब कोई ऐसी वजह नहीं कि जो आपने सोचा हो वह पूरा न हो, देर-सवेर आप अपने सपनों को सच कर ही ले जाएँगे।

इच्छाशक्ति और सफलता— इच्छाशक्ति पर और इच्छाशक्ति का सफलता पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे सफलता प्राप्त होती है, इच्छाशक्ति भी उतनी ही बढ़ती जाती है और जैसे-जैसे इच्छाशक्ति दृढ़ से दृढ़तर होती जाती है, वैसे-वैसे सफलता सुगम होती जाती है। ऐसा कहना अनुचित न होगा कि सफलता और इच्छाशक्ति आपस में एक-दूसरे की पूरक हैं। यदि कोई मनुष्य किसी कार्य प्रणाली के अनुसार कार्य करने के लिए पक्का विचार कर ले, तो वह दाईं या बाईं तरफ मार्ग में नहीं घूमेगा, चाहे उस राह में कितने ही प्रलोभन क्यों न ललचाएँ। वह व्यक्ति अपने लक्ष्य पर सदैव नजर रखेगा।

इच्छाशक्ति— आपका माथा, और हाथ दोनों ही आपकी किस्मत को बनाने और बिगाड़ने वाले हैं। आप माथे अर्थात् मस्तिष्क से सोचें, योजनाएँ बनाएँ, उन्हें पूरा करने के लिए विश्वास जगाएँ, उन्हें प्राप्त करने की दृढ़ इच्छाशक्ति जगाएँ, हाथों से अपनी सोच एवं योजनाओं पर अमल करने का प्रयास करें। फिर देखें, आपका भाग्य कैसे नहीं बदलता?

इच्छाशक्ति— लक्ष्य प्राप्ति के लिए यह जरूरी है, अदम्य इच्छाशक्ति का होना। इच्छाशक्ति ही व्यक्ति को उसके

लक्ष्य तक लेकर जाती है। चाहे रास्ता कितना ही लंबा क्यों न हो, चाहे कितना ही त्याग क्यों न करना पड़े, इच्छाशक्ति ऐसी ऊर्जा या ताकत है, जो व्यक्ति को उसके उद्देश्य तक अवश्य पहुँचाती है। जीवन में गंभीर चुनौतियाँ क्यों न हों, यदि व्यक्ति में चुनौतियों का सामना करने की इच्छाशक्ति है तो कुछ भी असंभव नहीं है। प्रबल इच्छाशक्ति रखनेवाला कोई भी व्यक्ति कार्य-कुशल बन सकता है। इच्छाशक्ति सफलता की कुंजी है। इसलिए अपने भीतर इसे पैदा करें। इच्छाशक्ति के बल पर ही साहसी, परिश्रमी एवं धुन के पक्के लोग विश्व कीर्तिमान रचते हैं।

इच्छाशक्ति— ऐसे लोगों से संबंध बनाएँ, जो आपकी तरह महत्त्वाकांक्षी व परिश्रमी तथा सच्ची व दृढ़ इच्छाशक्ति वाले हों। निराश व्यक्ति का साथ निराशा ही देगा। निराशा सफलता की घोर दुश्मन है।

इच्छाशक्ति— दुनिया में बहुत से चमत्कार घटित होते हैं। वे सब इनसान के विचार और इच्छाशक्ति के बल पर घटित हो पाते हैं। कहते हैं कि जब आप किसी चीज को शिद्दत से चाहते हो तो सारी कायनात उसे पाने में आपकी मदद करती है। जो लोग अपनी जिंदगी में कुछ असाधारण या खास करते हैं, क्या उन सबमें कोई असाधारण या दैवीय-शक्ति होती है? सब में तो नहीं हो सकती, फिर साधारण से दिखनेवाले लोग भी असाधारण से काम को कैसे कर पाते हैं? यह सब संभव हो पाता है, उनकी सोच और उनके विचारों की शक्ति के बल पर।

इच्छाशक्ति— दृढ़ रहने की इच्छाशक्ति अकसर सफलता और असफलता के बीच का अंतर होती है।

इच्छाशक्ति— यदि आज आप थोड़े से भी सफल हैं, तो आप उस विषय में सोचें, जब आपने यहाँ तक पहुँचने के अवसर को चुना और यहाँ तक पहुँचे। कोई अवसर कितनी विशेष उपलब्धि दिलाएगा, पहले से ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता। आपमें इच्छाशक्ति है, काम करने की लगन है तो आपको किसी भी अवसर से लाभ उठाने से कोई नहीं रोक सकता। अवसर तो ईश्वर की कृपा-रूपी बहती सरिता है। इसमें डुबकी लगाकर अपने जीवन को सफल एवं धन्य क्यों नहीं बना लेते? अवसर न मिलने का रोना कौन लोग रोते हैं, पहले इस तथ्य पर गौर करें। ऐसा करनेवाले वही लोग हैं, जो निर्बल हैं। जो संशय में जीते हैं। जो हीनता से ग्रस्त हैं, दब्बू और डरपोक हैं।

इजाजत— उठो, मुकाबला करो और जीतो। सफलता प्राप्त करने के लिए तुम्हें न तो किसी से इजाजत की जरूरत है और न ही किसी की सिफारिश की।

इरादा— किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हमारे इरादे फौलाद की तरह पक्के होने चाहिए। हम एक बार जो करने की ठान लेते हैं और पूरी मेहनत से उसे करते हैं, पर उसके बीच में हमें कई परेशानियाँ आती हैं। उस समय हमें उन परेशानियों से लड़ना चाहिए। हार नहीं माननी चाहिए।

इरादा— जहाँ असफल लोग सोते हैं, वहीं सफल लोग रोज अपने नए-नए इरादों के साथ आगे बढ़ते चले जाते हैं। जब दूसरे लोग विदेशों में घूम रहे होते हैं, तब ऐसे लोग दिन-रात काम करते हैं। सुबह के समय जल्दी उठकर पूरी सुबह को ही अपने कब्जे में कर लें, ताकि आप अच्छे-से-अच्छा काम कर सकें। एक स्वस्थ नाश्ते की तरह अपने शरीर को बनाएँ और एक अच्छी किताब की तरह अपने मस्तिष्क को बनाएँ। जब दुनिया में बाकी लोग पलंग पर आराम कर रहे होते हैं, तभी आपको अपने ये सारे काम कर लेने चाहिए और सुबह को अपने कब्जे में कर लेना चाहिए।

ईमानदारी एवं निष्ठा— किसी भी कार्य को पूरी ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक मन लगाकर करें, बोझिल मन से नहीं। अपने कार्यों का जुड़ाव इस तरह बनाएँ, जिससे कि आप उन्हें बिना किसी दबाव के खुशी-खुशी कर सकें। अपने अनुभवों से जो कुछ सीखा और समझा है, उस पर विश्वास करें।

ईमानदारी—ईमानदारी व्यक्ति का सर्वोत्तम गुण है। उसकी ईमानदारी उसकी प्रतिष्ठा से प्रदर्शित होती है। उससे ही वह समाज में प्रशंसनीय बनता है। व्यक्ति को सर्वप्रथम स्वयं के प्रति ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी दूसरों को धोखा देने के चक्कर में वह स्वयं को ही धोखा देता है।

ईमानदारी—ईमानदारी व्यक्ति के चरित्र को प्रदर्शित करती है। ईमानदार व्यक्ति में आत्मविश्वास झलकता है। वह जो भी कार्य करता है, उसमें सफलता का उसे पूर्ण विश्वास होता है, जबकि वह व्यक्ति जो ईमानदार नहीं होगा, चापलूस होने के साथ-साथ दब्बू किस्म का भी होता है। उसके किसी भी कार्य में आत्मविश्वास की कमी होगी। वह किसी भी कार्य को करने से पूर्व सोचेगा कि वह यह काम किसकी सहायता से कर सकता है? और जब वह उस प्रकार के व्यक्ति को खोज लेगा तो उसकी चापलूसी में लग जाएगा। व्यक्ति के अंदर यह दुर्गुण उसकी असफलता की निशानी है।

ईमानदारी—कोई भी सामाजिक गतिविधि जनसहयोग के बगैर पूरी नहीं होती। यदि हम दूसरों के दिल में स्थायी जगह चाहते हैं तो इसका आधार हमारे ईमानदारीपूर्ण काम से ही मिल पाता है।

ईमानदारी—लोग अपने विषय में बढ़ा-चढ़ाकर बात करते हैं, जबकि वे कुछ होते नहीं हैं। इस प्रकार, वे स्वयं के प्रति ही ईमानदार नहीं होते, फिर दूसरों के प्रति ईमानदारी की बात तक सोचना बेमानी होगा। इस प्रकार, सफल होने की बात तो समाप्त ही हो गई। इसलिए सर्वप्रथम स्वयं के प्रति ईमानदार होना अति आवश्यक है।

ईर्ष्या—ईर्ष्या वह खतरनाक और नशीला कीड़ा है, जो व्यक्ति को एक बार काट ले तो वह हमेशा उसी के मद में चूर रहने लगता है और केवल दु:ख-ही-दु:ख प्राप्त करता है, क्योंकि वह केवल दूसरों को उन्नत देखकर परेशान रहता है। दूसरा सुखी है तो उसके प्रति ईर्ष्या है; दूसरा सुंदर है तो ईर्ष्या है; मेरी तरक्की क्यों नहीं हो रही, उसकी हो रही है तो उसे ईर्ष्या है। उसकी सबसे मित्रता है, वह सबसे अच्छा व्यवहार करता है, सभी उसे चाहते हैं, मुझे नहीं, तो उसे ईर्ष्या है। क्यों नहीं आप स्वयं भी वैसे ही बनें, जिससे आपको किसी से ईर्ष्या करने की आवश्यकता ही नहीं पड़े।

ईर्ष्या—ईर्ष्या व्यक्ति को अंदर-ही-अंदर अग्नि के समान जलाती रहती है। ईर्ष्या की अग्नि व्यक्ति को क्रोधी बना देती है। वह व्यक्तियों को नीचा दिखाने के अवसर ढूँढ़ता रहता है।

ईर्ष्या—छोटी-छोटी बातों से व्यक्ति के मन में ईर्ष्या के भाव पैदा होते हैं और वे धीरे-धीरे भाव विकराल रूप भी धारण कर सकते हैं। ईर्ष्या का भाव व्यक्ति के विचारों को मलिन करता है। उसके मन में गलत विचार पैदा होते हैं। गलत विचार व्यक्ति को गलत मार्ग पर ले जाते हैं। व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या तब करता है, जब वह दूसरों से गुणों में कमजोर हो। अपने अवगुणों के कारण वह सफल नहीं होता तो दूसरों की उन्नति को सहन नहीं कर पाता और उसके मन में ईर्ष्या घर कर जाती है। ईर्ष्या के इस भाव से तभी बचा जा सकता है, जब असफल व्यक्ति दूसरों के गुणों को देखे, उन्हें अपनाए, उनसे प्रेरणा लेकर कार्य करे।

उज्ज्वल पक्ष—स्थितियाँ कितनी भी नकारात्मक क्यों न हों, हमें उनमें उज्ज्वल पक्ष खोज निकालना ही चाहिए। जीवन-संग्राम के विस्तारित अध्यायों पर गौर करें तो स्पष्ट होता है कि जो लोग किसी भी तरह की आस्था को जिंदा रखते हैं, वे बुरी-से-बुरी परिस्थितियों को हँसते-हँसते झेल जाते हैं।

उत्तरदायित्व—जिस व्यक्ति को दुनिया में कुछ करना है, उसे उत्तरदायित्व से नहीं घबराना चाहिए। उत्तरदायित्व वही व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, जो असफलता झेलने और लोकमत के नियमों का खंडन सहन करने का साहस रखता है।

उत्साह और जोश—अपने डर को पहचानें और उससे दूरी बनाने का प्रयास करें। अपनी असुरक्षा दूर करें। उत्साह और जोश सफलता दिलाते हैं। ऐसे में कदम आगे बढ़ना आपकी क्षमताओं को बढ़ाता है। किसी नए कार्य को करने का मन बनाएँ और इसके लिए पहल करें। कितने ही लोग अपनी क्षमताओं पर यकीन न करने के कारण अपने अच्छे विचारों को बेकार और अनुपयोगी साबित कर देते हैं।

उत्साह—उत्साह और आत्मसंयम तथा पाने से ज्यादा करने की आदत के नियमों को अपनाने के बाद ही आप दूसरों से सहयोग की उम्मीद कर सकते हैं। उत्साह वह प्रेरक बल है, जो न सिर्फ उन लोगों को शक्ति प्रदान करता है, जिनमें यह मौजूद होता है, बल्कि जो लोग ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आते हैं, उनमें भी जोश भर देता है।

उत्साह—उत्साह वह गुण है, जो यह प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति में कितनी ऊर्जा है? किसी भी कार्य को करने के लिए व्यक्ति में भरपूर उत्साह होना चाहिए। बिना उत्साह के किया जानेवाला कार्य अनुचित परिणाम देता है। उत्साह व्यक्ति का वह महत्त्वपूर्ण गुण है, जो दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास, धैर्य, विवेक आदि जैसे उसके अन्य गुणों को दुगुना कर देता है, जिससे वह व्यक्ति बिना बाधा के कार्य को करता जाता है और सफल होता है।

उत्साह—उत्साह वैसी स्थिति है, जो व्यक्ति को दूसरों का सहयोग लेने में मदद तो करती ही है, साथ ही व्यक्ति को अपनी कल्पना शक्ति की ओर खींचने और उसके इस्तेमाल को भी उत्प्रेरित करती है। उत्साह सकारात्मक कल्पना का आधार है। इससे काम की नीरसता खत्म हो जाती है।

उत्साह—कोई भी कार्य उत्साह और सकारात्मक सोच के साथ प्रारंभ करना चाहिए। निरुत्साह से प्रारंभ किए जाने वाले कार्य का परिणाम क्या होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

उत्साह—कोई भी कार्य उत्साह से किया जाना चाहिए। उसके प्रति सदैव सकारात्मक सोच रहनी चाहिए। तब उत्साह का संचार स्वत: होता है, किंतु किसी को हतोत्साहित कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह जितना प्रयास करता है, हतोत्साहित किए जाने पर और नीचे चला जाता है। हतोत्साहित करने पर व्यक्ति को निराशा, हीन भावना आदि दुर्गुण घेर लेते हैं, जो उसे जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं देते। भाग्य निर्माण व सफलता प्राप्त करने के लिए उत्साह से कार्य करें और दूसरों को भी उत्साहित करें। सफलता निश्चित मिलेगी।

उत्साह—जीवन के हर क्षेत्र में कामयाब लोग उत्साही प्रवृत्ति के होते हैं। उत्साह वह प्रेरक बल है, जो न सिर्फ उन लोगों को शक्ति प्रदान करता है, जिनमें यह मौजूद होता है, बल्कि जो लोग ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आते हैं, उनमें भी जोश भर देता है। उत्साह से काम की नीरसता खत्म हो जाती है। यह देखा गया है कि गड्ढे खोदने का मेहनती काम करनेवाले मजदूर भी गाने गाकर काम के उबाऊपन को खत्म कर देते हैं। उत्साह मूल्यवान हो इसके लिए जरूरी है कि वह नियंत्रित और निश्चित लक्ष्यों की ओर प्रेरित हो। अनियंत्रित उत्साह आमतौर पर विनाशकारी होता है।

उत्साह—जो लोग अपने पसंदीदा काम में जुटे हैं, वे सबसे जल्दी सफलता हासिल करते हैं और इसकी वजह है कि जिस काम को वे पसंद करते हैं, उसे लेकर वे बेहद उत्साहित रहते हैं। उत्साह सकारात्मक कल्पना का आधार है। जब दिमाग उच्च दर से कंपन करता है, तो यह बाहर से आनेवाली उच्च दर के कंपन को स्वीकार करता है और इस प्रकार सकारात्मक सोच का एक माहौल तैयार होता है।

उत्साह—निरुत्साह से किया जाने वाला कार्य कभी पूरा नहीं होता, क्योंकि उसका प्रारंभ ही उचित नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति उत्साह से कार्य करता है तो वह केवल स्वयं ही कार्य नहीं करता, अपितु उसे देखकर अन्य लोगों का भी उत्साह बढ़ता है कि वे भी ऐसा कर सकते हैं और वे भी प्रेरणा लेकर उत्साह से भर जाते हैं।

उत्साह—बार-बार असफल होने पर भी उत्साह न खोना ही सफलता है।

उत्साह—व्यक्ति के उत्साह को देखकर उसके आस-पास के लोग भी उत्साह में भर जाते हैं—केवल वे जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, वे ही ऐसी प्रेरणा ग्रहण करते हैं। दरअसल, उत्साह उन लोगों का गहना है, जो सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

उत्साह—व्यक्ति में उत्साह तीन प्रकार से जाग्रत् होता है—एक तो वह स्वयं ही कार्य को पूर्ण करने की लगन में पूर्ण उत्साह से उसे करता है। दूसरे, जब वह अन्य किसी से प्रेरित होता है और तीसरा, जब व्यक्ति को बड़ा काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। उत्साहवर्द्धन वह विद्या है, जो मरते हुए व्यक्ति के लिए संजीवनी की तरह कार्य करती है।

उदारता—हँसमुख व जिंदादिल लोग सभी के बीच लोकप्रिय होते हैं। अपने परिचितों, रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों आदि के वस्त्र, सामान, उपहार व समृद्धि देखकर उनसे ईर्ष्या करने के बजाय अपने साधनों में संतोष करके, आप एक ओर जहाँ अपार संतुष्टि का अनुभव करेंगे, वहीं दूसरी ओर अनावश्यक मानसिक तनाव से भी बचे रहेंगे। स्वयं को संकीर्णता के दायरे में रखना आपकी सोच को कुंठित कर देगा।

उद्देश्य—भाग्य बदलने के लिए यह अत्यंत जरूरी है कि आपका उद्देश्य स्पष्ट हो। साथ ही, आपको इस बात की भी समझ होनी चाहिए कि उद्देश्य प्राप्ति के बाद आपकी आगामी कार्ययोजना क्या होगी? जो लोग अपने इरादों में मजूबती को बरकरार रखते हैं, निश्चित रूप से वे कामयाब रहते हैं। जो लोग अपने उद्देश्यों के प्रति सदैव जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहते हैं, वे धीरे-धीरे अपने इरादों में मजबूती हासिल करते चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि कामयाब लोगों के लिए हालात हमेशा उनके मुताबिक ही रहते हो। वास्तविकता तो यह है कि बिल्कुल उल्टे हालातों में लोगों ने संघर्ष करते हुए अपनी मंजिलें तय की हैं। मुश्किलों से घबराकर पीछे लौट जाने वालों के हिस्से में कामयाबी कभी नहीं आती।

उद्देश्यपूर्ण जीवन—उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए जरूरी है कि हम हर परिस्थिति में सहजता और प्रसन्नता से जीने का अभ्यास करें। प्रसन्नता दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रसायन है। जो इस रसायन का निरंतर सेवन करता है, वह अनेक बाधाओं को सहज ही पार कर लेता है। प्रसन्नता जीवन में सफल होने के लिए प्रसन्नता अति आवश्यक है। प्रसन्न लोग कठिनतम स्थितियों में भी संतुलित रह सकते हैं और वे देर-सवेर अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं।

उद्देश्यहीनता—जिनका कोई उद्देश्य नहीं, वे अपना जीवन निरुद्देश्य गुजार देते हैं। उन्हें अच्छी शिक्षा भी गलत लगेगी और गलत को वे अच्छी मानकर अपना लेंगे, परंतु अंत में असफल होकर पछतावे के अतिरिक्त उनके हाथ कुछ नहीं लगता।

उपलब्धियाँ—किसी एक क्षेत्र में असफल हुआ व्यक्ति, दूसरे किसी अन्य क्षेत्र में गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित कर सकता है।

उपलब्धियाँ—प्राय: देखा गया है कि जो लोग निरुत्साहित या उदास अनुभव करते हैं, वे अपने काम में रुचि नहीं लेते हैं अथवा अपनी प्रतिभा का उपयोग नहीं करते हैं। जिन कार्यों में आपकी रुचि है या जिन्हें करने से आपको खुशी मिलती है, उन्हें करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। खुश होने और गर्व अनुभव करने का यह सबसे आसान तरीका है। हर व्यक्ति के जीवन में कोई एक काम ऐसा अवश्य किया होता है, जिस पर वह गर्व कर सके। हमें बस इतना करना चाहिए कि उस गर्वीले अनुभव को याद करें और अपनी उपलब्धियों के बखान में अपने घनिष्ठ मित्रों या करीबी रिश्तेदारों को हिस्सेदार बनाएँ। इससे आपकी उदासी दूर होगी और मन खुश हो जाएगा।

उपाय—सफल लोगों को जब भी किसी समस्या के समाधान की जरूरत होती है तो वे नए उपायों के साथ आते हैं। हमेशा अपने क्षेत्र के बाहर वे ऐसे लोगों को रखते हैं, जिन पर उन्हें पूरा भरोसा हो। उन्हीं के साथ वे अपने क्षेत्र से बाहर जाते हैं, महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल करते हैं और अपनी संस्था को आगे बढ़ाने में योगदान करते हैं। इसी वजह से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को वे आकर्षित करते चले जाते हैं और मजबूत रिश्तों का निर्माण करते हैं।

ऊर्जा—बाहर से आनेवाली ऊर्जा किस स्रोत से आती है, यह किसी को पता नहीं होता। जो कुछ हम इसके बारे में जानते हैं, वह यह कि हमें यह हर हाल में चाहिए, नहीं तो हमारी मौत हो जाएगी। हर प्रकार की ऊर्जा और प्राणी या वनस्पति को जिंदा रहने के लिए व्यवस्थित होना आवश्यक है।

एक ओर आशा है तो दूसरी ओर निराशा। जहाँ आशा है, वहाँ सफलता है; जहाँ निराशा है, वहाँ असफलता। इसलिए व्यक्ति को आशावादी होना चाहिए, निराशावादी हरगिज नहीं।

एक साथ—एक साथ आना शुरुआत है, एक साथ रहना तरक्की है और एक साथ काम करना सफलता है।

एकजुटता—शक्ति संगठित और सहकारी प्रयासों से हासिल की जा सकती है! दर्जन भर पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक अपनी एकजुट शक्ति की बदौलत हजार लोगों की भीड़ पर भारी पड़ते हैं, जो नेतृत्वविहीन और असंगठित होती है।

एकत्रित ऊर्जा—बारिश की हर एक बूँद में एक शक्ति होती है, लेकिन जब तक इधर-उधर गिरनेवाली इन बूँदों को किसी नदी या डैम में इकट्ठा न करें, इनसे बिजली पैदा नहीं की जा सकती या फिर इन्हें किसी भट्ठी में इकट्ठा कर भाप में तब्दील नहीं किया जाता, तब तक इन्हें शक्तिशाली नहीं कहा जा सकता। शक्ति कहीं भी किसी भी प्रकार की क्यों न हो, एकत्रित ऊर्जा के जरिए ही पैदा की जाती है।

एकाग्र—एकाग्र रहनेवाला व्यक्ति सदा सफलता का वरण करता है।

एकाग्रचित्तता—सफलता के लिए एकाग्रता का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना कि आत्मविश्वास का। यही सूत्र हमें सफलता की ओर ले जाता है। अत: आशा, उत्साह और आत्मविश्वास तीनों में अगर समानता है, तब तो सफलता स्वयं कदम चूमती है। अगर कार्य परिश्रम पूर्ण लगन और संयम के साथ किया गया हो, तब सफलता मिलना निश्चित है। हर कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए भी एकाग्रचित्त होना अत्यधिक आवश्यक है।

एकाग्रता—एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है। किसी भी प्रकार की सफलता तभी प्राप्त हो सकती है, जब कार्य को पूर्ण एकाग्रता के साथ किया जाए।

एकाग्रता—कई लोग काम कुछ करते हैं और उनका किन्हीं दूसरी बातों में मन उलझा रहता है, ऐसे व्यक्ति अपने काम को पूरा-पूरा अंजाम नहीं दे पाते। बैठे हैं दुकान पर और मन घूम रहा है पार्क में। काम कर रहे हैं दफ्तर में, किंतु मन उलझा रहता है राजनीतिक दांव-पेंचों में। अतएव उन्हें किसी भी तरफ से सफलता नहीं मिलती। चाहे कितना ही छोटा, सामान्य लक्ष्य क्यों न चुना जाए, व्यक्ति यदि अंत तक उसमें एकाग्र होकर लगा रहेगा तो ही वह सफलता का स्वाद चख सकेगा। किसी भी कार्य को हाथ में लेकर उसे पूरा करने में कोई कसर न रखना ही सफलता का मूलमंत्र है।

एकाग्रता—कोई भी काम यदि एकाग्रता से किया जाए तो वो अवश्य पूरा होता है, लेकिन ध्यान रखना होगा कि वह एकाग्रता दिखावटी न हो।

एकाग्रता—नेपोलियन बोनापोर्ट में अदम्य साहस और वीरता के अलावा ऐसी कौन सी शक्ति थी, जिसके द्वारा उसकी अद्वितीय और अत्यंत विस्तृत विजय हुई? उसके जीवन-चरित्र का अवलोकन करने से पता चलता है कि उसकी एकाग्रता और लक्ष्य बुद्धि ही विजय का रहस्य थी।

एकाग्रता—यदि हम अपने मन को किसी एक विषय पर फोकस कर लें, तो कोई वजह नहीं कि हम अपने लक्ष्य को हासिल न कर सकें। कोई भी लक्ष्य हासिल करने के लिए एकाग्रता जरूरी है और इस एकाग्रता में मन अपनी अहम भूमिका निभाता है। जब हम एकाग्र हो गए, तो समझें कि हम सफल हो गए।

एकाग्रता—सब तरफ से ध्यान हटाकर एक ही विचार या विषय पर ध्यान लगाने से हमारा ध्यान केंद्रीभूत होता है। हमारी ऊर्जाएँ अप्रासंगिक गतिविधियों या विचारों पर नष्ट नहीं होती हैं, इसीलिए ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का विकास करना हर उस व्यक्ति के लिए अनिवार्य है, जो अपने जीवन पर पूरा नियंत्रण रखना चाहता है। प्रत्येक प्रकार की सफलता के लिए यह क्षमता अत्यावश्यक है। इसके बिना हमारे प्रयास बिखर जाते हैं, लेकिन इस योग्यता के साथ हम बड़े-बड़े कार्य पूरे कर सकते हैं। एक सकारात्मक ढंग से इसकी ओर बढ़ें और फिर देखें, सफलता कैसे आपके करीब आती है।

एकाग्रता—हरफनमौला व्यक्ति शायद ही किसी एक फन का उस्ताद बन पाता है। यह जीवन इतना जटिल है कि हमारी ऊर्जा अकसर फिजूल के कार्यों में बरबाद हो जाती है। यही वजह है कि जो लोग सफल होते हैं, वे ठोस प्रयास करते हैं और एकाग्रता के साथ कोशिश करने की आदत डाल लेते हैं।

कठिनाइयाँ—आनंद और विनोद के सामने कठिनाइयाँ पिघल जाती है।

कठिनाइयाँ—घात-प्रतिघात से मुठभेड़ करके जिस किसी व्यक्ति ने महत्त्व प्राप्त किया है, वही सच्चे यश को भोगता है। महत्त्वपूर्ण बनने के लिए कोई शाही सड़क नहीं है। किसी भी प्रख्यात व्यक्ति का जीवन-चरित्र पढ़ें, उसने अनेक कठिनाइयों को पार करके ही अपना मार्ग प्रशस्त किया है।

कठिनाइयाँ—जब कुदरत किसी व्यक्ति को कठिनाइयों में डालती है, तब उसके मस्तिष्क की शक्ति को पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ा देती है। बहुत से मनुष्यों ने जीवन में जो महत्त्व और उन्नति प्राप्त की है, वह कठिनाइयों से और दु:खों से ग्रस्त होने पर ही की है। सुगंधित द्रव्य, मसाले इत्यादि जब तोड़े और पीसे जाते हैं, तब अपनी सुगंध देते हैं।

कठिनाइयाँ—वक्त के साथ सभी मानसिक और शारीरिक कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं। वास्तविक कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है, लेकिन काल्पनिक कठिनाइयों को पराजित नहीं किया जा सकता।

कठोर परिश्रम—लोग दूसरों की प्रगति देखकर अकसर सोचा करते हैं कि वह उतनी ऊँचाई पर कैसे इतनी जल्दी पहुँच गया, वे लोग यह नहीं सोचते कि यह स्थान जो उसने पाया है, वर्षों के कठोर परिश्रम से पाया है।

कभी गलती न करना सफलता नहीं है, बल्कि एक गलती को कभी न दोहराना ही सफलता है।

कमजोर कड़ी—हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ कमजोरियाँ होती हैं। शतरंज के खेल की तरह हमें हर कदम सोच-समझकर अपनी ताकत एवं सीमाओं का आकलन करते हुए उठाना चाहिए। हाँ, सावधानी शतरंज के खेल से भी अधिक रखनी चाहिए, क्योंकि जीवन कोई खेल नहीं है। जीत या सफलता सुनिश्चित करने का तरीका है—हार की संभावना समाप्त कर देना। सफलता की तैयारी का महत्त्वपूर्ण भाग है—उन कारकों को पहचानकर मूल से समाप्त कर देना, जिनसे असफलता आ सकती है। ये वे कारक हैं, जो आपकी तैयारी की कमजोर कड़ी हैं। ये वे कारक हैं, जो लक्ष्य से आपका ध्यान विचलित कर सकते हैं। ये वे कारक हैं, जिनका आपका प्रतिद्वंद्वी लाभ उठा सकता है। पराजय से बचना विजय ही को निमंत्रण है। नुकसान की संभावना समाप्त होने पर ही नफे की शुरुआत होती है। इसी तरह असफलता की संभावना से रहित तैयारी ही सफलता की गारंटी है।

कमजोरियाँ—अपनी क्षमताओं को जानने से पहले अपनी दुर्बलताओं को पहचानना अधिक महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति

की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि उसमें अपनी कमजोरियों को पहचानने की क्षमता का अभाव होता है। अपनी क्षमताओं को ठीक से जान लेना महत्त्वपूर्ण है और तब हम आगे बढ़ने तथा अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उन क्षमताओं का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन अगर हमें अपनी दुर्बलताओं का पता नहीं होगा या हम उन्हें पहचानते तो हैं, लेकिन उनकी अनदेखी कर देते हैं तो वे हमारे पतन का कारण बन सकती हैं और हमारी कमजोरियाँ हमारी क्षमताओं को कमजोर कर देंगी तथा उन्हें नकारात्मकता में बदल देंगी, जिनसे हम बचना चाहते हैं।

करना व सोचना—जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं। पहले वे जो सोचते हैं, पर करते नहीं; दूसरे वे जो करते हैं, पर सोचते नहीं।

कर्तव्य-कर्म—हर आदमी के लिए ऊँचाई पर स्थान है, लेकिन वहाँ पहुँचता वही है, जिसके अंतर में आत्मविश्वास होता है, हाथ-पैरों में ताकत होती है, निगाह में ऊँचाई होती है और हृदय में सबके लिए प्रेम और सहानुभूति का सागर उमड़ता रहता है। ऐसा आदमी जानता है कि उसके ऊपर सदा निर्मल आकाश है। अगर कभी बादल घिर भी आते हैं तो वे अधिक समय नहीं टिकते हैं। अपने लक्ष्य पर आँख रखकर मजबूती से बढ़े चलना इनसान का सबसे बड़ा कर्तव्य है। किसी कार्य में असफल होने पर भाग्य को दोषी न मानकर पूरे शक्ति व निष्ठा के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में जुट जाइए। अपनी आँख सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर केंद्रित रखिए।

कर्म—कर्म ही पूजा है। कर्म व्यक्ति को महान् बनाते हैं। कर्म से ही व्यक्ति की पहचान है। जब भी दो व्यक्ति मिलते हैं तो सर्वप्रथम प्रश्न यही होता है कि 'आप क्या करते हैं?' कर्म से ही ज्ञात होता है कि फलां व्यक्ति क्या है? कर्म भले ही कोई भी हो, वही उस व्यक्ति की पहचान निश्चित करता है।

कर्म—कर्महीन व्यक्ति आलसी, चापलूस, मूर्ख, नकारा होने के साथ-साथ भाग्य के सहारे जीनेवाले होते हैं। उनकी उन्नति का मार्ग प्राय: अवरुद्ध रहता है। वे बस भाग्य को पकड़े बैठे रहते हैं और कर्महीन होते जाते हैं जबकि कर्म का ही महत्त्व है। कर्म से ही संसार है। प्रकृति भी कर्म करती है।

कर्म—व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। इनसान अपने विचारों और कर्मों से अपने भाग्य का निर्माण करता है। यह बात सुनते तो सब हैं, लेकिन इसे वास्तविक अर्थों में समझ बहुत कम लोग पाते हैं और अगर कोई भी इनसान इसे समझ ले तो वह अपने जीवन को बदल लेता है।

कर्म—व्यक्ति को सौभाग्य-दुर्भाग्य के सहारे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। उसे अपना कर्म करते रहना चाहिए अन्यथा इतना समय निकल जाता है कि फिर उसके लिए केवल यही कहने को बचता है कि 'मेरा दुर्भाग्य था कि मैं कुछ नहीं कर सका, मैं सफल नहीं हो सका।' कार्य को पूर्ण ईमानदारी, लगन, मेहनत से करने पर ही व्यक्ति की चहुँ ओर प्रशंसा होती है और वह सभी का पूज्य हो जाता है।

कर्म—हम जो भी हैं, जो कुछ भी करते हैं, वह तभी होता है, जब हम उसे वास्तव में करना चाहते हैं। जहाज समंदर के किनारे सर्वाधिक सुरक्षित रहता है, मगर क्या आप नहीं जानते कि उसे किनारे के लिए नहीं, बल्कि समंदर के बीच में जाने के लिए बनाया गया है?

कर्म-कर्तव्य—जो व्यक्ति कर्म को अपना कर्तव्य समझकर करता है, वही कर्म उसे परम लक्ष्य प्राप्त कराता है, व्यक्ति को सफलता देता है। इसलिए कर्म को कर्तव्य समझकर कर्मानुसार करें। इस प्रकार किया गया कार्य व्यक्ति को अन्य व्यक्ति से अलग करता है, भीड़ से अलग करता है।

कर्मठता—कुछ लोग कहते हैं, यह भी कोई जिंदगी है कि हर घड़ी काम करते रहो? बहुत दिन जीने के लिए

आराम बड़ा जरूरी है, ऐसा कहने में एक बुनियादी दोष है। हर घड़ी काम करने का मतलब यह नहीं है कि आदमी कभी आराम ही न करे। उसका मतलब है, आदमी कर्मठ रहे, आलस न करे। सच बात यह है कि निष्क्रिय जीवन से बढ़कर दूसरा अभिशाप नहीं है। जो लोग क्रियाशील रहते हैं, वे काम करने का संतोष पाते हैं और अपनी प्रसन्नता से धरती का बोझ हल्का करते हैं। इसके विपरीत जो काम से बचते हैं, वे स्वयं तो परेशान होते ही हैं, समाज में भी बड़ा दूषित वायुमंडल पैदा करते हैं। कर्ममय जीवन दूसरों पर अच्छा असर डालता है, आलसी दूसरे को आलसी बनाता है।

कर्मयोगी—जिस जिंदगी के पन्ने उद्यम, साहस और धैर्य की रोशनी से नहीं लिखे गए, वह अधूरी है। जहाँ विवेक का मंत्र नहीं, वह जीव सुखी नहीं। कर्मयोगी मनुष्य ही जीवन के आदर्श होते हैं। कर्मठता ही हमारे जीवन का पर्याय है। कर्मयोगी मनुष्य के हृदय में आशा, उत्साह तथा परिश्रम की ऐसी मनोमुग्धकारी त्रिवेणी की जल रश्मियाँ बहती हैं, जिनमें अवगाहन करके मनुष्य का रोम-रोम पुलकित हो झूम उठता है।

कल—कल, अर्थात् आनेवाला कल, जो कभी नहीं आता है और हमेशा कल ही बना रहता है। बहुत से लोगों की यह आदत होती है कि किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा कल पर निर्भर रहते हैं कि कल कर लेंगे। मनुष्य जीवन में कभी-कभी बहुत से ऐसे क्षण भी आते हैं, जो उसे लाभान्वित करते हैं, अर्थात् वे क्षण उसे सफल बनाते हैं। लेकिन किन्हें? केवल उन्हें, जो उस अवसर को भाँपकर उसका लाभ उठाते हैं और जो उसे कल पर छोड़ देते हैं, वे कल का ही इंतजार करते रह जाते हैं।

कल—कल हमेशा कल ही बना रहता है। बहुत से लोगों की यह आदत होती है कि किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा कल पर निर्भर रहते हैं कि कल कर लेंगे। व्यक्ति जीवन में कभी-कभी बहुत से ऐसे क्षण भी आते हैं, जो उसे लाभान्वित करते हैं, अर्थात् वे क्षण उसे सफल बनाते हैं; लेकिन जो उन्हें कल पर छोड़ देते हैं, वे कल का ही इंतजार करते रह जाते हैं।

कल्पना व कर्म—सफलता तो तभी मिलती है, जब आप अपनी कल्पना के ढाँचे में कर्म का रंग भी भरें।

कल्पना—अगर आपको कोई उपयोगी आविष्कार करना है, लेकिन आपकी कल्पनाशक्ति उतनी विकसित नहीं है, उस वक्त आप क्या करेंगे? आप अपने मौजूदा काम को बेहतर बनाने की कोशिश कीजिए इसके जरिए कम-से-कम आप इस गुण को हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं। आप अपनी कल्पना को जितना नियंत्रित करेंगे और जिस हद तक इसका इस्तेमाल करेंगे, उतना ही इस शक्ति का विकास होता चला जाएगा। अपने आस-पास नजर दौड़ाते ही आपको ऐसे ढेरों अवसर दिखने लगेंगे, जहाँ आप अपनी कल्पना का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका इंतजार मत कीजिए कि कोई आए और आप से कहे कि यह करो, बल्कि अपनी समझ का इस्तेमाल कीजिए और अपनी कल्पना पर जोर डालिए, ताकि वह आपको यह बता सके कि आपको क्या करना है?

कल्पना—कल्पना की कार्यशाला में ही सभी योजनाएँ बनती हैं और इन योजनाओं के बिना कोई उपलब्धि मुमकिन नहीं है, बशर्ते इत्तफाक से कोई कामयाबी न मिल जाए। विचार इनसानी दिमाग में सबसे ज्यादा फायदा देनेवाला तत्त्व है और विचारों का सृजन कल्पना से ही होता है।

कल्पना—साकार कल्पना के बिना आज तक किसी ने भी न कुछ हासिल किया, न बनाया और न ही कभी कोई योजना बनाई या एक निश्चित लक्ष्य को विकसित किया। आज तक जो कुछ भी सृजित या निर्मित किया गया, सबसे पहले कल्पना के जरिए उसकी एक झलक दिमाग में पैदा हुई। कल्पना की कार्यशाला में आप पुराने, जाने-माने विचारों और अवधारणाओं या विचारों के हिस्से लेकर जा सकते हैं और फिर उन्हें कुछ और पुराने विचारों या

उनके हिस्सों से जोड़कर एक ऐसे विचार तक पहुँच सकते हैं, जो नया-सा दिखता हो। दुनिया के तमाम बड़े आविष्कारों के पीछे यह प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के तौर पर काम करती है।

कल्पना—हम अगर किसी चीज की कल्पना कर सकते हैं तो उसे साकार भी कर सकते हैं। अगर आप अपनी समृद्धि की कल्पना नहीं करते तो आप उसे अपने बैंक के खातों में कभी देख नहीं पाएँगे। कल्पना एक ऐसा गुण है, जिसकी कोई निश्चित कीमत या मूल्य नहीं है। यह दिमाग के सबसे महत्त्वपूर्ण गुणों में से एक है, क्योंकि इसके जरिए ही मनुष्य की तमाम मंशा को वह आवेग मिलता है, जिनसे वह सक्रिय हो जाता है।

कल्पनाशीलता—कल्पनाशीलता के लिए जरूरी है कि आप उन उपयोगी, सुघड़ और व्यावहारिक विचारों को लिख लेने की आदत डाल लें, जो आपके कार्यक्षेत्र से बाहर के क्षेत्रों में या फिर आपके क्षेत्र में भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं। इस प्रकार, आपके मन में अपनी कल्पना की मदद से विचार आने लगेंगे। शुरुआत एक सामान्य पॉकेट साइज नोटबुक से की जा सकती है, जिसमें हर एक विचार या अवधारणा या फिर अपने मन में उठनेवाले ऐसे विचारों को आप दर्ज करते जाएँ, जिनका व्यावहारिक तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है और फिर इन विचारों पर एक नई योजना के साथ काम करना शुरू कर दें। धीरे-धीरे ऐसा समय आ जाएगा, जब आपकी कल्पनाशक्ति आपके अवचेतन मन में इकट्ठा ज्ञान और विचारों के भंडार तक जाएगी, इन्हें नए विचारों के साथ जोड़ेगी और फिर आपके सामने एकदम नया विचार पेश कर देगी। यह एक व्यावहारिक प्रक्रिया है, जिसे दुनिया के कुछ बेहतरीन नेताओं, आविष्कारकों और कारोबारी हस्तियों ने सफतलापूर्वक अपनाया है।

कल्पनाशीलता—चुनौतियाँ नेतृत्व का अभिन्न हिस्सा होती हैं। महान् नजरिए ही नेतृत्व को जन्म देने का काम करते हैं। सामान्य तौर पर, हर कोई बहुत कल्पनाशील नहीं होता। लोगों में प्रतिस्पर्धी भाव का घोर अभाव होता है। आपकी मेधा लोगों को प्रभावित करने का काम करती है। कुछ लोग बहुत कल्पनाशील नहीं होते हैं, लेकिन बहुत प्रभाव छोड़नेवाले और प्रेरणा से भरे होते हैं। बहुत-थोड़े लोग ही ऐसे होते हैं, जिन्हें हर चीज वरदान के तौर पर मिलती है और साथ ही मेधा भी। बहुत महान् लोग अपने को लेकर हमेशा सजग रहते हैं। वे अपनी प्रतिभा को लेकर सजग रहते हैं व आत्मविश्वास को लेकर भी सजगता बरतते हैं। वे किसी जगह अपने कौशल को लेकर कमी महसूस करते हैं तो उसे दूसरी बातों से पूरा करने की कोशिश करते हैं।

कष्ट—यदि कष्ट को हँसते-हँसते सहन किया जाए तो वह भी सुखद हो जाता है, पर यह तभी हो सकता है, जब कर्म को महान् बना दिया जाए।

कसौटी—जिस दिन आप तय करते हैं कि आपको सफलता पाना है, उसी दिन से अपने आपको असफलता का सामना करने के लिए तैयार कर लेना चाहिए, क्योंकि असफलता वह कसौटी है, जिस पर आपको परखा जाता है कि आप सफलता के योग्य हैं या नहीं? यदि आप में दृढ़ इच्छाशक्ति है और आप हर असफलता की चुनौती का सामना कर आगे बढ़ने में सक्षम हैं तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता।

कसौटी—ज्यों ही मनुष्य पर आपत्ति आती है, वह अपने विवेक से काम लेने लगता है। सोना बारंबार तपाए जाने पर ही अपना असली रंग प्रकट करता है। जब तक उसको तेज आँच में तपाया और पिघलाया नहीं जाता, तब तक उसमें आंतरिक मैल लगा रहता है और वह अलग नहीं होता।

कसौटी—पत्थर से मूर्ति बनाई जाती है। वह मूर्ति उस पत्थर के ही अंतर्गत है, परंतु दृष्टिपथ में वह मूर्ति तभी आएगी, जब शिल्पकार की छैनी-हथौड़े उस पत्थर पर लगातार चलेंगे। विद्युत की अग्नि पत्थर के अंदर लिप्त है परंतु जब तक दूसरी वस्तु से रगड़ा न जाए, तब तक उसमें अग्नि नहीं जलेगी। मल्लाह जब तक तूफान के थपेड़े

नहीं खाता और भँवरों में नहीं फँसता, तब तक अपने व्यवसाय में प्रवीण नहीं होता। संसार की प्रत्येक वस्तु उपयोगी तभी बनती है, जब वह अग्नि में तपाई या पानी में भिगोई, कूटी-छानी या धोई जाती है या किसी-न-किसी प्रकार का उस पर प्रहार किया जाता है।

काबिलियत—भयभीत न हों। कोई भी महान् काम करने के लिए आपको किसी से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। सिर्फ इसलिए कि वे बुद्धिमान हैं, उन्हें अपने सिर पर न बिठाएँ। आप भी अनुभवी हैं। आप भी महान् सफलता हासिल कर सकते हैं। दूसरों को अपने से ज्यादा बुद्धिमानी मानना, मतलब अपने विश्वास और हिम्मत को कम करना है। ऐसा करने से आपकी काबिलियत में भी कमी आएगी, क्योंकि उस समय आप यह सोचने लगेंगे कि आप उनकी तरह बुद्धिमान या महान् नहीं हैं।

काम का भूत—जीवन में इतनी निश्चिंतता रहे कि खाते समय, सोते समय मनोरंजन के समय काम का भूत परेशान न करे। अपने आनंद, शांति, संतोष को बेचकर यदि स्वर्ग का वैभव मिलता हो तो विवेकशील व्यक्ति को उसे अस्वीकार कर देना ही श्रेयस्कर होगा। कार्य को खेल मानकर कीजिए। इससे वह आपकी शक्तियों का शोषक न बनकर उर्वरक खाद का काम देता रहेगा।

काम पर ध्यान—किसी भी चीज से पीछा छुड़ाने के लिए हमेशा यह कहें कि मैं इस विषय पर बात नहीं करना चाहता हूँ या यह मामला खत्म हो गया है। इस तरह की बातों के प्रति यह भी कहा जाता है कि मैं अपने आपको इस विषय में बात करने में असहज महसूस कर रहा हूँ। यदि आपका ऐसे लोगों से सामना होता है, जो आपसे यह जानना चाहते हैं कि असफल होने पर आप क्या करेंगे तो उनसे आप सीधे कहें कि मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह से कर रहा हूँ।

काम पर ध्यान—जिन बातों से आपको चिढ़ होती है, वैसी बातें न तो किसी से कहें और न ही कही गई बातों पर ध्यान दें। बहुत से लोगों की आदत होती है कि वे अपनी मनोभावनाओं को चुटकुलेबाजी या किसी और तौर-तरीकों से जाहिर करके सामने वाले को नीचा दिखाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को सहानुभूतिपूर्वक उपेक्षित कर देना ही उचित है।

काम पर ध्यान—जो लोग दूसरों के काम को ताकने की बजाय अपने काम पर ध्यान देते हैं, वे अन्य सफल लोगों से प्रेरणा लेते हुए मंजिल की ओर बढ़ते चले जाते हैं। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए वे किसी के काम में कमियाँ निकालने की बजाय अपने काम में और सुधार करते जाते हैं, जिसका नतीजा बाद में उन्हें सफलता के रूप में प्राप्त होता है।

काम बोझ नहीं—काम को काम समझें, बोझ नहीं। यदि किसी कारणवश वह पूरा न हो पाए, तो बेवजह भावनाओं में न बहें। इससे आप दूसरे कार्यों को पूरी क्षमता के साथ नहीं कर पाएँगे। काम का दायरा बेवजह न फैलाएँ। एक काम को पूरा करने के पश्चात् ही दूसरे काम को हाथ में लें।

काम से प्यार—हमारी तीन महत्त्वपूर्ण संपत्तियाँ हैं—शरीर, समय एवं मनोवृत्ति। सफलता के ये तीन नियम हमेशा याद रखें—मेहनत, आत्मविश्वास एवं आत्मविकास। कोई भी काम सिर्फ काम चलाने के लिए नहीं, परंतु आगे बढ़ने के लिए करें। यदि आप पूरी जिंदगी के लिए खुशी चाहते हैं तो अपने काम से प्यार करना सीखें।

काम—आप अपना काम जितने अच्छे तरीके से करेंगे, आप उसमें उतने ही कुशल होंगे और एक समय के बाद आपमें इतनी परिपूर्णता आ जाएगी कि जिस क्षेत्र में आप हैं, उसमें आपकी टक्कर का शायद ही कोई और होगा। जितना पाते हैं, उससे ज्यादा काम करने की वजह से आप अपनी ओर लोगों का ध्यान सकारात्मक तरीके से

खींचते हैं और वह दिन दूर नहीं होता, जब आपको आपके काम के लिए आकर्षक मौके मिलने लगते हैं, बाजार में आपकी सेवाओं की माँग लगातार बनी रहेगी।

काम—काम तो सभी पूरे हो जाते हैं, लेकिन कुछ लोग रो-धोकर करते हैं और कुछ लोग शांत, एकाग्र होकर।

कामयाब—एक कामयाब व्यक्ति की अपने सहकर्मियों के साथ अच्छी निभती है। वह ईमानदार लोगों को पसंद करता है, लेकिन अनुचित आलोचना या मैत्रीपूर्ण और शांतिपूर्ण समझौता उसे नहीं भाता। आप उस पर नकारात्मक भावनाओं का भार नहीं डाल सकते हैं। कामयाब लोगों को समस्या तब आती है, जब अकुशल तथा अयोग्य लोगों से उनका पाला पड़ता है। उन्हें विफल होने या सफलता न मिलने का भय जकड़े रहता है।

कामयाबी—कामयाब होने के लिए आपको अपनी क्षमता पर इस कदर भरोसा होना चाहिए कि आप जो एक बार सोच लें, उसे कर दिखाएँ। कामयाबी कोई ऐसी चीज नहीं, जो पेड़ पर फलती हो और जिसे आसानी से तोड़ लिया जाए। सफलता का मतलब है—दृढ़ता, आत्मबलिदान, दृढ़संकल्प और एक सशक्त चरित्र।

कामयाबी—हमें यह आदत पड़ गई है कि हम कामयाब लोगों की सिर्फ कामयाबी देखते हैं, उनकी विफलताओं, हार और विकट परिस्थितियों पर गौर नहीं करते, जिनका सामना करते हुए उन्होंने सफलता हासिल की है।

काररवाई—जब कोई कार्य आरंभ करें, तो उस समय आपको उसमें जो घात-प्रतिघात उत्पन्न होते दिखाई दें, उनका स्वप्न देखने में समय नष्ट न करें। यदि विषैले कीड़े से बचना है, तो उसके डंक को मसल डालो। कठिनाइयों पर बार-बार विचार करने से कठिनाइयों का भूत ऐसा प्रबल और दीर्घकाय प्रतीत होने लगता है कि फिर उस कार्य से हाथ पीछे खींचना पड़ता है।

कार्य-क्षमता—स्वयं से रोज यह सवाल करें कि कैसे आप बेहतर और अधिक कार्य कर सकते हैं। कार्य-क्षमता आपके मस्तिष्क पर निर्भर करती है। जब आप अपने मस्तिष्क पर जोर डालेंगे और उससे यह सवाल करेंगे कि कैसे आप और अधिक कार्य कर सकेंगे, तब आपका मस्तिष्क आपको कार्य करने के विभिन्न तरीके बताएगा, जिसके द्वारा आप काफी समय व ऊर्जा बचा सकेंगे।

कार्य-क्षमता—हम अपने काम करने की क्षमता को बढ़ा सकते हैं, बशर्ते हम अपने समय का ठीक तरह खयाल रखें। इसे नष्ट न करें। इसके हिसाब से काम करने की योजना बनाएँ। अगर आप समय बरबाद करते हैं, तो तनाव बढ़ता है, तरह-तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं और ध्यान लक्ष्य से भटक जाता है। इसके साथ ही आपकी उत्पादकता में भी कमी आ जाती है।

कार्य-निर्धारण—एक दिन पहले ही यह विचार कर लीजिए कि कल आपको कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण काम करने हैं और इनमें अधिकतम समय कितना लगाना है ताकि आप अन्य कार्यों को भी सहजता से पूरा कर सकें। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि आपको अपनी प्राथमिकताएँ भी स्पष्ट हो जाएँगी और साथ ही आप निर्धारित समय में काम को पूरा करना भी सीख जाएँगे।

कार्य-प्राथमिकता—महत्त्वहीन विवरण में न फँसें। आप कभी भी कार्यों को उस तरीके से नहीं कर सकते, जैसा कि आपने सोच रखा है, ऐसा करना अप्रभावी होगा। कार्य को प्राथमिकता के अनुसार करें। चूँकि आप सभी काम को अकेले नहीं कर सकते, अत: जरूरी काम पहले कर लें, बाकी रहने दें। दूसरों को भी काम करने दें। कोई काम यदि ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है और उसे दूसरे भी कर सकते हैं तो वैसे काम दूसरों को करने दें। इससे आप और महत्त्वपूर्ण काम में अपना ध्यान लगा सकेंगे।

कार्य-समायोजन—आपका समय जिस भी काम करने से नष्ट होता है या इससे आप अपने काम से दूर होते जाते

हैं। एक काम और दूसरे काम के बीच 5-10 मिनट का अवकाश रखें इससे पहले काम को समेटने में भी थोड़ा समय मिल जाएगा। अपने कार्यों का समायोजन इस तरह बनाएँ, जिससे कि आप उन्हें बिना किसी दबाव के खुशी-खुशी कर सकें।

कार्यशक्ति—मनुष्य तब तक नहीं थकता, जब तक उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है और मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

काल्पनिकता—बिना असफल हुए पूर्ण सफल होने का आग्रह करते हैं, वे कभी भी अपनी क्षमताओं को पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं कर पाते क्योंकि वे धरती पर किसी यथार्थ वस्तु की अपेक्षा चंद्रमा पर किसी कल्पित लक्ष्य पर तीर मारते हैं। इस मानवीय काया द्वारा हवा में करतब दिखानेवाले काल्पनिक सुपरमैन की भूमिका कल्पना में ही संभव है। यथार्थ में उसका कोई सरोकार नहीं हो सकता।

किस्मत के मालिक—आप अगर आप सही मायने में अपनी बदकिस्मती और दुर्भाग्य की वजह जानना चाहते हैं तो सितारों की तरफ मत देखिए, आईने में देखिए। अपनी किस्मत के मालिक आप खुद हैं। अपनी आत्मा को चलानेवाले भी आप हैं और इस वजह से इस बात को ध्यान में रखिए कि आप अपने दिमाग को खुद काबू कर सकते हैं और उस दिमाग को उत्तेजित कर उन शक्तियों के संपर्क में ला सकते हैं, जिनकी मदद से आपकी सारी समस्याएँ सुलझ सकती हैं। इस प्रकार, जो व्यक्ति अपनी समस्याओं के लिए सितारों को जिम्मेदार ठहराता है, वह अनंत बुद्धि या ईश्वर या आप कोई भी नाम दें, उसे नकार देता है।

किस्मत—आपने अकसर लोगों को ये कहते सुना होगा कि जो किस्मत में होगा, मिल कर ही रहेगा और ऐसा सोचकर अकसर लोग किसी चमत्कार के इंतजार में सारी जिंदगी निकाल देते हैं। चमत्कार अकसर नहीं होते और चमत्कार भी उन्हीं के जीवन में घटते हैं, जो अपने जीवन में क्या पाना है, यह तय कर लेते हैं।

किस्मत—किस्मत को दोष देना बंद कर दें। इसकी बजाय आपको हर असफलता का विश्लेषण करना चाहिए। यह पता लगाए कि गलती कहाँ हुई थी। याद रखें, तकदीर को दोष देने से कोई व्यक्ति वहाँ नहीं पहुँचा, जहाँ वह पहुँचना चाहता था।

किस्मत—सफल लोग किस्मत में विश्वास नहीं करते। वे मानते हैं कि हर बात के पीछे कोई-न-कोई वजह होती है। आदमी जैसे काम करेगा, वैसा ही पाएगा। इसलिए वे जानते हैं कि अगर उन्हें कुछ पाना है तो उसे हासिल करने के लिए उन्हें सभी जरूरी काम भी करने होंगे।

किस्मत—हर इनसान की जिंदगी एक पहिए की तरह घूमती रहती है और इसके काम करने का तरीका ऐसा है कि भाग्य हमेशा किसी का साथ नहीं देता। यह सच है। हम सभी की जिंदगी में एक अनदेखा भाग्य या पहिया है, जो घूम रहा है और कभी यह हमारी किस्मत चमका देता है तो कभी बिगाड़ देता है और हम चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाते। हालाँकि यह पहिया औसत के सिद्धांत पर काम करता है, जिसकी वजह से यह तय हो जाता है कि किसी की भी किस्मत हमेशा खराब नहीं रहेगी। यदि आज किस्मत खराब है तो इस सिद्धांत के मुताबिक यह उम्मीद है कि जब पहिया अगली बार घूमेगा तो किस्मत अच्छी हो जाएगी या पहले अभी अच्छी है तो बिगड़ जाएगी।

कीमत—एक मिनट की सफलता बरसों की असफलता की कीमत चुका देती है।

कीमत—याद रखिए, सफलता की भी एक कीमत होती है। क्या आप वह कीमत देने के लिए तैयार हैं?

कीमत—सफलता के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। वह कीमत होती है—अपने जीवन का एक लंबा समय और

उस लंबे समय में किया हुआ अथाह परिश्रम। किसी भी क्षेत्र में विजय प्राप्त करनी हो तो उसे समय देना पड़ता है, वो भी नियमित रूप से। ऐसा नहीं कि अचानक कुछ करने का जोश आए, कुछ दिनों तक पूरी ताकत से उसमें लगे रहें, फिर आलस में उसको अधूरा छोड़ दिया।

कीमत— समय के महत्त्व को समझें। व्यर्थ के कामों में अपने कीमती समय को न गँवाएँ। आपके पास जितना भी समय बचा है, उसे अच्छे कामों में खर्च कीजिए और अच्छे लोगों के लिए खर्च कीजिए।

कुंठित विचार— अपनी सफलता को भाग्य, भ्रष्टाचार व धन की कमी जैसे कुंठित विचार लाकर अवसर को मत टालिए। जुट जाएँ सफलता पाने की चेष्टा में। इस प्रकार आप आत्मसम्मान से इस समाज में जी सकते हैं।

कुटाई-पिसाई— अच्छे-से-अच्छे शस्त्र और औजार तब तैयार होते हैं, जब वे कई बार अग्नि में तपाए जाते हैं, हथौड़े से पीटे जाते हैं और सान पर चढ़ाए जाते हैं। लोहा स्वयं एक बहुत दृढ़ धातु हैं। हीरे का तो कहना ही क्या है, वह अत्यंत कठोर पदार्थ है, परंतु इसमें भी उपयोगिता और चमक-दमक कुटाई-पिसाई और रगड़ाई बिना नहीं आ सकती। इसी प्रकार, मनुष्य में चाहे जितने गुण हों, परंतु जब तक वह आपत्तियों का शिकार नहीं होता, और उसको कष्ट के धक्के नहीं लगते, तब तक उसका गुण, उसका श्रेष्ठ रूप प्रकट नहीं होता।

कॅरियर— अपनी महत्त्वाकांक्षा के स्तर और अपनी नैसर्गिक क्षमता के आधार पर, आप उन जीविकाओं की पहचान कर सकते हैं, जो आपको मनचाही जीवन-शैली का इच्छित लाभ दिलाने में सहायक हो सकती हैं। अगर आप जल्दी-जल्दी यात्रा करने की इच्छा रखते हैं और एक गतिशील व्यवस्था के स्वामी बनना चाहते हैं तो आप मार्केटिंग का कॅरियर चुन सकते हैं, इस लक्ष्य के साथ कि आप अपनी कंपनी स्थापित करेंगे या किसी बड़ी कंपनी के प्रमुख बनेंगे।

कोशिश— अगर आप ऐसी स्थिति से बचना चाहते हैं, तो आपको कुछ और कोशिशें करने की जरूरत है। जीवन बेहद आसान हो सकता है। किसी ऐसे व्यक्ति को अपना साथी बना लें, जिसे आप अब तक नापसंद करते रहे हों। उस व्यक्ति के साथ बड़े प्यार के साथ और खुश होकर समय बिताएँ। उन सभी कामों को करने की आदत डालें, जो आपको अब तक नापसंद थे। उन लोगों के साथ रहना सीखें, जो आपको पसंद नहीं हैं और साथ-ही-साथ जीवन को प्रेम, आनंद और सूझ-बूझ के साथ जिएँ।

कोशिश— अपने कामों को ईमानदारी और निष्कपटता से करें। किसी भी काम को अधूरा न छोड़ें। जब तक सफलता नहीं मिलती, कोशिश करते रहें। अपने सहकर्मियों पर भरोसा रखें।

कोशिश— कहते हैं, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप अकेले कुछ नहीं कर सकते। इस बात को सही तरीके से समझें। अकसर लोग कुछ बुरे लोगों की वजह से खुद को सभी से काट से लेते हैं। फलत: कड़ी मेहनत के बावजूद सफलता प्राप्त नहीं कर पाते और अनभिज्ञ बने रहने से उनकी नकारात्मक छवि भी बन जाती है। इसलिए कोशिश करें कि सभी छोटे-बड़े लोगों को साथ लेकर चलें, जिससे आपमें नेतृत्व क्षमता का विकास हो और जो आप तक अधिक मौके पहुँचाने में भी मदद करेगा।

कोशिश— जिस क्षेत्र या विषय में हमारी गहरी दिलचस्पी है, उसमें स्वयं को पूरी तरह झोंक दीजिए। सच्चाई यह है कि हम किसी भी काम को करने के लिए सोच-विचार व अटकलें ज्यादा लगाते हैं, जबकि उस दिशा में हमें कोशिश करके देखना चाहिए। हमें यह सब शुरू करने के लिए निपुणता, कोई प्रमाण-पत्र अथवा खूब धन जमा करने का इंतजार नहीं करना है। ज्यादातर व्यक्तियों की सोच यह होती है कि काम के शुरू होने का एक मात्र उपाय परंपरागत पद्धति है।

कोशिश— जीवन में कुछ बातें या घटनाएँ संयोगवश हो सकती हैं, लेकिन अगर आप इस इंतजार में बैठे रहेंगे कि सबकुछ अपने आप अकस्मात् ही आपको हासिल होगा, तो शायद आप सारी जिंदगी इंतजार ही करते रह जाएँगे, क्योंकि संयोग हमेशा तो नहीं हो सकता। यहाँ तक कि भौतिक विज्ञान की क्वांटम थ्योरी भी यही कहती है कि अगर आप असंख्य बार तक कोशिश करते रहेंगे, तो एक दिन टहलते हुए दीवार के बीच से भी निकल सकते हैं। आपके बार-बार करने से कणों में स्पंदन होता रहेगा, जिसकी वजह से शायद दीवार के बीच से निकल पाना भी संभव हो जाए, लेकिन जब तक आप इस अवस्था को हासिल करेंगे, आपकी खोपड़ी फट चुकी होगी। तो जब तक आप किसी संयोग का इंतजार करते रहेंगे, आप व्यग्र रहेंगे, लेकिन जब आप पक्के इरादे के साथ अपनी क्षमताओं का भरपूर इस्तेमाल करते हुए अपनी मंजिल की तरफ बढ़ेंगे, तब यह बात मायने नहीं रखती कि क्या हुआ और क्या नहीं हुआ। आपके साथ जो भी होगा, कम-से-कम वह आपके वश में होगा। सुकून में जीवन होगा।

कोशिश— महान् बनने की कोशिश न करें। 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा', इसकी चिंता छोड़कर अगर अपने जीवन के लक्ष्य पर ध्यान देंगे और उसका दायरा बढ़ाएँगे, तो आप खुद एक असाधारण व्यक्ति बन जाएँगे। अगर आप गौर करें तो पाएँगे कि हमारे सामने जितने भी महान् व्यक्ति हैं, उनमें से किसी ने कभी महान् बनने की कोशिश नहीं की, बल्कि उनका नजरिया 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा' से कहीं आगे का रहा।

कोशिश— हमारी असफलताएँ यह नहीं बतातीं कि हममें प्रतिभा की कमी है, अपितु वे इस ओर इशारा करती हैं कि हमारी कोशिशों में कहीं-न-कहीं कोई कमी रही है। कई बार हमारी असफलता का कारण अपनी सामर्थ्य से बड़ी चीज के लिए इच्छा रखना भी होता है। हमें पहले पात्रता हासिल करनी चाहिए, इच्छा का स्थान बाद में आता है।

कोशिश— हारना सबसे बुरी विफलता नहीं है, कोशिश न करना ही सबसे बड़ी विफलता है।

क्रमबद्धता— अपनी दुर्बलताओं की पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें। स्वयं सीखने और अनुभव-प्राप्ति के स्वभाव को विकसित करें। सामाजिक सक्रियता बनाएँ रखें। इससे आपको सफलता मिलने में आसानी होगी। लक्ष्य सदैव एक रखें। दो लक्ष्य रखने पर आपकी स्थिति दो नावों पर एक साथ पैर रखकर सफर तय करने की हो जाएगी, जिसमें आपका डूबना निश्चित है।

क्रमिक एवं शाश्वत— जीवन में सफलता का बड़ा महत्त्व है, लेकिन असफल होने पर समूचे जीवन को ही नकार देना न केवल स्वयं के प्रति, बल्कि समूची व्यक्तिता के प्रति अन्याय है। जीवन का उद्देश्य इसकी शारीरिक

मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक शक्तियों का उत्तरोत्तर एवं निरंतर विकास है। यह क्रमिक एवं शाश्वत् है। सफलता और असफलता तो क्षणिक हैं। कोई भी व्यक्ति न तो स्थायी असफल होता है और न स्थायी सफल।

क्रियाशीलता—निष्क्रिय जीवन से बढ़कर दूसरा अभिशाप नहीं है। जो लोग क्रियाशील रहते हैं, वे काम करने का संतोष पाते हैं और अपनी प्रसन्नता से धरती का बोझ हल्का करते हैं। इसके विपरीत, जो काम से बचते हैं, वे स्वयं तो परेशान होते ही हैं, समाज में भी बड़ा दूषित वायुमंडल पैदा करते हैं। कर्ममय जीवन दूसरों पर अच्छा असर डालता है, आलसी दूसरे को आलसी बनाता है।

क्रोध पर विजय—पाँच मिनट का क्रोध जन्म भर की मित्रता को नष्ट कर देता है। जिस समय क्रोध का वेग आता है, हम अपने आपे से बाहर हो जाते हैं। हमारे विचार कुछ-के-कुछ हो जाते हैं। क्रोध को एक प्रकार का पागलपन भी समझा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्रोध को रोकना महाव्रत है। जितना ही यह रोका जाएगा, उतनी मनुष्यत्व की उन्नति होगी। क्रोध को रोकने के लिए यदि कोई उत्तम उपाय है तो वह मौन है। जबान पर काबू करना अपना ही क्रोध शांत करना नहीं है, बल्कि यह दूसरे के क्रोध को भी शांत कर देता है। ध्यान की ऊर्जा भी क्रोध को भस्म करने का काम करती है।

क्रोध पर विजय—यदि हमें कोई अपवचन या गाली देता है तो हमें उस पर क्रोध आता है। उस समय यदि हम शांति से उस विचार को रोक लें और अपनी क्रोधाग्नि को अंदर-ही-अंदर रहने दें तो दूसरे का क्रोध घटकर स्वत: ही न्यून हो जाता है। क्रोध से क्रोध नहीं जीता जा सकता, बल्कि उल्टे, यह बढ़ता है। क्रोध स्वरूप शस्त्र से बचने के लिए शांति एक ढाल है। क्रोध आने पर यदि हम चुप रहना सीख लें, तो हमारे जीवन की आधी तकलीफें मिट सकती हैं।

क्रोध—क्रोध करनेवालों से लोग कटने लगते हैं, अर्थात् उनसे दूर भागने लगते हैं। लोग उनसे बात करने में कतराने लगते हैं, क्योंकि न जाने कब वे भड़क जाएँ और झगड़ा हो जाए। एक तरह से ऐसे व्यक्ति समाज से कट जाते हैं, जो उनकी सफलता के लिए अत्यंत घातक होता है। क्रोध व्यक्ति का एक बहुत ही घातक अवगुण है। किसी भी कार्य में सफलता और अपना भाग्य बदलने के लिए इस अवगुण पर विजय पाना अत्यंत आवश्यक है।

क्रोध—क्रोध के बढ़ने पर व्यक्ति का मन, बुद्धि आदि उसके वश में नहीं रहते। तब व्यक्ति को केवल वही करना पड़ता है, जो क्रोध चाहता है। वह व्यक्ति को असफलता, अपराध, गलत निर्णय आदि की ओर ले जाता है।

क्रोध—क्रोध व्यक्ति का एक बहुत खतरनाक अवगुण है। क्रोध वह कीड़ा है, जो सूक्ष्म रूप में व्यक्ति के अंदर घुसता है। यदि उस कीड़े पर तुरंत नियंत्रण नहीं किया जाए तो वह विकराल रूप धारण कर लेता है और व्यक्ति को विनाश के मार्ग पर धकेल देता है।

क्रोध—क्रोध प्राय: साधारण कारणों से उत्पन्न होता है और साधारणत: ही उसे समाप्त भी किया जा सकता है; जो शांतचित्त, आत्मविश्वास, दृढ़-निश्चय से नियंत्रित हो सकता है।

क्रोध—क्रोध मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वाधिक दुर्बल पक्ष है। क्रोधी व्यक्ति को घर-परिवार कार्यस्थल अथवा समाज कोई भी कहीं भी पसंद नहीं करता। अपने तमाम गुणों के बावजूद बात-बात पर क्रोध से फुफकार उठनेवाले व्यक्ति लोगों की नापसंदगी का कारण बनते हैं। देखने में यह आता है कि जब हम झुकने को तैयार नहीं होते तो क्रोधित हो जाते हैं। हम अन्य लोगों पर क्रोध इसलिए करते हैं, क्योंकि हमें उनसे डर लगता है अथवा हम सोचते हैं कि हमारा उन्होंने तिरस्कार किया है। हमारे क्रोधित होने की वजहें असंगत बातें, गलत व्यक्ति या गलत कारण हैं।

क्रोध—क्रोध ही है, जो व्यक्ति को मूढ़ बना देता है। बड़े-से-बड़ा ज्ञानी भी क्रोध के बंधन में बँधकर विनाश करता

है। क्रोध पर विजय पानेवाला सफलता प्राप्त करता है। क्रोध से बचने के लिए मन में शांति बनाए रखना आवश्यक है। व्यर्थ की बातों में नहीं उलझना चाहिए। प्रसन्न रहकर क्रोध के आवेग को रोकना चाहिए।

क्रोध—क्रोधित होना कोई बुरी बात नहीं। क्रोध में बुराई तब पैदा होती है, जब आदमी विवेक खो देता है।

क्रोध—क्रोधी व्यक्ति आवेश में आकर हत्या या आत्महत्या तक कर लेता है। कोई-कोई बात उसे सहन नहीं होती और आवेश ही आवेश में वह अपनी जीवन लीला समाप्त कर बैठता है, क्योंकि क्रोध उसकी बुद्धि को हर लेता है। उसके सोचने-समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है, लेकिन जो व्यक्ति इस आवेश पर काबू पा लेता है, वह घातक क्रोध से बचकर स्वयं का नुकसान होने से तो बचाता ही है, साथ ही दूसरों को भी नुकसान से बचाता है। आवेश क्षणिक होता है। व्यक्ति शांत रहकर उसे शांत कर सकता है।

क्रोध—प्रसन्नचित्त रहना, क्रोध न आने की प्रमुख औषधि है, जो ब्रह्म□ास्त्र की भाँति कार्य करती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति को या तो बहुत कम क्रोध आता है या आता ही नहीं है, क्योंकि क्रोध के दुष्परिणामों को वह जानता है। क्रोध समाप्त होने पर ही व्यक्ति को स्वयं की भूल ज्ञात होती है कि उसने क्या खोया, क्या पाया? क्रोध व्यक्ति को असफलता के पास तो पहुँचाता ही है, साथ उन लोगों को भी आहत करता है, जो उसकी क्रोधाग्नि की चपेट में आते हैं। क्रोधी व्यक्ति का मानसिक संतुलन कभी ठीक नहीं रहता।

क्रोध—बहुत से क्रोधी व्यक्ति आस-पास देखे जा सकते हैं, जो क्रोध में ऐसे पागल होते हैं कि बस। जैसे, एक बार किसी व्यक्ति को हाथ पर थोड़ी सी चोट लग गई। उस पर एक मक्खी मँडराने लगी। व्यक्ति उसे बार-बार उड़ाता लेकिन वह फिर आकर बैठ जाती। जनाब का पारा सातवें आसमान पर। उन्होंने झपट्टा मारकर मक्खी को पकड़ा। मक्खी में जान ही कितनी होती है? बेचारी मर गई, परंतु उनका क्रोध शांत नहीं हुआ। उसे एक पत्थर पर रखा और हथौड़े से पीट-पीटकर ऐसा कर दिया कि पता ही नहीं लगा कि उसे कुचला या पत्थर तोड़ा? यह क्रोध था या हैवानियत? तनिक क्रोध में वह व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो बैठा और मरी हुई मक्खी को हथौड़े से पीटने लगा।

क्रोध—व्यक्ति क्रोध से स्वयं को जलाता है, क्योंकि इससे वह स्वयं का ही अधिक नुकसान करता है। क्रोधी व्यक्ति से तनिक भी वार्त्तालाप झगड़े का कारण बन सकता है, क्योंकि वह छोटी-सी बात भी सहन नहीं कर सकता और अपने आवेग को रोक नहीं पाता।

क्रोध—हर मनुष्य में क्रोध का थोड़ा अथवा ज्यादा पुट होता है। किसी मनुष्य में क्रोध पत्थर पर खिंची लकीर सरीखा होता है तो कुछ में जल पर अंकित रेखा के समान। क्रोध में सदैव गड़बड़ी होती है। क्रोधी स्वभाव किसी कार्य में विघ्न का कारण बनता है। यह हमें कार्यकुशलता से दूर ले जाता है तथा जो चीजें हमारी सहायक हो सकती थीं, वही हमारी विरोधी बन जाती हैं। आचरण और विवेक के अभाव में व्यक्ति के सद्गुण विसर्जित हो जाते हैं। भटकाव की यही मन:स्थिति क्रोध को आमंत्रित करती है। इससे बचना ही समझदारी है।

क्षमता—अगर आप सर्वश्रेष्ठ देकर सर्वश्रेष्ठ बनने की क्षमता को जानते हैं तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता।

क्षमता—अपना ध्यान अपनी कमजोरियों के बजाय अपनी क्षमताओं पर लगाएँ। उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करें, जहाँ आपने अपनी क्षमता का सबूत दिया है। साथ ही, अपनी कमियों-कमजोरियों पर भी अंकुश लगाना चाहिए और उन्हें दूर करने की चेष्टा करनी चाहिए। किंतु इस प्रक्रिया में भी आपका ध्यान आपकी क्षमताओं पर रहना चाहिए।

क्षमता— अपनी क्षमताओं को समझें। आत्मसम्मान की भावना विकसित करें। प्यार की भाषा बोलें। किसी के साथ ऐसा व्यवहार बिल्कुल भी न करें, जैसा कि आप अपने लिए नहीं चाहते हैं। समझदारी और विश्वास का सही इस्तेमाल करना सीखें। किसी की बातों पर पूरी तरह भरोसा तो करें, लेकिन मन में एक प्रश्न-चिह्न भी रखें। इससे आप धोखा नहीं खाएँगे।

क्षमता— पानी को एक निश्चित ताप तक गर्म करने पर ही उससे भाप बनती है—वह भाप, जिसकी शक्ति से विशालकाय इंजन धक्का पाकर अपने पथ पर आगे बढ़ता है। यदि भाप अन्य रास्तों से निकल जाए या पानी को कम दर्जे की गरमी दी जाए, जिससे भाप पैदा नहीं हो तो इंजन आगे नहीं बढ़ेगा। जीवन-रूपी इंजन को भी अपने लक्ष्य, उद्देश्य की ओर अग्रसर करने में अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित करना पड़ता है। किसी कार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक क्षमता की आवश्यकता है।

क्षमता— लोगों को हमेशा ही उन रास्तों की खोज में लगे रहना चाहिए, जिन रास्तों पर चलकर वे अपने प्रदर्शन की क्षमता को बढ़ा सकें, ताकि प्रतियोगिता की इस दुनिया में आगे बढ़ सकें।

क्षमता-ज्ञान— यदि व्यक्ति में स्वयं व्यक्तित्व-विकास की क्षमता होगी तो उसे बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती। वह स्वयं अपनी क्षमता का उपयोग कर अपने व्यक्तित्व का निर्माता स्वयं हो सकता है। और यही गुण व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाते हैं, जबकि क्षमताहीन व्यक्ति व्यक्तित्व विकास के अवसर ही खोजता रह जाता है।

क्षमता-ज्ञान— रेस में दौड़ने पर ही व्यक्ति को अपनी क्षमता का ज्ञान होता है। संभव है कि एक-दो बार वह असफल हो जाए, लेकिन उस असफलता से उसकी आस्था बढ़ जाती है और एक दिन वह सफलता प्राप्त कर लेता है।

क्षमता-निर्माण— एक दिशा विशेष निश्चित कर लेने के बाद क्षमताओं का निर्माण करें। विशिष्ट जीविकाओं के लिए विशिष्ट शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। आप जिस क्षेत्र में भी जाना चाहें, उसमें आप सफल होंगे, बशर्ते कि आप उसमें सर्वश्रेष्ठ बनने की चेष्टा करें। उस पर अपनी व्यक्तिगत छाप छोड़ें। चलते-चलते आप सीख जाएँगे। आप उन दक्षताओं एवं क्षमताओं को प्राप्त कर लेंगे, जो आपका सफर आसान कर देंगी। महत्त्वपूर्ण है—यात्रा आरंभ करना।

क्षमा माँगना— कई बार हम सिर्फ इसलिए अस्वीकार कर दिए जाते हैं कि हम जाने-अनजाने की गई अपनी त्रुटियों को पहचान नहीं पाते और इससे भी बड़ी भूल तब होती है, जब त्रुटियों को पहचानते हुए भी उन्हें दूसरों पर व्यक्त कर उनसे माफी नहीं माँग पाते। क्षमा माँगना तथा क्षमा करना, दोनों ही हमारे व्यक्तित्व की विशालता को प्रकट करते हैं। सच्चे दिल से माँगी गई क्षमा सिर्फ अपनी कमी मान लेने भर से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। तभी तो व्यवहार-कुशल लोग एक पल भी गँवाए बिना कहते हैं, "मैं माफी चाहता हूँ।"

क्षमा माँगना— क्षमा माँगना तथा क्षमा करना, दोनों ही हमारे व्यक्तित्व की विशालता को प्रकट करते हैं। सच्चे दिल से माँगी गई क्षमा, सिर्फ अपनी कमी मान लेने भर से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। यह बात स्पष्ट करती है कि संबंधों में आनेवाली दरार की आशंका से आप अशांत हैं और उसके लिए खुद को क्षमा पात्र समझते हैं।

कड़ी मेहनत— अगर किसी को दस बार सफलता हासिल हुई है, तो नौ बार का श्रेय कड़ी मेहनत को जाता है। सफलता हासिल होने पर हम कौशल और भाग्य की बात करते हैं, मगर अकसर इन जरूरी बातों को भूल जाते हैं कि उसके पीछे हमने कितने घंटे लगाए थे, कितनी मेहनत की थी और कितनी बार हम नाकाम हुए थे।

कड़ी मेहनत—दुनिया आपको मुफ्त में कुछ नहीं देती। सफलता जैसी बेशकीमती चीज तो बिल्कुल नहीं। अत: सफलता का पकवान चखने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी

कड़ी मेहनत—यदि कोई दूसरा व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने में असफल रहता है तो यह जरूरी नहीं कि उस लक्ष्य को पाने में आप भी असफल हो जाएँगे। जरूरी है कि आप लक्ष्य को पाने के लिए उससे कड़ी मेहनत करें और यह भूल जाएँ कि दूसरों को किस तरह कि समस्या का सामना करना पड़ा?

कड़ी मेहनत—व्यक्ति के सफलता के रास्ते में जितने ज्यादा जोखिम और कष्ट आते हैं, वह इनसान अपने जीवन में उतना ही ज्यादा सफल इनसान बनता है। कुछ लोग बिना कोई कर्म किए ही अपने बिस्तर पर सोते-सोते फल पाने का इंतजार करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति कुछ नहीं, बस सोते-सोते अपने जीवन के सभी बड़े अवसरों को खो देते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत है। इसका कोई छोटा रास्ता नहीं होता।

खयाली पुलाव—सफलता के लिए सोच एवं खयाली पुलाव बनाने के बीच अंतर को समझना आवश्यक है। महज खयाली पुलाव बना लेने से ही सफलता नहीं प्राप्त होती, सोच पर अमल करने की भी आवश्यकता होती है। खाली बैठे-बैठे सोचना व्यर्थ ही होता है। इसके और सफलता के बीच कोई संबंध नहीं होता। सफलता के लिए उस संबध को जान लेना अति आवश्यक है। खाली खयाली पुलाव बनाना, समय बरबाद करने का एक तरीका भर है। सफलता के लिए इस प्रकार की आदतों को छोड़ दें।

खराब आदत—इनसान की खराब आदतों में से एक है—अपनी विफलता का जिम्मेदार दूसरों को ठहराना। इनसान की फितरत है कि जब वह किसी वजह से सफल नहीं हो पाता है तो वे अपने आस-पास के लोगों और परिचितों को दोषी ठहराने लगता है, लेकिन यह आदत उसकी भविष्य में सफल होने की संभावनाएँ भी कम कर देती है।

खुला दिमाग—खुला दिमाग रखनेवाला व्यक्ति ही वास्तव में शिक्षित है और जीवन के सुख हासिल करने में सक्षम है। खुले दिमाग के कारण कुछ भी असह्य नहीं लगता। आपका शरीर और दिमाग चाहे वह जीवित हो या मृत, लाखों ऐसी लघु ऊर्जाओं का संग्रह है, जो कभी मर ही नहीं सकतीं। ये ऊर्जाएँ अलग अस्तित्व रखती हैं, लेकिन समय पड़ने पर ये सब मिलकर सद्भावपूर्ण तरीके से काम करती हैं।

खुलापन—खुली आँखें हर जगह सुयोग ढूँढ़ लेंगी और खुले हाथों को कभी सत्कर्म की कमी नहीं रहेगी।

खुशी की शक्ति—जो व्यक्ति ईर्ष्या, क्रोध व प्रतिशोध की भावना के कारण गलत मार्ग की ओर उन्मुख हो जाते हैं, उनका जीवन कष्टप्रद हो जाता है, जबकि मन की शुचिता व्यक्ति को सदाचरण पर चलने की प्रेरणा देती है। खुशी का जज्बा व्यक्ति को शालीन, विनम्र और व्यवहारकुशल बनाता है। जिस व्यक्ति के अंदर दिल से निकली सच्ची खुशी विराजमान रहती है, उसका लोक-व्यवहार उत्कृष्ट होता है। जो खुशी की शक्ति को पहचान जाते हैं, वे छोटी-छोटी बातों में खुशियाँ तलाशकर अपने जीवन को खुशहाल बना लेते हैं।

खुशी—खुशी व्यक्ति को आंतरिक रूप से मजबूत रखती है। नैतिकता व कर्तव्य-बोध का पालन करते हुए जब खुशी मिलती है, तब वह सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यंत सुदृढ़ होती है। खुशियाँ बाँटने से उसी प्रकार बढ़ती हैं, जिस प्रकार विद्या दान देने से बढ़ती है। एक प्रसन्न मनुष्य सुखी होता है और वह संस्कृति व सभ्यता को अपने कर्मों से जीवंत रखता है।

खुशी—जो व्यक्ति ईर्ष्या, क्रोध व प्रतिशोध की भावना के कारण गलत मार्ग की ओर उन्मुख हो जाते हैं, उनका जीवन कष्टप्रद हो जाता है, जबकि मन की शुचिता व्यक्ति को सदाचरण पर चलने की प्रेरणा देती है। खुशी का

जज्बा व्यक्ति को शालीन, विनम्र और व्यवहारकुशल बनाता है। जिस व्यक्ति के अंदर दिल से निकली सच्ची खुशी विराजमान रहती है, उसका लोक-व्यवहार उत्कृष्ट होता है।

खूबियाँ—हमारे भीतर जो भी खूबियाँ हैं, हमें उनका दिल खोलकर उपयोग करना चाहिए। हम जिस वस्तु को उपयोग में नहीं लाते, वह धीरे-धीरे समाप्त होती चली जाती है। हम यदि अच्छे हैं, हमारी सोच अच्छी है तथा हम लोगों की भलाई के बारे में विचार करते हैं तो उसको प्रकट करना भी सीखिए।

गरीबी—गरीबी एक बदसूरत मुखौटा है, जो वास्तविक सुंदरता को छुपाता है। यदि आप भी अमीर और महान् बनना चाहते हैं तो आपको संघर्ष करते रहना होगा।

गलत चुनाव—सामान्य जीवन में अकसर होता यह है कि जो हम बनना चाहते हैं, वह नहीं बन पाते और कई बार माता-पिता की इच्छा, वातावरण तथा दूसरों की देखा-देखी उन व्यवसायों को चुन लेते हैं, जिनमें हमारी रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं होती। इसका नतीजा यह होता है कि हम बेमन से जब कामों को अनजाम देते हैं तो वे आधे-अधूरे ही हो पाते हैं। याद रखिए, आधे-अधूरे मन से किया गया कोई भी काम कभी भी हमें निर्धारित लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकता।

गलत नीति—साम, दाम, दंड, भेद जैसी नीतियों का प्रयोग करके मिली सफलता स्वयं को पूर्ण संतुष्ट नहीं कर पाती। इस प्रकार की सफलता किसी को प्रेरणा नहीं दे सकती, क्योंकि उस सफलता के पीछे न तो उस व्यक्ति का दृढ़-निश्चय होता, न आत्मविश्वास और न ही मेहनत।

गलतियाँ—उपलब्धि तथा श्रेय कोशिश तथा नाकामी के स्वाभाविक मार्ग पर उगे हरे छायादार वृक्षों जैसे हैं। बहुत कम लोग समझ पाते हैं कि हमारी साहसिक गलतियाँ ही सफलता की सीढ़ियाँ बन जाती हैं। पराजय हमारी असफलता का कारण नहीं हैं, बल्कि पराजय में जो सीख, नसीहत तथा अनुभव छिपा है, उसे न पहचान पाना ही हमें असफल बनाता है। हमें चाहिए कि हम स्वीकारना सीखें—अपनी गलतियों तथा उपलब्धियों के साथ जुड़ी जिम्मेदारियों को।

गलतियाँ—ऐसे इनसान भी खोजना मुश्किल है, जिसने कभी कोई गलती न की हो, लेकिन एक बार की गलती से सबक लेकर जीवन में दोबारा उसे न दोहराने वाले लोग ही बुद्धिमान कहलाते हैं। हमें मन में ठान लेना चाहिए कि अब से गलती नहीं करेंगे।

गलतियाँ—गलतियाँ करना व्यक्ति का स्वाभाविक गुण है। गलतियाँ कष्ट देती हैं, पर इन्हें सुधारने पर हम सफलता के नए द्वार पर होते हैं।

गलतियाँ—गलतियों को अनावश्यक तूल न दें। कोशिश रहनी चाहिए कि गलती को किस तरह से सुधारा जा सकता है। अगर गलती को अनावश्यक तूल दिया जाएगा, तो हो सकता है कि व्यक्ति विशेष के मन में ऐसी कोई गाँठ पड़ जाए कि वह नकारात्मक रास्ता अख्तियार कर ले। उसका आत्मविश्वास खो सकता है। वह आपको अपना शत्रु मानकर चल सकता है और मौका पड़ने पर आपको आघात भी दे सकता है। गलती किसी से भी हो सकती है। सकारात्मक रवैया अपनाने पर व्यक्ति अपनी गलती से सबक लेता है।

गलतियाँ—जिंदगी में हर कोई सफल पैदा नहीं होता और हर किसी को अपनी जिंदगी खुद से बनानी होती है और जब हम अपने लिए ऐसा करते हैं तो बहुत संभावना है कि हम गलतियाँ भी करते हैं, लेकिन ऐसे में अपनी गलतियों से सबक लेना चाहिए। आज के काम के बीच में अपने अतीत की गलतियों को कभी आड़े नहीं आने दें।

गलतियाँ—जिसे हम अनुभव कहते हैं, उसमें काफी हद तक वे बातें शामिल होती हैं, जिन्हें हमने गलतियों से

सीखा है। वे गलतियाँ हमारी अपनी होती हैं और दूसरों की भी, लेकिन इन गलतियों से सीखे गए सबक को कभी नजरअंदाज न करें।

गलतियाँ—हम खेलने में कम, उसकी हार-जीत में अधिक दिलचस्पी रखते हैं। हम जमकर खेलना नहीं चाहते और सपने देखते हैं कि सुरक्षित तरीके से जीत को कोई आकर हमारी गोद में रख जाए। बहुत से लोग हैं, जो अपनी गलतियों को रोमांचक नहीं बना पाते। हमें अपने बारे में, अपने प्रयासों के बारे में विचार करना चाहिए। हमें बिना किसी हील-हुज्जत के अपनी खूबियाँ, खामियाँ कबूल करनी चाहिए।

गलती—आपकी गलती आपका अनुभव बढ़ाती है, आपका अनुभव आपकी गलतियाँ कम करता है। अगर आप अपनी गलतियों से सीखते हैं तो दूसरे आपकी सफलता से सीखते हैं।

गलती—गलतियों को अनावश्यक तूल न दें और न ही उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर देखें। कोशिश होनी चाहिए कि गलती को किस तरह से सुधारा जा सकता है। गलती किसी से भी हो सकती है। सकारात्मक रवैया अपनाने पर व्यक्ति अपनी गलती से सबक लेता है। हमें अपने साथी, सहयोगी, मित्र अथवा कर्मचारी की इसी क्षमता को उभारना चाहिए।

गुण—अच्छे गुण होंगे तो आदमी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाएगा, क्योंकि कार्यकुशलता ही सर्वोत्तम गुण है, जिसके कारण व्यक्ति को सम्मान मिलता है।

गुण—उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम—ये छह गुण जिसमें होते हैं, देव उसी की सहायता करते हैं।

गुण—क्षमा, सहायता व सहयोग करने की आदत बना लें। ये गुण कभी व्यर्थ नहीं जाते और आड़े वक्त पर काम आते हैं।

गुण—जो अपने गुणों को अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रस्तुत करता है, वह सफलता की ओर अग्रसर होता है। गुण सभी में होते हैं, अर्थात् सभी में कुछ-न-कुछ गुण होते हैं, लेकिन गुणी वही होता है, जो अपने गुणों का सही उपयोग जानता हो।

गुण—मनुष्य का कोई गुण ऐसा नहीं है, जिसे हर मनुष्य अपने में पैदा या विकसित न कर सके।

गुण—यदि आप हजारोहजार की भीड़ में सबसे अलग, सबसे ऊँचे और सबके प्रिय बनना चाहते हैं, तो अपने भीतर छिपे गुणों को पहचानें और उन्हें इतना सँवारें कि आपका व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली बन जाए।

गुरु—आप अपने सबसे बड़े गुरु और निर्देशक हैं। पहले अपने अंदर मजबूती लाइए। अपने विचारों को दृढ़ कीजिए।

गुलामी—जो मनुष्य अपने मन का गुलाम बना रहता है, वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता।

घात-प्रतिघात—सच्चा मनुष्य वही है, जो प्रसन्नता के साथ आपत्तियों को सहन करता है और उनके अनुभव से आगे के लिए अपने निर्दिष्ट मार्ग से सफलता उत्पन्न करता है। संसार के किसी भी मार्ग में मखमल नहीं बिछी हुई है। प्रत्येक मार्ग में काँटे, पत्थर, गड्ढे, अनेकानेक घात-प्रतिघात हैं। उनमें होकर पार हो जाने का ही नाम सफलता है। याद रखिए, उन्हीं की किस्मत बदलती है, जो इसे बदलना चाहते हैं।

चरणबद्ध प्रक्रिया—सफलता एक चरणबद्ध प्रक्रिया है, इसलिए छोटी-छोटी उपलब्धियों के बल पर आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इसलिए, अगर आप कोई बड़ा काम नहीं कर पा रहे हैं, तो छोटे या सामान्य काम से ही शुरुआत कर सकते हैं। सच तो यह है कि अपनी रुचि के क्षेत्र में यह सामान्य काम ही सफलता की ओर आपका

पहला कदम होगा। प्रत्येक अगला कदम आपको लक्ष्य के नजदीक ले जाएगा क्योंकि बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। आपके वे छोटे-छोटे कदम एक दिन बड़ी दूरी तय कर लेंगे।

चरित्र और व्यवहार—किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण करने में चरित्र को मूल तत्त्व माना जा सकता है। केवल चरित्र और व्यवहार में सुधार करने से ही व्यक्तित्व में काफी प्रभाव आ जाएगा। यह सच है कि अगर किसी व्यक्ति का चरित्र एवं व्यवहार अच्छा नहीं है तो प्रभावशाली व्यक्तित्व के पीछे अन्य सभी तत्त्व व्यर्थ हो जाएँगे। अगर व्यक्तित्व का विकास मूल्यों एवं सद्गुणों की ठोस बुनियाद पर किया जाए तो वह सदैव कायम रहेगा। झूठी मुसकराहट और बनावटी व्यवहार दूसरों को अपेक्षाकृत थोड़े समय के लिए आकृष्ट कर सकता है, किंतु उनकी उम्र छोटी होती है और किसी के व्यक्तित्व को सुधारने में वे सहायक नहीं होते।

चरित्र—चरित्रवान व्यक्ति कभी निराश नहीं होते, क्योंकि उनकी भावनाएँ उदात्त एवं ऊर्ध्वगामी होती हैं। वे हर क्षण कठिनाइयों से लड़कर अपना अभीष्ट पा लेने की क्षमता रखते हैं।

चलते रहो—अपने मस्तिष्क को अपना रास्ता स्वयं खोजने की शक्ति दीजिए। मेहनत कीजिए, लेकिन बिना योजना के नहीं। एक-एक कदम उठाइए। जब एक कदम उठा चुके हों, तब तैयारी करें। आकांक्षा क्षणिक नहीं होती, न ही उन्मादी होती है। आवेग कहता है—रुको मत, चलते रहो। ढलो मत, निखरते रहो।

चापलूसी—चाटुकार व्यक्ति अपना काम निकालने के लिए नई-नई योजनाएँ बनाता रहता है। इसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े, चाहे लोगों का काम करना पड़े; जी-हजूरी, बच्चों को घुमाना, बाजार से सामान लाना, उनकी झूठी प्रशंसा करना इत्यादि। चापलूस व्यक्ति इन अवगुणों का भंडार होता है। वह कर्तव्य को भूलकर ऐसे कार्यों को करने लगता है, जो उसे असफल बनाते हैं क्योंकि फिर उसके जीवन का लक्ष्य केवल चापलूसी ही हो जाता है। वह केवल जी-हजूरी करके अपने को पथभ्रष्ट करते रहते हैं। साथ ही, दूसरों को भी स्वयं का जैसा बनाने का प्रयास करते हैं।

चापलूसी—चापलूस में कोई गुण नहीं होता। ये जीवन में असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं देती। चापलूसी एक अभिशाप है। इससे बचना चाहिए और अपने आत्मसम्मान, अपने गुणों को पहचानकर उनके अनुसार कार्य करना चाहिए। इस प्रकार कठिन-से-कठिन कार्य आपके गुणों के कारण सरल एवं सिद्ध हो जाएगा। चापूलसी अस्थायी दर्द निवारक औषधि है। अत: इसे स्थायी समाधान के लिए नहीं लिया जा सकता।

चापलूसी—चापलूसी वह दुर्गुण है, जो चापलूस व्यक्तियों को दूसरों का गुलाम बनाए रखता है क्योंकि चापलूस व्यक्तियों में वे गुण नहीं होते हैं, जिनके बल पर वे जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। इसलिए वे प्राय: अपना काम बनाने के लिए दूसरों की जी-हजूरी में लगे रहते हैं।

चाह से राह—जहाँ चाह होती है, वहीं राह होती है। काम के प्रति आशावान होना सफलता की निशानी है। जो रेस में दौड़ता है, वही विजय पाता है। जो डूबता है, वही अथाह सागर से हीरे-मोती निकालने में सफल होता है। जो चढ़ पाता है, वही पेड़ पर से फल तोड़ सकता है अन्यथा नीचे खड़ा-खड़ा या तो पत्थर मारता रहता है या फल के गिरने की प्रतीक्षा करता है।

चाह से राह—राह दिखलाई नहीं देती, परंतु एक प्रबल इच्छा दिखलाई देती है। प्रबल इच्छा आगे चलकर साकार हो जाती है और चाह से राह बन जाती है।

चाह—सफलता प्राप्त करनेवाले इनसान बेसुध होकर दिन भर काम करते हैं, लेकिन हर काम करने का उनका एक उद्देश्य होता है। वे हमेशा परिणाम देखना चाहते हैं और वे अपना काम भी परिणाम मिलने की चाह से करते

हैं न कि काम में व्यस्त रहने की चाह में।

चाह—सबसे पहले आपको अपने जीवन में क्या चाहिए, अपनी चाह—यह तय करना चाहिए और उसे पाने के लिए पूरी लग्न से कोशिश करते रहना चाहिए, जब तक आपको वह मिल न जाए। याद रखिए, सबको सबकुछ नहीं मिल सकता। अपने लिए आपको क्या चाहिए, यह आपको पता होना जरूरी है।

चाहत—कोई चीज पाने की चाह रखना ही उसकी कामना नहीं है। चाह रखना तो कामना करने का एक निष्क्रिय रूप मात्र है। जो कुछ आपकी चाहत है, उसका पहला कदम वैसी चेतना है, फिर मानसिक रूप से उसके लिए तैयार होने और फिर उस दिशा में हाथ-पैर हिलाने की प्रक्रिया शुरू होती है।

चिंतन—अकलमंद इनसान चिंता नहीं, चिंतन करता है।

चिंतन—चिंतन इनसान को शक्तिशाली और आत्मविश्वासी बनाता है। चिंतन और चिंता में वही अंतर होता है, जो एक स्वस्थ व्यक्ति और रोगी में होता है।

चिंतन—सफलता, समृद्धि और ख्याति प्राप्त करने का भी एक निश्चित समय होता है। सफलता का चिंतन करनेवाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त कर सकता है।

चिंतन—स्वस्थ चिंतन मनुष्य में आत्मविश्वास की शक्ति भर देता है और वह सफलता की ओर निरंतर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत, चिंताग्रस्त व्यक्ति रोगों से ग्रस्त, निराश और हताश होता है। उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण होकर नष्ट हो जाता है।

चिंता नहीं चिंतन—चिंता ऐसा विकार है, जो मन-मस्तिष्क को झकझोर कर रख देता है। इसलिए चिंता नहीं, चिंतन कीजिए। यह सोचिए आप औरों से बेहतर क्यों हैं? इस सवाल का जबाव यदि आप स्वयं से पूछते हैं तो आपकी चिंताओं का निवारण स्वयं हो जाएगा।

चिंता—अधिकतर व्यक्ति भविष्य की चिंता में अपना वर्तमान चौपट कर लेते हैं। बस, वे सोचते रहते हैं कि आनेवाले समय में क्या होगा? यह चिंता उन्हें घेरती है तो वे आज को भी भूल जाते हैं। आज के कार्य के लिए उनके पास जो ऊर्जा होती है, उसे वे भविष्य के विषय में सोचकर समाप्त कर देते हैं। चिंता कोई औषधि है, जिसे लेने से वह समस्या हल हो जाएगी? चिंता औषधि नहीं, अपितु एक धीमा विष है, जो व्यक्ति को धीरे-धीरे क्षीण करता जाता है।

चिंता—कष्ट इतना कष्टकर नहीं होता, जितनी कि उसकी चिंता कष्टकर होती है।

चिंता—कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, बल्कि चिंता मारती है।

चिंता—कोई भी चिंता हमें विरासत में नहीं सौंपी जाती। हम अपने अज्ञान द्वारा ही चिंताओं को आमंत्रित करते हैं। ज्ञान और विवेक ही हमें चिंतामुक्त करने की सामर्थ्य देते हैं। ज्ञान ही सत्य का दूसरा नाम है। सत्य ही भय और अंधविश्वास से हमें बचाता है।

चिंता—चिंता एक ऐसी हथौड़ी है, जो मष्तिष्क के सूक्ष्म व सुकोमल सूत्रों को विघटित कर उसकी कार्य करने की शक्ति को नष्ट कर देती है। चिंता ने आज तक कभी किसी काम को पूरा नहीं किया। चिंता रूपी साँपिन ने जन्म लेनेवाले प्रत्येक मनुष्य को डसा है।

चिंता—चिंता को चिता की संज्ञा दी गई है। चिंता जब आती है तो अपने साथ अनेक हानियाँ लेकर भी आती है, जिसका कुप्रभाव हृदय, ग्रंथियों, संपूर्ण नाड़ी यंत्र तथा संपूर्ण स्वास्थ्य पर पड़ता है। चिंता के कारण कायिक बीमारियों का विकास होता है। व्यक्ति की शक्ति व सामर्थ्य में कमी आती है तथा उसका जीवन दु:खी तथा

कष्टप्रद बन जाता है। चिंता व्यक्ति की उम्र को खा जाती है। चिंता मानसिक संवेगों की प्रक्रिया है। हम अपने वैचारिक पक्ष को सुधार कर चिंता पर काबू पा सकते हैं।

चिंता—चिंता को ढूँढ़ने के लिए व्यक्ति को कहीं जाना नहीं पड़ता, अपितु यह कहें कि चिंता अपने शिकार को स्वयं ढूँढ़ लेती है। व्यक्ति चिंता के अनेकानेक कारण बना लेता है। घर-परिवार की चिंता, बच्चे की बीमारी, पढ़ाई आदि की चिंता, नौकरी की चिंता, शादी की चिंता, धन की कमी, आस-पड़ोस सुखी है, उसे लेकर चिंता, सफेद होते बालों की चिंता, वृद्धावस्था की चिंता आदि-आदि। व्यक्ति पग-पग पर चिंता के कारण बना लेता है और उन्हें जबरदस्ती गले लगाकर बैठ जाता है। स्वयं को भ्रम की स्थिति में रखता है। मृत्यु अटल है। उसकी चिंता कि कहीं मृत्यु न आ जाए? मेरे बाद क्या होगा?

चिंता—चिंता वह दीमक है, जो व्यक्ति को अंदर-ही-अंदर खोखला कर देती है। कोई भी ऐसी समस्या नहीं है, जो चिंता करने से सुलझती हो अथवा चिंता उसका हल हो, अपितु चिंता को छोड़कर उस समस्या को हल करने के उपायों से समस्या सुलझती है। जो व्यक्ति चिंता जैसे महादुर्गुण पर काबू पा लेता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

चिंता—चिंता व्यक्ति की योग्यता को चट कर जाती है, क्योंकि चिंता के कारण वह कहीं और ध्यान नहीं लगा पाता और अपनी आंतरिक शक्ति को भूल बैठता है। समस्या को कैसे सुलझाना है, उसे भूलकर वह केवल समस्या पर केंद्रित रहता है और उसके चारों ओर घूमता हुआ, स्वयं को रोगों से ग्रस्त कर लेता है। इसके विपरीत, यदि वह उस समस्या के हल को खोज ले तो न समस्या रहेगी, न ही चिंता।

चिंता—चिंता से भागना नहीं चाहिए, क्योंकि चिंता आपको छोड़ेगी नहीं। वह आपके ही साथ लगी रहती है। लेकिन चिंता को कैसे भगाया जा सकता है? उसका उपाय यही है कि चिंता के प्रति अपनी मानसिकता बदलें, अर्थात् चिंता से मुक्ति पाने के उपाय अपनाएँ। चिंता बाहरी नहीं होती कि उसे कपड़ों की तरह उतारकर एक ओर रख दिया जाए। चिंता व्यक्ति के अंतर्मन में बसती है। अत: मन को वश में करने पर चिंता दूर होती है। अपने मन को वश में करके उस समस्या का हल ढूँढ़ना चाहिए, जिसके कारण चिंता मन में घर बनाती है।

चिंता—जिस प्रकार बिजली चले जाने पर ही दीपक, मोमबत्ती, लालटेन आदि को जलाया जाता है, उसी प्रकार जब समस्या उत्पन्न हो, ठीक तभी उसे सुलझाना चाहिए। यदि उसके विषय में पहले से सोचकर तनाव पाला जाए, जैसे—रात में बिजली चली गई तो? यदि मोमबत्ती नहीं मिली तो? दीपक टूट गया तो? लालटेन का काँच टूट गया तो? बत्ती हवा से बुझ गई तो? ये बातें चिंता का कारण बनती हैं। कहने का अर्थ यह है कि समस्या को सामने उपस्थित होने पर ही सुलझाना चाहिए, न कि उसके विषय में पहले से ही सोच-सोचकर परेशान होना चाहिए।

चिंता—भय की आशंका चिंता को जन्म देती है। कहीं ऐसा न हो जाए, वैसा न हो जाए, उधर कोई है, उसने मुझसे ऐसे कहा, आदि-आदि विचार चिंता के मुख्य कारण हैं। व्यक्ति का कोई कार्य न होने पर या कोई अन्य कारण से वह चिंताग्रस्त हो जाता है। धीरे-धीरे चिंता उसे अनेक रोगों; जैसे रक्तचाप, हृदयाघात आदि से जकड़ लेती है, जो व्यक्ति की सफलता के लिए घातक होते हैं।

चिंता—व्यक्ति परेशानियों को अकारण ही इतना एकत्रित कर लेता है कि उसे उनकी चिंता सताने लगती है और वह अपनी खुशियों को, अपनी सफलता को उनमें उलझा डालता है, जो व्यक्ति को निष्क्रिय कर उस पर आधिपत्य जमा लेती है। फिर व्यक्ति छटपटाता रहता है, लेकिन उनसे मुक्त नहीं हो पाता। बहुत ही कम लोग इनसे छुटकारा पाने में सफल होते हैं। वे लोग, जो वास्तव में छुटकारा पाना चाहते हैं, अर्थात् वे ही चिंता से मुक्ति पाते हैं, जो

चिंता का त्याग करते हैं।

चिंता, डर और शंका—ऐसे इनसान जो चिंता, डर और शंकाओं से घिरे होते हैं, कभी सफल नहीं होते और न ही उन्हें मानसिक शांति मिलती है।

चुंबकीय आकर्षण—वैयक्तिक चुंबकीय आकर्षण प्रत्येक व्यक्ति में मौजूद रहता है। वास्तविकता तो यह है कि यह गुण उन लोगों में भी होता है, जिन्हें घोर नापसंद किया जाता है और भरोसा करने योग्य नहीं समझा जाता है। उनमें व्यक्तिगत चुंबकीय प्रभाव वास्तव में प्रबल होता है। अंतर सिर्फ इतना है कि वहाँ ऋणात्मक ध्रुव (नकारात्मक ध्रुव) काम कर रहा होता है। जिस प्रकार वैयक्तिक चुंबकत्व का धनात्मक ध्रुव वास्तव में प्रभावशाली और चमत्कारिक लोगों के लिए काम करता है, ठीक उसी तरह प्रबल ऋणात्मक ध्रुव इन लोगों के लिए सक्रिय रहता है। और उन लोगों का क्या, जो दोनों के बीच में हैं? वैयक्तिक आकर्षण उनमें फिर भी रहता है। बस, इतना प्रबल नहीं होता, जितना कि औरों में होता है। इसके प्रभाव का दायरा अपेक्षाकृत अधिक छोटा होता है। आप निश्चय ही इसे विकसित कर सकते हैं। आपको इस पर सिर्फ काम करने की आवश्यकता है—धैर्य और दृढ़ता से। और अगर आप इस दिशा में अपेक्षित प्रयास कर सकते हैं तो उसके लाभ अनंत हैं।

चुनौतियाँ—एक बात समझ लें, परेशानियाँ और चुनौतियाँ हमेशा जीवन में रहती हैं। जो उनसे लड़ता है, वह जीतता है और सफल होता है, और जो भागता है, वो भागता ही रह जाता है।

चुनौतियाँ—चुनौतियों का सामना कई लोग कठिनाइयों और नाकामियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं होते, क्योंकि उन्होंने कभी किसी काम में डटे रहने की इच्छाशक्ति ही विकसित नहीं की होती। इसलिए नाकामी हाथ लगने पर वे बहुत जल्दी हथियार डाल देते हैं। नाकाम होने पर कई लोग इस तरह व्यवहार करते हैं, जिससे वे खुद को बहुत हानि पहुँचाते हैं। वे खुद पर तरस खाने लगते हैं, सभी को दोषी ठहराते हैं, अपना दिल खट्टा कर लेते हैं और हार मान लेते हैं। यह नजरिया सही नहीं है। इससे कोई फायदा भी नहीं होता। दरअसल, हम यह भूल जाते हैं कि परीक्षाओं से हमें कुछ-न-कुछ फायदा होता है। हर क्लेश से हम कुछ-न-कुछ सीखते हैं। व्यक्ति सीखता है कि नाकाम होने पर कोई मर नहीं जाता है, न ही वह हमेशा नाकाम ही रहेगा। बल्कि इससे व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति बढ़ती है और अगली बार सामना करने के लिए वह तैयार रहता है।

चुनौतियाँ—चुनौतियों का सामना माना कि नाकाम होने के बाद फिर से उसी काम को शुरू करना हमेशा आसान नहीं होता। कभी-कभी हमें ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे हमें लगता है कि हमारी सभी कोशिशों पर पानी फिर गया है और मंजिल पास आने के बजाय ऐसा लगता है कि हमारी मंजिल तो और भी दूर खिसकती जा रही है। हमारा दिल शायद बैठ जाए, या हम खुद को किसी भी काम के काबिल न समझें, और शायद मायूस या हताश हो जाएँ।

चुनौतियाँ—जो व्यक्ति जीवन में जितनी ज्यादा चुनौतियों का सामना करता है, वह उतनी ही तेजी से सफल होता है। चुनौतियाँ इनसान की सोई हुई शक्तियों को जगा देती हैं, इसलिए चुनौतियाँ लें। इनसान जीवन में निश्चिंतता चाहता है, क्योंकि वह बदलाव से डरता है। इनसान भूल जाता है कि विकास के लिए चुनौतियाँ—डर को दूर करना जरूरी है। पुराने अनुभवों के आधार पर निर्णय लेना अच्छी बात है, पर जीवन में जोखिम न लेनेवाला व्यक्ति मृत व्यक्ति के समान है।

चुनौतियाँ—बहुत-सी चुनौतियों से आँखें चार करके जिन लोगों ने कामयाबी पाई है, वे ही इसका सच्चा सुख भी भोग सकते हैं। चुनौतियों से जूझते-जूझते हमारे भीतर एक अकाट्य शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जो हमें जीवन मार्ग में

आनेवाली समस्त बाधाओं से उबारती है। जीवन में सफल होने के लिए कोई शाही सड़क नहीं है। किसी भी सफल व्यक्ति का जीवन-चरित्र पढ़ें। उसने अनेक कठिनाइयों को पार करके ही अपनी मंजिल पाई है।

चेतन मस्तिष्क—चेतन मस्तिष्क के विचार अवचेतन प्रकोष्ठ में तेजी से ले जाए जा सकते हैं। चेतन मस्तिष्क में उभरनेवाला विचार, योजना या लक्ष्य जिसके पीछे पूर्ण विश्वास के साथ उसे कार्य रूप में देखने की इच्छा हो, तो उसे दिमाग का अवचेतन हिस्सा तत्काल अपना लेता है। ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है कि इस तरह की इच्छा पूरी नहीं हुई हो।

चेतना—अगर आपकी संपन्न बनने की इच्छा है, तो अपने दिमाग की अवचेतन अवस्था को वैसा ही विचार उत्पन्न करने का आदेश दें, जिससे चेतना संपन्नता विकसित करे और फिर देखें कि कैसे आपकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगती है। इच्छा की शक्ति, जो ज्वलंत आकांक्षा के रूप में अभिव्यक्त होती है, उसके जरिए अवचेतन के एक्शन को गति प्रदान की जा सकती है। इस प्रकार, इच्छा की शक्ति का इस्तेमाल करके अपने दिमाग को पूरी तरह काबू में लेकर व्यक्ति असीमित शक्ति का हकदार बन सकता है।

चोटी—ऊँची-से-ऊँची चोटी पर पहुँचना मकसद हो तो अपना काम निचली सतह से शुरू करना चाहिए।

चोटी—जब हम निश्चित और निर्धारित ढंग से किसी कार्य को करने के लिए तत्पर होते हैं तो स्वाभाविक ढंग से हमारी प्रतिभा का विकास होता है। प्रतिभा और एकाग्रता भिन्न नहीं हैं, एक ही हैं। अपने निश्चित लक्ष्य को अपनी प्रियतमा के समान समझना चाहिए। भला, प्रेयसी कभी पसंद करेगी कि आप अपना प्रेम किसी अन्य को दें? ऐसा करोगे तो वह ईर्ष्या से सौतिया डाह से मर मिटेगी।

छोटा मार्ग—जीवन के बहुत से कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें छोटे मार्ग से काम नहीं बनता। अत: आपको प्रत्येक कार्य में छोटे मार्ग की तलाश नहीं करनी चाहिए। किसी भी कार्य में जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है, उतनी ऊर्जा तो आपको खर्च करनी ही चाहिए। तभी वह कार्य सही से होगा और सकारात्मक नतीजा दे पाएगा।

छोटा लक्ष्य—सबसे पहले एक मार्ग का चयन करें और उस पर पूरी तरह फोकस करें। आपने सुना ही होगा कि दो नाव में सवार होकर चलने से किनारा नहीं मिलता, इसलिए एक छोटे बिंदु, अर्थात् एक छोटा लक्ष्य बनाकर काम करें। अगर शुरू से बड़े रूप में काम करेंगे तो सही और गलत नहीं समझ पाएँगे।

छोटी शुरुआत—बहुत अच्छा करने की अपेक्षा यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि कुछ किया जाए। यह न भूला जाए कि प्रत्येक कार्य की एक छोटी सी शुरुआत होती है। हजारों मील की यात्रा एक छोटे से पग से प्रारंभ होती है व पर्वत शिखर तक पहुँचने का मार्ग उसके सबसे निचले भाग से होकर जाता है। यात्रा के पहले कदम पर काँटा चुभ जाने से अथवा पर्वत शिखर पर चढ़ने की शुरुआत में ही हल्की-सी ठोकर लग जाने से ही निराश हो जाना, यात्रा से मुँह मोड़ लेना, कर्तव्य से पलायन कर जाना न केवल अशोभनीय है बल्कि हास्यास्पद भी।

जन-संपर्क—अपने मस्तिष्क को संकुचित न बनाएँ। सदैव ऐसे लोगों के साथ संबंध रखें, जिनके नए-नए विचारों व कार्य करने के नए तरीकों से आप लाभान्वित हों। अपने आपको सदैव विभिन्न व्यवसायों एवं सामाजिक हितोंवाले व्यक्तियों से जोड़े रखें।

जन्मजात प्रतिभा—अपनी जन्मजात प्रतिभा का समुचित उपयोग करें। यदि आपके पास उस प्रतिभा को विकसित करने की मजबूत इच्छा है तो आप उस प्रतिभा को विकसित कर पाने में निश्चित रूप से कामयाब होंगे।

जरूरतानुसार—जब आप अपनी जरूरत के अनुसार काम करते हैं, तभी अपने आपको सशक्त बना सकते हैं।

जल्दबाजी—काम में आई कोई भी मुसीबत या खुशखबरी से हतोत्साहित या उत्साहित होकर जल्दबाजी में निर्णय

न लें। जल्दी में लिये निर्णय कभी कारगर साबित नहीं होते। अगर टीम के किसी सदस्य से कोई गलती हुई है तो उसे एक मौका जरूर दें। ऐसे मामलों में कभी जल्दबाजी न करें।

जागरूकता— किसी भी तरह की सफलता के रास्ते में कई बाधाएँ भी मुमकिन हैं। इसलिए सारी संभावनाओं और स्थितियों के आकलन और विश्लेषण के साथ विषय, कार्य और स्थिति के प्रति जागरूकता व सावधानी रखें।

जागरूकता— जीवन में मन चाहे उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति के लिए नूतन जानकारियों के प्रति जागरूकता का विकास करें। विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति हेतु हमें अनेक प्रकार की सूचनाओं तथा जानकारियों की आवश्यकता होती है, जिन्हें विभिन्न माध्यमों से एकत्रित किया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण अथवा अपनी रुचि और क्षेत्र से संबंधित जानकारियों से वंचित व्यक्ति अनेक बार उपलब्ध अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते और फिर जिंदगी भर इस चूक के लिए पछताते रहते हैं। ऐसी संभावित घटनाओं, अवसरों, आयोजनों व फैसलों के प्रति सजग रहें, जो आपके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

जागरूकता— जो व्यक्ति जागरूक है, उसका समय निश्चित ही प्रबंधित होगा। जागरूक व्यक्ति द्वारा त्रुटियों की संभावनाएँ भी कम रहती हैं। जागरूकता हमें हमारे लक्ष्य और संकल्पों को पूरा करने में मददगार सिद्ध होती है। जब व्यक्ति के जीवन में निश्चित समय के प्रति जागरूकता नहीं है और उसके समुचित संचालन हेतु कोई योजना नहीं है, उसके मार्गदर्शन के लिए कोई सिद्धांत नहीं है, तब उसका जीवन इधर-उधर भटककर समाप्त हो जाएगा। शानदार रास्ते तो उन्हीं कदमों तले खुलते हैं, जिन्होंने कोई नक्शा तैयार किया हुआ हो, जिनका कोई मिशन हो और जिनकी रहबर हो जागरूकता।

जानकारियाँ— कुछ लोग सोचते हैं कि किसी भी काम या चीज के बारे में जरूरत से ज्यादा जानकारियाँ जुटा लेने से सफलता की संभावना बढ़ जाएगी, जबकि हर बार ऐसा नहीं होता है। अगर जानकारियाँ आपके काम पर असर नहीं डाल रही हैं तो उन्हें इकट्ठा करने से आपको कोई फायदा नहीं होगा।

जिज्ञासा— कोई भी वार्त्तालाप आरंभ करने का सबसे अच्छा तरीका है, अच्छी तरह अभ्यास करना। शीशे के सामने अभ्यास करना अच्छा है। स्वभाव से जिज्ञासु बनें। देखा गया है कि लोग अपने बारे में बात करना पसंद करते हैं, अपनी सफलता, अपनी अभिलाषाओं, अपनी जिंदगी इत्यादि के बारे में। उनसे सवाल करें, लेकिन उन्हें ऐसा न लगने दें कि आप उनके व्यक्तिगत जीवन या उससे संबंधित बातों में अनुचित हस्तक्षेप कर रहे हैं।

जिम्मेदारी— अकसर अपनी जिंदगी में हम लोगों से सुनते आए हैं कि हम जिम्मेदारी के कारण जिंदगी का मजा नहीं ले पाते हैं। जिन पर जिम्मेदारी नहीं होती, वह मस्त मलंग की तरह सुख से जीता है। यह बात बिल्कुल सही नहीं है। विश्व में अधिक ऊँचाई पर पहुँचनेवाले सभी लोग जिम्मेदार होते हैं या यह कहें कि जो लोग जिम्मेदार होते हैं, वही ऊँचाइयों को छू सकते हैं। जिम्मेदार व्यक्ति की व्यापार, व्यवहार और समाज में कद तथा इज्जत होती है।

जिम्मेदारी— अपने जीवन के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं। कोई दूसरा बाहरी कारण, जिसे आप बदलना चाहते हों, वह आपकी अपनी जिम्मेदारी है। जो लोग आपके विकास में मददगार होंगे, उनसे मेल-जोल रखना, संपर्क बनाए रखना आपकी जिम्मेदारी है। समय को बाँधकर रखने की कला सीखना आपका उत्तरदायित्व है, ताकि आप कारगर ढंग से काम का बँटवारा कर सकें और अपनी रुचियों के लिए समय निकाल सकें। अपनी निपुणताओं का प्रभावी रूप से उपयोग करना आपकी जिम्मेदारी है। अपनी उमंग, अपनी चाहत के क्षेत्रों की खोज करना और उसमें छलाँग लगाने से पहले उसके बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त करना आपकी जिम्मेदारी है। हर किसी को अपने जैसा बनाना आपकी जिम्मेदारी नहीं है। जो कोई आपके लिए अच्छा नहीं है, उससे संबंध जोड़ने हेतु आपकी यह जिम्मेदारी नहीं

है कि आप खुद को बिगाड़ें। लोग आपके बारे में जो कुछ भी पूछें, उसके लिए आपको हर बार 'हाँ' कहने की जरूरत नहीं है। जीवन के उस मार्ग से चिपके रहना आपकी जिम्मेदारी नहीं है, जो आपकी समझ से बाहर है और आपको विकसित नहीं होने देता।

जिम्मेदारी—कई लोग जिम्मेदारियों से घबराते हैं। जिम्मेदारियाँ उन्हें तनावग्रस्त कर देती हैं। उनका मन सतत् जिम्मेदारियों से दबा सा रहता है। कुछ लोग नींद का भी सुख नहीं ले पाते। वे तनावयुक्त रहते हैं, यह देखकर कि अमुक व्यक्ति उनकी बात ही नहीं सुनता या मेरा बच्चा मेरी बहुत अवज्ञा करता है। निस्संदेह जिम्मेदारियाँ कइयों की नींद हराम कर देती हैं। क्यों न हम अपने जीवन के कुछ ठोस सिद्धांत बना लें?

जिम्मेदारी—जिम्मेदार मनुष्य अपने कार्यों के प्रति सर्वथा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे किया जाता है? मनुष्य महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार मनुष्य इससे दूर भागता है। वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह अवगुण मनुष्य को असफल बनाता है। सफलता के लिए मनुष्य में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

जिम्मेदारी—जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना स्वयं को असफलता की ओर ले जाना है। मनुष्य को अपनी जिम्मेदारी से मुँह न मोड़कर उन्हें निभाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। मनुष्य की जिम्मेदारी मात्र स्वयं के लिए ही नहीं है। उसे जिम्मेदारियाँ अपने परिवार, अपने समाज, अपने देश के प्रति भी निभानी पड़ती हैं। जिम्मेदारी निभाने वाला व्यक्ति ही सफलता की ओर बढ़ता है, क्योंकि वह जानता है कि वह जिम्मेदारी उठा सकता है।

जिम्मेदारी—जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ना स्वयं को असफलता की ओर ले जाना है। व्यक्ति को सदैव अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। व्यक्ति की जिम्मेदारी मात्र स्वयं के लिए ही नहीं है; अपने परिवार, अपने समाज, अपने देश के प्रति भी निभानी पड़ती है।

जिम्मेदारी—जिम्मेदारियाँ निभाने वाला व्यक्ति ही भाग्य निर्माण व सफलता की ओर बढ़ता है, क्योंकि वह जिम्मेदारी उठा सकता है। जिम्मेदारी लेना, उसे पूर्ण करना साधारण कार्य नहीं है। जिम्मेदार व्यक्ति अपने कार्यों के प्रति सर्वदा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे किया जाता है?

जिम्मेदारी—जिम्मेदारी मनुष्य को एक आदर्श रूप में समाज में प्रस्तुत करती है। मनुष्य की स्वयं के प्रति, परिवार, समाज आदि के प्रति क्या जिम्मेदारी है? मनुष्य को जिम्मेदारी का अहसास होना, उसकी सफलता के लिए अत्यावश्यक है। जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझता है, उसे ही किसी जिम्मेदारी को पूर्ण करने का दायित्व सौंपा जाता है न कि किसी गैर जिम्मेदार व्यक्ति को।

जिम्मेदारी—जिम्मेदारी लेना, उसे पूर्ण करना साधारण कार्य नहीं है। जिम्मेदार मनुष्य अपने कार्यों के प्रति सर्वथा सचेत रहता है और वह जानता है कि कार्यों को कैसे से किया जाता है? मनुष्य महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार मनुष्य इससे दूर भागता है। वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह अवगुण मनुष्य को असफल बनाता है, लेकिन सफलता के लिए मनुष्य में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

जिम्मेदारी—जिम्मेदारी व्यक्ति को एक आदर्श रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करती है। व्यक्ति को जिम्मेदारी का अहसास होना, उसके भाग्य निर्माण व सफलता के लिए अत्यावश्यक है। जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझता है, उसे ही किसी जिम्मेदारी को पूर्ण करने का दायित्व सौंपा जाता है, गैर जिम्मेदार को नहीं।

जिम्मेदारी—व्यक्ति महान् तभी बनता है, जब वह अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा से निभाता है। गैर-जिम्मेदार

व्यक्ति इससे दूर भागता है; वह अपनी जिम्मेदारियों से छिपता फिरता है। यह अवगुण व्यक्ति को असफल बनाता है। इसलिए सफलता के लिए व्यक्ति में जिम्मेदारी की भावना का होना परम आवश्यक है।

जिम्मेदारी—सफल लोगों में एक सबसे अलग बात जो होती है, वो यह कि वे लोग जानते हैं कि मना कैसे किया जाता है, इसलिए वे—सामने वाला नाराज नहीं हो—इस डर से फालतू की जिम्मेदारियाँ नहीं लेते, क्योंकि उन्हें पता है कि उन्हें किस तरह से काम करना है। इसलिए अपने काम के आड़े आनेवाली कोई भी जिम्मेदारी, जो उनकी जरूरतों से बाहर की होती है, को लेने से वे बचते हैं।

जिम्मेदारी—हर मनुष्य कोई-न-कोई जिम्मेदारी वहन करता है। कोई अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार है, तो कोई किसी अन्य कार्य के लिए। किसी को नगर की जिम्मेदारी है, तो किसी को संपूर्ण राष्ट्र की। जिम्मेदारी लेना व जिम्मेदारी सँभालना मनुष्य में गुणों की उत्पत्ति करता है। जो व्यक्ति सफलता व सरलतापूर्वक जिम्मेदारी निभाता है, वह दिनोदिन प्रगति के पथ पर अग्रसर रहता है।

जिम्मेदारी—हर व्यक्ति शरीर-रक्षा, परिवार-व्यवस्था, समाज-निष्ठा, अनुशासन का परिपालन आदि कर्तव्यों से बँधा हुआ है। जिम्मेदारियाँ निभाने पर ही मनुष्य का शौर्य निखरता है। इसी आधार पर विश्वास बनता है और विश्वसनीयता के आधार पर एक धारणा बनने लगती है, जिसके अनुसार उन्हें अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं। उन्हीं को प्रगति के उच्च-शिखर पर पहुँचने का सुअवसर प्राप्त होता है। जिम्मेदार व्यक्ति का ही व्यक्तित्व निखरता है।

जीत-हार—सफलता हासिल न हो तो निराश न हों, दोबारा दुगुने जोश के साथ उसके लिए जुट जाएँ। जीत और हार जीवन में लगी ही रहती है। हार मिलने पर निराश होकर न बैठ जाएँ। खुद को समझाएँ, बार-बार कहें कि हम होंगे कामयाब एक दिन।

जीवटता—डटे रहना जीवन को जीने की एक ऐसी कला है, जो हमारे लिए कामयाबी के दरवाजे खोलती है। जो डटे रहकर खोजना चाहते हैं, वही कुछ पा भी सकते हैं। जिस व्यक्ति ने अपने संकल्प, अपने लक्ष्य के सामने डटे रहकर संघर्ष किया है, सफलता ने एक-न-एक दिन निश्चित ही उसके कदम चूमे हैं।

जीवन में मिलने वाली विफलताएँ दरअसल विधाता की तरफ से ली जानेवाली हमारी परीक्षा ही समझिए। हम अपने जीवन में लक्ष्य को पा सकेंगे या नहीं, यह हमारी पात्रता पर निर्भर है। हमें अपना ध्यान लक्ष्य पर केंद्रित रखकर आगे बढ़ना चाहिए। मान लीजिए, आपको नदी के उस पार जाना है, बीच में तूफान आ जाता है तो अगर आपकी नजर लक्ष्य से भटक जाती है तो आप भी भटक सकते हैं, पर अगर आपकी नजर लक्ष्य पर केंद्रित है तो पानी का तेज बहाव भी आपको रोक नहीं पाएगा, कारण आपकी एकाग्रता है, क्योंकि आपका ध्यान तूफान पर नहीं, लक्ष्य पर था।

जीवन संग्राम—बहुत से लोग जीवन संग्राम में जूझने से पूर्व ही हथियार डाल देते हैं। ऐसे लोग घोर निराशावादी होते हैं। वे खेलने से पूर्व ही हार जाते हैं। सुकरात कहा करते थे कि निराशा जब चरम सीमा पर पहुँच जाती है, तब हमारी जीभ बंद हो जाती है। जो अपनी सामर्थ्य तथा क्षमता प्रदर्शित करने से पूर्व ही अपने को पराजित महसूस कर लेते हैं, उन्हें दुनिया की कोई भी ताकत विजयी नहीं बना सकती।

जीवन—जीवन के हर क्षेत्र से आनेवाले सफल व्यक्तियों ने सदैव अपने विचारों और प्रयासों को एक निश्चित उद्देश्य, लक्ष्य या मुख्य मकसद को हासिल करने के लिए एकजुटता से कार्य किया है। यह सच है कि कोई कुछ सोच ले तो उसका सृजन भी कर सकता है, बशर्ते कि उसका दिमाग उस पर दृढ़ता से टिका रहे और लक्ष्य हासिल

करने तक हार न माने। एकाग्र विचारों के साथ काम करनेवाला इनसानी दिमाग न सिर्फ महान्, बल्कि शक्तिशाली भी होता है।

जीवन— जीवन संग्राम एक लक्ष्य, दूरदृष्टि और दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति जीवन संग्राम में निरंतर आगे बढ़ते हैं और अवश्य ही जीत हासिल करते हैं।

जीवन-नियंत्रण— हम चेतन मन एवं विचारों से अपने अवचेतन विचारों, विश्वासों एवं अनुभवों को नियंत्रित कर सकते हैं। विचारों के निर्माता हम ही हैं। अत: हमें इन पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। मात्र विचार बदलने से ही जीवन-नियंत्रण की प्रक्रिया की शुरुआत हो जाती है। यदि हम सोचने लगे कि हम स्वयं ही अपने भाग्य विधाता एवं निर्माता हैं, तो वास्तव में ऐसा होना प्रारंभ हो जाएगा। विश्वास से बड़ी कोई शक्ति नहीं है।

जीवनोपयोग— मनुष्य को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह खुद ढाल ले अपने वातावरण को, अपने घर को और मित्रों के दायरे को, अपने रोजगार को तथा सारे काम-काज को। इस तरह मनुष्य अपने जीवन का संपूर्ण उपयोग कर सकता है।

जुनून— अपने अंदर सीखने का जुनून पैदा करें। किताबें पढ़ें। अच्छी किताबों की सूची बना लें। पत्रिकाएँ पढ़ें। पढ़ने-लिखनेवालों के साथ संबंध बढ़ाएँ। उनकी बातों को ध्यान से सुनें। हर चीज के बारे में खोजी सोच रखें।

जैसे को तैसा— इनसान जैसा बोता है, वैसा ही काटता है। यह एक उपदेश से कहीं बढ़कर है। यह वह महान् व्यावहारिक सच है, जिसे हर सफल उपलब्धि का आधार बनाया जा सकता है। रास्ते टेढ़े-मेढ़े हों या सीधे, आप जो सोचते हैं, जैसा करते हैं, उससे कई विचार या कर्म जुड़ जाते हैं। उसका फायदा आपको आनेवाले समय में मिलता है, इस सच से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। यह उतना ही शाश्वत् है जितना कि यह ब्रह्म□ांड, उतना ही निश्चित जितना कि गुरुत्वाकर्षण का नियम है। इससे मुँह मोड़ना खुद को मूर्ख बनाने या अनजान बनाने के बराबर है और इनमें से किसी एक की वजह से भी आप सफलता का मौका गँवा सकते हैं।

जोखिम— गहरे पानी में उतरने की तैयारी ही इस बात की सूचना है कि हम जोखिम उठाने के लिए मन बना चुके हैं। खतरा मोल लिये बिना समुद्र के गहरे पानी से मछली नहीं पकड़ी जा सकती। हिमालय की चोटी पर नहीं पहुँचा जा सकता, चाँद के घर मेहमान-नवाजी नहीं की जा सकती। जोखिम उठाने वाले लोग जीवन में उत्साह से भरे होते हैं। जोखिम से बचने का मतलब है, अपनी जगह खड़े रहना, कुछ करना नहीं, कुछ सीखना नहीं…भला यह भी कोई जीवन है?

जोखिम— जिसने जोखिम उठाना नहीं सीखा, वह संकट के समय घबरा जाता है। जोखिम उठाने की आदत डालकर आत्मविश्वास पैदा कीजिए तथा अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाइए। ध्यान रखिए, जितने अधिक परिश्रम व शक्ति के साथ कोई कार्य किया जाएगा, उसके सफल होने के अवसर भी उतने ही गुना बढ़ जाएँगे।

जोखिम— जो लोग जोखिम लेने से डरते हैं, वे जीवन की कई संभावित सफलताओं के दरवाजे खुद ही बंद कर रहे होते हैं। बस, जोखिम और पागलपन के बीच का भेद जरूर पता होना चाहिए।

जोखिम— जोखिम उठाना जीवन जीने का एक तरीका है। कहा भी गया है कि बिना जोखिम उठाए लाभ नहीं मिलता। जितना बड़ा खतरा होता है, उतना ही अधिक लाभ होता है।

जोखिम— जोखिम उठाने की आदत डालने के लिए किसी खतरे में पड़ने या अवसर की तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ती। अवसर तो हर समय, हर जगह आते ही रहते हैं। हर निर्णय में जोखिम का हिस्सा रहता है। अत: किसी भी कार्य को पूर्ण मनोभाव से करना चाहिए। डरने की आदत छोड़नी होगी, तभी हम अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति

कर सकेंगे।

जोश— जीवन में सफलता का निर्धारण सबसे पहले मन में होता है, फिर उसे पूरा करने के लिए लगन के साथ परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सपना देखना ज्ञान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। ज्यादातर सफल लोग कोई बहुत कुशाग्र बुद्धिवाले नहीं होते। वे हमारे-आपके जैसे साधारण लोग ही होते हैं, लेकिन उनमें अलग ढंग से सोचने और कुछ करने का साहस होता है। पहला कदम आगे बढ़ाने की हिम्मत होती है। उसके बाद दूसरा कदम उठाने का जोश होता है। उसके बाद तीसरा कदम चलने की लगन होती है।

ज्ञान— अज्ञानी व्यक्ति केवल अंधकार में भटककर अपने जीवन को नष्ट करता रहता है। ज्ञान ही व्यक्ति के हृदय की मलिनता को दूर करता है। ज्ञानरूपी दीपक के प्रकाश से अज्ञान का अँधेरा भागता है। जब व्यक्ति में ज्ञानरूपी अग्नि का संचार होता है तो वह उस व्यक्ति के समस्त दुष्कर्मों को भस्म करके उसे कुंदन बना देती है। इसलिए ज्ञान के दीपक को सर्वदा प्रज्ज्वलित रखना चाहिए, जिससे अज्ञान का अंधकार व्यक्ति को घेरने न पाए। ज्ञान ही व्यक्ति को भाग्य-निर्माण व सफलता की ओर ले जाता है।

ज्ञान— अज्ञानी व्यक्ति परनिंदा, दुष्कर्म आदि में लिप्त रहते हुए अपने जीवन को असफलता की ओर ले जाता है। ज्ञानी व्यक्ति को किसी बात का भय नहीं सताता। वह प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने में सक्षम होता है। ज्ञान ही व्यक्ति को निरंतर गतिमान बनाता है, अन्यथा व्यक्ति अज्ञान के अँधेरे में ही भटकता रहता है।

ज्ञान— केवल ज्ञान हासिल करने से कुछ नहीं मिलनेवाला, जब तक कि इसका उपयोग न करें। एकमात्र ज्ञान ही शक्ति नहीं है। अधकचरा ज्ञान मूर्खता से भी ज्यादा नुकसानदेह साबित होता है।

ज्ञान— ज्ञान जहाँ से, जैसे भी मिले, उसे ग्रहण करना ही अज्ञानता को दूर भगाना है, अन्यथा यह दुर्गुण व्यक्ति को कभी भी पनपने नहीं देता। व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने के लिए इस दुर्गुण को जल्द-से-जल्द स्वयं से दूर कर देना चाहिए। इसे दूर करने के लिए पुस्तकों का अध्ययन, ज्ञानी व्यक्तियों से वार्त्तालाप आदि किया जा सकता है।

ज्ञान— ज्ञान व्यक्ति को सही राह दिखाता है, लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर है कि वह सही राह पकड़े अथवा गलत। ज्ञान व्यक्ति के हृदय में उत्तम विचारों का संचार करता है। ज्ञान व्यक्ति को भटकने नहीं देता, सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

ज्ञान— व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक ज्ञान प्राप्त करता रहता है। ज्ञान जहाँ से, जिस किसी से, किसी भी प्रकार मिले, प्राप्त करते रहना चाहिए। व्यक्ति की ज्ञान पिपासा शांत होने का तात्पर्य होगा कि वह अपने जीवन से निराश हो गया है, क्योंकि उस समय वह कुछ भी सीखने का प्रयास ही नहीं करेगा।

ज्वलंत इच्छा— जब हमारे मन में किसी चीज को पाने की या कुछ कर गुजरने की इच्छा उत्पन्न होती है तब हमारा मन कल्पना करने लगता है कि वे चीजें कैसी होंगी? या वह कार्य जिसको हम करना चाह रहे हैं, वह पूरा होने पर कैसा होगा? उसका परिणाम क्या होगा? अर्थात् कल्पना से ही हम उस इच्छा को ज्वलंत के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। जब तक कोई भी इच्छा, ज्वलंत इच्छा में परिवर्तित नहीं होती, तब तक उसका पूर्ण होना संभव नहीं होता।

ज्वलंत इच्छा— हर गतिविधि किसी-न-किसी इच्छा का ही परिणाम है। किसी चीज को पाने की इच्छा जितनी तीव्र होगी, उतना ही उस चीज या वस्तु का पाना सार्थक होगा। जब हमारे मन में किसी चीज को पाने की या कुछ कर गुजरने की इच्छा उत्पन्न होती है, तब हमारा मन कल्पना करने लगता है कि वे चीजें कैसी होंगी? या वह कार्य जिसको हम करना चाह रहे हैं, वह पूरा होने पर कैसा होगा? उसका परिणाम क्या होगा? अर्थात् कल्पना से ही हम

उस इच्छा को ज्वलंत के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। जब तक कोई भी इच्छा ज्वलंत इच्छा में परिवर्तित नहीं होती, तब तक उसका पूर्ण होना संभव नहीं होता। इसीलिए सपने जब तक ज्वलंत इच्छा के रूप में परिवर्तित नहीं होते, तब तक वे महज एक कोरी कल्पना ही रहते हैं और ऐसी कल्पना से कभी भी सफलता नहीं मिलती। इसलिए सफलता पाने के लिए ज्वलंत इच्छा का होना नितांत आवश्यक है।

झूठ न बोलें—कभी भी झूठ बोलकर अपने आपको महान् बनाने की कोशिश न करें। झूठ बोलने की आदत आपको लंबे समय के लिए अंधकार में डाल सकती है। अपनी जुबान से हमेशा प्यार भरे, मीठे और सुंदर वचन ही बोलें।

झूठ—बात-बात में झूठ न बोलें। ये बातें व्यक्तित्व पर बुरा असर डाल सकती हैं। इन बातों से आपकी बनी-बनाई छवि धूमिल हो सकती है। फिर आप चाहे जितने शिक्षित क्यों न हों, ये छोटी-छोटी बातें असफलता की ओर अग्रसर करती हैं। खयाल रहे—कम बोलें, नपे-तुले शब्दों का प्रयोग करें, जिससे आपकी वाणी से सभी प्रभावित हों। कम शब्दों में अधिक बात कहें। थोथे चने की तरह ज्यादा न बजें।

टाल-मटोल—जो व्यक्ति अपने काम औरों पर टालते रहते हैं, उनके लक्ष्य कभी पूरे नहीं होते। जो इधर-उधर अपने कीमती समय को फालतू खर्च करते घूमते हैं, जो कार्य को बिना सोचे-विचारे करते हैं, जो कार्य शुरू तो कर देते हैं, परंतु संकट, बाधा के संघर्ष की स्थिति आने पर काम अधूरा छोड़कर दूसरे कार्यों में लग जाते हैं, जो कोई भी कार्य ढंग से पूर्ण करने की सामर्थ्य नहीं रखते। वे कहीं भी और कभी भी सफल नहीं हो पाते।

टालने की आदत—कई बार आप काम को टालते चले जाते हैं। कार्य टालने की आदत आपको असफलता की राह पर ले जाती है। किसी कार्य को करने के लिए अगर किसी से विचार-विमर्श करना जरूरी है और इस कारण से देर हो रही है, तब तो ठीक है, अन्यथा उसे समय पर पूरा करने की आदत डालें। अगर किसी काम को करने में आपको दिक्कत महसूस हो रही है तो अपने साथियों या सीनियर्स से इस संदर्भ में बात जरूर कर लें, लेकिन कार्य को टालने की आदत न डालें।

टाल-मटोल—दुनिया में सबसे ज्यादा लोग टाल-मटोल की बीमारी से परेशान हैं। जो काम हमें आज करना चाहिए, उसे हम कल पर टाल देते हैं और बाद में उसे पूरा करना भूल जाते हैं। ज्यादातर लोग इसी वजह से अपना लक्ष्य पूरा नहीं कर पाते, क्योंकि उन्हें मौजूदा परिस्थितियों को बदलने में कष्ट महसूस होता है। कुछ लोग आलस्य तो कुछ लोग छोटी-मोटी परेशानियों के कारण बुरी परिस्थितियों में ही जीवन जीते रहते हैं। ऐसे लोग बदलाव से घबराते हैं।

टोका-टाकी—अगर आप सच में सफल होना चाहते हैं तो एक बात का हमेशा ध्यान रखें कि किसी भी व्यक्ति को बीच में न टोकें, जब तक कि वह अपनी बात पूरी नहीं कर लेता है। एक अच्छे श्रोता बनें। लोगों को ध्यान से सुनें और कोशिश करें कि उनकी सफल-असफल कहानियों के बीच आपके काम आ सकनेवाले बिंदु खोजें और देखें कि लोगों ने क्या गलतियाँ की हैं और उनसे आप कैसे बच सकते हैं?

ठोकर—असफलता तो एक स्पीड ब्रेकर की तरह है। यह आपको धीमा कर सकती है, पर रोक नहीं सकती। और जो रुक गया, वो कभी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता। यही जीवन का रोमांच है कि ठोकर खाकर ही हम सँभलना सीख सकते हैं। हम उससे बचने की कोशिश कर सकते हैं, पर ठोकर कहते ही उसे हैं, जो सावधानी के बाद भी लगती है।

डर—डर और आशंकाओं की वजह से हम सृजनकर्ता के आगे हाथ जोड़ते हैं और पूजा-अर्चना करके अपना

दु:खड़ा रोते हैं, जिनसे छुटकारा हम स्वयं पा सकते हैं। इसलिए हमें वैसा प्रयास करना भी चाहिए। डर, मन की एक स्थिति के अलावा और कुछ भी नहीं है।

डरना मना— संसार में व्यर्थ भौंकने वालों की कमी नहीं है। हम अपनी दुर्गति इसी भय से बना लेते हैं कि लोग हमारे लिए क्या विचार कर रहे हैं। निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कह डालने से पहले यदि आप बात से डर जाएँ कि लोग आपको बुरा कहेंगे तो आप डरते-डरते विचार करने से भी डरने लगेंगे।

तत्परता—कठिनाई का सामना करते हुए, जो अपना मार्ग खुद ही बनाकर निर्दिष्ट स्थान को प्राप्त होते हैं, वही प्रशंसा प्राप्त करते हैं। सिफारिश, दौलत या बेईमानी आदि अनुचित उपायों से जो आगे बढ़ जाते हैं, उन्हें एक दिन गिरना ही पड़ता है। घृणित कार्यों से हम उन्नति कर भी जाएँ तो क्या वह उन्नति सर्वग्राह्य है? क्या वह उन्नति स्थायी है? कदापि नहीं। भाग्यश्री उन्हीं लोगों को चुनती है, जो अपनी आस्तीन चढ़ाकर कार्य करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं, जो न धूप से परेशान होते हैं, न सर्दी से काँप उठते हैं, न परिश्रम से डरते, न सदा आलस्य से भरे रहते हैं।

तनाव—काम के दबाव में थोड़ा-बहुत तनाव होना अवश्यंभावी है। यदि आपके कुछ लक्ष्य, सपने और उद्देश्य हैं और सबकुछ उनके विपरीत हो रहा है तो आप तनाव महसूस करने लगते हैं। इस तनाव की स्थिति से निकलने के लिए आपको बस इतना करना है कि आप अपने काम पर और खुद पर विश्वास रखें। आवश्यकता हो तो थोड़ा तनाव मुक्त होने का प्रयास करें और किसी और काम में मन लगाएँ।

ताकत—कुदरत को बेकार पड़े रहने से नफरत है, चाहे वह किसी भी रूप में हो। वह उन्हीं तत्त्वों को लगातार जीवित रखती है, जो इस्तेमाल में हों। एक बाँह को या शरीर के कभी भी दूसरे हिस्से को बाँध दें, इस्तेमाल न करें और जल्द ही देखेंगे कि बेकार बड़ा हिस्सा जल्द ही पहले क्षीण पड़ेगा और फिर निर्जीव हो जाएगा। इस क्रम को उलट दें, एक बाँह को सामान्य से ज्यादा इस्तेमाल करें, जैसे कि एक लोहार जो दिन भर एक भारी हथौड़े को उठाए रहता है, वह बाँह ताकतवर (अंदर से विकसित) हो जाएगी।

तात्पर्य—असफलता का तात्पर्य यह नहीं कि आप विफल हैं। इसका मतलब सिर्फ यह है कि आप अब तक सफल नहीं हुए है।

तालमेल—प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता विकसित करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य बुनियादी रूप से एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह अकेले रहकर जीवित नहीं सकता है। कुछ लोग एक वक्तव्य विशेष को दोहराते रहते हैं और यह उनके स्वभाव का एक हिस्सा बन जाता है। किसी कथन को आप अधिक-से-अधिक दो बार दोहरा सकते हैं, लेकिन अगर आप उसे अधिक बार दोहराते हैं तो उसका बुरा असर पड़ता है।

तुलना—कभी किसी व्यक्ति की अन्य से तुलना न करें। तुलना करते वक्त हमारी अवधारणा रहती है कि हम अमुक व्यक्ति को यह अहसास करा सकें कि वह भी औरों की तरह सुधरने की कोशिश करे, परंतु सामान्य रूप से परिणाम इसके विपरीत होते हैं। तुलना से व्यक्ति खीझता तथा क्रोधित होता है। कई बार वह हीन भावना का शिकार हो जाता है। ध्यान रखें, दूसरों को नीचा दिखाने या बहसबाजी करने से हम अपनी बात मनवा तो सकते हैं, लेकिन सामनेवाले व्यक्ति को हमेशा के लिए खो देते हैं।

तुलना—जहाँ तक संभव हो, कभी किसी की अन्य से तुलना न करें। तुलना करते वक्त हमारी अवधारणा रहती है कि हम अमुक व्यक्ति को यह अहसास करा सकें कि वह भी औरों की तरह सुधरने की कोशिश करे, परंतु सामान्य रूप से परिणाम इसके विपरीत होते हैं। तुलना से व्यक्ति खीझता तथा क्रोधित होता है। कई बार वह हीन भावना का शिकार हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में मौलिक और विशिष्ट होता है। उसके कार्य करने का तरीका, योग्यता तथा क्षमताएँ अपनी निजी होती हैं। अत: प्रत्येक व्यक्ति को उसकी स्वयं की विशिष्टताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने से ही हम दूसरों के दिल में अपना स्थान तो बना ही ले सकेंगे, साथ-ही-साथ परस्पर प्रसन्नता का भी आदान-प्रदान होगा।

तैयारी—मेहनत कीजिए, लेकिन बिना योजना के नहीं। एक-एक कदम उठाइए। जब एक कदम उठा चुके हों, तब तैयारी करें।

तैयारी—पहले से की गई तैयारी पर सफलता निर्भर करती है और बिना ऐसी तैयारी के असफलता निश्चित है।

त्रासदी—जीवन की त्रासदी इस बात में नहीं है कि आप अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचते हैं। त्रासदी तो इस बात की है कि आपके पास प्राप्त करने के लिए कोई लक्ष्य ही नहीं है।

दरवाजा—जहाँ दरवाजों से पहुँचा जा सकता है, वहाँ दीवारों में सिर टकराकर रास्ता बनाने की कोशिश करना कठोर श्रम का उदाहरण हो सकता है, पर साथ ही यह उदाहरण है, वज्र मूर्खता का भी है। हम अपना श्रेष्ठ तभी दे सकते हैं या अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग तभी कर सकते हैं, जब सौहार्दपूर्ण व तनावरहित वातावरण में काम कर रहे हों। जिस प्रकार जहाँ प्रकाश हो वहाँ अंधकार नहीं हो सकता, उसी प्रकार जहाँ खुशी हो, प्रसन्नता हो, वहाँ तनाव नहीं हो सकता।

दर्पण—हमारी आपत्तियाँ और क्लेश हमारी आंतरिक शक्तियों की वृद्धि करते हैं, और जिनको हम अपना शत्रु समझते हैं, वे भी हमारे लिए कल्याणकारक होते हैं। जब तक हमारा कोई शत्रु न बनें, तब तक हमें हमारी बुराइयाँ और कच्चापन कौन दिखाएगा? जो मित्र होते हैं, वे तो कृपा और प्रेम से ऐसे भरे होते हैं कि हमें कड़वी, परंतु यथार्थ बात नहीं कहते। वे सदा हमारे दोषों को क्षमा की दृष्टि से देखते हैं और उनको छिपाने का प्रयत्न करते हैं, परंतु जो शत्रु होता है, वह बुराई करने में नहीं हिचकिचाता। वह हमारी घोर-से-घोर निंदा करता है, हमारी पोल खोलता है, हर पल उचित-अनुचित प्रहार करता है। यदि सच पूछिए तो वह हमारे लिए एक अच्छे दर्पण का काम करता है।

दाँव—जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को इतनी गहराई से चाहे कि वह उसके लिए अपना सबकुछ दाँव पर लगाने के लिए तैयार हो, तो उसका जीतना सुनिश्चित है। जब दिमाग से नकारात्मक सोच बाहर निकल जाती है, तब आस्था और विश्वास की शक्ति अंदर जाती है और अपना आधिपत्य स्थापित करती है।

दिनचर्या—समय-सारिणी में पूरी दिनचर्या को शामिल करें। हर काम को पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। सोकर जल्दी उठने को अनिवार्यता के तौर पर लें। निश्चित कर लें कि कम-से-कम छह घंटे की नींद मिल जाए। व्यायाम अथवा खेल-कूद को कतई दरकिनार न करें। एक ही दिन में सभी विषयों की किताब पढ़ने की बजाय हर विषय के लिए अलग-अलग दिन निर्धारित करें।

दिमाग—दिमाग के पास आत्म-अनुशासन की शक्ति है, जिसके माध्यम से कोई भी वाँछित आदत आकार ग्रहण कर सकती है और तब तक कायम रख सकती है जब तक दिमाग के पास भावनात्मक शक्ति है, जिसके जरिए शरीर अपनी इच्छा के मुताबिक किसी वाँछित कार्य की ओर प्रेरित रहता है।

दीर्घसूत्री—जो दीर्घसूत्री हो जाता है, वह स्वावलंबी नहीं रह पाता। जब मनुष्य स्वयं निर्णय नहीं कर सकता कि अमुक कार्य किया जाए या नहीं, तो उसे दूसरों का आश्रय लेना पड़ता है। फिर तो दूसरों की सहायता के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता। सौ वर्ष भी दीर्घसूत्रता और आलस्य के साथ जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा पचास वर्ष करते रहकर मरना श्रेष्ठ है।

दुर्गुण—छल, कपट, धोखा—ये वे दुर्गुण हैं, जो व्यक्ति को नकारा, निकम्मा, लोभी, चोर, लालची आदि बनाते हैं, अर्थात् यह कहा जाए कि व्यक्ति को जीवन में असफल करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए किसी को छलना, धोखा देना कहाँ की इनसानियत है? क्या उनके सहारे व्यक्ति सफल हो सकता है?

दुर्गुण— डींग हाँकना व्यक्ति को ठगी के रास्ते पर डालता है, साथ ही उसकी छवि भी बिगाड़ता है, क्योंकि पोल खुलने पर उसकी झूठी शान, झूठी आदत को एक सिरे से नकार दिया जाता है। ऐसे लोग समाज से कट जाते हैं; अविश्वसनीय हो जाते हैं; जीवन में सफल नहीं होते। अत: व्यक्ति को स्पष्टवादी होना चाहिए, जिससे उसकी सफलता में रुकावट पैदा न हो।

दुर्गुण— धोखा खाने पर व्यक्ति तुरंत धोखेबाज के विरुद्ध हो जाता है, अर्थात् धोखेबाज व्यक्ति कभी किसी के स्नेह का पात्र नहीं हो सकता। फिर वह सफलता कैसे प्राप्त कर सकता है? धोखा देना एक महादुर्गुण है, जो व्यक्ति को असफलता के गहन अंधकार की ओर ले जाता है, जिससे बचने पर ही व्यक्ति सही मार्ग पर अग्रसर हो पाता है।

दुर्गुण— व्यक्ति अपनी बड़ाई, अपनी शानो-शौकत को इस तरह से प्रकट करने की कोशिश करता है कि दूसरा व्यक्ति उससे तुरंत प्रभावित हो जाए, लेकिन जब उसकी असलियत सामने आती है तो वह कहीं मुँह दिखाने योग्य नहीं रहता। इस प्रकार के लोग भ्रम से भरे रखते हैं, लेकिन उनका पिटारा पूरी तरह से खाली होता है। लोगों की आँखों में आखिर कब तक धूल झोंकी जा सकती है? एक-न-एक दिन तो वास्तविकता का पता चल ही जाता है। इधर-उधर की बातें करके लोगों को बेवकूफ बनाना, यह दुर्गुण है।

दुर्गुण— व्यक्ति किसी को धोखा नहीं देता, अपितु स्वयं ही अपने इस दुर्गुण के कारण धोखा खाता है, क्योंकि वह दूसरे को धोखा देकर स्वयं के लिए असफलता की सीढ़ी तैयार करता है। धोखा देना धीरे-धीरे व्यक्ति की आदत बन जाती है। फिर वह बात-बात पर झूठ बोलता है, दूसरों को अँधेरे में रखता है। व्यक्ति की यह आदत अपने करीबी लोगों को भी प्रभावित करती है। जहाँ छोटे इस आदत को अपना लेते हैं, वहीं बड़े ऐसे व्यक्ति से परेशान हो जाते हैं, क्योंकि यह आदत झगड़े-फसाद का कारण बनती है, लेकिन फिर भी व्यक्ति अपनी इस आदत को छोड़ता नहीं है। यह एक ऐसी आदत होती है, जिसमें व्यक्ति को धोखा देने का एक नशा-सा हो जाता है। वह दूसरों को धोखा देने में अपनी शान समझता है, लेकिन व्यक्ति किसी को धोखा देने में केवल एक बार सफल हो सकता है, अगली बार वह मुँह के बल गिरता है, क्योंकि उस पर कोई भी विश्वास नहीं करता। इसके कारण उसे अपने मान-सम्मान से भी हाथ धोना पड़ता है।

दुर्बलता— अपनी दुर्बलताओं को पहचानना जरूरी है। व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी यह होती है कि उसमें अपनी कमजोरियों को पहचानने की क्षमता का अभाव होता है। अगर हमें अपनी दुर्बलताओं का पता नहीं होगा या हम उन्हें पहचानते तो हैं, लेकिन उनकी अनदेखी कर देते हैं तो वे हमारे पतन का कारण बन सकती हैं और हमारी कमजोरियाँ हमारी क्षमताओं को कमजोर करके उन्हें नकारात्मकता में बदल देंगी, जिनसे हम बचना चाहते हैं।

दृष्टिकोण और सिद्धांत— सफलता कहीं और नहीं, बल्कि आपके विश्वास और सिद्धांतों पर ही निर्भर करती है। अपने मौलिक गुणों, विश्वास और रुचियों को समझें और उन्हें प्राथमिकता दें, क्योंकि यही आपको सफलता की राह दिखाएगी, मंजिल तक ले जाएगी और समझाएगी कि सफलता आपके दृष्टिकोण और सिद्धांतों में निहित है।

दृष्टिकोण— अपना दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रखें; अपने ऊपर एवं दूसरों पर सदैव विश्वास करें; अपने अंदर प्रत्येक कार्य के प्रति कटिबद्धता लाएँ। जिस कार्य को शुरू करें उसे कभी अधूरा न छोड़ें।

दृष्टिकोण— आपका बाहरी आकर्षण लोगों को क्षण भर के लिए सम्मोहित कर सकता है, लेकिन जब आप स्वयं को योग्य एवं गुणवान बना लेंगे तो आपकी असुंदरता या कम सुंदरता की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाएगा।

अपने मन में इस बात को बैठा लें कि जीवन में शारीरिक सौंदर्य ही सबकुछ नहीं। स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर आप सफलता व लोकप्रियता, दोनों को अर्जित कर सकते हैं।

दृष्टिकोण— जब कभी हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों तो ऐसी स्थिति में खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है। एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो इससे परेशान हुए बिना ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास करें। आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हैं या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें, इस बात का ध्यान रखें।

दृष्टिकोण— यह सोचना अव्यावहारिक ही होगा कि आपके सपने को पूरा करने में सभी लोग आपकी सहायता करेंगे। जरूरी यह है कि आप किसी से सहयोग न मिलने की स्थिति के लिए सदा तैयार रहें। जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो इससे परेशान हुए बिना ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास करें। आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हों या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें, इस बात को ध्यान रखें।

दृष्टिकोण— व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं। समसामयिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार व नजरिया एक खुश और नाखुश व्यक्ति के बीच सबसे बड़ा अंतर पैदा करता है। निराशावादी लोगों को विभिन्न वस्तुओं या परिस्थितियों के प्रति नजरिए में परिवर्तन लाना चाहिए।

दृष्टिकोण— सफलता या असफलता के पीछे हमारे दृष्टिकोण व मानसिकता की बहुत बड़ी भूमिका होती है। हम बुरी-से-बुरी चीज को अच्छे नजरिए से देख सकते हैं, जबकि अच्छी-से-अच्छी चीज को हमारी सोच क्षण भर में बुरा बना देती है। असफलता से सबक लेकर आगे बढ़ने की नीति को एक हथियार के रूप में ग्रहण करनेवाले व्यक्ति निश्चित रूप से कामयाबी की ऊँचाइयों को छूते हैं।

दृष्टिकोण— सबसे पहले लक्ष्य तय करें और उसे पूरा करने के लिए दृष्टिकोण तैयार करने पर ध्यान दें। आपके भीतर नेतृत्व के गुण हैं या नहीं, इसकी जाँच आप कैसे करेंगे? आप अपने आपसे कुछ सवाल करें और उसका जवाब जानने की कोशिश करें। क्या मेरे पास कोई दृष्टिकोण है? मेरी इच्छाएँ क्या हैं? क्या मुझे उनका पता है? उन्हें पूरा करने की इच्छा मेरे भीतर कितनी है? क्या मेरे सहयोगी काम को अच्छी तरह निबटा पा रहे हैं? उनकी कार्यकुशलता कैसी चल रही है? क्या वे अपनी पूरी क्षमता के साथ काम कर पा रहे हैं या नहीं? मुझे अपने नजरिए के विकास के लिए किनसे मिलना चाहिए? क्या मुझे उन लोगों की दरकार होती है, जो अच्छी परफॉरमेंस देते हैं?

दृढ़ इच्छाशक्ति— दृढ़ इच्छाशक्ति वाले मनुष्य के मार्ग में उसकी रुकावट के लिए यदि बड़े-बड़े पत्थर डाल भी दिए जाएँ तो भी उसकी प्रगति नहीं रुक सकती। वह उन्हें रुकावटें समझेगा ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने मार्ग में

अच्छे ढंग से जमाकर उन्हें अपनी सड़क या सीढ़ी बना लेगा, जिससे उसकी यात्रा और भी सरल हो जाएगी। ऐसे मनुष्य का यदि धन छीन लिया जाए, तो वह पुन: धन कमाने के लिए अधिक परिश्रम करने लगेगा।

दृढ़ इच्छाशक्ति—बाधाओं पर विजय प्राप्ति के लिए हमें एक गुरुत्तर व्यवस्था निर्मित करनी होती है। यह नहीं समझना चाहिए कि सिर्फ दृढ़ इच्छाशक्ति के सहारे ही हम सफलता को अर्जित कर लेंगे। दृढ़ इच्छाशक्ति सफलता की कुंजी अवश्य है, परंतु उस कुंजी को साफ करना, उसे ताले में लगाना और घुमाने का हुनर भी हमें आना चाहिए। रास्ते में आनेवाली रुकावटों को दूर करके ही हम अपनी वास्तविक मंजिल तक पहुँच सकते हैं। प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की परम आवश्यकता है। राह में यदि काँटे बिछे हों, तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो या जमीन में गाड़ दो। उन काँटों पर पाँव रखकर व्यर्थ में खून बहाने से क्या लाभ? प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता। प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब हमारे द्वारा किए जानेवाले कार्य, विवेक और ज्ञान से परिपूर्ण हों।

दृढ़ संकल्प—यदि आप दृढ़ संकल्प और पूर्णता के साथ काम करेंगे तो सफलता जरूर मिलेगी।

दृढ़ संकल्प—सफलता पाने के लिए दृढ़ संकल्प का होना बेहद जरूरी है। यह दृढ़ संकल्प ही है जिसकी वजह से कोई इनसान सफलता के मार्ग में आनेवाली हर चुनौती, संकट और विपत्ति का हिम्मत, धैर्य और साहस के साथ सामना कर पाता है। एक बार दृढ़ संकल्प कर लिया तो चाहे जो हो जाए, हारना नहीं है। बस, हर आनेवाली चुनौती को चुनौती देनी है और अपने विश्वास को इतना दृढ़ बनाना है कि मुसीबत का बड़े-से-बड़ा पहाड़ एक-न-एक दिन उसके आगे चूर हो ही जाए।

दृढ़ निश्चय—अवगुण व्यक्ति की सफलता में बाधक और असफलता के साथी हैं। जिस समय व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निश्चय करता है, उसी समय उसके अवगुण उससे दूर भागने लगते हैं। व्यक्ति को दूसरों के गुणों को अपनाना चाहिए और अवगुणों को छोड़ देना चाहिए। दूसरों के गुण देखने चाहिए और स्वयं के अवगुण, यही अपना भाग्य बदलने और सफल होने का महामंत्र है।

दृढ़ निश्चय—जब तक आप दृढ़ निश्चय के साथ किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं करेंगे कि 'मुझे यह प्राप्त ही करनी है', तब तक आप उसे नहीं पा सकेंगे। लेकिन जैसे ही आप उसे पाने के लिए मन में दृढ़ निश्चय कर लेंगे, आपको वह वस्तु लेने से कोई भी नहीं रोक सकेगा। यही बात भाग्य बदलने के लिए लागू होती है। जब तक अपना भाग्य बदलने के लिए आपके मन में दृढ़ निश्चय नहीं होगा, आप हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहेंगे और असफलता की ओर बढ़ते जाएँगे, लेकिन दृढ़ निश्चय करते ही आप सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले जाएँगे।

दृढ़ निश्चय—जब हम अपना भाग्य बदलने के लिए दृढ़ निश्चय कर लेते हैं तो हमारे अंदर छिपी हुई दैवीय शक्तियाँ जाग्रत् हो जाती हैं और वे अपना कार्य आरंभ कर देती हैं, जिससे हमें सफलता की ओर आगे बढ़ने की शक्ति प्राप्त होती है।

दृढ़ निश्चय—जिस प्रकार एक चट्टान दृढ़ता से खड़ी रहती है, अपने स्थान से टस-से-मस नहीं होती; उसी प्रकार अपना भाग्य बदलने के लिए व्यक्ति के मन में चट्टानी दृढ़ निश्चय होना चाहिए कि 'मुझे अपना भाग्य बदलना ही है।' यदि आपका निश्चय दृढ़ होगा तो आप कहेंगे कि 'बाधाएँ तो आती रहती हैं। उनसे निबटना मुझे आता है।'

दृढ़ निश्चय—दृढ़ निश्चय द्वारा ही आपमें वे शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, जो आपको अपना भाग्य बदलने में सफलता दिलाती हैं। आत्मविश्वास दृढ़ निश्चय का जनक है, क्योंकि आत्मविश्वास एक ऐसी ताकत है, जिसके

द्वारा बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है।

दृढ़ निश्चय—प्रबल इच्छा का तात्पर्य उस दृढ़ निश्चय से है, जो हमें अपने किसी लक्ष्य या सपने की खातिर करना होता है। यह लक्ष्य शक्ति, ओहदा, धन या ऐसी ही अन्य कोई वस्तु हो सकती है। कुछ बड़ा पाने या करने के लिए महत्त्वाकांक्षा अनिवार्य है, जीवन में कुछ बड़ा करने का दृढ़ निश्चय।

दृढ़ता—अपने भरोसे पर एक दृढ़ रहें, फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो। किसी भी बलिदान के लिए हमेशा तैयार रहें। अपने द्वारा चुने हुए रास्ते को कभी न छोड़ें।

दृढ़ता—जब कोई कार्य आप आरंभ करें, तो उस समय आपको उसमें जो घात-प्रतिघात उत्पन्न होते दिखाई दे, उनका स्वप्न देखने में समय नष्ट न करें। यदि विषैले कीड़े से बचना है, तो उसके डंक को मसल डालें। कठिनाइयों पर बार-बार विचार करने से कठिनाइयों का भूत ऐसा प्रबल और दीर्घकाय प्रतीत होने लगता है कि फिर उस कार्य से हाथ पीछे खींचना पड़ता है।

देह-भाषा—एक मुक्त, सच्ची, सकारात्मक और विश्वसनीय देह-भाषा विकसित करें। बोलते समय उचित दृष्टि-संपर्क बनाए रखें। बँधी मुट्ठी और अत्यधिक अंग-संचालन से आप लोगों का दिल नहीं जीत सकेंगे और याद रखें कि एक अच्छी देह-भाषा एक नेक आशय से उत्पन्न होती है। इसलिए आपको वास्तव में ईमानदार, मुक्त और विश्वसनीय होने की जरूरत है।

दोषारोपण—असफल लोगों की यह खास आदत होती है कि वे अपनी असफलता का दोष हमेशा दूसरों पर मढ़ने लगते हैं, लेकिन किसी भी कार्य में गलती या असफल होने पर उसका दोषारोपण दूसरों पर करना ठीक नहीं होता। कारण, किसी-न-किसी दिन आपकी पोल खुल ही जाएगी, तब आपके पास किसी भी प्रकार का कोई बहाना नहीं होगा। इसलिए, अगर किसी कार्य को पूरा करने में आपसे कोई गलती हुई है तो उसे स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है।

द्वंद्व—मन-ही-मन घुटते रहने की बजाय किसी ऐसे व्यक्ति पर अपने हृदय की पीड़ा अथवा द्वंद्व को प्रकट कर दें, जिसे आप अपना विश्वासपात्र मानते हों। मनोचिकित्सक अकसर रोगी से बातचीत के जरिए ही उसकी चिकित्सा करते हैं। मानसिक अवसाद के गहरे चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए आपको अपने भीतर कुछ परिवर्तन करने होंगे। इसके लिए जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। आपको उन कारणों या तत्त्वों को भी ढूँढ़ना पड़ेगा, जिनकी मदद से आप अपना कार्य कुशलतापूर्वक पूरा कर सकें।

धारणा—एक घर में एक ही परिस्थितियों में दो बच्चों का लालन-पालन होता है। दोनों की उत्पत्ति भी एक ही कोख से होती है। दोनों को समान परिवेश मिलता है, लेकिन एक उन्नति कर लेता है, जबकि दूसरा फिसड्डी रह जाता है। ऐसा क्यों होता है? इसके पीछे सीधा सा तर्क है—एक ने 'उन्नति' के विषय में सोचा और दूसरे ने अपने मस्तिष्क में धारणा बना ली कि इन परिस्थितियों में उसके लिए सफलता प्राप्त या ऊँचे सपने देखना ठीक नहीं। वह फिसड्डी रह जाता है। इसके विपरीत, दूसरे ने कुछ हटकर सोचा। उसने सोचा, चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों, मुझे तो आगे जाना ही है। उसे स्वयं पर विश्वास था, वह सफल हो गया। दोनों में अंतर सिर्फ 'सोच' का था। जिसने परिस्थितियों से समझौता करना उपयुक्त समझा और अपनी इच्छा को भी सीमित दायरे में रखा, वह फिसड्डी बन गया और जिसने विपरीत परिस्थितियों को चुनौती दी, हार न मानने की ठान ली, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाई वह आगे गया।

धैर्य एवं प्रतीक्षा—एक मंतव्य को छोड़कर दूसरा मंतव्य ग्रहण करने के पूर्व बारंबार विचारने और धैर्य तथा

प्रतीक्षा की आवश्यकता है, क्योंकि प्राय: देखने में आता है कि मनुष्य जब तक व्यवसाय से नितांत थककर और आपत्तिग्रस्त होकर, मारे घबराहट के दूसरे काम में हाथ डालने लगता है, तब तक उसे अपने पहले कार्य में भी विजय मिल जाती है।

धैर्य और संयम—छोटी या थोड़ी-सी सफलता मिलने पर मन व विचार पर काबू या उतावलेपन से बचना चाहिए, क्योंकि बिना धैर्य और संयम के सफलता साथ छोड़ देती है, बल्कि तरक्की के रास्ते भी बंद हो जाते हैं।

धैर्य—धैर्य का मतलब काम के दौरान अच्छा नजरिया अपनाना है। धैर्य का मतलब इंतजार करना नहीं होता, बल्कि काम के दौरान अच्छा नजरिया रखने की काबिलियत धैर्य कहलाता है। इसलिए जब आप कोई प्रयास करें तो उसे वक्त भी दें, इसका मतलब कुछ पलों के लिए स्थायित्व और चैन खोना हो सकता है, लेकिन यह धैर्य रखने से ही जाहिर होगा कि आप जो पाना चाहते हैं, उसके प्रति कितने दृढ़ हैं। और अगर दृढ़ हैं तो नाकामियों के बावजूद काम पूरा होगा। धैर्य से हर कदम पर आप बेहतरी महसूस करेंगे और आपको आपके संघर्ष आसान लगने लगेंगे।

धैर्य—धैर्य के माध्यम से कई लोग उन परिस्थितियों में भी सफल हो जाते हैं, जोकि एक निश्चित असफलता जान पड़ती है।

धैर्य—धैर्य व्यक्ति का वह आभूषण है, जो विषम परिस्थितियों में उत्पन्न कठिनाइयों को टाल सकता है; वहीं दूसरी ओर कठिन कार्यों को भी आसान कर सकता है। जो लोग तुरंत सफलता चाहते हैं, अर्थात् पहले पायदान से सीधे अंतिम पायदान पर पहुँचते हैं, उनकी सफलता क्षणिक होती है और वे कठिन परिस्थितियों में अपना धैर्य खो बैठते हैं, जो उन्हें असफल बना देता है।

धैर्य—धैर्य व्यक्ति के लिए एक महत्त्वपूर्ण गुण है, क्योंकि व्यक्ति की सफलता-असफलता धैर्य पर ही टिकी होती है। जरा-सा धैर्य खोकर अधीर होने पर आपका बनता कार्य बिगड़ सकता है। व्यक्ति को अपने धैर्य का बाँध कभी टूटने नहीं देना चाहिए, अन्यथा निराशा, परेशानी, क्रोध, चिंता आदि जैसे अवगुण तुरंत व्यक्ति को जकड़ सकते हैं, जो उसे असफलता की ओर ले जाते हैं।

ध्यान केंद्रण—आप भी अपने दिमाग से 'मेरा क्या होगा' की चिंता निकाल दें और अपनी क्षमता के हिसाब से बेहतरीन काम करने पर अपना ध्यान केंद्रित करें। आप खुद ही असाधारण व्यक्ति हो जाएँगे, क्योंकि तब आपका मकसद अपने आस-पास की दुनिया को बेहतर बनाना होगा। ऐसे में करने के लिए इतना कुछ होगा कि इस सोच के साथ आपकी क्षमताओं का विकास खुद-ब-खुद होगा और आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा।

ध्यान केंद्रण—किसी भी चीज को शुरू करने से पहले अपने मन में यह सवाल करें कि अपने काम को पूरा करने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? यह सवाल करने के बाद आप अपने काम करने की क्षमता में और मजबूती देखेंगे। अपने फैसले से आए परिणामों पर कभी अफसोस न करें। जब अपने आप को प्राथमिकता देने लगेंगे और अपने चुने हुए रास्ते पर चलते रहेंगे तो जिंदगी के दूसरे पहलुओं में आए मौकों को गँवा सकते हैं। अपने आप पर विश्वास रखें। लालच और अफसोस को अपने से दूर रखें। समय बरबाद न करें और अपने काम पर ध्यान केंद्रित करें।

ध्यान-शक्ति—ध्यान करना अध्ययन में सहायक होता है और हमारी समझ तीव्र होती है। याददाश्त बढ़ती है और हमारे लिए किसी भी कार्य, नौकरी, गतिविधि या लक्ष्य पर ध्यान लगाना आसान हो जाता है और तब आप लक्ष्य अधिक आसानी एवं कुशलता से हासिल कर सकते हैं। मानसिक शक्तियों का विकास करने के लिए भी यह क्षमता

आवश्यक है। यह रचनात्मक कल्पना का उपयोग करने के लिए एक शक्तिशाली साधन है। यह क्षमता विकसित हो जाने पर हमारा मन हमारी बात मानने के लिए अधिक तत्पर रहता है और निरर्थक नकारात्मक विचारों या चिंताओं में संलग्न नहीं होता। हमें मानसिक आधिपत्य प्राप्त होता है और सच्ची मानसिक शांति का अनुभव करते हैं।

ध्येय की दृढ़ता—सफलता के मार्ग पर व्यक्ति की गाड़ी तभी तक चलती है, जब तक इसमें लगन एवं उत्साह का ईंधन हो। लगन एवं उत्साह उत्पन्न होता है, समर्पण एवं चाहत से। सफलता की पहली शर्त, पहला सूत्र यह है कि सफलता की ऐसी चाहत होनी चाहिए, जैसे जीवन के लिए प्राणवायु की। सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में है। यह सत्य सभी मानेंगे कि समय अपनी चाल से चलता है; न धीमा, न तेज। समय उनके लिए अच्छा चलता प्रतीत होता है, जो समय के साथ चलते हैं और उनके लिए खराब चलता है, जो समय से पीछे चलते हैं या तेज भागने की कोशिश करते हैं। जब तक समय प्रबंधन नहीं होता, तब तक समय हमारे नियंत्रण के बाहर चलता रहेगा। अत: काम का आज-कल पर टाल-मटोल नहीं होना चाहिए।

नई राहें—असफलता का भय एक ऐसा भूत है, जो व्यक्ति के भीतर की सारी शक्ति को खींच लेता है व उसकी रचनात्मकता को समाप्त कर देता है। अपनी शक्ति खो देने पर व्यक्ति असमर्थ हो जाता है। यह भय मस्तिष्क पर परदा डाल देता है तथा मन को कायर बना देता है। अत: जीवन में प्रगति के लिए अनिवार्य है कि असफलता के भ्रामक भूत को मन से भगा दें। इसे सफलता की दिशा में एक आवश्यक सोपान मानते हुए इससे आवश्यक शिक्षण लें। ऐसा किया जा सका तो फिर किसी को किसी भी परिस्थिति में निराशा, घुटन व कुंठा के अँधेरों में न भटकना पड़ेगा और न ही जिंदगी से पलायन करने की सूझेगी। उल्टे, ऐसी स्थितियों में सफलता की नई राहें मिलेंगी और जीवन प्रकाश पथ पर सतत् और अविराम प्रशस्ति होगी।

नकारात्मक मनोवृत्ति—अगर आप एक नकारात्मक मनोवृत्ति प्रदर्शित कर रहे हैं और असफलता तथा कठिनाइयों को आता देख रहे हैं तो यही उचित समय है, जब आपका सोचने का ढंग बदलना चाहिए। यही समय है कि आप नकारात्मक विचारों तथा व्यवहार से पीछा छुड़ाएँ और एक खुशहाल एवं सफल जीवन व्यतीत करें।

नकारात्मक विचार—नकारात्मक विचारों के कारण तालमेल नहीं होता और यह तब तक बढ़ता जाता है, जब तक समग्र रूप से नहीं सोचा जाता। कोई भी नकारात्मक मानसिक स्थिति विश्वास की क्षमता को नष्ट कर देगी और ऐसे नकारात्मक उत्कर्ष पर पहुँचा देगी, जहाँ सकारात्मक सोच को आसानी से जगह नहीं मिल पाती।

नकारात्मक विचार—स्वस्थ आलोचना हमेशा अच्छी लगती है, किंतु कोई भी ऐसी नकारात्मक टीका-टिप्पणी को सुनना नहीं चाहता, जिसका कोई रचनात्मक महत्त्व नहीं होता। आप उस स्थिति से तत्काल बाहर निकल जाना चाहेंगे, जहाँ हर कोई नकारात्मक प्रतीत होता है। प्रयासों एवं दृढ़ निश्चय के साथ आप उन निराशाजनक विचारों से सहज ही छुटकारा पा सकते हैं, जो आपको लक्ष्य तक पहुँचने से रोकते हैं।

नकारात्मक सोच—नकारात्मक सोच रखनेवाले व्यक्ति के पास किसी भी काम को न करने के सैकड़ों बहाने होते हैं। और इस प्रकार की सोच रखनेवाला व्यक्ति कार्यों को कल पर टालता रहता है, जो कभी नहीं आता। नकारात्मक सोचवाला व्यक्ति हमेशा अच्छाई को बुराई साबित करने की सोचता रहता है और स्वयं को गुणों की खान सिद्ध करने का प्रयास करता है।

नकारात्मक सोच—नकारात्मक सोच वह अवगुण है, जो व्यक्ति को घेर ले तो उसके मुँह से केवल 'न' ही निकलेगा, 'हाँ' कभी नहीं। नहीं होगा, नहीं हो सकता, शायद वह मिले, वह नहीं गया होगा, वह नहीं आएगा आदि-आदि बहाने इस प्रकार के व्यक्ति की सोच में सम्मिलित हो जाते हैं। नकारात्मक सोच व्यक्ति को लोगों से दूर

करती है। वह उसे काम से दूर ले जाती है, उलझनों को बढ़ाती है, क्योंकि इस सोच के कारण लोग न तो उस पर विश्वास करते हैं और न ही उसके साथ उठना-बैठना पसंद करते हैं। इस प्रकार, वह अपने कार्यों को आसानी से नहीं कर पाता, अर्थात् उसकी सफलता उससे दूर होती जाती है और तनाव, चिंता आदि जैसे दुर्गुण उसे घेर लेते हैं। वह चिड़चिड़ा होकर लोगों से लड़ता-झगड़ा रहता है।

नकारात्मकता— किसी भी लक्ष्य को पाने में सबसे बड़ी समस्या नकारात्मक चीजें होती हैं। इसलिए इसको कभी अपने ऊपर हावी न होने दें। कुछ लोग अपमानजनक प्रश्नों द्वारा हमें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं, जैसे आप अपने व्यवसाय में अच्छा नहीं कर पाते या पैसा नहीं कमा पाते तो क्या करेंगे? इस तरह के लोगों से निपटने के लिए आप कुछ तरीके अपना सकते हैं। आप इनके रास्ते से खुद हट जाएँ या अपनी तीक्ष्ण बुद्धि की धार से इन्हें हटा दें।

नकारात्मकता— जब किसी व्यक्ति के विचार नकारात्मकता से घिरे होते हैं, तो उसकी सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती है, उत्साह और उल्लास मंद पड़ जाते हैं। फलस्वरूप, साहस और आत्मविश्वास भी तिरोहित हो जाते हैं। नकारात्मक विचारों के चलते उसका व्यक्तित्व एकदम नकारा तथा प्रभावहीन हो जाता है। जिन लोगों की सोच शुद्ध और सफल है, उनके सामने बुरे विचारवालों की शक्ति और बड़ी-से-बड़ी सामर्थ्य भी कम और हल्की प्रतीत होती है।

नजरअंदाज— अपने सपने को जीवंत बनाने के लिए इसके आत्मीय पहलुओं का ध्यान रखें। अपनी योग्यता तथा शक्ति को पहचानें। यदि कोई आपकी सफलता से जलता है या क्रोधित होता है तो होने दीजिए, क्योंकि यह एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है। इस तरह के लोग जो करना चाहते हैं, उन्हें करने दीजिए। ऐसे लोग दूसरों की गलतियाँ निकालने या गप हाँकने में समय बरबाद करने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते।

नजरिया— अतीत के दु:ख का बोझ लेकर चलना अत्यधिक पीड़ादायक और निराशाजनक हो सकता है। बहुत से लोग हैं, जो पहले तो यह मानना ही नहीं चाहते कि उनका अतीत उन्हें डरा रहा है। वे इसे एक कल्पित कहानी या कोई जालसाजी मानते हैं। अगर आप उन लोगों में से हैं तो पहले इस अस्वीकार्यता की मन:स्थिति से बाहर आएँ और इस तथ्य को स्वीकारें कि आपके लिए अतीत से छुटकारा पाना आवश्यक है। आपको यह समझने की जरूरत है कि जो हो चुका, उसे अब बदला नहीं जा सकता। आप सिर्फ इतना कर सकते हैं कि हालात के बारे में अपना नजरिया बदलें, अर्थात् उनके बारे में सोचने और अनुभव करने का तरीका बदलें।

नजरिया— गिलास आधा खाली है, या आधा भरा, यह आपके नजरिए पर निर्भर करता है। आधा भरा देखना आपके सकारात्मक नजरिए को दरशाता है। हमें हर पल अपने नजरिए को सकारात्मक बनाना चाहिए। सफलता एवं सोच के बीच गहरा संबंध है। कार्य करने से पूर्व ही नकारात्मक सोच लेने से उस कार्य में सफलता की संभावना संदिग्ध हो जाती है। उसमे सफल होने की संभावना भी कम हो जाती है। यदि आपमें वास्तव में सफल होने की ललक है तो आपको अपनी सोच में बदलाव लाना ही होगा। आपकी सोच ही आपके जीवन में परिवर्तन ला सकती है। सोच बदलने पर ही जीवन बदलेगा। आपकी सोच ही आपकी सफलता का रास्ता तय करेगी।

नयापन— ऐसा नहीं है कि आप एक बार हिट हो गए तो सदा के लिए कहानी बन गई। प्रतिस्पर्धा के बदलते रूप के चलते आपको लगातार मेहनत के साथ-साथ अपने आप में नयापन लाते रहना होगा। आपके क्षेत्र में रोज हजारों नए लोग आ रहे हैं। सबकी चाहत अपने आपको बेहतर साबित करने की है। इसलिए आपको अपनी किसी भी उपलब्धि पर अधिक समय न गँवाकर आगे की नई रणनीति तैयार कर लेनी चाहिए, जिससे आप समय-समय पर

अपनी क्षमता को साबित करते रहें। इससे आपके विकास-क्रम पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाएँगे।

नाकामियाँ— कुछ नहीं करना और सफल होने से बेहतर है, प्रयास करके नाकाम हो जाना। अगर नाकाम रहें, तो सबकुछ खत्म नहीं होता। ध्यान रहे, अतीत की छाया भविष्य पर न पड़ने दें। बीते कल की आज शिकायत करने से आनेवाला कल बेहतर नहीं होगा। बदलाव लाएँ और पीछे मुड़कर न देखें। सच्ची खुशी तभी आएगी, जब समस्याओं के बारे में शिकायत करना छोड़ देंगे।

नाकामियाँ— नाकामी और सफलता उन्हें देखना चाहिए कि हम नाकामी और सफलता का कैसा अनुभव कर रहे हैं, लेकिन सबसे बढ़कर उन्हें यह देखने की जरूरत है कि नाकामी और सफलता हमारे जीवन की अस्थायी घटनाएँ हैं, जीवन तय करनेवाली स्थायी स्थिति नहीं। याद रखें, सफलता कभी अंतिम नहीं होती, विफलता कभी मारक नहीं होती। यह साहस ही है, जिसकी अहमियत होती है।

नाकामियाँ— सफलता और विफलता घटनाओं को परिभाषित करनेवाली शब्दावलियाँ हैं, लोगों को परिभाषित करनेवाली नहीं। इसका अर्थ यह है कि हम खुद पर नजर दौड़ाएँ और खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में भी देखें, जिसे जीवन में कभी असफलता तो कभी सफलता मिलती है। हमें उन चीजों को स्वीकार करना चाहिए, जिनमें हम नाकाम रहे और हमें अपनी नाकामी के बारे में बात करते हुए सहज रहना चाहिए। क्या हम अपने अतीत की नाकामियों को स्वीकार करते हैं और उनसे हमने क्या सीखा? इसका लेखा-जोखा रखते हैं? क्या हम इस बारे में सहज रहते हैं कि कुछ मामलों में अपनी नाकामी को अपने बच्चों को बता पाएँ? हम अपनी नाकामियों और उनसे निपटने के अपने तरीकों के बारे में होनेवाली बात को रात के खाने के समय की बातचीत का अहम हिस्सा बना पाएँ, तभी हम अपने बच्चों को भी नाकामी को जीवन की किसी अन्य घटना की तरह स्वीकार कर लेने के लिए मदद कर पाएँगे—सीखने के एक अवसर के रूप में, बजाय कि उन्हें पूरी तरह से नकार दें।

नाकामी— नाकामी अकसर एक अप्रत्यक्ष वरदान की तरह होती है, बशर्ते यह हमें ऐसे उपयोगी सबक सिखा सके, जो हम इसके बगैर नहीं सीख सकते थे। नाकामी का जीवन से वैसा ही संबंध है, जैसा भट्ठी का कुम्हार से। यह हमें तपाकर खरा कर देती है, फिर भी लाखों लोग नाकामी को अंतिम नतीजा मानकर बैठ जाते हैं जबकि यह जीवन की ज्यादातर दूसरी घटनाओं की तरह क्षणभंगुर है और इस वजह से इसे अंतिम नहीं मान लिया जाना चाहिए। नाकामी किसी भी इनसान के अनुभव का सबसे फायदेमंद हिस्सा होती है, क्योंकि कई जरूरी सबक हैं, जो सफलता हासिल करने से पहले सीख लेने चाहिए और यह सबक नाकामी से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता।

नाकामी— नाकामी का जीवन से वैसा ही संबंध है, जैसा भट्ठी का कुम्हार से। यह हमें तपाकर खरा कर देता है। फिर भी, लाखों लोग नाकामी को अंतिम नतीजा मानकर बैठ जाते हैं जबकि यह जीवन की ज्यादातर दूसरी घटनाओं की तरह क्षणभंगुर है और इस वजह से इसे अंतिम नहीं मान लिया जाना चाहिए।

नाकामी— नाकामी किसी भी इनसान के अनुभव का सबसे फायदेमंद हिस्सा होती है, क्योंकि कई जरूरी सबक हैं, जो सफलता हासिल करने से पहले सीख लेने चाहिए और यह सबक नाकामी से बेहतर कोई नहीं सिखा सकता। नाकामी अकसर एक अप्रत्यक्ष वरदान की तरह होती है, बशर्ते यह हमें ऐसे उपयोगी सबक सिखा सके, जो हम इसके बगैर नहीं सीख सकते थे।

नाकामी— सफल लोगों को नाकामी और अस्थायी नाकामी का भेद समझ आना चाहिए। हर किसी ने कभी-न-कभी किसी प्रकार की अस्थायी नाकामी का सामना किया है। इनसे प्राप्त अनुभव ही सबसे बड़े और फायदेमंद

सबक सिखाते हैं। सच में, हममें से ज्यादातर लोग ऐसी मिट्टी के बने हैं कि यदि हमने कभी नाकामी का सामना नहीं किया तो हम इतने अहंकारी और बेलगाम हो जाते हैं कि हम खुद को खुदा से भी बड़ा समझने लग जाते हैं। इस दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो कहा जाता है कि अपने और ईश्वर के बारे में कहते हैं, 'मैं और ईश्वर', और ऐसा कहते समय 'मैं' पर कुछ ज्यादा ही जोर देते हैं!

निडरता—जो लोग भाग्य बदलना, सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें डरने की जरूरत नहीं है। यदि आप जरूरत के अनुसार स्थितियों को बदलना चाहते हैं तो अपनी वर्तमान की परिस्थितियों में बदलाव कीजिए। सफलता पाने वाले व्यक्ति किसी चीज को करने का साहस रखते हैं, इसलिए उनके सपने वास्तव में साकार होते हैं। सफलता के साथ प्रतिद्वंद्वी पैदा होना सामान्य बात है। जैसे किसी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए जरूरी हो जाता है कि किसी-न-किसी को पीछे छोड़े। कुछ लोग अपनी सफलता के प्रति हीन भावना से ग्रस्त होते हैं और अपना ज्यादा समय दूसरों की योग्यता या सफलता से अपने आपको बेहतर साबित करने में बरबाद कर देते हैं। अपने लिए की गई शिकायतों पर सदा ध्यान दें, क्योंकि यह आपको दूसरों से बेहतर बनने में सहायक होती है।

नियंत्रण—आप जहाँ कहीं भी खड़े हैं, वहीं से शुरू करें और अपने ऊपर नियंत्रण करें। एक ही चीज पर आपका पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए और वह है—आपकी मानसिक वृत्ति।

निरंतर श्रम एवं प्रयत्न—लोग भूल जाते हैं कि जीवन की उन्नति किसी एक प्रयत्न की सफलता पर आधारित नहीं होती। वह तो निरंतर श्रम एवं प्रयत्न पर निर्भर करती है। जीवन की उन्नति के अवसर लगातार परिश्रम, निरंतर अध्यवसाय तथा अचल निष्ठा से आते हैं। एक साथ सबकुछ पा लेने की ललक जिनमें होती है, वे एक बार में शत-प्रतिशत सफल होना चाहते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, यह अपने आप में एक भ्रामक धारणा है। एक पत्थर के बड़े टुकड़े को तोड़ने के लिए हथौड़े से कई प्रहार किए जाते हैं, लेकिन इसके छोटे-छोटे टुकड़े उसके अंतिम एक प्रहार में होते हैं। तो क्या इसका अभिप्राय यह हुआ कि अंतिम चोट से पहले के सभी प्रयासों को विफल माना जाए? ऐसा तथ्यत: गलत है। एक ही बार में सबकुछ हासिल कर लेने की मनोवृत्ति वाले लोग अंतिम चोट के पहले के प्रयासों को कितना ही विफल मानें, लेकिन इनकी अपनी महत्ता है। जो अपनी प्रत्येक चोट के साथ अंतिम सफलता की भूमिका तैयार कर रहे थे।

निरंतरता—जितना हो सके उतना करना, मगर लगातार करना, उसे करने में लगे रहना। अगर व्यक्ति लगातार उतना करता है, जितना उससे हो सकता है, तो समय आने पर उसे इसके अच्छे नतीजे मिलेंगे। व्यक्ति अगर अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगातार, बिना हारे कोशिश करता ही रहेगा, तो वह जरूर प्रगति करेगा और उसमें लगे रहने की वजह से उसमें हमेशा जोश भरा रहता है। इसलिए उसके हारने की या दौड़ से निकाल दिए जाने की गुंजाइश कम रहती है। जी हाँ, आप भी ऐसे दौड़िए कि अपनी मंजिल तक पहुँचकर जीत हासिल कर सकें।

निरंतरता—नदी की शुरुआत जहाँ से होती है, वहाँ वह बेहद सँकरी और छोटी होती है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती है, चौड़ी होकर बड़ी नदी में बदलने लगती है। हमारे जीवन में किसी बड़े काम की शुरुआत भी इसी प्रकार होती है। जिस तरह नदी का पानी हमेशा आगे ही बढ़ता रहता है, ठीक उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में निरंतर परिश्रम करते हुए आगे बढ़े तो सफलता जरूर मिलती है।

निरंतरता—निरंतर प्रयास के बिना सब व्यर्थ है, प्रतिभा भी। इससे असामान्य बात क्या होगी कि बहुत से प्रतिभा-संपन्न लोग ऐसे मिल जाएँगे, जो असफल हैं। यह दुनिया पढ़े-लिखे मूर्खों से भरी पड़ी है। केवल निरंतरता और दृढ़-निश्चय ही सर्वशक्तिमान हैं।

निरंतरता—निरंतर प्रयास ही सफलता की निशानी है। अनेक बार, अनेक जगहों पर ऐसा देखा गया है कि पढ़े-लिखे लोग भी अपनी असफलता की कहानी सुनाते हैं। अपने भाग्य को कोसते हैं कि मेरा भाग्य ही ऐसा रहा कि मैं असफल हुआ; यह मेरी किस्मत में नहीं था; मुझे अवसर नहीं मिल पाया, नहीं तो मैं यह कर लेता, वह कर लेता आदि-आदि। अब यह मूर्खता ही है। यदि ऐसे पढ़े-लिखे असफल व्यक्ति दृढ़तापूर्वक अपने लक्ष्य का पीछा करते तो क्या वे असफल होते? किंतु वे लोग असफलताओं को अपना सबकुछ मानकर हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहते हैं। साथ ही, दूसरों को भी वैसी ही प्रेरणा देते हैं। बहुत से लोग उनकी असफलताओं को देखकर उस प्रकार के कार्यों में हाथ भी नहीं डालते।

निराशा—अगर कोई यह समझता है कि खुशियाँ उसके नसीब में हैं ही नहीं, प्यार उसे मिलता ही नहीं या वह इस वहम का शिकार है कि हँसी में उसका कोई हिस्सा नहीं, तो ऐसे व्यक्ति की तुलना उस किसान से की जा सकती है, जो इस आशंका में अपना खेत ही नहीं जोतता कि इस साल बारिश होगी ही नहीं और सूखा पड़ना तय है।

निराशा—इसमें कोई शक नहीं कि निराशा, चाहे वह छोटे-से-छोटे रूप में ही क्यों न हो, एक भयंकर मानसिक बीमारी है, जो बढ़ते-बढ़ते एक-न-एक दिन सारे जीवन का ही नाश करके रख देता है। यह एक ऐसा भँवर है, जो जिंदगी की नाव को पतन के गर्त में डुबोकर रख देती है। यह एक ऐसा दलदल है, जिसमे फँसा आदमी रोने, तड़पने और पश्चात्ताप करने के अलावा और कुछ नहीं कर पाता।

निराशा—किसी काम में असफल होना, सफलता के लिए अग्रसर होना है, क्योंकि जब ठोकर लगती है, तभी व्यक्ति आगे सँभलकर चलता है। निराशा ही व्यक्ति में आशा का संचार करती है। निराश व्यक्ति ही विचार मंथन करता है और सोचता है कि उसने कहाँ गलती की? और वह अपनी गलती को सुधारकर अपने कार्य में सफल होता है, निराशा से पार पाता है।

निराशा—जब किसी भी कार्य में हम असफल हो जाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से निराशा हमें आ दबोचती है। निराशा के अतिरेक की लहरें हमारे जीवन के उत्साह को बहा ले जाती हैं। कई बार इस तरह की त्रासदियाँ एक ओर जहाँ हमें अकर्मण्य बनाकर हमारे लिए दु:खों का जाल बुन देती हैं, वहीं दूसरी ओर जीवन से पलायन, आत्महत्या जैसे विचारों को जन्म देती हैं। निराशा की छाँव में खड़ा व्यक्ति मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। इससे बचना चाहिए।

निराशा—निराश व्यक्ति अपने और दूसरों में बुराइयाँ ही देखते रहने के आदी होते हैं। इस दुनिया की अच्छी चीजों और जीवन के उज्ज्वल पहलुओं से वे हमेशा आँखें मूँदे रहते हैं। अपने आपको बुरा और दु:खी समझने के अलावा वे दूसरों से भी घृणा करते हैं। अपने जीवन को दु:खमय और भाररूप करने के अतिरिक्त वे दूसरों के जीवन में भी नकारात्मकता भर देते हैं, इसलिए सभी उनसे बचकर रहना चाहते हैं।

निराशा—निराशा अवगुण कब बनता है? जब व्यक्ति किसी कार्य में असफल हो और उसे निराशा घेर ले। निराश होकर वह बैठ जाए, उस असफलता का हल न ढूँढ़े, तब निराशा नामक अग्नि जन्म लेती है, जिससे व्यक्ति के बाकी सभी गुण जलकर भस्म हो जाते हैं। निराशा में ही आशा छिपी है, लेकिन तब, जब निराशा के कारणों को ज्ञात कर उनसे छुटकारा पाया जाए अन्यथा निराशा अवगुण में परिवर्तित होकर व्यक्ति को असफलता का मार्ग दिखाती है।

निराशा—निराशा की छोटी-सी रेखा भी मानसिक यंत्र को उसी प्रकार बेकार और निकम्मा बना देती है, जिस प्रकार धूल का छोटा सा कण या छोटा सा बाल चलती हुई घड़ी को बंद कर देता है।

निराशा—निराशा व्यक्ति की आत्मिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति को भी अस्त-व्यस्त कर देती है। ऐसे लोग पूरी मुस्तैदी से किसी भी काम में नहीं लग पाते। किसी तरह अगर काम करना शुरू भी करते हैं, तो जल्दी ही उनका मन उचटने लगता है। थोड़ी सी मुसीबत आई नहीं कि वे काम छोड़ बैठते हैं, घबराहट और काल्पनिक भय उन्हें व्यथित कर देता है और फिर इस तरह निराश व्यक्ति को जिंदगी में असफलता पर असफलता मिलती रहती है।

निराशा—निराशा व्यक्ति की शक्ति को खा जानेवाली पिशाचनी है। उस उत्साह की सबसे बड़ी दुश्मन है, जो सफलता की सबसे मूल शर्त है। निराश लोग उन्नति की इच्छा से रहित होकर मोह के भँवर में पड़े रहते हैं। यह व्यक्ति को कर्तव्य और पुरुषार्थ से हटाकर भाग्यवादी बना देती है और उसकी प्रगति के सारे रास्ते बंद कर देती है। निराश व्यक्ति भाग्य को ही सबकुछ मानते हैं और उसी के भरोसे हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहते हैं। वे चाहते हैं कि कोई जादू की छड़ी उसके हाथ लग जाए, जिससे रातोरात सारी मुसीबतों से छुटकारा मिल जाए। अपनी मेहनत के दम पर भाग्य-निर्माण की क्षमता को वे लगभग भूल-से जाते हैं। निराशा व्यक्ति के दिलोदिमाग समेत हर चीज को जंग लगा देती है। ऐसे व्यक्ति हर समय निराशाजनक विचारों में डूबे रहते हैं। यही वजह है कि निराश व्यक्ति जल्दी ही कमजोर, बीमार और अशक्त हो जाते हैं।

निराशा—निराशा से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है, इसलिए इसका समूल नाश करके आशावाद अपनाना चाहिए। मानवीय प्रगति का आधार आशावादिता ही है, अत: संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपको सर्वप्रथम आशावादिता का आश्रय लेना चाहिए।

निराशा—निराशा हमारी प्रसन्नता, सुख और शांति को ही नष्ट नहीं करती, वह हमारे उन संकल्पों को भी नष्ट कर डालती है, जो हमने कुछ सत्कर्मों को करने के लिए किए थे।

निराशावाद—जीवन-संग्राम में जूझने से पूर्व ही हथियार डाल देनेवाले लोग घोर निराशावादी होते हैं। वे खेलने से पूर्व ही हार जाते हैं। जो लोग अपनी सामर्थ्य तथा क्षमता प्रदर्शित करने से पूर्व ही अपने को पराजित महसूस कर लेते हैं, उन्हें दुनिया की कोई भी ताकत विजयी नहीं बना सकती।

निराशावाद—निराशा अनेक दुर्गुणों को जन्म देती है। निराशावादी होने पर व्यक्ति के मन में प्राय: किसी भी कार्य के प्रति शंका बनी रहती है कि 'मैं अमुक कार्य कर पाऊँगा अथवा नहीं। उस कार्य में न जाने कैसी-कैसी परेशानियाँ आएँ' आदि; इस प्रकार की अनेक शंकाएँ उसे परेशान करती हैं। इन शंकाओं को गढ़ते-गढ़ते वह आसान कार्य भी नहीं कर पाता और छोटे-छोटे कार्यों से भी घबराने लगता है। यह उस व्यक्ति के आत्मविश्वास की कमी को इंगित करते हैं और वह असफल होता है। उसके कदम लड़खड़ाते रहते हैं और वह गर्त की ओर जा पहुँचता है। वह भूल-भुलैया में ही भटकता रहता है और जहाँ से प्रारंभ करता है, घूम-फिरकर वहीं पहुँच जाता है।

निराशावाद—निराशात्मक कमी उन लोगों में पाई जाती है, जो निकम्मे, नकारा और आलसी होते हैं, जो लोग न तो सफलता पाना चाहते हैं, न उसे पाने का मार्ग ही जानते हैं। ये लोग, खुद तो प्रभावित रहते ही हैं, अपने वातावरण को भी प्रभावित करते हैं। ये केवल लेते-ही-लेते हैं, किसी को कुछ देते नहीं हैं। ऐसा कोई कार्य नहीं करते, जो दूसरों के लिए प्रेरणा का कार्य करें। दुर्गुणों से भरे ऐसे लोग दूसरों की सफलता से भी कुछ नहीं सीख पाते। धीरे-धीरे नष्ट होते जाते हैं और इस संसार में उनका नाम तक लेने वाला नहीं बचता।

निराशावाद—निराशावाद भयंकर राक्षस है, जो हमारे नाश की ताक में बैठा रहता है। निराशावादी प्रगति की भावना का त्याग कर देते हैं। यदि कभी उन्नति करने का कुछ खयाल आया भी तो विपत्तियों के पहाड़ उन्हें दिखाई

देने लगते हैं। कार्य आरंभ नहीं हुआ कि चिंताओं के बादल मँडराने लगे, पर आशावादी व्यक्ति प्रसन्न होकर कार्य प्रारंभ करता है। गतिमान बने रहने के लिए मुसीबतों को सहायक मानकर चलता है। उत्साहपूर्वक अंत तक पूर्व नियोजित कार्य में संलग्न रहता है, इसी से उसकी आशाएँ फलवती होती हैं। आशा ही जीवन है, निराशा को तो मृत्यु ही मानना चाहिए।

निराशावाद—निराशावादी व्यक्ति यही सोचता रहेगा कि यदि अमुक कार्य में मुझे सफलता नहीं मिली, तब क्या होगा? क्या मैं इस कार्य को इसके परिणाम तक पहुँचा सकूँगा। इस प्रकार के दुर्गुण निराशावादी को घेरकर उसे असफल कर देते हैं। उस व्यक्ति की कार्य-क्षमता भी ऐसे विचारों से नष्ट हो जाती है। वह उस कार्य को करने की स्थिति में होने के बाद भी निराशा के कारण उसे नहीं कर पाता। उसके मन में उदासी, मायूसी, निराशा आदि लक्षण घर कर लेते हैं और ये वे दुर्गुण हैं, जो उसे पनपने नहीं देते। कहा गया है कि आशा की एक किरण भी मौत को जीवन में बदलने के लिए पर्याप्त है।

निराशावाद—अगर कभी हमारी नौकरी चली जाती है तो हम खुद को नाकाम मानने लगते हैं, कभी-कभी इस हद तक कि जैसे नाकामी से कभी उबर भी नहीं पाएँगे। हम यह सोचते हैं कि उक्त नौकरी में नाकामी हमारे लिए एक फैसला है, हमारी पूरी जिंदगी पर एक निर्णय है, जो हमें कभी उबरने का मौका नहीं देगा और यही विचार हमें अपने बारे में अलग ढंग से नहीं सोचने देता है।

निर्णय-शक्ति—शीघ्र निर्णय करने से समय की बहुत बचत होती है। काम करनेवालों को समयाभाव की शिकायत नहीं होती, क्योंकि निर्णय शक्ति से प्रेरित होकर वे अपने कार्यों को तुरंत शुरू करते हैं, परंतु आलसी और दीर्घसूत्री मनुष्यों का अधिक समय विचार करने में ही नष्ट हो जाता है और उन्हें समयाभाव की सदैव शिकायत बनी रहती है। असमंजस से उबरिए। अपने फैसले तुरंत और सही समय पर करने की क्षमता का विकास कीजिए। आपके व्यक्तित्व में आनेवाला परिवर्तन सभी को चौंका देगा।

निर्णय-शक्ति—सफलता प्राप्त करने के लिए निर्णय शक्ति का होना आवश्यक है। यह सफल नेतृत्वकर्ता का अनिवार्य गुण है। वह मनुष्य जो निश्चय करने में रुकता है, घबराता है, डाँवाडोल होता है, छोटे-छोटे घात-प्रतिघातों से विकृत होता है, पूरा पड़ने और पूरा न पड़ने के विचार से कार्य आरंभ नहीं करता, दूसरों की सम्मति लेता फिरता है, कुछ भी नहीं कर पाता। ऐसे मनुष्य को चाहे जितने अच्छे अवसर प्राप्त हों, वह अपने डाँवाडोल स्वभाव, निर्णय-शक्ति के अभाव के कारण अनेक सुअवसरों के लाभ नहीं उठा पाता। उसमें निर्णय बल नहीं होता। वह दूसरों के हाथ की कठपुतली हो जाता है। उसका अस्तित्व और व्यक्तित्व ही नष्ट हो जाता है।

निर्दिष्ट दिशा-लक्ष्य—बहुत से लोगों के जीवन में असफल होनेवाले कारणों में एक कारण अपने लिए एक निर्दिष्ट दिशा-लक्ष्य का चुनाव न करना भी रहता है। कभी इधर, कभी उधर, एक को छोड़कर दूसरे में, दूसरे को छोड़कर तीसरे काम में लगने वाले व्यक्ति किसी में भी सफलता प्राप्त नहीं करते। इसलिए अपने जीवन की एक दिशा निर्धारित कीजिए और सदैव उसी ओर चलते रहिए। कई लोग एक कार्य में बहुत-सा समय बिताकर उसे छोड़ बैठते हैं और फिर दूसरे काम को हाथ में लेते हैं। इस तरह के अधिकांश लोग जीवन में असफलता का ही सामना करते हैं।

निर्भरता—हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपने जीवन का प्रतिक्षण, प्रतिघंटा और प्रतिदिन कैसे बिताते हैं?

निर्मलता—यदि हृदय निर्मल न हो तो आप यह निश्चित मानिए कि न तो विचार-विमर्श निर्मल होंगे, न वार्त्तालाप

और न जीवन।

निश्चय—कुछ पाने के लिए सबसे पहले मानसिक स्तर पर दृढ़ निश्चय करें कि आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सकारात्मक विचारों का आना परम आवश्यक है। विचार आपकी प्रेरणा बनेंगे। विचार ही आपकी सफलता का आधार बनेंगे। किसी लक्ष्य को पाने से पूर्व ही मन में धारणा बना लेना कि मैं इसे नहीं कर सकता, इस स्थिति में आप कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाएँगे। व्यक्ति स्फूर्तिवान तथा ऊर्जावान तन से नहीं, मन से होता है। आपका मन सोचता है—आप ऊर्जावान एवं स्फूर्तिवान हैं, तो आप वाकई ऊर्जावान स्फूर्तिवान बन सकते हैं।

निश्चय—संदेह और अनिश्चय यह दोनों दो परस्पर विरोधी दिशाएँ हैं। जहाँ संदेह होगा, आप वहाँ किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सकते। जिसके मन में यह संदेह होगा कि पता नहीं मैं इस काम को कर पाऊँगा भी या नहीं, वह कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। सफलता पाने के लिए तो दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है। जब तक आप अपने शब्दकोश से 'दुर्भाग्य', 'असंभव' और 'अनिश्चय', 'संदेह' आदि शब्दों को निकालकर बाहर नहीं करेंगे, तब तक आपको जीवन के किसी क्षेत्र में भी सफलता नहीं मिल सकती। आपका ऐसा ही विश्वास रहा तो एक दिन आपके लिए अपने पैरों पर खड़ा होना भी असंभव हो जाएगा। आँखें खोलिए और इस सत्य को समझिए कि आपको जीवन में कुछ करना और बनना है।

निश्चित दिशा—बिना दिशा निश्चित किए यदि समुद्र में एक जलयान को छोड़ दिया जाए तो उसका क्या परिणाम होगा, आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं। इधर-उधर डोलता हुआ जलयान या तो समुद्री चट्टानों से या फिर तट से टकराकर समुद्र में डूब जाएगा, लेकिन जब उसी जलयान की दिशा निश्चित होगी तो समुद्र को चीरते हुए, वह अपनी मंजिल तक पहुँच जाएगा। यही बात हमारे जीवन पर भी लागू होती है। बिना अपना लक्ष्य तय किए हम अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच सकते। भाग्य के भरोसे बैठे रहना ठीक नहीं है।

निश्चित मार्ग—संलग्नता के बिना सफलता नहीं मिलती। हम जो कार्य करना चाहते हैं, उसके लिए निश्चित मार्ग तय करना आवश्यक है। लक्ष्यहीन ढंग से किए जानेवाले प्रयास बिल्कुल बेकार बैठने जैसा है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य पर सावधानी के साथ विचार करता है तथा उसे पूरी तन्मयता के साथ पूरा करने के लिए दिशा में चल पड़ता है, उसे उस मार्ग की दुविधाएँ स्वत: ही रास्ता देने लगती हैं।

निश्चित योजना—निश्चित योजना के बिना जीवन में कभी भी ऐसा कुछ हासिल नहीं किया जा सकता, जो सार्थक और महत्त्वपूर्ण हो। यह भी तब हासिल होता है, जब एक प्रक्रिया के तहत दिन-रात व्यवस्थित और निरंतर प्रयास किए जाएँ। एक निश्चित प्रमुख लक्ष्य सिर्फ सोच लेने, साफ-साफ भाषा में लिख लेने और दिमाग में पूरी तरह फिक्स कर लेने से ही प्राप्त करना सुनिश्चित नहीं हो पाएगा। प्रमुख लक्ष्य हासिल करने की इच्छा को लगातार प्रयासों का समर्थन मिलना बहुत जरूरी है और उससे भी ज्यादा जरूरी है, अन्य लोगों के साथ रिश्ता।

निश्चित लक्ष्य—एक निश्चित लक्ष्य जीवन की सभी उल्लेखनीय उपलब्धियों की शुरुआत भर है, जबकि आत्मविश्वास वह अदृश्य शक्ति है, जो किसी को तब तक उत्साहित, प्रेरित और अग्रसर करती रहती है, जब तक कि उसका लक्ष्य एक यथार्थ न बन जाए। आत्मविश्वास के बिना कोई भी उपलब्धि लक्ष्य के चरण से आगे नहीं बढ़ पाती और महज उद्देश्यों का अपने आप में कोई वजूद नहीं होता। कई लोगों के लक्ष्य अस्पष्ट होते हैं और वे जीवन में कुछ हासिल नहीं कर पाते, क्योंकि उनमें इतना भी आत्मविश्वास नहीं होता कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वे एक निश्चित योजना बना सकें।

निश्चित लक्ष्य— जिस इनसान के मन में एक निश्चित लक्ष्य है और उसे हासिल करने के लिए एक निश्चित योजना है, उसने सफलता की राह नब्बे फीसदी तक पहले ही तय कर ली है। कोई भी व्यक्ति, जिसे ज्ञान है और जो व्यक्तियों के सामंजस्यपूर्ण संयोजन से शक्ति पैदा कर सकता है, वह किसी भी उचित कारोबार में सफल हो सकता है।

निश्चित लक्ष्य— निश्चित लक्ष्य जीवन की सभी उल्लेखनीय उपलब्धियों की शुरुआत भर है, जबकि आत्मविश्वास वह अदृश्य शक्ति है, जो किसी को तब तक उत्साहित, प्रेरित और अग्रसर करती रहती है, जब तक कि उसका लक्ष्य एक यथार्थ न बन जाए। एक निश्चित लक्ष्य हासिल करने के लिए पूर्ण समन्वय के साथ दो या उससे अधिक दिमागों की संधि से हर एक व्यक्ति का दिमाग काफी उत्प्रेरित होता है और वैसी मानसिक स्थिति बनती है, जिसे विश्वास कहते हैं। इसकी शक्ति और क्षमता का थोड़ा एहसास गहरी दोस्ती और प्रेम के रिश्ते में होता है।

निश्चित लक्ष्य— युद्ध के मैदान में उसी सेनापति की जीत होती है, जो पहले से अपना लक्ष्य निश्चित करके चलता है। फौज चाहे जितनी बड़ी हो, उसे अनर्थक इधर-उधर लिये फिरने से और जगह-जगह पर प्रहार करने से शत्रु पर विजय असंभव है। इतिहास में वही लोग सफल रहे हैं, जिनका लक्ष्य निश्चित और सटीक था।

निश्चित लक्ष्य— सफल बनने के लिए आपका कोई लक्ष्य होना चाहिए, कोई बिंदु स्थल होना चाहिए, जहाँ तक आप पहुँचना चाहते हैं। सफलता के लिए वह पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण अपेक्षा है। सरल शब्दों में, आप अब तक एक विजेता नहीं हो सकते, अगर आपके पास जीतने के लिए कुछ नहीं है। दिशा और उद्देश्य का बोध कराने के लिए अल्पकालिक व दीर्घकालिक, दोनों प्रकार के लक्ष्य अनिवार्य तत्त्व माने जाते हैं। किसी विशिष्ट स्पष्ट रूप से निर्धारित लक्ष्य के बिना आप उस यात्री जैसे हैं, जिसकी कोई मंजिल नहीं है। आपको कुछ पता नहीं होता है कि आप कहाँ जा रहे हैं या क्यों जा रहे हैं?

निष्ठा— यदि आप पूर्ण निष्ठा के साथ उद्यम कर रहे हैं तो एक क्षण को भी व्यर्थ मत जाने दीजिए। आप जो काम कर सकते हैं अथवा जिस काम को करने का स्वप्न देखते हैं, उसे आरंभ कर दीजिए।

नेतृत्व— किसी और के नेतृत्व में चलने के बजाय अपना नेतृत्व स्वयं करें। जब तक आप भीड़ का एक हिस्सा बने रहेंगे, आप कभी भी दबाव में आ सकते हैं। जरूरत है कि आप स्वयं को यह याद दिलाएँ कि आपका एक बिल्कुल अलग व्यक्तित्व है, जिस तरह हर व्यक्ति दूसरों से भिन्न होता है। आप वही हो सकते हैं, जो आप हैं। स्वयं अपना नेतृत्व करें और अपने दिलोदिमाग का आदेश मानें।

नेतृत्व— नेतृत्व अच्छे-बुरे की समझ देता है और विपरीत परिस्थितियों में नियंत्रण करने में सहयोग देता है, जिससे हार का मुँह न देखना पड़े। जीवन में ऐसे ही मोड़ आते हैं, जब हम परिस्थितियों और प्रयासों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाते और ऐसे में हमारा नेतृत्व कभी-कभी असफल हो जाता है। यदि कभी असफलता हाथ भी लगे तो समस्या को गंभीर होने से रोकने का प्रयास करें और कार्य को पूरा करने का सामर्थ्य रखें। यही वास्तविक नेतृत्व है।

नेतृत्व— भाग्य निर्माण के क्रम में नेतृत्व का गुण आवश्यक है, जिससे किसी कार्य को करने की पहल कर सकें। साथ ही, उस पर नियंत्रण रखें और उस कार्य को बीच में न छोड़ें। नेतृत्व अच्छे-बुरे की समझ देता है और विपरीत परिस्थितियों में नियंत्रण करने में सहयोग देता है, जिससे हार का मुँह न देखना पड़े। जीवन में ऐसे ही मोड़ आते हैं, जब हम परिस्थितियों और प्रयासों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाते और ऐसे में हमारा नेतृत्व कभी-कभी

असफल हो जाता है। यदि कभी असफलता हाथ भी लगे तो समस्या को गंभीर होने से रोकने का प्रयास करें और कार्य को पूरा करने का सामर्थ्य रखें। यही वास्तविक नेतृत्व है।

परख—अपने आपको परखें और अपने मन में चल रही परेशानियाँ दूर करें। आंतरिक संघर्ष आपकी समय की धारणा को जटिल बनाते हैं। यह बड़ा ही सुखद होता है, जब आपको पता चलता है कि आपके पास खुद के लिए कितना समय है? अपने मन में अतीत में मिली उपलब्धियों और कड़वे अनुभवों की तसवीर बना लें। साथ ही, अपने भविष्य की भी तसवीर बना लें। इससे आपको प्राथमिकताओं को एक लय में लाने में मदद मिलेगी। आंतरिक संगठन और बाहरी संगठन का तालमेल बहुत जरूरी है।

परिणाम पर केंद्रण—टाल-मटोल करना नकारात्मक विचारों का मूल कारण है। परिणाम पर फोकस करें, न कि वहाँ पहुँचने की प्रक्रिया पर। यह न सोचें कि सर्दी के मौसम में सुबह जल्दी उठना कितना मुश्किल होगा, बल्कि सुबह-सुबह के व्यायाम से होनेवाले लाभों के बारे में विचार करें।

परिणाम—आप जैसा सोचेंगे, उसके परिणाम भी वैसे ही प्राप्त होंगे। मन में सफलता पाने के बीज रोपित करेंगे तो उसके परिणाम सफलता के रूप में प्राप्त होंगे। असफलता के विषय में सोचकर सफलता पाने के प्रयास करेंगे तो किसी भी स्थिति में आपको सफलता नहीं मिल सकती है। सोच में तो असफलता बसी हुई है, तो परिणाम सफलता के रूप में कैसे प्राप्त होगा? जैसा संदेश आप अपने अवचेतन मस्तिष्क को देंगे, वैसा ही परिणाम आपको प्राप्त होगा। अमीर बनना चाहते हैं, तो पहले अमीर बनने के विषय में सोचें, फिर अमीर बनने के प्रयास करें।

परिणाम—कोई भी काम शुरू करने से पहले उसके परिणाम के बारे में जरूर सोच लें और उसी के अनुसार क्रिया करें। खुशी और शांति पाने के लिए अपने दिमाग में हमेशा किए जा रहे काम के परिणाम को याद रखिए।

परिणाम—हमारे मानसिक नजरिए से ही हमें सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। परिणाम का सकारात्मक चित्र खींचने से उसके इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। नकारात्मक परिणाम के विषय में सोचने से नकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे। अपने वार्त्तालाप में सदैव, 'मैं अवश्य ही सफलता प्राप्त करूँगा'—इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करें। बाधाओं एवं कठिनाइयों से कभी न घबराएँ। इनका सामना करना सीखें।

परिवर्तन—जब किसी सकारात्मक लक्ष्य के लिए हम अपने अंदर परिवर्तन लाते हैं तो कुछ भी पाना असंभव नहीं होता। स्वयं को बदलने की कुंजी हर व्यक्ति के हाथ में होती है। ज्यादातर लोग समस्याएँ आने पर ही खुद में बदलाव लाते हैं। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम खुद से किए गए वादों को पूरा करें। इन वादों को पूरा करने से हमें हमेशा लाभ मिलता है।

परिवर्तन—जीवन आसानी से नहीं मिलता है और कुछ भी सोने की तश्तरी में पेश नहीं किया जाता है। अगर आप अपनी आंतरिक शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास नहीं करेंगे, तब आपके लिए यह समझना कठिन होगा कि आपको किस दिशा में जाना चाहिए? अगर आपको किसी बिंदु विशेष पर अधिक देर तक टिके रहना कठिन लगता है तो बैठ जाएँ और विचार करें कि आपके जीवन में इसका क्या असर होनेवाला है? अगर आपको लगता है कि आपने जिस पर नजर गड़ाई हुई है, उसका कोई सकारात्मक प्रभाव होगा तो उसे हासिल करने के लिए स्वयं को प्रेरित करें। यह भी याद रखें कि व्यक्तिगत परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है, जो हर आनेवाले दिन के साथ नया मोड़ लेती है।

परिवर्तन—परिवर्तन एक प्राकृतिक नियम है। अत: परिवर्तन को स्वीकार करें। परिवर्तन को स्वीकारने पर अन्य सभी बातें अपने आप ही परिवर्तित हो जाएँगी।

परिवर्तन—परिवर्तन के नियम से संचालित विश्व में दिन-रात, सर्दी-गरमी, धूप-छाँव की तरह सफलता-असफलता का क्रम भी सहज प्राकृतिक है। यहाँ स्थायी असफलता नाम की कोई चीज नहीं है। जो असफलता आज हमें दिखाई पड़ती है, वह वस्तुत: अभीष्ट सफलता का एक सोपान मात्र है, लेकिन एक ही बार में सबकुछ पा लेने की ललक बिना तनिक भी असफल हुए, पूर्ण सफलता की कल्पना करती है। इसी वजह से असफलता को सहज रूप से स्वीकार कर पाना असंभव हो जाता है और कई लोग तो प्रगति की दिशा में अपना प्रयास तक छोड़ बैठते हैं। निराशा, कुंठा, घुटन, हताशा, विक्षिप्तता ऐसे ही व्यक्तियों की दु:खद नियति बन जाती है।

परिवर्तन—यदि हम गेहूँ हैं, तो मक्का नहीं हो सकते, यदि मक्का हैं, तो गेहूँ नहीं हो सकते परंतु यदि हम गेहूँ हैं, तो यथाचित समय पर जमीन जोतने, खाद-पानी ठीक समय पर देने से उत्तम गेहूँ तो अवश्य हो सकते हैं। यदि हम ज्वार हैं, तो किसी प्रकार उत्तम ज्वार तो अवश्य हो सकते हैं। हम अपनी वास्तविक क्षमताओं एवं प्रकृति में थोड़ी-सी सजगता के साथ क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकते हैं। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जिस परिस्थिति में है, उसी को अनुकूल बना सकता है। उसी स्थिति में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देकर नाम व दाम अर्जित कर सकता है। यही करना चाहिए। देश और दुनिया को बदलने वाले महान् नेताओं ने यही किया है।

परिवर्तन—व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं। समसामयिक परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार व नजरिया एक खुश और नाखुश व्यक्ति के बीच सबसे बड़ा अंतर पैदा करता है। यह सही है कि हर समय हर कोई खुश नहीं रह सकता, लेकिन कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से भी खुशियाँ निचोड़ लेने की क्षमता आप में होनी ही चाहिए। निराशावादी लोगों को विभिन्न वस्तुओं या परिस्थितियों के प्रति नजरिए में परिवर्तन लाना चाहिए।

परिश्रम—इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति ने कठोर परिश्रम द्वारा असंभव को भी संभव कर दिखाया है। परिश्रम व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। शारीरिक और मानसिक परिश्रम के उचित तालमेल से व्यक्ति के तन और मन दोनों, स्वस्थ रह सकते हैं।

परिश्रम—दरअसल, वास्तविक सफलता पाने के लिए परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है और जब सफलता मिले तो अपने मन, विचार और व्यवहार पर नियंत्रण रखना चाहिए। उतावलेपन में व्यक्ति कई बार जो कुछ भी सफलता प्राप्त करता है, उसे और विस्तार देने की बजाय जल्द ही खो देता है। इसलिए हर परिस्थिति में संयम बनाए रखना चाहिए। दक्षता का कोई अंतिम पड़ाव नहीं होता। इसलिए खुद को हमेशा सीखने की प्रक्रिया में रखें। धैर्य और सावधानी सफलता की बड़ी कसौटी हैं। इसमें आप जितने दक्ष होंगे, सफलता की संभावनाएँ उतनी ही प्रबल होंगी। न तो किसी से सीखी गई बात भूलनी चाहिए, न ही किसी व्यक्ति के सहयोग और उपकार को।

परिश्रम—परिश्रम से बचकर कोई और रास्ता ढूँढ़ना समय की बरबादी है। जीवन में सफलता और परिश्रम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए सफलता की इच्छा रखनेवाले को कठोर परिश्रम के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

परिस्थिति—विकट परिस्थिति में भी ज्याद दु:खी न होकर, विकट परिस्थिति के हटाने के बारे में सोचना चाहिए।

परिस्थितियाँ—जो लोग अपनी तमाम असफलता का दोष परिस्थितियों या किस्मत को ठहराने लगते हैं, उन्हें नेपोलियन की यह बात याद रखनी चाहिए, जिसने कहा था, 'चूल्हे में जाएँ परिस्थितियाँ। परिस्थितियाँ मैं बनाता हूँ।' विफलता की ज्यादातर परिस्थितियाँ और किस्मत के प्रतिकूल नतीजे खुद के बनाए हुए होते हैं, हमें यह नहीं भूलना चाहिए।

परीक्षा—जिस परीक्षा को पास कर हम खुशी में फूले नहीं समाते, अगले क्षण से हमारी अपनी नजर में ही उसका महत्त्व घटने लगता है और हम किसी नई परीक्षा की तैयारी में लग जाते हैं। इसके अलावा हमारी आज की सफलता किसी विशेष कार्य-क्षेत्र की है, न कि समूचे जीवन की।

परेशानी—रसायन शास्त्र का एक नियम है, जो जिंदगी पर भी लागू होता है। जब कोई अणु टूटकर पुन: अपनी पूर्व अवस्था में आता है तो वह पहले से अधिक मजबूत होता है। इसी तरह, हम जब किसी परेशानी का सामना करने के बाद पहले से अधिक मजबूत हो जाते हैं और जीवन में और भी तरक्की करते हैं।

पसंदीदा काम—अपनी दीवानगी का पीछा करें और वही करें, जो आपको पसंद है। यदि आप प्रोत्साहन और ऊर्जा का असीमित स्रोत पाना चाहते हैं तो आपको वही करना चाहिए, जो करना आपको पसंद है। जब आप अपनी रुचि का कुछ कर रहे होते हैं, आप अपनी आंतरिक ऊर्जा स्रोत का उपयोग करेंगे और सारे समय प्रोत्साहित अनुभव करेंगे।

पुरुषार्थ—आदमी कोई भी प्रयत्न करता है, उसका परिणाम चाहता है, सफलता चाहता है। जिस प्रयत्न का कोई परिणाम न आए, जिस पुरुषार्थ का कोई फल न हो, उसके प्रति हमारे मन में बहुत आकांक्षा और जिज्ञासा नहीं जागती। सफलता के लिए तीन शर्तें हैं—सम्यक् दृष्टि, सम्यक् उपाय और सम्यक् प्रयत्न। जब दृष्टि सम्यक् नहीं होती तो सफलता नहीं मिलती। और पुरुषार्थ सम्यक् नहीं होता तो सफलता नहीं मिलती। ये तीनों बातें अनिवार्य हैं और तीनों में से एक को भी नहीं छोड़ा जा सकता। तीनों परस्पर संबद्ध हैं।

पुरुषार्थ—आशाएँ पुरुषार्थ को जगा देती हैं, जिससे व्यक्ति बड़े-बड़े कार्य करने में समर्थ होता है।

पुरुषार्थ—दृष्टि ठीक नहीं होती, हमारा ज्ञान सम्यक् नहीं होता तो पुरुषार्थ की सफलता नहीं हो सकती। हम परिणाम की भावना नहीं रख सकते। सबसे महत्त्व की बात है—दृष्टि का सम्यक् होना। बहुत बार ऐसा होता है कि बताया कुछ जाता है और पकड़ कुछ लिया जाता है। इससे भ्राँति पैदा हो जाती है।

पुरुषार्थ—पुरुषार्थ व्यक्ति का वह गुण है, जिस पर उसका संपूर्ण जीवन टिका होता है। बहुत-से लोग भाग्य के सहारे अपना बहुमूल्य समय व्यतीत करते रहते हैं, लेकिन पुरुषार्थ नहीं करते। जबकि वे यदि पुरुषार्थ करें तो अपने दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदल सकते हैं।

पुरुषार्थ—पुरुषार्थ से व्यक्ति स्वयं के लिए तो करता ही है, लेकिन स्वयं के लिए किया गया वही कार्य दूसरों के लिए कुछ करने की प्रेरणा बनता है। जब कोई व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से, अपनी मेहनत से कोई व्यापारिक प्रतिष्ठान, उद्योग आदि स्थापित करता है तो वह यह केवल स्वयं के लिए नहीं करता, वह दूसरों को भी काम देता है; सफल होने की प्रेरणा देता है; दूसरों को मेहनत, लगन, आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाता है। उसका वह कार्य अब दूसरों के लिए होता है, क्योंकि वह हजारों व्यक्ति की शक्ति है; उनके लिए वंदनीय है, उन्हें राह दिखानेवाला है। यह सब व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से करता है।

पुरुषार्थ—सच्चा पुरुषार्थी वही है, जो बार-बार असफल होने पर भी अपने प्रयत्न में शिथिलता नहीं आने देता और नए उत्साह से उद्यम करने लगता है।

पूर्णता—आप जहाँ भी हैं, वहाँ पूरी तरह रहकर कार्य करें। भटकते हुए मन के साथ किया गया कार्य कभी मिथक नहीं बन सकता। यह एक अत्यंत प्रभावी मंत्र है कि कार्य को सिर्फ एक बार में ही करो। जो काम हाथ में है, उसमें अपनी समस्त शक्तियों को लगाकर समय का सदुपयोग करनेवाले व्यक्ति ही सफल रहते हैं।

पैसा—जिंदगी में पैसा ही सबकुछ नहीं होता, लेकिन सबकुछ पैसों से ही होता है।

प्रकृति का नियम— ठोकर खाना, गिरना, फिर उठना और चलना, यह तो प्रकृति का नियम है। जो गिरेगा ही नहीं, वह उठेगा कैसे और सफलता के मार्ग पर आगे कैसे बढ़ेगा?

प्रकृति का नियम— दुनिया में हरेक इनसान की सफलता अलग है, जिसका सबसे मुख्य रूप एक सफल इनसान बनना है। ऐसे लोग अपने जीवन में आनंद और खुशियों को बढ़ाने की कोशिश करते हैं और इन सभी आदतों को अपनाकर ही आप अपने जीवन को बदल सकते हैं। यदि आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचना है तो आपको बदले में कुछ-न-कुछ तो जरूर देना ही पड़ेगा। यही प्रकृति का नियम है।

प्रकृति की शक्तियाँ— प्रकृति की शक्तियाँ, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, अत्यंत शांत होती हैं। बादलों की गर्जना, बिजली की कड़क और चमक, समुद्र का तेज बहाव बहुत भीषण प्रतीत होता है। ये प्रकृति की शक्तियाँ हैं जो किसी को प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देतीं, परंतु अपने कार्य रात-दिन करती हैं। बिजली की चमक सूर्य के मधुर और शांतिप्रद प्रकाश से कितनी तेज प्रतीत होती है? इस भीषण दमक और चमक की सूर्य के प्रकाश से क्या तुलना हो सकती है? वह प्रकाश, जो संसार के समस्त पदार्थों को पुष्ट करता है। सूर्य के इसी शांत और मधुर प्रकाश की उदारता से समस्त वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। यही प्रकाश प्राणियों को अन्न, फल-फूल, कंदमूल देकर पुष्ट करता है। उनका महत्त्व शांति में छिपा रहता है।

प्रकृतिस्थता— कृत्रिमता या बनावटीपन हमारे जीवन को खोखला और कमजोर करता है जबकि जितना हम प्रकृति के निकट रहते हैं, उतना ही हमारा जीवन अधिक सौम्य और सहज रहता है। यही सौम्यता और सहजता हमें हमारे कार्य और जीवन को नियंत्रित करने की शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। हम अपने समय को अपने मुताबिक निर्धारित कर सकने में सफल रहते हैं और जिन लक्ष्यों को हमने अपने जीवन का ध्येय बनाया है, उन्हें पाने में हमें कामयाबी मिलती है।

प्रकृतिस्थता— जिन व्यक्तियों की दिनचर्या प्रकृति के अनुसार नियमित होती है, उनके जीवन में सफलता, सुख, शांति और संतोष की वर्षा होती रहती है। जब हम मानसिक रूप से संतुष्ट होते हैं, तभी हम सफलता के मार्ग पर बिछे हुए अवरोधों को पार करते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचते हैं।

प्रगति-रथ— सफलता की यात्रा अनवरत विकास-क्रम से जुड़ी है। किसी भी बड़े सफर की शुरुआत पहले कदम से ही होती है। जिन लोगों ने अपने सपने को साकार करने की दिशा में प्रगति की है, वे जानते हैं कि शुरुआती दिनों में छोटी-छोटी उपलब्धियाँ भी कितनी बड़ी ऊर्जा का काम करती थीं। एक-एक सफलता को जोड़कर हम ऐसा सेतु निर्मित कर लेते हैं, जिस पर हमारी प्रगति का रथ, फिर बिना रुके दौड़ता ही चला जाता है।

प्रतिकूलता— अगर कोई प्रतिकूलता आप पर हावी हो, तो बस यूँ समझ लें कि हर एक पर उसी तरह हावी है और जरा भी विचलित हुए बगैर उसी अनुपात के लाभ खोजने में जुट जाएँ तथा उसे पुष्पित-पल्लवित अवसर में बदल डालें।

प्रतिकूलता— एक ही जाति के दो वृक्षों को देखें। एक ही प्रकार के दो बीज एक ही क्यारी में बो दिए जाते हैं, वही कुछ दिन बाद बड़े होते हैं। उनमें से एक पौधे को हम एक स्थान पर लगा देते हैं, जहाँ उसको जल, वायु, ऋतु अपने आप ही सहन करना पड़ता है। दूसरे पौधे को हम किसी वाटिका की क्यारी में लगा देते हैं। वहाँ उसको समय-समय पर पानी दिया जाता है, धूप और ठंड से उसकी रक्षा की जाती है और उसमें खाद दी जाती है। जब दोनों पौधे पूर्ण वृक्ष बन जाते हैं, तब दोनों की लकड़ी, पत्ती, पुष्प और फल में बड़ा अंतर आ जाता है। जो अपने आप बढ़ता है और ऋतु, पानी हवा का कष्ट उठाता है, उसकी जितनी ठोस बनावट होती है, उतनी बाग में लगाए

गए वृक्ष की नहीं होती, बल्कि बागवाले वृक्ष में इतनी नरमी आ जाती है कि यदि उसको सर्दी, गरमी और खुश्की से न बचाया जाए तो उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है।

प्रतिकूलता—प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की आवश्यकता है। राह में काँटे पड़े हुए हों, तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो या जमीन में गाड़ दो। उन काँटों पर पाँव से या अन्य अंग से खून मत बहाओ। प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना, उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता।

प्रतिकूलता—प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब विवेक और ज्ञान से कार्य किए जाए। अंधे होकर भागने से मार्ग नहीं कट सकता। विवेक और ज्ञान के साथ उद्यम करने से मार्ग में पहाड़ भी हो तो वह हटाया जा सकता है या उसके ऊपर मार्ग बनाया जा सकता है, परंतु उस पर्वत से सिर फोड़ने से कोई लाभ नहीं हो सकता। वहाँ मार्ग नहीं बन सकता।

प्रतिकूलता—हर प्रतिकूलता अपने में समान लाभ का बीज लिये रहती है। इसलिए अस्थायी हार को विफलता मानकर निराश न होना और दोगुने उत्साह से आगे कदम बढ़ाना। हर प्रतिकूलता के अंदर समान रूप से लाभ के बीज मौजूद हैं।

प्रतिकूलता-अनुकूलता—प्रतिकूल व्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए ज्ञान और विवेक की परम आवश्यकता है। राह में यदि काँटे बिछे हों, तो विवेक यह कहता है कि उनको हटा दो, जला दो या जमीन में गाड़ दो। उन काँटों पर पाँव रखकर व्यर्थ में खून बहाने से क्या लाभ? प्रतिकूलता का अभाव हुए बिना, उसका स्थान अनुकूलता ग्रहण नहीं कर सकती। जब तक अनुकूलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक मार्ग में आगे बढ़ना नहीं हो सकता। और प्रतिकूलता अनुकूलता में तभी परिवर्तित हो सकती है, जब हमारे द्वारा किए जानेवाले कार्य विवेक और ज्ञान से परिपूर्ण हों।

प्रतिक्रिया—अमूमन व्यवहार में हम कुछ अप्रिय प्रसंगों का सामना करते हैं। ऐसे में हम अनावश्यक प्रतिक्रिया से बचकर अपनी ऊर्जा और समय को बचा सकते हैं। विवेक के प्रयोग से हम विरोधियों को भी सकारात्मक संदेश दे सकते हैं।

प्रतिद्वंद्विता—अपने कार्यों को तेजी से निपटाएँ। स्वयं से प्रतिद्वंद्विता करें। इस प्रकार आप देखेंगे कि आप कार्य को कितनी जल्दी निपटा लेंगे एवं उसमें कोई कमी भी नहीं पाएँगे।

प्रतिद्वंद्विता—प्रतिद्वंद्वी सफलता पाने वाले व्यक्ति किसी चीज को करने का साहस रखते हैं, इसलिए उनके सपने वास्तव में साकार होते हैं। सफलता के साथ प्रतिद्वंद्वी पैदा होना सामान्य बात है, जैसे किसी व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए जरूरी हो जाता है कि किसी-न-किसी को पीछे छोड़ें। अपने लिए की गई शिकायतों पर सदा ध्यान दें, क्योंकि यह आपको दूसरों से बेहतर बनने में सहायक होती है।

प्रतिभा—आपकी प्रतिभा, आपको भगवान् का दिया गया उपहार है। आप इसके साथ क्या करते हैं, यह आपके द्वारा भगवान् का दिया गया उपहार होता है।

प्रतिभा—प्रतिभाशाली व्यक्तियों से निराशा के क्षणों में भी आशा का प्रकाश दिखाई देता है। इसी के सहारे वे अपनी परिस्थितियों में सुधार कर लेते हैं।

प्रतिभा—स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयत्न करें। आपको यह समझना चाहिए कि कोई भी पूर्ण नहीं है और अपना सुधार करके आप खुद की बेहतरी करते हैं। साथ ही, खुद की तुलना कभी किसी दूसरे से न करें। हमेशा याद रखें।

इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हैं। आप बाकी लोगों से एक भिन्न अनुभव एवं प्रतिभा के साथ बढ़े हुए हैं और आपको अपने व्यक्तित्व पर गर्व होना चाहिए।

प्रतिभा-विकास— निराशा और छोटे मार्ग से सफलता पाने की तिकड़में छोड़े बिना आपमें वास्तविक प्रतिभा का विकास नहीं हो सकता। सदैव आशा और विश्वास से परिपूर्ण विचारों का स्वागत कीजिए। थोड़े ही दिनों में आपको आश्चर्य होता कि आप जिन पदों की, जिन कुरसियों पर बैठने की लंबे समय से इच्छा रखते थे, वे सब आपकी ओर खिंचे चले आ रहे हैं।

प्रतियोगिता— याद रखें, हर किसी को बदला जा सकता है और हर किसी को हराया जा सकता है, बल्कि आपको भी। प्रतियोगिता की इज्जत करना सीखें और कभी भी न डरें, क्योंकि ऐसा बहुत सी बार हो सकता है कि प्रतियोगिता देखकर आप डर जाएँ।

प्रतिस्पद्र्धा— स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा के जरिए ही हम स्थायी सफलता अथवा अपने लक्ष्य को अर्जित कर सकते हैं। व्यवहारकुशल व्यक्ति की प्रथम अवधारणा 'स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा में विश्वास' होनी चाहिए। सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार सूर्योदय के बाद सूर्यास्त होना तय है, उसी प्रकार असफलता के पश्चात् सफलता मिलनी निश्चित है, परंतु यह तभी संभव है, जब व्यक्ति अपने कार्य की दिशा में पूरी ईमानदारी के साथ प्रयत्नशील हो और उसका रुझान स्वस्थ प्रतिस्पद्र्धा के प्रति हो।

प्रतीक्षा— अवसर की प्रतीक्षा करनेवाले व्यक्तियों को महान् या सर्वोत्तम नहीं कहा जा सकता। महान् व्यक्ति तो वे हैं, जो अवसर को अपना अनुगामी, अपना दास, अपना आज्ञापालक बना लेते हैं। लाखों अवसरों को खोजने पर शायद ही कोई ऐसा अवसर मिले, जो विशेष रूप से आपकी सहायता कर सके। यदि आप विचार करेंगे तो आपको पता लगेगा कि अवसर आपके सामने सदैव उपस्थित होते रहते हैं।

प्रतीक्षा— हम जो कुछ जानते हैं, यदि उसका अभ्यास करते हैं तो उससे हमारी ज्ञानवृद्धि होती है। सावधानी से प्रतीक्षा करनेवाले को लाभ अवश्य होता है। दौड़नेवाले फिसल पड़ते हैं, परंतु सँभलकर चलनेवाले शीघ्र पहुँच जाते हैं। संपूर्णता के लिए बहुत धैर्य और समय की आवश्यकता है।

प्रभाव की शक्ति— बच्चों के जीवन में अपने प्रभाव की शक्ति का कम आकलन कभी नहीं करना चाहिए—चाहे वो सकारात्मक हो या नकारात्मक हो। हमें सकारात्मक चीजों को बढ़ाने और नकारात्मक चीजों को न्यूनतम करने की कोशिश करते रहना चाहिए।

प्रभु का आशीष— आत्मा परमात्मा का अंश है। यही वजह है कि आत्मा के दु:खी होने पर परमात्मा भी दु:खी हो जाता है। जब कार्य पूरी निष्ठा, प्रसन्नता और लगन के साथ किया जाता है तो प्रभु का आशीष प्राप्त होता है एवं सफलता अवश्य मिलती है। किसी ने ठीक ही कहा है, 'जो खुद की मदद करता है, भगवान् उसकी मदद करता है।'

प्रयत्न या प्रयास— असफल होने पर आपको निराशा का सामना करना पड़ सकता है, परंतु प्रयास छोड़ देने पर आपकी असफलता सुनिश्चित है।

प्रयत्न या प्रयास— उचित यही है कि आज हमारी जैसी परिस्थितियाँ हैं, हम उनमें संतोष अनुभव करें और आगे के लिए उनसे अच्छे परिणामों की आशा करें। तभी हम जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। एक-सी परिस्थिति में पड़े रहना अकर्मण्य पुरुषों को शोभा दे सकता है, किंतु आपकी शान इसी में है कि आप हर घड़ी, सुंदर भविष्य की आशा करें। आज जिस पद पर हैं, कल उससे बड़ा दर्जा मिले, ऐसी आशा करें और अभी से उनके लिए प्रयत्न शुरू कर दें।

प्रयत्न या प्रयास— एक सम्राट् कई युद्धों में लगातार पराजित होता रहा। इक्कीसवीं बार उसके रक्षक सैनिकों को छोड़कर और कोई शेष न रहा। वह एक गुफा में बैठा, विचार कर रहा था, तभी एक चिकने पत्थर पर चढ़ने का प्रयास करती हुई चींटी दिखाई दी। वह बार-बार गिर जाती, किंतु ऊपर चढ़ने की आशा से पुन: प्रयास करती। यह देखकर उस सम्रोट के हृदय में फिर से आशा का संचार हुआ। उसने सोचा, यदि छोटी-सी चींटी इतनी बार असफल होने पर भी निराश नहीं होती और वह अपना प्रयास नहीं छोड़ती, तो मैं ही हिम्मत क्यों हारूँ? वह नई शक्ति जुटाने में लग पड़ा और फिर से दुश्मन पर विजय पाई।

प्रयत्न या प्रयास— जीवन में सफलता का मूल मंत्र है, हर असफलता को सफलता के प्रथम पग के रूप में स्वीकार करना। इस स्वीकारोक्ति के साथ सतत् प्रयास में निरंतरता रखना। प्रयास कितना ही अधूरा, छोटा या अपूर्ण

क्यों न हो, यदि यह सतत् जारी रहा तो प्रत्येक चरण में हुई भूलों से कुछ सीखते हुए सुधार का क्रम भी चलता रहेगा और अनंत: समय आने पर पूर्णता का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाएगा।

प्रयत्न या प्रयास— लगातार प्रयत्न करनेवाले लोगों की गोद में सफलता स्वयं आकर बैठ जाती है।

प्रयत्न या प्रयास— विफल होना मंजूर किया जा सकता है, लेकिन सफल होने के लिए प्रयास न करना मंजूर नहीं किया जा सकता।

प्रयत्न या प्रयास— सतत् प्रयास ही व्यक्ति की अभीष्ट सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रयत्न या प्रयास— सदैव सफल होने के विषय में ही सोचें। इससे आपके मस्तिष्क में सकारात्मक धारणा बनेगी और आप सफलता के पथ पर अग्रसर होना प्रारंभ कर देंगे। इसके लिए बस प्रयास करने की आवश्यकता है।

प्रयत्न या प्रयास— सफलता की कला वास्तव में हमारे मस्तिष्क के दक्षातापूर्ण संचालन की एक कला है। सफलता हमारे भीतर ही निहित होती है। उसे बाहर निकालने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है। यदि हमारे प्रयास सकारात्मक होते हैं, तो हम सफलता की ओर बढ़ जाते हैं और इसके विपरीत यदि हमारे प्रयास नकारात्मक होते हैं, तो हम सफलता से दूर होते चले जाते हैं। हमारे मनोभावों का हमारी जिंदगी में बड़ा महत्त्व होता है।

प्रयत्न या प्रयास— सफलता तभी मिलती है, जब छोटे-छोटे प्रयास नियमित रूप से किए जाए।

प्रयत्न या प्रयास— स्कॉटलैंड का राजा ब्रूस दुश्मनों से हारकर एक गुफा में छुपा अतीत के चिंतन में मग्न था। बीते हुए दिनों की यादें बार-बार उसके जेहन में बिजली की तरह कौंधती पर उम्मीद की कोई सुनहरी किरण दिखाने के बजाय वे उसके मन को निराशा के और भी ज्यादा अँधेरों में डुबो दे रही थी। साम्राज्य, सेना, अधिकार, वैभव, प्रतिष्ठा और परिवार की याद से उसका मन दु:ख और संताप से भर उठता। उसे लगने लगा कि राज्य पाना तो असंभव ही है, क्योंकि सबकुछ खो चुका था। अब जब कुछ पाया ही नहीं जा सकता तो फिर जीने का ही क्या फायदा? उसे खुद का जीवन भार लगने लगा और उसे त्याग देना ही उसने बेहतर समझा। खुद का अंत करे या न करे; विचारों की इसी उधेड़बुन में पड़ा। वह यह सोच ही रहा था कि अचानक सामने गुफा की दीवार पर उसकी नजरें टिक गई। एक चींटी जो अपने से कहीं ज्यादा बोझ लिए गुफा की दीवार पर चढ़ रही थी, नीचे गिर पड़ी, लेकिन तुरंत ही उसने फिर से चढ़ना शुरू किया, पर गुफा की दीवार चिकनी होने की वजह से दोबारा गिर गई। वह बार-बार गिरती और दोबारा ऊपर चढ़ने का प्रयास करती। यह देखकर ब्रूस के हृदय में आशा का संचार हुआ। उसने सोचा, जब एक छोटी-सी चींटी भी इतनी बार असफल होने पर निराश नहीं हुई और निरंतर प्रयास करना नहीं छोड़ती, तो फिर में इससे कहीं ज्यादा सामर्थ्यवान होने पर भी हिम्मत क्यों हार जाऊँ? ब्रूस उसी समय उठ खड़ा हुआ और अपनी शक्ति इकठ्ठा करने के बाद पूरे जोश से दुश्मन से लड़ा, लेकिन दुर्भाग्य से फिर हार गया, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। कई बार वह इसी तरह हारा, पर आखिरकार जीत ही गया और अपने खोए हुए राज्य को हासिल करने में सफल रहा।

प्रयत्न— मनुष्य की शिक्षा स्कूल और कॉलेज में नहीं होती, किंतु कष्टों और आवश्यकताओं के अनुभव में होती है। कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न और दौड़-धूप करता है, उसी को सफलता प्राप्त होती है। यदि कठिनाइयाँ न होतीं, तो सफलता भी न होती। जय और पराजय संग्राम ही न हो, तो जय या विजय कहाँ से प्राप्त हो? सफलता प्राप्त करने के लिए ही तो प्रयत्न किया जाता है, आपत्ति उठाई जाती है। उसी से मनुष्य की उन्नति होती है। जितनी भी अधिक आपत्तियाँ सहकर मनुष्य सफलता प्राप्त करता है, उसकी सफलता उतनी ही अधिक महत्त्व की होती है।

प्रयास—ऐसे भाग्यशाली लोग कम ही होते हैं, जिन्हें अपने पहले प्रयास में ही सफलता मिल जाती है। कामयाब लोगों से आप कभी पूछेंगे तो आपको पता चलेगा कि कामयाबी की मंजिल तक पहुँचने से पहले वे कितनी बार नाकामयाब रहे थे। अत: किसी परीक्षा में सफल नहीं होने पर खुद को दुनिया का निकृष्ट व्यक्ति समझ लेने की प्रवृत्ति गलत है। कई बार नाकामयाबी की वजह किसी ऐसे लक्ष्य पर अपना समय व धन खर्च करना भी होता है, जो हमारी सामर्थ्य से बाहर रहता है।

प्रयास—अगर आप कुछ नया और अलग कर रहे हैं तो यह जरूरी नहीं कि सबकुछ सही ही होगा, लेकिन अगर आप इस वजह से प्रयास करना छोड़ देंगे तो कभी सफल नहीं हो सकेंगे।

प्रयास—व्यक्ति स्वयं प्रयास करे, कार्य करे, इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। वह कर्म के प्रति दृढ़ निश्चयी बनेगा, अनुशासन में रहेगा। इसके लिए आवश्यक है कि वह औरों से प्रेरणा ले, कार्य करने से पूर्व चिंतन, मनन, विचार करे। अपने जीवन के सिद्धांत बनाए, मन में परोपकार की भावना जगाए।

प्रयास—सदैव स्वयं को धन्य समझें कि जो कुछ आपके पास है, वह सिर्फ आपके पास है। सदैव अपने सपनों को जगाए रखें। कभी भी उन्हें मरने न दें। उनको पूरा करने का प्रयास ही निश्चित रूप से आपको कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहेगा और एक दिन सफलता आपके कदम चूमेगी।

प्रयास—स्वयं को पहचानिए, उस क्षेत्र को पहचानिए, जिसमें आप जाना चाहते हैं। महत्त्वाकांक्षा और पूरी लगन से उसे पूरा करने का प्रयास करिए।

प्रयोग—सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप चौबीस घंटे में कितने प्रयोग कर पाते हैं?

प्रयोगशील—प्रयोगशील बनें। कोई भी समस्या या मुश्किल तभी तक पहाड़ जैसी लगेगी, जब तक आप इसे पहाड़ जैसा समझेंगे। अगर आप मानते हैं कि यह नहीं सुलझ सकती, तो यह सचमुच नहीं सुलझेगी। यह विश्वास रखें कि यह सुलझ सकती है और इसके बाद आपके मन में इसके समाधान अपने आप आने लगेंगे। यह असंभव है, ऐसा कभी न तो सोचें, न ही कहें।

प्रवृत्ति—व्यक्ति की प्रवृत्ति से ही उसके वास्तविक गुणों की गणना होती है। प्रवृत्ति में ही आशावाद या निराशावाद के बीज छिपे होते हैं, लेकिन कठिन-से-कठिन परिस्थितियों से भी खुशियाँ निचोड़ लेने की क्षमता आप में होनी ही चाहिए।

प्रशंसा—किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय न बरबाद मत करें, उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करें।

प्रशंसा—प्रशंसा करने में हमेशा शीघ्रता कीजिए और बुराई करने में विलंब। इससे आपके व्यक्तित्व, जीवन, परिवार तथा कार्यस्थल पर जो परिवर्तन होंगे, उन्हें देखकर आप चकित रह जाएँगे। प्रोत्साहन ऐसा संवेग है, जिसके परिणाम बेहद आशाजनक व दीर्घ निकलते हैं। डर या दबाव में आकर व्यक्ति काम की औपचारिकता तो पूर्ण कर सकता है, लेकिन कभी भी अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य नहीं दे सकता। इसके लिए हमें प्रशंसा का सहारा लेना चाहिए।

प्रशंसा—प्रशंसा के पुष्पों की सुगंध बेहद मोहक है। वे काम जो हमारे खजाने, सिफारिश तथा प्रभाव से नहीं हो पाते, प्रशंसा के दो शब्दों से सिद्ध हो जाते हैं। व्यक्ति के काम की प्रशंसा करने से वह प्रोत्साहित होता है, प्रसन्न होता है। उसे लगता है कि मुझे अच्छा कार्य करना चाहिए, ताकि सभी लोग मुझे सराहें। यह अच्छे नेतृत्व के लिए भी लाभदायक तत्त्व है। प्रत्येक अच्छे काम के लिए तारीफ करने तथा गलती को सुधारने के लिए प्रेरित करने से सदैव सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं।

प्रशंसा—वार्त्तालाप के दौरान खुद ही बहुत अधिक न बोलते रहें। जब कभी कोई व्यक्ति आपके लिए कोई उपहार लाए तो उसकी प्रशंसा करना न भूलें। यह न जताएँ कि आप किसी और चीज की आशा कर रहे थे। दूसरे को एहसास कराएँ कि आप उन्हें प्यार करते हैं।

प्रसन्नता—जीवन में जब भी विपदाओं के तूफान उठें, मन घबराए, हौसला पस्त होने लगे तो सहजता और प्रसन्नता का संतुलन बनाने का अभ्यास करें। सहजता और प्रसन्नता को धारण कर, ऋषि-मुनि भी अजर-अमर हो गए। सिद्ध पुरुषों ने प्रसन्नता को एक समर्थ सिद्धि माना है।

प्रसन्नता—जीवन में सफल होने के लिए प्रसन्नता अति आवश्यक है। प्रसन्न लोग कठिनतम स्थितियों में भी संतुलित रह सकते हैं और वे देर-सवेर अपने लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं। एक उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए जरूरी है कि हम हर परिस्थिति में सहजता और प्रसन्नता से जीने का अभ्यास करें। प्रसन्नता दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रसायन है। जो इस रसायन का निरंतर सेवन करता है, वह अनेक बाधाओं को सहज ही पार कर लेता है।

प्रसन्नता—जो व्यक्ति हर कार्य को प्रसन्नतापूर्वक करता है, वह संजीवनी की ऊर्जा से भरा रहता है। उसके पास दु:खी रहने के लिए वक्त नहीं होता। इसलिए जो भी कार्य करें, उसमें प्रसन्नता ढूँढ़ें।

प्रसन्नता—प्रसन्नता ऐसा आधारभूत गुण है, जिसके बिना आदमी चाहकर भी आशावादी नहीं बन सकता है। जब हम सकारात्मक सोचेंगे, तो विनम्रता और प्रसन्नता जैसे गुणों को अपने भीतर विकसित कर पाएँगे।

प्रसन्नता—प्रसन्नता कहीं नहीं मिलती, प्रसन्न हुआ जाता है। प्रसन्नता चुनी जाती है। स्वयं आशा को प्रसन्नता का एक रूप कहा जाता है। जब हम ऊब जाते हैं तो मनोरंजन से प्रसन्नता मिलती है। बहुत ज्यादा मनोरंजन ऊबा देता है तो काम से प्रसन्नता मिलती है।

प्रसन्नता—प्रसन्नता कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसका पीछा करने की जरूरत है। वह तो अवसर आने पर स्वयं ही आकर मनो मंदिर में हँसने लगती है। प्रसन्नता-प्राप्ति का मुख्य रहस्य यह है कि मनुष्य अपने लिए सुख की कामना छोड़कर अपना जीवन दूसरों की प्रसन्नता में नियोजित करे। दूसरों को प्रसन्न करने के प्रयत्न में जो कष्ट प्राप्त होता है, वह भी प्रसन्नता ही देती है। छोटा-मोटा कष्ट तो दूर, देशभक्त तथा अनेक परोपकारियों ने अपने प्राण देकर भी अनिर्वचनीय प्रसन्नता प्राप्त की है। इतिहास ऐसे बलिदानियों से भरा पड़ा है कि जिस समय उनको मृत्युवेदी पर प्राण-हरण के लिए लाया गया, उस समय उनके मुख पर जो आह्ल□ाद, जो तेज, जो मुसकान और जो प्रसन्नता देखी गई, वह काल के अनंत पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

प्रसन्नता—प्रसन्नता है तो जीवन है, जीवन का उजाला है। जीवन में जब भी विपदाओं के तूफान उठें, मन घबराए, हौसला पस्त होने लगे तो सहजता और प्रसन्नता का संतुलन बनाने का अभ्यास करें। सहजता और प्रसन्नता को धारण कर ऋषि-मुनि भी अजर-अमर हो गए। सिद्ध पुरुषों ने प्रसन्नता को एक समर्थ सिद्धि माना है।

प्राथमिकताएँ—मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी होने के नाते सदा इतने कार्य सोच सकता है, जितने वह कभी पूर्ण नहीं कर सकता। वह अपनी प्राथमिकताएँ तय करे। क्या पहले करना है, क्या बाद में और क्या कभी नहीं करना है, इसका निर्णय भलीभाँति सोच-विचारकर करे।

प्रेरक शक्ति—प्रत्येक असफलता के साथ एक ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है, जो सफलता को अधिक सुनिश्चित करती है। चलने के अपने प्रथम प्रयास में शिशु असफल रहता है, लेकिन प्रत्येक बार गिरने के साथ ही वह कुछ सीखता जाता है और समस्त असफलताओं से वह स्वयं को संतुलित करना व बिना गिरे चलना सीख जाता है। अत: सफल होने के लिए हमें असफलता को आवश्यक प्रेरक शक्ति के रूप में ही स्वीकार करना होगा। यदि हम

असफलता से भागने की कोशिश में जीवन से पलायन करने की कोशिश करते रहे तो हम सफलता से भी उतना ही दूर चले जाएँगे।

प्रेरणा— आप जिस भी व्यक्ति से प्रेरित हैं, उसका अनुसरण करें। इससे आपको जीवन की सही दिशा मिलेगी, साथ ही सफलता भी। जरूरी नहीं कि आपका आदर्श व्यक्ति बाहर का हो; कभी-कभी दोस्त, रिश्तेदार या पड़ोसी भी ऐसा काम कर जाते हैं कि हमारा दिल उन्हें आदर्श मानने लगता है।

प्रेरणा— जब आप किसी कार्य की शुरुआत करते हैं तो आपकी प्रेरणा का स्तर बहुत ऊपर होता है, लेकिन असफलता या तनाव से सामना होने पर यह कम हो सकता है। यह पता करें कि आपके लक्ष्य का कौन सा भाग आपको ज्यादा पसंद है, और स्वयं को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें याद करें। कभी-कभी कार्य से अवकाश लेकर खुद को समझने की कोशिश कीजिए। अपनी ताकत और उपलब्धियों को याद कीजिए और खुद पर गर्व महसूस करिए; ये सब आपको प्रेरणा देंगे।

प्रेरणा— प्रेरणा वह औषधि है, जो एक उत्प्रेरक की भाँति कार्य करती है। जब कोई व्यक्ति यह औषधि (प्रेरणा) ग्रहण करता है तो उसे लक्षित कार्य करने की धुन सवार हो जाती है और वह उस कार्य को ही अपना लक्ष्य बना लेता है। प्रेरणा ऐसी होनी चाहिए, जो हमें सही मार्ग दिखाए और वही हमें ग्रहण करनी चाहिए।

प्रेरणा— प्रेरणा वह चाबी होती है, जो हमें सफल बना सकती है, लेकिन केवल उन्हें, जो सफल होना चाहते हैं। प्रेरणा भी केवल वे ही व्यक्ति ग्रहण करते हैं, जो जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

प्रेरणा— मंद स्मृति से पीड़ित बच्चों पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि यदि उनको कलात्मक रुचि की ओर प्रेरित किया जाए तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास तीव्र गति से होता है। नई प्रेरणा ही उनके जीवन में मील का पत्थर साबित हो सकती है।

प्रेरणा— वैसे तो सभी लोग अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करते हैं, किंतु जब कोई व्यक्ति विशेष या कठिन कार्य करके अपनी विशेष क्षमता प्रस्तुत करता है तो वह क्षमता लोगों के लिए प्रेरणा बन जाती है। उस विशेष कार्य करनेवाले से भी यह पूछा जाता है कि आपको प्रेरणा कहाँ से मिली, क्योंकि तभी उसने औरों से हटकर कार्य किया। स्वाभाविक है कि उसने भी कहीं-न-कहीं से अलग करने की प्रेरणा पाई होगी अर्थात् किसी भी अच्छे-बुरे कार्य के पीछे अच्छी-बुरी प्रेरणा छिपी होती है।

प्रेरणा— सफल व्यक्ति बाकी लोगों से प्रेरणा तो लेते हैं, लेकिन वे उनके जैसे बनने की कोशिश नहीं करते। वे अपने सरल, सहज और मूल स्वभाव में बने हुए हमेशा कुछ-न-कुछ रचनात्मक करने की कोशिश करते हैं।

प्रेरणा— हम अपने चारों ओर दृष्टि डालें तो हमें ऐसे बहुत से कार्य दिखाई दे जाएँगे, जिनसे हमें किसी-न-किसी प्रकार की प्रेरणा मिलेगी। ये प्रेरणाएँ हमें जीवन में सफलता की ओर ले जाती हैं। गलत प्रेरणाएँ असफलता की ओर अग्रसर करती हैं।

प्रोत्साहन— प्रोत्साहन जीवन का ईंधन है, ऊर्जा है। हम कभी कुछ कर नहीं पाते हैं, यदि हम उसे करने के लिए प्रोत्साहित महसूस न करें। कभी-कभी प्रोत्साहन बाहरी होता है, लेकिन अत्यंत उचित प्रकार का प्रोत्साहन आंतरिक होता है, क्योंकि जब प्रोत्साहन अंदरूनी हो, तो आप वह काम अच्छे-से-अच्छे ढंग से करेंगे। अगर आप बड़े-बड़े काम बेहतर ढंग करना चाहते हैं, तो उसके लिए आपकी प्रेरणा अंदर से आनी चाहिए और एक बार वह अग्नि आपके अंदर प्रज्वलित हो गई तो फिर आपको कोई नहीं रोक पाएगा। आप अत्यधिक कर्मशील हो जाते हैं और स्वत: अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न उसमें लगा देते हैं।

फल—प्रत्येक विचार, प्रत्येक कर्म का फल अवश्य मिलता है—अच्छे का अ च्छा और बुरे का बुरा। यही प्रकृति का नियम है। इसमें देर हो सकती है, पर अँधेर नहीं। इसलिए अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो अच्छे विचार रखिए, सद्कर्म करिए और जरूरतमंदों की निस्स्वार्थ भाव से सहायता तथा सेवा करिए। मार्ग में आनेवाली कठिनाइयों, बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

फूल-सा चेहरा—जो व्यक्ति गुलाब की भाँति सुंदर व सर्वप्रिय बनना चाहते हैं, उनको चाहिए कि वे फूलों की तरह काँटों भरी जिंदगी में भी मुसकराने व विकसित होने की कला सीखें। असफलता के अवसरों पर यदि हम हाथ-पर-हाथ रखकर बैठ जाते हैं, तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमने फूलों से कुछ सीखा ही नहीं। उपवन में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को फूल अपनी मुसकान बाँटते हैं। अपनी वेदना को कभी व्यक्त नहीं करते। यही वजह है कि जब हम किसी प्रसन्नचित्त व्यक्ति को देखते हैं तो सहसा ही कह उठते हैं कि देखो, इसका चेहरा कैसा फूल-सा खिल रहा है?

बचाव—जिन लोगों के पास खाली समय होता है, वे हमेशा काम करनेवाले लोगों का समय बरबाद करते हैं। ऐसे लोगों से हमेशा बचकर रहना चाहिए। यदि आपके जीवन में इस समय ऐसे लोग हैं, तो वे आपको उतना सफल नहीं होने देंगे, जितना आप उनसे दूर रहकर सफल हो सकते हैं।

बदलाव—अगर आपको अकसर ऐसा लगता है कि सफलता आपके हाथ नहीं आ रही, तो शायद अब आपको अपनी कोशिशों में कुछ बदलाव लाने की जरूरत है।

बदलाव—अपने उद्देश्यों, अपने कार्यों और अपनी कमजोरियों की एक सूची तैयार कीजिए। थोड़े-थोड़े दिन बाद उनमें क्या बदलाव आया है, उसको परखते रहिए। थोड़े ही समय बाद आपको अपने व्यक्तित्व में एक सकारात्मक बदलाव आता दिखाई देगा।

बदलाव—जब किसी सकारात्मक लक्ष्य के लिए आप अपने अंदर परिवर्तन लाते हैं तो कुछ भी पाना असंभव नहीं होता। स्वयं को बदलने की कुंजी हर व्यक्ति के हाथ में होती है। ज्यादातर लोग समस्याएँ आने पर ही खुद में बदलाव लाते हैं। समस्या के पैदा होने से पहले ही अपने अंदर आवश्यक परिवर्तन लाना जरूरी होता है। किसी समस्या के उत्पन्न हो जाने के बाद दबाव में कुछ करने की बजाय यह एक बेहतर विकल्प है। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम खुद से किए गए वादों को पूरा करें। इन वादों को पूरा करने से हमें हमेशा लाभ मिलता है।

बदलाव—मानव जीवन की दिशा बदलने में कभी एक छोटी-सी बात भी अद्भुत प्रभाव दे जाती है।

बरताव—बुरा बरताव करनेवाला कितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो, वह उसकी किस्मत खराब कर देता है। ऐसे बुरे बरताव से न जाने कितने ही लोगों ने दुर्दिन देखे हैं।

बहाना—अपने आपसे झूठे बहाने बनना बंद करें। अगर आप हर काम के लिए बहाना बनाएँगे तो आपकी सफलता भी बहाना बनाती रहेगी और फिर आप अपनी सफलता के लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाएँगे।

बातचीत—बहस से कभी किसी मुद्दे का हल नहीं निकलता, जबकि सोच-समझकर बातचीत करने से सभी मुश्किलों का हल निकल सकता है।

बाधा—श्रेष्ठ एवं सफल लोग अपनी शक्ति पर ज्यादा ध्यान देते हैं और साथ दूसरों की शक्ति का भी ध्यान रखते हैं। उनका ध्यान इस बात पर सबसे ज्यादा होता है कि वे क्या कर सकते हैं, जबकि इस बात पर बहुत कम होता है कि वे क्या नहीं कर सकते हैं। वे असफलताओं को अपनी सफलता के रास्ते की बाधा नहीं बनने देते, लेकिन असफलताओं से कुछ-न-कुछ जरूर सीखते हैं। सफल इनसान अपना ज्यादातर समय अपनी कमजोरियों पर

व्यतीत नहीं करते, बल्कि वे ज्यादातर समय अपने प्रदर्शन को विकसित करने में लगाते हैं।

बाधाएँ— प्रतिभावान व्यक्ति की राह को बाधाएँ कुछ देर रोक तो सकती हैं, लेकिन सदैव के लिए उसे हतोत्साहित नहीं कर सकतीं।

बाधाएँ— बाधाएँ जंगली जानवर की तरह हैं। अगर आप उनके सामने आँख-में-आँख डालकर लड़ते रहेंगे और डरेंगे नहीं, तो निश्चित ही आप विजय पा लेंगे। बाधाओं और दूसरों की कटु आलोचनाओं से अपने मन को अशांत न होने दीजिए।

बाधाएँ— बाधाएँ हमें और निखारतीं तथा सँवारती हैं। अग्नि की तेज लपटों को सहकर ही सोना कुंदन बनता है। कुछ भी प्रयास न करने के बजाय प्रयास करके असफल हो जाना कहीं बेहतर है। कोई भी हार हमें यह नहीं बताती कि हममें योग्यता की कमी है। वह बताती है कि हमारे प्रयासों में कहीं-न-कहीं कोई कमी रही है, जिसे हम चाहें तो अपने प्रयासों द्वारा ठीक कर सकते हैं। हमारी सफलता के मार्ग में अवरोध बनकर जो बाधाएँ प्रकट होती हैं, उन्हें अपनी समझ-बूझ द्वारा हटाया जाना संभव है।

बाधाएँ— हमारी अधिकतर बाधाएँ पिघल जाएँगी, अगर उनके सामने दुबकने की बजाय हम उनसे निडरतापूर्वक निपटने का मानस बनाएँ।

बार-बार— मैं अपनी जिंदगी में बार-बार असफल हुआ हूँ और इसीलिए मैं सफल होता हूँ।

बिना विचारे काम— बिना विचारे काम करना जितना बुरा है, उतना ही बुरा उस पर बहुत समय तक विचार करते रहना है। विवेक के साथ फैसला करने की क्षमता का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अच्छे और बुरे का पता काम किए बिना कहाँ से चलेगा? जब तक कुछ करेंगे नहीं, तब तक क्या पता चलेगा कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है? हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहने से काम कैसे पूरा होगा? संसार कार्य क्षेत्र है। अकर्मण्य बन कर बैठने के लिए नहीं है।

बुद्धिमत्ता— यदि आप हालात बदल सकते हों तो लड़ते रहना अच्छा होता है, लेकिन जब हालात पर बस न चले, तथ्यों में बदलाव की स्थिति न हो तो उन्हें स्वीकार कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। यह संपूर्ण स्वास्थ्य और ज्ञान की पूँजी है।

बुरी आदतें— बुरी आदतों को उनकी प्राथमिकता अवस्था में ही कुचल देना चाहिए, क्योंकि जिस बुरी आदत से हम आज बच नहीं पा रहे हैं, वह कल निश्चित तौर पर और भी प्रभावी होकर उभरेगी और यह सिलसिला दिन-ब-दिन बढ़ता ही चला जाएगा। अंतत: लोग हमें अपमान व हिकारत की दृष्टि से देखेंगे और हम चाहकर भी सफल नहीं हो सकेंगे।

बेहतर काम— अभ्यास ही परिपूर्ण बनाता है। आप अपना काम जितने अच्छे तरीके से करेंगे, आप उसमें उतने ही कुशल होंगे और एक समय के बाद आपमें इतनी परिपूर्णता आ जाएगी कि जिस क्षेत्र में आप हैं, उसमें आपकी टक्कर का शायद ही कोई और होगा। जितने पैसे आपको मिलते हैं, उससे ज्यादा और बेहतर काम करने से, आपको बढ़ती आमदनी के नियम का फायदा मिलता है, जिसकी मदद से आगे चलकर आपको आपके काम से भी ज्यादा पैसा मिलने लग जाता है।

बेहतर प्रदर्शन— एक कदम आगे बढ़कर सही मानसिक वृत्ति से काम करनेवाले नौकरी खोजने में कभी समय नहीं गँवाते। वे नौकरी की तलाश में हाथ-पर-हाथ धरे बैठे नहीं रहते। निराशा आती है, जाती है। काम खराब हो या अच्छा, देश में शांति हो या युद्ध वे लोग वेतन से ज्यादा काम बेहतर प्रदर्शन के साथ करते रहते हैं ताकि उनकी

खपत हमेशा रहे। वे अपने लिए रोजगार सुनिश्चित कर लेते हैं।

बोलने की शैली—अधिकतर सफल व्यक्तियों के बोलने की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है। वे स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से बोलते हैं। ध्यान रहे कि आप जिस भाषा में बोलते हो, उस पर आपको पूरा अधिकार होना चाहिए। अपने उच्चारण पर अधिक ध्यान दें। वक्तृत्व-कला किसी भी अच्छे व्यक्तित्व का एक अनिवार्य गुण है।

बड़ी सोच—बड़ी सोच रखना सफलता प्राप्ति की एक अनिवार्य विशिष्टता है। बड़ी सोच तब पनपती है, जब आप अपने मन के चक्षुओं में उस बृहत लक्ष्य को देखते हैं, जो आपसे कहीं ज्यादा बड़ा होता है। बड़ी सोच रखना ऐसे सपनों को संजोना है, जिनको आप हकीकत में बदलने के लिए कार्य करते हैं।

भटकाव—आत्मनियंत्रण के अभाव में परिश्रम, योग्यता तथा शिक्षा-दीक्षा, सब व्यर्थ चले जाते हैं। जिन लोगों का मन नियंत्रित नहीं है, वे गुमराह होकर भटकते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति आज को तो कल के लिए टालते रहते हैं और अंतत: अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं।

भय—भय स्वाभाविक रूप से हमारे मनन अथवा चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता।

भय—मनुष्य का सबसे बड़ा और शक्तिशाली शत्रु है, भय। भय मनुष्य के मन से ही उत्पन्न होता है। भय एक ऐसा भयानक शत्रु है, जो मनुष्य की सभी शक्तियों को धूल में मिला देता है।

भय-त्याग—भय को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वह हमारे सामने उसी संकट को ला खड़ा करता है, जिससे हम भयभीत रहते हैं। भय हमारी संकट-निरोधक शक्ति को क्षीण करता है, उसकी कमर तोड़ देता है। हमें जिस चिंतन की आवश्यकता है, वह उसकी शक्ति को कमजोर कर देता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। भय स्वाभाविक रूप से हमारे मनन अथवा चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है।

भरोसा—कामयाब होने के लिए आपको अपनी क्षमता पर इस कदर भरोसा होना चाहिए कि आप जो एक बार सोच लें, उसे कर दिखाएँ। यही नहीं, आपको अपने अंदर अपने सहयोगियों पर विश्वास करने की आदत पैदा करनी होगी, फिर चाहे वे आपके अधिकारी हों या आप उनके अधिकारी हों।

भरोसा—सारी समस्याओं को हल करनेवाली कुंजी आपका अपना रवैया है। अपने आप में विश्वास करने की आपकी मानसिकता या स्वयं में विश्वास की कमी अनेक विफलताओं का कारण बनती है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मविश्वास या स्वाभिमान घट जाता है। स्वयं को उन सभी धारणाओं से बाहर निकालें, जो आपको उस स्थिति में पहुँचा देती हैं, जहाँ आपका अपने ऊपर से भरोसा उठ जाता है। इस मन:स्थिति के चलते आप कोई कोशिश करने से पहले ही हार मान लेंगे। अत: आपके लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि उन सभी विचारों को त्याग दें, जो आपको निरुत्साहित करते हैं। इसके बजाय दूसरी तरह से सोचें। अपने स्वाभिमान को आगे रखें। इससे आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

भरोसा—उन सभी विचारों को त्याग दें, जो आपको निरुत्साहित करते हैं। अपने स्वाभिमान को आगे रखें। स्वयं में विश्वास रखें और यह मानकर चलें कि आप अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे। आप जो कुछ भी करते हैं, उसमें विश्वास रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में सबसे जरूरी बात यह है कि किसी

दूसरे पर भरोसा करने से पहले अपने पर विश्वास करना शुरू करें।

भाग्य परिवर्तन—अपनी इच्छा को पूरा होते देखने तथा अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए किन्हीं चमत्कारों की जरूरत नहीं होती। हमें जिन साधनों की आवश्यकता पड़ती है, वे सब या तो हममें हैं या हमारे आस-पास मौजूद हैं। इन साधनों तथा उपायों को अमल में लाकर हम अपने जीवन तथा अपने भाग्य को बदल सकते हैं।

भाग्य—जो भाग्य के सहारे बैठ जाते हैं, उनका भाग्य भी उन्हीं के पास बैठ जाता है।

भाव-नियंत्रण—इनसान बने रहना वाँछनीय है। आपके अनियंत्रित व्यवहार से उत्पन्न घटना को लोग बहुधा भूल जाएँगे, लेकिन यह जानना उचित है कि भावनाओं और चिढ़न को किस तरह नियंत्रण में रखा जा सकता है? यह समझने की कोशिश अवश्य करें कि आप उग्र क्यों हो जाते हैं, आपको गुस्सा क्यों आता है, ताकि आप इन हालात से निपट सकें। हँसी-मजाक का सहारा लें। इससे आपको कठिन स्थिति से निपटने और घटनाक्रम को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद मिलेगी।

भ्रम—व्यर्थ का भ्रम मत पालो। मन में सदैव आत्मविश्वास रखो। सफलता अवश्य प्राप्त होगी। भ्रम और अंधविश्वास व्यर्थ का भय उत्पन्न करके मनुष्य स्वयं को कमजोर बना देते हैं।

मंजिल—अगर हम समय-समय पर इसकी जाँच करते रहें कि हम अपनी जिंदगी को कैसे चला रहे हैं, तो यह बुद्धिमानी की बात होगी। साथ ही, हमें खुद से ये सवाल पूछते रहना चाहिए कि हमारी जिंदगी कौन सा मोड़ ले रही है और क्या हमें कुछ फेर-बदल करने की जरूरत है? अपने मन में यह बात साफ-साफ रखना बहुत जरूरी है कि हम क्या हासिल करना चाहते हैं और क्यों? अगर हमारे मन में अपनी मंजिल एकदम साफ दिखती है तो हम इतनी जल्दी हार मानने को तैयार नहीं होंगे।

मजबूत इरादा—जो लोग अपने इरादों में मजूबती को बरकरार रखते हैं, निश्चित रूप से वे कामयाब रहते हैं। जो लोग अपने उद्देश्यों के प्रति सदैव जागरूक एवं प्रतिबद्ध रहते हैं, वे धीरे-धीरे अपने इरादों में मजबूती हासिल करते चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि कामयाब लोगों के लिए हालात हमेशा उनके मुताबिक ही रहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि बिल्कुल उल्टे हालातों में लोगों ने संघर्ष करते हुए अपनी मंजिलें तय की हैं। मुश्किलों से घबराकर पीछे लौट जानेवालों के हिस्से में कामयाबी कभी नहीं आती।

मजबूत पक्ष—अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोष देना छोड़ें। हमारा अपना विलंब इसका कारण हो सकता है। जिस वक्त आप अपने काम के प्रति जवाबदेह हो जाते हैं, आप नेतृत्व की राह पर होते हैं। मजबूत पक्ष उभारें। अपने मजबूत पक्षों और क्षमताओं को जानें। अपने लक्ष्य बड़े बनाएँ। इसका नतीजा होगा कि आप उन्हें हासिल करने की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाएँगे और अपनी सीमाओं का विस्तार करेंगे।

मजबूती—मनुष्य जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, उसके कर्तव्य बढ़ते जाते हैं। वह जितनी खूबी से उनका पालन करता है, उतना ही वह अच्छा नागरिक बनता है और समाज को सुखी बनाता है। हर आदमी के लिए ऊँचाई पर स्थान है, लेकिन वहाँ पहुँचता वही है, जिसके अंतर में आत्मविश्वास होता है, हाथ-पैरों में ताकत होती है, निगाह में ऊँचाई होती है और हृदय में सबके लिए प्रेम और सहानुभूति का सागर उमड़ता रहता है। ऐसा आदमी जानता है कि उसके ऊपर सदा निर्मल आकाश है। अगर कभी बादल घिर भी आते हैं तो वे अधिक समय नहीं टिकते। अपने लक्ष्य पर आँख रखकर मजबूती से बढ़े चलना इनसान का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

मजबूती—मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित रखता है। इस तरह के व्यक्ति न केवल स्वयं को किसी घटना का शिकार होने से बचाते हैं, बल्कि उन समस्याओं पर विजय भी

प्राप्त करते हैं।

मदद—आप किसी से मदद चाहते हैं, तो यह गाँठ बाँध लें कि आपको उस व्यक्ति को पाना है, सही मायने में उसे उतना फायदा पहुँचाना है, जितना कि आप खुद उससे चाहते हैं। यदि वह पहली बार में ध्यान नहीं देता, तो उसका दोगुना फायदा कराएँ और ऐसा तब तक करते जाएँ, जब तक कि शर्म से खुद न कह दे कि उसे अब और नहीं चाहिए और वह आपकी मदद न कर दे।

मदद—आप दूसरों का सहयोग तभी हासिल कर सकते हैं, जब पहले खुद उनसे सहयोग करें। कई बार ऐसा हो सकता है और ऐसा होगा भी कि आप जिस व्यक्ति की मदद करें, वह कभी आपकी मदद न करे, लेकिन यह बात दिमाग में रखिए। एक व्यक्ति इसे नजरअंदाज कर दे, लेकिन कोई और आपकी मदद पर गौर करेगा और न्याय करने की इच्छा से या शायद किसी स्वार्थवश, आपकी ऐसी मदद करेगा, जिसके आप हकदार हैं।

मधुर वाणी—मनुष्य को स्वयं को इतना मृदुभाषी बनाना चाहिए, जिससे उसकी वाणी से सभी मधुरता प्राप्त कर सकें। वाणी में मधुरता होगी तो मनुष्य की सफलता के मार्ग की बाधाएँ स्वत: समाप्त होती जाएँगी। स्पष्ट एवं मधुर वाणी सफलता के लिए उत्तम गुण है, जिसके सहारे मनुष्य अपनी बाधाओं को आसानी से जीत सकता है।

मन पर नियंत्रण—व्यक्ति को व्यर्थ के छल, कपट, भ्रम में नहीं फँसना चाहिए और एकाग्रचित्त होकर अपने कर्तव्य पथ पर बढ़ना चाहिए। व्यक्ति का हृदय, मन बहुत चंचल होता है और तनिक में ही व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर सकता है। वह उसके चित्त को भंग कर सकता है। मन को अपने वश में रखना चाहिए, जिससे वह इधर न भटके, न ही व्यक्ति उसके अनुसार इधर-उधर भटके। व्यक्ति का मन वाहन के गतियंत्र की भाँति कार्य करता है। उसे जितनी गति मिली, वह उतनी ही गति से उसी ओर खिंच जाता है; जिस ओर वह जाना चाहता है, बढ़ जाता है। अब यह व्यक्ति की चित्त-बुद्धि का कार्य है कि वह कितनी गति देना चाहती है।

मन लगाकर काम—जीवन में यदि आप खुशहाल एवं धनी बने रहना चाहते हैं तो इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि आप जो भी कार्य करें, मन लगाकर दीवानगी से करें। उस कार्य के प्रति यदि आपके अंदर जुनून होगा तो निश्चित रूप से आप सफल होंगे एवं आपको एक आत्मिक शांति प्राप्त होगी। मन लगाकर कार्य करने से आपको वह कार्य बार-बार नहीं करना पड़ेगा, अर्थात् आपकी सफलता सुनिश्चित है।

मन-जीवन—सफलता सबसे पहले आपके मन में घटित होती है। उसके बाद ही वह जीवन में उतरती है।

मन-संदेह—भय और चिंता की भावना हमारे अचेतन मन को कार्य करने से रोक देती है। जिस कार्य को हम पूर्ण करना चाहते हैं, उसके संबंध में हमारी यह चिंता कि यह कार्य पूर्ण होगा या नहीं, हमारे उस कार्य के पूर्ण होने में बाधक बन जाया करती है, क्योंकि जिस समय मन में संदेह बस जाता है, उस समय उससे कोई भी रचनात्मक कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सकता।

मनपसंद काम—अपना मनपसंद काम करने की हिम्मत करना थोड़ा अटपटा और उत्तेजनापूर्ण कार्य है, लेकिन दृढ़ विश्वास, सूझ-बूझ, थोड़े से प्रोत्साहन तथा भावनात्मक सहारा पाकर कोई भी सपना वास्तविकता में बदला जा सकता है।

मनुष्य—मनुष्य की दशा उस घड़ी के समान है, जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाए तो जल्दी बिगड़ जाती है।

मनोबल—हार में भी अपना मनोबल ऊँचा रखें और विजयी होने पर अधिक शिष्टतापूर्ण व्यवहार करें। अपनी समस्याओं को रचनात्मक ढंग से हल करें। इनके कारण मित्रों के साथ अपने संबंधों को बिगड़ने न दें तथा अपनी

बुरी आदतों की सूची बनाएँ और उनसे छुटकारा पाने की कोशिश करें।

मनोवृत्ति एवं धारणा— कोई सफल होता है या असफल, यह पूरी तरह व्यक्ति की मनोवृत्ति एवं उसकी धारणाओं पर निर्भर करता है। जो एकाकी सफलता को ही पाना चाहते हैं, वे प्राय: स्वयं को एक असफल व्यक्ति मान बैठते हैं। दु:ख हताशा, निराशा, हीनता उनकी नियति बन जाती है। उनका जीवन किसी अनजाने अँधेरे में खोता चला जाता है।

मनोवृत्ति एवं धारणा— सफलता के लिए उचित मनोवृत्ति का होना आवश्यक है, क्योंकि जैसी मनोवृत्ति होगी, वैसा ही व्यवहार होगा। जैसा व्यवहार होगा, वैसे ही कार्य होंगे। जैसे कार्य होंगे, परिणाम भी उसी के अनुकूल होंगे।

मनोवृत्ति एवं धारणा— हमारे मन के भाव ही हमारे जीवन की दिशा तय करते हैं। हम जीवन में कितना ऊपर जाएँगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी मनोवृत्ति किस तरह की है? हमारे जीवन का हरेक पक्ष हमारे मन द्वारा ही नियंत्रित होता है। हमारी सफलता-असफलता, सब मनोवृत्ति पर निर्भर करती है।

मनोवृत्ति— जीवन इतना जटिल है कि ऊर्जा अकसर फिजूल के कार्यों में बरबाद हो जाती है। यही वजह है कि जो लोग सफल होते हैं, वे ठोस प्रयास करते हैं और एकाग्रता के साथ कोशिश करने की आदत डाल लेते हैं। जीवन की आपात-स्थितियाँ प्राय: लोगों को सड़क पर ला देती हैं, जहाँ उन्हें मजबूरन अपना रास्ता चुनना होता है। एक सड़क पर आस्था और दूसरी सड़क पर भय चिह्नि□त किया हुआ रहता है। वह क्या चीज है, जो ज्यादातर लोगों को भय-मार्ग की ओर ले जाती है, इसका चुनाव व्यक्ति की मानसिक मनोवृत्ति पर निर्भर है।

महानता— महान् वही है, जो न किसी का शासन मानता है और न किसी पर शासन करता है। महानता की आकांक्षा करने से आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है। वे जाग्रत् होती हैं।

महानता— लोगों की अच्छी आदतों को, उनकी महानता को देखने की कोशिश करें। दूसरों की कमियों को ढूँढ़ना बंद करें। अपने दिल पर हाथ रखें और अपनी कमियों के बारे में जानें। अपने दिल में आपको बहुत सी नकारात्मकता और कमियाँ मिलेंगी।

महान् नेता— सफल इनसान उदार ही होते हैं। उनमें अपने और अपनी टीम में होनेवाले बदलाव को देखने की चाह होती है। जब उन्हें अपने लक्ष्य को हासिल करने का कोई और अच्छा मार्ग मिलता है तो वे उन रास्तों पर चलने से कतई नहीं डरते और नए रास्तों पर चलते हुए, नए विचारों का निर्माण करते जाते हैं और दूसरों को उन रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। श्रेष्ठ और सफल इनसान महान् नेता भी होते हैं, क्योंकि वे अपने साथ अपनी पूरी टीम को भी लेकर चलते हैं।

महान्— जो कभी भी कहीं असफल नहीं हुआ, वह आदमी महान् नहीं हो सकता।

महान्— महान् बनने की कोशिश न करें। 'मुझे क्या मिलेगा या मेरा क्या होगा', इसकी चिंता छोड़कर अगर अपने लक्ष्य पर ध्यान देंगे और उसका दायरा बढ़ाएँगे, तो आप खुद एक असाधारण व्यक्ति बन जाएँगे।

महान्— लक्ष्य हम सारी जिंदगी खुद को दूसरे के चश्मे से देखते हैं और कोशिश सभी की यही रहती है कि हम जो नहीं हैं, वो बन जाएँ और लोग हमें पसंद करें। अपनी ऊर्जा को इन फालतू के कामों पर खर्च करना छोड़िए। आप जैसे हैं, बहुत अच्छे हैं। अपनी अच्छाइयों को पहचानिए और अगर आपको विश्वास न हो तो आप जितने भी महान् लोगों को जानते हैं, सबके जीवन को देखिए; आपको उनमें से कोई भी ऐसा नहीं मिलेगा, जिसने महान् बनने की कोशिश की हो। उनके लक्ष्य महान् थे, लक्ष्य को पाने की भूख भी प्रबल थी।

मानसिक क्षमता— मानसिक क्षमताओं का सही ढंग से उपयोग कर, औसत आदमी भी मेधावी व बुद्धिमान

व्यक्ति की तरह सोच सकता है। हम अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में करते हैं। अपनी सोच में मामूली-सा बदलाव लाकर कोई भी व्यक्ति इसका भरपूर लाभ उठा सकता है।

मानसिकता—व्यक्ति की वास्तविक सुंदरता उसके शरीर में नहीं, अपितु उसके गुणों व कार्यों में निहित होती है। व्यक्ति की योग्यता व उपलब्धियों का आकलन उसकी मानसिकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। इस कारण हमें मानसिक सोच में अभिवृद्धि की आवश्यकता है। सकारात्मक सोच को अपनाकर मानसिक असंतोष से छुटकारा पाया जा सकता है।

मान्यता—जिंदगी समझौते का दूसरा नाम है। जो हम सोचते हैं या जो चीज पाना चाहते हैं, वह हमेशा हमें नहीं मिलती। कभी-कभी लोग किसी चीज को पाने की योग्यता रखते हैं, लेकिन अपनी योग्यता को कम करके आँकते हैं। द्वेषपूर्ण प्रतियोगिता से बचने का सबसे अच्छा तरीका है, अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करना। कोई माने या न माने आपकी सफलता आपको जरूर मान्यता देगी। दूसरों द्वारा की गई प्रशंसा अथवा निंदा में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। सफल होने के लिए आपको लोगों के प्रमाण-पत्र पाने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए सदा आगे बढ़ते रहें, सफलता जरूर मिलेगी।

मार्ग-निर्माण—सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपना मार्ग स्वयं निर्माण करते हैं और उस पर जनसमूह को ले जाते हैं। वो किसी की नकल नहीं करते हैं।

मिथ्याभिमान—अपनी क्षमताओं के बारे में कभी अहंकार न करें। अहंकार के कारण आप भूल जाते हैं कि आप एक इनसान हैं और यह भी कि कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है। मिथ्याभिमान आपको भुला देता है कि आप भी भूल करते हैं और यह भी कि आपमें कुछ दोष हैं, जिन्हें दूर करना जरूरी है। इसे चाहे शुद्धीकरण प्रक्रिया कहें या आत्म-चिंतन कहें या आत्म-सुधार कहें, जो भी नाम देना चाहें दे सकते हैं, लेकिन इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, आपको अपने अंदर झाँकना होगा और देखना होगा कि आपकी क्या-क्या कमजोरियाँ हैं और किन दोषों से पीछा छुड़ाना है। अपनी कमजोरी को अपनी ताकत में बदलने का प्रयास करें और याद रखें कि अपने दोषों व कमजोरियों को पहचानना अपनी सामर्थ्य, अपनी शक्ति का दावा करने की ओर पहला बड़ा कदम साबित होता है।

मीठी बोली—मनुष्य जिस तरह की वाणी का व्यवहार करता है, उसकी तरह के परिणाम उसे भोगने पड़ते हैं। जिस प्रकार मधुर वाणी के प्रभाव से धन तथा मित्र आदि बनते चले जाते हैं, उसी प्रकार निर्मित होनेवाले परिवेश में तथा हमें प्राप्त होनेवाले समादर और सम्मान में वाणी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वाणी जब अपने नकारात्मक रूप में प्रकट होती है तो जीत हार में बदल जाया करती है। मित्रों की पंक्ति में खड़े लोग शत्रु हो जाते हैं और हमारे समस्त सुखों पर मनहूसियत तथा दु:खों के काले बादल मँडराने लगते हैं।

मीठी बोली—समाज में वही लोग आदर तथा सत्कार के अधिकारी होते हैं, जिनके होंठों पर मधुर मुसकान तथा मुँह में मीठे बोल होते हैं। मीठे बोल का जादू अपनी अलग बिसात रखता है। यह सिर चढ़कर बोलता है, दिल जीत लेता है तथा सभी को प्रेम करने की सीख देता है। यह सुनिश्चित है कि हम जब भी मिठास भरी जुबान में बात करते हैं तो शुभ ही बोलते हैं, जबकि कटु वचन सदैव दूसरे के अहित तथा अशुभ के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

मीठी बोली—हमसे जहाँ तक संभव हो सके, अपने दो मीठे बोलों द्वारा दूसरों को राहत पहुँचाने का ध्येय होना चाहिए। कटु वचन बोलकर कभी भी किसी के मन को चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। ऐसा करके हम दूसरों को तो आघात पहुँचाते ही हैं, बाद में कटु वचनों के संताप से हमारी आत्मा भी संतप्त होती है। कटु वाणी तथा कटु व्यवहार का प्रयोग करनेवाले प्रयत्न करने पर भी दूसरों को अपना नहीं बना सकते। मृदु वाणी और मृदु व्यवहार का

चुंबक लोहे को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

मीठी बोली—हमारे व्यक्तित्व की छाप हमारी वाणी के माध्यम से औरों के मन, मस्तिष्क तथा हृदय पटल पर अंकित हो जाती है। बहुधा प्रभावशाली लोगों की वाणी दूसरों के जीवन का संबल बन जाती है। एक तरह से समस्त कार्य-व्यवहार के मूल में वाणी का प्रभाव निहित रहता है। वाणी के बिना व्यवहार कठिन है। वाणी हमारे समूचे व्यक्तित्व तथा कृतित्व को तो अभिव्यक्त करती ही है, हमें अपनी अलग मौलिक पहचान भी प्रदान करती है। यही वजह है कि प्रिय तथा हितकारी वचनों को वाणी के तप की संज्ञा दी गई है।

मुकाबला—अपने मन से विचारों को कार्य में शीघ्र परिणत करें। विचारों के अनुसार कार्य न किया जाए, तो वे विचार केवल स्वप्न मात्र हैं। मुकाबला और मुठभेड़ करने से न घबराएँ। काम किए जाएँ। मुकाबला आखिर मनुष्य ही से तो है, फिर डरने की कौन सी बात है?

मुकाबला—दुनिया में जो आपका स्थान है, उसे प्राप्त करो। कठिनाई के साथ वीरतापूर्वक लड़ो। हार को बहादुरी के साथ सहन करो। वीर पुरुष का स्वभाव उसके निकटवर्ती लोगों पर जादू का-सा प्रभाव डालता है। कोई भी महान् कार्य उन व्यक्तियों द्वारा संपन्न नहीं हो सकता, जो उस कार्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

मुकाबला—सफल लोग अपने निरंतर विश्वास से जीतते हैं, लेकिन वे असफलताओं का मुकाबला भी उसी विश्वास से करते हैं। सफलता के लिए विश्वास पैदा कीजिए। असफल होने पर भी उस विश्वास को कायम रखिए। सफल व्यक्ति सकारात्मक ढंग से प्रशंसा करते हैं और हँसी-मजाक पर बुरा नहीं मानते। वे उत्साह फैलाते हैं। उनकी सकारात्मकता चारों तरफ फैलती है और उसकी खुशबू हर जगह बिखरती रहती है।

मुश्किलें—जहाँ दुनिया में लोग सबसे सरल, तेज और आसान रास्ता अपनाकर सफल बनना चाहते हैं, वहीं आपको मुश्किलों में रास्ता बनाकर सफल होने की कोशिश करनी चाहिए। मुश्किलों से दूर भागकर आप अपनी सफलता को खुद से और भी दूर करते चले जाते हैं। आपको सफलता के रास्ते में आनेवाली मुश्किलों का डटकर सामना करना चाहिए। आँख-से-आँख मिलाकर आनेवाली मुश्किलों का सामना करना चाहिए और हमेशा यही सोचना चाहिए कि आप कोई भी मुश्किल भरा काम कर सकते हैं।

मुश्किलें—सफल इनसानों में मुश्किलों को स्वीकारने की चाह होती है। मुश्किलों का वे आसानी से सामना करते हैं और उनके कुछ सीखकर ही आगे बढ़ते हैं। वे खुद ही अपने आपको प्रेरित करते हैं, खुद ही अवसरों का निर्माण करते हैं और हमेशा नए अवसरों की खोज में लगे रहते हैं। शुरू से ही उनमें कुछ नया, कुछ अलग करने की चाह होती है। वे अच्छी तरह से अपनी जवाबदेहियों को समझकर उन्हें बखूबी निभाते हैं और अपने कॅरियर में आगे बढ़ने के लिए यह उन्हें काफी मददगार साबित होता है।

मुसकान—मुसकराहट ऐसी क्रिया है, जो सदैव सकारात्मक प्रतिक्रिया लाती है। मुसकान को अपने व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष बनाने वाले लोग जिंदगी में ज्यादा सुखी, सफल तथा प्रसन्नचित्त होते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिक लोकप्रिय व प्रभावशाली भी होते हैं, उन लोगों के मुकाबले, जो अपने चेहरे पर मनहूसियत का नकाब ओढ़े रहते हैं। खुशमिजाज, जिंदादिल व हँसमुख लोग सभी के प्यारे होते हैं। उनसे हर कोई अपना संपर्क तथा संबंध बनाना या बढ़ाना चाहता है, जबकि बदमिजाज तथा क्रोधी स्वभाव के लोगों से सब दूर भागते हैं, यहाँ तक कि उनके अपने खास व सगे भी।

मूलमंत्र—अपने को जानना और अंतर में बसे ईश्वर के रूप को पहचानना, यही सफल जीवन का मूलमंत्र है।

मेहनत—अगर आप मेहनत से घबराएँगे तो समझिए कि सफलता आपसे दूर चली जाएगी।

मेहनत— अपना भाग्य बदलने के लिए सभी लोग लालायित रहते हैं और तुरंत परिणाम भी चाहते हैं, परंतु अधिकांश लोग सफलता के लिए मेहनत करना नहीं चाहते। उन्हें कुछ हासिल नहीं हो सकता।

मेहनत— आपको अपनी उपलब्धियों या सफलताओं पर बहस करने की जरूरत नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को घटाता है। अपनी सफलताओं को उचित ठहराने की बजाय अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपने अनुभव और क्षमताओं को सही दिशा में बढ़ाएँ। हमेशा यह याद रखें कि हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होती है। इसके लिए किसी दूसरे का सहयोग काम नहीं आता। यदि कोई दूसरा व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने में असफल रहता है तो यह जरूरी नहीं कि उस लक्ष्य को पाने में आप भी असफल हो जाएँगे। जरूरी है कि आप लक्ष्य को पाने के लिए उससे कड़ी मेहनत करें और यह भूल जाएँ कि दूसरों को किस तरह कि समस्या का सामना करना पड़ा?

मेहनत— भाग्य बदलकर मिली सफलता के पीछे जो मेहनत, लगन, आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय छिपा होता है, वह कुछ गिने-चुने लोगों में ही पाया जाता है। और जिनमें ये गुण विद्यमान होते हैं, उन्हें सफलता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। आज बहुत से लोग महान् तो बनना चाहते हैं, लेकिन कड़ी मेहनत नहीं करना चाहते। उनका महान् बनना संदिग्ध होता है।

मेहनत— लोगों में आमतौर पर यह आदत होती है कि जितनी कम मेहनत से काम चल जाए। उतना ही काम करते हैं। आप इन लोगों पर करीब से गौर करेंगे तो पाएँगे कि ये लोग कुछ समय के लिए तो अपना काम चला लेते हैं, लेकिन इसके सिवाय इन्हें और कुछ नहीं मिलता। जितना पाते हैं, उससे ज्यादा काम करने की वजह से आप अपनी ओर लोगों का ध्यान सकारात्मक तरीके से खींचते हैं और वह दिन दूर नहीं होता, जब आपको आपके काम के लिए आकर्षक मौके मिलने लगते हैं, आपकी सेवाओं की माँग लगातार बनी रहेगी।

मौका— असफलता फिर से अधिक सूझ-बूझ के साथ कार्य आरंभ करने का एक मौका मात्र है।

मौका— कोई बात परेशान कर रही है तो मुसकराएँ और खुद को उसका मुकाबला करने के लिए तैयार करें। देखिए, हर पल नई शुरुआत और नया अंत है। दूसरा मौका मिलेगा अगले ही पल। बस, इसे अच्छा बनाने की जरूरत है। और ऐसा न किया तो कुछ यूँ होगा कि जब दाँत थे तब चने नहीं थे, अब चने हैं पर दाँत नहीं।

मौका— बहुत से व्यक्ति किसी खास अवसर की प्रतीक्षा किया करते हैं। वे अकसर कहा करते हैं, 'मुझको मौका मिलने दो।' साधारण अवसरों को वे उपयोगी नहीं समझते। उन्हें यह ज्ञात नहीं कि कोई भी अवसर छोटा या बड़ा नहीं होता। छोटे-छोटे अवसर को भी व्यक्ति अपने बुद्धि-चातुर्य से महत्त्वपूर्ण बना सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि आप छोटे अवसर को भी हाथ से न जाने दें। कई बार छोटे-छोटे अवसर ही व्यक्ति की बहुत बड़ी उपलब्धि का कारण बन जाते हैं।

मौन— जीवन की विभिन्न समस्याओं में मौन का प्रयोग बहुत कारगर सिद्ध होता है। मौन मन को एकाग्र करता है। इसके प्रयोग से अंतर्मन में स्थित सत्य और विवेक के उन आदर्शों को अपनाने में सहायता मिलती है, जो शब्दों के कोलाहल में अमूमन दब से जाते हैं।

मौलिकता— मौलिकता मनुष्य के अंदर होती है। यह हर व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत रचना होती है। इसलिए यदि आप अपने जीवन को सफलताओं से समृद्ध बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको मौलिक बनना पड़ेगा।

योग्यता व शक्ति— अपने सपने को जीवंत बनाने के लिए इसके आत्मीय पहलुओं का ध्यान रखें। अपनी योग्यता तथा शक्ति को पहचानें। यदि कोई आपकी सफलता से जलता है या क्रोधित होता है तो होने दीजिए, क्योंकि यह

एक स्वाभाविक मानवीय प्रवृति है। इस तरह के लोग जो करना चाहते हैं, उन्हें करने दीजिए। ऐसे लोग दूसरों की गलतियाँ निकालने या गप हाँकने में समय बरबाद करने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते।

योग्यता-विस्तार—कठिन कार्य को पहले करने का प्रयास करें। अपनी योग्यता को निरंतर विकसित करें। सोच-समझकर बोलें, क्योंकि वार्त्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वयं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करें। समय की पाबंदी और उसका सदुपयोग जीवन में सफलता-प्राप्ति का सशक्त माध्यम है।

योजना—अगर आप सफल होने के लिए योजना नहीं बना रहे हो, तो इस बात की संभावना अधिक है कि आप असफल होने की योजना बना रहे हैं। सबसे पहले आपको यह स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि आपको करना क्या है? आप अपना लक्ष्य चुनने में सोच-विचार कीजिए और एक बार आपने यह निर्धारित कर लिया कि आपको करना क्या है, तो फिर उसे पूरा कैसे करना है, इसके लिए योजना बनाइए।

योजना—असफलता आपको महान् कार्यों के लिए तैयार करने की प्रकृति की योजना है।

योजना—आपका काम है कि आप जीवन में सफल हों। कैसे? इसका जवाब आपको खुद देना है, लेकिन मुख्य रूप से आपको इन रास्तों पर चलना है—एक निश्चित लक्ष्य को चुनें और उसके लिए एक निश्चित योजना बनाएँ। पहल करंम और अपनी योजनाओं को अमल में लाना शुरू करें। अपनी पहल को अपने भरोसे और क्षमता के बल पर आगे बढ़ाते हुए अपनी योजना को सफलतापूर्वक पूरा करें।

योजना—उठो, अपने जीवन की योजना बनाओ, ताकि तुम्हारी सोई हुई महान् प्रतिभा और शक्ति, जो अब तक व्यर्थ पड़ी हुई है, जाग उठे।

योजना—किसी भी कार्य को करने में अड़चनें आती हैं और योजना बनाकर चलने से उन अड़चनों को आप तुरंत हल कर सकते हैं। इसके साथ-साथ योजना आपको घबराने नहीं देती, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होने देती।

योजना—कुछ लोग आँखें बंद करके काम करने में लगे रहते हैं। वे योजना नहीं बनाते कि काम कब खत्म होगा? वे खुद को ज्यादा समझदार समझते हैं, इसलिए भविष्य को मुट्ठी में कैद करने की सोचते हैं। अगर कोई परियोजना उनका साथी दो घंटे में पूरी करता है तो वे सोचते हैं कि इसे तो मैं एक घंटे में ही कर सकता था, जबकि वास्तविकता यह नहीं होती। जीवन में योजना निर्माण को महत्त्व दें।

योजना—जीवन के किसी भी क्षेत्र में योजना के साथ चलने व उसका सदुपयोग करनेवाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँच सकता है। योजनाबद्ध तरीके से शुरू किया गया कार्य समय से पूरा होता है और अपेक्षित परिणाम देता है। इसलिए समय के महत्त्व को समझें।

योजना—जीवन में कोई भी कार्य अचानक या संयोग से नहीं होते और अगर ऐसा हो भी जाता है तो ऐसा काम स्थायी नहीं होता। आपके वही कार्य आपका जिंदगी भर साथ देते हैं, जिनको आपने सोच-समझकर और एक योजना बनाकर किया हो। अत: संयोग में नहीं, बल्कि अच्छी योजना में विश्वास रखिए।

योजना—बिना कार्य योजना के दृढ़ संकल्प सिर्फ एक मानसिक क्रिया बनकर रह जाता है और यथार्थ में नहीं बदल पाता। जीवन में किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए उसकी सही और पूरी कार्य-योजना पहले से तैयार रखना बहुत जरूरी है।

योजना—योजना बनाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले एक समय सारणी बनाएँ कि कब कितना समय आप दे सकते हैं और कब कौन सा काम आप करेंगे? इससे आपके काम एक-दूसरे के आड़े नहीं आएँगे और आप सभी

चीजों के साथ न्याय कर पाएँगे। साथ ही, अपने लक्ष्य को भी उसमें अंकित करें और उसी के हिसाब से योजना बनाएँ। अगर टीम में काम कर रहे हैं तो सभी के समय, लक्ष्य और काम पहले से तय करें और समय-समय पर उनका अवलोकन करते रहें।

योजना— सफल लोग अपने दिन की योजना दिन की शुरुआत के साथ ही बना लेते हैं कि किस काम को प्राथमिकता देनी है? इसलिए वे लोग जल्दी उठते हैं। किसी भी मीटिंग में देर से नहीं जाते। समय की यही पाबंदी उन्हें बाकी लोगों से अलग करती है।

योजना— सिर्फ सोचने और योजना बनाने मात्र से ही लक्ष्य नहीं पाया जा सकता। उसके लिए परिश्रम करना पड़ता है, वह भी कठिन।

योजनाबद्धता— अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें, क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन निवास करता है। योजनाबद्ध रूप से अपने कार्य को अनजाम दें। समय बिल्कुल व्यर्थ न गवाएँ। अनावश्यक और निरर्थक बातों को नजरअंदाज करके अपने उद्देश्य पर नजर रखें। चिंताओं में समय व्यर्थ नष्ट न करें।

रचना— कोई भी रचना परिश्रम और धैर्य माँगती है, जबकि विनाश के लिए न श्रम की आवश्यकता है, न धैर्य की।

रचनात्मक कार्य— खाली समय को किसी रचनात्मक कार्य में लगाएँ। जीवन बहुमूल्य है, प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करें। सोचने में अपना बहुमूल्य समय व्यतीत न करें। स्वयं को प्रेरित करें।

रचनात्मक सोच— अपनी शक्ति को एक ही दिशा में केंद्रित करके अपनी पूरी प्रतिभा के साथ जब व्यक्ति किसी कार्य को करता है तो निश्चित ही उसके परिणाम अचरज भरे होते हैं। ऐसे अनेक लोग हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कभी स्कूल का मुँह तक नहीं देखा। उन लोगों पर आज सभ्य व शिक्षित समाज के लोग शोध करने में जुटे हैं। यह सब कैसे संभव हुआ? यह उच्च स्तरीय रचनात्मक सोच का प्रतिफल है। यह सोच का वह स्तर है, जो किसी भी साधारण कार्य को असाधारण की श्रेणी में ला खड़ा करता है।

रचनात्मक सोच— जिन इच्छाओं को हम पूरी होते देखना चाहते हैं, उनके लिए हमें सौ प्रतिशत क्षमताओं के उपयोग का कमाल अपने व्यक्तित्व में पैदा करना चाहिए। तब कोई ऐसा कारण नहीं कि जो आपने सोचा हो, वह पूरा न हो। देर-सवेर आप अपने सपनों को सच कर ही जाएँगे। रचनात्मक सोच किसी भी कार्य को करने का नया सुधारात्मक तरीका खोजना है। सभी प्रकार की सफलताओं का परिणाम चाहे वह घर पर हों या कार्यक्षेत्र में या समाज में, वे सिर्फ इस बात पर निर्भर करती हैं कि कार्य को किस तरह से बेहतर किया जाए और यह सबकुछ संभव तभी होगा, जब आप अपनी रचनात्मक सोच की क्षमता में सुधार करेंगे एवं मजबूती लाएँगे।

रचनात्मक-क्षमता— प्रशिक्षित व रचनाशील मस्तिष्क का साथ भाग्य भी देता है। रचनात्मक क्षमता वाले व्यक्ति भीड़-भाड़ तथा प्रतिस्पर्धा से परिपूर्ण माहौल में सबसे अलग, सबसे जुदा दिखाई देते हैं।

रचनात्मकता— अपने भविष्य का निर्णय करनेवाली सामग्री आपको कहीं बाहर से नहीं जुटानी पड़ती, बल्कि वह तो आपके भीतर ही होती है। आपको करना केवल यह होता है कि उस भीतर की सामग्री का सही-सही उपयोग करना सीख लें। आप अपनी रचनात्मकता की लौ को कभी बुझने मत दीजिए। आप अपनी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का जिस मात्रा में उपयोग करेंगे, उसी अनुपात में आपके काम में पूर्णता आएगी।

रचनात्मकता— जिन लोगों के व्यक्तित्व में रचनात्मकता की चिंगारी सुलग रही होती है, वे प्रत्येक कार्य अच्छी तरह से करते हैं। ऐसा करके उन्हें वास्तव में आनंद की अनुभूति होती है। यह परिस्थिति कार्य की गुणवत्ता के

दृष्टिकोण से एक आदर्श अवस्था कही जा सकती है।

रचनात्मकता— जीवन के विविध उद्देश्यों में जो लोग असफल रहे हैं, उनमें उन्हीं लोगों की अधिकता है, जिनका मन नकारात्मक भावों से भरा है और विजयी व्यक्तियों में वही लोग हैं, जो रचनात्मक और सकारात्मक शक्तियों से ओत-प्रोत हैं। उल्लास, उत्साह, कर्मठता, परिश्रम तथा साहस से युक्त मानसिक प्रवृत्तियाँ मनुष्य की सर्वाधिक सुरक्षापूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

रचनात्मकता— जो व्यक्ति यह सोचता है कि समस्त कार्य-शक्ति पर उसका पूर्ण अधिकार है, आरोग्यता उसकी सहज संपत्ति है तथा अविवेक और असंतुलन से उसका घोर विरोध है तो निश्चित ही उस व्यक्ति की शक्ति और सामर्थ्य में वृद्धि होती है। हमारे रचनात्मक होने का एक ही अर्थ है—पूर्ण आरोग्य तथा पूर्ण संपन्नता। हमें इसी लक्ष्य के योग्य बनाया गया है कि अपनी प्रतिभा से हम नित नई-नई वस्तुओं एवं विचारों का उत्पादन करें।

रचनात्मकता— यदि आप समाज पर यह छाप डालना चाहते हैं कि आपका चरित्र, आपकी क्रियाशक्ति, व्यक्तित्व प्रबल है, तो प्रत्येक दशा में आपके विचार रचनात्मक होने चाहिए। आपके मन पर इन्हीं रचनात्मक विचारों का प्रभाव होना चाहिए।

रचनाधर्मिता— अपने गुणों में इजाफा करके हम अपनी रचनाधर्मिता का संपोषण कर सकते हैं। सद्भावना, आशावादिता तथा अध्यवसाय सरीखी विशेषताएँ हमारे व्यक्तित्व में रचनात्मकता का संचार करती हैं। कुछ लोगों में रचनात्मकता स्वभाविक रूप से होती है, जबकि कुछ लोग थोड़ी-सी तैयारी से इसे विकसित करने में सफल हो सकते हैं।

रचनाशीलता— लोगों का प्रतिनिधित्व करें, अपने अनुभवों को उनके साथ बाँटें। साथ के लोगों को महत्त्व दें और उन्हें अपनी क्षमताओं को पेश करने का पूरा मौका दें। उनकी रचनात्मकताओं को बाहर लाने में पूरी मदद करें। उनके कामों में दखल न दें। उन्हें सिर्फ और सिर्फ आपके साथ और विश्वास की जरूरत है। भिन्न-भिन्न कामों को करने के लिए लगाए गए समय और उनको करने के क्रम को सोच-विचार कर व्यवस्थित करने से दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है।

रवैया— घर से बाहर पहला कदम रखने से पहले आपके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यही होती है कि अपने दिन का सामना करने के लिए आप किस रवैये को अपनाते हैं। नकारात्मक रवैया आपके दिन को बुरा, बहुत बुरा बना सकता है, लेकिन एक सकारात्मक रवैया आपके जीवन में अच्छे और महान् विचारों की वर्षा कर सकता है। इसीलिए घर से बाहर निकलने से पहले अपने रवैये को निश्चित कर लें, क्योंकि जितना अच्छा रवैया आप अपनाएँगे, उतना ही अच्छा आपका दिन बीतेगा।

रहस्य— सफलता का प्रमुख रहस्य आत्मविश्वास है।

रहस्य— जीवन में सफलता का रहस्य, हर आनेवाले अवसर के लिए तैयार रहना है।

राजा— जिस व्यक्ति ने अपना साहस, अपना चरित्र, अपना आत्मसम्मान या आत्मविश्वास नहीं खोया है, वह असफल नहीं हो सकता। वो अभी भी एक राजा है।

राह— कुछ लोग सफलता की राह देखते हैं, और बाकी उठ खड़े हो, उसके लिए जी-जान लगा देते हैं।

लक्ष्य निर्धारण— जब हमें यह लगता है कि हम जिस लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ आगे बढ़ रहे हैं और उसमें सफल होना आसान नहीं है तो हमारे पैर उस राह में डगमगाने लगते हैं। लिहाजा यह अनिवार्य है कि हम अपने जीवन का जो भी लक्ष्य एक बार निर्धारित कर लें, उसके बाद उसे प्राप्त करने के बारे में कभी संदेह को जन्म नहीं

दें और इस प्रकार की सोच के साथ जब हम आगे बढ़ेंगे तो हमारा समय कभी बरबाद नहीं होगा।

लक्ष्य— अधिकांश बड़े लक्ष्य हासिल न हो पाने का कारण यह है कि हम छोटी चीजों को पहले करने में अपना कीमती समय बिता देते हैं।

लक्ष्य— अनावश्यक तनाव आपको आपके लक्ष्यों से भटका सकता है। स्थिति का धैर्यपूर्वक सामना कीजिए और अपने जीवन के लक्ष्यों को पुन: निर्धारित कीजिए और देखिए, कितनी जल्दी आप सफलता के कितने करीब पहुँच जाते हैं।

लक्ष्य— अपना लक्ष्य निर्धारित करके ही उस सफलता की ओर बढ़ें। ऐसा न हो कि आपकी नीति के ढुल-मुल हो जाने से असफलता ही हाथ लगे। एक से अधिक लक्ष्य होने पर उनकी प्राथमिकता के अनुसार निश्चित करें और निष्ठा व लग्नपूर्वक हर लक्ष्य की ओर बढ़ें, ताकि सफलता मिले।

लक्ष्य— अपने घर के दीवार पर, जहाँ आप सोते हैं, वहाँ पर भी बड़े-बड़े अक्षरों में अपने लक्ष्य को लिखें। ज्यादातर व्यक्ति अपने लक्ष्य से इसलिए भटक जाते हैं, क्योंकि वे अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं। अगर आप अपने लक्ष्य को लिखा हुआ हमेशा देखते रहेंगे तो आप हमेशा अपने लक्ष्य को याद करते रहेंगे और आप रास्ता भी नहीं भटकेंगे।

लक्ष्य— अपने लक्ष्य को सकारात्मक तरीके से निर्मित करना चाहिए, न कि नकारात्मक भाव से। लक्ष्य का उद्देश्य आपको गतिशील बनाए रखने व प्रेरित करने के लिए होना चाहिए। जब आप अपना लक्ष्य निर्धारित करें तो यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि आप अपनी क्षमताओं व शक्तियों का पूरा उपयोग कर रहे हैं। लक्ष्य हासिल करने के लिए आपको अपनी क्षमताओं का भी पता होना चाहिए। ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो अपने जीवन में बहुत आगे बढ़ सकते थे, लेकिन उन्होंने अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल ठीक ढंग से नहीं किया और अपने लक्ष्य को सीमित दायरे में ही रखा।

लक्ष्य— अपने लक्ष्य को सही दिशा दीजिए। मतलब, एक योजना बनाइए कि कौन सा कार्य आपको पहले करना होगा और कौन सा उसके बाद? इसके साथ-साथ आप यह भी योजना बनाइए कि किसी कार्य को करने में क्या-क्या आवश्यकता होगी, और क्या आपके पास वे जरूरी संसाधन मौजूद हैं?

लक्ष्य— आप अपने जीवन में कुछ पाने के लिए कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर पाए हों। शायद ऐसा इसलिए है, क्योंकि आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए सही तरीके से कोशिश नहीं कर रहे हों। कभी-कभी लोग अपने लक्ष्य को पाने के लिए कुछ छोटी-मोटी कोशिशें करते हैं और असफल होने पर अपने लक्ष्य को छोड़ देते हैं, पर असलियत में बात यह होती है कि हमने उस हद तक कोशिश नहीं की होती है, जो हमारे लक्ष्य को पाने के लिए सही है।

लक्ष्य— आपको अपने लक्ष्य पर और अपने आप पर अटूट विश्वास की जरूरत है। अगर आप यह विश्वास ही नहीं करेंगे कि आप अपने तक पहुँच पाएँगे तो आप कैसे रास्ता ढूँढ़ेंगे और लक्ष्य तक पहुँचेंगे? साथ ही, अपने जीवन में सकारात्मक सोच लाएँ। अपने सोच को ऊँचा करें, क्योंकि आप जितना बड़ा सोचेंगे, उतना बड़ा पाएँगे।

लक्ष्य— आपने कितने ही लक्ष्य क्यों न पूरे कर लिए हों, अपनी निगाह अगले लक्ष्य पर टिका लें। लगातार सफलता जरूरी है।

लक्ष्य— उद्देश्य निश्चित करने का अर्थ यह नहीं है कि आपने इसे निश्चित किया और आपका काम समाप्त। उद्देश्य निश्चित करने के पश्चात् उसे प्राप्त करने अर्थात् उसे पाने में अनेक बाधाएँ आ सकती हैं। उन बाधाओं को पार कर अपना लक्ष्य, अपना उद्देश्य प्राप्त करना ही सफलता है। एक बच्चा जब चलना सीखता है तो वह कई बार गिरता है, फिर उठकर चलता है और इस प्रकार, वह चलना सीख जाता है क्योंकि उसमें खड़े होने के लिए आत्मविश्वास जागता जाता है और वह सफल होता है।

लक्ष्य— एक चीज को लक्ष्य बनाकर उस दिशा में प्रयत्न करना होता है। नियमित रूप से लगातार परिश्रम करना पड़ता है। हमारा मन भटकाने के लिए बहुत सारी चीजें सामने आएँगी, पर उन पर ध्यान न देते हुए पूरी एकाग्रता से किया हुआ परिश्रम ही व्यक्ति को सफलता दिला सकता है। कई बार व्यक्ति परिश्रम तो करता है, पर उसका श्रम बिखरा हुआ होता है। वह कुछ दिनों के लिए एक लक्ष्य पर काम करता है। कुछ दिनों बाद पुराने लक्ष्य से उसका मोह भंग हो जाता है और वह नया लक्ष्य बनाकर उस दिशा में काम करने लग जाता है। उसके कुछ दिनों बाद इस नए लक्ष्य से भी उसका मोह भंग हो जाता है। एक और नया लक्ष्य बनाकर उस पर काम करना शुरू कर देता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी काम पूरा नहीं कर पाता। उसका हर काम अधूरा छूट जाता है।

लक्ष्य— किसी काम में असफल होने पर भाग्य को दोषी न मानकर पूरी शक्ति व निष्ठा के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्त में जुट जाइए। अपनी आँख सिर्फ अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखिए।

लक्ष्य— किसी खास मार्ग या काम में डटे रहने के लिए पहला कदम है, ऐसे फायदेमंद और कारगर लक्ष्य रखना, जिन्हें हम हासिल कर सकें। अगर मेहनत को रंग देना है, तो समझदारी से अपने लक्ष्य तय करने होंगे और पूरी मेहनत करनी होगी और हमेशा अपने लक्ष्य को ध्यान में रखना होगा, ठीक उसी तरह जैसे किसी दौड़ में धावक का पूरा-पूरा ध्यान अंतिम रेखा पर होता है।

लक्ष्य— कोई उद्देश्य निर्धारित किया जाता है तो उसे पाना प्रमुख होता है। बाधाएँ तो आती ही रहती हैं, उनसे विचलित नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति मार्ग में आनेवाली बाधाओं से डर जाता है, वह अपने लक्ष्य को कदापि नहीं पा सकता। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी दृष्टि केवल अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखनी चाहिए। आपकी सफलता से ईर्ष्या करनेवाले आपकी बाधाएँ बन सकते हैं, वे आपको दिग्भ्रमित कर सकते हैं।

लक्ष्य— गलत परामर्शों को सुननेवाला, उनसे उत्साहित होनेवाला तथा इनका स्वागत करनेवाला व्यक्ति अवश्य ही अपने मार्ग से भटक जाता है। हम संकल्प कर लें, अपने लक्ष्य को निरंतर दोहराते रहें, बार-बार अपने लक्ष्य की पूर्ति का प्रण करते रहें, तभी हम अपने पथ पर आरूढ़ बने रह सकते हैं और शनैः-शनैः उस लक्ष्य के लिए कार्य करना हमारा आचरण बन सकता है। जब वह हमारा स्वभाव बन सकता है, तब हम अपने जीवन के प्रभाव को पूर्णतया अपने लक्ष्य की ओर मोड़ सकते हैं। अपनी सब शक्तियों को उसी की सिद्धि के लिए लगा सकते हैं। कुछ समय के उपरांत हमसे कर्म-संबंधी हमारी योग्यता और परिश्रम की ऐसी प्रचंड तरंग प्रवाहित होगी, जो न केवल सब विघ्न-बाधाओं को बहा ले जाएँगी, अपितु हमें भी हमारे लक्ष्य के निकट ले जाकर खड़ा कर देगी।

लक्ष्य— जब यह बात अच्छी तरह समझ ली जाती है कि अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए कौन-कौन से जरूरी काम करने हैं, तब यह बात हमें अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखने में मदद देती है। अगर हम बीच में नाकाम हो भी जाते हैं तो यह हमें निराश होकर हार नहीं मानने देती, बल्कि यह हमें फिर से उस काम में लग जाने या जुट जाने में मदद करती है।

लक्ष्य— जिंदगी के कुछ लक्ष्य निर्धारित कीजिए और निश्चित समय में उन्हें पाने की कोशिश कीजिए। जीवन के बारे में स्पष्ट नजरिया रखें। आप अपने आप से क्या चाहते हैं, इसका स्पष्ट रूप से आपको पता हो, जिससे आप उसी अनुरूप समय प्रबंधन कर सकें।

लक्ष्य— जीवन का लक्ष्य हमारे सामर्थ्य, इच्छाशक्ति और योग्यता पर आधारित होना चाहिए। लक्ष्य प्राप्ति के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि आप यह तय करें कि आप किस रास्ते पर चलना चाहते हैं। उसके बाद यह सोचें कि किन साधनों से आप उस रास्ते पर चलते हुए अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं। जैसे-जैसे आप रास्ते पर आगे

बढ़ते जाएँगे, आपके साधन भी बढ़ते जाएँगे। यदि आप असफलता की असहनीय वेदना से बचना चाहते हैं, तो सिर्फ लक्ष्य ही दिखाई देना चाहिए।

लक्ष्य—जीवन में एक लक्ष्य, एक ध्येय और एक कार्य का चुनाव सफलता की पहली माँग है। संसार के महान् कहे जानेवाले और सामान्य दर्जे के लोगों में एक यही अंतर रहा है। महान् बननेवाले अपने जीवन को एक दिशा में प्रेरित कर, उसमें अपने आप को खपा देते हैं। दूसरी ओर, सामान्य लोग कभी इधर, कभी उधर भटकते रहकर जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण सफलता अर्जित नहीं कर पाते।

लक्ष्य—जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। निरुद्देश्य लोग इस धरती पर बोझ होते हैं, वे केवल अपना जीवन गुजारते हैं, जीते नहीं हैं। उनका उद्देश्य होता है —खाना, पीना और सोना, अर्थात् केवल दिन बिताना।

लक्ष्य—जीवन में हर काम सोच-समझकर, अपनी शक्तिनुसार और योग्यता के अनुसार चुनें और उसे पूर्ण करके ही दम लें, चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हो। लक्ष्य निर्धारित करने में दिग्भ्रमित न हों। जीवन में सफलता तभी मिलती है, जब कार्य योजनाबद्ध तरीके से हो।

लक्ष्य—द्वेषपूर्ण प्रतियोगिता से बचने का सबसे अच्छा तरीका है, अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करना। कोई माने या न माने, आपकी सफलता आपको जरूर मान्यता देगी। दूसरों द्वारा की गई प्रशंसा अथवा निंदा में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। सफल होने के लिए आपको लोगों के प्रमाण-पत्र पाने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने लक्ष्य पर ध्यान रखते हुए सदा आगे बढ़ते रहें, सफलता जरूर मिलेगी।

लक्ष्य—निरंतर कार्य करते रहने से लक्ष्य प्राप्त करना आसान है और उस निरंतरता को बनाए रखना ज्यादा कठिन और अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। लक्ष्य प्राप्त करने का अर्थ यह नहीं कि हमारी जिम्मेदारियाँ पूर्ण हो गईं, बल्कि अब और बढ़ गईं, क्योंकि अब हमारा लक्ष्य उन जिम्मेदारियों और कर्तव्य को निभाना है, जो हमें लक्ष्य पूर्ण होने के दौरान मिली हैं, जिससे लक्ष्य की गरिमा को बनाए रखा जा सके। इस हेतु अपने ऊपर काम को सवार नहीं होने दिया जाए, वरन् हम काम के ऊपर सवार रहें। कार्य करना, लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना एक स्वभाव बना लिया जाए।

लक्ष्य—प्रत्येक छोटे-छोटे, अच्छे-बुरे कार्य के पीछे एक-न-एक उद्देश्य छिपा होता है। यदि कोई व्यक्ति कहीं बैठा है अथवा कहीं खड़ा है तो उसका कोई उद्देश्य नहीं है, लेकिन यदि वह उस स्थान से उठा अथवा उसने खड़े होने के स्थान से अपना एक कदम बढ़ाया तो एक उद्देश्य के लिए, कुछ करने के लिए यदि कोई अच्छा कार्य किया, उद्देश्य को निर्धारित कर किसी को मारा-पीटा, उसकी हत्या की, तो भी एक उद्देश्य के लिए। अर्थात् बिना उद्देश्य कोई कार्य नहीं होता।

लक्ष्य—बहुत से असफल लोग यह सोचते हैं कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिंदगी ही उन्हें कभी आकर्षित करेगी। ऐसे इनसान क्या करना चाहते हैं कि बजाय क्या कर रहे हैं इस बात पर ज्यादा ध्यान देते हैं। यदि आप अपने लक्ष्य को रोज पुनर्स्थापित करते हैं तो आपके लिए सबसे अच्छी बात यह होगी कि आप आसानी से उसे प्राप्त कर सकते हैं।

लक्ष्य—बहुमूल्य लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य, जो व्यक्ति अपनी सफलता के लिए निर्धारित करता है, लेकिन मात्र लक्ष्य निर्धारित करने से सफलता नहीं मिलती बल्कि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगातार, अर्थात् प्रगतिशील साधना करनी पड़ती है। तभी लक्ष्य की प्राप्ति, अर्थात् सफलता मिलना निश्चित होता है। लक्ष्य निर्धारित करना

अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि इससे हमें पता रहता है कि अभी हम उस स्थान पर नहीं पहुँचे हैं, जहाँ के लिए हमने लक्ष्य निर्धारित किया था।

लक्ष्य— यह हम पर निर्भर है कि हम अपने सपनों में किस ऊँचाई तक उड़ते हैं? यह भी हमें खुद ही सोचना है कि हम ढेर सारी चीजों को पाने की इच्छा में अपनी शक्ति खर्च करें या किसी एक लक्ष्य को पाने की इच्छा में।

लक्ष्य— लक्ष्य उस समय निर्धारित हो जाना चाहिए, जब आपके सामने कई विकल्प खुले हों और उनमें से आपको कोई एक चुनना हो, उस क्षेत्र का चुनाव कर आगे बढ़ें। लक्ष्य का चुनाव करने में जल्दबाजी न करें, क्योंकि यह आपकी जिंदगी बदल सकता है।

लक्ष्य— लक्ष्य की निश्चितता और कुछ आगे कर गुजरने की आदत बेहद कल्पनाशील लोगों की कल्पना को नया रंग देती है। लक्ष्य की निश्चितता को इस तरह दिमाग पर कब्जा जमा लेना चाहिए, ताकि असफलतावाले विचारों के लिए दिमाग में न समय हो और न वजह। लक्ष्य की निश्चितता से आत्म-निर्भरता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, उत्साह, आत्म-अनुशासन का विकास होता है और प्रयास पर ध्यान लगाने में सहूलियत होती है। ये सब भौतिक सफलता हासिल करने की पूर्व शर्तें हैं।

लक्ष्य— लक्ष्य के प्रति जागरूक व्यक्ति हर समूह में ऐसे कुछ लोगों को खोज लेते हैं, जो किसी-न-किसी रूप में उनके लिए मददगार साबित हो सकते हैं और निश्चित प्रमुख लक्ष्य की दोस्ती उनसे भी कायम कर लेते हैं। कूटनीतिक तरीके से बाकी को वे अपने रास्ते में नहीं आने देते। लक्ष्य के बिना आप स्वयं को कहाँ पाते हैं, इसका जवाब अपने ही अंदर खोजें और नए अवसरों की तैयारी करके उनका लाभ उठाएँ।

लक्ष्य— लक्ष्य के प्रति समर्पित इनसान के लिए विफलता जैसी कोई चीज नहीं होती। अगर एक दिन में आप सौ बार गिरते हैं तो इसका मतलब हुआ कि आपको सौ सबक मिल गए। अगर आप अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाएँ, तो आपका दिमाग भी उसी तरह सुनियोजित हो जाएगा। जब आपका दिमाग सुनियोजित रहेगा तो आपकी भावनाएँ भी उसी के अनुसार रहेंगी, क्योंकि जैसी आपकी सोच होगी, वैसी ही आपकी भावनाएँ होंगी। एक बार जब आपकी सोच और आपकी भावनाएँ सुनियोजित हो जाएँगी, आपकी ऊर्जा की दिशा भी वही होगी और फिर आपका शरीर भी एक लय में आ जाएगा। जब ये चारों एक ही दिशा में बढ़ेंगे तो लक्ष्य हासिल करने की आपकी क्षमता गजब की होगी। फिर कई मायनों में आप अपने भाग्य के रचयिता होंगे।

लक्ष्य— लक्ष्य निर्धारित करने के बाद इस काबिल बनें कि हम उसे साध सकें। इसके लिए निरंतर ज्ञान और अभ्यास की आवश्यकता होगी। अपने आपको इस काबिल बनाए रखें कि लक्ष्य पाने की दौड़ में आप शामिल रहें। उस दौड़ से बाहर निकलने का कोई जोखिम न लें।

लक्ष्य— लक्ष्य निश्चित किए बिना तीर छोड़ें तो किस पर छोड़ें? धनुष है, बाण है, हाथ है और परिश्रम करने की शक्ति है, परंतु यदि लक्ष्य नहीं है। तो बाण चलाना निरा खेल है। लक्ष्य एवं दृढ़ मंतव्य बिना जीवन-क्रीड़ा मात्र है। नित नए मंतव्य बनाते जाओ, कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। दो खरगोशों के पीछे दौड़ने से एक भी हाथ नहीं आता। जिस व्यक्ति के अनेक मंतव्य होते हैं, वह प्रत्येक कार्य में विचलित रहता है।

लक्ष्य— व्यक्ति अपना जो लक्ष्य निर्धारित करे, उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करे, न कि लक्ष्य के कुछ पड़ावों को पाकर ही संतुष्ट हो जाए। अकसर होता यह है कि कुछ लोग अपना लक्ष्य निर्धारित तो कर लेते हैं, लेकिन उसे पाने के लिए जो कठिनाइयाँ आती हैं, उनसे घबरा जाते हैं और अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं और उसे वहीं छोड़ कहीं और अपना मन लगा लेते हैं। कुछ वे होते हैं, जो अपना लक्ष्य निर्धारित करके उस पर चलते हैं। कुछ हद तक वे

सफलता प्राप्त भी कर लेते हैं, लेकिन जब अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तो वहीं फुल स्टॉप लगा देते हैं और जितना मिला, उसमें ही संतुष्ट हो जाते हैं, अर्थात् जहाँ तक अपने लक्ष्य के मार्ग में पहुँचते हैं; उस पर यही सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि चलो जितना मिला उतना ही सही; यही मेरे भाग्य में था, लेकिन उनकी यही सोच उन्हें पथभ्रष्ट कर देती है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। कर्तव्य पथ पर आग में तपकर जो अपना लक्ष्य प्राप्त करता है, वही वास्तविक सफल व्यक्ति होता है।

लक्ष्य— सफलता एक दिन में नहीं मिलती। कई बार कर्म एक पीढ़ी करती है और सफलता दूसरी पीढ़ी को मिलती है। जीवन चलने का नाम है। सभी आगे बढ़ना चाहते हैं, लेकिन कुछ ही लोग सफलता की सीढ़ी पर चढ़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। बाकी लोग बहुत नीचे की सीढ़ी तक सफर तय कर पाते हैं। अगर हमें जीवन में कुछ करना है तो सबसे पहले उस लक्ष्य की कल्पना अपने मन में करनी होगी। तभी जाकर हम अपने लक्ष्य के नजदीक पहुँच सकते हैं।

लक्ष्य— सफलता की सीढ़ी बनाने के क्रम में पहला कदम होना चाहिए—अपना एक लक्ष्य निर्धारित करना। लक्ष्य कुछ इस तरीके का हो, जो संभव हो। ऐसा नहीं कि एक दिन में करोड़पति बनें, हर दिन अंतरिक्ष में उड़ने जाएँ या फिर कोई जादू हो जाए।

लक्ष्य— सफलता मिलेगी, सटीक लक्ष्य से। जब तक आपके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं होगा, आप कभी सफल नहीं हो सकते।

लक्ष्य— सभी लक्ष्य पूरा होने में समय लेते हैं। यहाँ तक कि जब आप बहुत-से कार्य एक साथ कर रहे हों तो सामान्य चीजों को करने में भी समय लग सकता है, इसलिए आगे बढ़ने और उस बढ़त को बरकरार रखने के लिए धैर्य पहला गुण है, जिसकी आपको जरूरत है। जब आपका धैर्य कम होने लगे, तब आप यह याद कीजिए कि आपने क्या लक्ष्य निर्धारित किया है, और यह भी कि जब आप उसे प्राप्त करेंगे तो कैसा महसूस करेंगे? आप उसे प्राप्त करने की खुशी को महसूस करिए और अपने लक्ष्य में आगे बढ़ते रहिए।

लक्ष्य— सेना चाहे जितनी बड़ी हो, फौज को इधर-उधर लिए फिरने, स्थान-स्थान पर प्रहार करने और शत्रु से जगह-जगह मुठभेड़ करने से किसी सेनापति को विजय प्राप्त नहीं हुई। इतिहास इसी सिद्धांत की पुष्टि करता है। सेनापति स्वयं युद्ध नहीं करता, उसकी दिव्य-शक्ति और उसका एकाग्रचित्त मन अपने लक्ष्य बनाने में ही लगे रहते हैं।

लक्ष्य— सोचिए, अगर आप लंदन जाना चाहते हैं तो आप लंदन जाने के लिए रास्ता भी ढूँढ़ेंगे, पर अगर आपको कहाँ जाना है यही पता ही नहीं है तो आप कैसे जाएँगे? उसी प्रकार अगर आपको यह पता ही नहीं है कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है, आप उसे पाएँगे कैसे या वहाँ पहुँचेंगे कैसे?

लक्ष्य— हमारे जीवन में लक्ष्य का निर्धारण हमारा भाग्य नहीं करता, हम खुद ही करते हैं, लेकिन उस मंजिल तक पहुँचने के लिए सकारात्मक सोच होनी चाहिए। इसके लिए दैनिक जीवन में खुशी आवश्यक है। चिंता का जीवन बिताने से हमारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, मन में संदेह की भावना आ जाती है और हम अपने सपनों को साकार करने में असफल रह जाते हैं। जब हम अपने रोजमर्रा की जिंदगी खुशनुमा बनाते हैं, तो अपने सपनों और जीवन के बारे में भी हमारा नजरिया बदल जाता है। वह आशावादी होता है, कदम आगे बढ़ाने के लिए उसमें आत्मविश्वास आ जाता है।

लक्ष्य— हमारे जीवन में लक्ष्य का निर्धारण हमारा भाग्य नहीं करता, हम खुद ही करते हैं, लेकिन उस मंजिल तक

पहुँचने के लिए सकारात्मक सोच होनी चाहिए। इसके लिए दैनिक जीवन में खुशी आवश्यक है। जब हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी खुशनुमा बनाते हैं, तो अपने सपनों और जीवन के बारे में भी हमारा नजरिया बदल जाता है।

लक्ष्य—'न' कहने की आदत डालें, जिससे आप लोगों के दबाव में न आकर अपने समय का दुरुपयोग बचा पाएँगे। लक्ष्य स्पष्ट रखें। उसी के अनुसार कार्य करें। 'सब चलता है' वाला रवैया छोड़कर अनुशासन का पालन करें। अपने सोने और उठने का समय निर्धारित करें। अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करते रहें, किंतु इसके लिए समर्पण और धैर्य का होना बहुत जरूरी है।

लक्ष्य-हासिल—सफलता किसी व्यक्ति द्वारा चुने गए लक्ष्यों को हासिल करना है। ऐसे लक्ष्य, जिनकी कोई व्यक्ति आकांक्षा रखता है और उनके लिए कार्य करता है, भले ही वे कुछ भी हों। यह हमारे प्रयत्नों का सकारात्मक परिणाम है। उपलब्धियों के सिलसिले को जब एक साथ रखकर जीवन की बड़ी उपलब्धियों के साथ जोड़ा जाता है तो उसे सफलता के रूप में जाना जाता है।

लगन एवं उत्साह—अगर लगन से कुछ फायदा पाना है, तो हमें सही लक्ष्य रखना जरूरी है। कई लोग ऐसी-ऐसी चीजों के पीछे भागते हैं, जिनसे खुशी नहीं मिलती।

लगन एवं उत्साह—सफलता के रास्ते पर व्यक्ति की गाड़ी तभी तक पटरी पर चलती है, जब तक उसमें लगन एवं उत्साह हो। सफलता की पहली शर्त, पहला सूत्र यही है कि सफलता की ऐसी चाहत होनी चाहिए, जैसे जीवन के लिए प्राणवायु की। सफलता का रहस्य ध्येय की दृढ़ता में निहित है।

लगन एवं उत्साह—समस्याओं या नाकामी के बावजूद अपने मकसद, हालात या काम में दृढ़ता के साथ और मजबूती से टिके रहें। चाहे कितनी भी विपत्ति क्यों न आए, मगर हार माने बिना, दृढ़ता से अपने मकसद को पूरा करने का निश्चय करना और उस पर डटे रहना।

लगन व परिश्रम—सपने साकार करने में समय लगता है, लेकिन यदि दिल में उत्साह, ईमानदारी और परिश्रम करने की तमन्ना है तो वे पूरे हो जाते हैं। कहा जाता है कि हम जैसा सोचते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। जीवन में सफलता का निर्धारण सबसे पहले मन में होता है। फिर उसे पूरा करने के लिए लगन के साथ परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सपना देखना ज्ञान से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। ज्यादातर सफल लोग कोई बहुत कुशाग्र बुद्धिवाले नहीं होते—वे हमारे-आपके जैसे साधारण लोग ही होते हैं, लेकिन उनमें अलग ढंग से सोचने और कुछ करने का साहस होता है। पहला कदम आगे बढ़ाने की हिम्मत होती है। उसके बाद दूसरा कदम उठाने का जोश होता है। उसके बाद तीसरा कदम चलने की लगन होती है।

लगनशीलता—अगर हम अपने उद्देश्य के प्रति लगनशील होंगे तो अवश्य ही अपने लक्ष्य में सफल होंगे। कई बार हम देखते हैं कि हम पूर्व में उद्देश्य निर्धारित कर लेते हैं और आत्मविश्वास भी होता है और उद्देश्य प्राप्ति हेतु कड़ी मेहनत नहीं करते। इस प्रकार हम असफल हो जाते हैं।

लालच—लालच पैदा होते ही व्यक्ति को मित्रता, रिश्ते-नाते आदि किसी का ध्यान नहीं रहता। बस, उसे वही वस्तु सर्वोपरि दिखाई देती है, जिसके कारण उसके मन में लोभ, अर्थात् लालच समाया हो। लोभ व्यक्ति का व्यक्तित्व छीन लेता है। इसके कारण व्यक्ति राक्षसी प्रवृत्ति का हो जाता है और छीना-झपटी, छल-कपट आदि में उलझकर जीवन का उद्देश्य भूल बैठता है। लालच नामक दुर्गुण से दूर रहना अत्यंत आवश्यक है, विशेषकर उन लोगों के लिए जो जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं, कुछ करना चाहते हैं, अर्थात् अपना भाग्य बदलना चाहते हैं।

लालच—लोभ ऐसा दुर्गुण है, जो नजर पड़ते ही व्यक्ति को जकड़ लेता है। कहा भी गया है, 'लालच बुरी बला।'

लालच वास्तव में एक बला है, जो एक बार पीछे पड़ जाए तो उससे बचना मुश्किल हो जाता है। थोड़ा-सा लालच बड़ी हानि करवा बैठता है यहाँ तक कि हत्या, डकैती, अपहरण तक।

लोकनिंदा-भय—हममें बहुत बार अच्छे विचार प्रविष्ट होते हैं, परंतु लोकनिंदा के भय के कारण हम कार्य करने से वंचित रह जाते हैं। अधिकांश लोग यही चाहते हैं कि जैसा वे करें, वैसा ही सब करें, जिस चाल से और जिस ढंग से वे चलते हों, उसी तरह सब चलें। यदि लोकमत से जरा भी भिन्नता हुई तो लोग बुरा कहने लग जाते हैं। नए कार्य को हम डर के मारे अधूरा ही छोड़ देते हैं। उसमें हमारा या संसार का जो भला होता है, उससे हाथ धोना पड़ता है। वस्त्र के पहनने में, नौकर-चाकर रखने में, रहन-सहन में, खेतीबाड़ी, व्यवसाय करने में, इन सब कार्यों में हमने कुछ नवीनता या भिन्नता दिखाई नहीं कि संसार की जीभ हमारी बुराई करने लग जाती है। इस बुराई से बचने के लिए यदि कोई शस्त्र या अस्त्र है तो एकमात्र साहस है।

लोगों से जुड़ाव—सोचिए, आपकी एक कंपनी है, जहाँ पर आपके कर्मचारी काम करते हैं। यह तो जाहिर है कि उनकी रात-दिन की मेहनत के कारण ही आपकी कंपनी आगे बढ़ पाएगी। जब तक आप अपनी कंपनी के लोगों से जुड़े रहेंगे, सब सही-गलत और उनकी सुविधाओं-असुविधाओं को समझेंगे, तभी कर्मचारी सही तरीके से कार्य करेंगे और आपकी कंपनी सफलता के शिखर पर पहुँच पाएगी।

लड़ाई के हथियार—आपको अपनी लड़ाई के हथियार चुनते समय बेहद सावधानी और बुद्धिमानी से कदम उठाने चाहिए। जो बातें आपके सपनों की पूर्ति में बाधक हैं या आपके आत्मविश्वास को कमजोर करती हों, ऐसी नकारात्मक चीजों को खोजकर अपने सामने लाएँ। ऐसा करते समय किसी गलत चीज को न पकड़ लें, इस बात को ध्यान रखें।

वक्त—अभी वक्त अच्छा है, इसका आनंद लें, लेकिन वक्त बदलता है। यह हमेशा अच्छा नहीं रहेगा। वक्त बुरा है, यह चिंता न करें, क्योंकि यह भी सदा के लिए नहीं रहेगा। यह सोचकर हँसना और जीवन का आनंद लेना बंद न करें, यह सोचकर कि जीवन आसान नहीं है।

वहम—अगर कोई यह समझता है कि खुशियाँ मेरे नसीब में हैं ही नहीं, प्यार मुझे मिलता ही नहीं या वह इस वहम का शिकार है कि हँसी में मेरा कोई हिस्सा नहीं तो ऐसे व्यक्ति की तुलना उस किसान से की जा सकती है, जो इस आशंका में अपना खेत ही नहीं जोतता कि इस साल बारिश होगी ही नहीं और सूखा पड़ना तय है।

वाणी—छोटी-छोटी बातों के लिए असत्य वाणी मुँह से निकालना केवल असफलता का चुनाव करनेवाले लोगों को ही शोभा देता है। व्यक्ति को इतना मृदुभाषी बनाना चाहिए, जिससे उसकी वाणी से सभी मधुरता प्राप्त कर सकें। वाणी में मधुरता होगी तो व्यक्ति की सफलता के मार्ग की बाधाएँ स्वत: समाप्त होती जाएँगी। शब्दों को मुँह से इस प्रकार निकालना चाहिए, जो सीधे हृदय पर छाप छोड़ें। स्पष्ट एवं मधुर वाणी सफलता के लिए उत्तम गुण है, जिसके सहारे व्यक्ति अपनी बाधाओं को आसानी से जीत सकता है।

वाणी—बोलते समय अपनी आवाज पर संयम रखें। बहुत जोर-से बोलना या बहुत धीमे बोलना व्यक्तित्व की कमजोरी माना जाता है। जब भी आप कोई बात कहना चाहें, मोहक सुर और संयत आवाज में कहें। याद रखें कि चिल्लाकर या बहुत ऊँची आवाज में बोलना इस बात की गारंटी नहीं है कि आपकी बात सुनी ही जा रही है। इसके अलावा, अगर आप इतना धीमे बोलते हैं कि लोगों को आपकी बात सुनने के लिए अपने कानों पर जोर देना पड़े तो जल्दी ही उनकी रुचि समाप्त हो जाती है।

वाणी—यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह कैसे शब्द बोलता है? यदि वह ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है, जो

सुननेवाले की आत्मा को तृप्त कर दें तो उसकी छवि सुननेवाले के मन पर अलग बनेगी, लेकिन यदि वह विषैले बाण छोड़ता है तो सुननेवाले पर ऐसे घाव होंगे, जो जीवन भर किसी औषधि से नहीं भर पाएँगे और न ही उन घावों की टीस कम हो पाएगी। व्यक्ति की वाणी में सत्यता होनी चाहिए। सत्यता का प्रभाव व्यक्ति को सर्वोपरि बनाता है, जो भाग्य निर्माण में सहायक होता है।

वाणी—व्यक्ति के कुछ बोलते ही ज्ञात हो जाता है कि उसके आचार-विचार कैसे हैं? संस्कृति कैसी है? व्यक्ति की वाणी उसके व्यक्तित्व का आईना होती है। व्यक्ति की वाणी मधुर होनी चाहिए, जो स्वयं को और दूसरों को कष्ट न पहुँचाए। अच्छी भाषा के प्रयोग से बिगड़ते काम बनाए जा सकते हैं। वहीं अगर आपकी वाणी कड़वाहट भरी होगी तो आपके बनते काम में सैकड़ों रोड़े अटक जाएँगे और संभव है कि वह हो ही नहीं।

वाणी—हमारे व्यक्तित्व की छाप हमारी वाणी के माध्यम से औरों के मन-मस्तिष्क तथा हृदय पटल पर अंकित हो जाती है। बहुधा प्रसन्नचित्त लोगों की वाणी दूसरों के जीवन का संबल बन जाती है। वाणी हमारे समूचे व्यक्तित्व तथा कृतित्व को तो अभिव्यक्त करती ही है, हमें अपनी अलग मौलिक पहचान भी प्रदान करती है। कटु वचनों की चोट किसी हथियार से भी अधिक घातक होती है। शस्त्र की चोट अथवा घाव तो थोड़े समय में भरा भी जा सकता है, परंतु वाणी का प्रहार मनुष्य को सदैव सालता रहता है। कटु वचनों का इस्तेमाल वाणी का दुरुपयोग है।

वातावरण—व्यक्ति के आस-पास की परिस्थितियाँ व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं, जो भाग्य-निर्माण में महती भूमिका निभाता है। व्यक्ति जहाँ रहता है, उसके आस-पास कैसे लोग रहते हैं? वह किस वातावरण में उठता-बैठता है? क्या कार्य करता है? उसके मित्रादि कैसे हैं? उसे कैसा वातावरण प्रदान करते हैं—ये सभी बातें व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं और उन्हीं के अनुरूप व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सच है कि जैसा वातावरण होगा, वैसे ही विचार बनेंगे और व्यक्ति उसी के अनुरूप ढल जाता है।

वार्त्तालाप—एक खुशमिजाज और विनोदप्रिय व्यक्ति, जिसके होंठों पर सदा खिलखिलाहट रहती हो, दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करता है। जो व्यक्ति यह जानता हो कि दूसरों को किस तरह की बातों में रुचि है तथा उससे किस तरह की बातें करनी चाहिए, वह कभी असफल नहीं होगा। हरेक मौके पर उपयुक्त व उचित वार्त्तालाप कर सकने की योग्यता रखनेवाले व्यक्ति निस्संदेह सभी को प्रभावित करते हैं।

वार्त्तालाप—वार्त्तालाप आरंभ करने और उसे आगे बढ़ाने की योग्यता एक गुण है, जो कुछ ही लोगों में जन्मजात होता है, लेकिन यह गुण कोई भी विकसित कर सकता है। कोई वार्त्तालाप आरंभ करने के लिए आपको पता होना चाहिए कि आपके आस-पास क्या हो रहा है? सामयिक विषयों की अद्यतन जानकारी रखने से आप बहुत-से विषयों पर बात कर सकते हैं और चर्चा में ज्ञानपूर्वक भाग ले सकते हैं। कोई वार्त्तालाप आरंभ करने का सबसे अच्छा तरीका है, अच्छी तरह अभ्यास करना। शीशे के सामने अभ्यास करना अच्छा है।

वार्त्तालाप—स्वयं को समय दें और देखें कि किस तरह आपके जीवन से काले बादल छँटने लगते हैं? वैयक्तिक वार्त्तालाप से अनेक समस्याएँ सुलझ सकती हैं। खुद से बातचीत करें और अपने अंदर की आवाज सुनें। अपने आपको बताते रहें कि आप एक दमदार व्यक्ति हैं। आप उस व्यक्ति जैसे नहीं हैं, जो कष्टप्रद स्मृतियों के दलदल में फँसकर रह जाता है।

वास्तविक लक्ष्य—लक्ष्य, चाहे अल्पकालिक हो या दीर्घकालिक, वास्तविकता के निकट होना चाहिए। उन लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए संघर्ष न करें, जो आपकी सीमा या क्षमता के अंदर न हों। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक व्यावहारिक समय-सीमा तय करना भी जरूरी है। अल्पकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें, क्योंकि उन्हीं के

माध्यम से आप उन अंतिम लक्ष्यों तक पहुँच सकेंगे, जो लक्ष्य आपने अपने लिए तय किए हैं। इस प्रक्रिया में काफी धैर्य की आवश्यकता होगी।

विगत—यह कहना कठिन होता कि असंभव क्या है, क्योंकि विगत का स्वप्न, आज की आशा और कल की वास्तविकता होती है।

विचार की शक्ति—सफलता और विफलता के बीच उतना ही फर्क होता है, जितना सकारात्मक और नकारात्मक सोच के बीच अंतर होता है। एक जैसी चीजें एक-दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं। सफलता ही सफलता को सबसे जल्दी आकर्षित करती है। गरीबी से और ज्यादा गरीबी आती है। आप जैसे ही सफल होते हैं, पूरी दुनिया अपना खजाना आपके लिए खोल देती है और आपको और सफल बनाने में मदद करती है। आप गरीबी का संकेत दीजिए और दुनिया आपके पास जो भी मूल्यवान चीज बची है, उसे हासिल करने के लिए आपके पीछे पड़ जाएगी। आप बैंक से भी तभी कर्ज ले सकते हैं, जब आप समृद्ध हों और जब पैसों की जरूरत नहीं होती, लेकिन एक बार आप गरीबी के चंगुल में फँस गए हों या बदकिस्मती से किसी आफत में पड़े हों, तब कर्ज लेने की कोशिश कीजिए, फर्क आपकी समझ में आ जाएगा। आप अपनी नियति के मालिक खुद हैं, क्योंकि आपके नियंत्रण में वह चीज है, जो इनसान की नियति को बदलने की क्षमता रखती है, वह शक्ति है—वैचारिक की शक्ति।

विचार—अपने मन में सदा अच्छे विचारों को स्थान दें।

विचार—अशुभ विचारवाले मनुष्य रोगी एवं दुष्कर्म करनेवाले भोगी बनते हैं, जबकि शुभ विचार करनेवाले स्वस्थ, सत्कर्म करनेवाले योगी बनते हैं।

विचार—आदर्श समय कुछ नहीं होता। यदि आपके पास कोई अच्छा विचार है तो उस पर आगे की योजना बनाने के लिए तत्पर हों। जो भी काम करें, भरपूर आनंद के साथ करें। कई बार हम खुद को दयनीय बना देते हैं, यह सोचकर कि हम अच्छा काम नहीं कर रहे हैं। कन्फ्यूशियस ने कहा है, "जहाँ भी जाएँ, पूरे दिल के साथ जाएँ। जितनी अधिक अंदरूनी खुशी होगी, उतना ही हम सफलता के लिए प्रेरित होंगे।"

विचार—आप विचार द्वारा भाग्य पर विजय प्राप्त करते हैं। यदि आप यह समझ लें कि मनुष्यों तथा संख्याओं के भाग्य निर्माण में विचार ही एकमात्र कारण है तो आपको हाथ में तलवार नहीं लेनी पड़ेगी। जैसा विचार होगा, अनिवार्य रूप से वैसा ही परिणाम होगा।

विचार—आपकी कार्यकुशलता आपकी सोच पर ही निर्भर करती है। इच्छापूर्ति के लिए उत्साह तथा परिश्रम से कार्य करने पर ही आपकी जीत का मार्ग प्रशस्त होगा। नकारात्मक विचार तथा सोच आपको हतोत्साहित करेंगे तथा आप निष्क्रिय होकर अकर्मण्यता से कार्य करेंगे। इस स्थिति में आप कुछ भी परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते।

विचार—कई लोग सिर्फ विचारों में ही जीते हैं और कुछ भी बड़ा काम नहीं कर पाते। ऐसे लोग योजना बनाने में माहिर होते हैं, पर उन्हें साकार करने में तनिक भी मेहनत नहीं करते। कई बार व्यक्ति यह भी सोचता है कि कुछ बड़ा करने के चक्कर में उससे गलती हो सकती है। इससे उसकी छवि खराब हो सकती है। इसलिए इनसान कुछ भी नया करने से बचता है। हर व्यक्ति रचनात्मक होता है। वह सफलता प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। इसके लिए उसे अपने मन में बैठी झिझक को दूर करना चाहिए। झिझक दूर होने पर वह तेजी से सफलता की ओर बढ़ सकता है।

विचार—कई लोगों को केवल अपने ही विचार पसंद आते हैं। यह लक्षण भेदभाव और टीम वर्क की कद्र न करनेवालों के हैं। ऐसे लोग कभी यह नहीं चाहते कि कोई और व्यक्ति भी सफलता हासिल करे। कोई कंपनी सिर्फ

एक व्यक्ति के विचारों को अपनाती रहे, तो क्या वह तरक्की कर पाएगी?

विचार—कुविचार भी व्यसन की तरह हैं। मनुष्य के उच्च एवं अच्छे विचार जहाँ उसे समाज के लिए प्रेरणा के तौर पर स्थापित करते हैं, वहीं इसके विपरीत कुविचार मनुष्य को राक्षसी प्रवृत्ति का बना देते हैं। अच्छे विचार सिर्फ स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं, क्योंकि अच्छे विचार अच्छी शिक्षा ही देंगे।

विचार—गलत विचार किसी भी मनुष्य को बहुत जल्दी अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं और यदि जल्दी ही उनसे छुटकारा नहीं पाया जाता, तो वे मनुष्य को असफलता की ओर ले जाते हैं। इन सब विचारों से उत्पन्न होती है—चिंता, जो मनुष्य को खोखला बनाती जाती है। जो मनुष्य ऐसे विचारों की गिरफ्त में आने के बाद यदि जल्दी उनसे छुटकारा नहीं पाता है या नहीं पा सकता तो यह समझना चाहिए कि वह उन विचारों का गुलाम हो गया है।

विचार—चलो, जादू की बात करते हैं। जादू में क्या होता है? कोई काम, जो संभव नहीं दिखता, लेकिन जादूगर उसे संभव कर दिखता है। जब इनसान कोई विचार अपने मन में बार-बार सोचता है तो धीरे-धीरे वह उसका संकल्प बन जाता है। फिर वही संकल्प एक दिन कार्य रूप में परिणत हो जाता है। सफल व्यक्ति के मन में भी सफलता के विचार होते हैं। उनकी सोच और संकल्प उन्हें उसी दिशा में प्रेरित करते हैं।

विचार—जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसे ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। अगर हम चाहें कि विचार के विपरीत हमारी शारीरिक स्थिति हो तो ऐसा होना बिल्कुल असंभव है।

विचार—जो पर्वत हमें दूर से बड़े-बड़े दिखाई देते हैं, जब हम पास पहुँचते हैं, तो उनमें भी हमें अनेक मार्ग दृष्टिगत होने लगते हैं और जब हम उस मार्ग पर होकर जाते हैं, तो हमें शंका होती है कि क्या यही मार्ग पर्वत पर था, जो दूर से इतना ऊँचा दिखाई दे रहा था? पर्वत की ऊँचाई जितनी थी, उतनी ही रही। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ, जो कुछ परिवर्तन हुआ, वह केवल हमारे विचारों में हुआ। जब तक हम ऊँचाई से डरते रहे, हमें मार्ग काटना दुस्साध्य हो रहा था, परंतु जब हमने दृढ़ इच्छा कर ली तो वही मार्ग हमारे लिए सुगम हो गया और हम पर्वत के पार हो गए।

विचार—नए विचार नई क्रांति को जन्म देते हैं। नए विचार नई योजनाओं के वाहक और सफलता की धुरी होते हैं।

विचार—मजबूत विचारों से आत्मा की शुद्धि होती है तथा मन को एक नया उत्साह मिलता है।

विचार—यदि आप सुखी और समृद्धशाली होना चाहते हैं, तो आपको सुख-समृद्धि के विचार पैदा करना चाहिए।

विचार—यदि विचारों में दृढ़ता नहीं होगी तो कोई भी इनसान कुछ नहीं कर सकता।

विचार—विचार इनसानी दिमाग में सबसे ज्यादा फायदा देनेवाला तत्त्व है और विचारों का सृजन कल्पना से ही होता है। सारे विचार, चाहे वे नकारात्मक हों या सकारात्मक, अच्छे हो या बुरे, सही हों या गलत, अपने शारीरिक अनुपात के हिसाब से आवृत्त होते हैं। विचार एक ऐसी चीज है, जिसे आप पूरी तरह काबू कर सकते हैं। विचार की शक्ति वैचारिक आदतों से पनपती है। विचार के तौर पर जानी जानेवाली ऊर्जा नकारात्मक इकाइयों से इस हद तक दूषित हो सकती है कि पूरे तंत्रिका-तंत्र की कार्य-प्रणाली गड़बड़ हो जाए और कई प्रकार की तथा अनेक छोटी-मोटी बीमारियाँ इनसान को घेर लें। विचार सारे भाग्य का प्रारंभिक बिंदु है। विचार सिर्फ पैदा होते हैं। ये अपने आप संगठित और निर्देशित नहीं होते। इन्हें रचनात्मक बनाने के लिए व्यक्तिगत पहल द्वारा निर्देशित और उत्प्रेरित करना

जरूरी होता है।

विचार— विचार व्यक्ति को बना देते हैं या तोड़ देते हैं। महान् धर्म गुरुओं द्वारा ब्रह्म□ांड, ब्रह्म□ांडीय मस्तिष्क को सोच द्वारा सृजित किया गया है। यह ब्रह्म□ांडीय मस्तिष्क सूचनाओं का महा राजपथ है, जो सभी मानव मस्तिष्कों को एक साथ जोड़ता है। हम काफी हद तक दूसरों द्वारा समाचार पत्र, चलचित्र, रेडियो और आकस्मिक भेंट-मुलाकातों के दौरान एक छोटे से विचार के माध्यम से भी एक अलग साँचे में ढाल दिए जाते हैं।

विचार— विचार ही हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वह उसी के अनुरूप भगवान् के अस्तित्व को भी देखेगा।

विचार— विचारों में चुंबकीय शक्ति होती है। जैसे ही आप खुद को बताते हैं कि 'मैं हार गया हूँ। मैं इस समस्या से नहीं जीत सकता।' आप नकारात्मक विचारों को आकर्षित करते हैं और इनमें से प्रत्येक विचार आपको यह विश्वास दिलाता है कि आप सही हैं, कि आप वास्तव में हार चुके हैं। इसके बजाय यह विचार करें, 'इस समस्या को सुलझाने का कोई तो रास्ता होगा।' और तत्काल आपके सकारात्मक विचार आने लगेंगे, जिससे आपको समस्या सुलझाने में मदद मिलेगी। 'कोई-न-कोई तरीका तो हैं' यह सोचना, यह विश्वास करना सचमुच महत्त्वपूर्ण है।

विचार— कोई व्यक्ति जब किसी भी कार्य के पहले उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करता है, आनेवाली कठिनाई का निराकरण खोज निकलता है, आवश्यक साधन जुटा लेता है, तब पूर्ण तत्परता व लगन के साथ कार्य में प्रवृत्त होता है, जिससे बड़ी-बड़ी परिस्थितियाँ भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पातीं। सफलता ऐसे ही व्यक्ति पाया करते हैं।

विचार— व्यक्ति के विचार जैसे होंगे, वैसे ही रूप में वह भगवान् के अस्तित्व को देखेगा, जिस अनुपात में उसने अपनी शक्तियाँ एक खास क्षेत्र में सीमित की हैं।

विचार— शुभ विचार आपको सफलता की ओर ले जाएँगे और अशुभ विचार असफलता की ओर। आपका भविष्य आपके शुभाशुभ विचारों पर टिका होता है। अब यह मनुष्य को स्वयं निर्णय करना होता है कि वह सफलता प्राप्त करना चाहता है अथवा असफलता?

विचार— हम चेतन मन एवं विचारों से अपने अवचेतन विचारों, विश्वास एवं अनुभव को नियंत्रित कर सकते हैं। विचारों के निर्माता हम ही हैं, अत: हमें इन पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। मात्र विचार बदलने से ही जीवन नियंत्रण की प्रक्रिया की शुरुआत हो जाती है। यदि हम सोचने लगे कि हम स्वयं ही अपने भाग्य विधाता एवं निर्माता हैं, तो वास्तव में ऐसा होना प्रारंभ हो जाएगा। विश्वास से बड़ी कोई शक्ति नहीं है।

विचार— हमारी जीवन पद्धति पर हमेशा श्रेष्ठ विचारों एवं सद्गुणों का शासन होना चाहिए। रचनात्मकता या धनात्मकता के विपरीत विचारों से सदा ही अपनी रक्षा करनी चाहिए। जब हम भूमि में अच्छा बीज बोते हैं, अच्छी खाद और उचित पानी देते हैं एवं मौसम भी ठीक रहता है तो पौधे के अंकुर फूटने से लेकर फलयुक्त होने तक की सभी क्रियाएँ भली प्रकार संपन्न होती हैं। पौधे के सूखने या नष्ट होने की संभावना तभी होती है, जब भूमि की उर्वरता कम हो जाती है या मौसम एकदम प्रतिकूल हो जाता है तथा पौधे को धूप या पानी ठीक से नहीं मिलते हैं। उसी प्रकार जब किसी व्यक्ति के विचार निष्क्रियता से बोझिल हो जाते हैं, कर्म-शक्ति कम हो जाती है, उत्साह और उल्लास मंद पड़ जाते हैं, साहस और आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है, तब उसका व्यक्तित्व एकदम नकारा तथा प्रभावहीन हो जाता है।

विचार-शक्ति— अपना भाग्य स्वयं बदलने के लिए आवश्यकता है कि व्यक्ति के विचार अच्छे हों; उसके विचार

भटकें नहीं। जब मन इधर-उधर भटकेगा तो विचार भी भटकेंगे और गलत विचार, जैसे—ईर्ष्या, क्रोध, घृणा आदि मन में जगह बना लेंगे। गलत विचार किसी भी व्यक्ति को बहुत जल्दी अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं और यदि जल्दी ही उनसे छुटकारा नहीं पाया जाता, तो वे व्यक्ति को असफलता की ओर ले जाते हैं। इन सब विचारों से उत्पन्न होती है, चिंता, जो व्यक्ति को खोखला बनाती जाती है। चिंता चिता समान होती है। इसलिए चिंता को पनपने नहीं देना चाहिए अन्यथा वह बहुत जल्दी ही चिता का रूप ले लेती है।

विचार-शक्ति— आपका दिमाग एक समय में केवल एक ही विचार रख सकता है, जो सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी, लेकिन आप नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदल सकते हैं, क्योंकि आप सबकुछ कर सकते हैं। मौकों का इंतजार करने में वक्त बरबाद न करें। खुद पर यकीन करें और अपना काम करें। आप अगर रात को ही अपने सुबह पहने जाने वाले कपड़े निकालकर रख लेते हो, तो सुबह उठकर समय खराब नहीं होगा। शॉपिंग करते समय एक लिस्ट तैयार करें। हमारा ज्यादातर समय इन्हीं कामों में बरबाद होता है तो एक लिस्ट बनाएँ और एक बार में सारा सामान ले आएँ।

विचार-शक्ति— आपका प्रत्येक विचार आपके भविष्य का निर्माता है, भले ही वह विचार शुभ हो अथवा अशुभ। यदि आपके विचार शुभ होंगे, तो वे आपके भाग्य निर्माता होंगे और अशुभ विचार आपको असफलता की ओर ले जाएँगे। वस्तुत: आपका भविष्य आपके शुभाशुभ विचारों पर टिका होता है। अब यह व्यक्ति को स्वयं निर्णय करना होता है कि वह सफलता प्राप्त करना चाहता है अथवा असफलता?

विचार-शक्ति— कहा गया है कि तुम विचार द्वारा भाग्य पर विजय प्राप्त करते हो, यदि तुम यह समझ लो कि मनुष्यों के भाग्य निर्माण में विचार ही एकमात्र कारण है, तो तुम्हें हाथ में तलवार नहीं लेनी पड़ेगी। जैसा विचार होगा, अनिवार्य रूप से वैसा ही परिणाम होगा।

विचार-शक्ति— जब तक व्यक्ति का मन शांत नहीं होगा, तब तक उसके मन में अच्छे विचारों का आना संभव नहीं होगा। धार्मिक, सामाजिक कार्यों द्वारा व्यक्ति आत्मीय शांति प्राप्त कर सकता है। मन शांत होने पर अच्छे विचारों का आगमन होगा, जो उसे अच्छे कार्यों की प्रेरणा देकर भाग्य निर्माण की ओर ले जाएँगे।

विचार-शक्ति— जब व्यक्ति कुविचारों की गिरफ्त में आ जाता है तो यह कहता है कि बड़ी चिंता की बात है; क्या करें, क्या न करें? कुविचारों का वह गुलाम हो जाता है। अच्छी पुस्तकें, मनोरंजन, परिवार आदि में मन लगाकर वह इन कुविचारों से बच सकता है। किसी भी परिस्थिति में हमें व्यसनों का गुलाम नहीं होना चाहिए। जैसी परिस्थिति हो, उसे उसी प्रकार से निबटाया जाना चाहिए, जो उस समस्या या परिस्थिति के लिए आवश्यक हो।

विचार-शक्ति— जिस प्रकार कोई दीवार नींव के बिना खड़ी नहीं रह सकती, उसी प्रकार व्यक्ति समाज में तभी स्थान बना सकता है, जब उसके विचार अच्छे होंगे। अन्यथा कुविचारों के साथ व्यक्ति की क्या स्थिति हो सकती, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

विचार-शक्ति— जीवन में विचारों का आदान-प्रदान भी विशेष महत्त्व रखता है। महान् व्यक्तियों के विचारों से भी प्रेरणा मिलती है। महान् विचार व्यक्ति के लिए उत्प्रेरक होते हैं। व्यक्ति के स्वयं के विचार और दूसरों के वे उच्च विचार, जो कि व्यक्ति ग्रहण कर उन पर अमल करें, सफलता में महत्ती भूमिका निभाते हैं। इसलिए भले ही किसी का रहन-सहन साधारण हो, लेकिन उसके विचार सदैव उच्च ही होने चाहिए।

विचार-शक्ति— मन ही अच्छे-बुरे विचारों को अपने अंदर स्थान देता है। मन को वश में करके कुविचारों को जगह बनाने से पहले ही नष्ट किया जा सकता है। केवल अच्छे विचारों को अपनाना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है

कि यदि व्यक्ति पढ़ा-लिखा होगा, तभी उसके मन में अच्छे विचार आएँगे। एक निरक्षर के मन में भी विचारों की हलचल होती रहती है। इसलिए वह भी अच्छे-बुरे विचारों का ज्ञान रखता है। सभी के अपने अलग-अलग विचार होते हैं। बहुत-से ऐसे व्यक्ति भी देखे जा सकते हैं, जिनके विचार आपस में मेल भी खाते हैं।

विचार-शक्ति— यदि कोई व्यक्ति दूसरों के गलत कार्यों पर विचार करता है तो उसके मन में भी गलत विचार आ सकते हैं, लेकिन जो व्यक्ति उन गलत विचारों से सीख लेकर उन्हें छोड़ देता है, वही अच्छे आचार-विचार वाला होता है। बिना विचारे कार्य करने पर पछतावे के अतिरिक्त कुछ हासिल नहीं होता। विचार-विमर्श करके किया जानेवाला कार्य इच्छा पूर्ण करता है।

विचार-शक्ति— यदि मनुष्य आत्मोन्नति तथा अपने व्यक्तित्व को विकसित करना चाहता है, तो शुभ विचारों तथा सात्त्विकता को आश्रय देकर जीवन में पवित्रता का संचार करे। पवित्रता में देवों का वास है। यहीं पर उन्नति तथा विकास का अभ्युदय है।

विचार-शक्ति— विचार व्यक्ति की वह शक्ति है, जो उसे संचालित रखती है केवल सद्[illegible]वचार ही व्यक्ति को व्यक्ति बनाते हैं और सद्[illegible]वचारों पर ही व्यक्ति-जीवन की भाग्य निर्माण प्रक्रिया और सफलता-असफलता टिकी होती है।

विचार-शक्ति— विचार सर्वत्र व्याप्त हैं। विचार हमारे भीतर हैं, बाहर हैं, प्रत्येक स्थान पर हैं। वहाँ भी जिस घर में हम जनमे, जहाँ से हमें संस्कार मिले। वास्तव में, हमारा जन्म विचारों में ही तो हुआ। आज हम जो भी कुछ हैं, अपने विचारों के ही कारण हैं। वस्तुत: हम हैं ही क्या? हम और कुछ भी नहीं, अपने और अपने से जुड़े लोगों के विचारों का प्रतिबिंब हैं, प्रतिफल हैं।

विचार-शक्ति— व्यक्ति के उच्च एवं आदर्श विचार जहाँ उसे समाज के लिए प्रेरणा के तौर पर स्थापित करते हैं, वहीं कुविचार व्यक्ति को राक्षसी प्रवृत्ति का बना देते हैं। अच्छे विचार सिर्फ स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं, क्योंकि अच्छे विचार अच्छी शिक्षा ही देंगे।

विचार-शक्ति— व्यक्ति के विचार उसके भाग्य बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहाँ अच्छे विचार उसे सफलता की ओर ले जाते हैं, वहीं बुरे विचार असफलता की ओर। सफलता पाने में विचारों का अत्यधिक महत्त्व है। किसी भी कार्य को करने से पहले व्यक्ति विचार-विमर्श अवश्य करता है; किंतु सिर्फ वही व्यक्ति, जो सफलता प्राप्त करना चाहता है अन्यथा बिना विचारे, जो कार्य किया जाता है, वह मुसीबत ही खड़ी करता है।

विचार-शक्ति— व्यक्ति को अपने विचारों की शक्ति को सर्वदा बनाए रखना चाहिए। अच्छे विचार मन में बुराइयों को बसने नहीं देते, बल्कि दूसरों के मन को भी अपने विचारों की शक्ति से स्वच्छ व निर्मल बना देते हैं। व्यक्ति का सारा कार्य उसके विचार के अनुसार चलता है। विचार बदलते हैं, परंतु जीवन चलता है—विचार के ही अनुसार।

विचार-शक्ति— व्यक्ति में विचारों की पूरी शृंखला विकसित होने के साथ ही उसके विचारों में परिपक्वता आती है। बहरहाल, विचारों में शृंखला का विकास प्रत्येक व्यक्ति के हृदय के साथ उसके मस्तिष्क में भी होता है। इन्हीं विचारों से मनुष्य की प्रवृत्ति तथा प्रकृति विकसित होती है।

विचार-शक्ति— सभी व्यक्तियों को ज्ञात होना चाहिए कि उनके भीतर कुछ विशिष्ट चीजें हैं, जिसके माध्यम से वे अपने आपको भीड़ से अलग खड़ा कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की सोच, उसके विचार अलग-अलग होते हैं। मसलन, एक व्यक्ति की खूबियाँ और उसकी आंतरिक विशेषताएँ अलग-अलग होती हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में भिन्न विचार विद्यमान होते हैं।

विचार-शक्ति— स्पष्ट एवं सद्[illegible]वचारों को सर्वदा अपनाने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति के स्पष्ट विचारों में वह जादू होता है, जो लोगों में नई शक्ति का संचार कर, उन्हें भाग्य निर्माण की ओर अग्रसर कर सकता है, जब सद्[illegible]वचारों को सही ढंग से लोगों तक पहुँचाया जाए।

विचार-शक्ति— हम अपने विचारों को सकारात्मक अथवा आशाजनक बनाए रखें, ताकि हमारे मानसिक संवेग सकारात्मकता की तरफ उन्मुख हो सकें। इसके लिए हमें अपने विचारों को शुद्ध रखना होगा। हमारी वैचारिक संपदा ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है। इसे सहेजकर रखिए, यह आपको औरों से अलग दिखने व बनने में बड़ी भारी भूमिका अदा करेगी। सकारात्मक मानसिकता हमारे जीवन के संपूर्ण पथ को आलोकित करती है।

विचार-शक्ति— हमारी जीवन-पद्धति पर हमेशा श्रेष्ठ विचारों एवं सद्गुणों का शासन होना चाहिए। हमें इस दिशा में सदा प्रयत्नशील, सतर्क रहना चाहिए ताकि बुरे विचार कभी हमारे मन पर प्रभावी न हों। हमें रचनात्मकता या धनात्मकता के विपरीत विचारों से सदा ही अपनी रक्षा करनी चाहिए। जब हम भूमि में अच्छा बीज बोते हैं, अच्छा खाद और उचित पानी देते हैं, मौसम भी ठीक रहता है तो पौधे के अंकुर फूटने से लेकर फलयुक्त होने तक की सभी क्रियाएँ भली प्रकार संपन्न होती हैं।

विचारधारा— जीवन अति प्यारा व सुंदर है। मनुष्य के मन में जब चिंता और निराशा उत्पन्न हो तो उसको अपनी विचारधारा को परिवर्तित कर दूसरी ओर लगाना चाहिए। साहस, आनंद और सफलता के संबंध में विचार करें। आशावादी और आत्मविश्वासी बनें।

विचारधारा— हमेशा सकारात्मक विचारधारा अपनाएँ, आशावादी बनें, क्योंकि निराशावादी विचारधारा ही इनसान को कुंठित कर असफलता की ओर धकेलती जाती है।

विचारधारा— 'मुझमें वे विशेषताएँ नहीं, जो अन्य लोगों में है। मैं सदा ही असफल रहा हूँ, मेरा भाग्य कभी साथ नहीं देता'; यदि आपकी विचारधारा इसी रूप में बह रही है तो समझ लीजिए कि अपने मार्ग में आप स्वयं ही झाड़-झंखाड़ खड़े कर रहे हैं। ऐसा कर, आप न सिर्फ अपनी शांति और संतोष गँवा रहे हैं, बल्कि बीमारियों, कष्टों और भाग्यहीनता को भी निमंत्रण दे रहे हैं।

विचारों का मूल्य— परिस्थितियों के आदर्श होने का इंतजार न करें। वे कभी आदर्श नहीं होंगी। भविष्य की बाधाओं और कठिनाइयों की उम्मीद करें और जब वे आएँ, तब आप उन्हें सुलझाने का तरीका खोजें। याद रखें, केवल विचारों से सफलता नहीं मिलती। विचारों का मूल्य तभी है, जब आप उन पर अमल करें।

विजेता— यदि आप अपने जीवन में हर बाजी जीतना चाहते हैं तो आपको एक विजेता जैसा मन बनाना होगा, विजेता जैसे आचार-विचार रखने होंगे।

विनम्रता— जीवन में विनम्रता के बिना कोई भी व्यक्ति सफल नहीं बन सकता। सफलता के लिए हमें हमेशा कुछ-न-कुछ सीखने की चाह रखनी चाहिए। अगर आप अपनी इस बात पर डटे रहेंगे कि आपसे ज्यादा होशियार और चालक दुनिया में कोई नहीं है तो आप गलत हैं। मृत शरीर हमेशा तना हुआ रहता है और झुका हुआ इनसान बहुत ही विनम्र भाववाला होता है।

विनम्रता— बातचीत की पहल करने के लिए विनम्र और व्यावहारिक बनना सबसे अच्छा तरीका है। यह सभी शंकाओं तथा घबराहट को दूर कर देता है और अच्छा प्रभाव डालता है। विनम्रता आपके चाल-चलन, व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के बारे में सबकुछ बयान कर देती है। विनम्र होने के साथ-साथ व्यवहार-कुशल होना भी उचित है। हालाँकि ईमानदार और स्पष्टवादी होने का लाभ अवश्य मिलता है। कभी-कभी सच्चाई को आकर्षक बनाकर

प्रस्तुत करना भी आवश्यक हो जाता है।

विनम्रता— विनम्रता मानव जाति के सबसे मूल्यवान गुणों में से एक है। विनम्र होने में कुछ नहीं जाता और फिर इसे एक आदत में शुमार कर लिया जाए तथा ईमानदारी से पालन किया जाए तो अद्‌भुत लाभ मिलता है।

विनयशीलता— आप सफलता की सीढ़ी पर कितना ऊपर जा सकते हैं, यह बात बहुत सीमा तक आपके व्यक्तित्व निर्माण पर निर्भर करती है। आपको विनम्रता और आत्म-सम्मान के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है। विनम्रता का अभिप्राय यह है कि अपने बारे में आप बड़ी मामूली राय रखते हैं। इसका मतलब है कि दूसरे लोग कुछ मामलों में आपसे बेहतर हैं, लेकिन कुछ अन्य मामलों में आप बेहतर हो सकते हैं। विनम्रता को अकसर कमजोरी समझा जाता है, अर्थात् यह कि आप अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ सकते। विनयशीलता का अर्थ यह नहीं है कि आप खुद को कम समझें। अपने आपको बहुत तुच्छ समझना उतना ही गलत है, जितना खुद को बहुत कुछ समझना। आपको चाहिए कि आप स्वयं को वैसा ही देखें, जैसे आप वास्तव में हैं, अपनी क्षमताओं के साथ अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हुए। जिसे आप कमजोरी समझते हैं, वह आपकी ताकत भी बन सकती है। उसे केवल विकसित करने की जरूरत है। अपनी दुर्बलताओं से शरमाएँ नहीं। ईश्वर ने आपको दोनों चीजें दी हैं। आपके व्यक्तित्व में क्षमताएँ हैं तो कमियाँ भी हैं और आप इन दोनों पहलुओं के आईने में ही अपना असली रूप देख सकते हैं।

विपत्ति— यदि बुद्‌धि अनुचित पथ पर न चले तो विपत्ति कहाँ से उत्पन्न हो सकती है?

विपरीत हालात— तजुर्बों का कोई छोटा मार्ग नहीं, वे हमारे लिए सबसे बड़े सबक का काम करते हैं। विपरीत हालातों से हार मानने के बजाय उन्हें अपने हक में करने के उपाय अमल में लाने की जरूरत है। क्षणिक लोभ के चक्कर में दूरगामी लक्ष्यों से समझौता करना उचित नहीं।

विफलता— अधिकतर महान् लोगों ने अपनी सबसे बड़ी सफलता, अपनी सबसे बड़ी विफलता के एक कदम आगे हासिल की है।

विफलता— आप अगर विफलता की मानसिकता में बंद हो जाते हैं तो कभी न समाप्त होनेवाली विपत्ति की सुरंग में अटककर रह जाएँगे। आप आधा-अधूरा काम करेंगे और असफल होते रहेंगे, जिससे आपकी यह धारणा पुष्ट होगी कि आपका काम घटिया है तथा आपके भाग्य में मामूली बने रहना, विफलता पाना ही लिखा है। आप सफलता पर कभी ध्यान नहीं लगा सकते, क्योंकि आप सदैव सफलता के बारे में सोचते रहते हैं। क्योंकि आप मन में आशंका लिये काम कर रहे हैं, आप और भी गलतियाँ कर सकते हैं। निष्कर्षत: आप सफलता के सपने नहीं देख रहे हैं। आप विफलता के भयानक सपनों में घिरे हुए हैं।

विफलता— विफलता के सर्वाधिक आम कारणों में शामिल हैं—स्पष्ट लक्ष्य की कमी या तय लक्ष्य का अभाव, जिसकी दिशा में प्रयास किया जाना है पिछलग्गुओं से ऊपर उठने का लक्ष्य बनाने के हौसले में कमी, पर्याप्त शिक्षा की कमी, अनुशासन और चातुर्य की कमी; खराब स्वास्थ्य, जिसे उपचार से दुरुस्त किया जा सकता है, बचपन में चरित्र निर्माण के दौरान मिला प्रतिकूल माहौल, जिसकी वजह से शरीर और दिमाग बुरी आदतों का शिकार होता है; टाल-मटोल, लगन का अभाव और अपनी गलतियों की जिम्मेदारी लेने के हौसले में कमी, नकारात्मक व्यक्तित्व; बिना कुछ किए कुछ हासिल करने की अनियंत्रित इच्छा, जो अकसर जुआ खेलने जैसी आदत के तौर पर सामने आती है; निर्णय क्षमता का अभाव; अति सावधानी, जिससे पहल और आत्मविश्वास खत्म हो जाता है; अंधविश्वास और भेदभाव, जो सामान्य नियमों की जानकारी के अभाव से पैदा होते हैं, गलत पेशे का चुनाव, ऊर्जा को गलत

कार्यों में बरबाद करना, एकाग्रता न होना, मितव्ययिता का अभाव, उत्साह की कमी, असहिष्णुता, दूसरों के साथ सामंजस्य की भावना से सहयोग करने का अभाव; ऐसी शक्ति मिल जाना, जो खुद कमाई न गई हो जैसा कि विरासत में संपत्ति मिलने या किसी के द्वारा ऐसी जगह पर बिठा दिए जाने से हासिल होती है, जिसका वह अधिकारी नहीं, बेईमानी, अहंकार और घमंड, सोचने के बजाय अंदाजा लगाना।

विफलता—हम प्रतिपल कुछ नया सीखते हैं और अपने साधनों में वृद्धि करते हैं। सही समय पर कार्य को करनेवाले लोग असंभव लगनेवाले कार्यों को भी कर लेते हैं। जो व्यक्ति अपने काम औरों पर टालते रहते हैं, उनके लक्ष्य कभी पूरे नहीं होते। जो इधर-उधर अपने कीमती समय को फालतू खर्च करते घूमते हैं, जो कार्य को बिना सोचे-विचारे करते हैं, जो कार्य शुरू तो कर देते हैं, परंतु संकट, बाधा के संघर्ष की स्थिति आने पर काम अधूरा छोड़कर दूसरे कार्यों में लग जाते हैं, जो कोई भी कार्य ढंग से पूर्ण करने की सामर्थ्य नहीं रखते। वे कहीं भी और कभी भी सफल नहीं हो पाते।

विरोध—जितने भी आविष्कारक हुए हैं, उन्होंने जो आविष्कार किए हैं, उनके लिए उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। साधारण वस्तुओं के प्रयोग से ही उन्होंने गंभीर सिद्धांत खोज निकाले। ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है, जिसके सार्वजनिक मनन के लिए उनको खोज निकालने वाले को कष्ट, निंदा और विरोध न झेलना पड़ा हो।

विलक्षण शक्ति—सफलता में दोषों को मिटाने की विलक्षण शक्ति है।

विवेक और ज्ञान—आँखों पर पट्टी बाँधकर भागने से मार्ग तय नहीं होता। विवेक और ज्ञान की ज्योति के साथ अंधकारपूर्ण पथ पर भी उपलब्धियों के सुनहरे दीपक जगमगाए जा सकते हैं। विवेक और ज्ञान के साथ उद्यम करने से मार्ग में खड़ा पहाड़ भी हटाया जा सकता है या उसके ऊपर मार्ग निकाला जा सकता है, लेकिन उस पर्वत से सिर फोड़ने से कोई लाभ नहीं हो सकता, जहाँ मार्ग नहीं बन सकता।

विवेक—विवेक भाग्य निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण गुण है, जो जीवन में पग-पग काम आता है। विवेकानुसार कार्य करने पर व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है, जबकि अविवेक व्यक्ति के लिए खतरे पैदा कर सकता है। स्वविवेक से कार्य करने पर व्यक्ति भाग्य निर्माण की सही राह पकड़ सकता है, वहीं विवेकहीन होने पर व्यक्ति अपने काम बिगाड़ सकता है।

विवेकशीलता व बुद्धिमत्ता—यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर हम अपने लक्ष्यों को निर्धारित करें। हमारे निर्णय तथ्यपरक हों तथा हमारी पृष्ठभूमि से विवेकशीलता व बुद्धिमत्ता की झलक दृष्टिगोचर होनी चाहिए। भावनाओं में बहकर अपना बंटाढार कराना कोई बुद्धिमानी का काम नहीं। अपनी उपलब्धियों पर अभिमान करना भारी-भरकम व्यक्तित्व की निशानी नहीं। नाकामयाबी से डाँवाँडोल न हों। सुख के बाद दु:ख और दु:ख के बाद सुख प्रकृति की विशेषता है।

विवेकशीलता—विवेकशील व्यक्ति कार्य करने से पूर्व उसके प्रत्येक पहलू पर विचार करता है, जिससे कि असफलता से बचा जा सके जबकि विवेकहीन व्यक्ति उतावलेपन से कार्य करके अपनी हानि कर बैठता है। साथ ही, दूसरों को भी नुकसान पहुँचाता है।

विवेकशीलता—विवेकशील व्यक्ति हमेशा सोच-समझकर कदम उठाते हैं। ईर्ष्या, क्रोध, लालच, गर्व आदि सभी विकार विवेक के शत्रु हैं। जब एक व्यक्ति किसी व्यक्ति की सफलता से ईर्ष्या करता है, तो वह अपना विवेक खो देता है और उसके विरुद्ध लोगों को भड़काता है। जब व्यक्ति अधीर होता है तो उसे क्रोध आता है। क्रोध में आपा खोकर वह विवेकहीन हो जाता है और अपना अहित करता है। साथ ही, दूसरों के लिए भी हानिकारक बन जाता

है।

विवेकहीनता— व्यक्ति जब किसी वस्तु आदि के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो जाता है तो उसके मन में लालच समा जाता है। वह अवैध तरीके प्रयोग कर उस वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसके लिए वह हिंसक प्रवृत्ति तक अपना लेता है। उसके मन में एक ही खयाल रहता है कि किसी भी प्रकार उसे वह वस्तु प्राप्त करनी है, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े। यही वह क्षण होता है, जब व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है।

विश्लेषण— यदि आप जीवन में प्रगति करना चाहते हैं तो अपने चरित्र की विशेषताओं का ईमानदारी से विश्लेषण करें। लोगों को कठिनाई या विपत्ति में देखकर उनकी हँसी न उड़ाएँ अन्यथा आप एक क्षण में अपना व्यक्तित्व खो देंगे। लोगों की बात नम्रतापूर्वक सुनें, भले ही उनके विचार निराधार या आपकी रुचि के अनुकूल न हों। अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का यह बड़ा उपाय है।

विश्वास— असल में सफल लोग अपने निरंतर विश्वास से जीतते हैं, लेकिन वे असफलताओं का मुकाबला भी उसी विश्वास से करते हैं।

विश्वास— आपके दिमाग में सबकुछ मौजूद है। इसलिए पहले दिमाग को अपने काबू में लें, ताकि विश्वास कमजोर करनेवाली अनचाही बातें जगह नहीं बना सकें। विश्वास उन्हीं दिमागों में भाईचारा कायम करता है, जो सार्थक सोचवाले हैं। यह ऐसी अंतर्चेतना है, जो सार्थक दिमाग को शक्ति, प्रेरणा और सक्रियता में आने की क्षमता प्रदान करता है।

विश्वास— एक विश्वास को जगाने की आवश्यकता होती है। यह विश्वास ही हमें हमारे लक्ष्य तक ले जाता है। हमारे पास दृष्टि ही नहीं होगी तो सृष्टि के खुलते हुए द्वारों को हम नहीं देख पाएँगे।

विश्वास— जिन्हें अपने आप पर विश्वास नहीं, वे कभी सफल नहीं हो सकते।

विश्वास— मनुष्य उसी काम को ठीक तरह से कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है, जिसकी सिद्धि में उसका सच्चा विश्वास है।

विश्वास— यह मत सोचिए कि यह कार्य आपके वश का नहीं या जो बात आप सोच रहे हैं, वह असंभव है। व्यक्ति के हृदय में यह दृढ़ विश्वास होना चाहिए कि मैं मार्ग की खोज कर लूँगा अथवा अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करूँगा।

विश्वास— बिना विश्वास और आश्वासन के साहस नहीं हो सकता और आधी लड़ाई तो इसी धारणा में है कि हमने जो ठाना है उसे कर सकते हैं।

विश्वास— विश्वास ही जिंदगी है और संदेह मौत। वे जीत गए, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि वे जीतेंगे।

विश्वास— सफलता के लिए विश्वास पैदा कीजिए। असफल होने पर भी उस विश्वास को कायम रखिए।

वैयक्तिक वार्त्तालाप— वैयक्तिक वार्त्तालाप से अनेक समस्याएँ सुलझ सकती हैं। खुद से बातचीत करें और अपने अंदर की आवाज सुनें। अपने आपको बताते रहें कि आप एक दमदार व्यक्ति हैं। आप उस व्यक्ति जैसे नहीं हैं, जो कष्टप्रद स्मृतियों के दलदल में फँसकर रह जाता है।

व्यक्तित्व विकास— ज्ञान का दूसरा नाम है—शक्ति। कोई भी उस व्यक्ति से प्रभावित नहीं होता है, जिसे इतना भी पता न हो कि आस-पास या संसार में क्या हो रहा है? अत: अपने सामान्य ज्ञान को समृद्ध करना आवश्यक है और आपको उस विषय का विशेषज्ञ होना चाहिए, जिस क्षेत्र में आप काम कर रहे हैं। अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से अखबार पढ़ें, टी.वी. पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखें, अच्छी और लोकप्रिय पुस्तकें पढ़ें, जानकार एवं

बुद्धिमान लोगों के साथ विचार-विमर्श करें, संबंध बनाएँ, संप्रेषण करें।

व्यक्तित्व विकास— व्यक्तित्व विकास के प्रति निरंतर सजग रहकर आप सफलता व उपलब्धियों के क्षितिज पर अपने वर्चस्व के सुनहरे हस्ताक्षर कर सकते हैं। व्यक्तित्व में श्रेष्ठता से आपका, आपके परिवार व संपर्क क्षेत्र का तो भला होगा ही, आप और बेहतर, सुंदर व सभ्य समाज निर्मित करने में अपना बेशकीमती योगदान देंगे। श्रेष्ठ और सक्षम मनुष्यों से भरी-पूरी दुनिया अनेक मायनों में स्वर्ग होगी।

व्यक्तित्व— अपने जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों को सँभालने के लिए हमें अलग-अलग किरदार निभाने पड़ते हैं। अगर आप ऐसा बखूबी कर सकें तो आप बिना किसी दिक्कत के अपनी हर जिम्मेदारी आसानी से निभा सकेंगे, लेकिन अधिकतर लोगों का व्यक्तित्व चट्टान की तरह होता है, जो हमेशा उन पर हावी रहता है।

व्यक्तित्व— अपने व्यक्तित्व का विकास करने की असीम संभावनाएँ आपके अंदर हैं, बशर्ते कि आपका चरित्र मजबूत हो। तभी आप उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे और समझ सकेंगे। जो दौलत आपने कमाई है, वह महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्व इस बात का है कि उस धन-दौलत को अर्जित करने के लिए आपने किन उपायों को अपनाया है? आपके चरित्र को निर्धारित करने में आपका व्यक्तित्व, आपकी क्षमताएँ, आपके विचार और आपके आदर्श सभी बहुत महत्त्व रखते हैं।

व्यक्तित्व— आकर्षक व्यक्तित्व आमतौर पर उन लोगों में देखने को मिलता है, जो मृदुभाषी हैं और दयालुता से बात करते हुए ऐसे शब्द चुनते हैं, जो किसी को आहत नहीं करते। उनका लहजा भी विनम्र होता है। यही नहीं, वे कपड़े भी ऐसे चुनते हैं, जो सही स्टाइल के हों और रंगों में एक सामंजस्य हो। ऐसे लोग निस्स्वार्थी होने के साथ ही न सिर्फ आसानी से मान जाते हैं, बल्कि दूसरों की मदद भी करते हैं। वे अमीर-गरीब, राजनीति, धर्म या काम-धंधे का भेदभाव भी नहीं करते। ऐसे लोग दूसरों से सख्ती से बात नहीं करते। वजह हो या न हो, किसी भी विषय पर बहस के दौरान गाली-गलौज या घटिया बातें नहीं करते, चाहे बहस धर्म या राजनीति के मुद्दों पर ही क्यों न हो रही हो। ऐसे लोग अकसर लोगों में उनकी कमियों के साथ उनकी खूबियाँ भी देखते हैं, कमियों को नजरअंदाज कर देते हैं।

व्यक्तित्व— आकर्षक व्यक्तित्व हासिल करने के लिए आत्मसंयम की जरूरत होती है, क्योंकि अकसर ऐसी घटनाओं और लोगों से सामना होता है, जो आपके सब्र का इम्तिहान लेते हैं और आपके संतुलन को बिगाड़ सकते हैं। इनसे बच निकलने के प्रयासों का नतीजा बेहतरीन होता है, क्योंकि एक आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी ज्यादातर लोगों के मुकाबले इतने रौब से खड़ा नजर आता है कि उसकी आकर्षक खूबियाँ और भी निखरकर सामने आती हैं।

व्यक्तित्व— आपकी आवाज, उसका उतार-चढ़ाव, लहजा, तीव्रता और इस्तेमाल की जानेवाली भाषा आपके व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं, क्योंकि उनसे आपकी पहचान बोलते ही हो जाती है कि आप शालीन हैं या नहीं। आप जिस तरीके से हाथ मिलाते हैं, वह भी आपके व्यक्तित्व का एक अहम् हिस्सा होता है। अगर हाथ मिलाते समय आप ढीला-ढाला और मरी हुई मछली जैसा निर्जीव-सा हाथ आगे करते हैं तो आप ऐसा व्यक्तित्व पेश कर रहे हैं, जिसमें न उत्साह है, न पहल है। कोई भी व्यक्ति एक आकर्षक व्यक्तित्व हासिल कर सकता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में संघर्ष के काँटों के बीच से अपना रास्ता बातचीत के जरिए निकालने के लिए कृतसंकल्प होते हैं ताकि दूसरों के साथ शांति से रह सकें।

व्यक्तित्व— ईश्वर किसी को भी बिल्कुल एक जैसा नहीं बनाता है। हर व्यक्ति अलग अनूठा होता है। उसके गुण

और योग्यताएँ किसी भी दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती हैं। आप इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि आपके जैसा कोई नहीं है। जरूरत इस बात की है कि आप अपने व्यक्तित्व और अपनी क्षमताओं को विकसित करें और पता लगाएँ कि जीवन के विशाल गोरखधंधों में आप कहाँ खड़े हैं? आपका व्यक्तित्व चाहे जो हो, आप उपयोगी हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप अपनी क्षमताओं का विकास करें, क्योंकि आपको पूर्ण बनाने के लिए ईश्वर आपके साथ काम करता है। सृष्टिकर्ता के बारे में आपकी धारणा से यह निश्चित होता है कि आप किस तरह उसकी सेवा करते हैं? अगर आपकी धारणा में खोट है, तो आप कहीं के नहीं रहेंगे।

व्यक्तित्व— एक सफल व्यक्तित्व वह आकर्षक व्यक्तित्व होता है, जो किसी से दुश्मनी मोल नहीं लेता। व्यक्तित्व को एक शब्द में पारिभाषित नहीं किया जा सकता है। ये तमाम गुणों, भावों, विशेषताओं, रूपों इत्यादि का एक मिला-जुला रूप होता है, जो आपको दुनिया के दूसरे लोगों से अलग करता है। आपके कपड़े आपके व्यक्तित्व का एक अहम हिस्सा हैं। जिस प्रकार के कपड़े आप पहनते हैं, रंगों का सामंजस्य जो आपके कपड़ों में दिखता है, उसकी गुणवत्ता और उसके अलावा कई बातें, जो आपकी अंदरूनी विशेषताएँ हैं, वे बताती हैं कि आपका व्यक्तित्व कैसा है?

व्यक्तित्व— विकास एक आकर्षक व्यक्तित्व से हर कोई प्रभावित होता है और दूसरों को प्रभावित किए बिना आप आज के इस प्रतियोगी संसार में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए व्यक्तित्व विकास का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है। एक अच्छा व्यक्तित्व रखनेवाला व्यक्ति अधिक विश्वास के साथ कठिनाइयों को पार कर सकता है। बहुत-से लोग अभी तक यह सोचते हैं कि व्यक्तित्व का संबंध व्यक्ति के शारीरिक बनाव-ठनाव से है। अगर कोई व्यक्ति तंदुरुस्त हो और बढिया कपड़े पहने हुए हो तो कहा जाता है कि उस पुरुष/महिला का व्यक्तित्व बढ़िया है, लेकिन यह कोई विवेकपूर्ण दृष्टिकोण नहीं है। यदि व्यक्ति का आंतरिक व्यक्तित्व कमजोर हो, तो उसके बोलने या उसके व्यवहार से जल्दी ही उसकी असलियत खुल जाएगी। ऐसा व्यक्ति दूसरों पर कोई अमिट छाप नहीं छोड़ सकता। जीविका की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ना बहुत कठिन कार्य हो जाता है। अत: किसी भी व्यक्ति को अंदरूनी और बाहरी, दोनों व्यक्तित्वों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

व्यक्तित्व— सद्व्यवहार और सहयोग व्यक्ति को लोकप्रिय बनाता है। इसके फलस्वरूप उसकी उन्नति एवं सफलता की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। साथ ही, श्रेष्ठ व्यक्तित्व चरित्र की ठोस बुनियाद पर आधारित होना चाहिए।

व्यक्तित्व-निर्माण— जो लोग अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे अपनी भावनाओं, आवेश, उद्वेग, विचारों तथा क्रोध आदि पर पूर्ण नियंत्रण रखें। अपने इर्द-गिर्द के वातावरण में पूर्ण रुचि लेने की आदत विकसित करना भी व्यक्तित्व विकास का सहायक तत्त्व है।

व्यक्तित्व-निर्माण— व्यक्ति में स्वयं के व्यक्तित्व-विकास की क्षमता होनी चाहिए, क्योंकि अपना व्यक्तित्व-निर्माता वह स्वयं होता है। कोई दूसरा उसको मात्र प्रभावित करता है, लेकिन यह उसके ऊपर निर्भर करता है कि वह उस प्रभाव से किस प्रकार प्रभावित होता है?

व्यक्तित्व-निर्माण— व्यक्तित्व विकास के मामले में आत्मानुशासन की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आत्मानुशासन से अभिप्राय, व्यक्ति द्वारा अपने कार्यकलापों, अपनी प्रवृत्तियों, अपनी आदतों, विचारों, तथा दिनचर्या पर नियंत्रण रखना है। मसलन, आप प्रतिदिन पौ-फटे उठना तो चाहते हैं, परंतु उठ नहीं पाते हैं तो इसका तात्पर्य यह है कि आपमें आत्मानुशासन का अभाव है। यही नहीं, कई बार तय कर चुकने व संकल्प साधने के बावजूद आप यदि

किसी बुरी आदत को अलविदा नहीं कह पा रहे हैं तो यह आपके आत्म-नियंत्रण की बेचारगी का द्योतक है।

व्यक्तित्व-निर्माण—स्थिर व गतिहीन होना व्यक्तित्व की नियति नहीं। हम अपनी इच्छाओं, आदर्शों व मनोकामनाओं के अनुरूप अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन कर सकते हैं। वस्तुत: हमारी समग्र शिक्षाएँ व अवधारणाएँ हमारे व्यक्तित्व को निर्मित करती हैं। हालाँकि हमारे व्यक्तित्व के कुछ पक्ष ऐसे भी हो सकते हैं, जिनमें बदलाव लाना मुश्किल जान पड़े, परंतु ज्यादातर मामलों में आत्मानुशासन द्वारा हम स्वयं को अधिक काबिल तथा प्रभावशाली बना सकते हैं।

व्यवहार—किसी भी व्यक्ति को अच्छा व्यवहार करने पर उसे प्रचारित नहीं करना पड़ता है कि 'मैं सद्व्यवहारी हूँ।' उसका यह गुण स्वत: एक प्रचार होता है, जिसका दूसरे लोग स्वयं प्रचार करते हैं। उसकी यह प्रशंसा एक-दूसरे से होती हुई, जग व्याप्त हो जाती है, जो उसके भाग्य-निर्माण व सफलता के लिए भी आवश्यक होती है।

व्यवहार—जब हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों तो ऐसी स्थिति में खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है। एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। विभिन्न तरह के लोग अपने द्वारा किए गए व्यवहारों या असहयोगी शब्दों के प्रति अलग-अलग सिद्धांत अपनाते हैं। ऐसा आपके परिवार और दोस्तों के बीच भी होता है। यदि आपके बारे में कोई गलत बात कही जाती है और उसमें अगर सत्यता हो तो सबसे पहले अपने आप में सुधार करना चाहिए। यदि यह असत्य है तो इसे हँसकर टाल देना चाहिए।

व्यवहार—दूसरों के साथ व्यवहार में भी आपको मैत्रीभाव एवं नम्रता से पेश आना चाहिए। घमंडी बनकर आप किसी को भी प्रभावित नहीं कर सकेंगे। अगर आपकी मौजूदगी में लोगों को परेशानी महसूस होती है तो यह एक संकेत है कि आपको अपना व्यवहार सुधारने की जरूरत है। लोगों को आपके पास आते समय या आपसे बात करते समय सहजता का अनुभव होना चाहिए।

व्यवहार—व्यवहार व्यक्ति का वह गुण है, जो उसे समाज में स्थापित करता है। व्यक्ति का व्यवहार उसके भाग्य निर्माण, सफलता-असफलता की सीढ़ियाँ निश्चित करता है। व्यक्ति का व्यवहार किसके साथ कैसा है, समाज में यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है। साथ ही, व्यक्ति जहाँ कार्य करता है; जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ उसका व्यवहार कैसा है? ये सभी बातें व्यक्ति के भाग्य निर्माण, सफलता-असफलता पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

व्यवहार—सफलता और असफलता में सिर्फ इस बात का फर्क है कि असफलता से होनेवाली निराशा से भरी स्थितियाँ और हतोत्साहित करनेवाली बातों के प्रति हमारा रवैया क्या होता है यानी हम असफलता के साथ कैसा व्यवहार करते हैं?

व्यवहारप्रियता—प्यार की भाषा बोलें। किसी के साथ ऐसा व्यवहार बिल्कुल भी न करें, जैसा कि आप अपने लिए नहीं चाहते हैं। समझदारी और विश्वास का सही इस्तेमाल करना सीखें। किसी की बातों पर पूरी तरह भरोसा तो करें, लेकिन मन में एक प्रश्न-चिह्न भी रखें। इससे आप धोखा नहीं खाएँगे।

व्यापक दृष्टिकोण—सिद्धांतत: जीवन में वही सबसे अधिक सफल व्यक्ति है, जो सबसे अधिक जानकार है। जो क्षेत्र हमारी दृष्टि परिधि में होता है, हम साधारणत: उसी के प्रति सचेत एवं जागरूक होते हैं। यही बात हमारे दृष्टिकोण या नजरिए के बारे में भी सत्य है। हमारा कार्य क्षेत्र एवं नियंत्रण क्षेत्र बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हम अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाएँ। अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाने का तरीका है—अपने आँख-कान खोलकर रखना, बुद्धि को सूक्ष्म और हृदय को विशाल बनाना। अँधेरे में रास्ता दिखाने हेतु एक दीपक पर्याप्त होता है। आशावाद के जहाज पर चढ़कर हम मुसीबतों एवं समस्याओं के तूफानों से उफनते असफलताओं के महासागर को भी पार कर सकते हैं।

व्यावहारिक दृष्टिकोण—जीवन में कामयाबी अर्जित करने के लिए हम अपना मूल्यांकन करें तो हममें अपने निकट संबंधियों व संगी-साथियों की भी वास्तविक स्थितियों का निष्पक्ष आकलन करने की सूझ-बूझ होनी चाहिए। हमें तमाम पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर व्यापक व व्यावहारिक दृष्टिकोण रखने की जरूरत है। जिंदगी अपने विविध रंगों व शक्लोसूरत में हमसे रू-ब-रू होती है। कभी हमें वो खुशगवार लगती है, तो कभी मनहूस। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जिंदगी की चुनौतियों से मुँह चुराने के बजाय हम उनका डटकर मुकाबला करें।

व्यावहारिक महत्त्व—जीवन के आरंभ में ही कुछ असफलताएँ मिल जाने का बहुत अधिक व्यावहारिक महत्त्व है।

शक्ति और योग्यता—अपने को दुर्बल समझने की भावना वास्तव में सच नहीं होती। यह तो मन की एक बीमारी है, जिसके भयंकर परिणाम होते हैं। उसे अपनी शक्ति का पता ही नहीं है। उसने बिना अपने आपको तौले यह समझ रखा है कि वह शक्तिहीन है, बदकिस्मत है। जरा सोचिए कि कोई भी व्यक्ति बदकिस्मती के चक्रव्यूह से कैसे निकल सकता है, जब तक कि उसे स्वयं ही विश्वास न हो कि वह इससे निकल भी सकता है।

शक्ति और योग्यता—जीवन में हर काम सोच-समझकर अपनी शक्ति और योग्यतानुसार ही चुनें और उसे पूर्ण करके ही दम लें, चाहे वह कितना ही मुश्किल क्यों न हों?

शक्ति—अपनी शक्ति को कभी कमतर न समझें, क्योंकि एक छोटी सी चिंगारी भी विशाल वन को जलाकर राख कर सकती है।

शक्ति—जिस प्रकार एक चुंबक लौह धातु को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार व्यक्ति भी अपनी शक्तियों के बल पर सफलता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

शक्ति—विकेंद्रण हम मानसिक स्तर पर कई भागों में बँट जाते हैं, जब स्वाभाविक रूप से हमारी शक्ति विकेंद्रित हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि कई दिशाओं में शक्ति बँट जाने से उसके परिणाम भी बँटे हुए रूप से मिलते हैं। इसलिए जिस भी कार्य को हम करें, उसमें अपनी शत-प्रतिशत शक्ति इस्तेमाल करने का हुनर आना चाहिए।

शक्ति—शक्ति व्यवस्थित ज्ञान से पैदा होती है, लेकिन यह समझ लें कि इसके प्रयोग और इस्तेमाल से यह अंदर से विकसित होती है! कोई बिना किसी शक्ति के रहते भी ज्ञान का चलता-फिरता सार-संग्रह बन सकता है। यह ज्ञान उस हद तक ही शक्ति बनता है, जहाँ तक इसे व्यवस्थित, वर्गीकृत और कार्य करने में लाया जाता है। कुछ बेहतरीन शिक्षित लोग उन लोगों से भी कम सामान्य ज्ञान रखते हैं, जिन्हें मूर्ख कहा जाता है, लेकिन इन दोनों के बीच अंतर यह होता है कि पहले ने, जो भी ज्ञान उनके पास था, उसका इस्तेमाल किया, जबकि दूसरे ने ऐसा किया ही नहीं।

शक्ति—शिक्षा जो व्यक्ति गलत शिक्षा ग्रहण करता है, अपना जीवन असफलता के नाम लिख देता है। उसे हमेशा निराशा घेरे रहती है। उसमें आत्मविश्वास की कमी होगी। वह स्वयं तो भटकता है, दूसरों को भी गलत मार्ग की ओर जाने की प्रेरणा देता है।

शक्तिशाली—दूसरों को कष्ट न देकर उन्हें कष्टों से मुक्ति दिलाना ही व्यक्ति के शक्तिशाली होने का प्रमाण है।

शत्रु का प्रहार—शत्रु-स्वरूप आरसी में हमें हमारी न्यूनता, हीनता, भ्रम, व्यर्थ व्यय इत्यादि दोष यथार्थ रूप में दिखाई देने लगते हैं, बल्कि जितने हममें दोष होते हैं, उनसे भी बढ़कर वह हमें दिखाता है। शत्रु का प्रहार क्या है, मानो किसी डॉक्टर का नश्तर है। जैसे डॉक्टर का नश्तर हमारे शरीर के फोड़े को चीरकर उसकी जड़ तक का मवाद निकालकर उसे स्वच्छ कर देता है, उसी प्रकार शत्रु का प्रहार हमारी बुराइयों और अशक्तियों को चीरकर स्वच्छ कर देता है।

शत्रु—अशांति व क्रोध हमारे जीवन के सबसे बड़े शत्रु हैं। बहुत-से लोगों को अपनी भूलों का जब अहसास होता है, तो हृदय में माफी माँगने की भावना उठती है, लेकिन वे अपनी बात नहीं कह पाते। ध्यान रखिए, जब तक गलती मानने के पीछे सच्ची भावना नहीं होगी, तब तक उसका समुचित असर भी पैदा नहीं होगा। औपचारिकतावश 'सॉरी' कह देने भर से काम नहीं चलता। हमारा रोम-रोम इस बात को कहते हुए प्रतीत होना चाहिए कि वास्तव में हम संबंधित बात के प्रति शर्मिंदा हैं। अत: 'सॉरी' कहने से पहले अपना मन पक्का कर लें। जाँच-परख लें कि आपका मन और वचन एकाकार हैं भी या नहीं?

शब्दकोश—हमारा जीवन शब्दकोश के शब्दों की तरह है। इन शब्दों में से बहुत-से शब्दों की हमें जानकारी नहीं होती और यदि होती भी है तो हम अपने जीवन में बहुत-से शब्दों का इस्तेमाल ही नहीं करते। अत: यह समझ लें कि जितना अधिक शब्दों का प्रयोग आप करेंगे, उतने ही आप सफल कहलाएँगे।

शिकायत—दूसरों की शिकायत करनेवाला व्यक्ति हमेशा अशांत बना रहता है और कभी भी सफल नहीं हो पाता। सफलता और शांति पाने के लिए बेहतर है कि स्वयं को बदलें।

शिक्षा—अर्ध ज्ञान या अपर्याप्त शिक्षा से कोई भी व्यक्ति सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता। आपका अनुभव और ज्ञान ही सफलता का पहला कदम है। इसके बिना तो आप अपनी सफलता के लिए यात्रा शुरू ही नहीं कर सकते। पहले अपनी शिक्षा पूरी करें। अपने विषय पर पूरी तरह से अपना अधिकार होने के बाद ही अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें।

शिक्षा—शिक्षा छोटे से भी मिले तो उसे ग्रहण करना चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने में गर्व नहीं करना चाहिए। अपनी शिक्षा पर गर्व भी नहीं करना चाहिए। गर्व करेंगे तो समाज से कट जाएँगे।

शिक्षा—स्कूल-कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करके जब कोई व्यक्ति समाज में कदम रखता है, उसे समाज में भी भाँति-भाँति के शिक्षक मिलते हैं। उनमें से बहुत कम शिक्षक सही शिक्षा देंगे, किंतु अधिकतर ऐसे होंगे, जो गलत रास्ता

अपनाने के लिए बाध्य करेंगे। लेकिन जिसे सफलता प्राप्त करनी है और जिसने अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित कर रखा है, वह अपने मार्ग से कभी नहीं डिग सकता।

शिक्षित—व्यक्ति एक शिक्षित व्यक्ति वह है, जो यह जानता है कि अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य को हासिल करने के लिए जिन चीजों की जरूरत है, उसे कैसे हासिल किया जाए और ऐसा करते हुए दूसरे के अधिकारों का हनन भी न हो। यह कई लोगों को आश्चर्यचकित कर सकता है कि कई तथाकथित जाने-माने विद्वान् उस योग्यता के पास भी नहीं फटकते, जो शिक्षित कहे जाने के लिए जरूरी है। यह भी कई लोगों को अपार अचरज में डाल सकता है, जो यह सोचते हैं कि उनमें विद्वत्ता की कमी है, जिससे वे खुद को शिक्षित कह सकें।

शिष्टाचार—विनम्रता और शिष्टाचार अंत:करण की अभिव्यक्ति है। समाज, देश और परिस्थिति के अनुसार इसकी अभिव्यक्ति के तरीकों में अंतर हो सकता है, परंतु हर जगह उनका आधार यह है कि दूसरों के प्रति सम्मान, विनम्रता और मधुर स्वभाव वाला व्यवहार में साफ नजर आना चाहिए। इससे जहाँ एक ओर व्यक्ति के अंतर्मन की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर समाज की जागरूकता का भी पता चलता है। शिष्टाचार का मूल मंत्र है—विनम्रता और दूसरों का सम्मान।

शिष्टाचार—शिष्ट व्यवहार से हमारा जीवन भी शिष्ट होने की वजह से माधुर्य से भर जाता है। श्रेष्ठ आचरण को ही सरल भाषा में 'शिष्टाचार' कह सकते हैं। शिष्टाचार से केवल आंतरिक सुघढ़ता नहीं आती, बल्कि नैतिक व सामाजिक जागरूकता का भी बोध होता है। व्यवहार में शिष्टाचार आने से हमारा जीवन विकास की ओर अग्रसर होने लगता है; अवनति से उन्नति, खिन्नता से प्रसन्नता, अपमान से मान की ओर। इसके विपरीत हमें कटुभाषी, असंतोष, निराशाजनकता व खिन्नता जैसे आचरण से असहयोग, उपेक्षा, अपमान जैसी कटुता ही हाथ लगती है। परस्पर स्नेह, सद्भावना, शिष्टता, सभ्यता व उदारता से हम प्रगति-उन्नति के पथ पर चलने लगते हैं।

शिष्टाचार—शिष्ट, नम्र व्यवहार समाज का प्रवेश द्वार है। आपकी सहजता और वाक□पटुता से आपकी साख बढ़ सकती है। आप अपने क्षेत्र में ज्यादा प्रभुत्व कायम रख सकते हैं। वाणी का शिष्टाचार, व्यवहार के शिष्टाचार को जन्म देता है। यदि आपका व्यवहार सभ्य है तो आप जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकते हैं।

शिष्टाचार—शिष्टाचार हमारे जीवन का ऐसा दर्पण है, जिसमें हमारा वास्तविक व्यक्तित्व झलकता है। शिष्टाचार के माध्यम से ही हमारा पहला परिचय समाज को मिलता है। शिष्ट व विनम्र व्यवहार के लिए कुछ सामान्य नियमों का पालन आवश्यक है। हम भाषा और व्यवहार में शिष्टाचार को अपनाएँ। सकारात्मक विचारों को तरजीह दें। जीवनशैली में सादगी और सज्जनता को अपनाएँ। दूसरों की अच्छी बातों का लाभ उठाएँ और अच्छे लोगों की बातों का सम्मान करें।

शिष्टाचार—सभ्य और शिष्ट आचरण का ज्ञान पूर्वजों से विरासत में मिलता है। इसका अभ्यास बचपन से ही कराया जाना उचित है। वैसे तो शिष्टाचार की बातें पाठ्य-पुस्तकें में भी दी गई होती हैं, लेकिन जब शिक्षक और अभिभावक इस दायित्व का अभ्यास अपने आचरण से कराते हैं, तो ही यह हमारे जीवन में उतरता है।

शुरुआत—संकल्प तमाम कोशिशों के बाद मनचाहे परिणाम न मिलने या अपेक्षा पूरा न होने पर भी लक्ष्य से न भटकें और न उसे छोड़ने का विचार करें, बल्कि मजबूत संकल्प और दोगुनी मेहनत के साथ उसे पाने में जुट जाएँ।

शुरुआत—हालाँकि कोई भी व्यक्ति अतीत में जाकर नई शुरुआत नहीं कर सकता है, लेकिन कोई भी व्यक्ति अभी शुरुआत कर सकता है और एक नया अंत प्राप्त कर सकता है।

श्रम— आज के श्रम से कल को सँवारा जा सकता है, निखारा जा सकता है और उसे मनोनुकूल सार्थक बनाया जा सकता है।

श्रोतापन— सुनना एक बड़ी कला है और किसी महान् वार्त्ताकार, अर्थात् वार्त्ता-कुशल व्यक्ति के लिए यह एक अनिवार्य साधन है। हालाँकि यह कुछ विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है, अधिकतर लोग अनुभव करते हैं कि अच्छे श्रोता अच्छे बातूनी भी होते हैं। आपको बीच-बीच में सिर हिलाकर यह जताना और सूचित करना चाहिए कि आप वास्तव में सुन रहे हैं। बातचीत के दौरान कुछ उद्देश्यपरक प्रश्न पूछकर भी आप अपनी दिलचस्पी जाहिर कर सकते हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

सँभालना— व्यक्ति जब गिरकर उठना सीख लेता है, तो वहीं से उसे सफलता का गुरु मंत्र मिल जाता है और वह एक पग पीछे नहीं, अपितु आगे बढ़ता है। गिरकर सँभालना भी सफल व्यक्ति का एक गुण है।

संकल्प और निष्ठा— जब तक व्यक्ति अपनी संपूर्ण शक्ति, क्षमता को अपने लक्ष्य की पूर्ति में नहीं लगाता, तब तक सफलता संदिग्ध ही रहती है। अधूरे मन से, जी चुराकर, बोझा समझकर अपने काम में लगने वाले लोगों को प्राय: असफलता ही मिलती है। किसी काम की इच्छा करने से या लक्ष्य का चुनाव करने से ही काम की पूर्ति नहीं हो जाती। काम के लिए, लक्ष्य के लिए, पूर्ण संकल्प और निष्ठा के साथ प्राणपण से उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए जुट जाना होता है, तभी सफलता की मंजिल पाई जा सकती है। बिना श्रम और प्रयास के सफलता की आशा करना आकाश के तारे तोड़ने के समान खयाली पुलाव ही है। अत: अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए, सफलता के लिए अपनी समस्त शक्ति और क्षमता का उपयोग कीजिए। प्राण-प्रण से उसमें जुट जाइए।

संकल्प— अगर आप सोचते हैं कि मैं पराजित हो जाऊँगा, तो आप पराजित हो गए हैं। यदि आप सोचते हैं कि यह काम मेरे वश में नहीं है, तो आप उस काम को करने का साहस कभी नहीं जुटा पाएँगे। यदि आप सोचते हैं कि मैं जीतने के लिए जी तो रहा हूँ, परंतु जीत नहीं सकता तो आप कदापि विजय हासिल नहीं कर पाएँगे। यदि आप सोचते हैं कि मैं हार जाऊँगा, तो आप हार चुके हैं। कोई भी इनाम जीतने के लिए हमें पहले उसकी प्राप्ति मन में सुनिश्चित करनी होती है। जिंदगी एक ऐसी जंग है, जिसमें अधिक बलवान अथवा अधिक ध्रुवगामी ही सदैव विजयी नहीं होता। देर-सवेर वही व्यक्ति विजयी होता है, जो यह सोच लेता है कि मुझे जीतना ही है। उन्हीं लोगों की तकदीर बदलती है, जो यह सोचते हैं कि वह बदलनी चाहिए।

संकल्प— जो व्यक्ति एक ही कार्य को अपना जीवन संकल्प बनाकर कार्य करता है, उसकी संपूर्ण विजय होती है। किसी उद्देश्य विशेष पर अपनी समस्त शक्तियों को केंद्रित करने से उस कार्य की सिद्धि हेतु किए जानेवाले समस्त साधन ज्ञात हो जाते हैं। जो त्रुटियाँ सिद्धि में बाधा डालती हैं, उनका भी धीरे-धीरे आभास हो जाता है, जिससे उनसे पार पाना आसान होता है। ध्यान रखिए, आधे-अधूरे मन से किए गए कार्यों के परिणाम भी निश्चित ही आधे-अधूरे होते हैं।

संकल्प— जो व्यक्ति पूर्ण पवित्रता से यह संकल्प करता है कि मैं विश्व की समस्त महान् विद्याओं को प्राप्त करने का पात्र हूँ, सभी समृद्धियों को प्राप्त करना मेरा अधिकार है और इस प्रकार निरंतर यह घोषित करता रहे कि मेरा जीवन-लक्ष्य महान् है, जो मेरे आचार-व्यवहार और आवृत्तियों से प्रकट होता है, वह निश्चित ही अपने संकल्पों को पूर्ण करता है।

संकल्प— लक्ष्य एवं कठोर संकल्प के बिना जीवन खेल से बढ़कर नहीं। नित नए मंतव्य बनाते भी गए, तो भी कुछ सिद्ध नहीं होगा। दो खरगोशों के पीछे दौड़ने से एक भी हाथ नहीं आता। स्मरण रखिए, जब हम बहुत सारे

मंतव्यों के साथ किसी कार्य को करना शुरू करते हैं तो उसके परिणाम विचलित अवस्था में ही प्राप्त होंगे।

संकल्प—संकल्पबद्ध रूप से ईमानदारी व सूझ-बूझ के साथ किया गया परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। हमारे कार्यक्षेत्र से अधिक हमारा संकल्प मूल्यवान होता है। वस्तुत: सही सोच व उत्कृष्ट संकल्प ही हमें कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर होने में मदद करते हैं।

संकल्प—सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपने तन, मन और धन की समस्त ऊर्जा एक ही दिशा में व्यय करें। अन्य प्रलोभनों की अवहेलना करके व्यक्ति जब एक ही लक्ष्य को जीवन संकल्प बनाकर कार्य करते हैं, तब उनकी संपूर्ण विजय होती है। उस कार्य के प्रति मन की समस्त शक्तियों को केंद्रित करने से उस कार्य की सिद्धि के लिए समस्त साधनों का ज्ञान हो जाता है।

संकेत—तात्कालिक पराजय या विफलता कुदरत के प्रतीक हैं, जिनके जरिए वह इशारा कर देती है कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। यदि हम जरा भी होशियार हैं तो इन इशारों पर ध्यान देते हैं, एक नया रास्ता चुनते हैं और अंतत: तय किए गए अपने मुख्य लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

संगठित प्रयास—शक्ति का आधार संगठित प्रयास या ऊर्जा है। शरीर और दिमाग को एक समय में किसी एक काम में लगाए बिना ऊर्जा को संगठित नहीं किया जा सकता। एक सामान्य आवर्द्धक लेंस के इस्तेमाल से सूरज की किरणें एक बोर्ड पर केंद्रित होते ही कुछ ही मिनट में एक छिद्र बना देती हैं। वही किरणें अगर केंद्रित न हों तो बोर्ड में जरा-सी गरमी तक पैदा नहीं होगी। इनसान का दिमाग भी काफी हद तक आवर्द्धक लेंस के जैसा है, क्योंकि जिस प्रकार लेंस सूरज की किरणों को एक स्थान पर केंद्रित करता है, उसी तरह दिमाग भी अपने अंदर के तत्त्वों को इकट्ठा कर किसी कार्य को एकजुटता से करने के लिए प्रेरित करता है।

संगति—अगर आप स्वयं के सम्मान के प्रति सचेत रहेंगे तो स्वाभाविक है कि आप ऐसे लोगों के साथ से बचेंगे, जिससे आपके सम्मान को ठेस पहुँचे। जिस प्रकार कड़वा बोलने से चुप रहना अच्छा है, उसी प्रकार कुसंगति से बचने का उपाय यही है कि आप अकेले ही रहें।

संगति—अच्छे लोगों की संगत से अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है, जो सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके विपरीत, यदि गलत संगत करेंगे तो स्वाभाविक है, गलत ही शिक्षा मिलेगी और वह गलत शिक्षा असफलता की ओर ले जाएगी।

संगति—जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को ध्यान में रखता है और भाग्य निर्माण व सफलता चाहता है, वह कभी भी बुरी संगति में नहीं पड़ता। और यदि पड़ भी जाता है तो दूसरों को अपनी संगति से अच्छा बना देता है, उन्हें भी सही राह दिखाता है।

संगति—व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि भाग्य निर्माण व सफलता प्राप्त करने के लिए ध्यान रखे कि वह किस प्रकार के लोगों के साथ उठता-बैठता है? उसकी संगति कैसी है? संगति का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता है। जैसी संगति होगी, वैसे ही गुण व्यक्ति में आएँगे, भले ही वह कितना ही सुसंस्कृत हो।

संगति—संगति का प्रभाव बहुत प्रभावशाली होता है। यदि व्यक्ति अच्छे लोगों की संगति करता है तो उसे अच्छे विचार, अच्छे सुझाव आदि सुनने को मिलते हैं और उस पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है। बुरी संगति व्यक्ति पर बुरा प्रभाव डालती है।

संगति—स्वच्छ जल में थोड़ी-सी भी गंदगी डालने पर वह मैला हो जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति का हृदय भी स्वच्छ व निर्मल होता है। उसे जिस प्रकार का संग मिलता है, जैसे विचार उसे प्रभावित करते हैं, वह वैसा ही हो

जाता है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कुसंगति के मार्ग की ओर देखे भी नहीं। कुसंगति के लिए मित्र आदि के दबाव से बचें। उन्हें भी इस दुर्गुण से दूर रहने को प्रेरित करें।

संघर्ष— अचानक अथवा बिना परिश्रम किए मिलनेवाली विजय कोई महत्त्व नहीं रखती। हम उसका मूल्य नहीं जान पाते जबकि वह विजय आनंददायक होती है, जो खूब लड़ने से प्राप्त होती है। मनुष्य की बल-वृद्धि इच्छा शक्ति के उस संघर्ष का फल है, जिसमें कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ता है। हम इसे प्रयत्न भी कह सकते हैं।

संघर्ष— एक प्रेरक कहावत है, संघर्ष से सफलता। यह वाक्य हमें बड़ी शक्ति देता है, जिंदगी में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। जीवन में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं और कभी-कभी तो इतने अप्रत्याशित ढंग से कि सँभलने का भी मौका नहीं मिलता। यही तो जीवन की ठोकरें हैं, जिन्हें खाकर ही हम सँभलना सीख सकते हैं। उनसे बचने की कोशिश तो करना है, पर ठोकर कहते ही उसे हैं, जो सावधानी के बाद भी लगती है और आखिर एक नई सीख भी दे जाती है।

संघर्ष— जब तक आप सफल होने के लिए जीवन-मृत्यु जैसा तीव्र संघर्ष नहीं करेंगे, तब तक सफल नहीं हो पाएँगे अर्थात् सफलता पाने के लिए तन, मन और पूरी ईमानदारी से संघर्ष करना होगा। सफल होने का यही एकमात्र रहस्य है और कुछ नहीं।

संघर्ष— प्रत्येक व्यक्ति के सीने में यह अरमान होता है कि वह बड़ा काम करे। कुछ नया करे। जब हम सुनियोजित तरीके से अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं, तो संघर्ष करने के लिए एक अच्छा-खासा रास्ता मिल जाता है। जब हम लक्ष्य को छू लेते हैं, तो हमारा संघर्ष भी स्वत: पुरस्कृत हो जाता है। उधर, प्रतिफल की आशा हमें अंत तक कार्य करने तथा संघर्ष करने के लिए मदद प्रदान करती है।

संघर्ष— हर सफलता के लिए संघर्ष की जरूरत होती हैं। धैर्य रखें, सकारात्मक रहें।

संतुलन— जीवन में संतुलन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अगर लगातार स्वयं से कठोरता से काम लेंगे तो जल्दी ही थक जाएँगे। इससे आपकी कार्य क्षमता में गिरावट आने लगेगी और काम करते समय गलत निर्णय लेने से भी कार्य क्षमता प्रभावित होगी।

संतुलन— बहुत बार ऐसा होता है कि हम माहौल जैसा चाहते हैं, वैसा हमें नहीं मिल पाता। कई बार हमारी अपेक्षा के मुताबिक भी जब हमें मान-सम्मान या अहमियत नहीं मिलती, तब भी हम उखड़ जाते हैं, परंतु हमें विपरीत-से-विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को संतुलित रखना चाहिए तथा मुसकराते हुए प्रत्येक व्यक्ति से बात करनी चाहिए।

संतुलन— बहुत से लोग हैं, जिन्हें हम महान् समझते हैं, लेकिन अपने समय में उन्हें भी भीषण समस्याओं को पार करना पड़ा था। हर कोई उचित आत्मसम्मान की इच्छा रखता है। आपको दूसरों की अपेक्षा खुद को श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए, बल्कि अपनी क्षमताओं में विश्वास रखना चाहिए। आत्मविश्वास में कमी आपको रोके रखेगी और कठिन कार्य नहीं करने देगी। अति-विश्वास आपको पर्याप्त तैयारियाँ करने से पहले ही परिस्थितियों से जूझने की ओर धकेल देगा। विनयशीलता और आत्मविश्वास के बीच संतुलन आपको पूर्णता प्रदान करता है।

संदेह— जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता है। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। संदेह स्वाभाविक रूप से हमारे मनन और चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। संदेह एक तरह का अविश्वास है, जो हमें दूसरे लोगों से तोड़ने का कार्य करता है।

संदेह—जिस समय हमारे मन में संदेह पैदा होता है, उस समय हमसे कोई रचनात्मक कार्य प्रभावशाली ढंग से नहीं हो सकता। हमें चाहिए कि हम संदेह को तुरंत त्याग दें, क्योंकि वह हमारे सामने उसी संकट को ला खड़ा करता है, जिससे हम भयभीत रहते हैं। संदेह हमारी संकट-निरोध शक्ति को क्षीण करता है। हमारे आत्मविश्वास और कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए हमें जिस चिंतन की आवश्यकता होती है, उसको भी कमजोर करने का कार्य करता है।

संदेह—जो व्यक्ति अपनी योग्यता पर संदेह करता है, वह न किसी अन्य का भला कर सकता है और न ही स्वयं को लाभ पहुँचा सकता है।

संदेह—दुनिया में अपना स्थान बनाने के लिए वीरतापूर्वक लड़ें। हार को बहादुरी के साथ सहन करें। वीर पुरुष का स्वभाव उसके निकटवर्ती लोगों पर जादू का-सा प्रभाव डालता है। कोई भी महान् कार्य उन व्यक्तियों द्वारा संपन्न नहीं हो सकता, जो उस कार्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

संदेह—संदेह और संशय हमारी कामयाबी के मार्ग के अवरोधक हैं। यह हमारे मन में एक प्रकार की अप्रत्यक्ष चिंता को जन्म देता है। फलत: हमारा अचेतन मन उस कार्य विशेष को करने के प्रति अपेक्षित आदेश ग्रहण नहीं कर पाता। अनमने मन से जब हम किसी कार्य को करते हैं तो वह कभी भी ठीक नहीं होता। व्यावहारिक रूप से जिस व्यक्ति के सामने हमारा वह कार्य प्रस्तुत होता है, वह हमारी योग्यता को उतनी ही सीमा रेखा के अंतर्गत मापकर देखता है। हमें ध्यान रखना चाहिए कि जीवन और कार्यक्षेत्र की चुनौतियों के बीच बहानेबाजी के लिए कोई गुंजाइश कभी भी नहीं होती।

संदेह—संदेह हमारी संकट-निरोध शक्ति को क्षीण करता है। संदेह हमारे आत्मविश्वास और कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए हमें जिस चिंतन की आवश्यकता होती है, उसको भी कमजोर करने का कार्य करता है। जब तक मन अशांत है, तब तक वह कभी भी प्रभावशाली ढंग से नहीं सोच सकता। वह किसी भी रचनात्मक विचार या कार्य को जन्म नहीं दे सकता। संदेह स्वाभाविक रूप से हमारे मनन और चिंतन करने की प्रक्रिया को भी निष्क्रिय बनाता है और हमारी शक्ति को भी कम करता है। इसका त्याग अवश्यंभावी है।

संदेह—हम दिन भर जो सोचते हैं और करते हैं, वही निर्बाध रूप से हमारे भविष्य को शक्ल दे रहा होता है। वास्तव में, सच्ची उपलब्धि न तो संग्रह में है, न प्राप्ति में अपितु सृजनशीलता में है। सृजनशीलता संदेह के साथ कभी भी नहीं हो सकती। बहुत बार अनावश्यक सोच-विचार एवं संदेह करते रहने से स्वास्थ्य और भी बिगड़ जाता है। संदेह से भरा व्यक्ति जब कभी बीमारी के क्षणों में होता है तो काल्पनिक संकटों एवं पलायनवादी प्रवृत्ति से केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली प्रभावित होती है। चूँकि बीमार व्यक्ति लेटे रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकता, अत: इस तरह की सोच से तनाव पैदा होता है, उससे स्वास्थ्य को भयंकर हानि पहुँचती है।

संपर्क—सफलता के लिए लोगों से सतत संपर्क बनाए रखना जरूरी है। लोगों से लंबे समय तक संपर्क बनाए रखना हर किसी के बस की बात नहीं है। रिश्तों की सँभाल वही लोग कर पाते हैं, जो लंबे समय तक बेहतर रिश्ते बनाने में यकीन करते हैं। बाकी लोग तो अपना काम निकलने पर भूल जाते हैं। वही व्यक्ति अपनी निजी और पेशेवर दोनों, ही प्रकार की लाइफ में उन्नति करता है या खुश रहता है, जिसका नेटवर्क अच्छे व गुणी लोगों से जुड़ा होता है। ये संबंध उस वक्त हमारे लिए संजीवनी का काम करते हैं, जब एक के बाद एक आती परेशानियों के वार से हम मूर्छित हो जाते हैं।

संप्रेषण क्षमता—दुनिया की तमाम शोधों ने यह साबित कर दिया है कि किसी भी व्यक्ति की सफलता में पचास

प्रतिशत हिस्सा उसकी संप्रेषण क्षमता का होता है। आपके पास कितनी ही योग्यता, ज्ञान और अनुभव हो, लेकिन इन सबको अभिव्यक्त करने की क्षमता आपमें यदि नहीं है तो आप सफलता का स्वाद कभी चख ही नहीं सकते।

संभव— कुछ भी किया जा सकता है। सबकुछ संभव है। जब आप यह विश्वास कर लेंगे कि हर समस्या का समाधान संभव है, तो आपका दिमाग समाधान खोजने में लग जाता है और आप समाधान पा लेते हैं। मस्तिष्क को पुरानी, पुरातनवादी सोच से बाहर निकालकर सदैव नई सोच एवं विचारों को ग्रहण करनेवाला बनाएँ। सदा नए प्रयोग करने के लिए तैयार रहें। अपने प्रत्येक कार्य में प्रगतिशील रहें।

संभव— संभव की सीमाओं को जानने का एक ही तरीका है कि उनसे थोड़ा आगे असंभव के दायरे में निकल जाइए।

संभावना— जब तक किसी व्यक्ति द्वारा अपनी संभावनाओं से अधिक कार्य नहीं किया जाता, तब तक उस व्यक्ति द्वारा वह सबकुछ नहीं किया जा सकेगा, जो वह कर सकता है।

संभावना— जीवन संभावनाओं से भरा है। जीवन में संभावनाओं को कभी भी नहीं नकारना चाहिए। हो सकता है, कल तक आपको जिस काम को करने में दिक्कत आती थी, आज वह उतना मुश्किल न लगे, आप उसे आसानी से कर सकें। ऐसी ही बहुत सारी बातें, हालात, चीजें या लोग हमें पसंद नहीं होते और ये सब हमारी सफलता की राह में रोड़ा बन जाते हैं।

संभावना— संयम से जब भी कोई काम न बने, मन टूट जाए, असफलता सामने आ जाए, तो उस समय अपने मन और मस्तिष्क को एकदम स्थिर रखें। स्वयं को शांत रखें। उस समय बौखला जाने या उदासीन होकर अथवा निराश बैठ जाने से काम तो नहीं बनेगा। संयम से काम लें। इस बात को तय कर लें कि जो हो गया है, अब उसको बदला नहीं जा सकता।

संवाद— अगर आपको सफलता प्राप्त करनी है तो आपको लोगों के सामने खड़े होकर उनका तथा उनके प्रश्नों का उत्तर देना होगा। लोगों के सामने अपने सुझावों तथा विचारों को रखने से उनके और आपके बीच एक नेटवर्क बनता है। एक अच्छा नेटवर्क या लोगों से लोगों का संवाद सफलता पाने के लिए बहुत आवश्यक है, क्योंकि इस तरह आप अपनी बात को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

संवेग— नकारात्मक अथवा निराशाजनक संवेगों के अंतर्गत ईर्ष्या, द्वेष, चिंता, तनाव, दु:ख, भय, हीन-भावना, क्रोध, असुरक्षा, हिंसा, लोभ, कुपथ, मोह, अहंकार, शोषण, दोषारोपण, अपराध, निंदा, आलस्य असंयम, छल, प्रपंच, षड्यंत्र तथा दुर्भावना आदि भावनाएँ आती हैं जबकि सकारात्मक या आशाजनक संवेग हमें शांति, स्नेह, सौहार्द, प्रेम, आनंद, सुख, आत्मविश्वास, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, त्याग, दान की भावना, कर्मठता, विनम्रता, प्रशंसा, समर्पण, गुणों का अनुसरण, समय का सदुपयोग, निर्भीकता, निष्पक्षता, उत्साह, संयम, सफलता आदि के मार्ग पर प्रशस्त करते हैं।

सकारात्मक छवि— नकारात्मक छवि आपकी सफलता में बाधा बनकर सामने आती है, जो आपके सपनों और उद्देश्य को प्रभावित करती है। आप काम आरंभ करने से पहले ही निराश हो जाते हैं। अपनी छवि के बारे में यह सोच स्वयं आपके द्वारा विकसित की गई है, जिसे केवल आप अनुभव करते हैं। ऐसे समय में आप खुद से कहने लगते हैं कि मैं अच्छा नहीं हूँ। मुझे सही लोगों की पहचान नहीं। इन परिस्थितियों में आपको अपनी सोच नकारात्मक से सकारात्मक में बदलने का प्रयास करना चाहिए, जिससे आप हर कार्य में निपुण हो जाएँगे।

सकारात्मक दृष्टिकोण— जब हताशा से भरे लोग आप पर बार-बार हमला करते हों तो ऐसी स्थिति में खुद पर

काबू करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में एकाग्रचित्त और उत्साहित रहना भी कठिन हो जाता है। विभिन्न तरह के लोग अपने द्वारा किए गए व्यवहार या असहयोगी शब्दों के प्रति अलग-अलग सिद्धांत अपनाते हैं। ऐसा आपके परिवार और दोस्तों के बीच भी होता है। यह सोचना अव्यावहारिक ही होगा कि आपके सपने को पूरा करने में सभी लोग आपकी सहायता करेंगे। जरूरी यह है कि आप किसी से सहयोग न मिलने की स्थिति के लिए सदा तैयार रहें। जीवन की कठिन परिस्थितियों के लिए आपको शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। यदि कोई आपको नीचा दिखाने की कोशिश करता है तो इससे परेशान हुए बिना ऐसी बातों को नजरअंदाज कर दें। इन बातों पर ध्यान देने की बजाय अपने दृष्टिकोण को आगे रखने का प्रयास करें।

सकारात्मक दृष्टिकोण—सकारात्मक दृष्टिकोण से हमारे जीवन पथ पर उपलब्धियों के दीप स्वत: ही प्रज्वलित होने लगते हैं। अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सच्चाई के साथ उपयोग करनेवाला व्यक्ति कभी उद्विग्न नहीं रहता। उसके जीवन का लक्ष्य एकदम स्पष्ट होता है।

सकारात्मक मनोवृत्ति—सकारात्मक मनोवृत्ति खुशहाली और सफलता दिलाती है तथा आपका संपूर्ण जीवन बदल सकती है। अगर आप जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखते हैं, तो आपके पूरे जीवन में प्रकाश भर जाता है। यह प्रकाश न केवल आपको और जीवन के बारे में आपके नजरिए को प्रभावित करता है, बल्कि आपके समस्त पर्यावरण और आपके आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करता है।

सकारात्मक मनोवृत्ति—हमारे व्यक्तित्व में सकारात्मक मनोवृत्ति बहुत महत्त्व रखती है। संकीर्ण मानसिकता वालों को कोई पसंद नहीं करता। जीवन में उसी व्यक्ति को सुशील समझा जाता है, जिसकी मानसिकता सकारात्मक एवं स्वस्थ होती है। व्यक्ति का वास्तविक आकर्षण उसकी शक्ल-सूरत में नहीं, बल्कि उसके अच्छे कार्य एवं सद्गुणों में झलकता है। इसीलिए हमें अपने व्यक्तित्व का विकास करने हेतु अपने मानसिक दृष्टिकोण में सुधार करना चाहिए।

सकारात्मक मानसिकता—सकारात्मक मानसिकता के विकास में सहायक तत्त्व हैं—खुशी का चुनाव, जीवन का उज्ज्वल पक्ष देखना, आशावादी बनना और आशापूर्ण जीवन जीना, मुसकराते रहना, नकारात्मक सोच-विचार और चिंताओं की व्यर्थता व निष्फलता पर ध्यान न देना, प्रेरणादायक कहानियाँ पढ़ना, अपने विचारों पर नियंत्रण रखना, एकाग्रता और चिंतन-मनन सीखना।

सकारात्मक मानसिकता—सकारात्मक मानसिकता के साथ आप जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखते हैं, आशावादी हो जाते हैं और अच्छे-से-अच्छा घटने की आशा करते हैं। यह निश्चित रूप से एक ऐसी मनोदशा है, जिसे विकसित और सुदृढ़ किया जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आपको जीवन भर सकारात्मक सोच पर चलना चाहिए। यह एक जीवन-पद्धति है और एक ऐसी तकनीक है, जिसे आपको अपने दैनिक जीवन में अवश्य शामिल करना चाहिए, अगर आप परिस्थितियों को बदलने या अपने लक्ष्यों को हासिल करने का इरादा रखते हैं।

सकारात्मक वातावरण—यह जीवन एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें हम अनुभव और जरूरी सबक प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा न सिर्फ हम अपने अस्तित्व में बदलाव ला सकते हैं, वरन् अपने चारों तरफ एक सकारात्मक वातावरण फैला सकते हैं। हमें जीवन को ऋणात्मक प्रवृत्तियों में बरबाद नहीं करना चाहिए तथा व्यर्थ के दोषारोपण, अपने पर तरस खाने और जीवन की असमानताओं की शिकायत करने में नहीं गँवाना चाहिए। जब तक जीवन है, उसे बेहतर बनाएँ।

सकारात्मक विचार—जब हमारी मनोवृत्ति और हमारा व्यवहार सकारात्मक होता है, हम केवल सुखद अनुभूतियों

और रचनात्मक कल्पनाओं को अपने मन में काम करने देते हैं। हम अपनी अंतरंग दृष्टि से यह भी स्पष्ट देख लेते हैं कि हम जीवन से वास्तव में क्या चाहते हैं और वह किस तरह घटित होना चाहिए। सकारात्मक सोच की सही शक्ति को इस तरह समझ सकते हैं कि यह आपको अपना जीवन आपकी अधिकतम क्षमता तक जीने का अवसर देती है और नकारात्मक मानसिकता को आपको नीचे खींचने का मौका नहीं देती।

सकारात्मक विचार—जिन लोगों ने अपने जीवन में कामयाब होने का ख्वाब देखा है, उन्हें यह बात निश्चित कर लेनी चाहिए कि सकारात्मक विचारों के पंख लगाकर ही वे सफलता के स्वच्छंद गगन में उड़ान भर सकते हैं। नकारात्मक विचारों से अपना दामन छुड़ाए बिना हम सफलता की मंजिल तक नहीं पहुँच सकते। दूषित व बुरे विचार हमारी कार्यक्षमता को तो प्रभावित करते ही हैं, नकारात्मक विचार उत्साह व आत्मविश्वास को घटाते हैं।

सकारात्मक विचार—जीवन को सकारात्मक सोच एवं ऊर्जा के साथ समझने का प्रयास किया जाना चाहिए, क्योंकि जब हम जीवन को समझ पाते हैं, तब तक उम्र के उत्तरार्द्ध में पहुँच जाते हैं। जीवन हमें एक बहुमूल्य ईश्वरीय उपहार है, जिसे हमें श्रेष्ठतम सिद्ध करते हुए जीना चाहिए। जीवन का यथेष्ट लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए और लक्ष्य की ओर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हम देखेंगे, हमारे जीवन की शैली ही बदल गई है। हमारा दृष्टिकोण ही बदल गया है और हम देखेंगे, दृढ़ आत्मविश्वास एवं सफलता के नए आयामों ने हमारे जीवन के सुनहरे द्वार खोल दिए हैं।

सकारात्मक विचार—प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने का अच्छा तरीका यह है कि आप सकारात्मक और विजय प्राप्त करनेवाले विचारों से काम लें। सकारात्मक विचारों पर अडिग रहने का मतलब होता है—आधी जंग जीत लेना। सकारात्मक विचारों को अपनाकर ही सफलता और असफलता के बीच के अंतर को पाटा जा सकता है। सकारात्मक व्यवहार हमें सभी तरह की परिस्थिति से वास्तविक मूल्यांकन की क्षमता प्रदान करता है, वहीं दूसरी तरफ नकारात्मक सोच बड़ी-बड़ी बाधाएँ खड़ी कर देता है। कई बार ये बाधाएँ वास्तविक होती हैं तो कई बार मात्र काल्पनिक।

सकारात्मक विचार—भय, चिंता और परेशानी जैसे नकारात्मक विचार न सिर्फ पाचन क्रिया के लिए आवश्यक रसों के प्रवाह को रोकते हैं, बल्कि वे शरीर के विभिन्न अंगों तक तंत्रिका ऊर्जा ले जानेवाली तंत्रिका लाइन में भी गाँठ बाँध देते हैं। सकारात्मक विचार ऐसी गाँठों को खोल देते हैं और तंत्रिका ऊर्जा को प्रवाहित होने देते हैं।

सकारात्मक विचार—सकारात्मक विचार वाले लोग समाज के अन्य व्यक्तियों के मुकाबले अधिक सफल, लोकप्रिय व प्रभावशाली होते हैं। लोग उनकी स्वयं ही मदद करने को उत्सुक रहते हैं। उनके बड़े-से-बड़े व जटिल कार्य भी मामूली से प्रयासों से सिद्ध होते जाते हैं।

सकारात्मक विचार—सकारात्मक सोच एक विशाल वैयक्तिक गुण है और सफलता की कुंजी है। सकारात्मक मनोवृत्ति जीवन के दैनिक क्रियाकलापों को अधिक आसानी से सँभालने में सहायक होती है, आशावाद को जन्म देती है और आपके लिए चिंता तथा नकारात्मक सोच से बचकर चलना अधिक आसान बना देती है। अगर आप इसे एक जीवन-शैली के रूप में अपना लेते हैं तो यह आपके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाती है और लोगों को अधिक खुशहाल, अधिक समझदार और अधिक सफल बनाती है।

सकारात्मक विचार—सकारात्मक सोच का विकास आपको अपनी सोच व बोलचाल शब्दकोश में से 'असंभव', 'नहीं कार्य करेगा', 'यह नहीं हो सकता' और 'इसको करने का कोई फायदा नहीं' जैसे शब्दों को बाहर निकाल फेंकना होगा।

सकारात्मक विचार—सकारात्मक सोच सभी तरह के सुखों का आरंभिक बिंदु है, चाहे वे सुख भौतिक हों या वैसे सुख हों, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। सकारात्मक सोच से सकारात्मक इच्छावाली वस्तुएँ हासिल होती हैं जबकि नकारात्मक सोच से गरीबी और बदहाली समेत कई अनचाही वस्तुएँ हासिल होती हैं।

सकारात्मक विचार—हर अँधेरी रात के बाद सुबह अवश्य आती है। सदैव आशावादी दृष्टिकोण रखने से सकारात्मक सोच विकसित होती है। किसी भी बुरी आदत को अच्छी आदत में बदलने के लिए नियमित अभ्यास तथा आत्मचिंतन पर्याप्त होता है, जो बुरी आदत को अच्छी आदत में बदलने में सहायक होता है। जरूरत है तो मात्र चिंतन की, दृष्टिकोण की एवं सकारात्मक सोच की।

सकारात्मक विचार—हर कोई अपने जीवन में किसी-न-किसी से प्रेरित होता है। ऐसे लोगों से प्रेरणा लीजिए, जो जीवन को जिंदादिली और खुशहाली से जीना जानते हैं। हर व्यक्ति के भीतर कुछ-न-कुछ अच्छाइयाँ जरूर होती हैं। कोई व्यक्ति व्यवस्थित होता तो कोई धैर्यवान, कोई सकारात्मक सोच रखता है, तो कोई जागरूक रहता है। आप उन गुणों, अच्छाइयों से प्रेरित होकर अपने भीतर भी सकारात्मक भाव पैदा करें।

सकारात्मक विचारधारा—सकारात्मक विचारधारा के लोगों को समाज में सामंजस्य स्थापित करने में कोई अड़चन नहीं होती। यदि हम अपने जीवन से विरोधाभासों को तिरोहित करने में कामयाब हो जाएँ तो यह सामंजस्य और भी बेहतर हो सकता है।

सकारात्मक व्यवहार—जो भी व्यक्ति भाग्य निर्माण कर अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सभी तरह की सुख-सुविधाओं का मालिक होने का मतलब सिर्फ खुशियाँ ही आपके हिस्से में हों, जरूरी नहीं है। सकारात्मक प्रवृतिवाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपनी सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

सकारात्मक व्यवहार—जो भी व्यक्ति विजेता बनना या अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सकारात्मक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपनी सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

सकारात्मक व्यवहार—नकारात्मक विचारों से स्वयं के साथ-साथ संबंधियों को भी मानसिक ठेस पहुँचती है। सकारात्मक व्यवहार से ही हम इस तरह की बातों से पीछा छुड़ाते हुए स्वयं को नई परिस्थितियों के लिए तैयार कर सकते हैं, इसलिए स्वयं को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए। मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित रखता है। इस तरह के व्यक्ति न केवल स्वयं को किसी घटना का शिकार होने से बचाते हैं, बल्कि उन समस्याओं पर विजय भी प्राप्त करते हैं।

सकारात्मक व्यवहार—सकारात्मक विचारों पर अडिग रहने का मतलब है—आधी जंग जीत लेना। सकारात्मक विचारों को अपनाकर ही सफलता और असफलता के बीच के अंतर को पाटा जा सकता है। जरूरी नहीं है कि हर परिस्थितियों में सफलता ही मिले, लेकिन हर परिस्थिति से कुछ-न-कुछ लाभ तो लिया ही जा सकता है। सकारात्मक व्यवहार हमें सभी तरह की परिस्थिति से वास्तविक मूल्यांकन की क्षमता प्रदान करता है।

सकारात्मक सोच— कार्य के प्रतिकूल परिणाम आने पर भी हिम्मत व हौसला न छोड़ें। सकारात्मक सोच एवं नजरिए से आपकी भावनाएँ भी सकारात्मक होंगी और सकारात्मक कदम उठाने में भी सक्षम बनेंगे। सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए नियमित रूप से ध्यान लगाएँ, सकारात्मक सोच बढ़ानेवाला साहित्य पढ़ें तथा ऐसे लोगों की संगत करें, जो आपको सदैव प्रोत्साहित करें।

सकारात्मक सोच— चीन की एक नीति कथा है। उत्तरी चीन में एक बुजुर्ग रहता था, जो उत्तरी पहाड़ का महामूर्ख कहलाता था। उसके घर के सामने दो बड़े पहाड़ थे। आने-जाने में बाधा थी। सो, उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और उनके हाथों में फावड़ा थमाकर दृढ़ता से दोनों पहाड़ों को काटना आरंभ कर दिया। उन्हें देखकर कस्बे के लोगों ने उनकी खिल्ली उड़ाई, "तुम सचमुच महामूर्ख हो। इन बड़े-बड़े पहाड़ों को खोदना तुम बाप-बेटों के बस से बाहर है।" कथित मूर्ख बुजुर्ग ने कहा, "मेरी मृत्यु के बाद मेरे बेटे यह कार्य जारी रखेंगे, बेटों के बाद पोते और पोतों के बाद परपोते। इस प्रकार, पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहाड़ काटने का सिलसिला जारी रहेगा।" उसने आगे जोड़ा, "हालाँकि पहाड़ बहुत ऊँचे हैं, लेकिन हमारे इरादों और हौसलों से अधिक ऊँचे तो नहीं हो सकते। हम निरंतर उन्हें जितना खोदते जाएँगे, वे उतने ही छोटे होते जाएँगे।" सुनकर लोग दंग रह गए कि जिसे वे महामूर्ख समझते थे, उसने सफलता के मूलमंत्र का रहस्य बता दिया। दृढ़ संकल्प, कड़ी मेहनत, लगन के साथ-साथ सकारात्मक सोच के जरिए ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

सकारात्मक सोच— जिज्ञासा व्यक्ति को सकारात्मक बनाती है। जिज्ञासा पैदा होना व्यक्ति के सकारात्मक होने की निशानी होती है। सकारात्मक सोच व्यक्ति से बड़ा कार्य कराती है, जबकि नकारात्मक सोच गर्त में धकेलती है। सकारात्मक सोच महानता का मार्ग प्रशस्त करती है। सकारात्मक सोच के बल पर ही बड़े कार्य कर नाम कमाया जा सकता है, इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

सकारात्मक सोच— भाग्य निर्माण व सफलता चाहनेवालों के लिए सकारात्मक सोच का गुण होना लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। सोच सर्वदा सकारात्मक होनी चाहिए। नकारात्मकता व्यक्ति को असफलता का मुँह दिखाती है। सकारात्मक रवैया कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा देता है और व्यक्ति पूर्ण उत्साह से लक्षित कार्य को करता है। व्यक्ति किसी भी कार्य को तभी आसानी से पूरा कर सकता है, जब वह उस कार्य के प्रति रुचि रखता हो, उसके प्रति सकारात्मक हो।

सकारात्मक सोच— सकारात्मक सोच एक विशाल वैयक्तिक गुण है और सफलता की कुंजी है। प्रत्येक स्थिति में सकारात्मक पक्ष को देखने की मानसिकता बनाएँ। अगर आप यह सीख लें, तो आपके लिए यह सबसे अच्छी बात होगी। सकारात्मक मनोवृत्ति जीवन के दैनिक क्रिया-कलापों को अधिक आसानी से सँभालने में सहायक होती है। यह आपके जीवन में आशावाद को जन्म देती है और आपके लिए चिंता तथा नकारात्मक सोच से बचकर चलना अधिक आसान बना देती है। अगर आप इसे एक जीवन-शैली के रूप में अपना लेते हैं तो यह आपके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाती है और लोगों को अधिक खुशहाल, अधिक समझदार और अधिक सफल बनाती है।

सकारात्मकता— जो भी व्यक्ति विजेता बनना या अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहता है, उसे ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान सकारात्मक व्यवहार पर केंद्रित करना चाहिए। इससे सभी तरह की उपलब्धियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। सकारात्मक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति सीमित आय में धनी व्यक्ति की अपेक्षा ज्यादा खुश रह सकता है। जीवन को बदलने के लिए हमें खुद के बारे में बनाई गई धारणाओं को भी बदलना पड़ता है। जब हम अपनी सोच, व्यवहार और मान्यताओं में बदलाव लाते हैं तो पूरा जीवन स्वत: ही बदलने लगता है।

सकारात्मकता—ज्यादातर लोग जीवन में घटित केवल बुरी घटनाओं पर चिंतन करते हैं; सकारात्मक घटनाओं में खुद का योगदान नहीं मानते। ऐसे लोगों के मन में यह चीज घर कर जाती है कि बुराई अच्छाई से ज्यादा बलवान है और वे हमेशा बुराई से डरते हैं। आपको रास्ते में पड़ी हर रस्सी को साँप समझने की भूल से बचना होगा। सकारात्मक बनिए, अच्छे की कल्पना कीजिए। जब तक डर सामने आकर खड़ा न हो जाए, तब तक मन को मजबूत रखिए और कोशिश करते रहिए।

सकारात्मकता—हम में से अधिकांश का यह स्वभाव बन गया है कि अच्छाइयों को हम नजरअंदाज करते जाते हैं और बुराइयों पर अधिक ध्यान देकर निराश होते चले जाते हैं। हमारे चारों ओर प्रतिक्षण बहुत कुछ अच्छा भी घटित हो रहा है। बुराइयों को अनदेखा कर, तमाम पूर्वाग्रहों से रहित होकर अपना ध्यान अच्छाइयों एवं सकारात्मकता पर केंद्रित करें। आप पाएँगे कि आपके चारों और अच्छाइयों एवं सकारात्मकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाएगी।

सक्रियता—व्यक्ति जब कोई भी प्रयत्न करता है तो उसका सुपरिणाम चाहता है, सफलता चाहता है। जिस प्रयत्न का कोई परिणाम न आए, जिस पुरुषार्थ का कोई फल न हो, उसके प्रति हमारे मन में बहुत आकांक्षा और जिज्ञासा नहीं जागती, लेकिन बिना सक्रियता के कुछ नहीं हो सकता। हाथ-पर-हाथ रखे बैठे रहे, तो क्या मिलेगा? हमारी सफलता इस बात में है कि हम सावधान रहकर, जो भी काम हमारे हाथ में हो, उसे अच्छी तरह पूरा करें।

सच बोलना—सच बोलने की आदत बना लेना बहुत बेहतर है, हालाँकि यह कठिन कार्य है। सच बोलने की आदत जीवन में आपको बहुत सारी मनोव्यथा और विपत्ति से बचा लेगी। सच अकसर उजागर हो जाता है, भले ही हम चाहें या न चाहें तथा झूठ बोलने से स्थिति और जटिल हो जाती है तथा हम दूसरों की निगाह में बुरे बन जाते हैं।

सच्चाई—सच्चाई एक ऐसा गुण है, जो आपके समय को सुव्यवस्थित करता है और आप कम समय में अधिक उपयोगी और लाभदायक कार्यों को करने में सफल रहते हैं।

सच्ची उपलब्धि—सच्ची उपलब्धि न तो संग्रह में है, न प्राप्ति में, अपितु सर्जनशीलता में है। हम सही मायनों में अपने मस्तिष्क तथा अपनी आंतरिक ऊर्जा पर ही निर्भर करते हैं। सच तो यह है कि मनुष्य अपना सितारा खुद है और वह आत्मा जो इनसान को ईमानदार तथा परिपूर्ण बना दे, उसके आगे नतमस्तक हो जाते हैं—सारी ज्योति, सारा प्रभाव, सारा भाग्य। हमें रचनात्मकता की जलधारा को खूब वेग से बहाना चाहिए, फिर वह दिन भी आएगा, जब यही गंगा उपलब्धियों के महासागर से जा मिलेगी।

सजगता—प्रत्येक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति को इस बारे में सचेत रहना चाहिए कि वह अपने समय का सदुपयोग करते हुए अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करे। इस तरह की योजना बनाने की आवश्यकता है कि आपका समय भी व्यर्थ न हो और कार्य भी अपने वास्तविक स्वरूप में संपन्न हो सकें। अपनी क्षमताओं तथा कौशल को सचेत रखिए। जो क्षमताएँ आपके पास हैं, वे मात्रा में चाहे कितनी भी कम क्यों न हों, उनका कारोबार कीजिए। आप देखेंगे कि वे बढ़ने लगी हैं। हम बहुत बार अपनी क्षमताओं की वजह से नहीं, अपितु उद्देश्य की कमी तथा सचेतनतापूर्वक प्रदर्शन न कर पाने की कमी के कारण असफल हो जाते हैं। कार्य करने की किसी भी शैली को स्थायी तौर पर अपना ढर्रा मत बनाइए। उसमें निरंतर गुणवत्ता व सुधार के प्रयास कीजिए। आपके प्रयोग जब लोगों के सामने प्रकट होंगे तो वे आपको स्वीकारेंगे, सराहेंगे तथा चाहेंगे।

सजगता—सचेत रहकर आप अपने लक्ष्य तक अधिक आसानी से पहुँचते हैं और जो भी करते हैं, उसे श्रेष्ठ ढंग से करते हैं। जब भी कोई कार्य श्रेष्ठता के मापदंड को ध्यान में रखकर किया जाता है, तो स्वाभाविक रूप से

उसकी गुणवत्ता में बढ़ोतरी हो जाती है। सर्वोच्च गुणवत्ता ही हमें औरों से अलग करती है तथा हमारी कामयाबी की मंजिल को तय करती है। सचेतनता का उपयोग हम इस तरह भी कर सकते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य को हमें सबसे पहले करने की आदत डालनी चाहिए। जब हम सचेतनतापूर्वक कार्य करते हैं तो हमारी दिनचर्या स्वत: ही इस तरह की होती चली जाती है कि हम कार्यों को उनके महत्त्व के क्रम में निपटाना शुरू करते हैं और इस तरह उनसे मिलनेवाले नतीजे अधिक लाभप्रद और संतोषजनक होते हैं।

सजगता— सजगता एक तरह की चेतनता है, जो हमारे मन-मस्तिष्क को जाग्रत् रखती है। जो जगा हुआ है, उसके सभी कार्य सधे हुए होते हैं। असचेत रहने का अभिप्राय इस बात से भी है कि आप अपने कार्य को और अपने समय को व्यवस्थित करते समय कितने सचेत रहते हैं? जब आप सचेत होकर कोई कार्य करते हैं तो उसमें गलती होने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है। यही नहीं, सचेत व्यक्ति कभी भी समय की बरबादी नहीं करता। सचेत व्यक्ति जिस तरह अपने समय का मूल्य समझता है, उसी तरह उसे दूसरे व्यक्ति के समय की कीमत भी पता होती है। आपका जीवन इतना जाग्रत् अवस्था में हो कि आपको आपके मार्ग की समस्त बाधाएँ स्पष्ट दृष्टिगोचर हों, तो निश्चित ही आप सफल होंगे।

सत्प्रेरणा— जिस प्रकार शरीर से नहाने का प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है और हमें प्रतिदिन नहाना पड़ता है, उसी प्रकार दिमाग से सत्प्रेरणा का प्रभाव भी धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है। अत: प्रतिदिन किसी प्रकार की धार्मिक-आध्यात्मिक सत्प्रेरणा के लिए समय अवश्य निकालें, ताकि सदा स्वउन्नति के मार्ग पर अग्रसर रह सकें।

सद्व्यवहर और सहयोग— सद्व्यवहर और सहयोग व्यक्ति को लोकप्रिय बनाते हैं। इसके फलस्वरूप व्यक्ति की उन्नति एवं सफलता की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। श्रेष्ठ व्यक्तित्व चरित्र की ठोस बुनियाद पर आधारित होना चाहिए। जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सुधारना चाहता है, उसमें इच्छा और दृढ़-निश्चय का होना अनिवार्य है। उसे पता होना चाहिए कि उसके लक्ष्य क्या हैं और किस दिशा से होकर जाना है?

सद्व्यवहार— बच्चों के समक्ष कभी भूल से भी गलत कार्य न करें, झूठ न बोलें, किसी को अपशब्द न कहें, क्योंकि आपका ऐसा व्यवहार बच्चों के लिए शिक्षा का कार्य करेगा। बड़े जो करते हैं, बच्चे उन्हें शिक्षा के रूप में ग्रहण करते हैं, इसलिए उन्हें अच्छी शिक्षा देने के लिए उनके सामने सदैव सद्व्यवहार रखें, लड़ें-झगड़ें नहीं। यह शिक्षा उनके लिए मजबूत नींव के समान होती है, क्योंकि वे अपने बड़ों से ही सीखते हैं और जीवन में उसी शिक्षा का अनुसरण करते हैं।

सद्व्यवहार— हमें न केवल अपने रहन-सहन का स्तर ऊँचा करना चाहिए, बल्कि दूसरों का जीवन-स्तर उठाने में उनकी सहायता करनी चाहिए। दूसरों से प्यार से पेश आएँ और उनके प्रति अच्छा व्यवहार रखें। ऐसा करके आप दूसरों में हीन-भावना दूर करने की कोशिश कर सकते हैं। दूसरों के बारे में कुछ भी कहते समय सावधानी बरतें, क्योंकि दूसरे लोग भी भिन्न-भिन्न समय व विभिन्न स्थानों पर हमारे बारे में वैसी ही बातें कहेंगे और इस तरह हमारे संबंध में लोगों की एक राय बनाएँगे।

सपना— एक सपना हमारे अंदर काफी कुछ परिवर्तन ला देता है। यह हमें नए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। सपने देखनेवाले लोग ही उनको हकीकत में बदलने की इच्छा रखते हैं। जिन लोगों ने भी जीवन में प्रगति व विकास के उच्चतम आयामों को स्पर्श किया है, उन सभी ने सबसे पहले अपने लक्ष्यों के बारे में सपने ही सँजोए थे।

सपने साकार— सपनों को पूरा करने में समय लगता है। कोई कहता है कि इसके लिए मेरे पास पैसा नहीं है,

समय नहीं है, सहायता करनेवाला कोई नहीं है, तो ये सब बेकार की बातें हैं। अगर आप दो दिन का काम एक दिन में ही करना चाहते हैं, तो जैसे आपका शरीर साथ नहीं देगा, वैसे ही सपना भी साथ नहीं देगा। इसलिए जो काम आज करना है, वही कीजिए और जो कल करना है, उसे कल के लिए छोड़ दीजिए। आज का दिन खुशी से बिताइए और रात को चैन की नींद सोइए, लेकिन जिस तरह आज का काम आज पूरा किया है, उसी तरह से कल भी कल का काम पूरा कीजिए, परसों भी।

सपने साकार—सपनों को साकार करना सपने देखने की तरह सहज नहीं होता। उस सपने को बार-बार देखना होता है, साथ ही उसे पूरा करने के लिए सतत प्रयत्नशील भी रहना होता है। इसमें समय और श्रम लगता है।

सपने—आप सदैव अपने को धन्य समझें कि जो कुछ आपके पास है, वह सिर्फ आपके पास है। सदैव अपने सपनों को जगाए रखें। कभी भी उन्हें मरने न दें। उनको पूरा करने का प्रयास ही निश्चित रूप से आपको कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहेगा और एक दिन सफलता आपके कदम चूमेगी।

सफल इनसान—सफल इनसान हमेशा ही नए-नए विचारों और उपायों के साथ आते हैं, ताकि उन्हें उनका ज्यादा-से-ज्यादा लाभ मिल सके। सफल इनसान वे कहलाते हैं, जिनके पास मुसीबतों का सामना करने के श्रेष्ठ उपाय होते हैं, ताकि वे दूसरों की भी सहायता कर सकें और इनका श्रेय वे खुद नहीं लेते, बल्कि दूसरों को भी देते हैं। वे अपने कामों पर तो पूरा ध्यान देते ही है, लेकिन साथ ही दूसरों को विकसित करने में भी लगे रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए अपने साथ-साथ अपने सहकर्मियों का विकास भी जरूरी होता है।

सफल इनसान—सफल लोगों को अपने जीवन में अनेक किरदार निभाने पड़ते हैं। उनका व्यक्तित्व नरम व लचीला होता है। हमें अपने दिमाग को खुला रखना चाहिए और तथ्यों को कसौटी पर परखकर ही फैसला लेना चाहिए। कल जो नुकसान था, वो आज फायदा बन सकता है। बस, जरूरत है भावनाओं को अलग करके सोचने की।

सफल इनसान—सफल व्यक्ति का लक्ष्य सफलता पाने के बाद ही खत्म होता है। जब हमें जीवन के कड़वे अनुभव होते हैं या हमें निराशा घेर लेती है, उस समय हो सकता है कि हम विचलित हो जाएँ, पर ये सब जिंदगी के अनुभव हैं, जो आपको किसी शिक्षक की तरह आपकी जिंदगी को तराशकर हीरा बनाने का काम करते हैं। आपको सिखाते हैं कि जिंदगी में मुश्किलों का सामना कैसे किया जाए? उन मुश्किलों से लड़ने का साहस दिलाते हैं। फिर जब हम अपने आप को आँकते हैं, तो पाते हैं कि हमारी क्षमता और भी बढ़ गई है। जीवन में हम और भी बड़ी सफलता हासिल कर सकते हैं। असफलता हमें निखारने का काम करती है।

सफल इनसान—सफल होने के लिए असफलता आवश्यक है, ताकि आपको यह पता चल सके कि अगली बार क्या नहीं करना है?

सफल लोग—अत्यंत सफल लोग सभी विषयों में एक उदार दृष्टिकोण रखते हैं। कुछ विषयों में उनकी हमेशा विशेष रुचि रहती है—वे विषय, जिनमें उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है। ऐसा नहीं हो सकता कि वे हरफनमौला हों, लेकिन किसी भी फन के उस्ताद न हों, बल्कि वे कोई-न-कोई ऐसा विषय-क्षेत्र अवश्य तलाश लेते हैं, जिसमें वे पूरा ध्यान देते हैं, तब तक खोज-बीन करके उसे उपयोग में लाते हैं, ताकि मानव जाति को अधिक महत्त्वपूर्ण बनाया जा सके। वे वही करते हैं, जिसके बारे में उन्हें अच्छी तरह पता होता है कि कैसे किया जाए?

सफल लोग—सफल व्यक्ति कर्मठ होते हैं। वे उद्योगशील एवं परिश्रमी होते हैं तथा हमेशा यह ध्यान रखते हैं कि जो कुछ भी किया जाना आवश्यक है, उसमें कुछ बाकी न रह जाए। वे आज का काम कल पर नहीं छोड़ते और

हमेशा यह सुनिश्चित करते हैं कि बृहत्तर उपलब्धियों की खोज में, वे होशियारी से काम करें।

सफलता का आनंद—जो व्यक्ति अपने काम का हिसाब-किताब देखकर उसका बोझा ढोते हुए चलता है, वह बीच में ही चकनाचूर हो जाता है। सफलता तक नहीं पहुँच पाता। कदाचित् वह सफल भी हो जाए तो उस समय इतना थका हुआ होता है कि सफलता का आनंद नहीं ले पाता। अत्यंत व्यस्त रहते हुए भी अपने आनंद, विश्राम एवं शांति को तिरोहित न होने दिया जाए।

सफलता का सृजन—कोई भी व्यक्ति सफल रूप में पैदा नहीं होता, बल्कि वे तो इसका सृजन करते हैं। सफलता कोई इत्तफाक नहीं है या यह लॉटरी के टिकट में निहित नहीं होती है। इसे तो आपको स्वयं सृजित करना होता है। सफलता के रहस्यों की जानकारी और उनका सही कार्यान्वयन निश्चित तौर पर किसी व्यक्ति के जीवन में सफलता हासिल करने में मददगार हो सकता है।

सफलता की कसौटी—व्यक्ति के पास काम, दाम, नाम, सम्मान और कमान—ये सभी हों, उसे सफल कहा जा सकता है। सफल का अर्थ है—सफल = फल सहित, अर्थात् उपलब्धि सहित, महत्त्व सहित। सफलता का अर्थ डिग्री पाना, नौकरी लगना, पैसा कमाना मात्र नहीं है। व्यक्ति की सामाजिक हैसियत एवं उपयोगिता भी उसकी सफलता की कसौटी है। इस बात को यूँ भी कहा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति सफल होना चाहता है तो उसका उपर्युक्त पाँच उपलब्धियों पर अधिकार होना चाहिए।

सफलता की कसौटी—सफलता की चाबी अगर आपको जिंदगी में कभी असफलता नहीं मिली तो इसका मतलब है कि आपने कभी कोई नया काम नहीं किया। असफलता ही सफलता की चाबी है। इसके बिना आप सफलता के द्वार नहीं खोल सकते। अगर आप भी कभी असफल हुए हैं तो खुशी की बात है कि आपने दूसरों से कुछ अलग करने की ठानी है।

सफलता की परिभाषा—किसी दूसरे द्वारा रचित सफलता की परिभाषा को अपना न समझें।

सफलता के मोती—सफलता के मोती यूँ ही धूल में बिखरे हुए नहीं पड़े हैं। उन्हें पाने के लिए गहराई में उतरने की हिम्मत जुटानी होगी, बहुत ज्यादा कठोर परिश्रम करने और हमेशा करते रहने की शपथ लेनी होगी।

सफलता के सूत्र—सफलता पाने और प्राप्त सफलता को लंबे समय तक बनाए रखने के सूत्र हैं—उद्यम, संयम, दक्षता, धैर्य, सावधानी, स्मृति और सोच-विचार। सफलता पाने की जल्दबाजी या बेचैनी में कई लोग आसान और छोटे रास्ते या तरीकों को चुन तो लेते हैं, लेकिन इससे मनचाही और स्थायी सफलता नहीं पाई जा सकती। इससे व्यक्ति निराशा के दौर में पहुँच जाता है।

सफलता—अपनी सफलता को भाग्य, भ्रष्टाचार व धन की कमी जैसे कुंठित विचार लाकर अवसर को मत टालिए। जुट जाएँ, सफलता पाने की चेष्टा में। इस प्रकार, आप आत्मसम्मान से इस समाज में जी सकते हैं। इस प्रकार, जुट जाइए संपूर्ण शक्ति के साथ और पहनाएँ अपनी मेहनत को सफलता का जामा।

सफलता—एक यात्रा प्रत्येक व्यक्ति के लिए सफलता के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं। सफलता का अर्थ कई रूपों और परिभाषाओं में होता है। किसी भी लक्ष्य को निर्धारित करने से पूर्व अपनी योग्यता, कार्य-क्षमता व समय-अवधि को सुनिश्चित कर लें। निर्भर करता है कि आप जीवन में क्या तलाश रहे होते हैं? सफलता एक यात्रा है, गंतव्य नहीं। आपको लगातार आगे बढ़ते रहना है।

सफलता—गाँठ बाँध लें कि अपने से ऊँची कुरसी पर बैठे व्यक्तियों का दोष ढूँढ़ने में समय गुजारनेवाले कभी भी जीवन में अपनी बदौलत कोई बड़ी सफलता हासिल नहीं कर पाएँगे।

सफलता— जीवन में जो भी कार्य करें, उसको सौ प्रतिशत करने की आदत डालिए, क्योंकि पूरे मन और पूरे भाव से किया गया कार्य निश्चित ही अच्छा परिणाम लाता है। संसार में सबसे बड़ा कार्य जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम जहाँ भी और जैसी भी अवस्था में हैं, वहाँ हमें अपना श्रेष्ठ देना चाहिए। जो भी हम अच्छे-से-अच्छा कर सकते हैं, उसे अधिकाधिक मात्रा में और उत्तम प्रकार से सभी के सम्मुख प्रकट करना चाहिए, इसी का नाम सफलता है।

सफलता— नकारात्मक मानसिकता कहती है, आपको सफलता नहीं मिल सकती। सकारात्मक मानसिकता कहती है, आप सफलता पा सकते हैं।

सफलता— पूर्व की विफलताओं और प्रतिकूलताओं का बारीकी से अवलोकन, जिससे यह सत्य सामने आएगा कि उसी में सफलता और अनुकूलता के वैसे ही बीज छिपे हैं। किसी भी प्रयास में नब्बे फीसदी सफलता तो इस बात से ही मिल जाती है, अगर आप समझ गए कि आप चाहते क्या हैं?

सफलता— संसार में सबसे बड़ा कार्य जो हम कर सकते हैं, वह यह है कि हम जहाँ भी और जैसी भी अवस्था में हैं, वहाँ हमें अपना श्रेष्ठ देना चाहिए। जो भी हम अच्छे-से-अच्छा कर सकते हैं, उसे अधिकाधिक मात्रा में और उत्तम प्रकार से सभी के सम्मुख प्रकट करना चाहिए। इसी का नाम सफलता है।

सफलता— संसार में सबसे बड़ी बात जो मनुष्य कर सकता है, वह यह है कि जैसी भी व्यवस्था में वह रखा गया है और जैसी भी सामग्री उसके पास है, उसे अधिक-से-अधिक मात्रा में और उत्तम-से-उत्तम प्रकार से काम में लाए। इसी का नाम सफलता है।

सफलता— सफलता उन व्यक्तियों के पास नहीं आती, जो इंतजार करते हैं। यह अपने पास आने के लिए किसी का इंतजार भी नहीं करती। अधिकतर सफल व्यक्तियों ने कुछ नए गुणों या उन्हें प्राप्त अवसरों द्वारा ही अपने गंतव्य को प्राप्त नहीं किया। उन्होंने तो अपने हाथ में आए अवसरों का विकास किया है। असफलता और सफलता के बीच अंतर बस इतना है, जैसे कोई काम लगभग सही करना तथा बिल्कुल सही प्रकार से करना।

सफलता— सफलता का सबसे बड़ा दुश्मन है—भय। सफलता की सीढ़ियों में शिखर पर कभी भी भीड़ नहीं होती। सफलता संयोग या किस्मत से नहीं मिलती। इसके लिए सावधानीपूर्वक योजना बनानी पड़ती है और लोगों के बीच रहनेवाली हस्तियों को कुशल अभिनय करना पड़ता है।

सफलता— सफलता पाने का कोई गुप्त तरीका नहीं है, बल्कि सफलता का रास्ता तो किसी भी उस व्यक्ति के लिए खुला है, जिसका एक लक्ष्य है और जो सभी सफल लोगों में सामान्यत: देखी गई विशेषताओं, अर्थात् उनकी विचार-शैली, मनोवृत्ति एवं व्यवहार को अपने में ढालता है।

सफलता— हम जो चाहते हैं उसे पा सकें, यही सफलता है। इस सफलता को पाकर जो सुख की अनुभूति होती है, वह अवर्णनीय है।

सफलता-असफलता— सफलता को कभी अपने सिर पर न चढ़ने दें और असफलता को कभी दिल में न उतरने दें।

सफलता— प्राप्ति के लिए व्यक्ति को सतर्क रहते हुए अवसर की ताक में रहना चाहिए। साहस के साथ सुअवसर को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए और पूरी शक्ति लगाकर दृढ़ता के साथ प्राप्त अवसर के सहारे सर्वोत्तम ढंग से सफलता तक पहुँचना चाहिए। निश्चित सफलता के लिए इन्हीं सद्गुणों की आवश्यकता होती है।

सबक— कभी छोटी-मोटी हार से न डरें। बस, यह तय कर लें कि हर हार से सबक सीख लिया जाए। जिसे हम

अनुभव कहते हैं, उसमें काफी हद तक वे बातें शामिल होती हैं, जिन्हें हमने गलतियों से सीखा है। वे गलतियाँ हमारी अपनी होती हैं और दूसरों की भी, लेकिन इन गलतियों से सीखे गए सबक को कभी नजरअंदाज न करें।

सबक— कभी-कभी जिंदगी कुछ दरवाजे इसलिए बंद कर देती है, क्योंकि यह समय आगे बढ़ने का होता है। देखा जाए तो यह अच्छा भी है, क्योंकि जब तक हालात दबाव न डालें, हम आगे नहीं बढ़ते। जब समय कठिन हो, तो याद रखें कि कोई भी दर्द बिना उद्देश्य के नहीं होता। जिससे चोट लगी, उसे नजरअंदाज कर दें, लेकिन इससे जो सबक मिला, उसे कभी न भूलें।

सबक— कुछ विफलताएँ आनी-ही-आनी हैं, हमारे जीवन में और हमारे बच्चों के जीवन में। अपने बच्चों को ऐसे जीवन कौशलों से सुसज्जित करना, जिनकी मदद से वे नाकाम होने की स्थिति में उनका इस्तेमाल अपने बारे में ज्यादा गहरी समझ बनाने में कर सकें और परिस्थिति से नए सबक हासिल कर सकें—ये एक अनमोल उपहार होगा जो हम उन्हें दे सकते हैं—किसी भी बड़े-से-बड़े बैंक बैलेंस से भी ज्यादा कीमती होगा यह उपहार। यह उन्हें लचीलेपन की अहमियत सिखाएगा—बुरे मौकों का सामना कर पाना और विपरीत स्थितियों को खुद पर हावी न होने देना सिखाएगा। जितना जल्दी वो जीवन के इस सबक को सीख लें, उतना ही उनके लिए अच्छा रहेगा।

सबक— गलतियाँ करना मनुष्य का स्वभाव है, परंतु जो इन गलतियों से सबक नहीं लेता, वह कभी सफल नहीं होता। हम यह नहीं देखते कि भाग्य ने तो हमारा बहुत साथ दिया, पर हम अपनी गलतियों से बाज नहीं आए। इसलिए हम उन्नति नहीं कर सके और यदि उन्नति कर भी गए तो ठीक जगह तक न पहुँचकर लुढ़क गए।

सबसे बड़ी बाधा— असफल लोग स्वयं अपनी सफलता के मार्ग में सबसे बड़े बाधक बनते हैं। सच तो यह है कि बाधाएँ, परिस्थितियाँ, अवसर—आदिकाल से व्यक्ति की असफलता के कारक नहीं हैं अपितु व्यक्ति स्वयं अपनी सफलता के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक है, क्योंकि वह सफलता के लिए प्रयास न करके दूसरों की आलोचना में ही अपना समय व्यतीत करता रहता है। दूसरों के कार्यों में दोष ढूँढ़ेंगे, लेकिन स्वयं अपने कार्य पर ध्यान नहीं देंगे। अब वे सफल कैसे हों? बहुत से लोग सफलता प्राप्त करने के लिए शॉर्टकट अपनाते हैं, लेकिन इस प्रकार के व्यक्ति में और एक पूर्ण सफल व्यक्ति में वही अंतर है, जो किसी फल के पेड़ पर ही पकने और उस फल के भूसे में दबकर पकने में होता है।

सभ्यता— अच्छी सभ्यता में उदासी, खिन्नता और निराशा के लिए कोई जगह नहीं है।

सभ्यता— जो व्यक्ति आज का कार्य कल पर टालता है, उसका न तो आज ही आया और न ही कल आएगा। यदि हम पुराने दायित्वों का ही समय रहते निर्वाह न कर सके तो नई जिम्मेदारियों को कैसे उठा पाएँगे, क्योंकि आनेवाला प्रत्येक पल हमारे लिए नई संभावनाओं एवं नए दायित्वों का संदेश लेकर आता है। इसलिए समय के महत्त्व को समझना किसी भी कामयाब व्यक्ति की पहली पहचान है।

सम-सामयिक जानकारी— अखबार पढ़ने की आदत डालें। सम-सामयिक गतिविधियों व घटनाओं की जानकारी बनाए रखें। प्रमुख चर्चित व मशहूर लेखकों की पुस्तकों को अवश्य पढ़ें। ऐसा करने से आप किसी भी कार्यक्रम, कॉन्फ्रेंस या बातचीत के अवसर का पूरा-पूरा उपयोग कर सकेंगे। इससे एक ओर जहाँ दूसरे लोगों से आपके संबंधों में निकटता बढ़ेगी, वहीं दूसरी ओर आपका ज्ञानवर्धन भी होता रहेगा।

समय का अस्तित्व— जीवन में घड़ी का इस्तेमाल मत कीजिए। जो व्यक्ति घड़ी देखते रहते हैं, उन्हें समय की लत पड़ जाती है, परंतु जो लोग किसी लक्ष्य अथवा कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं, उनके लिए समय का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। ऐसा करके आप अपनी आंतरिक लयों के साथ जीवन बिताने का अभ्यास कर

लेते हैं। फलस्वरूप, अपने आस-पास के लोगों के साथ ही समन्वय स्थापित करने में सुगमता रहती है।

समय का महत्त्व— सफलता पाने के लिए समय का महत्त्व समझें। उसका एक-एक पल उपयोग में लाएँ। एक से अधिक लक्ष्य होने पर प्राथमिकता के अनुसार उन्हें निश्चित करें और निष्ठा व लगनपूर्वक हर लक्ष्य की ओर बढ़ें।

समय का महत्त्व— सफलता प्राप्त कर चुके लोग यह जानते हैं कि समय का उनके जीवन में बहुत महत्त्व है, इसीलिए उन्हें जरा भी समय व्यर्थ गँवाना पसंद नहीं होता। जब कभी भी उन्हें उनके द्‌वारा की गई गलती का अहसास होता है, तो वे तुरंत उसकी जिम्मेदारी लेते हुए अपनी गलती को सुधारने की कोशिश करने लगते हैं। वे सिर्फ अपनी जिम्मेदारियाँ ही साथ लेकर नहीं चलते, बल्कि दूसरों की जिम्मेदारियों को भी समझते हैं।

समय का सदुपयोग— जीवन जीने की कला में समय का सदुपयोग या समय-प्रबंधन विशेष भूमिका निभाता है। उद्‌देश्य की प्राप्ति की तो हर एक को लालसा होती है, पर वह यह नहीं जानता कि इन उद्‌देश्यों की प्राप्ति का मार्ग कितना दुर्गम है, कठिनाइयों भरा है? यह पता ही नहीं होता कि जीवन को व्यवस्थित कर ही हम इन मंजिलों को प्राप्त कर सकते हैं। जीवन व्यवस्थित होता है, समय-प्रबंधन के साथ। यही एकमात्र साधन है, जो मनुष्य को उसके उद्‌देश्यों की ओर प्रेरित करता है।

समय का सदुपयोग— जो समय को बरबाद करता है, समय उसको बरबाद कर देता है। इसलिए समय का सही उपयोग कीजिए। लोग कहते हैं कि समय से पहले और भाग्य से अधिक न किसी को मिला है और न किसी को मिलेगा, लेकिन आप समय के साथ चलकर देखिए। कठिन काम थोड़ा समय लेता है, इसलिए खुद पर विश्वास कीजिए और योजना के साथ उसे करने की ठान लीजिए। समय का सही इस्तेमाल कीजिए और मौके का फायदा उठाइए। फिर आप विजेता बन सकते हैं।

समय का सदुपयोग— समय का सदुपयोग न करने से मन चंचल हो जाता है। ऐसा व्यक्ति कोई भी काम ठीक प्रकार नहीं कर सकता। उससे सफलता दूर भागेगी। ऐसा व्यक्ति बरबर और उद्‌दंड होगा। उसमें उचित कार्य क्षमता की भावना का अभाव होता है। वह न ज्ञानार्जन कर सकेगा, न धनार्जन। वह केवल अशांति का शिकारी बनकर रह जाएगा। उसका जीवन अभावों से भरा रहता है। वह निंदा का पात्र बनेगा और जीवन के अंतिम क्षणों में उसे पछताना पड़ेगा। पछताने से भी उसके हाथ कुछ नहीं आएगा। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने समय का सदुपयोग करके जीवन को मार्ग पर ले चले। वह अपने भावी जीवन को भी सुखमय बनाए।

समय का सदुपयोग— समय किसी के लिए रुकता नहीं और बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। समय डॉक्टर भी है, दवा भी और इलाज भी है। 'प्रत्येक काम नियम से और समय पर ही शोभा देता है' इत्यादि ब्रह्म वाक्य हमें पता होते हुए भी हम व्यर्थ की बुराई, निंदा, टीका-टिप्पणी, आरोप, ताने, लाँछन, अनर्गल वार्त्तालाप इत्यादि में समय नष्ट करते रहते हैं। इससे हम पाते कुछ नहीं है, बल्कि खोते ही हैं। हमारी नियमित दिनचर्या के कई घंटे इन्हीं फालतू बातों में नष्ट होते रहते हैं। अत: स्वयं को अनुशासन में रखकर इस नष्ट होनेवाले समय को सार्थक, सदुपयोग में लगाया जा सकता है।

समय का सदुपयोग— समय की सारी ताकत वर्तमान में ही सिमटी होती है। वर्तमान पर ध्यान देने से ही हमारा भविष्य सँवरता है। एक दृष्टि से कहें तो समय रुपए की तरह कीमती होने के बावजूद रुपए की तरह नहीं है, क्योंकि इसे पकड़कर नहीं रखा जा सकता। जब भी हमें समय मिलता है, हमें तत्काल उसका उपयोग करना होता है। जो समय एक बार बीत जाता है, वह हमेशा के लिए हमसे दूर हो जाता है, इसीलिए हम बीते हुए समय को याद तो कर सकते हैं, लेकिन दोबारा हासिल नहीं कर सकते।

समय का सदुपयोग—हमेशा वक्त का ध्यान रखें। अपने पास एक घड़ी रखें। कभी-कभी काम की व्यस्तता में समय का अहसास नहीं रहता। अत: अच्छे समय प्रबंधक अपने पास एक घड़ी जरूर रखते हैं। यदि आपको कोई काम करना है और आप अलार्म लगाते हैं तो अलार्म 15 मिनट पहले का लगाएँ। सिर्फ एक मुख्य काम पर ध्यान केंद्रित करें। इससे आपका काम शीघ्र और पूर्ण रूप से होगा। अपने बिताए हुए समय का ध्यान रखें। इससे अभी आप अपने प्रोजेक्ट पर कितना समय लगा चुके हैं, इसका पता चलेगा और आपके पास कितना समय बच गया है, यह भी ध्यान में रहेगा।

समय की कीमत—एक वर्ष की कीमत उस लड़के से पूछिए, जो परीक्षा में फेल हो गया है और एक वर्ष पिछड़ गया है। वह महसूस करता है, एक वर्ष की कीमत। एक महीने की कीमत उस महिला से पूछिए, जिसने बच्चे को एक महीने देरी से या जल्दी जन्म दिया है। वह जानती है, एक महीने की कीमत। एक दिन की कीमत आकस्मिक कार्य करनेवाले मजदूर से पूछिए, जिसे यदि एक दिन काम न मिले तो रोटी का सवाल खड़ा हो जाता है। वह जानता है, एक दिन की कीमत। एक घंटे की कीमत उस लड़के से पूछिए, जो अपनी प्रेमिका की प्रतीक्षा कर रहा होता है और वह एक घंटा देर से आती है, तो वह जानता है कि उस एक घंटे की कीमत क्या है? एक मिनट की कीमत उस यात्री से पूछिए, जिसकी बस या रेल एक मिनट देर से पहुँचने की वजह से निकल गई है। यात्रा रद्द होने पर उसे एक मिनट की कीमत समझ में आती है। एक सेकंड की कीमत उससे पूछिए, जो एक सेकंड की देर होने से किसी दुर्घटना से बच गया है, वह बताएगा एक सेकंड की कितनी कीमत होती है? एक माइक्रोसेकंड की कीमत एक अंतरिक्ष वैज्ञानिक से पूछिए जो ब्रह्म□ांड की खोज में लगा है, जिसकी कि एक माइक्रो सेकंड की गलत गणना से अंतरिक्ष मिशन ही फेल हो चुका है। वह समझाएगा, एक माइक्रो सेकंड की कीमत।

समय की कीमत—समय ही सबसे बड़ा धन है। जब तक हम समय की कीमत नहीं समझेंगे, तब तक अपना भाग्य नहीं बना सकेंगे। भाग्य बनाने के लिए समय की कीमत से वाकिफ होना होगा। कम समय में ज्यादा काम करने की क्षमता उत्पन्न करें तथा सही समय पर काम को पूरा करें। फिर आप समय से आगे निकल सकते हैं। समय प्रबंधन को भाग्य बनाने की कुंजी माना जाता है। यह कुंजी जिसके हाथ लग गई, उसके क्या कहने। वह कुबेर के खजाने वाली तिजोरी को खोलने में कामयाब हो जाएगा। दरअसल कामयाब जिंदगी, कामयाब दिनों, घंटों और मिनटों की शृंखला है।

समय की खेती—हर काम को स्फूर्ति से निपटाएँ। टाल-मटोल न करें। अवसर को न जानें दें। समय की कमी का रोना रोने की बजाय उसकी खेती करें यानी अपने 24 घंटे को किस तरह से 48 घंटे में बदल सकते हैं, वह करें। ईश्वर एक बार, एक ही क्षण देता है और दूसरा क्षण देने के पूर्व उस क्षण को ले लेता है।

समय की गति—समय की गति व्यक्तिपरक और सापेक्ष होती है। अपनी-अपनी परिस्थितियों के हिसाब से किसी के लिए एक घंटे में बीतने वाला समय लंबा, तो किसी के लिए छोटा होता है। अगर हम कार्य नहीं कर रहे होते या फिर अरुचिपूर्ण तरीके से कार्य कर रहे होते हैं, तब बीतनेवाला समय हमें बहुत बड़ा लगता है, लेकिन रुचिपूर्वक कार्य करते समय यही समयांतराल हमें अत्यंत छोटा महसूस होता है।

समय की बरबादी—बेकार गपशप का हिस्सा बनकर समय की बरबादी न करें, क्योंकि आप जानते हैं कि आपको क्या करना है? इसलिए गपशप का हिस्सा बनाकर समय खराब करना कोई समझदारी नहीं है। जो किसी और के बारे में बात करता है जाहिर-सी बात है, आपके बारे में भी बात करता ही होगा। सफल लोग खुलकर बात करते हैं। दूसरों की चर्चा में समय बरबाद करना एक बड़े स्तर की बेवकूफी है।

समय की बरबादी— समय धन से अधिक मूल्यवान होता है। अत: आपको धन के साथ-ही-साथ समय का भी ध्यान रखना चाहिए। ऐसा इसीलिए कहा जाता है, क्योंकि धन को आप खोने के बाद भी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन यदि एक बार समय को खो दिया तो उसे किसी भी कीमत पर प्राप्त नहीं किया जा सकता।

समय की महत्ता— जिंदगी में सफल होने के लिए कार्यों को एक निश्चित समय पर करना जरूरी होता है, क्योंकि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसीलिए हमें समय का सदुपयोग करना बहुत जरूरी है। एक मिनट हमारे जीवन को नहीं बदल सकता, लेकिन एक मिनट में लिया गया निर्णय हमारे जीवन को बदल भी सकता है। समय की अहमियत भी हर किसी के लिए अलग-अलग होती है।

समय की महत्ता—समय एक अच्छा चिकित्सक भी है। यह बड़े-से-बड़े घाव को भरने में सक्षम है। समय को एक अच्छा अध्यापक भी माना गया है। यह हमें हमेशा सिखाता रहता है। स्कूल में हमें सीखने के बाद परीक्षा देनी पड़ती है, लेकिन समय हमारी पहले परीक्षा लेता है और फिर सिखाता है।

समय की महत्ता— समय एक ऐसा चक्र है, जो न किसी के लिए रुकता है और न किसी के लिए वापस आता है। कहते हैं—समय बड़ा अजीब होता है। इसके साथ चलो तो किस्मत बदल देता है और न चलो तो किस्मत को ही बदल देता है। समय को भगवान् की बनाई इस स□ष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब यह बदलता है तो इनसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है।

समय की महत्ता— समय को जिंदगी के सामान माना गया है। कहते हैं—अगर आप समय को बरबाद कर रहे है तो जिंदगी को बरबाद कर रहे है, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे है तो अपनी जिंदगी को अच्छा बना रहे हैं।

समय की महत्ता— समय तो उच्चतम शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है। जीवन का महल समय की, घंटे-मिनटों की ईंट से बनता है। प्रकृति ने किसी को भी अमीर-गरीब नहीं बनाया, उसने अपनी बहुमूल्य संपदा यानी की चौबीस घंटे सभी को बराबर बाँटे हैं। मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों न हो, परंतु समय पर कार्य न करने से उसका श्रम व्यर्थ चला जाता है। वक्त पर न काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। असमय बोया बीज बेकार चला जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षण एक उज्ज्वल भविष्य की संभावना लेकर आता है। क्या पता जिस क्षण को हम व्यर्थ समझ कर बरबाद कर रहे हैं, वही पल हमारे लिए सौभाग्य की सफलता का क्षण हो। आनेवाला पल तो आकाश कुसुम की तरह है, इसकी खुशबू से स्वयं को सराबोर कर लेना चाहिए।

समय की महत्ता— समय पर शुरू करनेवाला आदमी ही कार्य समय पर खत्म कर सकता है। कहते हैं, दो प्रकार के व्यक्ति ही जीवन में असफल होते हैं—एक वे जो सोचते हैं, पर समय पर काम को शुरू नहीं करते और दूसरे वे जो कार्य रूप में परिणत तो कर देते हैं, पर सोचते कभी नहीं। कहने का मतलब बिना सोचे समझे किया गया कार्य भी असफल होने का कारण हो सकता है, इसीलिए जो भी करें, सोच-विचारकर और समय पर करें।

समय के साथ अपने लक्ष्य को पाने में आप जो भी सफलता या असफलता का सामना करें, तो उसमें सुधार के लिए अपने लक्ष्य में बदलाव लाकर उसे समय के अनुसार ढालते रहिए। याद रखिए कि परिवर्तन संसार का नियम है।

समय प्रबंधन— अपने हर क्षण को जमा करें और इस कोष में अधिकाधिक वृद्धि करें, क्योंकि आपने यह क्षण किसी विशेष व्यक्ति के साथ बिताया है, इतना विशेष जो आपका समय ले सके। याद रखें कि समय किसी का इंतजार नहीं करता। बीता कल इतिहास है, आनेवाला कल रहस्य, आज एक वरदान, इसलिए कहलाता है वर्तमान।

समय प्रबंधन— समय को संचित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे अमीर हो या गरीब, समय एक ही तरह से व्यतीत करता है। समय न तो धनी व्यक्ति के लिए तेज गति से चलता है और न ही गरीब के लिए अपनी गति धीमी करता है। समय प्रबंधन समय का समझदारी से उपयोग करने के समान है। इसे ख्याति और सफलता के बीच अंतर कहा जा सकता है। समय दुर्लभ है। जी हाँ, हर किसी को उतने ही घंटे मिलते हैं, लेकिन क्या आपने इस पर गौर नहीं किया कि लोग अकसर यह शिकायत करते रहते हैं कि उनके पास समय की कमी है? इतना कम है और इतना कुछ करने को है कि लोगों का ध्यान बँट जाता है। समय प्रबंधन का तात्पर्य है—प्राथमिकताओं और नजदीक आती अंतिम तारीखों को महत्त्व देना। ऐसा करने से जीवन में महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के लिए आपके पास पर्याप्त समय बच जाएगा।

समय प्रबंधन— समय को संचित नहीं किया जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे अमीर हो या गरीब, समय एक ही तरह से व्यतीत करता है। समय न तो धनी व्यक्ति के लिए तेज गति से चलता है और न ही गरीब के लिए अपनी गति धीमी करता है। समय प्रबंधन समय का समझदारी से उपयोग करने के समान है। समय प्रबंधन में प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। अगर आप अपने प्रत्येक लक्ष्य के समय का एक हिस्सा निर्धारित करते हैं और उसका समझदारी से हिसाब रखते हैं तो आप न केवल अपने लक्ष्यों को पूरा कर लेंगे, बल्कि आराम के लिए कुछ समय बचा भी लेंगे।

समय प्रबंधन— समय प्रबंधन कम प्रयास से अधिक कार्य पूरे करने में आपकी मदद करता है। प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित समय आवंटित करके आपको अगला कार्य आरंभ करने के बारे में चिंता नहीं करनी पड़ती। समय प्रबंधन के साथ आप अधिक संगठित अर्थात् व्यवस्थित हो जाते हैं और आप जो कुछ करते हैं, वे कार्य आप आदतन करने लगते हैं, संत्रस्त होकर नहीं। इसे एक आदत में ढालकर आप अधिक उत्पादक हो जाते हैं। जैसा कि अरस्तु ने कहा था, "हम वही बन जाते हैं, जो हम बार-बार करते हैं। अत: श्रेष्ठता एक कार्य नहीं है, अपितु एक आदत है।"

समय प्रबंधन— समय प्रबंधन में प्रत्येक कार्य को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। अगर आप अपने प्रत्येक लक्ष्य के समय का एक हिस्सा निर्धारित करते हैं और उसका समझदारी से हिसाब रखते हैं तो आप न केवल अपने लक्ष्यों को पूरा कर लेंगे, बल्कि आराम के लिए कुछ समय बचा भी लेंगे। सच तो यह है कि थोड़े से समय में भी कार्योत्पादन होता है। यदि पूरे दिन या पूरे सप्ताह के लिए समय का विवेकपूर्ण विभाजन किया जाए तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि आप कितना कुछ काम पूरा कर सकते हैं?

समय प्रबंधन— हम जो भी हों, जहाँ भी हों, हमारा कार्यक्षेत्र कुछ भी हो, हम पर चाहे असीमित जिम्मेदारियाँ, उत्तरदायित्व एवं परेशानियाँ हों, परंतु यदि हमने उचित समय प्रबंधन कर लिया तो हमारे कई कठिन काम भी सरल हो जाएँगे, रुके हुए कार्य पूर्ण हो जाएँगे, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रशंसा, सम्मान, सराहना मिलेगी एवं संतोष सुख का अनुभव तो हमें स्वयं ही होगा। व्यस्त रहने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, भूख लगने लगेगी, नींद अच्छी आएगी। हम प्रसन्नचित्त, तरोताजा एवं हँसमुख रहेंगे। चेहरे पर गरिमामय तेज होगा, मन में सुकून होगा। समय विभाजन कर, हम कम समय में ही अधिक-से-अधिक कार्य कर पाएँगे।

समय बलवान— समय की महिमा और मर्यादा में जीवन के सभी रहस्य समाए हैं। समय का हर पल बहुमूल्य है। प्रतिक्षण बेशकीमती है। समय क्षण-क्षण की बूँदों से विनिर्मित एक अनंत धारा है, जिसमें जन्म के रूप में जीवन अनवरत बहता रहता है। काल का कोई क्षण सामान्य नहीं होता। यह असामान्य और अद्भुत होता है, क्योंकि वह

कोई क्षण ही था, जिसने हमें जीवन दिया। वह कोई क्षण ही है, जो सफलता और असफलता का अनुदान देता है। हर क्षण एक अनोखा अवसर लेकर आता है। उस क्षण के सदुपयोग में ही सच्ची सार्थकता है। अस्त-व्यस्त जीवन-शैली और नकारात्मक आदतें भी बहुमूल्य अवसरों को होली के समान जलाती रहती हैं। ये साधनों को, जिनके द्वारा सफलता पाई जा सकती है, उन्हें या तो नष्ट कर देती हैं या जटिल बना देती हैं।

समय बलवान— समय महान् है और समय से बड़ा कोई बलवान नहीं है। समय न कभी झुकता है, न रुकता है और न ही किसी का इंतजार करता है। समय ही ऐसा चिकित्सक है, जो हर घाव को भर देता है। इसलिए समय की पूजा और उसका हर वक्त सम्मान करना सीखें। कहते हैं, अगर वक्त आपके साथ है तो आप पूरी दुनिया को झुका सकते हैं, लेकिन ये वक्त ऐसे ही किसी का साथ नहीं देता, हम जब तक उसकी कद्र करते हैं, तब तक वह भी हमारी कद्र करता है।

समय— प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय अवश्य आता है, जब वह अपना समुचित विकास कर सकता है। वह खास समय मानो वह घड़ी है, जब हमारा भाग्य हमारी तमाम ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए हमारे दरवाजे पर दस्तक देता है। यदि हम उसका स्वागत नहीं करते तो वह उल्टे पाँव वापस भी चला जाता है। आलसी और मंदगति के व्यक्ति सौभाग्य को पहचान नहीं पाते, जिसका परिणाम यह होता है कि उपलब्धियों के फूल उनके जीवन में नहीं खिलते जबकि विवेकी, साहसी और तीव्र इच्छा शक्ति वाले व्यक्तियों के सपने अवश्य पूरे होते हैं।

समय-चक्र— समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है। किसी के लिए रुकता नहीं है। जिस तरह मुट्ठी में बँधी हुई रेत को फिसलने से हाथ में नहीं रोका जा सकता, उसी तरह समय के पहिए को भी नहीं रोका जा सकता है। प्रतियोगिता के दौर में समय के साथ चलना जरूरी है। आप अपना कार्य जितने व्यवस्थित तरीके से करेंगे, काम उतना ही बेहतर और जल्दी होगा।

समय-प्रबंधन— मनुष्य को सौभाग्य-दुर्भाग्य के सहारे ही नहीं बैठे रहना चाहिए। उसे समय पर समय-प्रबंधन के साथ अपना सब काम करते रहना चाहिए अन्यथा इतना समय निकल जाता है कि फिर उसके लिए केवल यही कहने को बचता है कि मेरा दुर्भाग्य था कि मैं कुछ नहीं कर सका, मैं सफल नहीं हो सका।

समय-प्रबंधन— शक्ति हासिल करते रहने के लिए समय-समय पर विश्राम की आवश्यकता है। शक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति आवश्यक हैं। इनके अभाव में हम अपनी जिम्मेदारियाँ एवं उत्तरदायित्व निभाने के लिए न्याय नहीं कर पाएँगे। हम जो भी हों, जहाँ भी हों, हमारा कार्यक्षेत्र कुछ भी हो, हम पर चाहे असीमित जिम्मेदारियाँ, उत्तरदायित्व एवं परेशानियाँ हों, परंतु यदि हमने उचित समय-प्रबंधन कर लिया तो हमारे कई कठिन काम भी सरल हो जाएँगे, रुके हुए कार्य पूर्ण हो जाएँगे, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रशंसा सम्मान, सराहना मिलेगी एवं संतोष सुख का अनुभव तो हमें स्वयं ही होगा। व्यस्त रहने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा, भूख लगने लगेगी, नींद अच्छी आएगी, हम प्रसन्नचित्त, तरोताजा एवं हँसमुख रहेंगे। चेहरे पर गरिमामय तेज होगा, मन में सुकून होगा। समय विभाजन कर हम कम समय में ही अधिक-से-अधिक कार्य कर पाएँगे।

समय-प्रबंधन— समय को उचित रूप में प्रबंधित कर, हम अपनी कार्यक्षमता को तो बड़ा ही सकते हैं, साथ ही अन्य महत्त्वपूर्ण काम जो वक्त की कमी के कारण हमसे छूट जाते हैं, वे भी आसानी से पूरे किए जा सकते हैं। समय-प्रबंधन आपको सफलता दिलवा सकता है, वहीं अगर आप समय बरबाद करते हैं तो यह आपको तनाव में डालने के साथ-साथ लक्ष्य से आपके ध्यान को भी भटका सकता है।

समय-प्रबंधन— समय को दोष मत दीजिए, वक्त की कमी का बहाना न बनाइए। वक्त पर नियंत्रण करना

सीखिए। वक्त को अपने ऊपर हावी मत होने दीजिए। जरा सा ढर्रा बदल लेंगे, तो देखेंगे कि आपको वक्त की कोई कमी नहीं। आपके दोनों हाथों में वक्त-ही-वक्त है। आपकी झोली वक्त से हर वक्त भरी है। वक्त की कद्र करना सीखें। जो वक्त की कद्र नहीं करता, वक्त भी उसकी कद्र नहीं करता। उसे पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाता है।

समय-प्रबंधन— समय को हम कभी पकड़ नहीं पाते हैं, जितना पीछे पड़ते हैं, उतना ही वह आगे निकल जाता है। बड़ी विचित्र बात है कि हम समय का महत्त्व जानते हुए भी उसे व्यर्थ बेकार करते हैं। इसका मूल कारण है— समय-प्रबंधन में हमारी असमर्थता। हम यह भूल जाते हैं कि जीवन प्रबंधन के लिए समय का प्रबंधन करना अति आवश्यक है, वरना अस्त-व्यस्तता हमारे जीवन पर हावी हो जाती है। अच्छा समय-प्रबंधन अच्छी समझ पर निर्भर होता है। जब तक हम इस संसाधन को ठीक से समझ नहीं पाएँगे, तब तक हम इसका सही इस्तेमाल नहीं कर पाएँगे।

समय-प्रबंधन— समय को हम सीमा में नहीं बाँध सकते, परंतु समयानुसार अपने आपको व्यवस्थित कर आसमान को छूने की कल्पना जरूर कर सकते हैं। समय की बरबादी हमारे जीवन को अव्यवस्थित तो करती ही है, साथ ही ये हमारे सपनों, हमारी मंजिल, हमारी आशाओं के मार्ग में बाधक भी सिद्ध होती है। समय को अपने सपनों के अनुकूल बनाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है—समय का समुचित उपयोग।

समय-प्रबंधन— समय बहुमूल्य है। खोई हुई संपत्ति हम पुनः अर्जित कर सकते हैं, किंतु समय नहीं। इस जीवन में हमें प्रकृति ने एक निश्चित समय दिया है। समय का गणित बहुत सरल है। जितने समय के लिए हमें जीवन जीने को मिला है, उसमें से जितना समय बीत गया, उसे घटाने पर शेष समय आ जाएगा। प्रति क्षण, प्रति पल यह समय कम होता जा रहा है। शेष समय रोज कम होता रहेगा, इसमें किसी भी प्रकार से वृद्धि करना संभव नहीं है। हम मात्र इतना भर ही कर सकते हैं कि शेष समय का विभाजन कर इस शेष समय में अधिक-से-अधिक कार्य कर जाएँ।

समय-प्रबंधन— समय-प्रबंधन की योजना बनाने को पर्याप्त समय दें। कहा गया है कि योजना बनाने में विफल होना अपनी विफलता की योजना बनाना है। विभिन्न स्तरों पर लक्ष्य निर्धारित करें एवं उनकी प्राप्ति के लिए लिखित चरणबद्ध योजना कार्यक्रम बनाएँ। प्रत्येक दिन के समय के समुचित उपयोग की योजना पिछले दिन ही बना लें। इससे समय की बरबादी पर कारगर रोक लगेगी।

समय-सारिणी— समय-सारिणी व्यावहारिक हो। सारिणी को एक चुनौती के तौर पर न लेकर, थोड़ा लचीलापन जरूर कायम रखें। समय-सारिणी का मूल उद्देश्य पढ़ाई को नियमित एवं व्यवस्थित करना है, इसलिए समय-सारिणी बनाते समय ध्यान रखें कि इसका मूल उद्देश्य पूरा होना चाहिए। दिमाग को तरोताजा रखने के लिए मनोरंजन अति आवश्यक है। समय-सारिणी में मनोरंजन को भी स्थान लाजिमी है। परिस्थितिवश यदि आपकी दिनचर्या गड़बड़ा जाती है तो इसमें हताश या परेशान होने की जरूरत नहीं है। स्थिति सामान्य होते ही, फिर से समय-सारिणी के मुताबिक चलिए।

समस्याएँ— समस्याएँ हमेशा आपके साथ हैं। इनके बारे में दिन-रात विचार करने से ये कम नहीं होतीं, बल्कि बढ़ती जाती हैं। इसलिए हर पल को खुशी के साथ जिओ। ऐसा करके आपकी हर समस्या का अंत जल्दी हो जाएगा और फिर ये समस्याएँ आपको परेशान नहीं करेंगी।

समाधान— आपको अपने ऊपर विश्वास कायम करना चाहिए। आपको यह मानना होगा कि प्रत्येक कार्य किया जा सकता है। कुछ भी किया जा सकता है। सबकुछ संभव है। जब आप यह विश्वास कर लेंगे कि हर समस्या का

समाधान संभव है, तो आपका दिमाग समाधान खोजने में लग जाता है और आप समाधान पा लेते हैं।

समाधान— दुनिया में अच्छाई के साथ बुराई भी है। इसलिए परिस्थितियों से घबराएँ नहीं। लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें। हर समस्या के एक से ज्यादा समाधान हो सकते हैं, इसलिए अनुरूपता बिंदु से परे सोचें। संभव है, समाधान वहीं कहीं छिपा हो।

समाधान— यदि आप सफल होना चाहते हैं, तो अपना ध्यान समस्या खोजने में नहीं, समाधान खोजने में लगाइए।

समाधान— सफल इनसान हमेशा ही कुछ अलग करते हैं और ऐसा करने का उनके पास सबसे अच्छा रास्ता यही होता है कि वे सही प्रश्न पूछें, क्योंकि लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग पर चलते समय कई प्रश्न आपके दिमाग में उपस्थित होते हैं और उनका समाधान आपको तभी मिलेगा, जब आप सही प्रश्न पूछेंगे। इसी से आपको पता चल सकता है कि आप कहाँ जा रहे हैं, और आप कैसे और ज्यादा अपने आप में बदलाव ला सकते हैं?

समाधान— सफलता प्राप्त करनेवाले इनसान अपने काम और समय को लेकर अतिसक्रिय होते हैं। उनका हर दिन क्या जरूरी और महत्त्वपूर्ण है, उसे करने से शुरू होता है। वे कभी भी मुश्किलों को अपने लक्ष्य के रास्ते की बाधा नहीं बनने देते और इसी तरह वे प्रतिक्रियात्मक भी बन सकते हैं। ऐसे लोग खुद को दूसरे स्थान पर रखने की बजाय पहले स्थान पर रखते हैं, क्योंकि वे हमेशा ही जानते हैं कि ऐसा करने से ऊँचे पद पर रहते हुए, वे लोगों की सहायता कर सकते हैं। साथ ही, जितने भी लोग उनके साथ काम करते हैं, उन सबकी भी समस्याओं का समाधान ऐसे लोग करते हैं।

समाधान— सृजनशीलता का अर्थ है—अपनी बौद्धिक क्षमताओं, अनुभूतियों का उपयोग करना और पुरानी समस्याओं के नए समाधान प्रस्तुत करना, कार्यों को नए ढंग से कराना या सामान्य घटनाक्रम के प्रति एक पूर्णतया भिन्न दृष्टिकोण अपनाना। अत्यधिक सफल व्यक्ति सदैव रचनात्मक चिंतन द्वारा अपने परिवेश की उन जरूरतों को पूरा करने का हल तलाशते हैं, जिनका उन्हें एहसास होता है।

सरल मार्ग— इतना तो स्पष्ट है कि सफलता की इच्छा करना तो आसान है, पर सफलता के लिए जो तैयारी करनी पड़ती है, वो आसान नहीं होती। इसलिए बहुत कम लोगों में उस तैयारी की इच्छा होती है। लोग परिश्रम के कठिन राह से गुजरना नहीं चाहते। वो सरल मार्ग ढूँढ़ते रहते हैं। सरल मार्ग ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पूरा जीवन बीत जाता है। ऐसे लोगों को न सरल मार्ग मिलता है न सफलता। परिश्रम से बचने के कितने तरीके ढूँढ़े जाते हैं, पर उनमें से कोई तरीका ऐसा नहीं, जो सफलता की ओर ले जा सके।

सराहना— कोई भी उस व्यक्ति के आस-पास फटकना नहीं चाहता है, जो हमेशा उदास और चिड़चिड़ा रहता है। काम और जीवन के बारे में सकारात्मक व हँसमुख रवैया बनाकर रखें। प्राय: हँसने-मुसकराने का अभ्यास करें। प्रशंसा करने और हौसला बढ़ाने में उदार बनें। अगर आप दूसरों को जानने का अवसर दें कि उनका काम सराहनीय है, वे अच्छे-से-अच्छा करने की कोशिश करेंगे। अगर आप आलोचना करना चाहते हैं तो नरमी से करें और सुधार करने के सुझाव दें।

सराहना— प्रत्येक के साथ निष्पक्षता का व्यवहार करें और किसी का भी पक्ष न लें। दूसरों की पीठ पीछे उनके बारे में चर्चा न करें। मन और मस्तिष्क खुला रखें। याद रखें कि विचार-विमर्श से समझौते की हमेशा गुंजाइश रहती है। एक कारगर मध्यस्थ बनें और मतभेदों को हल करने की कोशिश करें। इस तरह का नेतृत्व सँभालने पर आपको अपने आस-पास के लोगों से आदर और सराहना मिलेगी।

सर्वश्रेष्ठ कला— सब कलाओं में सबसे श्रेष्ठ कला अपने मनुष्य-जीवन को सफल एवं विजयी बनाना मानी गई

है। इस कला का ठीक ढंग से प्रयोग कर, कोई भी व्यक्ति कुशल बन सकता है।

सर्वोच्च प्रदर्शन—किसी भी कार्य में सर्वोच्च प्रदर्शन का अर्थ है, उस कार्य को करते समय मन में आनंद व संतुष्टि का झरना बहे। उसी स्थिति में कार्य की सही एवं सर्वोच्च स्वीकृति होती है तथा उसके वास्तविक परिणाम प्राप्त होते हैं।

सलाह—आप अपने जीवन में कुछ अच्छे और सफल इनसानों का चुनाव करें जिनके बारे में आप सबकुछ जानते हों या जो आपको दिल से चाहते हों या जिनको आपमें रुचि है और उन्हीं की सलाह, उनके द्वारा बताए गए उपायों पर चलने की कोशिश करें। ऐसा करने से ही आपमें आंतरिक और शारीरिक बदलाव होगा और आपके प्रदर्शन में भी सुधार आएगा।

सलाह—किसी कार्य को करने के संदर्भ में अपने सहयोगियों या सीनियर्स से सलाह लेने में अगर आप संकोच करते हैं तो आपका यह रवैया ठीक नहीं कहलाएगा। अगर किसी कार्य के संदर्भ में आपको कोई बात समझ नहीं आ रही है या आपके मन में दुविधा उत्पन्न हो रही है तो बेहतर यही होगा कि आप अपने साथियों से सलाह मशविरा कर सकते हैं। हालाँकि इस संदर्भ में यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि सलाह हमेशा ऐसे लोगों से लें, जो सही सलाह देते हों। नकारात्मक विचारोंवाले लोगों से सलाह लेने से बचें।

सलाह—बहुत-से लोग इस बात से नफरत करते हैं कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके जवाब में लोग उन्हें गलत बोलें और कुछ नया करने की सलाह दें। दूसरों की सलाह को स्वीकार करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यदि आप ये निर्णय ले लेते हैं कि आप उनकी सलाह को सुनेंगे और अपने कार्य में सुधार की कोशिश करेंगे तो आपका प्रदर्शन और भी ज्यादा अच्छा होने लगेगा।

सवाल—रोजाना खुद से यह सवाल करें कि कैसे आप और बेहतर तरीके से कार्य कर सकते हैं? कैसे आप और अधिक कार्य कर सकते हैं? लोगों से सदैव प्रश्न पूछें व उन्हें धैर्यपूर्वक सुनें। पूछने व सुनने की आदत से आपको वे जानकारियाँ मिलेंगी, जिनके द्वारा आप सदैव उचित निर्णय ले सकेंगे।

सहजता—जो लोग सहज जीवन जीते हैं, उन्हें कभी भी नकारात्मक विचार नहीं घेरते। बनावटी जीवन जीने से बेहतर होगा कि वास्तविकता में जिएँ। इससे कभी भी आपको दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ेगा। घर-परिवार से लेकर प्रोफेशनल जीवन तक सहजता जरूरी है। असहजता न सिर्फ आपकी सफलता के मार्ग में बाधक होती है, बल्कि आपके इस व्यवहार से दूसरे भी परेशान होकर किनारा कर लेते हैं।

सहनशीलता—अपने सेंस ऑफ ह्यूमर को अच्छा बनाएँ। आपकी पहली कोशिश होनी चाहिए कि दूसरों से मजाक न करें और यदि कोई आपसे मजाक करता है, तब उसे सहने की क्षमता विकसित करें।

सहनशीलता—सहनशीलता एक ऐसा गुण है, यदि इसे विकसित कर लिया जाए तो बड़ी-से-बड़ी मुश्किल से भी पार पाया जा सकता है।

सहयोग—अप्रिय व्यक्तित्व वाले इनसान के साथ कोई सहयोग नहीं करना चाहता। जो उत्साही नहीं या जिसमें संयम की कमी है, उसके साथ भी कोई सहयोग नहीं करना चाहता।

सहयोग—सहयोग लिए बगैर कोई भी व्यक्तिगत उपलब्धि के रास्ते में सफलता की ऊँची सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकता। सहयोगियों का चुनाव करने में सावधानी बरतना जरूरी है, खासकर उन लोगों के साथ, जिससे व्यक्ति अपने व्यवसाय के सिलसिले में नजदीकी व्यक्तिगत संबंध बनाता है।

सहयोग—सहिष्णुता एक व्यक्ति का सहिष्णु होना जरूरी है और इसके कई कारण हैं, जिनमें से मुख्य यह है कि

सहिष्णुता इनसान को सही तरीके से सोचना सिखाती है और तथ्यों की ओर ले जाती है, जिनसे उसके अंदर सटीक सोच की क्षमता पैदा होती है।

सहयोग-भाव—दूसरों को उनके उद्देश्य हासिल करने में सहायता करें। अधीनस्थों को अपनी भूमिकाएँ निभाने के लिए सही स्पेस और अधिकार दें। खुद तक सीमित न रहें। गलतियों को तर्कपूर्ण तरीके से सोचना और स्वीकार करना बड़ा अंतर लाता है। गलतियों पर भावुक प्रतिक्रिया हमारे निर्णयों को बदल देती है और अपराधबोध पैदा करती हैं।

सहायता—कभी किसी को मायूस न करें और सभी के लिए दयालु रहें। सभी की सहायता करें। अपने दिल से नफरत को निकाल दें, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करें और धरती पर हरेक प्राणी से प्यार से रहें। आलोचनाओं से दूर ही रहें। कभी किसी का बुरा नहीं चाहें। हमेशा अच्छे विचारों को ही दिमाग में आने दें।

सहिष्णुता—बगैर सहिष्णुता को अपनाए किसी भी व्यक्ति के लिए सटीक सोच के सिद्धांत को अपनाना नामुमकिन होता है, क्योंकि असहिष्णुता के प्रभाव में आकर इनसान ज्ञान की किताब बंद कर देता है और इसके ऊपरी पन्ने पर लिखता है, 'समझो पढ़ लिया, क्योंकि मैं सब जानता हूँ!'

सहिष्णुता—व्यक्ति का सहिष्णु होना जरूरी है, क्योंकि सहिष्णुता इनसान को सही तरीके से सोचना सिखाती है और तथ्यों की ओर ले जाती है, जिनसे उसके अंदर सटीक सोच की क्षमता पैदा होती है। जिन लोगों का दिमाग असहिष्णुता की वजह से भ्रष्ट हो चुका है, वे चाहे किसी भी प्रकार और प्रकृति के क्यों न हों, कभी भी सटीक विचारक नहीं बन सकते, जबकि सटीक सोच से ही हम असहिष्णुता पर काबू पा सकते हैं।

सहिष्णुता—सहिष्णु होने का मौका मिलना आपके लिए एक सौभाग्य है। आपको सहिष्णु होने के लिए किसी से इजाजत की जरूरत नहीं। यह ऐसी चीज है, जो आपके दिमाग में आती है और आप इस पर फैसला कर सकते हैं, यानी यह आपकी ही जिम्मेदारी बनती है।

सही शिक्षा—सही शिक्षा का मतलब है—दिमाग का विकास, न कि सिर्फ ज्ञान का संग्रह और उसका वर्गीकरण। शिक्षा में वह शक्ति होती है, जो किसी की हर जरूरत को पूरा कर सके, बिना दूसरों के अधिकारों में दखल दिए। शिक्षा का मतलब है—करना, न कि सिर्फ जानना।

सात्त्विक—जिस व्यक्ति को सफलता प्राप्त करनी है और अपने व्यक्तित्व का विकास करना है, उसे चाहिए कि वह शुभ विचारों तथा सात्त्विक को अपने जीवन में आश्रय दे, क्योंकि इससे पवित्रता का संचार होता है। पवित्रता में देवों का वास है और जहाँ दैवी आभा विद्यमान है, वहाँ उन्नति एवं विकास के रास्ते स्वत: ही खुलते चले जाते हैं।

साथ—अगर आप लोगों से दोस्ती नहीं कर सकते, तो उनसे जुड़ नहीं सकते। जीवन में कोई भी व्यक्ति अकेला ही सफल नहीं बन सकता। वह बहुत सारे व्यक्तियों को साथ लेकर ही सफल बनता है।

साधन और साध्य—हमारी सफलता इस बात में है कि हम सावधान रहकर, जो भी काम हमारे हाथ में हो, उसे अच्छी तरह पूरा करें। कुछ लोग जीवन की सफलता पैसों से आँकते हैं। जिसने अधिक कमाई कर ली, उसके लिए माना जाता है कि वह जिंदगी में सफल रहा, पर धन सफलता की असली कसौटी नहीं है। धन साधन है। जीवन का साध्य नहीं हो सकता।

सामंजस्य—बुद्धिमान या कामयाब लोग वही हैं, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अद्भुत सामंजस्य बनाए रखते हैं। इस सूत्र की विशेषता को ध्यान में रखते हुए भी आर्मी समेत बहुत-से क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ साक्षात्कार के दौरान उम्मीदवार से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी वह कितना संतुलन बनाए रख

सकता है?

सामंजस्य— लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना सफलता का एक अति महत्त्वपूर्ण सूत्र है।

सामंजस्य— सामंजस्य की कमी अकसर विफलता की पहली और आखिरी तथा एकमात्र वजह होती है। सामंजस्य की सामूहिक भावना हासिल की जा सकती है—अनुशासन से, स्वैच्छिक या बलपूर्वक। सामंजस्य कुदरत के नियमों में से एक है, जिसके बिना संगठित ऊर्जा जैसी चीज हो ही नहीं सकती या जीवन नहीं हो सकता।

सामना— अपने गुणों को पहचानें, उनका महत्त्व समझें। उनसे प्यार करना और उनके बारे में खुश होना सीखें, बजाय इसके कि जो योग्यताएँ आपके पास नहीं हैं, उनके बारे में सोचते रहें। प्रत्येक समस्या का निर्भीकता से सामना करें। इससे आपको खुशी का एहसास होगा और आप प्रसन्नचित्त हो जाएँगे।

सामना— यदि आप छत्ते से शहद खाना चाहते हैं तो आपको इस बात के लिए भी तैयार रहना चाहिए कि मधुमक्खियाँ आपको जरूर काटेंगी। मतलब यह कि यदि आप कोई अच्छा कार्य करना चाहते हैं या सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको रास्ते में आनेवाली परेशानियों और कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि आप तैयार हैं तो कदम बढ़ा दीजिए।

सामर्थ्य— अपनी क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग करना ही सफलता की कुंजी है। इसके साथ ही उन कार्यों से बचकर रहना भी अत्यावश्यक है, जो आपकी कमजोरियों को उजागर करते हैं। लोगों की प्रवृत्ति होती है कि वे कमजोरियों को क्षमताओं में बदलने की भूल करने लगते हैं। वे प्रयास व्यर्थ हैं। आपको अपना समय अपनी सामर्थ्य, अपनी शक्तियों को बढ़ाने और उनका उपयोग करने में लगाना चाहिए, जो आपकी आभ्यंतरिक सक्षमता का आधार हैं।

सामर्थ्य— ईश्वर ने जो भी शक्ति और सामर्थ्य हमें प्रदान किए हैं, हमें उनका समुचित उपयोग करने की कला को विकसित करना चाहिए। स्मरण रखिए, जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं, उसकी जीवन यात्रा एक बीहड़ जंगल में भटकाव के समान है।

सामान्य बोध— अत्यधिक सफल लोगों में सामान्य बोध होता है कि उन्हें कब और क्या करना है? वे अपने दैनिक क्रियाकलापों एवं संबंधों में हमेशा सामान्य समझदारी का प्रयोग करते हैं। यह ज्ञान मुख्यत: अनुभव और दैनिक कार्य-कलापों से प्राप्त होता है। सफल व्यक्ति जीवन से ही सीखते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें कुछ अधिक मेहनत करनी पड़े, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि वास्तविक ज्ञान उन घटनाओं को समझने में है, जो उनके आस-पास घट रही हैं और उसके साथ ही यह समझ भी होनी चाहिए कि उनसे किस तरह सही ढंग से निपटा जाए।

साहस— अधिकांश लोग यह चाहते हैं कि जैसा वे करें, वैसा ही सब करें; जिस चाल से और जिस ढंग से वे चलते हों, उसी तरह सब चलें। यदि लोकमत से जरा भी भिन्नता हुई तो लोग बुरा कहने लग जाते हैं। नए कार्य को हम डर के मारे अधूरा ही छोड़ देते हैं। उसमें हमारा या संसार का जो भला होता है, उससे हाथ धोना पड़ता है। वस्त्र के पहनने में, नौकर-चाकर रखने में, रहन-सहन में, खेती-बाड़ी, व्यवसाय करने में, इन सब कार्यों में हमने कुछ नवीनता या भिन्नता दिखाई नहीं कि संसार की जीभ हमारी बुराई करने लग जाती है। इस बुराई से बचने के लिए यदि कोई शस्त्र या अस्त्र है, तो एकमात्र साहस है।

साहस— अपने मन से विचारों को कार्य में शीघ्र परिणत करो। विचारों के अनुसार कार्य न किया जाए तो वे विचार केवल स्वप्न मात्र हैं। मुकाबला और मुठभेड़ करने से न घबराओ। काम किए जाओ। मुकाबला आखिर मनुष्य ही से तो है, फिर डरने की कौन सी बात है?

साहस—किसी भी कुत्सित प्रथा को तोड़ने के लिए जो व्यक्ति अग्रसर होता है, उसको गालियाँ खानी ही पड़ेंगी और सबका बुरा बनना पड़ेगा। यदि उसमें साहस नहीं है, तो वह ऐसी प्रतिकूल व्यवस्था उत्पन्न कराने के लिए खड़ा ही नहीं हो सकता।

साहस—जिस व्यक्ति को दुनिया में कुछ करना है, तो उसे उत्तरदायित्व से नहीं घबराना चाहिए। उत्तरदायित्व वही व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, जो असफलता झेलने और लोकमत के नियमों का खंडन सहन करने का साहस रखता हो। जिस व्यक्ति में साहस नहीं है, वह उन आज्ञाओं को कार्यरूप में परिणत नहीं कर सकता, जो परमात्मा ने उसके जन्म के समय उसके लिए मोहरबंद करके रख दी हैं।

साहस—पूरी दुनिया साहस से प्रेम करती है। कायरता में आकर्षण नहीं होता। भीरुपन से कोई भी अनुराग नहीं रखता, परंतु साहस व्यक्ति का सुंदर स्वरूप और आभूषण है। जितने चमकीले और लुभानेवाले फैशन चलते हैं, वे उन्हीं पुरुषों के निकाले हुए होते हैं, जो अपनी कुरूपता और हीनता को ढकना और छिपाना चाहते हैं।

साहस—भय मूर्खता है। भयरहित अवस्था ही सच्चा ज्ञान है। विपदा आने पर डरनेवाला मूर्ख है। विपत्तियों के बीच में मन की स्थिरता और साहस के साथ उनका सामना करनेवाला ज्ञानी है।

साहस—भय से डरने पर भय और बढ़ता है। उससे लड़ने पर भय दूर भागता है। मन को स्थिर रखकर अपने आत्मज्ञान से विपदाओं को दूर भगाना चाहिए। जो ऐसा करता है, वही अपना भाग्य बदल सकता है। जब आप एक बार साहस करके कोई कठिन कार्य करते हैं तो आपका साहस दुगुना हो जाता है और भय भाग जाता है। जिस प्रकार काम ही काम को सिखाता है, उसी प्रकार साहस ही साहस को बढ़ाता है।

साहस—मधु (शहद) मक्खियों के छत्ते से निकलता है। उन मक्खियों के जहरीले डंक होते हैं। उनके मधु को वही मनुष्य प्राप्त कर सकता है, जो उनके डंकों से नहीं घबराता। गुलाब के पौधे में सुगंधमय पुष्पों के साथ-साथ काँटे भी लगे रहते हैं। उनके पुष्पों के सौरभ का आनंद वही मनुष्य लेता है, जिसे काँटों की पीड़ा सहन करने का साहस हो। संसार में जितने महान् पुरुष हुए हैं, सबके मार्ग में अत्यंत कठिनाइयों के जाल बिछे देखे गए। वास्तव में, महत्ता दुर्गम संकटों का आह्व□ान करती है और उनका निराकरण करके ही अपने अस्तित्व को सार्थक सिद्ध करती है।

साहस—यदि साहस न हो तो एक समाज सुधारक जनसाधारण को निर्भीकतापूर्वक सत्य-पथ नहीं दिखा सकता। यदि उसमें साहस नहीं है तो जनसाधारण का उससे क्या कल्याण हो सकता है? साहस बिना वह उनको केवल प्रसन्न करने में ही अपनी शक्ति को समाप्त कर देगा।

साहस—संसार में व्यर्थ भौंकनेवालों की कमी नहीं है। हम अपनी दुर्गति इसी भय से बना लेते हैं कि लोग हमारे लिए क्या विचार कर रहे हैं? निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कह डालने से पहले यदि आप बात से डर जाएँ कि लोग आपको बुरा कहेंगे तो आप डरते-डरते विचार करने से भी डरने लग जाएँगे।

साहस—सफलता कभी अंतिम नहीं होती, विफलता कभी घातक नहीं होती। जो मायने रखता है, वो है—साहस।

साहस—साधारणत: लोग तभी तक आपकी प्रशंसा करेंगे, जब तक आप उनके अनुयायी बने रहेंगे। जहाँ आपने कोई नई बात की नहीं कि लोग आपका सिर फोड़ने को तैयार हो जाएँगे। आपको गालियाँ देंगे, आपके रास्ते में काँटे बिछाएँगे, आपको पागल तक बताएँगे। जिद्दी, अपव्ययी, हठी, घमंडी, क्रोधी इन शब्दों की बौछार आप पर करने लगेंगे। यदि आप इन सब प्रहारों से अपना संरक्षण कर सकते हैं, तो वह संरक्षण साहस द्वारा ही कर सकते हैं और फिर वो दिन भी आता है, जब यही नया सिद्धांत या नई बात पूरे समाज में या कभी-कभी पूरी दुनिया में आपको स्वीकृति प्रदान कराती है।

साहस—सामाजिक, राजनीतिक या व्यवसाय क्षेत्र में किसी पुरानी प्रथा को तोड़कर उसकी जगह पर नई व्यवस्था उत्पन्न करने के लिए वही व्यक्ति खड़ा हो सकता है, जिसमें साहस का आत्मबल हो। संग्राम के समय शत्रु पर आक्रमण करने में जो साहस एक सेनानायक को करना पड़ता है, उससे कहीं अधिक साहस उस व्यक्ति को करना पड़ता है, जो किसी भी प्रकार की पुरानी चाल को नवीनता से बदलना चाहता हो। सच तो यह है कि नई बात कहने के लिए सबसे पहले साहस की ही आवश्यकता है।

साहसी मनुष्य—जिस तरफ रास्ता दिखलाई देता है, उधर ही जाने की इच्छा होती है। जहाँ मार्ग दृष्टिगत नहीं होता, वहाँ जाने के लिए विचार भी नहीं होता। यह व्यवहार साधारण इच्छा रखनेवाले व्यक्ति के लिए है, परंतु इच्छुक और साहसी मनुष्य इस सामान्य नियम को बदल डालते हैं।

सीख—असफलता को आप किस तरह से लेते हैं, यह आप पर निर्भर करता है, क्योंकि हर असफलता आपको कुछ सिखाती है। असफलता में राह में मिलनेवाली सीख को समझकर जो आगे बढ़ता जाता है, वह सफलता को पा लेता है। सफलता के लिए जितना जरूरी लक्ष्य और योजना है, उतना ही जरूरी असफलता का सामना करने की ताकत भी है।

सीख—जिस व्यक्ति में ताउम्र सीखने की चाह होती है, सफलता उसके कदम चूमती है। सीखने की चाह ही कुछ करने में सहायक होती है और सीखनेवाला व्यक्ति ही वक्त के साथ कदम बढ़ा सकता है।

सीख—बच्चे उसी से सीखते हैं, जो वे देखते हैं और अनुभव करते हैं, उससे नहीं, जो हम कहते हैं या जिस पर चीखते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि वे सफलता और विफलता के आस-पास जीवन के सबक हमारे ही तरीके से सीखेंगे कि हम कैसे अभिभावक के रूप में सफलता और विफलता का अपने लिए अनुभव करते हैं और कैसे उनका सामना करते हैं। उन्हें ये देखने की जरूरत है कि हम विफलता को कैसे स्वीकार करते हैं? उन्हें हमें अपनी नाकामियों से सीखते हुए देखना चाहिए। उन्हें हमें गिरते हुए और फिर तेजी से खड़े होते हुए भी देखना चाहिए—नई ऊँचाइयों की ओर, बेशक कभी-कभी फिर से गिर जाने के लिए भी। उन्हें ये भी देखना चाहिए कि कैसे हम कुछ मामलों में सफल रहते हैं और सफलता पर सहज बने रहते हैं। उन्हें देखना चाहिए कि हम सफलता की खुशी का कैसा अनुभव करते हैं।

सीख—याद रखें, दर्द दो तरह के होते हैं—एक, जो आपको चोट पहुँचाता है और दूसरा, जो आपको बदलता है। दोनों ही सिखाते हैं।

सीखना—अपने प्रयासों को पूर्णतया अपने जोश में लगाएँ। अपनी ऊर्जा को बिखेरें नहीं और अगर आप जीवन में सफल बनना चाहते हैं तो सदैव सीखते रहें। यह एक और महत्त्वपूर्ण सफलता का मंत्र है, जिसकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते। अपने उद्योग में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने के लिए लगातार और निरंतर उन्नति करते रहना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

सीखना—गलतियों से न सीखना ही एकमात्र सबसे बड़ी गलती होती है।

सीखना—नई तकनीकी सीखने के लिए स्वयं को तैयार रखिए। कभी यह मत सोचिए कि आपको सब आता है। यह आपका अहंकार है, जो आपको सफल बनने से रोक सकता है।

सीखना—सफलता को अवसरों को भुनाने व जल्दी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए किसी भी कार्य या कला में कुशलता या महारत बड़ी मददगार होती है। इसलिए बिना अहंकार के सीखने की जिज्ञासा बनाए रखें।

सीखना—सीखने की प्रक्रिया कभी बंद नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यही आपको अनुभव और संतुष्टि देती है।

अपनी असफलताओं से भी सबक लें। दरअसल, यही बताती है कि कमी कहाँ है, जरूरत किस बात की है और आपसे क्या गलती हुई है?

सीढ़ी—अपनी असफलताओं को खुद पर हावी मत होने दो, बल्कि असफलताओं को ही अपनी सफलता की सीढ़ी के रूप में इस्तेमाल करो।

सीढ़ी—आप सफलता की सीढ़ी असफलता के कपड़े पहनकर नहीं चढ़ सकते।

सीढ़ी—महापुरुषों ने असफलता को ही 'सफलता की सीढ़ी' बताया है।

सीढ़ी—सफलता के लिए कोई लिफ्ट नहीं जाती, इसलिए सीढ़ियों से ही जाना पड़ेगा।

सुअवसर—ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को जीवन में ऐसा एक सुअवसर जरूर देता है, जिसका लाभ उठाकर वह धन, वैभव और सम्मान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। सवाल केवल इतना है कि कौन कितनी सूझ-बूझ और मेहनत से उस मौके का फायदा उठा पाता है?

सुअवसर—कमजोर व्यक्ति सुअवसरों का इंतजार करते रहते हैं, निर्भीक व्यक्ति इन्हें बनाते हैं।

सुअवसर—कार्य के चुनाव के लिए अपनी रुचि और पसंद को स्थान देना ठीक है, किंतु फिर भी अनुभवहीनता एवं अज्ञान की स्थिति में व्यक्ति की रुचि और पसंद का दायरा बहुत ही सीमित और संकीर्ण रहता है। ऐसी स्थिति में कई व्यक्ति जीवन में आनेवाले कई सुअवसरों को अपनी रुचि का विषय न समझकर टाल देते हैं। हालाँकि दृढ़ निश्चयी व्यक्ति इन अवसरों से लाभ उठाकर बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सुअवसर—हर इनसान के जीवन में एक बार सुअवसर दस्तक देता है, उस क्षण को पहचानकर पकड़ने का प्रयत्न करें। यदि एक बार सफल न हो पाएँ तो पछताकर या रोकर समय बरबाद न करें। नए अवसर आपकी राह में रहेंगे। बस, आपकी मेहनत, लगन व एकाग्रता आवश्यक होगी।

सुख—बबूल के पौधे लगाने से उन पर कभी भी आम नहीं लग सकते। दूसरों के सुख की हम चिंता करें तो अपने आप ही हमें सुख मिलेगा। इस संसार में हम जो भी दूसरों को देते हैं, वही हमें वापस मिलता है, कई बार, कई गुना अधिक मात्रा में।

सुधार—अपने खुद के रचनात्मक आलोचक बनने का साहस रखें। अपनी गलतियाँ और कमजोरियाँ खोजें और फिर उन्हें सुधारें। इससे आप पेशेवर बन जाएँगे।

सुधार—यदि आपके बारे में कोई गलत बात कही जाती है और उसमें अगर सत्यता हो, तो सबसे पहले हमें अपने आप में सुधार करना चाहिए। यदि यह असत्य है, तो इसे हँसकर टाल देना चाहिए।

सुधार-यात्रा—अगर आप एक नकारात्मक व्यक्ति हैं और अविश्वास, बेइमानी, विश्वासघात, ईर्ष्या, तुनकमिजाजी आदि जैसी भावनाओं से ग्रस्त रहते हैं तो इस बात की काफी संभावना है कि जो लोग आपके जीवन से आकृष्ट होते हैं, वे बिल्कुल आपकी प्रकृति के होंगे। इसके अलावा आपकी दृष्टि इतनी मलिन होगी कि आप जिस तरफ भी देखेंगे, आपको अपने ही नकारात्मक गुणों की झलक नजर आएगी। आपके लिए अब कुछ भी सही प्रतीत नहीं होगा। जब एक बार आप यह समझ चुके हैं कि अपनी दुनिया को इतना धुँधला आपने खुद बनाया है, अभी भी आशा नजर आती है। कृपया कुछ समय निकालकर उन चरम नकारात्मक गुणों की सूची बनाएँ, जो आपको अपने आस-पास के लोगों में सामान्यत: दिखाई देते हैं। एक बार यह जान लेने के बाद आप उन्हें सुधारने की ओर अपनी यात्रा आरंभ कर सकते हैं।

सुनने की आदत—लोगों से सदैव प्रश्न पूछें व उन्हें धैर्यपूर्वक सुनें। पूछने व सुनने की आदत से आपको वे

जानकारियाँ मिलेंगी, जिनके द्वारा आप सदैव उचित निर्णय ले सकेंगे। याद रखें, बड़े लोग सदैव सुनने की एवं छोटे लोग सदैव बोलने की आदत में माहिर होते हैं।

सुनने की आदत—सोच अकसर इनसान वैसी ही बनता है, जैसा वह अपने बारे में सोचता है।

सुनिश्चित विजय—अपने प्रयासों में पूर्णता तथा इरादों में पवित्रता लेकर कार्य करनेवाले लोग एक हजार बार हारकर भी अंतत: जीत जाते हैं। अपनी मौलिकता को बचाए रखकर कार्य करनेवाले लोगों की विजय सुनिश्चित है।

सुविचार—जिनका मन उत्साहपूर्ण, स्फूर्तिदायक, आध्यात्मिक विचारों से परिपूर्ण रहता है, वे सदा युवा रहकर दीर्घायु को प्राप्त होते हैं।

सुव्यवहार—कोई भी माहौल अथवा वातावरण तभी खुशनुमा रह सकता है, जब आप स्वयं खुश रहें। आपका संयमित, कुशलतापूर्ण तथा व्यवस्थित व्यवहार ही आपका असली परिचायक है।

सुव्यवहार—हमारे मुँह से वह बात कभी निकलनी नहीं चाहिए, जिसके बारे में हमने कभी थोड़ा-बहुत विचार न किया हो। हमारे बहुत से कार्य हमारे व्यवहार में शामिल बहुत सी खामियों की वजह से पूरे नहीं हो पाते। व्यवहार में शालीनता, दूसरों के प्रति विनम्रता तथा अपनी समझ को विकसित करके हम अपनी सोच को बदल सकते हैं, जिसके निश्चित ही सकारात्मक परिणाम आते हैं। व्यवहारजन्य सोच को परिवर्तित करने में सहायक हैं—दूसरों के प्रति प्रेमपूर्ण रवैया, अपनी वाणी और व्यवहार को नियंत्रित रखना, आदर एवं सम्मान की भावना का विकास, प्रत्येक व्यक्ति के मानवीय गुणों की कद्र इत्यादि।

सुशिक्षा—अच्छी शिक्षा पाने में बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके विपरीत गलत शिक्षा बहुत आसानी से मिल जाती है। सफलता प्राप्त करनेवाले गलत शिक्षा कभी ग्रहण नहीं करेंगे, क्योंकि उन्हें इधर-उधर भटकना नहीं है, अपितु अपना उद्देश्य पूरा करना है, अपने लक्ष्य को भेदना है।

सुशिक्षा—अच्छी शिक्षा सभी के लिए सफलता के द्वार खोलती है और उद्देश्य की पूर्ति के लिए अग्रसर करती है। दूसरी ओर, यदि कोई व्यक्ति शिक्षा को मात्र औपचारिकता के लिए ग्रहण करता है तो वह असफलता की ओर बढ़ता है। साथ ही, वह अपने उद्देश्य से भी भटका होता है। फिर वह सफल कैसे हो सकता है?

सूत्र—जीवन एक वरदान है, इसका महत्त्व जानिए। एक कमजोर व रोते-पीटते इनसान की बजाय, जिंदादिल व बहादुर व्यक्ति के रूप में जिंदा रहिए। यही सुख सफलता का सूत्र है।

सृजन—सफल लोग सबकी परवाह करते हैं। उनका यह लिहाज भी उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। बदलती मन:स्थिति ही एक स्वस्थ व रचनाशील व्यक्तित्व की निशानी है। नकल नहीं, सृजन करिए। प्रयास करें—अपनी आत्मा के छिद्रों को पहचानकर उन्हें सिलने का।

सोच—अगर लोग अपने जीवन की महान् ऊँचाइयों को हासिल करते हैं या गुमनामी के अँधेरे में खो जाते हैं, तो यह उनकी सोच की वजह से होता है, जिसे वे अपने दिमाग पर हावी होने देते हैं।

सोच—अपनी सोच की दिशा बदलें और हर चीज के बारे में सकारात्मक सोचें। अपने हर दिन की शुरुआत इस सोच के साथ करें कि मुझे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी और मैं अपने लिए निर्धारित कार्यों को ईमानदारी से पूरा करूँगा। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि सकारात्मक सोच रखने से आपकी जिंदगी खुशहाल रहती है और आप हमेशा हर हाल में खुश रह सकते हैं। यही नहीं, सकारात्मक सोच का असर यह होता है कि विपरीत स्थितियों में भी आप सही निर्णय ले पाते हैं।

सोच—अपनी सोच को सदैव बड़ा रखें, क्योंकि मौके भी उन्हीं को दिए जाते हैं, जिनके अंदर कुछ बड़ा करने की

चाहत होती है।

सोच— अपनी सोच को सही तरीके से सपनों को पूरा करने के लिए अमल में लाने का प्रयास करें। हर व्यक्ति के अपने सपने होते हैं, जो बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। एक अच्छी सोच के बावजूद वे डरते हैं कि कहीं लोग हम पर हँसेंगे। यह जानकर आश्चर्य होगा कि ज्यादातर लोग अपने सपने इसलिए नहीं पूरे कर पाते, क्योंकि वे उनके टूट जाने या पूरा न हो पाने के डर से परेशान रहते हैं। युवाओं को स्वयं से कहना होगा कि उनमें सपनों को पूरा करने की क्षमता है और आप उन्हें पूरा होता देखेंगे।

सोच— आज तमाम सफल लोग जिस जगह पर हैं, वे वहाँ दृढ़ संकल्प की वजह से हैं। उतनी ही पक्की सोच की वजह से जितना पक्का है, दिन के बाद रात का होना। आप अपने पैसों को या प्यार और दोस्ती को पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन विचार एक ऐसी चीज है, जिसे आप पूरी तरह काबू कर सकते हैं। इस दुनिया में आने पर भी आपका काबू नहीं था और न ही इस दुनिया से जाने पर आपका कोई नियंत्रण होगा, लेकिन आप अपनी मनोदशा को पूरी तरह नियंत्रित कर सकते हैं। आप उस दिमाग को बाहरी प्रभावों की वजह से या तो सकारात्मक सोचवाला बना सकते हैं या नकारात्मक। दैवी शक्ति ने आपको अपने दिमाग पर पूर्ण नियंत्रण की ताकत दी है और नियंत्रण के साथ यह जिम्मेदारी दी है कि आप इसका सर्वोत्तम इस्तेमाल कर सकें।

सोच— आप जैसा सोचते हैं, वैसे ही बन और बना सकते हैं। अगर आप अच्छा सोचेंगे तो आप अच्छाइयों की तरफ बढ़ेंगे और जब आप बुरा सोचेंगे तो बुराइयाँ आपकी और आकर्षित होंगी।

सोच— आप जो कुछ भी हासिल करना चाहते हैं, उसे प्राप्त करने की दिशा में अगर आप अपनी सोच नहीं बदलेंगे तो अपने व्यवसाय में कितना भी प्रशिक्षण प्राप्त करने के बावजूद आपको वे परिणाम नहीं मिलेंगे, जो आप चाहते हैं। आपको अगर ज्यादा धन चाहिए, एक अच्छा घर चाहिए, परिवार के लिए बेहतर सुविधाएँ चाहिए, एक बेहतर कार चाहिए, परिवार और मित्रों के साथ आप अपने संबंध अधिक अच्छे बनाने की चाहत रखते हैं, वास्तव में आप जो कुछ भी पाना चाहते हैं, उसके लिए आपको अपनी सोच भी वैसी ही बनानी पड़ेगी।

सोच— आपकी सोच ही कार्य के प्रति आपको ऊर्जावान बनाती है। सकारात्मक सोच मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। इसके विपरीत नकारात्मक सोच नकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। नकारात्मक ऊर्जा के साथ कार्य करनेवाला अपने को हताश एवं निराश पाता है। हताशा और निराशा ही सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनती है। आप जरा सोचकर देखें, जब भी कार्य करने से पहले ही मस्तिष्क को ये संदेश दे दिया जाता है, 'मैं सफल नहीं हो सकता' तो ऐसी स्थिति में क्या आप सफल हुए हैं? नहीं, कदापि नहीं। सफल होने से पहले सफलता के साथ सोचना सीखें। यह सोच ही आपके जीवन में परिवर्तन ला सकती है।

सोच— आपके पास जो कुछ है, अच्छा या बुरा या आप जो कुछ हासिल करनेवाले हैं, उसके पीछे आपकी सोच होती है। सकारात्मक सोच से सकारात्मक इच्छावाली वस्तुएँ हासिल होती हैं, नकारात्मक सोच से गरीबी और बदहाली समेत कई अनचाही वस्तुएँ हासिल होती हैं। आपका दिमाग वह चुंबक है, जिससे आपके पास मौजूद चीजें चिपक जाती हैं और यह अच्छी तरह जान लीजिए कि आपका दिमाग कभी सफलता को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता, यदि आप गरीबी और असफलता के बारे में सोच रहे हों।

सोच— आपको कोई भी काम करने से पहले हमेशा दूर की सोचकर चलना चाहिए। इसके लिए आप जो भी कार्य करने जा रहे हैं, उसे करने से पहले यह जरूर सोच लेना चाहिए कि इसके क्या परिणाम होंगे? अपनी सोच को ऐसा बनाएँ कि किसी कार्य के भविष्य में क्या परिणाम होंगे, इसकी परख आप पहले ही कर सकें।

सोच—इनसान की सोच उसकी शख्सियत का आईना होती है। जैसी सोच वह मन में रखेगा, वैसे ही भाव उसके चेहरे पर उभर आते हैं।

सोच—एक बार जापान के वैज्ञानिकों ने आदमी की सोच पर अध्ययन किया। उन्होंने एक ऑफिस में दो बोतलों में पानी भरा। एक बोतल के ऊपर 'प्रेम' लिखा और दूसरी बोतल पर 'नफरत'। और उन दोनों बोतलों को ऐसे स्थान पर रख दिया, जहाँ से सभी कर्मचारियों का आना-जाना रहता था। कुछ महीनों बाद दोनों बोतलों के पानी को निकालकर जाँच की गई और देखा कि जिस बोतल पर 'प्रेम' लिखा था, उसका पानी स्वाद में मीठा था और जिस बोतल पर 'नफरत' लिखा था, उसका स्वाद कड़वा और बहुत बुरा था। यह कैसे संभव हुआ? जब दोनों बोतलों में एक सा पानी था और दोनों एक ही स्थान पर रखी हुई थीं तो एक का स्वाद मीठा और एक का कड़वा कैसे? चमत्कार जैसा। जब वैज्ञानिकों ने इसका अध्ययन किया तो पाया कि न तो यह कोई जादू था और न ही कोई रासायनिक क्रिया। यह सब इनसानी सोच का परिणाम था। यह सब कैसे मुमकिन हुआ? जिस बोतल पर 'प्रेम' लिखा था, उस पर जब लोगों की नजर पड़ती थी तो उन्हें अच्छा लगता था और उनकी सोच और नजरिया उसके प्रति अच्छा हो जाता था और जिस बोतल पर 'नफरत' लिखा था, उसके प्रति उनकी नजर अच्छी नहीं होती थी। तो क्या इनसान की सोच में इतना ज्यादा असर हो सकता है? यह मुमकिन है।

सोच—कोई भी परिस्थिति अथवा व्यक्ति अच्छा या बुरा नहीं होता, हमारी सोच ही उसे अच्छा या बुरा बनाती है। कई बार ऐसा होता है कि जो व्यक्ति हमें अत्यधिक प्रिय होता है, उसमें भी हमें कमियाँ और बुराइयाँ दिखाई देने लगती हैं। कई बार हमारी सोच हमारे निहित स्वार्थों और अपेक्षाओं के कारण भी परिवर्तित होती है। वे व्यक्ति, जिन्हें जीवन, समाज और अपने कार्य क्षेत्र में सफल रहना है, उन्हें चाहिए कि वे अपनी सोच और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने की कला सीखें।

सोच—जब व्यक्ति यह सोचने लगता है कि यह काम मेरे लिए असंभव है और मैं यह काम नहीं कर सकता तो किसी विज्ञान या किसी टोने-टोटके में इतनी ताकत नहीं कि उसके दम पर उससे वह काम करा लिया जाए।

सोच—मस्तिष्क को पुरानी, पुरातनवादी सोच से बाहर निकालकर सदैव नई सोच एवं विचारों को ग्रहण करनेवाला बनाएँ। सदा नए प्रयोग करने के लिए तैयार रहें और अपने प्रत्येक कार्य में प्रगतिशील रहें।

सोच—व्यक्ति के सोचने और उसके वैसे होने में बड़ा गहरा संबंध है। जब इनसान की सोच और विचारों में इतनी गहरी शक्ति होती है तो फिर लोग इसका फायदा क्यों नहीं उठा पाते? शायद अज्ञानता या अविश्वास के कारण या फिर कह सकते हैं कि वे अपनी खुद की शक्तियों को सही से जान नहीं पाते। जब सोच और नजरिए से पानी का स्वाद बदल सकता है, फिर जीती-जागती इनसानी जिंदगी क्यों नहीं? आप जैसा सोचते हैं, वैसे ही बन जाते हैं। फिर बहुत सारे लोग अच्छे और सफल क्यों नहीं बन पाते? शायद इसलिए, क्योंकि वो वैसा सोचते ही नहीं हैं। व्यक्ति को भगवान् ने बहुत सारी शक्तियाँ दी हैं, वे अगर उनका सही तरीके से उपयोग करना सीख ले, तो फिर अपनी जिंदगी में बहुत कुछ हासिल कर सकता है। सोचने और विचारने की शक्ति भी उनमें से एक है। अच्छा सोचो तो अच्छे हो जाओगे, बुरा सोचो तो बुरे बन जाओगे। तो फिर क्यों न आज से ही आप अपनी जीवन के बारे में अच्छा और सकारात्मक सोचना शुरू कर दें?

सोच—सफलता के लिए सोच को बदलना होगा। आपकी सोच ही आपको उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकती है।

सोच—सोच को बदलो, सितारे बदल जाएँगे। नजर को बदलो, नजारे बदल जाएँगे। कश्ती को बदलने की जरूरत नहीं। दिशा को बदलो, मंजिल मिल जाएगी।

सोच-विचार—आप क्या कहते हैं और किस तरह कहते हैं, उस पर पूरा ध्यान दें। बोलने से पहले सोचें और गलतफहमी पैदा करने या भावनाओं को चोट पहुँचाने से बचें। अधिकतर लोग उस व्यक्ति के पास खिंचे चले जाते हैं, जो उन्हें हँसा सकता है। अपने हास्य-बोध का इस्तेमाल आपसी संबंधों को मजबूत करनेवाली क्षमताओं में वृद्धि करने के लिए कारगर उपाय के रूप में करें।

सोच—हम आस-पास वही देखते हैं, जो हमारी सोच है। अगर हम डरे हुए हैं तो आस-पास डर पैदा करनेवाली चीजें ही नजर आएँगी। कहा गया है कि नजर बदलोगे तो नजारा बदल जाएगा। हमें अपनी सोच के दायरे से बाहर निकलना होगा, तभी हम सफलता की सीढ़ी चढ़ पाएँगे।

सोच—हमारी विचार शक्ति इस सिद्धांत पर निर्भर करती है कि हमारी अपनी सोच क्या है और हम उसे किस दिशा एवं दशा में प्रयोग करते हैं? असल में, मानसिक क्षमताओं का सही ढंग से उपयोग कर, औसत आदमी भी मेधावी व बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सोच सकता है। हम अपनी बुद्धिमत्ता के प्रयोग दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में करते हैं। अपनी सोच में मामूली सा बदलाव लाकर कोई भी व्यक्ति इसका भरपूर लाभ उठा सकता है।

सोच—हमारी सोच को हमारी सामाजिक परिस्थितियाँ परिवर्तित करती हैं। बुराई-ग्रस्त सामाजिक परिस्थितियों में भी अपनी सोच को सही दिशा में रखनेवाले लोगों ने अपने जीवन में अतिशय सफलताएँ अर्जित की हैं।

सोच—हमारी सोच सभी सफलताओं, समस्त सांसारिक प्राप्तियों, सभी महान् खोजों एवं आविष्कारों तथा समस्त उपलब्धियों का मौलिक स्रोत होती है। हमारे विचार हमारे कॅरियर और वास्तव में हमारे दैनंदिन जीवन के निर्धारक होते हैं। विचार सभी कार्यों के पीछे के मार्ग निर्देशक बल होते हैं। हमारे कार्य अनजाने में ही हमें सफलता या असफलता की तरफ ले जाते हैं।

सोच—हमें छोटी-छोटी घटनाओं और परिस्थितियों से त्वरित तौर पर प्रभावित नहीं होना चाहिए बल्कि परिस्थितियाँ जैसी हैं, हमें उन्हें वैसे ही स्वीकार करना चाहिए। हमें जीवन में जो भी लोग मिलते हैं, उनके साथ एक सामंजस्य की कला का विकास करना चाहिए। इसका निरंतर अभ्यास करने से जो परिणाम सामने आएँगे, वे आपके जीवन और आपकी सोच को बदलने में सहायक सिद्ध होंगे।

सोच-विचार—दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं। एक वे, जो हर कार्य को पहले से सोच-समझकर और नियोजित तरीके से पूरा करते हैं। दूसरे वे, जो अपने कार्य को पूरा करने के लिए किसी प्रकार की योजना नहीं बनाते और बिना किसी सोच-विचार के ही उसे अंजाम देने में लग जाते हैं। ऐसे लोगों की जिंदगी हमेशा अव्यवस्थित रहती है। इसलिए कोई भी काम करने से पहले उसके बारे में पूरी तरह से सोच-विचार कर लें। साथ ही, सभी कार्यों को किसी डायरी या प्लानर पर नोट अवश्य कर लें। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि कोई भी काम छूटेगा नहीं। यही नहीं, आपके सारे काम बहुत आराम से और सही ढंग से पूरे हो सकेंगे।

सौ सबक—सफल लोगों के जीवन में विफलता नाम की कोई चीज नहीं होती। अगर आप सौ बार असफल होते हैं तो मान लीजिए, आपको सौ नए सबक मिल गए और आप लक्ष्य को चूकने में दुबारा वो गलती नहीं करनेवाले। जब आप लक्ष्य पर केंद्रित रहेंगे तो आपका दिमाग भी हमेशा लक्ष्य के विषय में ही सोचेगा। इससे आपकी ऊर्जा भी लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होने लगेगी।

स्थिरता—अगर आप तेजी से सफल होना चाहते हैं तो आपको स्थिर दिमाग के साथ काम करना चाहिए। मन के चंचल होने पर काम पूरा नहीं हो पाता और ध्यान भटक जाता है। जब भी आप किसी काम को नए तरीके से पूरा

करना चाहें तो आपको इसकी सीमा भी पता होना चाहिए। आपको किसी भी विषय को लेकर ज्यादा उत्तेजित नहीं होना चाहिए। इसके बजाय पूरी प्रक्रिया को समझना चाहिए और फिर कोई निर्णय लेना चाहिए। दिमाग की स्थिरता होने पर ही आप आगे बढ़ सकते हैं।

स्पष्ट दृष्टि—हम देखते हैं, हमारे चारों ओर ऐसे कई लोग हैं, जो सफलता के लिए कठोर श्रम करते हैं, पर सफलता कुछ गिने-चुने लोगों को ही मिलती है। हम इसे तकदीर का खेल कहते हैं, पर यदि विश्लेषणात्मक नजरिए से देखें तो पाएँगे कि सफल एवं असफल व्यक्तियों में एक मूलभूत अंतर है। यद्यपि कठोर श्रम दोनों करते हैं, पर सफल व्यक्तियों के पास एक स्पष्ट दृष्टिकोण होता है। वे अँधेरे में तीर नहीं चलाते। उन्हें प्रस्तुत समस्या की समझ होती है और उसके निदान की एक तर्कपरक, व्यावहारिक योजना होती है।

स्पष्ट दृष्टि—हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि हम किसी भी परिस्थिति में वही देखते हैं, जो हम देखना चाहते हैं। अच्छे पहलू को देखें और हार को जीत में बदल लें। अगर आप स्पष्ट दृष्टि विकसित कर लेते हैं, तो सारी चीजें आपके लिए अच्छा काम करने लगेंगी।

स्पष्ट दृष्टिकोण—सफल लोग उन कार्यों में अपने प्रमुख कौशलों का सही प्रयोग करते हैं, जिनमें उनकी रुचि होती है तथा उन्हें वे वास्तव में करना चाहते हैं। वे अपनी शक्ति तथा कमजोरी का अच्छी तरह मूल्यांकन कर सकते हैं तथा इसके अनुरूप वे अपनी सफलता के मंदिर का निर्माण करते हैं। वे अपनी शक्ति को सही रूप देने और अपनी कमजोरियों के प्रभाव को न्यूनतम करने के लिए प्रयास करते हैं। वे जो कुछ करना चाहते हैं, उसके प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण तथा लक्ष्य रखते हैं।

स्पष्ट लक्ष्य—एक स्पष्ट एवं निश्चित लक्ष्य निर्धारित करें, ताकि आप अपनी दिशा को फोकस में रख सकें। अगर आपको स्पष्ट पता नहीं है कि आप किस दिशा में जा रहे हैं तो आपके लिए अपनी मंजिल पाना असंभव होगा। यह गाड़ी चलाने जैसा है। आपको इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि आपको जाना कहाँ है, ताकि आप सीधे उसी दिशा में जाएँ और पेट्रोल तथा समय नष्ट न हो।

स्व-अनुशासन—स्व-अनुशासन के जरिए ही व्यक्ति आत्मविश्वास, लक्ष्य की निश्चितता, व्यक्तिगत पहल, कल्पना, सही निर्णय लेने की क्षमता और अन्य गुण हासिल करता है।

स्वप्न-लता—स्वप्न रूपी लता को श्रम-स्वरूप जल से सींचना चाहिए, उसमें विवेक-स्वरूप खाद डालनी चाहिए और उस लता को विस्तृत होने के लिए ज्ञान-स्वरूप लकड़ी के सहारे पर रखना चाहिए। तब कहीं वह बेल फलती-फूलती है।

स्वप्नद्रष्टा—ऐसे सभी व्यक्ति, जिन्होंने महान् सफलताएँ हासिल की हैं, वे महान् स्वप्नद्रष्टा भी होते हैं।

स्वप्नद्रष्टा—दूसरों के लिए हमेशा अच्छा करें। आपसे जितना बन सके, उतनी सबकी सहायता करें। स्वार्थी न बनें। अपने मतलब को किसी की सहायता करते समय भूल जाएँ। आपकी यह आदत आपके भविष्य में सहायक साबित होगी और आपका जीवन आनंद और खुशी से भर जाएगा।

स्वभाव—इस दुनिया में किसी भी व्यक्ति का स्वभाव प्राकृतिक रूप से ऐसा नहीं है, जिसे पूर्ण कहा जा सके। उसे आवश्यकता होती है—देखभाल की, आत्मसंयम की।

स्वभाव—घर की खुशहाली में स्वभाव का बड़ा महत्त्व होता है।

स्वभाव—स्वभाव कच्ची मिट्टी की भाँति होता है, जिसकी कोई शक्ल नहीं होती। इसे आकृति देने की आवश्यकता होती है।

स्वार्थता—जो व्यक्ति केवल स्वयं के लिए जीता है, वह जीवन का वास्तविक आनंद प्राप्त नहीं कर पाता, क्योंकि वह जीवन भर स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता है और कभी आत्मसंतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता। स्वार्थ को छोड़, दूसरों के लिए जीनेवाले व्यक्ति को अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उसके गुणों, उसकी योग्यता के बल पर उसके कार्य पूरे होते हैं और वह व्यक्ति जीवन में आत्मसंतुष्टि भी प्राप्त करता है।

स्वार्थता—स्वार्थ वह दुर्गुण है, जो व्यक्ति को अपनों से दूर करता है; मानव मन को दु:खी करता है। जब व्यक्ति में 'स्व', अर्थात् 'स्वयं के लिए ही' की भावना जाग्रत् होती है, तो वह स्वार्थी हो जाता है। केवल स्वयं के लिए ही जीना व्यक्ति को समाज से अलग-थलग करता है, क्योंकि तब वह दूसरों का ध्यान नहीं रखता और न ही कभी किसी का सहयोग करता है, जो जीवन में उसकी सफलता के लिए बहुत बड़ी बाधा है। स्वार्थ-सिद्धि के व्यवसाय में गुरु को सही शिष्य नहीं मिल रहा है। शिष्य को सही गुरु नहीं मिल रहा है। अच्छा गुरु और अच्छा शिष्य, दोनों एक-दूसरे को पाने के लिए तड़प रहे हैं, लेकिन वे ही एक दूसरों को खोज पाते हैं, जिनके मन में स्वार्थ की भावना न हो।

स्वास्थ्य—बीमार व्यक्ति को दूसरों की दया तो मिल सकती है, लेकिन वह व्यक्ति लंबे समय तक अपने व्यक्तित्व में आकर्षण बनाए नहीं रख सकेगा। दूसरों को आकृष्ट करने के लिए स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त शरीर का होना नितांत अनिवार्य है। इसके लिए नियमित रूप से व्यायाम करें, खेलों में हिस्सा लें या सुबह की सैर के लिए जाएँ। वही करें, जो आपके शरीर और आपकी मनोवृत्ति के अनुकूल हो। संतुलित भोजन करें। इससे आपके शरीर की प्रतिरक्षण क्षमता मजबूत होगी, आप स्वस्थ रहेंगे और काम करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

हँसी—प्रकृति ने हमारे भीतरी अंगों के व्यायाम के लिए और हमें आनंद प्रदान करने के लिए ही हँसी बनाई है।

हार—छोटी-मोटी हार से मत डरो। बस, यह तय कर लो कि हर हार से सबक सीख लिया जाए। जब अस्थायी हार की चपेट में आएँ, जो आप पहले भी आए होंगे, तो यह न भूलें कि व्यक्ति के विश्वास की परीक्षा कई रूपों में होती है और आपकी हार या असफलता शायद एकमात्र वही परीक्षा की घड़ी हो। इसलिए हार को उससे ज्यादा जोरदार प्रयत्न की प्रेरणा समझकर स्वीकारें और इस विश्वास के साथ आगे बढ़ें कि सफलता आपकी राह देख रही है।

हार-जीत—हमारी कमजोरी यह है कि हम खेलने में कम, उसकी हार-जीत में अधिक दिलचस्पी रखते हैं। हम जमकर खेलना नहीं चाहते और सपने देखते हैं कि सुरक्षित तरीके से कोई व्यक्ति आकर जीत को हमारी गोद में रख जाए। बहुत से लोग हैं, जो अपनी गलतियों को रोमांचक नहीं बना पाते। हमें अपने बारे में, अपने प्रयासों के बारे में विचार करना चाहिए। हमें बिना किसी हील-हुज्जत के अपनी खूबियाँ और खामियाँ कबूल करनी चाहिए।

हारना मना है—उठो और याद रखो कि असफलता गिरने में नहीं, असफलता गिरकर हार मान लेने में है।

हारना मना है—याद रखें, दुनिया में जो लोग सबसे ऊँची सफलता पर पहुँचते हैं, उनमें अधिकतर ऐसे लोग होते हैं, जो परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानते हैं। ऐसे लोग खुद से कहते हैं, जिद करो और दुनिया बदलो। जीवन में आनेवाली परेशानियों से विचलित होकर हमें अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए।

हीन-भावना—हीन व्यक्ति की स्थिति ऐसी होती है कि वे अपनी ही परछाई से डरने लगते हैं और उससे बचने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार, हीन-भावना भी व्यक्ति का पीछा तब तक नहीं छोड़ती, जब तक कि वह उससे बचने का प्रयास न करे। जहाँ व्यक्ति हीन-भावना से बचा और वहीं उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए लालसा जागी।

हीन-भावना—हीन-भावना व्यक्ति को दब्बू बनाती है। हीन-भावना के कारण व्यक्ति अकारण स्वयं को दूसरों से कमजोर, असहाय समझने लगता है। हीन-भावना से वे व्यक्ति ग्रस्त होते हैं, जिनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। इस प्रकार की भावना से ग्रस्त व्यक्तियों को अंदर-ही-अंदर भय सताता रहता है कि कोई कुछ कह न दे, उनसे कोई गलती न हो जाए। वे यह नहीं कर सके तो कोई क्या कहेगा? यह बिना बात का भय उन्हें गर्त में ले जाता है, जिससे वे अपनी शक्तियों को भूल जाते हैं। वे लोगों से छिपते फिरते हैं। अन्य लोगों से नजरें बचाते फिरते हैं। इस प्रकार के लोग एकांतप्रिय होते हैं। ये लोग मित्रों और सगे-संबंधियों तक से दूर भागते हैं कि कहीं उनसे बातचीत न करनी पड़ जाए या ऐसा न हो जाए कि सगे-संबंधी, मित्रादि उनका अपमान कर दें, डाँट दें, मारें न आदि-आदि विचार स्वत: ही उनके मन में विचरते रहते हैं।

हीन-भावना—हीन-भावना से ग्रस्त व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि वे न तो किसी से कुछ सुन पाते हैं और न ही अपनी बात किसी से कह पाते हैं। व्यक्ति को अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए, जिससे हीन-भावना जगह नहीं बना पाए। इसके लिए लोगों से मिलना, उनके बीच उठना-बैठना, उनसे बातचीत करनी चाहिए जिससे आत्मविश्वास पैदा हो। साथ ही, लोगों के सवालों का तर्कों का सामना करने का साहस पैदा हो।

हीन-भावना—'आप यह नहीं कर सकते, आप में छोटापन झलकता है, आप मेरे जैसा कुछ नहीं कर सकते।' यह भावना लोगों में तभी जाग्रत् होती है, जब वे स्वयं को दूसरों से हीन प्रदर्शित करते हैं। आपके आचार-विचार, व्यवहार आपके सामने वाले को आप पर दबाव बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। व्यक्ति में क्या अंदरूनी ताकत है, वह स्वयं भी नहीं जानता, लेकिन जब उन्हें जाग्रत् करता है तो स्वयं ही हक्का-बक्का रह जाता है कि वह कुछ भी कर सकता है। इसलिए हीन-भावना से ग्रस्त होने की अपेक्षा आत्मविश्वास से कार्य करना चाहिए।

हीन-भावना—आत्मविश्वास के अभाव और स्वाभिमान की कमी के कारण व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों की तुलना में खुद को नीचा और कम प्रतिभाशाली होने की भावना से ग्रस्त हो सकता है। इससे व्यक्ति के मन में नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति, महिला हो या पुरुष, उन कामों को करना भी कठिन समझने लगता है, जिन्हें पूरा करना उसके लिए पहले बहुत आसान था। इस तरह की समस्या से जल्दी-से-जल्दी पीछा छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए सकारात्मक सोच का होना अनिवार्य है। सभी नकारात्मक विचारों को एकदम त्याग दें और आशा जगानेवाले विचारों को मन में जगह दें। अपने बारे में और अपने आस-पास के लोगों के बारे में सही ढंग से सोचें।

हौसला—उठो और हौसले के साथ अँधेरे से उजाले की ओर बढ़ चलो।

हौसला—हौसलामंद इनसान हालात का गुलाम नहीं होता। हौसले की कमी इनसान को आगे बढ़ने से रोक देती है।

स्वेट मार्डेन की कुछ प्रमुख सदाबहार प्रेरक पुस्तकें

1. पुशिंग द फ्रंट (1894, 1911),
2. हाऊ टू सक्सेस (1896),
3. द सीक्रेट ऑफ अचीवमेंट (1898),
4. स्टेपिंग स्टोंस (1902),
5. द मेकिंग ऑफ ए मैन (1905),
6. एवरी मैन ए किंग (1906),
7. द ऑप्टिमिस्टिक लाइफ (1907),
8. ही कैन हू थिंक्स ही कैन (1909),
9. पीस, पावर एंड प्लेंटी (1909),
10. बी गुड टू योरसेल्फ (1910),
11. गेटिंग ऑन (1910),
12. द मिरेकल ऑफ राइट थॉट (1910),
13. वूमेन एंड द होम (1915),
14. एवरीबडी अहेड (1916),
15. द विक्टोरियस एटीट्यूड (1916),
16. सेलिंग थिंग्स (1916),
17. हाऊ टू गेट वाट यू वांट (1917),
18. जॉय ऑफ लिविंग (1917),
19. मेकिंग लाइफ ए मास्टरपीस (1917),
20. लव्स वे (1918),
21. यू कैन, बट विल यू? (1920),
22. सक्सेस फंडामेंटल्स (1920),
23. प्रॉसपैरिटी-हाऊ टू अट्रैक्ट (1922),
24. हाऊ टू चूज योर कॅरियर (1922),
25. मेकिंग योरसेल्फ (1923),
26. मास्टरफुल पर्सनैलिटी (1923)
27. द कांक्वेस्ट ऑफ वरी (1924)
28. मेकिंग फ्रेंड्स विद नर्व्स (1925)।

❑❑❑